भारत सरकार द्वारा रजि० नं० १३२०/७३ रजि० नं०P/RTK-१ दूरभाष: १, ६६, ०८, ५३, ०६५

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष २२ अंक ७ ७ जनवरी १९९५ (वार्षिक शुल्क ५०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-००

हरयाणा प्रदेश के आर्यसमाज के अधिकारियों से आवश्यक निवेदन

मार्च १९९५ तक अपने सभासदों से शुल्क लेकर वार्षिक चुनाव करें

वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

हरयाणा के समस्त आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने आर्य सभासदों से आर्यसमाज के नियम उपनियम की धारा (४क) के अनुसार "जिसका नाम किसी आर्यसमाज में सदाचारपूर्वक दो वर्ष तक अंकित रहा हो और वह अपनी आय (आमदनी) का शताश (१००वां भाग) मासिक वा वार्षिक अथवा एक हजार रु० वार्षिक वा अधिक धन अपने समाज को देता रहा हो और जिसकी उपस्थिति साप्ताहिक सत्संगों में कम से कम २५ प्रतिशत हो तो वह आर्यसभासद माना जा सकता है।" मार्च १९९५ तक वार्षिक शुल्क (चन्दा) प्राप्त कर लेवे तथा अपनी अन्तरंग सभा की बैठक में इस प्रकार के आर्यसभासदों को आगामी वर्ष (१९९५-९६) के वार्षिक चुनाव में भाग लेने की स्वीकृति दे देवें और उनकी एक सूची आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ गोहाना रोड रोहतक में भेज देवे। इसकी एक सूची अपने आर्यसमाज मन्दिर में भी चिपका देवे। धारा ४ (च) के अनुसार स्त्रियों को आर्य सभासद बनने के लिए यदि उनकी आय अपने संरक्षक वा पति की आय से पृथक् न हो तो संरक्षक वा पति की आय के शताश का १/५ शुल्क देना काफी होगा।" अन्तरंग सभा विशेष हेतु चन्दा न दे सकने अथवा शतांश से न्यून देनेवालों को आर्य सभासद बना सकती है। परन्तु उनकी संख्या उक्त आर्य सभासदों की सख्या के ५ प्रतिशत तक हो सकती है और अंश पूर्णांक माना जावेगा। आर्य सस्थाओं को (चाहे वे आर्यसमाज के अन्तर्गत हों या न हों) धन देना शतांश न होगा।

आर्यसमाज के वार्षिक चुनाव के लिए आर्यसमाज के नियम उपनियम की धारा ८ (५) के अनुसार विज्ञापन (सूचना) १५ दिन पहले दिया जायेगा। सूचना दस्ती अथवा U.P.C द्वारा डाक से भेजने का कष्ट करे। चुनाव लिखितसम्मति (पर्चियों) द्वारा किया जायेगा और सर्वसम्मति होने पर हाथ उठाकर भी हो सकेगा। किसी झगडे की अवस्था मे अन्तिम फैसला आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का माननीय होगा।

स्मरण रखे आर्यसमाज के नियम उपनियम की धारा ११ के अनुसार कोई पुराना अधिकारी सर्वसम्मति पर ही निरन्तर ३ वर्ष से अधिक एक पद पर चुना जावेगा। आर्यसमाज का प्रधान, मन्त्री अथवा आर्यसमाज की किसी भी संस्था का प्रमुख अधिकारी बनाये जाने से पूर्व वह व्यक्ति न्यूनातिन्यून ३ वर्ष तक निरन्तर आर्यसभासद रहा हो प्रधान एवं मन्त्री के अतिरिक्त अन्य अधिकारी एव अन्तरंग सदस्य का साधारण सभासद बनाए जाने से पूर्व वह व्यक्ति न्यूनातिन्यून दो वर्ष तक निरन्तर आर्यसभासद रहा हो।

यदि उपरलिखित आर्यसमाज के नियम उप-नियमों के अनुसार वार्षिक चुनाव करवाए जावेंगे तो आर्यसमाज का संघटन सुदृढ़ होगा और किसी प्रकार के आपसी वाद-विवाद उत्पन्न नहीं होंगे और आर्य सभासदों से शतांश के आधार पर शुल्क लेने पर सक्रिय तथा लगनशील, ईमानदार व्यक्ति ही आर्यसमाज के आर्यसभासद तथा अधिकारी बन सकेंगे। जहां आर्यसमाज की आयमें वृद्धि होगी वहा आर्य प्रतिनिधि सभा को भी अधिक शुल्क प्राप्त होने पर दशांश की राशि भी अधिक मिल सकेगी।

प्राय देखा गया है कि आर्यसमाज के नियम उपनियमों की अनदेखी करके आर्यसभासद तथा अधिकारी ऐसे बन जाते हैं जो अपनी आय का शताश न देकर केवल १२,२४,४८ तथा ९६ रुपए तक वार्षिक शुल्क देकर अपनी वास्तविक आय को छिपाने का यत्न करते हैं। साप्ताहिक सत्संगों मे भी उनकी उपस्थिति २५% से कम होती है। वे केवल वार्षिक चुनाव अथवा अन्तरग आदि बैठकों में ही सम्मिलित होकर आर्यसमाज तथा इसकी संस्थाओं के अधिकारी बने रहना चाहते हैं। इस प्रकार के बोगस अधिकारियों के कारण ही आर्यसमाज की आर्थिक अवस्था कमजोर रहती है तथा वे अपने पद पर रहने के लिए वाद-विवाद का कारण बनते हैं। अत आर्यसमाज के अधिकारियों से आर्यसमाज के हित के लिए मैं निवेदन करता हूं कि आर्यसामाज के नव वर्ष चैत्र शुक्ल (अप्रैल ९५) से पूर्व ऊपरलिखित नियमों का कड़ाई से पालन करते हुए अपने आर्यसभासदों से शुल्क उनकी आय का शताश प्राप्त करें। आय-व्यय का ठीक हिसाब रखने के लिए प्रत्येक सदस्य को शुल्कादि की रसीद अवश्य देवें। यदि किसी आर्यसमाज के पास रसीद बुक न हो तो वे सभा को पत्र लिखकर मंगवा लेवें।

सभा की अन्तरग सभा के निश्चयानुसार सभा का आगमी वार्षिक अधिवेशन अप्रैल ९५ के बाद होगा। अतः सभी आर्यसमाज अपना वार्षिक वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी का शुल्क मनीआर्डर अथवा सभा के उपदेशकों के द्वारा भेजने की कृपा करे।

बिना दहेज विवाह संस्कार

दिनाक ११-१२-९४ रविवार को कुमारी रजनी आर्य २१ वर्ष सुपुत्री श्री रघुनाथ निवासी कैम्प यमुना नगर का शुभ विवाह वैदिक रीति से श्री पवनकुमार खोसला आयु २८ वर्ष सुपुत्र श्री मदन गोपाल खोसला जगाधरी वर्कशाप के साथ बिना दहेज या लेन-देन के श्री धर्मवीर प्रधान आर्यसमाज की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। यह विवाह सस्कार सर्वश्री हरद्वारीलाल शर्मा एव केशवदास आर्य मन्त्री आर्यसमाज ने कराया। उपस्थित आर्य सभासदो और आर्य देवियो ने नवदम्पती को शुभ आशीर्वाद दी। वर के पिता जी ने २०१) रु० आर्यसमाज को दान दिया।

—केशवदास आर्य, मन्त्री आर्यसमाज जगाधरी वर्कशाप

यह लोहारू किसी नवाब की रियासत होती थी, और जुल्मी नवाब से प्रजा भी दुखी रहती थी

जब भारतवर्ष अंग्रेजों का गुलाम था उस समय कहीं-कहीं मुसलमानों की छोटी-छोटी रियासतें यानी राज्य हुआ करते थे। उन रियासतों का राजा मुसलिम नवाब हुआ करता था और नवाब अंग्रेजों को जमीदारों के खेतों का लगान दिया करता था। लगान की सख्ताई इतनी तेजी से होती थी कि चाहे किसान के खेत मे अनाज पैदा हो या न हो लेकिन नवाब ने जो लगान की कानून बना रखी थी वह लगान जमीदारों को अवश्य देनी पड़ती थी और जो व्यक्ति लगान देने से मना कर दिया करता था तो नवाब या तो उसे फांसी तोड़ देते थे या उसको आजीवन कैद मे डाल देते थे इतने सख्त कानून नवाब के हुआ करते थे। समय बीतता गया। लगातार तीन वर्ष अकाल पड़ गया। तब तक भी किसान लगान देते रहे। और नवाब लोहारू रियासत के लोग शेर बहादुर तो थे ही लेकिन जुल्मी नवाब का राज्य होने से सभी भयभीत रहते थे क्योंकि नवाब बहुत हत्यारा हिन्दुओं पर जुल्म करनेवाला राजा हुआ करता था। इसलिए सभी बहादुर लोग अपनी-अपनी समझ के कारण चुपचाप अपने कार्य मे लगे रहते थे। एक समय की भयंकर घटना मैं लिख रहा हू और यह कहानी नवाब ने स्वयं अपनी शक्ति से करवाई थी। नवाब लोहारू की रियासत में एक मढोली गाव हुआ करता था और वह गाव अब भी है। उस गाव का एक जमीदार शेर बहादुर श्री बेदाराम स्योराण बड़ा ही शक्तिशाली एवं निडर व्यक्ति हुआ करता था। वह २ वर्ष बिना आमदनी के नवाब लोहारू को लगान देता रहा और जब तीसरा वर्ष आया तब भी अकाल पड गया और श्री बेदाराम ने सोचा कि लगान लेने तो नवाब अब भी आएगा अबकी बार क्यों न नवाब से दो हाथ कर लिये जावे और उस बेदाराम को यह पता ही था कि अगर तू नवाब की आज्ञा की अवहेलना करेगा तो तुझे नवाब जिन्दा नहीं छोडेगा। फिर भी उस निडर बहादुर ने भजन की इस पक्ति को दोहराते हुए दिल में सोचा कि –

मरना एक दिन जरूर चाहे डर के मर जाओ।
डर के मरने से अच्छा कुछ करके मर जाओ।
कायर और कमजोर खाट पर पड़के मरते हैं।
वीर बहादुर रणभूमि में लड़के मरते हैं॥

यह पंक्ति बोल करके बेदाराम के दिल में कुछ जोश आया और जब नवाब ने अपने चौकीदार को गाव मढ़ोली में लगान लेने के लिए भेजा जब चौकीदार ने सभी किसानों को लगान एकत्र कर ली तब बेदाराम के घर लगान लेने गया तो श्री बेदाराम अपनी चारपाई पर आराम की नीद सो रहा था। अचानक नवाब के चौकीदार ने जब बेदाराम को जगाया तो बेदाराम ने अकडकर नवाब के चौकीदार को कहा कि सोये हुए को आपने कैसे जगाया। तब चौकीदार ने कहा कि मेरे को नवाब साहब ने गाव की लगान एकत्र करने के लिए आपके गांव मे भेजा है। बाकी तीसरी लगान मैंने एकत्र कर ली है। अब केवल आपकी लगान बाकी है, आपको मैंने इसलिए जगाया है कि आप भी अपनी लगान दे दो ताकि मैं नवाब साहब को जाकर सारे गांव की लगान सभाल दूगा।

तब श्री बेदाराम आग बबूला होगया और चौकीदार को धमकाकर कहने लगा आप जाइये और नवाब लोहारू को कह देना कि वह दिन अब लद गये जो बेदाराम आपको लगान देता था। अब बेदाराम लगान कदापि नही देगा। यह बात सुनकर चौकीदार नवाब के दरबार में आकर बेदाराम की सारी कहानी सुना देता है तो नवाब गुस्से में होकर कहता है उसकी यह हिम्मत होगई कि लगान देने से मना कर दिया। मैं उस बेदे को अभी देखता हूं। तब नवाब ने अपनी सेना एकत्र करके थानेदार श्री समसुद्दीन अली अहमद को अपने पास बुलाया और कहा कि आप सभी मढोली जाइए और श्री बेदाराम से लगान न लेकर उसको गिरफ्तार करके मेरे हवाले किया जावे। जो समसुद्दीन अली अहमद थानेदार था, वह बहुत शक्तिशाली एव शेर बहादुर था। थानेदार अपनी सेना सहित मढोली श्री बेदाराम के घर पहुंच जाता है और उस थानेदार के साथ १०/१५ सिपाही भी श्री बेदाराम के घर पहुच जाते हैं।

जब बेदाराम से थानेदार ने कहा कि चौ० बेदाराम आपको नवाब साहब ने लोहारू दरबार में बुलाया है क्योंकि आपने अपनी लगान देने से इनकार कर दिया है। आप शीघ्र तैयार होकर चलो वरना आपकी खैर नही होगी क्योंकि नवाब साहब आपसे बहुत चिढ़े हुए हैं। तब बेदाराम ने थानेदार से कहा आप आधा घण्टा रुके मैं तैयार हो जाता हूं तब श्री बेदाराम ने अपनी पत्नी से कहा हे देवी आप मेरे लिए अच्छा सा चूरमा बना दें मैं चुरमा खाकर लोहारू नवाब के दरबार मे जाऊंगा, हो सकता है मैं फिर वापिस न आ सकू क्योंकि नवाब बडा ही जुल्मी एवं हत्यारा है। वह कभी मेरे को फांसी न दे दे। तब उसकी पत्नी ने ५/६ किलो का चुरमा बनाया और श्री बेदाराम ने खाया और अपना देशी हथियार गडासा हाथो मे लेकर पहले थानेदार समसुद्दीन अली अहमद को मारा फिर वे सभी पुलिस कर्मी मार डाले उनमे जो चौकीदार था उसको उसने छोड दिया और उन सिपाहियो एव थानेदार की लहास को उनके घोड़ों पर बाधकर बेदाराम ने नवाब के नाम एक पत्र लिखा और वह पत्र उस चौकीदार को देकर उन सिपाहियो एवं थानेदार की लहास नवाब लोहारू के पास भेजने के लिए उस चौकीदार से कहा कि आप जाइए और इन लहासो को नवाब के हवाले कर दीजिए और नवाब से यह शब्द कह देना कि—

बेदा आ गया बेदी पर।
लहास भेज रहा हूं गद्दी पर॥
नवाब कर ले जो करना सै।
बेदे ने तो अब नही डरना सै॥
बेदा अब सहन नही करेगा।
नवाब से बिल्कुल नही डरेगा॥

यह सुनकर नवाब का चौकीदार उन लहासों को लेकर नवाब के दरबार में पहुंच जाता है और नवाब ने जब उन लहासों को देखा तो आग बबूला (क्रोधित) हो जाता है। आप स्वयं और सारी सेना मढोली की तरफ कूच कर देता है। नवाब मढोली में जाकर मढोली के सभी लोगो को उजाडकर श्री बेदाराम को गिरफ्तार करके लोहारू अपने किले में ले आता है और बेदाराम को तरह-तरह की यातनायें देता है। चाकुओं से शरीर को काट-काटकर नमक मिर्च लगाकर उसको पीड़ित करता है। फिर भी श्री बेदाराम नवाब से माफी न मांगकर एक ही बात कहता है अरे दुष्ट पापी जुल्मी नवाब तू हिन्दुओं की शक्ति क्या जानेगा, जब मेरे दिल में तेरे प्रति नफरत हो गई है, अब मैं आपके सामने झुकनेवाला नही हू। चाहे मेरी बोटी-बोटी काट सकते हो।

इसी प्रकार एक महीने तक श्री बेदाराम को नवाब यातनायें देता रहा और श्री बेदाराम जेल मे बन्दी, नवाब पर जाड़ पीसता रहा। नवाब अपनी बिल्लाकोठी पर सोया करता था जो कि नवाब के किले से ३ किलोमीटर लोहारू से बाहर थी और वह नवाब की कोठी अब भी सुरक्षित है। एक दिन नवाब कहीं न्याय करने गए थे, रात का समय हो गया था। न्याय करके दरबार मे आ गए और वही सो गए जहां पर श्री बेदाराम को बन्दी बना रखा था। उस जेल में श्री बेदाराम सहित दो ही व्यक्ति कैद थे। जब बेदाराम को पता चला कि नवाब आज यहीं सोया हुआ है तब बेदाराम हिम्मत करके जेल का एक जंगला तोडकर बाहर आ गया और जो रात के चौकीदार थे गहरी नीद में सो रहे थे और बेदाराम चुपचाप उस स्थान पर जाना चाहता था जहां नवाब सो रहा था। बेदाराम नवाब की हत्या करने के मूड में था। तब दूसरा जो जेल में बन्दी था उसने सोचा क्यों न इन चौकीदार सिपाहियो को जगाया जावे और नवाब को बचाया जावे। इस काम के लिए नवाब मेरे को छोड़ देगा और मेरे को इनाम भी मिलेगा, तब वह

(शेष पृष्ठ ८ पर)

बुद्धि को संभालें

बुद्धिमान् बनने के लिए हम गायत्री-मन्त्र का सहारा लें।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

चारों वेदों में लगभग २० हजार मन्त्र हैं। गायत्री मन्त्र को गुरुमन्त्र इसलिए कहते हैं कि गुरु शिष्य के प्रवेश पर सर्वप्रथम इसी मन्त्र से उसकी विद्या प्रारम्भ करता है। प्रत्येक वेद में, प्रत्येक शास्त्र में, प्रत्येक ग्रन्थ में इस मन्त्र को सम्मान प्रदान किया गया है। इस मन्त्र के जाप से मनुष्य का उद्धार हो जाता है वह चमत्कार ऋद्धि सिद्धि प्राप्त करता है। महाभारत अनुशासन पर्व में युधिष्ठिर ने पितामह भीष्म जी से ऐसा मन्त्र जानना चाहा जिसे किसी भी समय जपा जा सके। भीष्म जी ने वह मन्त्र गायत्री मन्त्र ही बताया जिससे अद्भुत शक्ति प्राप्त होती है। दयानन्द के गुरु व्याकरणसूर्य प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द जी गायत्री मन्त्र का जल में खड़े होकर जाप करते थे उनकी बुद्धि इतनी असाधारण हो गई कि उन्होंने अन्धे होते हुए भी देश की स्थिति को समझकर दयानन्द से गुरु दक्षिणा में देश उद्धार हेतु जीवन मांग लिया। महाशय खुशहाल (स्व० आनन्द स्वामी) को विश्वविख्यात गुरुमन्त्र गायत्री मन्त्र ने ही बनाया।

किन्तु गायत्री मन्त्र के बिना अर्थ समझे और अपने अन्दर पात्रता उत्पन्न किये बिना यथेष्ठ लाभ न होगा। रामकृष्ण परमहंस के एक शिष्य ने पूछा—एक मन्त्र, एका उपासन प्रक्रिया को अपनाते एक व्यक्ति चमत्कारी सिद्धि प्राप्त कर लेता है जबकि दूसरे को कोई लाभ नहीं होता। परमहंस ने बताया—किसी राजा के मन्त्री ने जपतप से विशेष आत्मशक्ति प्राप्त करली। उसकी चमत्कारी विशेषताओं की सूचना राजा को मिली उसने मन्त्री से पूछा उसने बताया यह सब गायत्री मन्त्र की उपासना का चमत्कार है। इसकी उपासना साधना से सब कुछ सभव है। राजा को उसने सब विधि बतलाई। एक वर्ष के बाद राजा ने कोई उपलब्धि न होने पर मन्त्री से कारण पूछा मन्त्री ने एक किशोर को बुलाकर राजा को चपत लगाने को कहा किन्तु किशोर उद्यत नहीं हुआ। मंत्री ने दोबारा फिर यही आग्रह दोहराया किन्तु किशोर टस से मस नहीं हुआ। यह देखकर राजा का चेहरा क्रोध से तमतमा कर लाल हो गया। उसने कड़क कर किशोर को कहा कि मंत्री को चपत जड़ दो। किशोर तुरन्त उठा और उसने मंत्री को दो चपत लगा दीं। मंत्री ने राजा को कहा अभी आपने देख ही लिया कि वाणी से कही बात अधिकारी पात्र की ही मानी जाती है। धृष्टता क्षमा करें यह सब खेल आपको समझाने के लिए ही किया गया था। अतः मन्त्र जप से चमत्कार पात्रता विकसित होने पर ही आती है।

एक महिला संत ज्ञानेश्वर के चमत्कारों से प्रभावित हो साधना करने लगी। जब उसे कोई विशेष उपलब्धि नही हुई वह सन्त के पास पहुंची कहने लगी परमात्मा पक्षपती है वह किसी को तो ऋद्धि, सिद्धियों का स्वामी बना देता है और किसी को कुछ नही देता। सन्त बोले बहिन! ऐसा नही है। भगवान् विशिष्ट विभूतियां सत्पात्रों को दे देता है। पात्रता विकसित करके हर कोई उन्हें प्राप्त कर सकता है। महिला बोली—तो फिर भगवान् की क्या विशेषता रही। उसे तो सबको समान अनुदान देना चाहिए। सन्त ने इसका उत्तर देने के लिए दूसरे दिन एक मूर्ख को महिला के पास भेजा कि उससे सोने के आभूषण मांग लाओ। मूर्ख के आभूषण मांगने पर महिला ने झिड़ककर उसे बिना आभूषण दिये भगा दिया। थोड़ी देर बाद सन्त स्वयं गये और कहा—आप एक दिन के लिए अपने आभूषण दे दें आवश्यक काम करके लौटा देंगे।' महिला ने बिना कुछ पूछे संदूक खोला और सहर्ष अपने कीमती आभूषण सन्त को सौंप दिये। आभूषण लिए ही सन्त ने पूछा—अभी-अभी जो दूसरा व्यक्ति आया था उसे आपने आभूषण क्यों नहीं दिए? स्त्री बोली—उस मूर्ख को कोई कैसे आभूषण देता? सन्त बोले बहिन जब सामान्य से आभूषण बिना सोचे-विचारे कुपात्र को नहीं दे सकतीं तो परमात्मा अपने दिव्य अनुदानों को कुपात्रों को कैसे देता? वह तो उन्हें देने से पूर्व पात्रता की परीक्षा करता है। पात्रता के अभाव में सांसारिक जीवन में भी किसी को कुछ भी उपलब्ध नहीं हो पाता। पात्रता के आधार पर ही शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय आदि क्षेत्रों में विभिन्न स्तर की भौतिक उपलब्धियां हस्तगत करते सर्वत्र देखा सकता है। ठीक इसी प्रकार आध्यात्मिक क्षेत्र में और अधिकता से यह सिद्धांत लागू होता है। आध्यात्मिक उपलब्धि के लिए पात्रता अत्यन्त आवश्यक होती है।

गायत्री मन्त्र की संक्षिप्त व्याख्या—

ओ३म्—यह परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ नाम है। इसमें उसके समस्त गुणों का भाव आ जाता है। अ+उ+म् तीन अक्षरों से मिलकर ओ३म् बनता है।

अ से विराट—नाना प्रकार से जगत् को प्रकाशित करना, अग्नि सबका अग्रणी, पोषक ज्ञानस्वरूप है जो उसकी शरण आता है अग्नि स्वरूप की भांति प्रकाशित हो जाता है। अखिल विश्व का नियन्ता है वह सत् है।

उ—से हिरण्यगर्भ। वायु, तैजस आदि—समस्त तेजप्रधान वस्तुओं का आधार या ठिकाना होने से वह हिरण्यगर्भ है। सूर्य चन्द्र आदि उसी का प्रकाश है। समस्त जगत् का जाननेवाला होने से वह वायु है वह तेजस् है।

म्—से ईश, प्राज्ञ, आदित्य, आनन्द—वह ईश्वर ऐश्वर्यवान भगवान् है, सर्वरक्षक आदित्य है, सर्वज्ञ प्राज्ञ है, सत्‌चित् आनन्दस्वरूप सच्चिदानन्द है।

इस प्रकार ओ३म् परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ नाम है क्योंकि परमात्मा के जो अनन्त गुण हैं उनके अधिकांश गुण इस शब्द मे आ जाते है अतः ओ३म् के ध्यान से मन बश जाता है, उसकी चचलता मिटने लगती है। इसके जाप से (अर्थ विचारते हुए) उपासक का मन एकाग्रता प्रसन्नता, ज्ञान को यथावत् प्राप्त होकर, स्थिर हो जिसमे हृदय प्रकाश और परमेश्वर की प्रेमभक्ति सदा बढती रहे।

भूः, भुवः स्वः—तीन व्याहृतियां कहलाती हैं—विशेषरूप से ध्यान दिलानेवाली भू—प्राणाधार, स्वयंभू, सत्, भूत—भविष्य वर्तमान सदा विद्यमान रहता है।

वह सब प्राणियों का जीवनदाता है और प्राणों से भी प्यारा है वह देवों का देव है।

भुवः—वह दुखो से बचानेवाला है। संसार में दुःख अनेक प्रकार के हैं। कुछ हम स्वय उत्पन्न करते हैं। संसार एक प्रयोगशाला है तपोभूमि, श्रमगृह है। अपना कर्त्तव्य पूरा करे, प्रसन्न रहें। दुखो को दुख मानना ही दुख है। परमात्मा के साथ सम्बन्ध जितना गहरा कर लिया जाएगा उतना ही सुख अधिक प्रतीत होगा। उसकी कृपा से दुख मे अधीरता न होगी। यह मानव के अधिकार मे है कि वह प्रकृति संयोग से दुःख बढा ले या प्रभु सम्पर्क से दुख दूर कर सुख बढा लें। साधक को भी सामर्थ्य के अनुसार दुखियों का दुख दूर करने का यत्न करना चाहिये।

स्वः—वह सुखदाता, अन्नदाता है। वह सब जगत् में व्यापक होकर सबको नियम में रखता है सबसे बड़ा आश्रय है। जब ससार के सब आश्रय छूटे प्रतीत होते हैं तो प्रभु ही सुख स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। सुख क्षणिक होता है किन्तु आनन्द चिरस्थायी। निरन्तर बना रहनेवाला सुख परमात्मा के ही पास है। वह आनन्द का भण्डार है। जैसे आकाश को लपेटना असभव है वैसे ही परमात्मा की शरण लिए बिना दुख का अन्त होना असंभव है।

दूसरे पाद में—

सवितुः—सविता परमात्मा की उस शक्ति का नाम है जिसने सोई हुई प्रकृति को प्रेरणा दी और प्रकृति ने नाना रूप मानव के कल्याण के लिए धारण कर लिए। अग्नि को सविता कहते है अग्नि ही सबको उत्पन्न करनेवाली है। सूर्य को सविता कहते हैं सूर्य सोये हुए सासारिक जीवों को जागरित कर पुरुषार्थ करने की प्रेरणा करता है। जो समस्त जगत् को उत्पन्न करता है, सबका स्वामी है वह सर्वपिता जगदीश्वर सविता परमात्मा है।

(हितोपदेशक से साभार) क्रमशः

हिन्दी के महत्त्व को घटाने का कुचक्र

लेखक—जगन्नाथ संयोजक, राजभाषा कार्य. केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् एक्स. वाई. ६८, सरोजिनी नगर नई दिल्ली

हिन्दी विश्व की दूसरी भाषा

यद्यपि हिन्दी विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा है, किन्तु अंग्रेजी समर्थक उसे विश्व की तीसरी अथवा चौथी भाषा के रूप में प्रचारित करते रहते हैं। अंग्रेजीवाले अंग्रेजी को विश्व में ४५ करोड़ लोगों की बोलने और समझनेवाली भाषा बताते हैं और उनके संचार माध्यम हिन्दी बोलनेवालों की संख्या ३६ करोड़ ही आंकते हैं। किन्तु तथ्य यह है कि भारत में ही ४० करोड़ लोगों की तो मातृभाषा ही हिन्दी है। इसके अतिरिक्त भारत के हिन्दीतर मातृभाषावाले लोग और मारीशस, फिजी, सूरीनाम, अमेरिका, यूरोप, अफ्रीका, नेपाल, खाड़ी देश तथा दुनिया के अन्य मुल्कों में लगभग ४ करोड़ लोग हिन्दी जानते और समझते हैं। यही कारण है कि जी. टी. वी. वाले खाड़ी देशों तक में हिन्दी के कार्यक्रम दिखाते हैं। इसके अतिरिक्त उर्दू भी हिन्दी की ही एक शैली है। हिन्दी और उर्दू में मुख्यतः लिखने समय ही लिपि भेद दिखाई देता है। उर्दू जाननेवाले हिन्दी को और हिन्दी जाननेवाले उर्दू को पूरी तरह समझ लेते हैं। जब वे बोलते हैं तो कोई यह समझ ही सकता कि वे हिन्दी बोलते हैं अथवा उर्दू। भारत तथा पाकिस्तान आदि मे ऐसे उर्दू जाननेवाले लोगों की संख्या लगभग १० करोड़ है। इस प्रकार हिन्दी बोलनेवाले लोगों की संख्या लगभग ५४ करोड़ है। अतः हिन्दी का स्थान निस्सन्देह विश्व में दूसरा है।

अंग्रेजीवालों का एक कुचक्र

भारत मे अंग्रेजी के हिमायती यह पूरी तरह समझते हैं कि हिन्दी विरोध में अंग्रेजी को खड़ी करके वे सफल नहीं हो सकते। अतः वे पिछले कुछ वर्षों से यह चाल चल रहे हैं कि हिन्दी की बोलियों को पृथक् भाषा के रूप में खड़ा किया जाए। एक विद्वान् श्री ईश्वरलाल पंडित वैश्य के शब्दों में—

> "ऐसा होने से हिन्दी का वर्तमान क्षेत्र विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं वाले राज्यों में बंट जाएगा और तब हिन्दी के अधिसंख्यकों की भाषा के रूप में उसका राष्ट्रभाषा होने का आधार ही टूट जाएगा, क्योंकि हिन्दी सात राज्यों की भाषा नहीं रह जाएगी। उसका स्थान ब्रज, अवधी, बुन्देली, मैथिली, भोजपुरी, राजस्थानी, मालवी आदि ले लेंगी।"

अंग्रेजीवालों के इस कुचक्र का प्रभाव राजस्थान में हो चुका है जसकी घोषित राजभाषा केवल हिन्दी है। वहां पर "राजस्थान की भाषा राजस्थानी" नारा उछाला जा चुका है, जिसे राजनीति से प्रभावित क्षुब्ध मानसिकतावाले कई व्यक्तियों का समर्थन प्राप्त है। इसी विद्वान् के शब्दों में—

> "यदि राजस्थान में यह आन्दोलन सफल रहा तो इसकी प्रतिक्रिया उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश जैसे बड़े-बड़े हिन्दी भाषी प्रदेशों पर भी पड़ेगी और वे भी ऐसे भाषाई आन्दोलनों की चपेट में आने से नहीं बच सकेंगे। तब हिन्दी कहां की भाषा होगी और ऐसी स्थिति में अंग्रेजी को ही केन्द्र को राजभाषा के रूप में मान्य रखने के अलावा हमारे पास अन्य कोई विकल्प नहीं होगा।"

यह कोई काल्पनिक डरावा नहीं है। सितम्बर, १९९४ में आलुवाई (केरल) में पेरियार नदी के तट पर भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों का सम्मेलन हुआ था जिसमें दैनिक जागरण (२०-९-९४) के अनुसार लगभग १५० से अधिक लेखकों ने राजस्थानी, मैथिली व डोगरी को संविधान को आठवी अनुसूची में शामिल करने की मांग की थी। उनका तर्क था कि इन भाषाओं का साहित्य अधिक श्रेष्ठ है। लगता है कि ये साहित्यकार अंग्रेजीवालों के दुष्प्रभाव से प्रभावित हो गये हैं। हमारा कहना यह है कि अपनी बोली और अपनी मिट्टी से प्रेम होना स्वाभाविक है, किन्तु स्थानीय बोलियों को सरकारी काम-काज की दृष्टि से क्षेत्रीय भाषा का नाम नहीं दिया जा सकता। माना कि राजस्थानी, हरियाणवी, ब्रज भाषा, अवधी, बुन्देली, मैथिली, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी और पहाड़ी बोलियों में समृद्ध साहित्य है और इनके बोलनेवाले भी काफी बड़ी संख्या में हैं। किन्तु इन सभी को समेट कर ही तो हिन्दी बनी है। इन सभी का साहित्य हिन्दी साहित्य की श्रेणी में स्वीकार किया गया है और हिन्दी को उस पर गर्व है। किन्तु यदि जन-गणना में से इन बोलियों को बोलनेवालों की गिनती अलग-अलग होने लगी तो हिन्दी बोलने वालों की संख्या उतनी ही घट जाएगी। इस प्रकार हिन्दी का राजभाषा बनने का आधार ही समाप्त हो जाएगा। इस बात को समझकर अंग्रेजीवालों का आंकड़ों की इस बाजीगरी पर आधारित कुचक्र है। अंग्रेजी के हिमायती इन षड्यन्त्रकारियों को भी समझ लेना चाहिए कि इस तर्क से तो स्वयं अंग्रेजी भाषा के महत्त्व को खतरा हो जाएगा क्योंकि उसमें भी अनेक बोलियां हैं जिनको समेटकर अंग्रेजी भाषा बनी है। एक विद्वान् श्री विशम्भरप्रसाद गुप्त के शब्दों में—

> यह एक दुरभिसन्धि है जो क्षेत्रीय भाषाओं के विकास, सम्वर्द्धन और सम्मान करने की आकर्षक चाशनी में लपेटी हुई विष की गोली के समान होगी जिसे राष्ट्रभाषा के पक्षधरों के गले उतारने की कोशिश हो रही है। राष्ट्र-विद्वान् अभी से सावधान हो जाएं। साहित्य अकादमियों की गतिविधियां भी कुछ अंग्रेजी-भक्तों द्वारा निर्देशित होती हैं। जो स्थानीय बोलियों को भाषाओं का बाना पहिनाकर प्रत्यक्षतः विद्वानों का सम्मान करते है और परोक्ष रूप से हिन्दी का मार्ग अवरुद्ध करते हैं।

क्षेत्रीय राजभाषाओं को भी संकट—

जिस प्रकार अब हिन्दी को बोलियों को भाषा का नाम देकर राज्यों की राजभाषा बनाये जाने की मांग उठाई जा रही है, उसके बाद तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मराठी और बंगला आदि क्षेत्रीय भाषाओं की बोलियों को भी पृथक् से भाषा का नाम देकर उन क्षेत्रीय भाषाओं के क्षेत्रीय राजभाषा के महत्त्व को भी कम करने की साजिस रची जाएगी।

इस कुचक्र के भावी दुष्परिणाम—

१ हिन्दी भाषियों की संख्या कम हो जाने से अंग्रेजी वालों को यह कहने का अवसर मिल जाएगा कि इतनी कम-संख्या-बल-वाली हिन्दी से राजभाषा का दर्जा छीन लिया जाए। फिर वे यह भी कहने लग जाएंगे कि अष्टम सूची में अंग्रेजी को भी शामिल कर लिया जाए।

२ संघ लोक सेवा आयोग इसी इसी आधार पर अपनी परीक्षाओं से अंग्रेजी को नहीं हटा रहा है कि भारतीय भाषाओं की संख्या अधिक होने के कारण उन सभी में परीक्षा लेना संभव नहीं है। जब मान्यता प्राप्त भारतीय भाषाओं की संख्या और भी अधिक बढ़ जाएगी तो आयोग के बहाने को और भी अधिक दृढ़ आधार मिल जाएगा।

३ श्री विश्वंभर प्रसाद गुप्त के शब्दों में—
अंग्रेजों के जाने के बाद लौह-पुरुष सरदार पटेल ने पांच-छह सौ देशी रियासतों का भारत में विलय करके एक शक्तिशाली गणतंत्र स्थापित किया था। अंग्रेजी वाले उस एकात्मा का विध्वंस करके राष्ट्र को फिर छोटे-छोटे राज्यों में बांट देना चाहते हैं जिनका बिखराव रोकना कठिन होगा। कुछ राज्यों के स्वतंत्र होने के प्रयास किसी न किसी रूप में हो भी रहे हैं।

बहुतसी समृद्ध बोलियां जो भाषा के रूप में संविधान में अनुसूचित नहीं हैं विश्वविद्यालयों में ऊंचे स्तर तक पढ़ाई जाती हैं। उनमें समृद्ध साहित्य और शानदार परम्परायें हैं। उनमें गंभीर शोध कार्य और उत्कृष्ट साहित्य सृजन हो रहा है। सभी के अध्येता, लेखक और कवि एवं विद्वान् यथायोग्य सम्मान के पात्र हैं और सम्मानित होते भी हैं। हिन्दी कवि सम्मेलनों में ब्रज, भोजपुरी, मैथिली, हरियाणवी, राजस्थानी आदि को सम्मानपूर्ण स्थान दिया जाता है और उनकी कविताओं को रुचिकर सुना-समझा जाता है क्योंकि वे सब वस्तुतः हिन्दी का ही एक रूप हैं। यहां तक कि हिन्दी कवि सम्मेलनों में पंजाबी, उर्दू की कविताएं भी सम्मानपूर्वक सुनी समझी जाती हैं। हिन्दी का कभी इन भाषाओं से दुराव नहीं रहा। ये सब भाषाएं-बोलियां हिन्दी रूपी

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्य पहलवान सरपंच बने

आर्यसमाज रोहणा जिला सोनीपत हरयाणा के ग्रामीण आर्यसमाज में एक प्रमुख स्थान रखता है। यहां के आर्यवीरों ने आर्यसमाज द्वारा संचालित हिन्दी रक्षा आन्दोलन, गोरक्षा आन्दोलन तथा गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ आदि की रक्षा के कार्यों मे बढ़-चढकर उत्साह-पूर्वक भाग लिया है।

इसबार श्री वेदप्रकाश आर्य पहलवान सुपुत्र श्री प्रतापसिंह आर्य ने सरपंच के चुनाव म एक साथ ४ शराबी उम्मीदवारों को लगभग १००० मतों से पराजित किया। इन्होंने चुनाव प्रचार अभियान में किसी को शराब नहीं पिलाई।
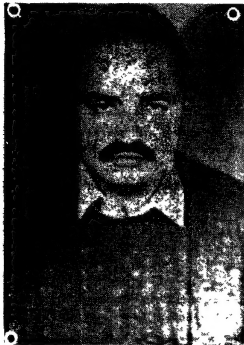
स्मरण रहे श्री वेदप्रकाश आर्य ने सुप्रसिद्ध आर्य पहलवान मा० चन्दगीराम से कुश्ती का पशिक्षण लिया और १९८४ से १९८५ तक ६२ किलोग्राम के वजन के पहलवानों की कुश्ती प्रतियोगिता में हरयाणा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार १९८१ में गाजियाबाद, जालन्धर में हुई राष्ट्रीयस्तर की कुश्ती प्रतियोगिता में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया था। आर्य पहलवान से आशा की जाती है कि ये ग्राम में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने मे भी शराबियों को पराजित करके आर्यसमाज तथा अपने ग्राम का नाम ऊचा करेंगे।

(पृष्ठ ४ का शेष)

महासागर में मिलकर एक हो जानेवाली धारायें हैं। लोक साहित्य की वृद्धि से हिन्दी साहित्य समृद्ध होता है। किन्तु राष्ट्र-भाषा हिन्दी सारे देश की सम्पर्क भाषा तथा राजभाषा होनी चाहिए और सभी को उसके प्रति श्रद्धा रखते हुए उसकी सेवा करनी चाहिए। राष्ट्र-भाषा का उचित सम्मान राष्ट्रप्रेम का प्रतीक है जो स्वभाषाप्रेम से कहीं ऊपर है। हमें कोई भी ऐसा कार्य या प्रस्ताव न करना चाहिए जिससे राष्ट्र-भाषा के अस्तित्व या प्रचार-प्रसार पर तात्कालिक या दूरगामी प्रतिकूल प्रभाव पड़े।

जैसा कि हम ऊपर सिद्ध कर चुके हैं, हिन्दी विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा है। अत: हमें अपनी शक्ति बोलियों को भाषा का नाम दिये जाने में नष्ट न करके संगठित रूप से अपनी शक्ति को हिन्दी को राष्ट्रसंघ में मान्यता प्राप्त भाषा का दर्जा दिलाने में लगानी चाहिए। फिर अवैज्ञानिक और अधूरी लिपिवाली भाषा का स्थान समय आने पर वैज्ञानिक और सर्व-रूपेण पूर्ण लिपिवाली भाषा हिन्दी ले सकेगी। हिन्दी को विश्व-भाषा के रूप में आज की समक नहीं है। अपितु महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द जैसे विचारकों ने इसकी कल्पना १९वीं शताब्दी में ही कर ली थी।

आर्यनेता डा. हरिप्रकाश जी दिवंगत

आर्यसमाज के विख्यात नेता डा० हरिप्रकाश जी आयुर्वेदालंकार का दिनाक ४ जनवरी १९९५ को लम्बी बीमारी के बाद ८४ वर्ष की आयु में निधन होगया। वे गुरुकुल कागड़ी के पुराने स्नातक थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपप्रधान तथा कोषाध्यक्ष भी रहे। उन्होंने काफी समय तक गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी तथा स्वामी श्रद्धानन्द चिकित्सालय हरद्वार तथा अबाला की आर्य शिक्षण संस्थाओं के संचालक के रूप में सफलतापूर्वक कार्य किया। ५ जनवरी को अम्बाला छावनी में उनकी अन्तेष्टि में भारी सख्या में नर-नारी सम्मिलित हुए।

सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा प्रो० शेरसिंह जी ने इनके निधन पर शोक संवेदना प्रकट करते हुए उन द्वारा की गई आर्यसमाज तथा गुरुकुल की सेवाओं की सराहना की है।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाधीक्षक

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

गुरुकुल कुरुक्षेत्र मे अमर शहीद श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस के अवसर पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रागण मे एक विशाल समारोह का आयोजन किया गया, जिसमे गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ब्रह्मचारियों ने मधुरकण्ठ से सस्वर स्वामी श्रद्धानन्द की अमरगाथा सुनाई। आधुनिक युग में गुरुकुल शिक्षा के सफल संचालनकर्ता श्रद्धेय श्रद्धानन्द जी ही थे जिन्होंने अपने करकमलों द्वारा ऐतिहासिक गुरुकुल कागडी सूरजकुण्ड के निकट फरीदाबाद मे गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, गुरुकुल झज्जर, भैंसवालकला तथा गुरुकुल कुरुक्षेत्र की स्थापना की थी। इस बलिदान दिवस समारोह के प्रमुख वक्ता सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री श्री ओंकार शास्त्री जी थे। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन के अनेक प्रेरक प्रसंगों को सुनाया। सभा के उपमन्त्री डा० सत्यवीर विद्यालंकार ने भी सम्बोधित किया।

—देवव्रत आचार्य

—वैदिक प्रचार मंडल-२९ मन्दिर मार्ग रामनगर अम्बाला छावनी की ओर से २५-१२-९४ को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर ब्रह्मचारी रामप्रकाश जी, मा० रामचन्द्र जी तथा वेदमित्र हापुड़वालों ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला। ब्रह्मचारी जी ने स्वामी जी के त्याग भावना से प्रेरणा लेने पर बल दिया। मा० रामचन्द्र जी ने शिक्षा विद्यालयों को अपने सिद्धान्तों के अनुरूप तथा स्वार्थ से ऊपर उठाने का आग्रह किया।

इसी कड़ी में आर्यसमाज कच्चा बाजार के विशाल खुले मैदान में स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस बड़े ही उत्साहपूर्वक मनाया गया जिसमें मुख्य अतिथि कु० गीता भारती (Hes) सिटी मैजिस्ट्रेट अम्बाला थीं। इस अवसर पर प्रो० जयदेव, श्रीकृष्ण वर्मा, श्री सतीश मित्तल आदि ने विचार रखे। इस सारे समारोह का आयोजन करने में समाज की प्रधान श्रीमती शान्तीदेवी जी की भूमिका विशेषरूप से उल्लेखनीय है।

—वेदमित्र हापुड़वाले महामन्त्री

निष्काम कर्म का अमरज्ञान-गीता जिसके सहारे भारतीय संस्कृति का महल खड़ा है

युगों-युगों से गीता का अमरज्ञान मनुष्यमात्र को सीधा और सच्चा ज्ञान का प्रकाश करता चला आ रहा है। यह ज्ञान किसी धर्म, जाति या देशविशेष के लिए नहीं अपितु समस्त संसार के लिए है। संसार में निष्काम कर्म का ज्ञान देनेवाला इससे अच्छा ग्रन्थ नही है।

गीता हमारे समस्त धार्मिक ग्रन्थों का सार है। सभी इस निर्विवाद ग्रंथ का पूर्णसम्मान करते हैं। आज इस अमरज्ञान का अनुवाद विभिन्न भाषाओं में हो चुका है। गीताज्ञान अमृतधारा है। इस अद्भुत ग्रन्थ में हमारे सारे प्रश्नों का उत्तर मिलता है।

५०६४ वर्ष बीत गये हैं। जब इस अमृतज्ञान के द्वारा वीर अर्जुन को युद्धस्थल में किंकर्तव्यविमूढ़ पाकर भगवान् कृष्ण ने उसका मार्गदर्शन किया था। अपने ही स्वजनों को पाकर वह कायरतारूपी मोह से ग्रसित होगया था। गांडीव फेंक उसने युद्ध करने से इन्कार कर दिया था। वह किसी भी तरह युद्ध के लिए उद्यत नही था।

उस समय भगवान् कृष्ण ने अर्जुन की वह कायरता दूर की थी। उसे उसके कर्त्तव्य का भान कराया था। वही अमरवाणी गीता के रूप मे हमारा मार्गदर्शन करती आई है। भगवान् कृष्ण ने कहा कि कायरता वीर योद्धाओं को शोभा नही देती कायरता पाप का ही प्रतीक है। आत्मा अमर है। इसका कभी नाश नही होता। जिस प्रकार व्यक्ति पुराने कपड़े उतार कर नये कपडे ग्रहण करता है उसी प्रकार आत्मा भी एक शरीर को छोड़ दूसरे को धारण करता है। अग्नि इसे जला नहीं सकती, पानी इसे गला नही सकता। यह पहले भी था, अब भी है तथा भविष्य में भी होगा।

उन्होंने बतलया था कि जिस मृत्यु का उसे वहम होगया था वह कुछ भी नही। जीव आत्मा का विनाश संभव है ही नहीं। इसलिए वह कायरतारूपी अकर्मण्यता छोड़ धर्मयुद्ध को जीतने के लिए तैयार हो जाए। यदि वह जीत गया तो उसे राज्य प्राप्त होगा और मृत्यु होनेपर उसे स्वर्ग की प्राप्ति होगी।

उन्होने आगे बतलाया था कि सब मरे पड़े हुए थे। उन्होंने योग द्वारा अर्जुन को यह दिखाया था। उन्होंने अर्जुन को निष्काम कर्म करने के लिए उत्साहित किया था। उसे फल की इच्छा न करने को कहा था। वीर अर्जुन को भगवान् कृष्ण द्वारा दिखाए गए सत्यपथ, ज्ञान से प्रेरित होकर युद्धरूपी कर्तव्य को निभाने को पूर्णरूपेण उद्यत व तत्पर होगया था। यह सुनहरी इतिहास हो है। उसने धर्म को जीत दिलवाई थी। धर्मपताका फहरी रखी थी। पाप का नाश किया था।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने लिखा है कि उन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम मे गीता माता से अन्तिम प्रेरणा प्राप्त की थी। शेरे-पंजाब लाला लाजपतराय ने भी लिखा है कि हमारे स्वतन्त्रता इतिहास में गीताज्ञान ने हमारा मार्गदर्शन किया है।

अजस्र अमरज्ञान व प्रकाशपुञ्ज श्रीमद्भगवत गीता के सामने नतमस्तक होना स्वाभाविक व उपयुक्त ही है।

महात्मा गांधी जी ने कहा है कि जब भी कोई समस्या आयी है। मैं भगवद्गीता की शरण में चला जाता हू वह मुझे अंधेरे में प्रकाश देती है। हमारे स्वतन्त्रता संग्राम में हमारे नेता स्वामी श्रद्धानन्द, पं० मदनमोहन मालवीय, पं० मोतीलाल नेहरु, सरदार पटेल, डा० राजेन्द्र प्रसाद, नेता सुभाषचन्द्र बोस सभी ने मुक्तकंठ से गीता की प्रशंसा की है कि इस अनमोल ज्ञान से स्वतन्त्रता संग्राम में प्रकाश मिला है। इसके अतिरिक्त हमारे सभी शहीदों मदनलाल ढीगरा, पं० काशीराम जोशी, रामप्रसाद बिस्मिल, पं० चन्द्रशेखर आजाद इत्यादि ने इस महान् गीता से बलिदान करने की शिक्षा ली है। गीता को अपने हाथों में लेकर बलिदान दिया है।

कुरुक्षेत्र मे गीता जयन्ती समारोह ५ दिसम्बर से १३ दिसम्बर तक बडे उत्साह से मनाया गया है। श्री जयराम विद्यापीठ के सचालक ब्रह्मचारी देवेन्द्रस्वरूप ने ब्रह्मसरोवर में एक बहुत बड़े पंडाल में गीता तथा भागवत को कथा विद्वान् सन्त किशोर व्यास ने किया है।

लेखक—डा० शान्तिस्वरूप शर्मा, पत्रकार, कुरुक्षेत्र

आवाज अपनी बुलन्द कर दो

जमाना बदल गया है बहरूपियापन छोड दो,
रूठे जनों को अब रजामन्द करदो।
खुशियां भरो विघ्न सकट हरो
धर्म पर आरूढ तन-मन पसन्द करदो।
फसी है राष्ट्र नौका भीषण लहरों मे,
किनारे लगा करके आनन्द भरदो।
संगठन बनाओ कार्य बिगड़े बनाये सब,
आवाज जगत् में अपनी बुलन्द करदो।
अविद्या कुमति पापिनी से बचकर रहो,
मद्य आदि मादक द्रव्यों के बाजार बन्द करदो।

लेखक—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती दिल्ली

आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन

हरयाणा प्रदेश के आर्यसमाज के अधिकारियों तथा कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने क्षेत्र के पंच, सरपंच, ब्लाक समिति तथा जिला परिषद् के चुनाव में विजयी उम्मीदवारों के नाम तथा पते लिखकर सभा कार्यालय दयानन्द मठ रोहतक में शीघ्र भेजने की कृपा करें, जिससे उनके नाम सर्वहितकारी में प्रकाशित किये जावें।

सम्पादक सर्वहितकारी

पं० रामप्रसाद बिस्मिल के बलिदान दिवस पर हवन

दिनांक १९-१२-९४ को पं० रामप्रसाद बिस्मिल के बलिदान दिवस पर ग्राम नलवा जिला हिसार में श्री भलेराम आर्य के घर पर सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जो द्वारा पारिवारिक हवन किया गया। इस अवसर पर क्रान्तिकारी जी ने विस्तार से पंडित जी के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डाला तथा उसको सच्चा देशभक्त एवं नवयुवकों का प्रेरणास्रोत बताया। यज्ञ पर कई परिवारों के बच्चों ने भाग लिया। - मन्त्री आर्यसमाज नलवा

४१ परिवारों के १५५ ईसाई वैदिक धर्म में

गत ११ दिसम्बर को साहेला थाने के खैरपाली बनईबीरी आदि ग्रामों के ४१ परिवारों ने आग्रहपूर्वक वैदिक धर्म में प्रवेश किया। ग्रामवासियों के विशेष आग्रह पर तत्काल यह शुद्धि का आयोजन उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में हुआ। यज्ञ एवं संस्कार श्री स्वामी सुधानन्द जी एवं श्री रंकमणी देवता ने करवाया। श्री स्वामी परमानन्द जी एवं वानप्रस्थी ओममुनि जी ने आशीर्वाद देकर दीक्षित व्यक्तियों का स्वागत किया।

विशिकसेन शास्त्री मन्त्री उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्य भारत से ही यूरोप गए थे !

नई दिल्ली—भारतीय-अमरीकी विद्वानों के एक वर्ग ने दावा किया है कि आर्य भारत के मूल निवासी थे। पारिस्थितिकीय और राजनीतिक कारणों से भारत से ही आर्य पश्चिम एशिया होते हुए यूरोप तक पहुचे।

शोधनकर्त्ताओं ने यह दावा ताजा पुरातात्त्विक अनुसंधानो, भूजल सर्वेक्षणो, उपग्रह से प्राप्त चित्रों, प्राचीन शिलों की वैज्ञानिक तिथियो, ज्यामिति और वैदिक गणित के सटीक आकड़ों के आधार पर किया है। उनका मानना है कि महाभारत का समय ईसा से लगभग ३१०२ वर्ष पूर्व था और सरस्वती नदी १९०० ईसा पूर्व में सूख गई थी।

भारतीय यूरोपीय इतिहासकारों का अभी तक यही मत रहा है कि मध्य एशिया में आर्यों ने ईसा से १५०० वर्ष पूर्व भारत पर उत्तर-पश्चिम छोर से आक्रमण किया, यहा के मूल निवासी द्रविडो को पराजित किया, सिंधु घाटी में उनके नगरों को तबाह किया और द्रविडो को हजारों मील दूर देश के धुर दक्षिणी हिस्से में धकेल दिया। लेकिन जिन तर्कों के आधार पर यह बात कही गई थी, भारतीय अमरीकी इतिहासकारों ने उन्हे हर ढंग से गलत साबित किया है।

आर्यों को विदेशी आक्रांता बतानेवाले इतिहासकारो का मत रहा है कि सभ्यता का उदय मेसोपोटामिया की नदी घाटियों से हुआ कि हड़प्पा के नगर-नियोजन पर यूनानी ज्यामिति की छाप है, कि भारत से आयरलैंड तक भाषाओं में समानता का कारण भी यही कि आर्य मध्य एशिया से भारत आए। इन सब तर्कों को भारतीय-अमरीकी शोध-कर्त्ताओ ने खोखला साबित करने का दावा किया है। इन शोधनकर्त्ताओं में अमरीका की अंतरिक्ष सस्था नासा के सलाहकार डा० राजाराम, डेविड फ्रावले, जार्ज फ्यूरिस्टीन, हैरी हिक्स, जैम्स शेफर और मार्क क्रैनोयर प्रमुख हैं।

सर्वश्री एस. आर राव, एस. पी. गुप्त, बी जी. सिद्धार्थ, पी वी पठान और भगवानसिंह भी इसी मत के समर्थक है।

बेंगलूर के डा० एन. एस. राजाराम गणितज्ञ और कम्प्यूटर विशेषज्ञ भी हैं। इस समय वह अमरीका में टेक्सास के ह्यूस्टन नगर में रह रहे हैं। उन्होंने यहां 'यूनिवार्ता' को बताया कि भारतीय-अमरीकी इतिहास-कारों ने सच की तह तक पहुंचने के लिए खोजबीन की चौतरफा रणनीति अपनाई और प्रमाणों के लिए बीसवी शताब्दी में उपलब्ध अत्याधुनिक संसाधनों का सहारा लिया।

डा० राजाराम का मत है कि १९वी शताब्दी के भाषाशास्त्र के सिद्धान्त ऐसा ऐतिहासिक परिदृश्य खीचते हैं, जो पिछले दो हजार वर्ष की भारतीय परम्परा को खारिज करने की सलाह देता है। दूसरी ओर भारत-अमरीकी इतिहासज्ञों का दृष्टिकोण यह है कि परम्पराओं को स्वीकार किया जाना चाहिए और इतिहास के माडलों को सुधारा जाना चाहिए। यदि नए सबूत उनके विपरीत हो तो उन माडलो को अस्वी-कार भी किया जा सकता है।

इस दृष्टिकोण को सामने रखकर उन्होने भारतीय इतिहास की जड़ों की ओर लौटना शुरू किया तो पाया कि महाभारत का समय ईसा से ३१०२ वर्ष पूर्व के आसपास था। इस काल का निर्धारण कई तरह से किया गया।

महाभारत के इस काल को मिथक नही माना जा सकता क्योंकि उपग्रह से प्राप्त चित्रो से पता चलता है कि सरस्वती नदी १९०० ईसा पूर्व मे सूख गई थी। महाभारत के वर्णनों मे सरस्वती का उल्लेख मिलता है। सूत्र साहित्य में अत्यधिक विकसित ज्यामिति शास्त्र है। लिहाजा ज्यामिति यूनानियों से उधार ली थो। हड़प्पा के नगरो का नियोजन और वास्तुशिल्प उच्चकोटि के ज्यामिति शास्त्र का प्रतिफल है। जिस प्रमेय को पाइथागोरस की प्रमेय कहा जाता है, उसका उल्लेख पाइथागोरस से दो हजार वर्ष पहले बौधायन ने अपने सुलब सूत्र में कर दिया था।

सुलबसूत्र में हवनकुंड की जो ज्यामिति दी गई है, वह ३००० ईसा पूर्व के हड़प्पा सभ्यता के अवशेषों मे पाई जाती है। सूत्रों के रचयिता अश्वालन ने महाभारत के प्राचीन ऋषियों का उल्लेख किया है और इन्ही सूत्रो को हड़प्पा सभ्यता के समय साकार पाया गया। लिहाजा हड़प्पा के शहर २७०० ईसा पूर्व मे जिस समय अपने गौरव के चरम पर थे उससे कही पहले महाभारत का युद्ध हुआ था।

इन सब ठोस प्रमाणो के आधार पर इन इतिहासकारों ने प्राचीन भारतीय इतिहास के सूत्र ३१०२ ईसा पूर्व मे हुए महाभारत मे पकडने शुरू किये। इससे यह तर्क स्वत: खारिज हो जाता है कि सभ्यता का अकुरण ३००० ईसा पूर्व में मेसापोटामिया से हुआ। इससे करीब एक हजार वर्ष पहले तो ऋग्वेद पूर्ण होगया था। अर्थात् ऋग्वेद काल की शुरुआत इससे कही पहले होगई थी। लोकमान्य तिलक और डेविड फ्रावले जैसे वैदिक विद्वानों ने ऋग्वेद में ६००० ईसा पूर्व की तिथियों का सकेत भी पाया है।

प्राचीन इतिहास का यह महत्त्वपूर्ण दौर था। सूद राजा की लड़ाई ने पृथुपठवा, पसू और एलिना लोगों को खदेड दिया। बाद मे परसू फारसी कहलाए और एलिना लोग यूनानी कहलाए। सूद के अन्य प्रतिद्वंद्वियों में पक्था और बलद्दन भी शामिल थे। बाद में उनकी पीढ़िया पठान या पख्तूनी और बलूची कहलाई।

४-१२-९४ —दैनिक हिन्दुस्तान

सड़क का नाम दयानन्द मार्ग रखा गया

गुडगाव—स्थानीय विकास मन्त्री धर्मवीर गाबा ने पटौदी चौक से सोहना अड्डा तक की सडक का नाम दयानन्द मार्ग और आर्यसमाज जैकमपुरा रोड का नाम श्रद्धानन्द मार्ग करने की घोषणा की है।

श्री गाबा बीते दिवस स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर आयो-जित एक सभा को सम्बोधित कर रहे थे। आर्य केन्द्रीय सभा के तत्त्वावधान मे आयोजित सभा की अध्यक्षता प्रो० उत्तमचन्द शरर ने की। दिल्ली प्रदेश के वित्तमन्त्री जगदीश मुखी, गुडगाव रत्न सत्यपाल आर्य, गुलाबसिंह राघव आदि ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

इससे पूर्व आर्यसमाज नई कालोनी से आरम्भ होकर शिवपुरी, भीमनगर, न्यू रेलवे रोड एव मुख्य बाजार से होते हुए कबीर भवन तक एक विशाल शोभायात्रा निकाली गई। तीन गुरुकुलों जमाल (पटौदी), भादरा (नगीना), कलां (बहादुरगढ) के छात्र-छात्राओं ने तलवार, लाठी चलाकर मन्त्रमुग्ध प्रर्शन किया। भजन मण्डलियो ने ईश्वरभक्ति के गीत गाए। (दैनिक जागरण)

पं० सेवाराम आर्य दिवंगत

आर्यसमाज के विख्यात प्रचारक पं० सेवाराम आर्य का तिथि १५-१२-९४ को देहावसान होगया। उनकी आयु ८४ वर्ष थी। पडित जी कई वर्ष तक आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली तथा गुरुकुल भैसवाल व कन्या गुरुकुल खानपुर मे उपदेशक रहे। वह ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के दीवाने थे। यज्ञ के प्रति उनकी विशेष श्रद्धा थी। ६०वें दशक मे उन्होने भुगारका मे ८० मन घी का यज्ञ करवाया था। उनका अनेक आर्यसमाजों, गुरुकुलों तथा आर्यविद्यालयो से सम्पर्क था। हम प्रभु से प्रार्थना करते है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

डा० सत्यवीर विद्यालंकार
उपमन्त्री आर्य प्र० नि० सभा हरयाणा

शोक समाचार

आर्यसमाज मालकोश जिला भिवानी के पुराने कार्यकर्ता श्री मुन्शीराम जी का १७ दिसम्बर ९४ को ९९ वर्ष की आयु मे हृदयगति बन्द होने से निधन होगया। उन्होने सदा आर्यसमाज के कार्यो मे भाग लिया। मृत्यु से दो दिन पूर्व उन्होने शराबन्दी समर्थक उम्मीदवारो के पक्ष में मतदान किया था। —कृष्णकुमार आर्य

(पृष्ठ २ का शेष)

दूसरा जेली उन चौकीदार सिपाहियों को उठा देता है। वे सिपाही सारी सेना एकत्रकरके श्री बेंदाराम को पकड़ लेते हैं और नवाब लोहारू को बचा लेते हैं।

आगे इतिहास साक्षी है कि नवाब ने बेंदाराम के साथ ऐसे अत्याचार किये कि दो घोड़ों के पीछे उसके हाथ बांध दिए और सड़कों पर घुमाया गया। ऐसी यातनाएं देकर उस बहादुर बेंदाराम की हत्या की गई। पुराने व्यक्ति बताते हैं कि जब नवाब ने बेंदाराम को घोड़ों के पीछे बांधा और अपने घोड़े दौड़ाए तब बेंदाराम ने उछलकर घोड़ों के पैर पकड़कर अपनी शक्ति द्वारा एक घोड़े को नीचे गिरा दिया था। तब श्री बेंदाराम को पीड़ाएं देकर कमजोर करके नवाब ने बेंदाराम को मारा था और उस कायर भीरू पापी नवाब ने श्री बेंदाराम की लहास हिन्दुओं को नही दी थी। और उस बेंदाराम को वही दफनाया गया जहां पर उनके सिपाही समसुद्दीन अली अहमद को दफनाया था। आज भी उन सभी के श्मशान घाट पर एक लम्बा चौड़ा चबूतरा बना हुआ है। यह चबूतरा लोहारू के पुराने शहर मे अब भी मौजूद है। फिर मढोली के बारे में एक कहावत चली थी कि—

खाटां बीच खटोली थी, कदे यहां मढोली थी।
नवाब ने जुल्म ढाया था, बेंदे के घर आया था।
कहां यहां पर थाना था, पर घर बेंदे का जाना था।

नोट—यह सायर इसलिए कहे गए थे कि जब बेंदाराम की बहादुरी देखकर नवाब लोहारू बौखला गया था और नवाब को भय भी होगया था कि मढोली में और कोई बेंदा न बन जावे, इसलिए मढोली मे नवाब ने स्थायी रूप से थाना बना दिया था, १००,२०० सिपाही एवं थानेदार वहां रहते थे। तब यह कहावत चली थी।

आपका—हवासिह आर्य, आर्य मित्र सेवक
आर्यसमाज लोहारू, जिला भिवानी

नवनिर्मित कुएं के उद्घाटन पर हवन

दिनाक २१-१२-९४ आर्य निवास नलवा (खेतों की ढाणी) हिसार में पारिवारिक हवन का आयोजन किया गया। प्रातःकाल स्वामी अग्निदेव जी भीष्म (हिसार) द्वारा बृहद्यज्ञ व देवयज्ञ किया गया। स्वामी जी ने यज्ञ एवं सत्संग के लाभ पर प्रकाश डाला। साथ में ईश्वर भक्ति एवं महिलाओं के सुन्दर शिक्षाप्रद भजन भी सुनाये।

इस अवसर पर सभा उपदेशक एवं संयोजक शराबबन्दी समिति जिला हिसार के श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी द्वारा अपने ज्येष्ठ सुपुत्र स्वर्गीय श्री सुरेन्द्रसिह आर्य की स्मृति में १६ हजार रुपये खर्च करके खेत में एक कुएं का निर्माण कराया है। इस पर स्वामी जी के करकमलों द्वारा एक पत्थर लगवाया है। जिस पर निम्न वाक्य लिखे हैं— ॥ ओ३म् ॥

"इस कुएं का निर्माण श्रीमती सरोजबाला आर्या ने अपने दिवंगत पति श्री सुरेन्द्रसिह आर्य की पुण्यस्मृति में करवाया। दिनांक २६-१०-९४" भगवान् की विशेष कृपा से इस कुएं का पानी शहद के समान मीठा है स्वामी जी ने इस पुण्यकार्य को जल यज्ञ की संज्ञा दी और आर्य परिवार को धन्यवाद दिया। हवन पर नजदीक की ढाणियों के अतिरिक्त ग्राम नलवा, बालावास, कंवारी, गुंजार तथा सुलतानपुर के नर-नारियों ने भाग लिया।

भलेराम आर्य, प्रचार मन्त्री आर्य समाज, नलवा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रैस रोहतक (फोन: ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्तीभवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन: ३०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० १३२०/७३ त नं० ३०/२२ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, ०९५

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष २२ अंक ८ १४ जनवरी १९९५ (वार्षिक शुल्क ५०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-००

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के १६-१-९५ को जन्म दिवस पर विशेष लेख

वे तेजपुञ्ज—वे महाबलि

रचयिता—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन अबोहर-१५२११६

ऋषि दयानन्द की परम्परा में स्वामी स्वतन्त्रानन्द का बहुत ऊंचा स्थान है। उनके जीवन में तीन विभूतियों के व्यक्तित्व का समावेश पाया जाता है। उनके जीवन में कई ऐसी घटनाएं घटी जो हम पर उनके तप व ब्रह्मचर्य-व्रत के पालन करने की उनकी दृढ़ता की गहरी छाप छोड़ती हैं। ऐसी प्रेरणाप्रद घटनाओं का पाठ करते समय हमें ऋषिवर दयानन्द का ध्यान आता है। यथा मालवा पंजाब में बाजाखाना ग्राम के बाहर गुरुद्वारा में दोपहर के समय झुलसा देनेवाली लू में जब एक महिला महाराज के पास आई तो आपने उसे बड़ा दुत्कारा कि तू इस समय यहां क्यों आई। उसने कहा कि दवाई लेने आई हूं। आपने कहा—"यह कौनसा दवाई लेने का समय है!" तब उसने स्वीकार किया कि वह कमांध होकर उनके पास आई है।

तब आपने कहा—"मैं वैद्यक तो आज से ही छोड़ता हूं परन्तु, ब्रह्मचर्य व्रत को नहीं छोड़ सकता।"

यह है महाराज का वह रूप जो उनको ऋषि दयानन्द के निकट लाता है। महर्षि दयानन्द सरीखा बाल ब्रह्मचारी ही इस प्रकार के आजन्म ब्रह्मचारी शिष्य को जन्म दे सकता है।

हैदराबाद सत्याग्रह के विजेता फील्ड मार्शल स्वतन्त्रानन्द देहली पधारे तो उनके प्रशंसक सेठ जुगलकिशोर बिड़ला ने उन्हीं के शिष्य पं० रुचिराम जी को भेजकर महाराज को भोजन का निमन्त्रण दिया। रुचिराम जी ने साथ ही कह दिया कि सेठ जी आज नोटों का थाल दक्षिणा में देंगे। यह सुनते ही वीतराग महात्मा ने कहा, "दक्षिणा के लोभ में भोजन करनेवाले बहुत हैं किसी और को बुलवालें सेठ जी।"

महर्षि दयानन्द ने काशी नरेश ईश्वरी नारायणसिंह को उसके घर पर रामनगर जाकर कहा कि सत्य असत्य के निर्णय के लिये अपने पण्डितों से मेरा शास्त्रार्थ करवा दो। राजा ने टालमटोल करदी। तब गंगा पार करने के लिए वहां पुल नहीं था। राजा ने काशी आने के लिये ऋषि से अपनी नौका में बैठने के लिए विनती की। ऋषि ने नौका ठुकरा दी और तैर कर ही गंगा को पार करके काशी आगये। ऋषि जी का यही रूप स्वामी स्वतन्त्रानन्द का आदर्श था।

गढ़मुक्तेश्वर के मेले में किसानों ने अपना विवाद निपटाने के लिये श्री महाराज को अपनी शोभायात्रा में अपने किसी नेता की बजाय हाथी पर बिठा दिया और अपनी पार्टी का झण्डा उनके हाथ में थमाना चाहा। स्वामी जी ने कहा, "हम साधु हैं। हम ईश्वर के ओ३म् नाम का झण्डा उठा सकते हैं। किसी पार्टी का झण्डा हाथ में नहीं ले सकता।" बहुत कहा गया परन्तु वे नहीं माने। यह है ऋषि दयानन्द का गूढ़ा रंग जिसके कारण स्वामी स्वतन्त्रानन्द आर्यसमाज के सर्वमान्य सेनापति बने।

सच्चाई तो यह है कि आर्यसमाज में कई अच्छे-अच्छे नेता, वीर, शहीद, मार्गदर्शक हुए हैं, परन्तु अखिल भारतीय स्तर का सेनापति तो एक ही हुआ है और वे थे स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज।

सन् १९४६ में स्यालकोट आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर मुस्लिम लोगों ने धावा बोल दिया। स्वामी जी के डेरे पर लोगों ने उन्हें सूचना दी तो बोले, "कोई बात नहीं। डरो मत मैं अकेला ही इनके लिए पर्याप्त हूं।"

यह वह रूप है जो उन्हें स्वामी श्रद्धानन्द जी के निकट लाकर खड़ा कर देता है। चांदनी चौक घण्टाघर में गोराशाही की संगीनों के सामने खुला महाप्रतापी श्रद्धानन्द का सीना स्वामी स्वतन्त्रानन्द का आदर्श था।
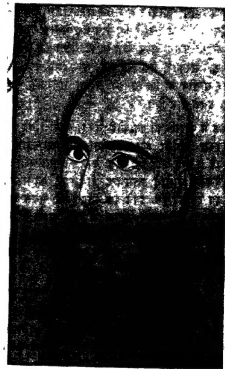
स्वामी जी महाराज लाहौर रेलवे स्टेशन पर गये। किसी स्टेशन का टिकट मांगते हुए चार-छः आने के पैसे आगे किए। बाबू ने कहा, स्वामी जी वहां का टिकट इतने पैसे में नहीं आता। आपने कहा, "इतने में जहां तक टिकट आता है वहीं तक का दे दो। हमने तो उपदेश ही करना है। वही कर देंगे। हमने कौनसा बारात में जाना है।"

यह है वीरशिरोमणि प० लेखराम की रंगत ! उन्हें तो यहां वहां प्रचार करना है, कहीं भी ले चलो और कोई भी ले चले। लोहारू में लाठियों की वर्षा हो रही है। सिर पर कुल्हाड़े का भी वार किया गया। पैंसठ (६५) वर्षीय भीमकाय ब्रह्मचारी डटकर खड़ा है। मन्द-मन्द वायु मौन स्वरों में प० लेखराम रचित एक फारसी कविता का गान कर रही थी। उस कविता का सारांश यह है—इस पथ पर मुझे मार दो, काट

दो या जला दो परन्तु मैं ईश्वर के वेद-पथ से मुख नहीं मोड़ सकता। सारा संसार भले ही रूठ जावे, अपने बेगाने सब मुझे छोड़ दें परन्तु मैं ईश्वर के सिवा किसी की भी परवाह नहीं करता।"

सन् १९०० में गृह-त्याग करके विरक्त होगये। विदेशों में प्रचारार्थ चले गये। लौटकर भारत भर का पैदल भ्रमण कर रहे थे। साथ साधु मण्डली थी। तब आप कोपीनधारी थे। नंगे पांव थे। ऋषि भूमि गुजरात जानेवाले थे कि नासिक के कुम्भ के मेला मे पहुंच गये। आपके पिता जी बडौदा राज्य की सेना में एक उच्च पद पर आसीन थे। उनकी मेले पर कुछ ड्यूटी थी। उनके पास अपने गांव के भी कई सैनिक थे। उन सैनिकों ने साधुमण्डली में अपने लम्बे-चौड़े केहरसिंह (स्वामी जी का पूर्व नाम) को पहचान लिया और इनके पिता जी को एक व्यक्ति भेज कर बुलवा लिया। उन्होंने साधु मण्डली को घेर लेने की आज्ञा दी।

नासिक स्वतन्त्रानन्द जी का सिद्धपुर (जहा ऋषि को पिता ने पकडा था) सिद्ध हुआ। यह १९०८ की घटना है। तब पिता जी ने कहा, मैं तो तुम्हे जरनैल करनैल बनाना चाहता था परन्तु तू तो फकीर बन गया। पुत्र को नंगे पैर देखकर वह बहुत दुःखी हुए परन्तु पुत्र ने जो निश्चय कर लिया और जो मार्ग चुन लिया उससे फिर पीछे न हटे।

ऋषिकेश से बद्रीनाथ के लिए विमान सेवा आरम्भ हुई। प्रथम उडान का उद्घाटन करना था। कम्पनी ने इस उडान के लिए स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को चुना। उन्हें हरिद्वार ले जाया गया। विमान यात्रा का यह नियम था कि यात्री का सामान समेत भार ढाई मन(२½)से ऊपर नहीं होना चाहिये और स्वामी जी का तो अपना भार ही पौने तीन मन था। लो ! अब यात्रा कैसे होगी? कम्पनी ने इस नियम को तोड़कर श्री स्वामी जी को प्रथम उडान का प्रथम यात्री चुना।

ऐसे तेजस्वी प्रतापी संन्यासी बाल ब्रह्मचारी को पाकर वीर लेखराम का समाज धन्य-धन्य हो गया। भाई परमानन्द जी व आचार्य चमूपति के प्राणों की रक्षा के लिए अपने जीवन को दाव पर लगाया। वे अंग-संग रहनेवाले प्रभु को अंगरक्षक मानते थे। हमने फिर समाज मे ऐसा भी पतन देखा है कि साधु वेश में नकली सन्यासी सरकार के अंगरक्षकों को लेकर सांस लेते थे। उनको इस बात पर अभिमान था कि उनकी सरकार तक पहुंच है और हमारे स्वतन्त्रानन्द जी को इसी बात पर सन्तोष था कि उनका प्रीतम सर्वरक्षक परमेश्वर सदा सर्वदा सर्वत्र उनके पास है।

रोहतक में पौराणिकों का कोई वक्ता आया। वह प्रतिदिन आर्य-समाज के विरुद्ध विषैला व्याख्यान देता था। श्री स्वामी जी महाराज रोहतक पधारे। उन्हे आते ही इस बात का पता चला तो तुरन्त एक व्यक्ति को भेजकर श्रीमान् उत्तमचन्द जी 'शरर' को मठ में बुलवाया। 'शरर' जी दंग रह गये कि इतने बड़े नेता हमारे सबसे बड़े सन्यासी ने मुझे कैसे याद कर लिया। समझ में नहीं आया कि क्या काम है। 'शरर' जी मठ मे पहुंचे तो स्वामी जी ने कहा, पौराणिक दुर्गामन्दिर में वैदिकधर्म पर वार कर रहे हैं। आप अपनी सभा की मनादी करवाये। मै उत्तर दूंगा।

श्री शरर जी तो पहले ही चाहते थे कि आर्य लोग कुछ करें। सभा की गई। अब आर्यों के जोश का भी कोई ठिकाना नहीं था। स्वामी जी ने मेघगम्भीर स्वर में वैदिक धर्म का सन्देश सुनाया। श्री शरर जी ने पाखण्डगढ़ को अपने तर्कों से ध्वस्त करके रख दिया। ऋषि मिशन की इतनी चिन्ता थी उनको।

गुरुकुल नरेला मे स्वामी आत्मानन्द जी महाराज पधारे। स्वामी वेदानन्द जी भी वहां पहुंच गये। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज दिल्ली आए। उनके मन में भी नरेला गुरुकुल देखने की मौज आगई। सभा चल रही थी। स्वामी आत्मानन्द जी का प्रवचन हो रहा था। स्वामी स्वतन्त्रानन्द सामने की बजाय पीछे से आकर स्वामी आत्मानन्द जी के चरण स्पर्श करने लगे तो स्वामी ओमानन्द जी के शब्दों में वहां लोगों ने हमारे बाबों का एक विचित्र मैच देखा। स्वामी आत्मानन्द जी और स्वामी वेदानन्द जी महाराज तो स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के चरण छूने का यत्न करते देखे गए और स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी उन दोनों के चरण छूना चाहते थे। कितने महान् थे हमारे महात्मा संन्यासी ! आह! वे अब कहां छुप गये हैं ?

लौहपुरुष स्वर्गीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के प्रति

देकर लहू की धार भी

उपकार वे करते रहे।
दीनों के दुःख हरते रहे॥
ईश्वर की वाणी वेद का।
वे पाठ नित्य करते रहे॥
सब एषणायें जीत कर।
ईश्वर भजन करते रहे॥
ऋषिराज के आचरण के।
सांचे में वे ढलते रहे॥
पैसा कभी मांगा नहीं।
भिक्षा वे नित्य करते रहे॥
जन-जन में वे कर्त्तव्य की।
सद्भावना भरते रहे॥
उनकी अनूठी चाल थी।
निज लक्ष्य को बढ़ते रहे॥
ब्रह्मचारियों की शान वे।
तन तान कर चलते रहे॥
वे धर्म रक्षा के लिए।
जी जान से लड़ते रहे॥
देखा जहां जौरो जबर।
प्रतिकार वे करते रहे॥
देकर लहू की धार भी।
मुनिराज वे हंसते रहे॥
वे तपोधन कर्मयोगी।
क्या थे ! क्या करते रहे॥

मद्यपान व लाटरी

हमारे वैदिक शास्त्रों व उपनिषदों में नशे और जुए दोनों को ही निन्दित और अवैध माना गया है। इतिहास इसका गवाह है कि भारत में किसी भी कुशल प्रशासक के शासनकाल में इन दोनों कुरीतियों पर कानूनन अंकुश व प्रतिबन्ध रहा है, क्योंकि इनका प्रचलन प्रजाहितकारी नहीं माना जाता और वास्तव में है भी नहीं। यह विनाशकारी है। इसके लिए महाभारत मे कौरवों-पाण्डवों का उदाहरण पूर्णतया चरितार्थ होता है। प्रशासन कल्याणकारी और जनहितकारी हो, तभी आम प्रजा का कल्याण हो सकता है, पर हैरत की बात है कि हिमाचल सरकार नशे और जुए को प्राथमिता के आधार पर ले रही है। पिछले दिनों जगह-जगह शराब के ठके खोले गए। अब एक नहीं छह-छह नई लाटरिया चला दी और आम गरीब पिछड़ी जनता को इसमें झोंक दिया। नशेड़ी अधिकतर मेहनतकश लोग होते हैं। शारीरिक थकावट को दूर करने के लिए वे दारू (शराब) का सहारा लेते है और इसी में समाकर रह जाते है। गरीब लोग ही रातों-रात लखपति बनने की लालसा से लाटरी खरीदते हैं और 'आज नहीं तो कल' के सिद्धांत पर चलकर वे अपना सब कुछ बर्बाद कर लेते हैं। माननेवाली बात है कि शराब के ठेकों व लाटरियो से सरकार को पर्याप्त मात्रा मे राजस्व मिलेगा और यह कल्याणकारी योजनाओं पर लगेगा मगर दूसरी तरफ एक नजर समाज में फैल रही कुरीतियों पर दौड़ाएं तो इनसे मिलनेवाले राजस्व से बेहतर है इनको बन्द करना, क्योंकि समाज में इनसे मौलिकता और नैतिकता का हनन होगा, जो हमारे लिए बहुत बड़ी हानि है। यह भी मानते हैं कि इसकी वैधता है, मगर वह आजादी भी क्या, जो खुद को गुलाम कर जाए।

—प्रवीन मेहरा, नगरोटा सूरियां, कांगड़ा (जनसत्ता)

शराबबन्दी के लिए सम्मेलन

रोहतक— हरयाणा में शराबबन्दी लागू करवाने की मांग को लेकर विकास पार्टी महिला सम्मेलन आयोजित करेगी। पार्टी की महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्षा श्रीमती कृष्णा गहलावत ने कहा कि राज्य के प्रत्येक जिले में महिला सम्मेलन करके महिलाओं को जागृत किया जाएगा।

—जनसत्ता

जिसका अन्त शराब पीने से हुआ

हरफूल जाट जुलाणी का संक्षिप्त जीवन-परिचय

(द्वारा प्रतापसिंह शास्त्री, पत्रकार)

आजादी से पूर्व जीन्द रियासत थी, इस रियासत का छोटा-सा गाव आज भी जीन्द से कुछ दूरी पर स्थित है जुलाणी। जीन्द से जाखल जो रेलगाड़ी जाती है, पहला रेलवे स्टेशन पड़ता है बरसौला गाव। जीन्द और बरसौला के मध्य रेलवे लाईन से लगता गाव है जुलाणी। इस गांव को आज भी लोग 'जुलाणी' हरफूल जाट का गाव कह कर परिचय देते है।

हरफूलसिह का जन्म लगभग १८८० के आसपास हुआ। इसके जन्म के बारे में मतभेद हो सकते है, फिर भी हरफूलसिह का पिता क्षत्रिय जाट था, माता को कुछ लोग छिपी (दर्जी) कौम से बताते हैं। इसके दो भाई और एक बहिन थी। हरफूलसिह ने मिडल तक शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद जब अंग्रजों की जर्मनी से लडाई हुई तब गाधी जी ने तथा भारतीय नेताओ ने भारत के नवयुवकों को सेना में भर्ती होने का आह्वान किया। हरफूलसिह बडा बहादुर खूबसूरत नौजवान था वह भी सेना में भर्ती होगया। हरयाणा के जाट युवकों ने बडी बहादुरी दिखाई और अनेक कहावते प्रसिद्ध होगई जैसे—'आठ फिरगी नौ गोरे लड़े जाट के दो छोरे"। "आठ मुल्ला बारह पठान मारे जाट के चार जवान"। अंग्रेज सरकार ने हरफूलसिह को यद्यपि बहादुरी का खिताब दिया था किन्तु उसकी कुछ महत्त्वपूर्ण गलतियों के कारण युद्ध समाप्त होने पर उसे फौज से निकाल दिया था। यह भगौड़ा हो गया था। उसके भाई उसके हिस्से की जमीन जायदाद पर कब्जा कर बैठे। हरफूलसिह ने भाइयों तथा पचो से न्याय मागा उसे न्याय नही मिला। बल्कि उसे नफरत, उपेक्षा, दूषित सामाजिक व्यवस्था, गरीबों का शोषण, चन्द समाज के सामन्तवादी लोगों द्वारा अत्याचार, साहूकारों की लूट-खसूट आदि कारणों से हरफूलसिह बागी होगया। उसने निश्चय किया ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहिए। उसने बारह बोर का पिस्तौल खरीदा और अपने पिता की जायदाद में हिस्सा देने से इंकार करनेवाले अपने भाइयों तथा उनके पक्षधर नम्बरदारो को मौत के घाट उतार दिया। लोगों ने उसे डाकू फरारी आदि कहना शुरू कर दिया। डाभी गांव के अपने ही रिश्तेदार श्रीराम द्वारा हरफूलसिह के खानदान में लड़की देने का वचन देकर इन्कार करने पर उस श्रीराम और पुलिस के दरोगा तथा सिपाहियों का वध करके यह सिद्ध कर दिया कि मैं अपमान को बर्दास्त नही करूगा। हरफूलसिह से समाज के शोषक अत्याचारी भेड़िये डरने लगे। वह गरीबों की इज्जत लूटनेवाले बड़े-बड़े नामी व्यक्तियों को गोली मारकर चैलेन्ज करता था कि तुम गरीबों को बेसहारा समझकर उनके साथ अन्याय मत करो। हरफूलसिह उस दूषित व्यवस्था के परिवर्तन की माग का प्रतीक था। जीन्द की रियासत के राजा को हरफूलसिह की बाबत उन लोगों ने शिकायत की जिनकी राजमहल तक पहुंच थी। जीन्द के राजा ने अपनी रियासत के पुलिस अधिकारी किशनचन्द, मिठू पठान व सिपाहियों को हरफूलसिह को गिरफ्तार करने के लिये भेजा। अकेले ने मुकाबला किया, अनेक दरोगा व सिपाही मुकाबले में मारे गये। हरफूलसिह ने जब सुना गोहाना में कसाई गोमाता को हत्ते में काटते हैं। वह अपने मित्र के सहयोग से वहां पहुंचा और उस हत्ते के संचालकों, कसाइयों को मौत के घाट उतारकर हत्ता बन्द करने को विवश कर दिया और हजारों गऊओं का जीवन बचाकर पुण्य कमाया, अनेक ऐसे बड़े जमींदारों को भी गोली का निशाना उसने बनाया जो जीन्द रियासत के राजा से इनाम लेने के लिए हरफूलसिह को गिरफ्तार कराने की प्रतिज्ञा कर बैठे थे। जीन्द रियासत के सुवाणा गांव के चन्दगी और केसू रांघड़ उसे गिरफ्तार करने के लिये पीछा करते थे इन्होंने एक गरीब को भी मार डाला, सारा गांव इनसे डरता था, ये गांव में गरीब की इज्जत लूटते थे, हरफूल ने इनसे बदला लेने के लिए इन्हें मौत के घाट उतार दिया। जींद के राजा को हरफूल के कारनामे सुनकर नींद न आती थी। उसने खूंखार थानेदार चन्दूसिह को सिपाही देकर मुकाबला करने भेजा। हरफूल ने साधु व सपेरे का भेष बनाकर चन्दूसिह थानेदार को मूर्ख बनाया। हरफूलसिह को गिरफ्तार करने के बहाने चन्दूसिह सपेरे के साथ वन मे पहुंचा हरफूलसिह ने कहा चन्दूसिह मैं सपेरा नही हरफूल जाट हू। चन्दूसिह के होश उड गये। वह चन्दूसिह तथा अन्य सिपाही हरफूल जाट की बारह बोर की पिस्तौल से मारे गये। नकली हरफूल जाट बनकर लूटनेवाला एक व्यक्ति भी हरफूल द्वारा मारा गया। हरफूल जाट की बहादुरी व आतक की घटनाओं को सुनकर जीन्द रियासत का राजा घबरा गया। उसने अपनी रियासत के एक शक्तिशाली दरोगा मनसुख के जिम्मे लगाया कि इस जाट को पकडो या मारो। एक अन्य दरोगा फारुख खा को भी यही आदेश किया किन्तु ये सब हरफूलसिह जाट जुलाणी वाले के साथ मुकाबला करते हुए मारे गये। रोहतक के कसाइयों ने रोहतक में बूचडखाना खोल रखा था। हरफूलसिह ने बूचडखाने पर हमला कर कसाइयो को मारा। रांगडो का सरदार खुदाबक्स नम्बरदार तथा उसके पाच भाई खूंखार रांघड़ थे उन्होंने हरफूलसिह को घेर लिया लेकिन बहादुर जाट ने उन्हें मौत के घाट उतारकर अपनी वीरता का परिचय दिया। हरफूल जाट कभी शराब नही पीता था। अन्त में पुलिस ने एक और षड्यन्त्र और हरफूल को खत्म करने का रचा। कहते है कि वह अपने एक मित्र के पास खेत मे ठहरा हुआ था। वहा गलती से 'विनाशकाले विपरीतबुद्धि" नाश का समय आने पर बुद्धि उल्टे काम करने लग जाती है के अनुसार शराब पीली और पुलिस ने चारो तरफ से घेर लिया। जिस कारण वह मुकाबले मे मारा गया लेकिन पुलिस कई घण्टे तक लाश पर गोला-बारी करती रही किन्तु उस शेर के भय से नजदीक न आ सकी। ऐसा था योद्धा हरफूल जाट जुलाणी का जिसका विनाश शराब के कारण हुआ।

शराब का खर्च किस खाते में ?

चुनाव आयोग के आदेशानुसार नगर परिषद् के चुनाव लडनेवाले कई प्रत्याशियो द्वारा चुनाव प्रचार के दैनिक खर्च का जो विवरण नियमित रूप से सरकार को भेजा गया, उसमे शराब का उल्लेख तक नही मिलता, जब कि जीत की आस लगाये बैठे ये प्रत्याशी शराब पर अधिक खर्च कर रहे थे। शाम ढलते ही इन प्रत्याशियों के चुनाव कार्यालयों के आस-पास शराब के दौर चलते आम देखे जा सकते थे। चुनावी खर्च मे डीजल पैट्रोल, गाडी तथा माईक आदि के खर्च का ब्यौरा देकर पूर्णविराम लगा दिया गया। मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए कुछ प्रत्याशी शराब को हथियार के रूप मे प्रयोग कर रहे थे।

चन्द्रशेखर मेहता (रतिया) हिसार
(दैनिक पजाब केसरी)

मा० निहालसिंह आर्य द्वारा दान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के आदर प्रचारक तथा आर्यसमाज जसौर खेडी जिला रोहतक के संरक्षक मा० निहालसिह आर्य ने सभा के ऋषिलंगर के लिए ५००) रु० तथा दयानन्द मठ रोहतक के दैनिक यज्ञ हेतु ५००) रु० प्रदान किए हैं।

बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

टोहाना—शहीद न किसी पार्टी न धर्म और नही किसी जाति के होते हैं। वे तो सबके सांझे मानवता के चमकते सितारे होते हैं। उनके प्रति श्रद्धा रखना प्रत्येक आदमी का धर्म है। यह बात हरयाणा विधान सभा में विपक्ष के नेता संपतसिंह ने यहां आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर कही।

उन्होंने कहा कि स्वामी जी का जीवन प्रेरणा देता रहेगा। उन्होंने स्वराज्य स्वशिक्षा की प्रेरणा दी। गुरुकुल कांगड़ी व अनेक गुरुकुल खोलकर अंग्रेज सरकार की शिक्षा प्रणाली को झकझोर दिया।

इस अवसर पर राज्य स्तरीय भाषण व भजन प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के जन्म दिवस पर आर्ययुवक सम्मेलन

पलवल (प्रे० वि०)। हरयाणा आर्य युवक परिषद (रजि०) के तत्त्वावधान में नेता जी सुभाषचन्द्र बोस के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में २२ जनवरी १९९५ को आर्य युवक परिषद् का प्रान्तीय रजत जयन्ती महासम्मेलन स्वामी विवेकानन्द हाई स्कूल, रेलवे रोड पलवल में होगा। इस अवसर पर आर्य युवक परिषद् के संस्थापक स्वर्गीय मा० धर्मपाल आर्य की स्मृति में व्यायामशिक्षको व शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

प्रान्तीय रजत जयन्ती महासम्मेलन दो सत्रों में सम्पन्न होगा। प्रथम सत्र में राष्ट्ररक्षा यज्ञ व उद्घाटन होगा। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी विजयानन्द सरस्वती संचालक आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर होंगे तथा समारोह का उद्घाटन केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य द्वारा किया जायेगा। समारोह के दूसरे सत्र मे स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अध्यक्षता में रजत जयन्ती महासम्मेलन होगा। इस सम्मेलन में श्री आर्य वीर भल्ला प्राचार्य डो०ए०वी० पब्लिक स्कूल, फरीदाबाद व श्री भगत मगतूराम मुख्य अतिथि होगे।

आर्य युवक परिषद् के सम्मेलन में दो प्रस्ताव पारित किये जायेंगे। प्रथम प्रस्ताव में हरयाणा मे पूर्ण शराबबन्दी की मांग की जायेगी। द्वितीय प्रस्ताव में लाटरी (सरकारी जुआ) पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग राज्य सरकार से की जायेगी। इस अवसर पर सभा के उपदेशक श्री अतरसिंह क्रांतिकारी को युवारत्न की उपाधि से सम्मानित किया जायेगा। सम्मेलन को सम्बोधित करने के लिए सुश्री सत्यावती आर्या (धर्मपत्नी मा० धर्मपाल आर्य) कुमारी सुजाता आर्या बहन, राजकिशोर शास्त्री (दिल्ली), श्री आनन्द मिश्र, आचार्य दयानन्द आर्ष गुरुकुल भादस, श्री नरेन्द्रकुमार शास्त्री, स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती, स्वामी रामदेव, स्वामी विवेकानन्द गुरुकुल गदपुरी, महाशय खैमसिह, महाशय फतेहसिह, महाशय रामचन्द वेधड़क आदि को आमन्त्रित किया गया है।

—सूर्यदेव आर्य मत्री

शोक समाचार

सिरसा नगर के प्रसिद्ध आर्यसमाजी पूर्व प्रधान वयोवृद्ध श्री मनफूलसिह आर्य का लम्बी बीमारी के कारण ४-१-९५ को सिरसा में निधन हो गया। वे ८२ वर्ष के थे। उनका दाह संस्कार ५-१-९५ को उनके पैतृक गाव पन्नीवाला मोटा जि० सिरसा में वैदिक रीति से हुआ। इस अवसर पर आर्यसमाज सिरसा के प्रधान डा० आर०एस० सागवान, आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा के प्रिंसिपल श्री दलीपसिह जी, शहर के अन्य प्रमुख आर्यसमाजी एवं शहर के प्रमुख वकीलों के अतिरिक्त क्षेत्र के हजारों लोग सम्मिलित हुये। आर्य जी युवावस्था से ही आर्यसमाज से जुड़ गए थे। इनका ईश्वर पर दृढ़ विश्वास था। अतिथि एवं विद्वानों की सेवा करना इनका विशेष गुण था। इन्होंने हिन्दी आन्दोलन एवं शराबबन्दी अभियान में विशेष भूमिका निभाई। ये अपने पीछे श्री धर्मसिह, जसवन्तसिह एडवोकेट पुत्र एवं पौत्र श्री अजयपालसिह एडवोकेट आदि सम्पन्न परिवार छोड़ गए। भगवान् से हमारी प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति दे और शोकाकुल परिवार को दुःख सहन करने तथा उनके परिवार को उनके पदचिन्हों पर चलने की शक्ति प्रदान करे।

—अतरसिह आर्य क्रांतिकारी, सभा उपदेशक

नामकरण संस्कार पर सभा को दान

दिनाक २५-१२-९४ को देवव्रत राणा ग्राम पाकस्मा जि० रोहतक ने अपने पौत्र का नामकरण संस्कार प० रतनसिह आर्य प्रचारक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से करवाया। यज्ञ पर चार व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत धारण किए। आर्य जी ने यज्ञोपवीत और पंच यज्ञों की व्याख्या की और शराब को हानिकारक बताकर भविष्य में न पीने की प्रतिज्ञा करवाई। इस शुभ अवसर पर सैकड़ों स्त्री पुरुष उपस्थित थे। सबने फूलों की वर्षा से बच्चे को आशीर्वाद दिया। राणा साहब ने सभा को २०० रु० दान दिया।

"गुरुकुल कुरुक्षेत्र का ब्रह्मचारी राज्य स्तरीय योग प्रतियोगिता में प्रथम"

कुरुक्षेत्र। गत दिवस राजकीय नेशनल कालेज सिरसा के तत्त्वावधान के "ओपन एयर थियेटर" में दसवीं हरयाणा राज्य स्तरीय योग प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसका उद्घाटन हरयाणा के आबकारी तथा कराधान मन्त्री श्री लक्ष्मणदास अरोड़ा ने किया।

इस प्रतियोगिता में हरयाणा के लगभग तीन सौ पचास प्रतियोगियों ने भाग लिया, जिसमे गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ब्रह्मचारी राजरूप आर्य ने आठ से बारह वर्ष के आयु वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा इस ब्रह्मचारी को जनवरी, १९९५ में जीन्द मे आयोजित होने वाली १९वीं राष्ट्र स्तरीय योग प्रतियोगिता हेतु चुना गया।

इस योग प्रतियोगिता के समापन भाषण में हरयाणा के सिंचाई मन्त्री श्री जगदीश नेहरा ने सभी प्रतियोगियों को योग प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लेने का आह्वान किया ताकि इस प्रतियोगिता को लोकप्रिय बनाया जा सके तथा अच्छा प्रदर्शन करनेवाले प्रतियोगियों को पारितोषिक देकर सम्मानित भी किया।

—देवव्रत आचार्य

सर्वहितकारी का प्रभाव

श्री सूबेसिह सुपुत्र श्री गजराजसिह सरपच ग्राम लकडपुर जिला फरीदाबाद निवासी ने कई वर्षों से सर्वहितकारी पत्रिका स्वामी देवानन्द जी से चालू करवाई थी। श्री सूबेसिह बहुत बड़े शराबी थे। किसी भी घड़ी बिना शराब के रह नही सकते थे किन्तु सर्वहितकारी को अवश्य पढता था। विद्वानों के लेखो में शराब से कितनी हानि धन इज्जत तथा बुद्धि का नाश होता है। इसी प्रेरणा को लेकर शराब बिलकुल छोड़ दी है इसमे उनके पिता श्री गजराजसिह सरपच को बड़ी भारी खुशी हुई है उनका कहना है मेरा बेटा इतना बड़ा शराबी अब देवता बन गया है।

—स्वामी देवानन्द
सभा प्रचारक

केन्द्र में सत्ता मिली तो नशाबन्दी लायेंगे : रामाराव

शिरडी (महाराष्ट्र), ५ जनवरी (भाषा)। राष्ट्रीय मोर्चा नेता और आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री एन० टी० रामाराव का कहना है कि अगर अगले चुनाव में मोर्चे को केन्द्र में सत्ता सौपी गई तो वह देश में पूर्ण नशाबन्दी लागू कर देंगे।

दैनिक ट्रिब्यून से साभार

आर्किटेक्स एसोसियेशन का चुनाव

आर्किटेक्स एसोसियेशन नगर परिषद् रोहतक के चुनाव गत दिनों तिथि १७-१२-९४ शनिवार को सम्पन्न हुए। जिसमें सर्वसम्मति से प्रधान पद के लिए हवासिह मलिक, सचिव त्रिलोकचन्द शर्मा व कोषाध्यक्ष धनीराम सैनी चुने गए।

शराबबन्दी समर्थक पंच, सरपंचों आदि की सूची

१ श्री हरफूलसिंह जी पूर्व मुख्याध्यापक सरपंच ग्राम छीथरोली जिला महेन्द्रगढ़
२ श्रीमती ओमवती सरपंच ग्राम मालकोष जिला भिवानी
३ श्री महेन्द्रसिंह सरपंच पंचायत जूआं न० १ जिला सोनीपत
४ श्री राजवीरसिंह सरपंच पंचायत जूआं न० २ जिला सोनीपत
५ श्री ईश्वरसिंह सरपंच ग्राम कुण्डली जिला सोनीपत
६ श्री ओमप्रकाश सहरावत सरपंच ग्राम माकड़ोला जिला गुड़गांव
७ श्री राजसिंह सरपंच ग्राम रिटोली जिला रोहतक
८ श्री वेदप्रकाश पहलवान सरपंच ग्राम रोहणा जिला सोनीपत
९ मा० जोगेन्द्रसिंह सदस्य ब्लाक समिति खरखोदा जिला सोनीपत
१० श्री जयपालसिंह सरपंच ग्राम खाण्डा जिला हिसार
११ श्री अजीतसिंह सरपंच ग्राम बहबलपुर जिला हिसार
१२ श्रीमती चलतीदेवी सरपंच ग्राम मकड़ौलीकलां जिला रोहतक
१३ श्री सूरजमल सदस्य ब्लाक समिति ग्राम मकड़ौलीकलां जि० रोहतक
१४ म० बलवन्तसिंह आर्य पंच ग्राम मकडौलीकला जिला रोहतक
१५ श्री धर्मपाल हुड्डा सदस्य जिला परिषद् रोहतक (मकड़ौलीकलां)
१६ श्रीमती महादेवी सरपंच ग्राम बहीन जिला फरीदाबाद
१७ श्री कवलसिंह सरपंच ग्राम भागवी जिला भिवानी
१८ श्रीमती पूर्व अध्यापिका सरपंच ग्राम भऊअकबरपुर जिला रोहतक
१९ श्री रामचन्द्र सरपंच ग्राम आसन जिला रोहतक
२० श्री रामकुमार आर्य सरपंच ग्राम खेड़का गूजरा जिला रोहतक
२१ महाशय गोपालसिंह सरपंच ग्राम दुल्हेड़ा जिला रोहतक
२२ श्री कुलदीपसिंह आर्य सरपंच ग्राम थिराय जिला हिसार
२३ श्री दलवीरसिंह सरपंच ग्राम गागोली जिला जीन्द
२४ श्री सरपंच ग्राम खेड़ी जसौर जिला रोहतक
२५ कुमारी सुजाता एडवोकेट सदस्य नगर परिषद् रोहतक
२६ श्री रामभज सेवानिवृत्त थानेदार सरपंच ग्राम ढाकला जि. रोहतक
२७ डा० जयभगवान सदस्य नगरपालिका झज्जर जिला रोहतक
२८ श्री रामस्वरूप सरपंच ग्राम माजरा खुडन जिला रोहतक
२९ श्री सरपंच गोन्दर जिला करनाल
३० श्रीमती ओमपती सरपंच ग्राम सिलाना जिला रोहतक
३१ श्री धर्मसिंह सरपंच ग्राम चिड़िया जिला भिवानी
३२ श्रीमती इन्द्रावतीदेवी धर्मपत्नी मा० गुलाबसिंह आर्य ग्राम ताजपुर तिहाड़ा खुर्द (बाघडू) जिला सोनीपत
३३ श्री हवासिंह सरपंच ग्राम घिलोड़कलां जिला रोहतक
३४ श्री सुलतानसिंह सरपंच ग्राम मिर्जापुर खेड़ी जिला सोनीपत
३५ श्रीमती जगवन्ती सदस्य जिला परिषद् ग्राम रिठाल जिला रोहतक
३६ श्री रणवीरसिंह सरपंच ग्राम मन्धार जिला यमुनानगर
३७ श्री जिलेसिंह सरपंच ग्राम बाघपुर जिला रोहतक
३८ श्री ताराचन्द सरपंच ग्राम हरीगढ़ जिला जीन्द
३९ श्रीमती सुलोचना (ढाकला) सदस्य जिला परिषद् रोहतक
४० श्री दुलीचन्द आर्य सरपंच ग्राम मुंडिताखेड़ा जिला महेन्द्रगढ़
४१ श्री मांगेराम यादव सरपंच ग्राम मिश्री तह० चरखी दादरी जिला भिवानी
४२ श्री खेमचन्द सरपंच ग्राम औरंगाबाद जिला फरीदाबाद
४३ श्री देशपाल सदस्य ब्लाक समिति जिला फरीदाबाद
४४ श्रीमती गम्भीरी देवी सदस्य जिला परिषद् जिला फरीदाबाद
४५ श्री रामनिवास सदस्य जिला परिषद् रोहणा जिला सोनीपत

आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपने-अपने क्षेत्र के ग्रामों से शराबबन्दी समर्थक पचों, सरपंचों, सदस्य, ब्लाक समिति, सदस्य जिला परिषद् के नाम लिखकर शीघ्र सभा को भेजने का कष्ट करें, जिससे उनके नाम सर्वहितकारी में प्रकाशित किये जावें।

बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

चुनाव और मदिरा

पिछले दिनों ग्राम पंचायत जिला परिषद् और हाल ही में नगर परिषद् के चुनावों में खुलेआम वोटों की खरीद-फरोख्त हरयाणा में देखने को मिली है। जिन वार्डों में ८, १० प्रत्याशी खड़े थे, उन्होंने कुछ बस्तियों को सामूहिक रूप से अपने पीछे लगाने के लिए धन व मदिरा का खुलकर प्रयोग किया। उधर वोटर भी उतने ही चुस्त निकले जिन्होंने सबको आश्वासन दिए और सबसे माल बटोरा। ऐसा आमतौर पर सुनने में आ रहा है कि ऐसे वार्डों में प्रति वोटर सभी प्रत्याशियों द्वारा किया गया खर्चा कुल मिलाकर लगभग ४००० रुपए प्रति वोटर बैठता है। पूरे दिसम्बर महीने शराब के दौर चलते रहे है। आखिरी सप्ताह तो शराब छबील की तरह चलाई गई और २७ दिसम्बर की रात को लागत बोतलों में न होकर पेटियों में हुई। शराब के व्यवसाय से सम्बन्धित एक जानकार के मुताबिक जितनी दिसम्बर के महीने में बिकी उतनी आखिरी सप्ताह में बिकी है और आगे कहें तो जितनी आखिरी सप्ताह में बिकी है उतनी २७ तारीख के २४ घण्टों में बिकी है। शराब के ठेकेदारों ने भी प्रत्याशियों को दामों में कुछ छूट और उधार लेने की सुविधा प्रदान की थी। प्रत्याशी कुछ जगह तो वोटरों को केवल पर्ची देते थे और ठेके का पता बताते थे और आगे वोटर अपना काम खूब समझते थे। हालांकि चुनाव से कुछ माह पूर्व एक समाचार पढ़ने को मिला था कि चुनाव के दिनों पूर्ण शराबबन्दी रहेगी, लेकिन सरकार ने अपने इस प्रिय व्यवसाय में मन्दी को टालने के लिए शराबबन्दी को टाल दिया और लोकतन्त्र की बुनियादी संस्थाओं ग्राम पंचायत, नगर परिषद् और जिला परिषद् को शराब में डूबकर खुदकशी करने की इजाजत दे दी। मुख्य चुनाव आयुक्त टी एन शेषन ने इन छोटे चुनावों में खर्चों को कम करने के लिए कोई आचार संहिता बनाने की विशेष जरूरत नहीं समझी।

—संतोश पंडित
पारस रोड, कुरुक्षेत्र

आर्यसमाज के प्रति समर्पित

सोनीपत जिला परिषद् के वार्ड न० १० से निर्वाचित सदस्य सुखवीरसिंह गुलिया ने अपने आपको पूरी तरह से आर्यसमाज के प्रति समर्पित करने की घोषणा की है।

श्री गुलिया ने आज यहां संवाददाताओं को बताया कि उनका कांग्रेस हविपा या रासजपा सहित किसी भी राजनैतिक पार्टी से कोई सम्बन्ध नहीं है।

उन्होंने यह चुनाव पूरी तरह से निर्दलीय आधार पर जीता है। जबकि कुछ राजनैतिक पार्टियों के नेता अपने स्वार्थों के लिए उन्हें (गुलिया) अपना समर्थक बताकर लोगों को गुमराह करने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि उनकी आर्यसमाज के सिद्धांतों में आस्था है और वह सदैव आर्यसमाज के लिए ही कार्य करेंगे।

दैनिक जागरण से साभार

शोक समाचार

आर्यसमाज मालकोष जिला भिवानी के पुराने आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता श्री मुन्शीराम जी का ६६ वर्ष की आयु में १७ दिसम्बर ९४ को हृदयगति बन्द हो जाने से निधन हो गया। १५ दिसम्बर को उन्होंने पंचायत के चुनाव में शराबबन्दी समर्थक श्रीमती ओमवती जी सरपंच, श्री सुरेन्द्रसिंह जी, श्री रामपाल जी, श्री सत्यवीर जी, श्रीमती कपूरसिंह यादव, श्री महावीरसिंह यादव, श्री कर्णसिंह यादव, श्री मातूराम गूजर, श्री विजयसिंह राजपूत तथा श्री धर्मपाल वाल्मीकि के पक्ष में प्रचार तथा मतदान किया था। निर्वाचित सरपंच श्रीमती ओमवती जी के ससुर के पिताजी श्री रामजीलाल जी ने ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना की थी।

—कृष्णकुमार प्रधान
आर्यसमाज मालकोष

जिला हिसार में वेदप्रचार एवं शराबबन्दी की धूम

(निज सम्वाददाता द्वारा)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा जिला हिसार में कई गांवों में वेदप्रचार का आयोजन किया गया। दिनाक २५-१२-९४ को ग्राम नलवा मे रात्री को सभा उपदेशक श्री अत्तरसिह आर्य क्रान्तिकारी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन एव कार्यों पर प्रकाश डाला तथा लोगो से शराब न पीने व जुआ न खेलने का आग्रह किया। सभा के प्रसिद्ध सिद्धान्तवादी भजनोपदेशक पं० विश्वामित्र जी के फुटकर भजनों के अतिरिक्त सत्यवती प्रेम की कथा हुई। नवनिर्वाचित सरपंच श्री कृष्ण कुमार जिन्दल का सहयोग रहा। प्रातः श्री बलेराम आर्य की ढाणी में हवन किया। खूखार शराबी श्री कृष्णकुमार (धानक) नलवा ने शराब व बीडी न पीने का व्रत लिया। उसीके नवयुवक पुत्र ने बीड़ी छोड़ी। दोनो पिता पुत्रो ने बीडी के बण्डल तोड़े और यज्ञोपवीत धारण किया।

दिनाक २६-१२-९४ को सभा के वरिष्ठ उपप्रधान त्यागमूर्ति स्वामी वेदानन्द जी सायंकाल आर्यनिवास पधारे। ग्राम बालावास की चौपाल मे प्रचार हुआ। श्री अत्तरसिह आर्य ने इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुक्सान से लोगों को अवगत कराया तथा ग्राम बालावास को ऐतिहासिक गाव बताया, इसी गाव में सन् १९८४ मे ६ महीने तक धरना देकर श्री क्रान्तिकारी ने लोगो के सहयोग से ठेका बन्द करवाया था। प० विश्वामित्र ने फुटकड़ भजन व भगतसिह और श्यामकोर की कथा रखी। प्रधान सुबेदार हरचन्द आर्य, हलदार मोहनलाल, राजबीर पच तथा रामनिवास जिन्दल का विशेष सहयोग रहा। २७-१२-९४ को प्रातः आर्यनिवास खेतो की ढाणी में हवन हुआ। इस अवसर पर स्वामी वेदानन्द जी का अध्यात्मिक एव राष्ट्ररक्षा पर सारगर्भित प्रवचन हुआ साथ में लोगों का आह्वान किया कि देश मे आर्यसमाज द्वारा बहुत बड़ी क्रान्ति आएगी, आप तन, मन, धन से आर्यसमाज का सहयोग करो। प० जी के 'ईश्वरभक्ति के भजन हुवे। यज्ञ पर नलवा, बालावास तथा कई ढाणियों के नर-नारियों ने भाग लिया, क्रान्तिकारी ने विद्वानों का धन्यवाद किया।

१० बजे स्वामी जी के साथ क्रान्तिकारी जी ने ग्राम गारनपुरा कलां (भिवानी) ग्राम सहड़वा, ग्राम मुकलान (हिसार) मे जनसम्पर्क किया। रात्री को ग्राम धमाना में प्रचार हुआ। श्री क्रान्तिकारी ने वेदों का महत्त्व तथा शराबबन्दी पर अपने विचार रखे। लोगों से स्पष्ट शब्दों में कहा कि आप श्रीकृष्ण के वशज हैं अपने गांव से यह शराब का ठेका बन्द करवाओ। पं० विश्वामित्र जी व ढोलकवादक श्री सुभाष जी के शिक्षाप्रद भजन हुवे तथा पृथ्वीराज चौहान की कथा रखी। प्रधान श्री अमरसिह आर्य, शिवनारायण आर्य का अच्छा सहयोग रहा।

२८-१२-९४ को ग्राम मुहजादपुर में अचानक तीन मौतें होने पर प्रचार नही हो सका। वापिस रात्री को आर्यनिवास पर ही प्रचार हुआ। प० जी ने किरणमई का इतिहास रखा। २९-१२-९४ को प्रातः श्री अमरसिंह बुसानवाले की ढाणी में हवन किया गया। श्री सुरेन्द्रसिंह ने बीडी छोडकर यज्ञोपवीत धारण किया। हवन में कई ढाणियों के नर-नारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। श्री आर्य मे पच महायज्ञ एवं यज्ञोपवीत के महत्त्व पर विचार रखे। पंडित जी के ईश्वरभक्ति एवं महिलाओ के शिक्षाप्रद भजन हुवे। रात्री को ग्राम उमरा में वेद-प्रचार हुआ। श्री अत्तरसिह आर्य ने सत्संग के लाभ तथा सरकार की शराब बढ़ावा नीति की कटु आलोचना की। लोगों से शराब तथा धूम्रपान छोड़ने तथा महिलाओं को पर्दाप्रथा हटाना व चौपालों में चढाने पर बल दिया। पंडित जी के समाज सुधार के शिक्षाप्रद भजन हुवे। श्री बलवन्त सिंह आर्य तथा डा० बारूसिंह का विशेष सहयोग रहा।

दिनांक ३०-१२-९४ को ग्राम विधवान मे वेद-प्रचार किया गया। श्री क्रान्तिकारी जी ने आर्यसमाज क्या है, क्या चाहता है, वेदशिक्षा तथा शराबबन्दी पर विस्तार से विचार रखे। पं० विश्वामित्र तथा स्थानीय भजनीक महाशय श्रीचन्द के प्रेरणादायक हुवे तथा पंडित जी ने भगतसिंह व श्यामकोर की कथा रखी।

प्रात श्री सुरेन्द्रसिह आर्य के घर पारिवारिक हवन हुआ दो नवयुवकों ने जनेऊ लिया। पडित जी के ईश्वर भक्ति के भजन हुवे। यज्ञ पर काफी लोगों ने भाग लिया। सभी गावों में कार्यक्रम बड़ा सफल रहा। कडकती सर्दी मे भी लोगों ने बड़ी श्रद्धा से विचार सुना। ज्ञातव्य है कि पचायत चुनाव में क्रान्तिकारी ने कई गांवों का दौरा करके शराबियों को वोट न देने की अपील की। सभा को प्रचार में कुल ७१६ रु० प्राप्त हुवे।

राष्ट्ररक्षार्थ महायज्ञ सम्पन्न

जनहित परिषद् एफ ब्लाक सेक्टर १५ रोहिणी दिल्ली-८५ के तत्त्वाधान में २३, २४, २५ दिसम्बर ९४ को त्रिदिवसीय राष्ट्ररक्षार्थ महायज्ञ सम्पन्न हुआ। इसमें प्रमुख यजमान श्री आसमोहम्मद खां, गुरमेलसिंह एन. के. बंसल, राजकुमार अग्रवाल आदि थे। इस महायज्ञ के ब्रह्मा आर्य गुरुकुल एटा के आचार्य प० रामदत्त शर्मा थे। वेदपाठ, वीरेन्द्र शास्त्री, रामनिवास शास्त्री ने किया। इसके प्रमुख वक्ता, पं० चन्द्रपाल शास्त्री एव भजनोपदेश स्वामी देवानन्द जी थे।

ब्रजराजसिंह (महासचिव)
एफ-८/११८ सेक्टर-१५ रोहणी दिल्ली

बुद्धि को संभालें

(गतांक से आगे)

परमात्मा की महती शक्ति सविता को पुकारते हुए साधक सविता शक्ति को अपने अन्दर धारण करता है। उसका कर्त्तव्य होजाता है कि वह दूसरे को प्रेरणा दे उसके अज्ञान को दूर करे। समस्त जनता को वेद, ईश्वर भक्त, जनता-जनार्दन का सेवक बनाने का यत्न करे। भारत का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य क्लिष्ट होने का कारण मानव का सविता शक्ति से परे हट जाना है। सविता (प्रेरणा) में अब भी वह बल है कि हम पुन. सार्वभौम राज्य के स्वामी बन सकते हैं।

वरेण्यम्—वह प्रभु सर्वश्रेष्ठ ग्रहण करने वरने योग्य है। वरेण्यम् कहकर साधक अपने आपको सविता देव परमात्मा के आगे भेंट चढ़ा देता है आत्मसमर्पण कर देता है। वरेण्यम् कहते ही ओष्ठ बन्द होजाते हैं। अब बोलने का कार्य नहीं रहा। उसी की आज्ञा पालन में तन-मन लगेगा। वरेण्यम् की भावना तभी पूर्ण होगी जब सर्वस्व ईश्वर के अर्पण कर दिया। इसे हम प्रभु समर्पण, ईश्वर प्रणिधान, शरणागति या अनन्य भक्ति कहते हैं।

भर्ग —वह शुद्ध स्वरूप है। पापों का दहन करनेवाला भूननेवाला है। यह केवल परमात्मा का ही गुण है। यदि पापों का नाश कर आनन्द पाना है तो उसी की शरण जाना होगा। भर्ग: परमात्मा का अतिश्रेष्ठ, अतिशुद्ध निर्मल पापविनाशक शक्ति है यह तभी प्राप्त होगी जब आहार, आचार-विचार सत्य नियमित हो। जीवन तपोमय हो, सम्यक् ज्ञान द्वारा बुद्धि ऋतम्भरा, प्रज्ञा बन जाय, शरीर तन-मन ब्रह्मचर्यमय हो। साधक को पाप दग्ध करने हेतु परमात्मा की भर्ग शक्ति का कुछ अश अपने अन्दर लाना होगा।

देवस्य—जो चर अचर को प्रकाशित करे, देनेवाला हो वह देव कहलाता है। परमात्मा सारे सुखों आनन्दों को देनेवाला, सब देवों का देव, विद्वानो का विद्वान, दाताओ का दाता है। ३३ देवता होते हैं—

आठ वसु—अग्नि, पृथ्वी, वायु, अन्तरिक्ष, आदित्य, द्यौ, चन्द्रमा, नक्षत्र। इन्हे वसु इसलिये कहते है कि ये सब निवास करने के स्थान हैं।

ग्यारह रुद्र—प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनञ्जय, जीवात्मा। रुद्र इन्हें इसलिए कहते है कि जब शरीर से निकलते हैं सम्बन्धियों को रुलाते हैं।

बारह आदित्य बारह महीने—ये सारे जगत् के पदार्थों का आदान सबकी आयु को ग्रहण करते है इसलिए इन्हें आदित्य कहते हैं।

एक इन्द्र, एक प्रजापति=इस प्रकार ३३ देव हुये इन सबको वश में रखनेवाला देवों का देव महादेव परमात्मा है उसी की उपासना से चिरस्थायी आनन्द प्राप्त होगा।

धीमहि—दिव्य नेत्रों से सत्यस्वरूप का ध्यान धी कहलता है। किसी वस्तु में अनुराग से युक्त होने का नाम ध्यान है। गायत्री मन्त्र में ध्येय विषय परमात्मा का तो रूप है प्रभु का प्रकाश है, निरन्तर उसी वृत्ति को टिकाये रखना है। मन का निर्विषय हो जाना ध्यान है। धीमहि योग की निरुद्ध अवस्था तक पहुंचने का आदेश भी देता है और साधन भी बताता है। साधन-परमात्मा का भर्ग पाप दग्ध करनेवाला तेज है उसका दिव्यनेत्रों से ध्यान करना है। जो उस तेज का ध्यान करता है उसकी बुद्धि की मलिनता दूर हो जाती है।

धियो यो न: प्रचोदयात् —अन्त:करण शुद्ध होने पर आशीर्वाद मिलने लगता है। अन्त में गायत्री मन्त्र मे साधक मांगता है हमारी बुद्धियों को अपनी ओर ले चलो ऐसी प्रेरणा करो कि हम इधर-उधर न जाकर प्रभु की ओर चले, हम बुरे कर्मों से पृथक् रहें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की ओर प्रवृत्त हों।

जिस प्रकार सारे संसार को बनानेवाला परमात्मा अपनी सविता शक्ति से सूर्य, चन्द्र, जल, वायु आदि को प्रेरणा देता है उसी प्रकार मनुष्य में मन भी एक ऐसी ही सविता शक्ति है। जब इस मन को आनन्ददाता सविता देव प्रभु के साथ जोड़ दिया जाता है तो वह प्रेरणा, दिव्य प्रकाश मिलता है जिससे बुद्धि कर्म एक होकर जीवन में माधुर्य प्राप्त होता है।

मनुष्य प्रकृति से लाभ उठाता हुआ उसमें न फंसता हुआ उसे केवल साधन मात्र बनाकर परमात्मा तक पहुच सकता है। ऋषि-मुनियों, तपस्वियों ने समाधि अवस्था की प्रयोगशाला मे वर्षो बैठकर जो सार तथ्य निकाले थे वे सूर्य की भांति सत्य हैं। उन पर आचरण करने से हम सच्चे मानव बनकर लोक परलोक दोनों को सुधार सकते हैं।

अत: गायत्री मन्त्र का अर्थ हुआ —हे रक्षक, प्राणाधार, दुखों को दूर करनेवाले सुखदाता तेरे ग्रहण करने योग्य, पापनाशक तेज का हम ध्यान धरते हैं जो आनन्द का देनेवाला और जन्मदाता है। हमारी बुद्धि कर्म को प्रभु प्रेरणा देकर अपनी ओर ले चलो।

इस प्रकार गायत्री मन्त्र में एक ही प्रार्थना की गई है—हमारी बुद्धि प्रभु की ओर प्रेरित हो। इस बुद्धि का ही जीवन में सब खेल है।

एक सौदागर के ३ बेटे थे। उसने उनकी परीक्षा कर एक को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहा। बुद्धि परीक्षण के लिये उसने तीनों को अपने पास बुलाकर सौ-सौ रुपये दिये और कहा जाओ इनसे कोई वस्तु खरीदकर अपने-अपने कमरे को भर दो किन्तु ध्यान रहे कि पैसा कम से कम खर्च हो। पहले लड़के ने ५०) का भूसा लेकर अपना कमरा भर लिया। दूसरे लडके ने थोडी राशि बचाकर शेष से खराब रूई खरीदकर कमरे को भर लिया। तीसरे लडके ने कोई सामान नहीं खरीदकर अपने कमरे मे दीपक जलाकर फर्श पर बैठ गया। तीनों पुत्रों ने पिता से कहलवाया कि उन्होने अपने-अपने कमरों को भर लिया है। आप देख परीक्षा करें। शाम को पिता गया। बड़े लडके के कमरे पर पहुंचा। लडके ने पिता को आता देख स्वागत किया और कहा—पिताजी देखो मैंने केवल ५०) ही व्यय किया बडी समझदारी से व्यय किया है और कमरा भर दिया है। पिता चुप रहा। अब वह दूसरे लड़के के कमरे मे गया उसने बताया पिता जी मैंने थोडी अकल से काम लिया है और केवल ६०) रुपया खर्च करके कमरे को भर दिया है ४०) बचा लिये है। पिता ने कुछ न कहा किन्तु मन ही मन इनकी बुद्धि पर दुखित हुआ। अब वह छोटे बेटे के कमरे प रहुचा उसका कमरा बिल्कुल खाली था। एक दिया जल रहा था और वह फर्श पर बैठा था। बेटे ने बाप को स्वागत के साथ बिठाया। बाप ने पूछा—क्या तुम्हें ईट पत्थर कुछ भी नही मिला। बेटे ने कहा—पिता जी देखो मैने आपकी आज्ञानुसार बहुत कम मात्र १-२ रुपये में सम्पूर्ण कमरे को प्रकाश से भर दिया है। सबसे छोटे बेटे को अपने हृदय से लगा लिया और कहा कि तू ही सच-मुच मेरा उत्तराधिकारी है। अस्तु जहा बुद्धि है वहा सब कुछ है। गायत्री मन्त्र से जो श्रेष्ठ बुद्धि मिलती है उससे लोक परलोक दोनो सुधरते हैं।

(हितोपदेशक से साभार)

मुस्लिम युवती व ईसाई युवक हिंदू धर्म में

कानपुर—आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर मे आर्यसमाज व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने एक ३० वर्षीय शिक्षित मुस्लिम युवती कु० शमीम तथा एक शिक्षित ईसाई युवक रिचर्ड को उनकी इच्छानुसार वैदिक धर्म को दीक्षा देकर हिन्दू धर्म मे प्रवेश कराया। इनके नये नाम मीना कुमारी व रघुवीरप्रसाद रखे।

श्री देवीदास आर्य ने शुद्धि सस्कार के बाद मीना कुमारी का विवाह शिक्षित सरकारी कर्मचारी श्री योगेश कुमार तथा श्री रघुवीर प्रसाद का विवाह कु० नेहा से वैदिक रीति से कराया। ये सभी लोग स्नातक तक शिक्षित हैं।

विवाह के पश्चात् मीना कुमारी ने बताया कि उनको हिन्दू धर्म की यह बात पसन्द है जिसमें वर-वधू आजीवन दु:ख-सुख मे एक साथ रहने का सकल्प लेते हैं। जबकि अन्य मजहबो मे तलाक की आम बीमारी है। रघुवीरप्रसाद ने बताया कि उनके बुजुर्गों ने धर्म बदलने का जो पाप किया था उसको मैंने आज पुण्य मे बदल दिया। श्री आर्य ने दोनों को हिन्दी साहित्य व सत्यार्थप्रकाश की प्रतियां स्वाध्याय हेतु दीं। जिससे वैदिक धर्म की विशेषताए ज्ञात हो सके।

बालगोविन्द आर्य मन्त्री आर्यसमाज
गोविन्द नगर कानपुर

आओ जीना सीखें

आओ जीना सीखें, तम के अन्ध वेग में।
जीवन को धार बनाले, जो होती वेग में॥

१
आओ मिलकर ये
प्रण निभायें
सादगी से भरपूर
जीवन बितायें
सब मिलकर गाएं, जरा एक टेक में।

२
आर्यों का जीवन
बितायें आज से
मन का विकार
भगाये आज से
तम को दर्शाये काज से, चल सकते जब एक में।

३
तम को सुलझायें
बिखरे हर बीर
खोजें उत्तर ऐसा
दिखे सुलझी डोर
आएगी फिर भोर, होगी चाल वेग में।

४
आओ जरा हम
बात करले
ऋषि दयानन्द को
याद करले
जीवन को रसमय करले, बीता एक टेक में।

लेखक—पवनकुमार झाझडिया
बीधवान (हिसार)

शोक समाचार

श्री प्रतापसिंह जी [illegible] आर्यसमाज रोहणा, जिला सोनीपत का देहावसान २२ नवम्बर १९९४ को हृदयगति अवरोध के कारण होगया। वे [illegible] वर्ष के थे। [illegible] आर्यसमाज के सत्याग्रह [illegible], दान तथा प्रचार आदि में [illegible] रहे। [illegible] तथा [illegible] आदि [illegible] तथा तीन सुपुत्रियां हैं। ये भी सब ही, समाज के कार्यों में विशेष भाग लेते हैं।

२ दिसम्बर १९९४ को शान्ति सभा में भी बहुत अधिक संख्या में पहलवानों, अध्यापकों तथा गांव तथा बाहर के [illegible] व्यक्तियों ने श्रद्धांजलियां भेंट की।

—हरियाणसिंह आर्य, रोहणा

कन्यागुरुकुल नरेला का वार्षिक महोत्सव

दिनांक १५-१६ जनवरी, सं० १९९५ ई०, को कुल भूमि में समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। इस अवसर पर कुलपति पूज्यपाद स्वामी ओमानन्द सरस्वती के अतिरिक्त अन्य माननीय साधु संन्यासी गण, धार्मिक व राजनेता एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं। दि० १५-१-९५ को डा० बलराम जी जाखड़, कृषि मन्त्री भारत सरकार ने मुख्य अतिथि का पद सुशोभित करना स्वीकार कर लिया है। आप स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा दयानन्द सर्वहितकारिणी सभा को दान दी गई ११५ बीघे भूमि पर कन्या गुरुकुल की गोशाला का शिलान्यास करेंगे। संस्कृत एवं गोरक्षा सम्मेलन के अध्यक्ष पद को बम्बई के दानवीर सेठ माननीय श्री रामचन्द्र जी अग्रवाल (नरेला निवासी) ने सुशोभित करने की स्वीकृति प्रदान की है।

निवेदक

चौ० हीरासिंह
पूर्व कार्यकारी पार्षद, प्रधान

वैद्य कर्मवीर आर्य
महामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्तीभवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ३०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० १३२०/७३ रजि० न०P/RTK-४१ एसबह.१५६ १०८ ७३ ०६५

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालकार एम०ए०

वर्ष २२ अंक ६ २१ जनवरी १९९५ (वार्षिक शुल्क ५०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश मे १० पौंड एक प्रति १-००

क्या वेदों में दूरदर्शन का सिद्धान्त है ?

—सुखदेव व्यास, अनन्त टंकणालय, दौलतगज, उज्जैन (म० प्र०)

वेदों को सभी सत्य विद्याओ की पुस्तक माना गया है और इसका पढ़ना-पढ़ाना, सुनना सुनाना प्रत्येक भारतीय का धर्म माना गया है। इस वाक्य को अगर ब्रह्म वाक्य मानकर पालन किया जाय तो हमारे मन मे अनेक प्रश्न उठते हैं। प्राय पूछा जाता है कि क्या वेदो मे आधुनिक ज्ञान-विज्ञान है या नही और ऐसे प्रश्न वेदों के स्वाध्याय के समय और जहा वेदो की चर्चा मिलती है वहा अक्सर उठते हैं और कई बार तो वार्त्तालापो मे निरुत्तर हो जाते हैं और कई विद्वान् उपदेशको को मजाक भी बना दिया जाता है।

१८वीं और १९वीं सदी में जब वेदों का पाश्चात्य जगत् को परिचय हुआ जिसमे मेक्समूलर, विल्सन आदि विद्वान् थे, उन्होंने तत्कालीन वेदो के अनुवाद और भाष्यो को देखकर कह दिया कि वेद "गडरियों के गीत हैं" और तत्कालीन भारतीय विद्वानों ने भी उनका अनुसरण किया। पश्चिमी प्रकृति के अनुसार वेदो में इतिहास भी खोजा जाने लगा लेकिन तत्कालीन आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कठिन परिश्रम और स्वाध्याय के बाद दावे से कहा—वेद सभी सत्य विद्याओं का पुस्तक है। उन्होंने वेदो का भाष्य करने से पूर्व ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका लिखी। उन्होंने वेदों मे किन विषयों की चर्चा की है, बताया है। उनके अनुसार वेदो मे ईश्वर, वेद उत्पत्ति, देवता विषय, यज्ञ, कर्मकाण्ड, सृष्टि उत्पत्ति, वेदोक्त धर्म, तार विद्या, गणित, पुनर्जन्म, प्रकाश विषय, अग्निहोत्र आदि विषयों पर प्रकाश डाला। महर्षि दयानन्द की यह मान्यता थी कि विदेशी आततायियो ने भारत का बहुत नुकसान किया। उसी के साथ यहा के निवासियों की फूट, अविद्या, अज्ञानता ने सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। उनका वेदो मे इतिहास नहीं है, वरन् वेदों में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एव विज्ञान के नियम दिये हैं। उनका यह भी दावा था कि वेदों की उत्पत्ति मनुष्य उत्पत्ति के साथ ही हुई थी। यह सत्य है कि गणित में सवाल दिये जाते हैं, उनके नियम दिये जाते हैं लेकिन उनको हल करना हमारा कर्त्तव्य है। प्रश्नो के उत्तर खोजना मनुष्य का काम है। वेदो मे राज व्यवस्था दी है लेकिन वह राज व्यवस्था कैसे करना, उनका क्रियान्वयन कैसे किया जाए यह तो मनुष्य के हाथ में है। वेदों में नियमों को संचित किया गया है और इन नियमो की सत्यता को खोजकर जनमानस के सामने लानेवाले महर्षि कहलाये। वर्तमान में हम जो कुछ देख रहे हैं वह सब कुछ सृष्टि में पहले से ही मौजूद है। परमाणु शक्ति की खोज के पूर्व क्या वह नही थी ? यह प्रश्न उठता है। उत्तर यही है कि—मौजूद थी। वे नियम भी मौजूद थे लेकिन उनका हल किया जाना शेष था जो वर्तमान में खोजा जा रहा है। महर्षि दयानन्द ने जो वेदों का भाष्य किया उन्होंने उसका आधार व्याकरण, निरुक्त, अलकार, कल्प, ब्राह्मण ग्रन्थ, आयुर्वेद, छन्द, ज्योतिष आदि आर्षग्रन्थों को आधार मानकर और जहा जिन मन्त्रो और ऋचाओं में शब्द आये हैं और उन मन्त्रो की सगति देखकर उनका भाष्य किया। यह हमारा दुर्भाग्य था कि वे वेदों का पूरा भाष्य नहीं कर पाये उसी शैली और मार्गदर्शन के आधार पर अन्यों ने वेदो के भाष्य किये।

इतनी बडी भूमिका लिखना इसलिए आवश्यक था क्योकि किसी बात को सिद्ध करने से पूर्व भूमिका लिखी जाना आवश्यक है और रहता है, ताकि कोई सिद्धात भली प्रकार सिद्ध हो सके। वेदो का मुख्य विषय ही है कि हम प्राकृतिक शक्तियो को पहिचान और धर्माधर्म को पहिचान कर सुखी हो सकें।

वर्तमान सृष्टि मे हमे जो कुछ दिखाई दे रहा है वह विकारित सृष्टि है और तेजोमय ब्रह्म ही सबका कारण है। यह वेद मानता है और उसी मे जब गति पैदा होती है तब स्थावर जंगम की उत्पत्ति होती है। सबसे पहले प्रकृति से महत्तत्त्व प्रकट होता है और उसी से स्थूल सृष्टि का आधारभूत मन प्रकट होता है और यह मन नाना प्रकार के आकार धारण करता है। मन का लक्षण बताते हुए यजुर्वेद मे आया है—

यज्जाग्रतो दूरमुदैतिदैवं तदु सुप्तस्य तथैवेति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥

यह मन को दिव्य शक्तियोवाला माना है और जो सकल्प और विकल्प करता है और जाग्रत अवस्था मे दूर-दूर तक चला जाता है और सोने की दशा मे भी दूर दूर चला जाता है और यही मन हमारी इन्द्रियो का प्रकाशक है। जब यह मन कल्याणकारी सकल्पवाला होता है तब यही मन अनेक शक्तियो को प्राप्त कर लेता है। मन की शक्तियों को प्रकट करनेवाल अनेक मन्त्र है। मन हमारा आन्तरिक दूरदर्शन है जो शारीरिक उष्मा से जाग्रत रहता है और योगी जब इस मन को स्थिर रखकर स्थिरप्रज्ञ हो जाता है तब व्यक्ति योगी बनकर भूत, भविष्य, वर्तमान को जान सकता है जो कम्प्यूटर से जाना जाता है।

वेदो मे अग्नि की पहिचान करारेवाले अनेक मन्त्र दिये हैं तथा अग्नि की उत्पत्ति का क्रम बताया गया है। जब मन नाना प्रकार के आकार धारण करता है उससे शब्द गुणवाले आकाश की उत्पत्ति होती है और आकाश का गुण शब्द और जब आकाश मे विकार उत्पन्न होता है तब उससे वायु प्रकट होती है और वायु का गुण स्पश ज्ञान है। वायु के विकृत होने पर अग्नि उत्पन्न होती है और अग्नि का गुण रूप है। अर्थात् अग्नि के प्रकाश से ही रूपदर्शन होता है और हम दूर दूर तक की वस्तुओ का ज्ञान कर सकते हैं, जब व्यक्ति पर प्रकाश की किरण पडती हैं तो उसकी छाया भी दूर-दूर तक चली जाती है और उसका रूपदर्शन करा देती है। वैसे ही इस मूल वैदिक सिद्धात को विकसित कर दूरदर्शन की कल्पना को साकार किया गया है और वेदो मे स्थान-स्थान पर जल और अग्नि शक्ति के उपयोग के आदेश दिये गये हैं और मनुष्य अपनी उत्पत्ति से आज तक प्रकृति की सुसुप्त शक्तियो को पहिचान कर रहा है। अग्नि के तेज मे जब विकार उत्पन्न होता है है तब जल की उत्पत्ति होती है और ये शक्तिया क्रमश सभी धारण किये रहती हैं।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

शास्त्रार्थ सम्पन्न

अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि १४ मास के प्रयत्न के अनन्तर चिरप्रतीक्षित शास्त्रार्थ, सरस्वती भवन, ऋषि उद्यान, अजमेर में १४ नवम्बर १९९४ को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

सफलता इसलिए है कि जो विद्वान् २० वर्षों से प्रयत्नशील थे कि इस विषय मे सत्यासत्य का निर्णय हो और उन्हें अवसर नहीं मिल रहा था, उनको यह कामना पूर्ण हुई।

प्रसन्नता का दूसरा कारण यह है कि शास्त्रार्थ शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुआ। सूचना मिलने पर कि शास्त्रार्थ मे पहलवान, राइफलधारी, विधायक, सासद, मंत्री उपस्थित होंगे तो संयोजक महोदय ने उन्हें सूचित किया कि ऐसे व्यक्तियों की उपस्थिति में शास्त्रार्थ न होगा। अतः ऐसे व्यक्ति न लावें और उन्होंने मान लिया। ऐसा ही एक पत्र हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा को मिला। हरयाणा के आर्य अत्यधिक उत्तेजित थे। उन्हें शान्त करने का दायित्व १३ नवम्बर ९४, ऋषि उद्यान अजमेर में स्वामी सुमेधानन्द जी, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने बड़ी कुशलता व सूझ-बूझ से सम्पन्न किया। वे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

शास्त्रार्थ का विषय था—स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित संस्कार विधि में "अयन्त इध्म०" मन्त्र प्रक्षिप्त है या नहीं।

प्रक्षिप्त माननेवाले विद्वान् थे—१) आचार्य श्री रघुराज जी शर्मा, कानपुर, २) श्री इन्द्रदेव यति, पीलीभीत, ३) आचार्य विद्यादेव त्रिवेदी, शास्त्री, तर्कशिरोमणि, आगरा।

प्रक्षिप्त न माननेवाले विद्वान् थे—१) डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री, अमेठी। २) डा० सत्यव्रत राजेश, उपाध्याय गुरुकुल कांगड़ी, हरद्वार। ३) डा० वेदपाल सुनीथ, पाणिनि धाम, तिलोरा, अजमेर।

सभापति—पूज्यवर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, दयानन्द मठ, दीनानगर।

संयोजक—आचार्य धर्मवीर विद्यालंकार, आर्यवानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर।

कार्यकर्ता सभापति—पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती अधिक समय तक बैठ नहीं सकते थे। अतः उन्होंने स्वामी सुमेधानन्द जी को अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया।

प० रघुराज शर्मा का लेख—संस्कारविधि में "अयन्त इध्म०" मंत्र प्रक्षिप्त है—आर्य मित्र के २२-९-९३ के अक में प्रकाशित हुआ। इससे पूर्व आर्यराष्ट्र पीलीभीत के अंक १३-८-९३ में छपा। डा० ज्वलन्तकुमार का उत्तर एव शास्त्रार्थ को चुनौती आर्यमित्र के २१-११-९३ के अंक में छपे। इसके बाद श्री राजवीर शास्त्री का लेख दयानन्द सन्देश के अक्टूबर अंक में, श्री मोहनलाल शारदा भीलवाड़ा, राजस्थान, डा० भवानीलाल भारतीय, जोधपुर, स्वामी योगानन्द, पीलीभीत, आचार्य वेदभूषण हैदराबाद तथा पुनः आचार्य रघुराज शास्त्री व डा० भवानीलाल भारतीय के लेख प्रकाशित होते रहे।

पक्ष की माग थी कि किसी प्रतिनिधि सभा का अधिकृत व्यक्ति शास्त्रार्थ करे। यह सम्भव न हो रहा था। आचार्य धर्मवीर विद्यालंकार ने दोनो पक्षों से पत्र-व्यवहार किया। योजना यह प्रस्तुत की गई कि शास्त्रार्थ न हो, विद्वद्गोष्ठी हो। शास्त्रार्थ में निर्णय होता है। जनता अपने-अपने पक्ष को सत्य मानती है। तब निर्णय सम्भव नहीं होता। विद्वद्गोष्ठी में निर्णय, निर्णायक मण्डल द्वारा होगा। शास्त्रार्थ में उपद्रव और गोष्ठी में शान्त वातावरण, सौहार्दपूर्ण होगा। गोष्ठी में विद्वान् परस्पर आदर करते हुए, पक्षपातरहित होकर, एक दूसरे को अपना-अपना पक्ष समझाएंगे और दूसरे का पक्ष समझेंगे। शास्त्रार्थ में हठ विद्यमान रहता है। सत्य निर्णय सम्भव नहीं। परन्तु दोनों पक्ष शास्त्रार्थ ही चाहते रहे। यह निर्णय हुआ कि शास्त्रार्थ में हठ व पक्षपात छोड़कर, प्रीतिपूर्वक, अपमानजनक एवं कटु शब्दों का प्रयोग न करते हुए, सत्य तक पहुंचने का प्रयास करेंगे। सभापति, संयोजक, तारीख, शास्त्रार्थ-स्थल के निर्णय एकमत से हुए यह भी निर्णय (सभी निर्णय पत्रों में) हुआ कि पाण्डुलिपियां हस्तलेख विशेषज्ञ को दिखाकर आख्या प्राप्त की जाय। वह आख्या निर्णायक होगी।

१३ नवम्बर १९९४ को ऋषि उद्यान में उत्तेजित वातावरण को श्री स्वामी सुमेधानन्द जी ने शान्त किया। परोपकारिणी सभा के संयुक्त मंत्री और कोषाध्यक्ष ने पाण्डुलिपियां दिखाना स्वीकार किया इनका हार्दिक धन्यवाद है।

१४ नवम्बर १९९४ को, प्रातः १० बजे शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ। सुरक्षा की दृष्टि से प्रवेश, प्रवेश-पत्रों द्वारा हुआ। उपस्थित विद्वानों ने अपने पते तथा शैक्षिक योग्यताएं दर्ज कीं।

शास्त्रार्थ के आरम्भ में संयोजक महोदय ने शास्त्रार्थ का संक्षिप्त विवरण दिया और परोपकारिणी सभा को, उनके पूर्ण सहयोग का धन्यवाद किया। पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी ने परस्पर मिलकर प्रीतिभाव से, एकमत होकर, सत्य निर्णय करने की प्रेरणा दी। एक बजे तक नियमों का निर्णय किया गया। भोजनावकाश के बाद ३ बजे दूसरी बैठक आरम्भ हुई। इसमें सर्वप्रथम संस्कारविधि के विषय में मान्यताएं और हस्तलेख विशेषज्ञ को भेजे जानेवाले कागजातों का निर्णय लिया गया। तदनन्तर ३-४० से ६-३० तक लिखित व मौखिक आठ प्रश्नोत्तर किये गए जो टेप किए गए।

६-३० पर दोनों पक्षों को ध्यान दिलाया गया कि विषयान्तर होगए हैं। विषय प्रक्षेप सम्बन्धी था। प्रश्नोत्तर होने लगे कि ऋषि ग्रंथों में विधि विधान क्या है। समय की कमी का ध्यान रखते हुए दोनों पक्ष मौखिक ही प्रश्नोत्तर करने लगे, जिसके शब्द टेप किए गए। लगभग एक घण्टा व्यतीत होने पर यह अनुभव किया कि पक्ष-विपक्ष के पास नया कुछ कहने को नहीं है।

पक्ष का कथन था कि—स्वामी दयानन्द सरस्वती ने संस्कारविधि की रचना, ऋषिप्रणीत शास्त्रों के विधानों के अनुसार की है। इसमें शास्त्र विरुद्ध बात—अर्थात् "अयन्त इध्म०" मंत्र का समिदाधान और पंच-घृताहुति में विनियोग—स्वामी दयानन्द जी नहीं लिख सकते तथा इध्म शब्द का अर्थ १५ समिधाओं का गट्ठर (बण्डल) है, एक समिधा नहीं। अतः यह प्रक्षिप्त है।

विपक्ष का कथन का सार था—कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सभी ऋषिप्रणीत शास्त्रों से समन्वयात्मक संकलन किया है। सूत्र ग्रन्थों की अनेक शाखाएं हैं। प्रत्येक शाखा का अनुयायी अपने शास्त्र के विधान के अनुसार कार्य करता है। स्वामी जी ने सभी ग्रन्थों से ग्राह्य का संकलन किया है अपनी दृष्टि से। जैसे कि स्वामी जी ने ईश्वर स्तुति-प्रार्थनापासना, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण के मन्त्रों का चयन, वानप्रस्थ तथा संन्यास संस्कारों की विधि स्वयं निर्धारित की है। उनका संकलन किसी शास्त्र का विरोध नहीं करता। समन्वयात्मक है। अतः किसी अन्य द्वारा प्रक्षिप्त नहीं है।

सन् १९४८ में श्री गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, तत्कालीन मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की आपत्तियों पर परोपकारिणी द्वारा गठित समिति के माननीय सदस्यों—श्री जयदेव जी विद्यालंकार, श्री ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु और स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज को आख्याएं, परोपकारी मासिक के जून और जुलाई १९९४ के अंकों में प्रकाशित करा दी थीं। शास्त्रार्थ के समय परोपकारिणी सभा के संयुक्त मंत्री श्री धर्मवीर जी तथा कोषाध्यक्ष श्री ओम्प्रकाश जी क्षंवर ने भी स्थिति पर प्रकाश डाला।

यह बताना भी आवश्यक है कि शास्त्रार्थ से पूर्व गठित नियम संख्या ११ में यह मान लिया गया है कि पाण्डुलिपियों में किए गए संशोधन, अगर हस्तलेख विशेषज्ञ द्वारा, स्वामी दयानन्द द्वारा किए गए सिद्ध होते हैं, तो यह मन्त्र प्रक्षिप्त नहीं माना जायेगा।

लगभग १ घण्टा मौखिक शास्त्रार्थ के अनन्तर ७-१५ बजे उपस्थित विद्वानों ने संयोजक महोदय से निर्णय जानना चाहा। संयोजक महोदय ने कहा निर्णय आपका है। मेरी दृष्टि में "अयन्त इध्म०" मंत्र संस्कारविधि में प्रक्षिप्त सिद्ध नहीं हो सका। हस्तलेख विशेषज्ञ की आख्या की प्रतीक्षा आवश्यक है। हस्तलेखविशेषज्ञ की आख्या में पाण्डुलिपि में किए गये संशोधन, स्वामी दयानन्द के किए गए सिद्ध हो जाते हैं, तो प्रक्षेप सिद्ध नहीं होगा और शास्त्रार्थ की आवश्यकता नहीं रहेगी।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

मन को निर्मल बनायें

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिन्तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च॥

कठोपनिषद् का उक्त उल्लेख कितना सुन्दर है। आत्मा को रथी सवार जानकर और शरीर को ही रथ, बुद्धि को सारथि और मन को लगाम जान। इन्द्रियां घोड़े हैं। वे अपने विषयों में दौड़ेंगी यह स्वाभाविक है। यदि ये घोड़े (इन्द्रियां) बेकाबू (अनियन्त्रित) होंगी तो रथ अभिलषित स्थान पर सकुशल नहीं पहुंच सकेगा। यदि घोड़े (इन्द्रियां) काबू में (नियन्त्रित) होंगी तो रथ अभीष्ट स्थान पर सकुशल पहुंचेगा। इन्द्रियां ही सब कार्य व्यापार करती हैं। यदि वे वश में हो जाएं तो मनुष्य सब कार्यों को सिद्ध कर सकता है। इन्द्रियों पर लगाम (नियन्त्रण) मन ही कर सकता है। अतः मन सब कार्मों की कुन्जी है। यदि यह हाथ में आजाय तो सब कुछ मिल जाय।

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः—महाभारत। मन ही मनुष्य के बन्धन का और मन ही मनुष्य के मोक्ष का कारण है।

'जितं जगत् केन ?' मनो हि येन! —शंकराचार्य

संसार को किसने जीता? जिसने मन पर विजय पाली। लोक परलोक दोनों ही मन से शुद्ध होते हैं। दोनों की प्राप्ति के लिए मन को स्थिर करना अनिवार्य है। शुक्र भी मन के अधीन है। शुक्र ही जीवन है। मन बड़ा चंचल और प्रमथन स्वभाववाला है। इसको वश में करना वायु को रोकने के समान दुष्कर है। इसे वश में करने से पूर्व इसे निर्मल बनाने का प्रयास करना चाहिए।

जीवन में जो व्यक्ति अपने मन को दर्पण की भाति निर्मल बना लेता है, स्वच्छ और साफ कर लेता है उसके मन में परमात्मा की छवि, उसका रूप प्रतिबिम्बित होने लगता है।

एक सम्राट् के यहां राज्य चित्रकार का स्थान रिक्त हुआ दो चित्रकार आये दोनों ने दावा किया कि उससे बढ़कर दूसरा चित्रकार पृथ्वी पर नहीं है। राजा किसे रखे और कैसे निर्णय करें? उसने निर्णय के लिए दोनों से अपनी कलाकृतियां बनाकर दिखाने को कहा। पहले चित्रकार ने बहुत-सा सामान तूलिकायें, रंग तथा ६ माह का समय मांगा। दूसरे चित्रकार ने केवल पहले चित्रकार के सामने की दीवाल और एक पर्दा मांगा। दोनों का सामान उपलब्ध करा दिया गया। पहला चित्रकार दीवाल पर चित्र बनाने लगा। दूसरा चित्रकार पर्दे के भीतर जाता कोई सामान नहीं, दिन भर काम करता शाम को खाली हाथ लौटता। लोग हैरान थे कि आखिर पर्दे के पीछे वह क्या चित्रकारी करता है बिना किसी तूलिका और रंग के। ६ माह पूरे हुए। पहले चित्रकार का चित्र बनकर तैयार होगया। चित्र देखा गया बहुत अद्भुत था। राजा ने ऐसा चित्र देखा न था सम्मोहित हो अवाक् रह गया। अब राजा ने दूसरे चित्रकार को अपना चित्र दिखाने को कहा। उसने पर्दा हटाया। वही चित्र जो पहली दीवाल पर बना था। राजा हैरान होगया लेकिन निकट जाने पर मालूम हुआ कि दूसरे चित्रकार ने दीवाल पर चित्र नहीं बनाया। उसने तो दीवाल को घिस-घिसकर ६ माह में दर्पण की भाति चमकदार बनाया। उसके चमकदार होने से दीवाल और पहला चित्र प्रतिबिम्बित हो रहे थे। इसमे उतनी गहराई आगई थी। पहला चित्र दीवाल के ऊपर तो दूसरा दीवाल के भीतर मालूम होता था। निर्णय होगया। दूसरा चित्रकार ही राज्य चित्राकार के पद पर नियुक्त किया गया।

परमात्मा का रूप प्रकृति के सौंदर्य में भरा पड़ा है। उसकी कलाकारिता सम्पूर्ण सृष्टि में स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही है। मन को दर्पण की भांति निर्मल बनाना होगा तभी इस प्रकृति के ही प्रतिबिम्बों में हमें परमात्मा के अपूर्व आनन्दों का बोध होना शुरू हो जाएगा। प्रकृति चारों ओर फैली हुई है किन्तु हमारा मन दर्पण की भांति नहीं है इसलिए उसके भीतर प्रकृति की कोई छवि नही उतरती और चित्र नही बनते। अतः हम वंचित हो जाते हैं उसे जानने से जो हमारे चारों ओर मौजूद है।

मन को दर्पण की भांति निर्मल बनाने के तरीके—

१) सरलता—सरलता का जीवन आनन्दपूर्ण होता है। मनुष्य के बचपन का समय आनन्दपूर्ण होने का कारण यही है कि बच्चे के हृदय में सरलता होती है। उसके चारों ओर आनन्द का अनुभव होता है क्योकि उसके अन्दर छोटे-बड़े जाति वर्ग के, धनी निर्धन के कोई भेद नहीं होते। उसके अन्दर की सरलता के कारण उसके चारों ओर आनन्द की वर्षा होती है। जहां हृदय सरल होता है वहां ककड पत्थर भी हीरे मोती हैं। जहा हृदय कठोर होता है वहा हीरे मोती के भी ढेर लगे हों तो कंकड़ पत्थरों से अधिक नही होते। हृदय सरल है छोटा-सा झरना अद्भुत सौंदर्य देगा, हृदय कठोर है तो काश्मीर, स्विटजरलैंड में भी सौंदर्य का बोध नही होगा। मनुष्य की उम्र बढने के साथ हृदय कठोर हो जाता है इसीलिए आनन्द क्षीण होता जाता है। यही कारण है कि बचपन के दिन वृद्धावस्था से अधिक आनन्दपूर्ण होते हैं। बचपन में सुख और वृद्धावस्था में दुःख यह पतन की उल्टी बात है। इतना अनुभव होने पर समय के साथ सुख बढना चाहिए किन्तु इसके विपरीत देखने को मिलता है। यदि मनुष्य का ठीक-ठीक विकास हो तो बुढापे के अन्तिम दिन सर्वाधिक आनन्द के दिन होंगे।

सरलता को समाप्त कर देनेवाला दुर्गुण अहंकार है। 'मैं कुछ हूं' यह भाव जितना अधिक होगा हृदय उतना ही कठोर होगा। इसके विपरीत अहंकार का भाव जितना कम होगा उतना ही सरल होगा। बच्चे में कोई अहकार नही होता इसलिए वह सरल होता है। चिन्तन करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि श्वास पर भी हमारा कोई अधिकार नहीं। मात्र हवा में उड़ते हुये पत्ते जैसी हमारी स्थिति है। छोटे से जीवन में हमारे हाथ कोई शक्ति नही फिर भी हम सोचते हैं कि मैं कुछ हूं। बड़े से बडा धनी जिसके पास अपार सम्पत्ति है या सम्राट जिसके पास अपार शक्ति है जब मृत्यु उसके द्वार पर खड़ी होती है तो उन्हें अपनी वास्तविक स्थिति ज्ञात होती है कि उनके पास कोई सम्पत्ति या शक्ति नही क्योंकि मृत्यु सब कुछ छीन लेती है।

सरलता से ही परमात्मा को जाना जा सकता है। जब जीवन झरने की भाति निर्मल और निर्दोष होजाता है तो सरल मन में अन्दर छिपी आत्मा की अनुभूति शुरू होगी। आत्मा की अनुभूति से ही परमात्मा की खबर मिलनी शुरू होजाती है। जो अपने भीतर के सत्य को नही जानता वह सारे जगत् में छिपे सत्य को कैसे जान सकेगा? अतः पहला द्वार स्वयं को जानने का है और स्वयं के भीतर वही जा सकता है जिसका जीवन सत्य और सरलता से मण्डित है।

अपनी खुद की आख से कोई बात नही छिपती जब हम अपने को सीधा और स्पष्ट देखने का साहस जुटाते हैं तो हमारी गलतियां छिप नही सकती। हम भूल जाते हैं इस तथ्य को। यह हो सकता है कि हम दूसरों की आंखों से अपने को छिपा लें किन्तु परमात्मा की और अपनी आंखों से अपने को नहीं छिपा सकते। लन्दन मे एक समय शेक्सपियर का एक नाटक चल रहा था। नाटक बहुत सुन्दर था सब उसकी प्रशंसा करते थे। वहां के धर्मगुरु पुरोहित को भी प्रेरणा हुई कि वह नाटक देखे। प्रशंसा से उसकी नाटक देखने की उत्कट इच्छा थी किन्तु प्रश्न यह था कि वह साधु होकर नाटक कैसे देखे? उसने नाटक कम्पनी के मैनेजर को एक पत्र लिखा—"क्या तुम्हारी नाट्यशाला मे पीछे से कोई दरवाजा है जिससे मैं नाटक देख सकूं किन्तु लोग मुझे न देख सकें।' मैनेजर ने उत्तर दिया था—'हां! मेरे नाटकघर में पीछे से दरवाजा है और अनेक व्यक्ति उससे नाटक देखते है उन्हें दूसरे नही देख पाते। लेकिन जहां तक आपका सम्बन्ध है मैं यह निवेदन कर देना चाहता हूं कि ऐसा दरवाजा तो है जो पीछे है किन्तु ऐसा कोई दरवाजा नही जिसको परमात्मा न देखता हो। मनुष्यों की आंख से तो छिपाना सभव हो जायेगा, परमात्मा की आंख से और खुद की अपनी आख से छिपाना कैसे सम्भव होगा?"

हमको अपनी बुराइयां देखने में सरल होना चाहिए। कोई यदि हमारी आलोचना या बुराई करता है तो उस पर सरल हृदय से विचार करना चाहिए अपने अन्दर निरीक्षण करे यदि बुराई है तो आलोचक की कृपा का धन्यवाद करना चाहिये जिसने बुराई को उजागर किया। यदि बुराई नहीं है तो आलोचक को पुनः सोचने के लिए कहना चाहिए।

हितोपदेशक से साभार (क्रमशः)

स्वभाषा एवं स्वदेश

जहां अंग्रेजों का राज्य नहीं था ऐसे किसी देश में भी अंग्रेजी का चलन उतना नहीं है जितना भारत में है। किसी भी अन्य स्वतन्त्र देश में नहीं देखा जाता। रूस, जर्मनी, फ्रांस, चीन, जापान इत्यादि देश इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। दुर्भाग्य से अंग्रेजों के जाने के पश्चात् भी हमने मानसिक दासता के इस अवशेष को छोड़ा नहीं। दिन-प्रतिदिन हम दासता की इस शृंखला को और अधिक अपने ऊपर कसते चले जा रहे हैं। हमारे अन्दर यह मिथ्या धारणा पनप रही है कि अंग्रेजी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है और उसके द्वारा ही हम विकसित राष्ट्रों श्रेणी में अपने देश को ला सकेंगे। वास्तव में स्वदेश को विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में लाने के लिए, आत्मगौरव और राष्ट्रीय स्वाभिमान जगाने और बढ़ाने के लिए जनभाषा, शिक्षा का माध्यम तथा कार्य भाषा का एक होना अत्यन्त आवश्यक है। इससे राष्ट्रीय धन श्रम और समय की बचत भी होगी जो कि एक विदेशी भाषा के सीखने और प्रयोग में व्यय होता है। प्रत्येक विद्यालय और महाविद्यालय में अंग्रेजी के अध्यापकों की संख्या बहुत अधिक होती है और पूरे दिन में विद्यार्थियों को अंग्रेजी सिखाने पर सबसे अधिक श्रम और समय लगाया जाता है। फिर भी परिणाम यह है कि सबसे अधिक छात्र अंग्रेजी में असफल होते है और कई बार तो यह देखा गया देखा गया है कि छात्र तीन-तीन, चार-चार वर्ष तक बार-बार परीक्षा देने पर भी अंग्रेजी में सफल नहीं हो पाते। इसका यह भी परिणाम होता है कि अन्य विषयों में विद्यार्थी पिछड़ जाता है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी स्वभाषा के द्वारा शिक्षा का बहुत अधिक महत्व है। क्योंकि उसके द्वारा विद्यार्थी सामान्य जन के निकट आता है, उसको समझता है और अपने आप को उनमें से ही एक समझता है। उसमें "साहब" की गन्ध नहीं आती। उसमें आत्मविश्वास जागता है जो मौलिक चिन्तन को जन्म देता है। इससे विद्यार्थी की प्रतिभा का विकास तीव्र गति से होता है। थोड़े समय में वह अपने अध्ययन के विषय में पारंगत होना अपेक्षित है। परन्तु आज अंग्रेजी रटने में विद्यार्थी का आधे से अधिक समय नष्ट हो जाता है।

विभिन्न विषयों में उच्च से उच्च शिक्षा स्वभाषा के माध्यम से देने में विभ्रम की स्थिति स्वार्थवश अंग्रेजीप्रिय प्रयत्नहीन व्यक्तियों ने फैलाई है। अन्यथा जिस स्वभाषा का आधार संस्कृत जैसी संयोजक, समृद्ध, सशक्त भाषा हो, उसे उच्च से उच्च शिक्षा में कठिनाई हो ही नहीं सकती। इसके अतिरिक्त भाषा का प्रयोग सब प्रकार की कठिनाई को दूर कर देता है। प्रयोग भाषा का प्राण होता है। जितनी अधिक कोई भाषा प्रयोग में आता है उतनी ही वह मंजती चली जाती है।

आज उद्योगों में अधिकारी और कर्मकर में दूरी अनुभव की जा रही है और उस दूरी को पाटने के उपाय सोचे जा रहे हैं। परन्तु अधिकारी और कर्मकर में दूरी का बहुत बड़ा कारण दोनों की भाषा का अन्तर है। वहां पब्लिक स्कूलों की भूमिका के लिए उन्हें क्षमा नहीं किया जा सकता। आज पब्लिक स्कूल बच्चों की ऐसी पौध उत्पन्न कर रहे हैं जिन्हें अपनी भाषा में गिनती और पहाड़े भी नहीं आते। नाकारा बच्चे न तो बाजार में सब्जी खरीदने योग्य रह जाते हैं और न ही सामान्य जन से आत्मीयतापूर्वक बातचीत करने के योग्य और दुर्भाग्य की बात यह है कि बड़े उद्योगों में अफसर, इन्जीनियर आदि के रूप में ऐसे ही जनसामान्य से कटे हुए लोगों को उनकी अंग्रेजी के आधार पर नियुक्त किया जाता है। फिर इनसे यह आशा कैसे की जा सकती है कि इनका और कर्मकरों का निकट सम्बन्ध स्थापित होगा। आज आवश्यकता इस बात की है कि उद्योगों की अधिक उन्नति और वहां के वातावरण को स्वस्थ बनाने के लिए नियुक्ति के समय अधिकारियों के स्वभाषा ज्ञान की परीक्षा होनी चाहिए और उन्हें स्वभाषा प्रयोग के लिए प्रेरित लिया जाना चाहिए। इतना ही नहीं, उद्योगों में नामपट्ट से लेकर तैयार माल के ऊपर नाम लिखना, पत्र व्यवहार आदि सब में स्वभाषा का प्रयोग में कोई कठिनाई नहीं है। उद्योगों में उन्नत सभी देश उपर्युक्त सभी कामों के लिए अपनी भाषा का प्रयोग करते हैं और उनका माल विश्व बाजार में बिकता ही नहीं है अपितु स्पर्द्धा उत्पन्न करता है। है। पिछले दिनों समाचार पत्रों में पढ़ने में मिला था कि अमरीका सहित कई देश चीन और जापान से व्यापार बढ़ाने के लिए उनकी भाषाएं सीख रहे हैं।

स्वभाषा को कार्यभाषा बनाने की अधिकांश कठिनाइयां कृत्रिम और सृजित हैं, वास्तविक नहीं। इसके मूल में अधिकतर उपेक्षा का भाव है और अंग्रेजी के प्रति दासवृत्ति से उत्पन्न मोह है। अंग्रेजी अपनाकर कुछ लोग जनसामान्य रूप से अलग साहब दिखना चाहते हैं। सरकारी कार्यालयों में, सेना आदि में यही प्रवृत्ति काम कर रही है। अतः विभिन्न कार्यालयों में निबन्ध और भाषण प्रतियोगिताओं के कुछ पुरस्कारों से हिन्दी के व्यवहार को अधिक गति नहीं मिलनेवाली। वास्तव में हिन्दी के सर्वत्र प्रसार के लिये उसके प्रयोग को प्रोत्साहन देना अधिक आवश्यक है।

—आचार्य, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
(आर्यजगत् के १८ दिसम्बर, १९९४ के अंक से साभार)

करोड़पति बनने के लालच में सब कुछ गवां देते हैं

☆ पूरा भिवानी शहर लाटरी की चपेट में
☆ सीना ताने आते हैं गरदनें लटकाये जाते है

भिवानी—सुबह दिन दिन निकलते ही रिक्शा चालक, सरकारी कर्मचारी, स्कूली बच्चे और प्रत्येक वह व्यक्ति जो रातोंरात करोड़पति बनने की लालसा रखता है, सामान्य अस्पताल के सामने बने आधुनिक लाटरी बाजार में सीना ताने आता है और इस खेल में दिन भर की कमाई, जेब खर्च गवांकर खाली हाथ गरदन लटकाए बाहर आता है। लाटरी के जहर ने अब पूरे भिवानी शहर को अपने आगोश में ले लिया है।

एक अनुमान के मुताबिक इस छोटे से मार्केट में २५ से ३० लाख रुपये तक की टिकटों की बिक्री प्रतिदिन हो जाती है। इसमें से ९५% राशि की कोई गारण्टी भी नहीं होती। लगातार आम जनता की जेब से निकल रहे इस पैसे का बाजार पर भी भारी असर पड़ रहा है। अनेक सरकारी एवं अर्द्ध-सरकारी बैंकों एवं संस्थाओं में कार्यरत लोग लगातार घाटे की वजह से संस्थाओं में धोखाधड़ी में कुछ मामले भी प्रकाश में आ रहे हैं। पिछले दिनों इस लाटरी के धंधे में फंसे एक बैंक कर्मचारी ने बैंक के कैश से लाखों की हेराफेरी की।

जहां एक ओर आम जनता को धोखे एवं लालच में फंसाकर लूटा जा रहा है और काफी संख्या में लोगों की भीड़ वहां एकत्रित हो जाती है। इसी कारण से इस मार्केट से एक गैस एजेंसी के मालिक को स्थान बदलना पड़ा। इसी प्रकार भीड़ से तंग आकर अनेक बार जिला प्रशासन से यहां स्थित पंजाब एवं सिंध बैंक की शाखा के प्रबंधक द्वारा भीड़-भाड़ को हटाने का अनुरोध किया जा चुका है। लेकिन ऐसा लगता है कि जिला प्रशासन पर इस अपील का कोई असर होता नजर नहीं आ रहा है। अब बैंक प्रबन्धक शायद ऐसा विचार बना रहे हैं कि शाखा को किसी अन्य स्थान पर ले जाएं।

इस बाजार में खुली दस के करीब लाटरी की दुकानों पर कई राज्यों की सरकारों के नाम से लाटरियां बेची जा रही हैं। हरयाणा प्रदेश की भी अनेक नालों से चल रही लाटरियों की बिक्री होने से सरकार का भी इस धंधे को भी बढ़ावा देने में स्पष्ट तौर पर हाथ होता दिखाई देता है। इस धंधे से जुड़े लोगों ने बताया कि केन्द्रशासित प्रदेशों सहित २० राज्यों की ३८६ दैनिक एवं १८ साप्ताहिक लाटरियों के ड्रा निकाले जाते हैं। इसमें सबसे अधिक ड्रा अरुणाचल प्रदेश की लाटरियों के होते हैं। राज्य सरकार के लाटरी विभाग द्वारा काफी आकर्षकइनाम भी इन लाटरियों को दिए गए हैं।

पिछले दिनों लाटरी का धंधा बन्द किये जाने के कारण वहां इस कार्य में जुटे कुछ लोगों का रुख बहादुरगढ़, रोहतक व भिवानी की ओर हो गया है यदि हरयाणा सरकार ने भी शीघ्र ही इस धंधे को बन्द करने के लिए कठोर कदम नहीं उठाए तो अच्छे-भले खाते-पीते परिवार बर्बादी के कगार पर पहुंच जायेंगे।

१२-१-९५ (दैनिक जागरण)

टंकारा में ऋषिमेला, देहली से स्पैशल बसें चलेंगी

महर्षि दयानन्द जी जन्म भूमि टंकारा में २६, २७, २८ फरवरी १९९५ को ऋषि मेला लग रहा है जिसमें भाग लेने हेतु संन्यासी, महात्मा आर्य विद्वान् तथा ऋषिभक्त टंकारा पहुंचकर स्वामी जी को श्रद्धांजलि देंगे। ऋषि भक्तों को टंकारा ले जाने हेतु आर्यसमाज मन्दिर मार्ग (फोन नं० ३१२११०, ३४३७१८) नई दिल्ली से २४-२-९५ दिन के २ बजे बसें चलेंगी और ५-३-९५ रात्रि वापिस आयेंगी। यात्री टंकारा के साथ-साथ, अजमेर, उदयपुर, माऊंट आबू, नाथद्वारा, आबू, पोरबन्दर, सोमनाथ मन्दिर, साबरमति आश्रम आदि देखेंगे। किराया बस १०६५/- है। निवास एवं भोजन व्यवस्था आर्यसमाजों में होगी। यदि कहीं कहीं प्रबन्ध नहीं हुआ तो यात्री अपने व्यय से करेंगे, १०६५/- रु० बस किराया है। टंकारा चलनेवाले अपनी सीटें शीघ्र ही रिजर्व करा लें।

रामचन्द्र आर्य, प्रबन्धक यात्रा ४६६ भीम नगर,
गुड़गांवा-१२२००१ (फोन घर-३२६४६६

आर्थिक सहायता के लिए अपील

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर महर्षि दयानन्द के परम गुरु दण्डी विरजानन्द जी की जन्मस्थली पर उन्हीं की स्मृति में १९७० ई० में चार ब्रह्मचारियों के साथ आरम्भ हुआ था। आज इसमें १३० ब्रह्मचारी आधुनिक विषयों के साथ-साथ वेद, गीता तथा संस्कृत के अन्यान्य शास्त्रों का अध्ययन कर रहे हैं। जिनका भोजन, निवास तथा अन्य सभी सुविधाएं पूर्णतया निःशुल्क हैं। शुद्ध दूध के लिए गुरुकुल की अपनी गोशाला है। आजकल गुरुकुल का मासिक खर्च लगभग ६० हजार रुपये (सात लाख रुपये) वार्षिक आ रहा है। गुरुकुल दान पर ही निर्भर करता है।

गुरुकुल के पास जो भूमि थी उस पर दो मंजिला भवन बनाने पर भी कुल १०० विद्यार्थियों के लिए ही वे भवन पर्याप्त हो सके। जबकि प्रवेश हेतु १५० से भी अधिक प्रार्थनापत्र आए और हमें विवशतावश भारी मन से यह निर्णय लेना पड़ा कि इस वर्ष १३० विद्यार्थियों को प्रवेश देकर प्रवेश बन्द कर दिया जाए। परन्तु हम हृदय से चाहते थे कि अधिक से अधिक युवक संस्कृत पढ़ें, वेद पढें तथा वेद का प्रचार प्रसार करें। क्योंकि महर्षि दयानन्द का आदेश है कि "वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपनी ओर से, अपने आर्य-समाज, अपनी शिक्षण संस्था तथा अन्य सम्बन्धित संस्थाओं की ओर से अधिकाधिक दानराशि भेजकर ऋषि ऋण से उऋण होकर पुण्य के भागी बनें तथा भारतीय संस्कृति, संस्कृत व वेद के प्रचार प्रसार में आपका यह उचित योगदान होगा। अपनी दानराशि का चैक या ड्राफ्ट "श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट" के नाम से ही बनवाएं, जो करतारपुर जालन्धर में भुगतान योग्य हो। मनीआर्डर/चैक या ड्राफ्ट निम्न पते पर ही भेजें—श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट, जी. टी. रोड, करतारपुर-१४४८०१ (जिला जालन्धर) पंजाब। इस ट्रस्ट को दिया गया दान आयकर से मुक्त है।

हरबंसलाल शर्मा (प्रधान) चतुर्भुज मित्तल (मन्त्री)

कालका में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य कन्या उच्च विद्यालय, कालका के प्रागण में २५ दिसम्बर को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया।

पाठशाला के बच्चों ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की घटनाओं को भजन, कविता तथा भाषण रूप में प्रस्तुत किया। इस उत्सव पर श्रीमान् सुरेन्द्रपाल शर्मा को सम्मानित किया गया। यह निस्वार्थ सेवी, योग्य वक्ता, कर्त्तव्यनिष्ठ, धर्मपरायण, बहुगुणसम्पन्न तथा एक श्रेष्ठ मार्गदर्शक हैं। इनके इन्हीं गुणों से आकृष्ट होकर विद्यालयों की ओर से एक दुशाला 'सरोपा' रूप में भेंट कर हार्दिक सम्मान प्रकट किया गया।

—मुख्याध्यापिका

आर्य ब्लाकसमिति के सदस्य चुने गए

श्री बलवानसिंह आर्य मंढोली वार्ड नं० १ से लोहारु ब्लाक समिति सदस्य निर्वाचित हुए। उन्होंने सारे हरयाणा का रिकार्ड तोडकर एक इतिहास कायम किया है। इनकी आयु सदस्य का परिणाम घोषित हुआ उस समय इक्कीस वर्ष एक महीना तेरह दिन की थी, इतनी कम उम्र में कोई भी ब्लाक सदस्य नही है और श्री बलवानसिंह आर्य एक आदर्श विद्यार्थी है। श्री आर्य का जीवन बाल अवस्था से ही संघर्षमय रहा है। आर्यसमाज लोहारु के युवा प्रधान श्री रामअवतार आर्य के ये बहुत ही नजदीकी मित्रों में से हैं तथा प्रधान द्वारा चलाये जा रहे शराबविरोधी एवं सभी बुराइयों के अभियान में श्री बलवानसिंह आर्य अपना पूरा-पूरा सहयोग दे रहे हैं। पिछले दिनों २ से ७ दिसम्बर १९९४ में निकाली गई साईकिल यात्रा में श्री बलवानसिंह आर्य, प्रधान श्री रामवतार आर्य के एक सप्ताह तक साथ रहे थे। श्री बलवानसिंह आर्य बीड़ो, सिग्रेट, चाय आदि सभी नशों के कट्टर विरोधी हैं तथा शराबबन्दी आन्दोलन में अपना तन, मन, धन से सहयोग करने की घोषणा भी श्री रामअवतार आर्य प्रधान आर्य समाज मन्दिर लोहारु को कर चुके है। श्री बलवान सिंह आर्य मंढोली को आर्यसमाज लोहारु के सभी कार्यकर्त्ताओं का पूरा-पूरा सहयोग है।

देश सुधारक स्वामी ओमानन्द सरस्वती

टेक—एक ओमानन्द जी आये, शराब हटाने को।
जाग-जाग ऐ आर्यजाति क्यो रही है सो॥

बाल अवस्था मे घर छोडा, बिलकुल ना घबराये थे।
धन दौलत के ठोकर मारी, समाज सेवा में आये थे॥
असत्य को त्यागा, अपनाया सत्य को॥२

गुरुकुल और गऊशाला खोले, दिल के ये अरमान थे।
ले करके ईश्वर का सहारा, चाल पड़े नौजवान थे॥
पाप और अनाचार मिटाकर, सदाचार का पेड़ बो॥२

शराब भयंकर बडी बीमारी, अच्छी तरह से ध्यान हुआ।
दूर करेंगे शराब बीमारी, स्वामी जी को ज्ञान हुआ॥
शराब हटाकर ही दम लेंगे, ये सोच लिया दिल को॥३

नौजवानों को एकत्र करके जत्थे में तैयार हुए।
शराब दुष्टनी नही मिलेगी, ठेकेदार सब फरार हुए॥
स्वामी ओमानन्द को सब मिलकर साथ दो॥४

कहे आर्य घर-घर जाकर, ये संदेश सुनाएगा।
शराब जहरीली दूर हटेगी, नया जमाना आएगा॥
हवासिंह का प्रभो तुम जीवन सफल करो॥५

हवासिंह आर्यसेवक आर्यसमाज लोहारु जिला भिवानी

आर्यसमाज मान्दी जिला महेन्द्रगढ़ का उत्सव सम्पन्न

ग्राम मान्दी जिला महेन्द्रगढ़ में आर्यसमाज की स्थापना के पश्चात् इसका प्रथम उत्सव १९, २० नवम्बर ९४ को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रि० प्रभुसिंह ने अपने साथियों के सहयोग से बाहर से आनेवाले विद्वानों तथा प्रचारको का स्वागत किया। सभा की ओर से पण्डित जयपाल, तेजवीर तथा जगदीश सत्यपाल आर्य के प्रभावशाली भजन दोनों दिन होते रहे। शराब के सेवन, दहेज आदि के लेन-देन का जमकर खण्डन किया गया। प० ताराचन्द वैदिक तोप, बहन कौशल्या देवी आर्या के भी भजन हुए। सभा के उपदेशक श्री भजनलाल आर्य के व्याख्यान बहुत ही रुचि से सुने गये। नवयुवकों ने आर्यसमाज के प्रचार से प्रभावित होकर हुक्का, बीडी तथा शराब न पीने की यज्ञ पर प्रतिज्ञा की। सभा को ४४०) रु० दान दिया गया।

बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज सान्ताक्रुज गत ५१ वर्षों से सामाजिक, धार्मिक एवं राष्ट्रीय गतिविधियों में संलग्न है। प्रतिवर्ष आर्यसमाज सान्ताक्रुज अपना वार्षिक उत्सव बड़े उत्साहपूर्वक मनाता आ रहा है। गतवर्ष १९९४ जनवरी मास में स्वर्ण जयन्ती महोत्सव भी विशाल समारोह के रूप मे मनाया गया था। इस वर्ष भी हम अपना वार्षिकोत्सव एवं विधिवत् स्वर्ण जयन्ती वर्ष समापन समारोह रविवार दिनांक २२-१-९५ से २९-१-९५ तक आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण में मना रहे हैं। इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। इस वार्षिकोत्सव में विदुषी वैदिक वक्ताओं एवं विद्वानों तथा भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया गया है। इसके ज्ञानवर्धक प्रवचन एवं सुमधुर भजन होंगे।

कैप्टन देवरतन आर्य प्रधान

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जल में विद्युत शक्ति है यह आज प्रकट है बड़े-बड़े बांधों से उत्पन्न विद्युत हमारे घरों में विराजमान है। आज बिजली गायब होती है तो सब ओर अन्धकार छा जाता है। अग्नि का कार्य रूप को प्रकट करना है और अग्नि रूप की उष्मा है उसी को धातुओं के तन्तुओं (तारों) में प्रवाहित किया जाता है। तब वह सूक्ष्म होने के कारण धातु के कण-कण मे समाहित हो जाती है। उस उष्मा (करंट) से सारे कार्य सम्पादित किये जाते हैं। जिस प्रकार वायु सम्पूर्ण आकाश में छायी है, प्रत्येक वस्तु मे आकाश है उसी प्रकार तन्तुओं में अग्नि का प्रवाह उष्मा रोकने पर उसका रूप समाप्त हो जाता है। वेदों में इन्द्र अर्थात् विद्युत का स्थान-स्थान पर वर्णन मिलता है और उसकी शक्ति को पहिचानने का निर्देश दिया गया है। यजुर्वेद के अष्टादश अध्याय में अनेक विद्युत शक्तियों का वर्णन किया गया है जिसका भावार्थ मनुष्य प्राण और बिजली की विद्या को जानें और इनकी सब ओर से व्याप्ति को जानकर बहुत दीर्घ जीवन को सिद्ध करे। मनुष्य के लिए कहा है—मनुष्य जब तक लोकों तथा पृथ्वी आदि पदार्थों में ठहरी हुई बिजली (विद्युत) को नहीं जानते तब तक ऐश्वर्य को प्राप्त नही कर सकते। इसलिए वैज्ञानिकों को निर्देश दिये हैं कि अग्नि की शक्तियों को पहिचाने। आज वायुयान, राकेट, अन्तरिक्षयान आदि सभी अग्नि से ही चलते हैं। अणु, परमाणु के घर्षण से भी विद्युत तरगें ही तो उठती हैं। वेदों में इन्द्र अर्थात् बिजली और इलेक्ट्रोनिक्स इन्द्रशक्ति के प्रयोग से ही संसार की उन्नति हो सकती है और हो रही है और उसमें जल विद्युत अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। आज अगर जल परियोजनाएं या परमाणु परियोजनाए अस्त-व्यस्त हो जाए तो क्या हम जो उन्नति कर रहे हैं और जो दिख रही है वह दिखेगी? इसलिए ऋग्वेद का प्रथम मन्त्र कहता है—

अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारम् रत्नधातमम्॥

इस विवेचन से यह प्रमाणित होता है कि वेदों में मूल सिद्धांत प्रत्येक विद्या के दिये हैं। अब हमारे सामने यह प्रश्न आता है कि जब वेदो में सब कुछ दिया है तो भारतवासियों द्वारा यह सभी आविष्कार क्यों नही किये? उसका एकमात्र उत्तर यही है भारतीयों द्वारा वेद विमुख हो जाना है, समाज मे वेदविरुद्ध मतमान्तरों का जाल बिछ जाना, वेदो की विदेशी व देशी विद्वानों की व्याख्या, वेदों को पश्चिमी चश्मे मे देखना, विदेशी, मुस्लिम यूनानी आक्रमणकारियों द्वारा देश के बड़े-बड़े पुस्तकालयों को जलाकर खाक करना जिनमे वेदों को अनेक शाखाओ और उनकी सहिताओ का नष्ट होना, भारतवासियों का प्रमाद, आलस्य और वेदविमुख हो वेदों के अलावा अन्यत्र शोध करना है। आज पुनः आवश्यकता है वेदो की ओर आने की, ताकि हम पुनः अपना गौरव प्राप्त कर सके और उसी अनुसार हम अपनी सामाजिक व्यवस्थाए भी कर सके।

(मधुरलोक से साभार)

ऐसा हो गणतन्त्र हमारा

अब आशा, अभिलाषाओं के,
भारत में फिर खिले सुमन।
राष्ट्रवाद की प्रखर भावना,
करे पुनः आन्दोलित अभियान॥
वैदिक पथ का अनुगामी हो,
नेतृवर्ग भारत का सारा।
ऐसा हो गणतन्त्र हमारा॥

वर्णाश्रम की पुण्य व्यवस्था,
पुनः यहां स्थापित हो।
छुआछूत से जाति-पांति से,
मनुज नहीं संतापित हो॥
गूंज उठे सारे भारत में,
वैदिक साम्यवाद का नारा।
ऐसा हो गणतन्त्र हमारा॥

राजनीति से स्वार्थ हटे सब,
नैतिकवान बनें नेतागण।
क्षत-विक्षत अन्याय-अनय हो,
शान्ति समन्वित हो कण-कण॥
विश्वगुरु बन गौरवमण्डित,
हो अपना भारत यह प्यारा।
ऐसा हो गणतन्त्र हमारा॥

शौर्य शान्ति साहस से पूरित,
हो, बलिदानी युवक हमारे।
वीर जयो सेनाएं होवें,
यज्ञ पुनः हो द्वारे-द्वारे॥
मनसा वाचा तथा कर्म से,
सत्यनिष्ठ हो जन-जन प्यारा।
ऐसा हो गणतन्त्र हमारा॥

राधेश्याम आर्य, विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर (उ० प्र०)

श्रीमती सत्यादेवी का प्रेरणादायक एवं सराहनीय कदम

जिला कैथल में ग्राम क्योड़क एक ऐतिहासिक गांव है। इस गांव की आबादी २५ हजार के लगभग है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सहयोग से सन् १९८८ में ५ महीने तक गांव के बहादुर नवयुवकों एवं बुजुर्गों तथा महिलाओं ने धरना देकर शराब का ठेका बन्द करवाया था।

इस बार पंचायत चुनाव में लोगों की प्रेरणा के लिए साहसिक कार्य श्रीमती सत्यादेवी ने करके दिखाया है। कुल चार महिलाएं सरपंच का चुनाव लड़ रही थी। १) सत्यादेवी, २) शीलादेवी, ३) सोमीदेवी, ४) दुर्गा देवी। सत्यादेवी एक विधवा औरत है। यह ईश्वरविश्वासी व धार्मिक महिला है। इन्होंने अपना पर्दा खोलकर हिम्मत से प्रत्येक द्वार पर जाकर अपने वोट मांगे और लोगों से साफ शब्दों में कहा कि मैं गांव में पूर्ण शराबबन्दी करूंगी और न चुनाव में किसी को शराब पिलाऊंगी। इसका महिलाओ पर विशेष प्रभाव पड़ा।

दूसरी और उपरोक्त तीनों महिलाओं के पतियों ने कई-कई हजार रुपये की शराब पिलाई और स्वयं पतियों ने ही वोट मांगे। परिणाम यह हुआ कि सत्यादेवी शराबबन्दी के नाम पर ६५ वोटों से सरपंच विजयी हुई। यह अधर्म पर धर्म की जीत हुई। इस बहादुर महिला ने इस बात को सत्य सिद्ध कर दिया है कि बिना शराब के भी चुनाव जीते जा सकते हैं। अतः दूसरे गांव के लोगों ने इस गांव से प्रेरणा लेनी चाहिए। इन पंक्तियों के लेखक ने ९-१-९५ को श्रीमती सत्यादेवी से साक्षात्कार किया है। तब उन्होंने बतायाकि अब गांव में महिलाओं को साथ लेकर गांव में पूर्ण शराबबन्दी करूंगी। गांव में किसी को भी शराब नही बेचने दूंगी।

—अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, सभाउपदेशक

भोग विलास से सच्चा सुख नहीं मिलता

स्वामी सत्यपति परिव्राजक

विश्व की सम्पूर्ण समस्याओं का समाधान ईश्वर की प्राप्ति से ही हो सकता है, सांसारिक सुख की प्राप्ति से नहीं। संसार में प्रत्येक मनुष्य की समस्यायें हैं। प्रथम समस्या यह है कि वह पूर्णरूपेण दुःख से छूटना चाहता है। जन्म से लेकर मरणपर्यन्त मनुष्य तन, मन और धन दुःख से छूटने का पूर्ण प्रयास करता है। परन्तु इतना परिश्रम करने पर भी वह पूर्णरूपेण दुःख से नहीं छूटता। क्योंकि उसको दुःख से छूटने के उपायों का ठीक परिज्ञान नहीं है। दूसरी समस्या यह है कि मनुष्य सदा सुख प्राप्ति का प्रयास करता है। वह ऐसे सुख को ढूंढता है जो स्थायी हो अर्थात् जिसका विनाश कभी भी न हो। मनुष्य ऐसे सुख को भी नहीं चाहता जिसमें दुःख मिश्रित हो। इसलिए नित्य और दुःखरहित सुख की प्राप्ति करने का पूर्ण प्रयास करता है। इन दोनों समस्याओं का समाधान संसार के दुःख और सुख के साधनों से सम्भव नहीं है। सृष्टि आदि से लेकर आजतक किसी भी व्यक्ति ने लौकिक दुःख और सुख के साधनों से इन दोनों समस्याओं का समाधान नहीं किया और आगे भी कोई भी नहीं कर सकेगा। क्योंकि सांसारिक दुःख और सुख के साधन उत्पन्न होते हैं और नाशवान् भी हैं। जहां पर सुख रहता है वहां पर दुःख भी रहता है। इसी कारण से संसार में नित्य और दुःख रहित सुख नहीं है।

उदाहरण—जब एक व्यक्ति बहुत स्वादिष्ट भोजन का एक ग्रास मुख में रखता है तो प्रारम्भ में वह ग्रास बहुत सुखदायक प्रतीत होता है। परन्तु दो-चार बार चबाने के पश्चात् उससे मिलनेवाला सुख न्यून हो जाता है। यदि उस ग्रास को कुछ चबाकर मुख में ही रोक लिया जाय तो उससे मिलनेवाला सुख नितान्त समाप्त हो जायेगा और खानेवाला व्यक्ति उस ग्रास को निगलना ही नहीं चाहेगा। किन्तु थूकना चाहेगा। इस प्रकार से प्रत्येक स्वादिष्ट भोजन की यही स्थिति है कि देखते-देखते कुछ ही काल में वह सुख समाप्त हो जायेगा। भोजन खानेवाला मनुष्य यही चाहता है कि यह भोजन से मिलनेवाला सुख सदा ज्यों का त्यों बना रहे। परन्तु उसकी इच्छा के अनुसार वह सुख सदा नहीं रह सकता। अतः उसको बहुत दुःख होता है। इसी प्रकार से नेत्रेन्द्रिय, श्रोत्रेन्द्रिय, त्वचेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय आदि इन्द्रियों के द्वारा मिलनेवाले सुख की स्थिति है। पांचों इन्द्रियों से मिलनेवाले सुख प्राप्त करने के लिए व्यक्ति महान् परिश्रम करता है और उस सुख को स्थायी रखना चाहता है। परन्तु उसको स्थायी रखने की इच्छा उसकी पूर्ण नहीं होती। इच्छा के विरुद्ध कार्य होने से वह सदा असन्तुष्ट रहता है। इस प्रकार से सुख के स्थान पर दुःख की उपलब्धि होती है। अतः व्यक्ति का प्रयोजन पूरा नहीं हो पाता।

मनुष्य की यह अभिलाषा सदा बनी रहती है कि मुझे ऐसा सुख मिले कि जिसमें किसी भी प्रकार का दुःख मिश्रित न हो। परन्तु संसार में ऐसा सुख नहीं है कि जिसमें किसी भी प्रकार का दुःख मिश्रित न हो। श्री पतञ्जलि ऋषि के मान्यता के अनुसार संसार के प्रत्येक सुख में चार प्रकार का दुःख मिश्रित रहता है। इस चार प्रकार के दुःख का स्वरूप इस प्रकार है—परिणाम दुःख, ताप दुःख, संस्कार दुःख और गुणवृत्तिविरोध दुःख। प्रत्येक मनुष्य पांच इन्द्रियों के द्वारा विषय भोग इसलिए करता है कि मुझे पूर्ण सुख की प्राप्ति होगी और मेरा समस्त दुःख सदा के लिए समाप्त हो जायेगा। परन्तु यह कार्य उसकी इच्छा से विपरीत होता है। इन्द्रियों के विषयों का भोग विषय भोग की इच्छा को समाप्त करने के लिए किया जाता है और परिणाम यह होता है कि विषयों के भोग करने की इच्छा और तीव्र हो जाती है। जैसे कि किसी के घर में अग्नि लग जाये और इस अग्नि को शान्त करने के लिये भूल से मिट्टी के तेल से भरे कनस्तर को पानी समझकर उस अग्नि में डाल दिया जाये तो अग्नि शान्त नहीं होगी। किन्तु अत्यन्त तीव्र होकर घर को शीघ्र ही समाप्त कर देगी। इसी प्रकार विषय भोगों के भोगने के विषय भोग की तृष्णा शान्त नहीं होती। किन्तु व्यक्ति को भी समाप्त कर देती है। इस विषय में कपिल आचार्य सांख्यदर्शनकार कहते हैं कि "न भोगात् राग शान्तिर्मुनिवत् ४।२७" भोगों के भोगने में राग शान्त नहीं होता मुनि के समान। एक सौभरी मुनि नामक व्यक्ति ने अपने रोग को शान्त करने के लिए सांसारिक भोगों को भोगना प्रारम्भ किया और अपने सम्पूर्ण जीवन में पूर्णरूप से भोगों को भोगता रहा, परन्तु अपने विषय भोग की इच्छा को शान्त न कर सका। अन्त में उसने यह घोषणा की कि मैंने अच्छी प्रकार से अनुभव कर लिया है कि भोगों के भोगने से विषय भोगों की इच्छा शांत नहीं होती। भर्तृहरि जी ने भी इस विषय भी अपना अनुभव सुनाया कि "भोग न भुक्ता वयमेव भुक्ताः" भोगों को हमने नहीं भोगा किन्तु भोगों ने ही हमको भोग लिया। श्री व्यास जी ने योगदर्शन का भाष्य करते हुए लिखा है कि विषय भोगों में सुख समझना अविद्या है, अर्थात् अविद्या के कारण ही मनुष्य विषय भोगों में सुख समझता है। वास्तव में विशुद्ध दुःख नहीं किन्तु मिश्रित सुख है। बुद्धिमान् मनुष्य दुःखमिश्रित सुख को भी दुःख मानकर छोड़ देता है। परिणाम दुःख में यह बात भी समझनी चाहिये कि लौकिक सुख को चाहनेवाला मनुष्य राग के कारण अनेक दोषों से युक्त होता है। जो-जो जड़ और चेतन पदार्थ उसके सुख में साधन हैं, उनसे प्रेम करता है और उनकी प्राप्ति तथा रक्षा के लिए अन्यायपूर्वक दूसरों को हानि करता। राग से प्रेरित होकर अन्यायपूर्वक किये हुए कार्यों का फल ईश्वर की व्यवस्था से पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि विविध योनियों में महादुःख को भोगता है। यह है परिणाम दुःख।

शराबबन्दी लागू हो

गांधी जी के सपनों का भारत वह देश था जो नशीले पदार्थों से रहित हो। मदिरा के तो वह इतने विरुद्ध थे कि उन्होंने कहा था यदि उन्हें एक दिन के लिए भारत का तानाशाह बना दिया जाए तो सर्वप्रथम वह शराब के ठेकों को बिना किसी मुआवजे के बंद करवा देंगे। शराबी को पीने को चाहिए। उसके बच्चे चाहे भूख से तड़प रहे हों और पत्नी के तन ढापने को वस्त्र तक न हों। संविधान में दिए गए निदेशक सिद्धान्तों के अनुसार राज्य सरकारों का यह नैतिक दायित्व बनता है कि वह शराबबन्दी लागू करे।

मगर इन सरकारों के सिरमोर यह दलील देते है कि शराबबन्दी से तो राजस्व में इतनी कटौती हो जायेगी कि वह आर्थिक विकास का कोई भी काम नहीं कर पायेंगे। कोई इन महानुभावों से पूछे कि गरीब जनता को शैतान का पानी पिलाकर वह कौन-सा कल्याण कर रहे हैं। कुछ समय के लिए यदि आर्थिक विकास रुकता भी है, तो कौन-सा भारी संकट आ जाएगा। अनेक परिवार तबाह-बर्बाद होने से तो बच जाएंगे। इस सामाजिक बुराई को खत्म करने से नैतिक उत्थान तो होगा। ऋषियों, पीरों, पैगम्बरों और गुरुओं की इस धरती पर इस गर्म और गरीब देश में मदिरा सेवन का कोई औचित्य नहीं है। हाल ही में हुए आंध्र के चुनाव में रामाराव पार्टी को अपूर्व विजय का एक बड़ा कारण यह भी है कि वहां नशाबन्दी तुरन्त लागू किये जाने का वचन दिया गया था, जो पूरा कर दिया गया है। इस उदाहरण का तुरन्त अनुकरण किया जाए।

चमन सिंगला, भुच्चो मंडी (बठिंडा

जहां ज्ञान अमर हो जाए

वहा ध्यान लगादो जहां ज्ञान अमर हो जाए।

१

जाने पर मिलता वहां है,
आनन्द अति भारी,
हो जाती छाप अमिट दुनिया,
फिरती मारी मारी।
निज से मिलन हो निज का,
जो खो गये थे कुछ दिन से॥
नवे द्वार के पार लगा दो, जहा ज्योति ही ज्योति पाए।
वहां ध्यान लगा दो, जहां ज्ञान अमर हो जाए॥

२

क्रोध मोह लोभ अहं ने,
जब-जब कर फैलाए,
पाया निज को घेरे हुए,
तब ऋषिवर याद आए।
मिले सहारा उस दुनिया का,
जब हर ओर से घिर जाए,
तुम मान उनको भगा दो, जो विकार राह मे आए।
वहां ध्यान लगा दो, जहां ज्ञान अमर हो जाए।

३

दुख में बीता जीवन सारा,
पर जो है शेष अभी,
जो बीता सो बीता फिर,
तुमसे कहता ये सभी।
उस दुनिया की एक झलक पर,
होता अमृतत्व निछावर।
मिलकर ध्यान लगादो, ऋषि अथक जो गाए।
वहां ध्यान लगादो, जहां ज्ञान अमर हो जाए॥

जानते हैं ये सब कि
ऋणी हैं हम सभी,
उस प्यारे मूलशंकर के,
जगाया था जिसने कभी,
मर मर कर भी जिसने,
जीना हमें सिखाया,
मिलकर रख दो, जिससे वो मान अमर हो जाए।
वहां ध्यान लगादो, जहां ज्ञान अमर हो जाए॥

लेखक—पवनकुमार झाझड़िया, बीघवान (हिसार)

(पृष्ठ २ का शेष)

इस विचार को सभी उपस्थित विद्वानों ने सहर्ष स्वीकार किया। सबका धन्यवाद करने के अनन्तर शांतिपाठ के पश्चात् सभा विसर्जित हुई।

इसके बाद प्रकाशित कराये जानेवाले पूर्ण विवरण में निम्न बातें भी होंगी—

१ शास्त्रार्थ से पूर्व समस्त प्रकाशित लेख।
२ शास्त्रार्थ की प्रथम बैठक में पारित नियम व मान्यताएं।
३ प्रत्येक प्रश्न उसका उत्तर और मौखिक शास्त्रार्थ का एक-एक शब्द। सहित पूर्ण विवरण।
४ प्रश्न उत्तर में दिए गए प्रमाणों का पूर्ण विवरण। ये प्रमाण शास्त्रार्थ में प्रस्तुत नही किये गये थे। उसके बाद संयोजक महोदय उनका संग्रह कर रहे हैं।
५ उपस्थित विद्वानों के नाम, पते व सम्मतियां।
६ हस्तलेख विशेषज्ञ की आख्या।

आचार्य धर्मवीर विद्यालंकार
२/२६, आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्तीभवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ३०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० १३२०/७३ रजि० नं०P/RTK-४१ फं सृ १,९६, ०८, ५३, ०८५

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०
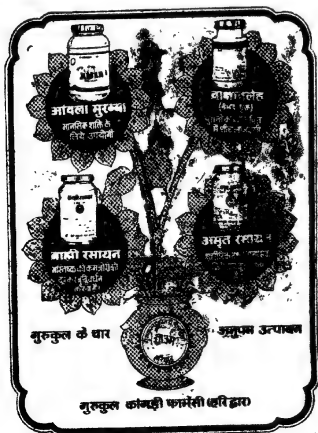
वर्ष २२ अंक ११ ७ फरवरी १९९५ (वार्षिक शुल्क ५०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-००

हरयाणा प्रदेश में शराबबन्दी आंदोलन की तैयारी हेतु फरीदाबाद में

सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती को ११००० रु० भेंट

जिला फरीदाबाद के प्रमुख आर्यसमाज तथा दयानन्द शिक्षण संस्थान नेहरू ग्राउण्ड का वार्षिक उत्सव २७ से २९ जनवरी, ९५ तक श्रीमती विमला मेहता तथा उनके कार्यकर्त्ताओं के परिश्रम से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इससे पूर्व २३ जनवरी से सभा के उपदेशक पं० ओम्प्रकाश सिद्धान्तशिरोमणि के वेद उपदेश तथा श्री तेजवीर, जगदीश, सत्यपाल नवयुवक भजन मण्डली के प्रभावशाली भजन हुए।

२७ जनवरी को आर्यसमाज के प्रचारार्थ शोभायात्रा आर्यसमाज नेहरू ग्राउण्ड से आरम्भ होकर मार्केट नं० १, २, ३, ४ तथा ५ से होते हुए श्री कन्हैयालाल मेहता दयानन्द महिला महाविद्यालय में समाप्त हुई। इसमें स्थानीय आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं के अतिरिक्त दयानन्द विद्यालयों के सैकड़ों [illegible], हजारों छात्र-छात्राओं तथा गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के [illegible]पूर्वक भाग लिया और शराबबन्दी लागू करो, आ[illegible] अमर [illegible] आर्यनेता श्री कन्हैयालाल मेहता अमर रहे आदि [illegible] नारे [illegible] रहे थे। दिनांक २८ जनवरी को फरीदाबाद जैसे [illegible] औद्योगिक नगर में २० के लगभग दयानन्द विद्यालयों के संस्थापक तथा सभा के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री कन्हैयालाल मेहता का प्रेरणा दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस दिन पुण्य तिथि भी थी। यज्ञ की कार्यवाही के पश्चात् छात्र-छात्राओं, अध्यापिकाओं ने श्री मेहता जी का गुणगान किया।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के प्रधान श्री राजेन्द्रसिंह विसला विधायक एवं अध्यक्ष हरयाणा वित्त निगम, श्री महेन्द्रप्रतापसिंह खाद्य आपूर्ति मन्त्री हरयाणा, श्री ए० सी० चौधरी उद्योगमन्त्री हरयाणा, श्री रोशनलाल आर्य पूर्व विधायक आदि ने भी श्री मेहता जी के जीवन तथा उन द्वारा किए गए समाजसुधार के कार्यों पर विस्तार से चर्चा की और छात्र-छात्राओं को उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा की। इस अवसर पर फरीदाबाद के दयानन्द विद्यालयों के अध्यापक, छात्र तथा छात्राएं भारी संख्या में उपस्थित थे। महाविद्यालय का नवनिर्मित सभागार खचाखच भरा हुआ था। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सभा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती का आर्यसमाज नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद की प्रधान श्रीमती विमला मेहता ने स्वागत करते हुए कहा कि आर्यसमाज तथा दयानन्द विद्यालयों से शराबबन्दी के लिए धनसंग्रह किया गया है और सभा की अपील के अनुसार ११ हजार की राशि भेंट की जारही है। उन्होंने विश्वास दिलाया कि स्वर्गीय मेहता जी द्वारा स्थापित परम्परा तथा सेवाकार्य चालू रखेंगे और सभा को पूर्ण सहयोग दिया जाता रहेगा।

श्री स्वामी ओमानन्द जी ने स्वर्गीय मेहता जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें एक महात्मा बताया। एक ही नगर में स्वामी दयानन्द की याद में २० के लगभग विद्यालय कोई महान् व्यक्ति ही खोल सकता है। उन्होंने बताया कि जब भी मैं उनसे किसी कार्य हेतु मिला, उन्होंने कभी भी मुझे निराश नहीं किया और आर्यसमाज के कार्यों में उदारतापूर्वक तन, मन, धन से भरपूर सहयोग दिया। जब वे सभा के कोषाध्यक्ष चुने गए तो उन्होंने सभा कार्यालय रोहतक में एक कमरा बनवाया। उन्होंने कन्याओं को शिक्षित करके वैदिकधर्म में दीक्षित करके समाजसुधार का महान् कार्य किया है। यही कारण है कि यहां की छात्राएं तथा अध्यापिकाएं संस्कृत भाषा में भाषण देकर वैदिकधर्म का प्रचार कर रही हैं। भारत के प्राचीन इतिहास का वर्णन करते हुए कहा कि भारत में ८८ हजार ऋषि हुए हैं, जिन्होंने आजीवन ब्रह्मचारी रहकर वैदिकधर्म का प्रचार किया है। इसी परम्परा में ५ हजार वर्ष के पश्चात् ऋषि दयानन्द हुए हैं जिन्होंने ऋषियों के ३ हजार ग्रन्थ पढकर सत्यार्थप्रकाश लिखकर वैदिकधर्म प्रचार के लिए मार्गदर्शन किया है। वे ६ फुट ९ इंच ऊंचे कद के युग-पुरुष थे। ऐसा ऋषि पता नहीं भारत में फिर कब आएगा। आर्यसमाज की यह शिक्षण संस्थाएं वैदिकधर्म के प्रचार में यदि श्री मेहता जी की भांति योगदान करें तो आर्यसमाज ऋषि के बताए हुए मार्ग पर चलकर सुधारकार्य करता रहेगा। अन्त में स्वामी जी ने आर्यसमाज फरीदाबाद का धन्यवाद किया।

सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान प्रो० शेरसिंह ने दयानन्द महिला महाविद्यालय की छात्राओं को उच्च स्थान प्राप्त करने पर अपने कर-कमलों द्वारा पुरस्कार वितरित किए तथा उन्हें महर्षि दयानन्द तथा स्वर्गीय मेहता जी की शिक्षाओं पर आचरण करने की प्रेरणा की। पं० प्रभातशोभा जी ने संगीत सम्मेलन की अध्यक्षता की।

—केदारसिंह आर्य

भजनलाल शराबबन्दी लागू करने में बहानाबाजी न करें

रोहतक ३ फरवरी ९५। अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष एवं सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के उपप्रधान प्रो० शेरसिंह ने एक प्रेस वक्तव्य में हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल के उस वक्तव्य की आलोचना की है जिसमें उन्होंने कहा था कि पूरे देश में शराबबन्दी होने पर हरयाणा प्रदेश में भी पूर्ण शराबबन्दी लागू की जावेगी। इससे पूर्व श्री भजनलाल कहा करते थे कि कोई अन्य प्रदेश शराबबन्दी लागू करेगा तो हरयाणा में भी कर दी जावेगी। गुजरात, आंध्रप्रदेश आदि कई प्रदेशों में शराबबन्दी लागू हो जाने पर श्री भजनलाल अपने पूर्व वायदे से मुकर रहे हैं और अब पूरे देश में शराब-बन्दी लागू करवाने का बहाना बनाने लगे हैं।

प्रो० शेरसिंह ने उन्हें परामर्श देते हुए कहा है कि वे जनकल्याण के लिए अपने रिश्तेदारों के स्वार्थ से ऊपर उठकर उनके शराब के कारखाने बंद करवाकर हरयाणाप्रदेश में नशाबंदी लागू करने की घोषणा

(शेष पृष्ठ २ पर)

वेदवाणी का प्रादुर्भाव व महत्त्व

भारती, इळा, सरस्वती, मही

ऋषि—दीर्घतमा। देवता—सरस्वतीडाभारत्यः।
ऋक्, मण्डल १, सूक्त १४२, मन्त्र ६।

शुचिर्देवेष्वर्पिता होत्रा मरुत्सु भारती।
इळा सरस्वती मही बर्हिः सीदन्तु यज्ञियाः॥

१—शुचि—शुद्ध, देवेषु अर्पिता—सृष्टि के आरम्भ में अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा नामक देवताओं में स्थापित की गई, होत्रा—यह वेदवाणी, मरुत्सु—प्राणसाधक पुरुषों में, भारती—भरण करनेवाली होती है। वेदवाणी में किसी प्रकार की गलती न होने से वह शुद्ध है। प्रभु इसे अग्नि आदि को प्राप्त कराते हैं। प्राणसाधना करनेवाले पुरुष इसके द्वारा पोषित होते हैं।

२—ऋग्वेद में इस वाणी का नाम (क) भारती है, क्योंकि यह प्रकृति का ज्ञान देती हुई उचित प्रकार से हमारा भरण करती है, (ख) यही वाणी यजुर्वेद में इळा (इडा) कहलाती है। यजुर्वेद में प्रतिपादित यज्ञों के द्वारा यह पृथिवी में अन्नोत्पत्ति का कारण बनती है। (ग) सामवेद में यह "सरस्वती" है। यह हमें ब्रह्म का ज्ञान देनेवाली होकर ब्रह्म की ओर ले चलती है। (घ) अथर्ववेद में यह वाणी "मही" हो जाती है—रोगों व युद्धों से बचाकर यह हमारी मातृभूमि की उन्नति का कारण बनती है।

३—"भारती, इडा, सरस्वती, मही"—ये सब वाणियां यज्ञियाः—सगतिकरण योग्य हैं। ये—बर्हिः सीदन्तु—हमारे हृदयान्तरिक्ष में निवास करें। इस वाणी के लिए हमारे हृदय में आदरभाव हो। हम प्रतिदिन इसका स्वाध्याय करना परमधर्म समझें।

भावार्थः—हम वेदवाणी को अपनाएं, अपना जीवन शुद्ध बनाएं।

—सुखदेव शास्त्री, वानप्रस्थी, दयानन्दमठ, रोहतक

आर्यसमाज तथा गुरुकुलों के आगामी उत्सव

आर्यसमाज कन्साला जिला रोहतक यज्ञशाला उद्घाटन	८, ९	फरवरी
आर्यसमाज ओरंगाबाद मित्रोल जिला फरीदाबाद	१०, ११, १२	,,
कन्या गुरुकुल खरल जिला जीन्द	१०, ११, १२	,,
आर्यसमाज बणोन्दी जिला अम्बाला	१०, ११, १२	,,
आर्यसमाज बरोली जिला अम्बाला	१३, १४	,,
आर्यसमाज पूठी जिला हिसार	१० से १४	,,
आर्यसमाज छानीबड़ी (श्रीगंगानगर)	१८, १९, २०	,,
आर्यसमाज सियाखोह (अलवर)	१८, १९, २०	,,
आर्यवीर दल हांसी जिला हिसार (सीताष्टमी पर्व)	२०, २१ २२	,,
आर्य केन्द्रीय सभा करनाल (कर्ण पार्क में ऋषि बोधोत्सव)	२४ से २७	,,
वैदिक आश्रम बीबीपुर जिला जीन्द	२३ से २७	,,
आर्यसमाज नीलोखेड़ी जिला करनाल	२३ से २८	,,
गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक	२६, २७	,,
आर्यसमाज पलवल शहर जिला फरीदाबाद	२४ से २७	,,
आर्यसमाज मानपुर जिला फरीदाबाद	४, ५	मार्च
गुरुकुल गदपुरी जिला फरीदाबाद	३, ४, ५	,,
गुरुकुल लाढौत जिला रोहतक	४, ५	,,
आर्यसमाज सोहना जिला गुड़गांव	३, ४, ५	,,
गुरुकुल डिकाड़ला जिला पानीपत	३, ४, ५	,,
आर्यसमाज सालवन जिला करनाल	१०, ११, १२	,,
गुरुकुल पंचगाव जिला भिवानी	२५, २६	,,
गुरुकुल कालवा जिला जीन्द (वेदारम्भ संस्कार)	२६	,,
आर्यसमाज ठोल जिला कुरुक्षेत्र	७, ८, ९	अप्रैल

—सुदर्शनदेव आचार्य वेदप्रचाराधिष्ठाता

सबका हितकारी

जो सबका हितकारी है तुम पढ़ना इसको ध्यान से।
पचास रुपये में साल भर तक तुमको बहुत सामान मिले।
लेख पढ़ोगे विद्वानों के जिससे तुमको ज्ञान मिले॥
सब मंगवाओ नर-नारी—तुम० १

डाक द्वारा हर सप्ताह में आप के घर पर आयेगा।
समाज की जो गतिविधि है तुमको आन बतायेगा॥
सब हो जाये जानकारी—तुम० २

हरयाणे की सभा है उसका साप्ताहिक अखबार है।
सत्य सनातन वेद धर्म का करता यह प्रचार है॥
जो ऋषियों की फुलवारी—तुम० ३

पचास रुपये की एक महीने में हुक्का बीड़ी पीते हो।
पीते हो दिन रात बताओ फिर भी बिल्कुल रीते हो॥
सब छुट जाये बीमारी—तुम० ४

स्वामी ओमानन्द सभा के अनुभवी अध्यक्ष हैं।
कार्य कर रहे कई वर्षों से आपके समक्ष हैं॥
आयु लगा दी सारी—तुम० ५

विश्वमित्र सभा के भजनीक वैदिकधर्म प्रचार करें।
योगासन भी दिखलाते हैं सभा में पत्र व्यवहार करें॥
नर नार बने सदाचारी—तुम० ६

—विश्वमित्र आर्य, सभा भजनोपदेशक

जुड्डी गांव में वेद प्रचार

आर्यसमाज जुड्डी जिला रेवाड़ी के प्रधान श्री स्योनारायण जी की धर्मपत्नी माता श्रीमती चांद कौर जी का ८० वर्ष की आयु में दिनांक २-१-९५ को स्वर्गवास होगया। जिनके निमित्त दिनांक १२-१-९५ को पं० श्री विश्वमित्र के भजन हुए और शांति शुद्धि यज्ञ पर आर्यप्रतिनिधि सभा को एक सौ दस रुपये का दान दिया तथा आर्यसमाज कोसली, भाकली, नठेडा, लुखी एव जुड्डी आदि समाजों को २१-२१ रुपये दान भेजा। यज्ञ श्री सुरेन्द्र जी आचार्य के ब्रह्मत्व में हुआ।

—दीनदयाल सुधाकर

समूचा हिन्दुस्तान निर्धन होजाए, तो मैं उसे सहन कर सकता हूं, लेकिन यहां हजारों शराबी हों, सो मुझसे देखा नहीं जाता। शराब से होनेवाली आमदनी में चाहे आग लगे और हमारे बालक चाहे निरक्षर रहें, लेकिन शराब की दुकानों को कायम रखकर मैं बालकों को पढ़ाना नहीं चाहता। दूसरे देशों में सम्पूर्ण शराबबन्दी की कठिनाई को मैं समझता हूं, लेकिन यहां कैसे समझूं?

—गांधी जी

(पृष्ठ १ का शेष)

करें। शराबबन्दी को सफल कराने के कार्य में आर्यसमाज की ओर से पूरा सहयोग दिया जावेगा। यदि आपने सारे देश में शराबबन्दी लागू होने पर हरयाणा में लागू की तो फिर आपको कैसा श्रेय मिलेगा। आपके विश्नोई धर्म में शराब, मांस के सेवन तथा जुआ खेलने की घोर निन्दा की गई है। अतः आपको अपने धर्म को मान्यता देते हुए हरयाणा में शराबबन्दी लागू करनी चाहिए। आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लगातार प्रचार से आज शराबबन्दी लहर बन रही है और कई राजनैतिक दल भी अपने घोषणा पत्रों में शराबबन्दी करने का वायदा कर रहे हैं। अतः आप भी हरयाणा की ऋषि-मुनियों की पवित्र धरती से शराबबन्दी लागू करके इस बदनामी को दूर करने की पहल करें।

मन को निर्मल बनायें

(गतांक से आगे)

(५) प्रभु अर्पण भावना से कार्य करना—प्रभु के निमित्त काम करने से मन निर्मल हो जाता है। इससे मानसिक संकोच नष्ट होता है, क्षुद्रता जाती रहती है, विशालता का विस्तार होता है। कार्य करते समय यदि प्रभु समर्पण की भावना आ जाये तो मन की निर्मलता बढ़ती है। इसे ही निष्काम कर्म कहा जाता है। ये कर्मकर्त्ता को लिप्त नहीं करते। वह कमल पत्र की भांति संसार के जल में रहकर सारे कार्य करता हुआ भी कर्मरूपी जल से अलिप्त रहता है। यज्ञ में इदन्न मम का भी यही अर्थ है कि यह मेरा नही अपितु अग्निरूप भगवान् का है। भक्त का जीवन उसका एक-एक श्वास प्रभु अर्पण होता रहता है। ऐसा व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में उदास नही होता। जिसका मन निर्मल होता है वह कभी शिकायत नहीं करता और भगवान् से जो प्राप्त होता है उसे हंसते-हसते प्रसन्नता से स्वीकार नही करता है चाहे वह सुख हो अथवा दुःख हो। ईश्वरविश्वासी मानव हर काम में ईश्वर का हाथ देखता है और उसका मन परिस्थितियों का गुलाम नही रहता। दुनिया का कोई तूफान उसके मन को कंपा नही सकता। अतः प्रभु समर्पण की भावना से अहंकार दूर होकर मन निर्मल हो जाता है। जहां अहंकार होगा मन शुद्ध नही हो सकता। मन शुद्ध नही होगा, हृदय सरल नहीं होगा फिर मानव सुख-शांति से दूर हो रहेगा। अहंकार हमारा सबसे बडा शत्रु है। अहं गलते ही सरलता आजाती है। चक्रवर्ती सम्राट् भरत ने जब समस्त भूमण्डल जीत लिया और वे इन्द्र के पास पहुंचे तो उन्होंने दावा किया कि मैं ही सम्भवतः एक ऐसा व्यक्ति हू जिसने पूरे भूमण्डल को जय कर लिया है। मुझे अपनी कीर्ति को अक्षय और अमर बनाना चाहिए और इसके लिए मुझे वृषमाचल पर्वत पर अपना नाम अंकित करना चाहिए। भरत की धारणा थी कि यहां उनका यह पहला नाम होगा।

इन्द्र ने सम्राट् भरत के कथन से सहमति व्यक्त की और कहा आप जाइये तथा वृषमाचल पर अपना नाम लिखकर आइये। वहां हम ऐसे ही व्यक्ति को अपना नाम अंकित करने की छूट देते हैं जिसने पूरी पृथ्वी पर तीनों लोकों पर विजय प्राप्त करली हो। सम्राट् भरत बड़े इठलाते हुये वृषमाचल पर्वत पर पहुंचे। पर यह क्या? वहां पर पहुंचकर तो उनके पैर एकाएक ठिठक गये। उन्होंने ऊपर से नीचे तक पर्वत शिखर नाप डाला। जहां तक वे जा सकते थे शिखर की अन्य दिशाओं में भी गये। समस्या यह थी कि वहां वह अपना नाम कहां लिखें। शिखर पर ही नही पूरे पर्वत पर नाम ही नाम लिखे हुए थे कोई स्थान नहीं खाली न था जहां एक नाम और लिखा जा सके। इन लिखे नामों में से कोई भी नाम ऐसा न था जो चक्रवर्ती राजा न रहा हो।

भरत खिन्न होगये। वे पर्वत शिखर से उतर कर इन्द्र के पास गये और कहा—शिखर पर तो कहीं कोई स्थान खाली नहीं है। पूरे पर्वत पर चक्रवर्ती सम्राटों के नाम अंकित हैं। मैं अपना नाम कहां लिखूं।

इन्द्र ने कहा—किसी एक का नाम मिटा दीजिए और उस स्थान पर अपना नाम लिख दीजिए। मुझे जहां तक ज्ञात है पिछले हजारों वर्षों से यही क्रम चलता आरहा है।

'तो फिर क्या कभी मेरा नाम भी मिटाकर भविष्य में कोई चक्रवर्ती सम्राट् वहां अपना नाम लिख जाएगा।' सम्राट् भरत ने पूछा।

इन्द्र ने उत्तर दिया—अवश्य ही। इस सम्बन्ध में कुछ नही कहा जा सकता। अतीत में अनादिकाल से असंख्य चक्रवर्ती सम्राट् हुए हैं और भविष्य में भी अनन्तकाल तक होते रहेंगे। किसी के सम्बन्ध में आश्वासनपूर्वक यह नही कहा जा सकता कि उनका नाम अनन्तकाल तक इस पर्वत शिखर पर लिखा रहेगा।

तो फिर क्या लाभ? भरत का अहं विगलित होकर पानी-पानी होगया। वे अनुभव करने लगे कितना विराट् और अनादि अनन्तकाल से चला आरहा है यह जगत्। इसमें अपना अस्तित्व स्थान है ही कितना? यह सोचना गलत होगा कि हमसे पहले किसी ने वह काम न किया है जो हमने कर लिया है। अतिसमर्थ शक्तिशाली अनेक कुबेर के समान वैभवसम्पन्न और सूर्य के समान अपनी कीर्ति को चतुर्दिश बिखेरनेवाले मानव न जाने कितने हुये हैं?

यह सोचकर भरत इन्द्रलोक से वापस चले गये। उनका अभिमान जाता रहा। अहं जलकर क्षार-क्षार होगया था और उस ग्रह का विसर्जन होते ही इतनी शांति अनुभव होने लगी जितनी कि समस्त भूमण्डल पर विजय प्राप्त करने के उपरात भी नही हुई थी।

अतः जब तक अहं है तब तक सरलता नहीं और जब तक सरलता नहीं शांति संभव कैसे होगी?

(हितोपदेशक से साभार)

सरकार देखे तो एड्स विरोधी विज्ञापन क्या संदेश दे रहे हैं?

एड्स एक बेहद खतरनाक और लाइलाज बीमारी है। यह बीमारी संक्रामित सुइयों, संक्रमित रक्त और एड्सग्रस्त व्यक्ति के साथ सभोग के कारण होता है। डिस्पोजेबल सुइयों, रक्त का एड्स परीक्षण करवा कर तथा भारतीय संस्कृति के अनुसार परस्त्री को मां, बहन व बेटी मानकर इस बीमारी से बड़ी ही आसानी से दूर रहा जा सकता है लेकिन एक बार एड्स की बीमारी लगने के बाद इलाज असभव हो जाता है। इस दिशा में जहा बहुत-सी सामाजिक सस्थाए लोगो को जागरूक करने में लगी हैं, वही सरकार की ओर से भी लोगो को इस बारे में काफी चेताया जारहा है। परन्तु स्वास्थ्य विभाग हरयाणा लोगों को जागरूक करते-करते ऐसे विज्ञापन भी लगवा रहा है, जो कि हमारी भारतीय संस्कृति के खिलाफ है और हमारे समाज मे बहुत गलत सदेश देते हैं। बस स्टैंड नरवाना पर ऐसा ही एक विशालकाय विज्ञापन स्वास्थ्य विभाग की ओर से लगवाया गया है कि "आप जब भी अपने जीवन साथी के अलावा किसी अन्य व्यक्ति के साथ सभोग करें, कंडोम का प्रयोग अवश्य करे।" यह विज्ञापन एड्स विरोधी कम, कंडोम और व्यभिचार का प्रचारक अधिक लगता है, अवैध संबंध हमारी परम्पराओं के खिलाफ है। हम ऐसी बातों को मान्यता प्रदान नही कर सकते। इसकी जगह इसे अन्य तरीकों से भी लिखा जा सकता है, मसलन "आप अपने जीवन साथी के अलावा अन्य किसी के साथ यौन सम्बन्धों की कोशिश न करें। यह आपके लिए जानलेवा सिद्ध हो सकता है।" क्या स्वास्थ्य विभाग हरयाणा इस ओर ध्यान देगा।

—चरण सिंगला, रेलवे रोड, टोहाना

(पंजाब केसरी से साभार)

यह किस समाज का दर्पण है?

आज हम जब भी टी. वी. का बटन दबाते हैं, मारधाड़, सैक्स, हिंसा, बलात्कार, भोंडे नृत्य व अश्लील गानों के दर्शन होते हैं। अश्लीलता हद से बढ़ गई है। कोई भी माता-पिता अपने बच्चों के साथ आधुनिक फिल्म या चित्रहार या विज्ञापन नहीं देख सकता। लगभग ५-६ दिन पहले फेमिना की तरफ से जो सौंदर्य प्रतियोगिता का शो दूरदर्शन पर रात १२ बजे तक प्रस्तुत किया गया तथा जिस शान व गर्व से प्रतियोगी नवयौवनाएं कम से कम वस्त्रों मे अपने शारीरिक सौंदर्य का प्रदर्शन कर रही थी, सिर शर्म से झुक जाता है। उस पर उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए इनाम, सुविधाए दी जाती हैं। कभी मिस इंडिया, कभी मिस वर्ल्ड तथा कभी मिस यूनिवर्स के नाम पर अपनी मा, बहनों व बेटियों के शरीर का तमाशा होता है।

क्या भारतीय नारी की लज्जा, शील, शर्म जैसे नैतिक मूल्य समाप्त होगए हैं? क्या इसी के आधार पर हम विश्वगुरु कहलाए? क्या भारत की नारी का यही रूप है? क्या हम २१वी सदी मे यही सब कुछ लेकर प्रवेश कर रहे हैं।

—श्रीमती चद्रकाता, अध्यापिका गवर्नमैंट हाईस्कूल,
[illegible]

(पंजाब केसरी से साभार)

आर्यसमाज लोहारू के जन्मदाता थे—स्वामी ईशानन्द जी सरस्वती

महर्षि दयानन्द सरस्वती के पदचिह्नों पर चलकर ना जाने कितने महापुरुष इस संसार मे हुए हैं और कितने महापुरुष अब भी हैं और कितने महापुरुष आनेवाले भविष्य मे होगे, यह अनुमान लगाना भी असम्भव है। जिस महर्षि ने हमे वेदशास्त्रों द्वारा जागृत किया और सत्य तथा असत्य की खोज करने के लिए ससार का महान् ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की रचना करके ससार को सत्य का मार्ग दिखाया। इसी प्रकार से असख्य महापुरुषों ने अपने राष्ट्रहित जीवन की लीला समाप्त कर डाली और न जाने कितने महान् व्यक्तियो ने इस राष्ट्र को मजबूत किया तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार कार्य करके हमारा मार्गदर्शन करते रहे आज उन विभूतियों को हम भुलाते जारहे हैं। इन्ही विभूतियों मे से स्वामी ईशानन्द जी भी एक महान् विभूति थे। जिन्होंने आजीवन ब्रह्मचारी रहकर आर्यसमाज का सच्ची लगन से अपना कार्य किया।

स्वामी ईशानन्द के बचपन का नाम श्री रतिराम था तथा इनके पिता जी का नाम श्री डालाराम था। स्वामी ईशानन्द का जन्म ८ अगस्त १८०४ मे नरेला के समीप सिधौला (दिल्ली) मे हुआ था। इनके पिता जी अंग्रेजो के समय मे एक बहुत बड़े जमीदार थे। जब सन् १८५७ मे जो गदर हुआ था उस समय अंग्रेजो ने श्री डालाराम की सारी जमीन अपने हवाले कर ली तथा इनको भूमिहीन कर दिया तब स्वामी ईशानन्द के पिता अपने परिवार का पालन-पोषण मजदूरी करके करने लगे। जब स्वामी ईशानन्द बडे हुए तब इनके पिता जी ने इनको पी० डब्ल्यू० डी० महकमे मे सरकारी नौकरी पर लगा दिया। स्वामी ईशानन्द हुक्का पिया करते थे। एक दिन स्वामी ईशानन्द स्वामी ओमानन्द जी से मिले जो बचपन का नाम श्री ब्र० भगवानदेव था। भगवान्देव के खेत मे इन्होने एक बाग लगा रखा था और इसी खेत में व्यायामशाला भी था, कई नौजवान इस व्यायामशाला में व्यायाम करते थे। स्वामी ओमानन्द (भगवान्देव) उस बाग की रखवाली करते थे तथा वही पर व्यायाम भी करते थे।

एक दिन स्वामी ईशानन्द (रतिराम) स्वामी ओमानन्द (भगवान् देव) के बाग में पधारे और स्वामी ईशानन्द के हाथ में चिलम थी और चिलम पीता हुआ आरहा था। जब स्वामी ओमानन्द के पास ईशानन्द पहुंचा तो स्वामी जी ने कहा अरे मूर्ख तू ये चिलम पीता है, यह तो तुम्हारे अन्दर बहुत बुरी आदत है। आप शीघ्र ही इस चिलम को पीना छोड़ दे। इतना ही कहा था स्वामी ओमानन्द ने। वह चिलम वही ईशानन्द ने फोड़ दी और नौकरी भी छोड दी तथा स्वामी ओमानन्द के चरणों में आकर उनमें शामिल होगये। स्वामी ओमानन्द सरस्वती की प्रेरणा से स्वामी ईशानन्द ने सब कुछ सीखा वही विद्या अध्ययन किया और वहीं योगासन आदि सीखे। जब १९४५ में अंग्रेजों के खिलाफ आर्यों ने आंदोलन चला रखा था उस आंदोलन में स्वामी ईशानन्द ने बढ़-चढ़कर भाग लिया था।

स्वामी ईशानन्द के अंग्रेजों ने वारन्ट जारी कर दिये, स्वामी जी अंग्रेजों से बहुत बचते रहे। अन्त में स्वामी ओमानन्द जी के व्यायाम अखाड़े में स्वामी ईशानन्द सहित कई साथी गिरफ्तार कर लिये गये और इनको दिल्ली लालकिले लाकर कालकोठरी में डाल दिया। इनकी पैरवी किसी ने भी नहीं की अन्त में अंग्रेजों ने स्वामी ईशानन्द को इनके ही घर में नजरबन्द रखा। स्वामी ईशानन्द सरस्वती का जीवन बहुत ही संघर्षशील रहा। स्वामी जी सादा पहरावा, सादा खानपान तथा सादा जीवन व्यतीत करते थे। सन् १९४६ में स्वामी ओमानन्द ने स्वामी ईशानन्द को पंजाब के जिला रोपड़ के आर्यसमाज मन्दिर में भेज दिया। वहा स्वामी आत्मानन्द जी रहते थे। उनसे मिलने स्वामी ईशानन्द पैदल ही चल पड़े और तीन-चार दिन में पैदल चलकर उनसे मिले। स्वामी आत्मानन्द ने इनका नाम ईशानन्द रखा और इनको अपने पास रख लिया। कई दिनों तक स्वामी ईशानन्द जी इनके पास रहे और बाद में स्वामी ईशानन्द गुरुकुल दीनानगर पंजाब स्वामी स्वतन्त्रानन्द के पास चले गये और उनसे वेदों का ज्ञान प्राप्त किया। स्वामी ईशानन्द ने स्वामी स्वतंत्रानन्द से सभी शिक्षा ग्रहण की।

इधर नवाब लोहारू ने आर्यों पर जुल्म करने शुरू कर दिये तब आर्यसमाज लोहारू का मन्त्री श्री भोपालसिंह की अध्यक्षता में एक कमेटी बनाई गई। इस कमेटी के निम्न सदस्य थे—श्री गोपालसिंह आर्य चैहड़, श्री भरतसिंह शास्त्री लोहारू, श्री वैद्य दुलीचन्द आर्यनगर, श्री किशोरीलाल पटवारी लोहारू, ठा० भगवतसिंह आर्य, श्री भरतसिंह आर्य आर्यनगर, श्री जोखीराम आर्य नांगल आदि आर्यों ने मिलकर फैसला किया कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द के पास पत्र डाला जाए और उनसे सहयोग लिया जाए तब श्री भोपालसिंह आर्य ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द के पास एक पत्र डाला और पत्र में सहयोग के बारे में लिखा। तब स्वामी स्वतन्त्रानन्द ने अपनी ओर से स्वामी ईशानन्द को सन् १९४६ मे लोहारू रियासत में भेजा। तब स्वामी ईशानन्द ने यहां आकर आर्यसमाज लोहारू का कार्यभार सम्भाल लिया और नवाब से मिलकर नवाब को डंके की चोट पर कह दिया था कि अरे नवाब अब कर ले जो कुछ करना है। अब आपकी नही हमारी चलेगी। आप में जितना दम है लगा ले अब आर्य पीछे नहीं हटेंगे। चाहे कितना ही क्रांतिकारी कदम हमें उठाना पड़े।

नवाब ने स्वामी ईशानन्द को तरह-तरह के लोभ दिये परन्तु स्वामी ईशानन्द ने कहा कि मुझे केवल एक ही लक्ष्य दिखाई दे रहा है कि आर्यसमाज मन्दिर कैसे पूरा होगा। स्वामी ईशानन्द ने नवाब को फटकार कर कह दिया था कि जब तक हमारा आर्यसमाज मन्दिर नही बनेगा तब तक हम चैन से नही बैठनेवाले। स्वामी ईशानन्द जी एक बहुत ही शक्तिशाली सन्यासी थे जो कि नवाब का राज्य होते हुए भी उनसे बिलकुल नही डरते थे। स्वामी ईशानन्द की कई जिम्मेवारियां लगी हुई थी जैसे आर्यसमाज का हिसाब-किताब रखना, नवाब की यातनाएं सहन करना तथा आर्यसमाज का जहां कार्य चलता था वह भी स्वामी जी स्वयं ही करते थे क्योंकि नवाब के इतने सख्त आदेश थे कि जो मजदूर भी चला जाया करता था उसके खिलाफ भी नवाब सख्त कार्यवाही करते थे। इस स्थिति में स्वामी ईशानन्द एक की जगह काम करते रहे तथा चुना भी स्वयं ही गरठ द्वारा पिसते थे जिस गरठ का वजन लगभग २ क्विंटल हुआ करता था और स्वामी जी चन्दा इकट्ठा करते थे तथा जो गाव में आर्य पाठशाला चल रही थी उनकी भी देखरेख स्वयं ही करते थे। जिन गांवों में आर्य पाठशाला चलती थी उनके नाम इस प्रकार से हैं—चैहड़कलां, गोकलपुरा, हरियरवास, सेरला, शेहर, दमकौरा, बारवास, लोहारू, बिसलवास आदि। इन सभी पाठशालाओं की देखभाल स्वामी ईशानन्द ही किया करते थे। आगे मैं दावे के साथ लिख सकता हूं कि अगर उस वक्त स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी स्वामी ईशानन्द को लोहारू नहीं भेजते तो न यहां आर्यसमाज होता और न ही यहां कोई आर्य होता।

धन्य हैं वे वीर संन्यासी स्वामी ईशानन्द जी जिन्होंने अपने हाथों से आर्यसमाज लोहारू का पौधा लगाया और उस पौधे की देखभाल भी की। हमें ऐसे महान् संन्यासी पर गर्व है जिन्होंने दिन को दिन नहीं समझा और रात को रात नही। लगातार २४ घण्टे कार्य करके आर्यसमाज मन्दिर को खड़ा किया और नौजवान फौज तैयार करके नवाब लोहारू के खिलाफ एक लड़ाई लड़ी और नवाब को यहां से जाना पड़ा। स्वामी जी इतने शक्तिशाली थे कि जब मन्दिर का निर्माणकार्य चल रहा था तो कई बार बड़ी-बड़ी पत्थर की शीला खुद उठाकर छत पर चढा दिया करते थे। जिनके वजन का हम अनुमान भी नहीं लगा सकते हैं और हल्का लोहारू में आर्यसमाज का धुआंधार प्रचार करने लगे और जो आर्य पाठशालाएं चल रही थी वह केवल कच्ची झोंपड़ियों में चलाया करते थे। कई बार तो नवाब झोंपड़ियों को उखाड़ देते थे परन्तु शेर बहादुर संन्यासी स्वामी ईशानन्द पुनः चालू कर दिया करते थे। जब आर्यसमाज मन्दिर पूरा होगया तो स्वामी ईशानन्द को सुखशांति प्राप्त हुई।

सन् १९४७ मे लोहारू छोड़कर जाने का मन बना लिया उसी वक्त जिला गंगानगर तहसील भादरा गांव छानी बड़ी का एक पटवारी

(शेष पृष्ठ ७ पर)

मूर्तिपूजा की व्यर्थता

'दैनिक ट्रिब्यून' के १६ अक्तूबर, १९९४ के अंक में पृष्ठ ५ पर 'मूर्तिपूजा की महिमा' से एक लेख स्वामी तारानन्द द्वारा लिखित छपा है। इसमें मूर्तिपूजा के समर्थन में तर्क व वेदशास्त्र का प्रमाण एक भी नही दिया गया अपितु भावुकता से भरी बातें लिखकर व कुछ घटनाएं वर्णित करके यह मान लिया गया है कि मूर्तिपूजा युगों-युगों से चली आरही है तथा मूर्तिपूजक वरदान ही वरदान प्राप्त कर लेता है, यहां तक कि मूर्तिपूजक विषपान कर ले तो भी उसकी मृत्यु नही होती।

पुराण व अन्यान्य ग्रन्थों में साकार उपासना का साक्ष्य है, पहले इसी बात को लेता हूं। स्वामी जी ने किसी पुराण का कोई भी संदर्भ नही दिया। उनकी सेवा में निवेदन है कि पुराण अनेक है। अनेक अवसरों पर अनेक लोगों ने इनकी रचना की है। इनमे परस्पर विरोध होना स्वाभाविक बात है। सनातनधर्मियों के प्रसिद्ध नेता स्व. गणेशदत्त गोस्वामी अपने जीवन के अंतिम दिनों में स्वय मानने लगे थे कि पुराणों के मायाजाल से धर्म को मुक्त किए बिना धर्म की स्थापना सम्भव नही है।

सनातनधर्म में जिस 'श्रीमद्भागवत' की बड़ी महिमा है, उसके स्क. १०, अ ८४ मे मूर्तिपूजकों को बैल बताया गया है। देवी भागवत ५-१८-१८ के श्लोक के अनुसार विष्णु के अवतारों की जो भक्ति करेगा, उन्हें मृत्यु का भय प्राप्त होगा। देवी भागवत, ५-१९-२० के श्लोक के अनुसार गणेश जी की जो लोग पूजा करते है, वे मूर्ख है। 'देवी भागवत' के ५-१९-१० श्लोक के अनुसार शिव जी की पूजा करनेवाले को कही भी सुख न मिलेगा।

हम उक्त श्लोको का लेखन इस लेख मे नही कर रहे, केवल संदर्भ ही दे रहे हैं ताकि लेख लम्बा न होजाये। स्वामी तारानन्द व अन्य मूर्तिपूजक लोग गीता को पूर्णत मान्यता देते है। इस ग्रथ मे भी यत्र-तत्र ईश्वर को निराकार ही सिद्ध किया गया है। प्रमाणस्वरूप कुछ संदर्भ दिये जाते हैं—

ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते।
अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते॥ गीता १३/१२

अर्थात् जिसको जानना चाहिए, जिसका जानना योग्य है, उसको कहूंगा। जिसको जानकर मनुष्य मोक्ष को भोगता है, वह आदिरहित, अनादि परब्रह्म परमेश्वर है। वह न सत् कहलाता है न असत् कहा जाता है।' इस श्लोक में परमेश्वर को जानने योग्य कहा गया है, देखने योग्य नहीं। साकार स्पष्ट देखा जाता है परन्तु निराकार को जाना ही जाता है। इस श्लोक में उसे जानने योग्य कहकर स्पष्ट ही उसके निराकार होने की साक्षी दीगई है। गीता के १३/१३वें श्लोक में ईश्वर को सर्वव्यापक सिद्ध किया गया है। सर्वव्यापक शक्ति किसी मूर्ति तक ही सीमित कैसे हो सकती है? गीता के १८/६१वे श्लोक में ईश्वर का सब प्राणियों के हृदयों में ही स्थित होना स्वीकार किया गया है।

गीता व पुराणों के अन्य अनेक प्रमाण देकर हम ईश्वर के निराकार होने व मूर्तिपूजा की निरर्थकता को सिद्ध कर सकते हैं। हालांकि इनमें परस्पर विरोधाभास भी है। मूर्तिपूजा वस्तुत: २५००-२६०० वर्ष से पुरानी है नहीं। युगों-युगों से इसके चले आने की बात तथ्य विरोधी है। यह पूजा महात्मा बुद्ध व महावीर स्वामी (तीर्थंकर) के काल में आरम्भ हुई। चीन के यात्री फाहियान ने भारत की यात्रा सन् ४०० ई० में की थी। उसने लिखा है कि मैंने मथुरा, काबुल, राजपूताना (वर्तमान राजस्थान) आदि नगरों में बौद्ध विहार व बुद्ध की मूर्तियों को देखा। उसने गया, काशी, कौशाम्बी व चम्पा (बिहार की भी यात्रा की थी परन्तु उसने इन स्थानों पर एक भी हिंदू मंदिर नही देखा। इससे स्पष्ट है कि सन् ४०० ई० में भी पूर्ण देश में अभी बौद्ध की मूर्तिपूजा शुरू न हुई थी।

सन् ६४० ई० में ह्वेनसांग नामक एक अन्य चीनी यात्री भारत में आया था। उसने उन नगरों में बौद्ध विहारों व बुद्ध की मूर्तियों को उजड़ा देखा जहां २४० वर्ष पूर्व फाहियान ने इन्हे देखा था। ह्वेनसाग ने कश्मीर व तक्षशिला मे जैनियों को महावीर की मूर्ति पूजते देखा। उसने जलालाबाद, मालाबार, अयोध्या, प्रयाग व अन्य नगरो में हिंदू मूर्तियों की पूजा होते भी देखी थी। फारसी भाषा का 'बुत' शब्द जो स्पष्टतया 'बुद्ध' का अपभ्रंश है, यह सिद्ध करता है कि न केवल भारतवर्ष अपितु ईरान आदि देशों मे भी सर्वप्रथम जिस मूर्ति का प्रचार हुआ, वह बुद्ध की थी। स्वाभाविकत. जहा-जहा बौद्धमत फैलता गया, वहा-वहा मूर्तिपूजा जारी होती चली गई। देश के विभिन्न संग्रहालयों मे पुरानी मूर्तिया पड़ी है। इनमे एक भी मूर्ति ऐसी नही है जो १४००-१५०० वर्ष से अधिक पुरानी बनी सिद्ध हुई है। पुराणों, गीता व कुछ अन्य ग्रथों मे कही-कही मूर्तिपूजा का समर्थन मिलता है, परन्तु वे प्रक्षिप्त अश हैं जो वाममार्ग व यवनों के आगमन के बाद इन पुस्तको मे मिलाए गए है।

कुछ पुरुषों/महापुरुषों का वर्णन भी अपने लेख मे स्वामी तारानन्द ने किया, जिनकी कुछ घटनाए देकर उन्होने मूर्तिपूजा को लाभदायक सिद्ध किया है। यहा तक लिखा है कि मूर्तिपूजक यदि विषपान कर ले तो भी बच जाता है। यह एक अवैज्ञानिक, सृष्टिनियम विरुद्ध, तर्कहीन व यथार्थ से परे की कल्पना-मान्यता है। मीरा ने सचमुच ही यदि विषपान किया था तो वमन या रेचक क्रिया से निकाल दिया होगा। आधुनिक युग के महान् ऋषि दयानन्द को लोगो ने एक बार नही, सत्रह बार विषपान कराया था। सोलह बार तो वे योगबल, वमन या नियोली क्रिया से विष को निकालने मे सफल हुए थे परन्तु अतिम व सत्रहवी बार वे ऐसा न कर सके। उनकी सोलह बार को सफलता का सम्बन्ध मूर्तिपूजा करने या न करने से तनिक भी नही था। इसी प्रकार मीरा की घटना को समझना चाहिए। स्वय स्वामी तारानन्द मूर्तिपूजक है। क्या वे भरी सभा में विषपान करके अपने कथन की मान्यता सिद्ध करने को तैयार है?

मूर्तिपूजा का विरोध करनेवालो की भी सूची लबी है। कबीर, नानक, राजाराम मोहनराय, महात्मा गाधी, सत बसवेश्वर, गुरु रामदास, भक्त रविदास, संत तुकाराम, नामदेव, दादू, स्वामी श्रद्धानन्द, गोविंद महादेव रानाडे, महर्षि दयानन्द सरस्वती आदि अनेक महापुरुषों के अनेक संदर्भ देकर सिद्ध किया जा सकता है कि मूर्तिपूजा का विरोध करके उन्होने समाज की अधिक सेवा की व सफलताएं अर्जित की। मंदिरों में पड़ी या मूर्तियों पर चढ़ी असीम सम्पत्ति विदेशी आक्रमणकारियो को मौन निमंत्रण आक्रमण करने का देती रही है। सोमनाथ के मंदिर पर महमूद गजनवी का आक्रमण व उसकी लूटपाट इस कथन का प्रमाण है। तेमूर लंग व अन्य विदेशियो के आक्रमणों का कारण भी मंदिरों की सम्पत्ति व मूर्तिया ही हमारी रक्षा करेंगी', इस सोच का ही परिणाम है कि हम मूर्तियों में शक्ति खोजते रहे और उसी के भरोसे पर हार गये। जड़ का पूजन व ध्यान करते-करते मनुष्य की बुद्धि व क्रियाएं भी जड हो जाती हैं क्योंकि देह का जड़त्व धर्म अत:करण द्वारा आत्मा पर अपना दुष्प्रभाव अवश्य छोड़ता है।

परमपिता परमेश्वर की पवित्र वाणी वेद से लेकर उपनिषद् व छ: दर्शनों तक के ग्रथों में जिस निराकार प्रभु का वर्णन व यश मिलता है, वह सर्वव्यापक, सर्वअंतर्यामी, निराकार, अनन्त, अजन्मा, अजर, अमर, निर्विकार, सर्वाधार व सर्वरक्षक है। उसी की उपासना करने योग्य है। तुलसीदास के शब्दों में वह बिना हाथ-पैर के काम करता है व चलता है—

बिनु पग चले, सुने बिनु काना।
कर बिनु कर्म करे विधि नाना।

—इन्द्रजित 'देव'

१८ दिसम्बर, १९९४ (दैनिक ट्रिब्यून से साभार)

अश्लीलता की चरमसीमा

दूरदर्शन पर दिखाई जानेवाली अधिकतर फिल्में इतनी अश्लील होती हैं कि इन फिल्मों को परिवार के सदस्य मिल बैठकर देख नहीं सकते। वह इसलिए कि फिल्मो में एक के बाद एक अश्लील दृश्य आते हैं। फिल्मों के गानों में अश्लीलता होती है। ये माना कि सिनेमा मनोरंजन का एक बहुत ही अच्छा साधन है। पर अगर फिल्म की कहानी और दृश्य भारतीय सस्कृति के अनुरूप हों तभी अन्यथा नहीं। फिल्म की कहानी शिक्षाप्रद होनी चाहिए जिसका दर्शकों पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ना चाहिए।

यह बडा ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि भारतीय सिनेमा से धीरे-धीरे सभी अच्छी बाते लुप्त होरही हैं। हमारे सिनेमा पर पश्चिम जगत् का अमिट प्रभाव पडता जारहा है। गानों में भी आधुनिक सिनेमा में कोई विशेष भाव नही है। इनमें मात्र तुकबंदी की स्पष्ट झलक नजर आती है। आधुनिक सिनेमा के दृश्यों से नवयुवकों पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। कुछ अबोध नवयुवक सिनेमावाली घटना को असलियत में आजमाकर अपनी जान को जोखिम में डाल करके अपने भविष्य को बर्बाद कर डालते हैं। केन्द्रीय सेंसर बोर्ड को समय रहते सिनेमा निर्माताओं को दिशा-निर्देश देने चाहिए। अश्लील दृश्यों और गानो के ऊपर कानूनी तौर पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की आवश्यकता है।

(जनसत्ता से साभार)

जिला सिरसा में शराबबन्दी गतिविधियां

१५ जनवरी को ओढां में एक शराबबन्दी बैठक का आयोजन किया गया। डबवाली, ओढा और बड़ागुढा ब्लाक समितियों के लिए शराब विरोधी मोर्चे का गठन किया गया। बैठक में निम्न निर्णय लिए गए—

१. २६ जनवरी गणतन्त्र दिवस को शराब विरोधी कार्यकर्त्ता काले दिवस के रूप में मनाएंगे और किसी सरकारी समारोह में शामिल नही होंगे।

२. ५ फरवरी तक जिला सिरसा की सब ब्लाक समितियों में शराब विरोधी मोर्चे का गठन करके ग्राम स्तर तक मोर्चे का गठन किया जावेगा।

३. ५ फरवरी को आर्यसमाज मन्दिर सिरसा में शराब विरोधी मोर्चे की एक बैठक और बुलाई गई है। यह निर्णय किया गया कि १५ फरवरी से जिला सिरसा में सत्याग्रह शुरु किया जावे और उसकी रणनीति तय की जावे।

४. कुछ वानप्रस्थी कार्यकर्त्ता भूख हड़ताल और आमरण अनशन की भी इच्छा जाहिर कर चुके हैं जिसका निर्णय ५ फरवरी की बैठक में करके उपायुक्त के माध्यम से सरकार को नोटिस देने पर भी विचार किया जावेगा।

जो भी हो सिरसा जिला शराब विरोधी मोर्चा आरपार की लड़ाई करना चाहता है और १ अप्रैल को सिरसा जिला में शराब की कोई दुकान की निलामी न हो सके।

—ओमप्रकाश गोदारा, संयोजक शराब विरोधी मोर्चा
गांव व डा० चौटाला, सिरसा

गुरुकुल आमसेना में आर्यवीर दल का भव्य शिविर सम्पन्न

२५ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर तक प्रांतीय आर्यप्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल के सहयोग से गुरुकुल भूमि में आर्यवीर दल के भव्य शिविर में दो सौ से अधिक आर्यवीरों ने उत्साहपूर्वक शिक्षण ग्रहण किया। २९ तारीख को खरियार रोड पर पथ-सचालन में ५०० से अधिक आर्यवीरों ने भाग लिया। ३१ दिसम्बर को नवापारा जिला के ए. डी. एम. एवं खरियार रोड एन. सी. सी. के चेयरमैन आदि अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति मे शिविर का भव्य समापन समारोह सम्पन्न हुआ।

—धर्मानन्द सरस्वती कार्यालयाध्यक्ष

'नशे की प्रवृत्ति पर अंकुश कैसे' पर विचार गोष्ठी

नगर के प्रगतिशील संगठन सोहना जागृति मंच द्वारा समाज में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति पर अकुश कैसे नामक विषय पर विचार गोष्ठी आयोजित की गई। इसमें नगर के राजनैतिक, धार्मिक व सामाजिक संगठनों के साथ-साथ छात्रों ने हिस्सा लिया।

गोष्ठी समापन समारोह में मुख्य अतिथि हरयाणा राज्य लघु उद्योग एव निर्यात निगम के निदेशक रणवीरसिंह लोहिया ने कहा कि समाज में सुरसा के मुख की भाति नशे की बढ़ रही प्रवृत्ति के कारण आज के युवा प्राचीन संस्कृति को भूलते जारहे हैं। वही नशे की लत से लोगों का नैतिक पतन होने लगा है।

इस अवसर पर आर्यसमाज के प्रधान मेघराज आर्य ने कहा कि इस कार्य के लिए सामाजिक मंचों के साथ-साथ विद्यार्थियों व महिलाओं को भी आगे आकर तथा जनता को नशे से होनेवाली बुराइयों के प्रति सचेत करना चाहिए।

(दैनिक जागरण से साभार)

श्री लक्ष्मीदास आर्य (जगाधरी) दिवंगत

जगाधरी ११-१-९५ केन्द्रीय आर्य सभा के तत्त्वावधान में आर्य कन्या उच्च विद्यालय जगाधरी के सभागार में हुई। ११-१-९५ को हुई शोकसभा में प्रसिद्ध समाजसेवी श्री लक्ष्मीदास जी आर्य के प्रति भावभीनी श्रद्धाजलि दीगई। स्थानीय पांचो आर्यसमाजों के अधिकारी एवं सदस्य बहुत सख्या में उपस्थित थे। श्रद्धाजलि देने मे डा० सूर्यपाल शास्त्री पुरोहित, स्वामी सच्चिदानन्द जी एवं श्री विजयसिंह शास्त्री ने दिवंगत आत्मा के गुणों की बड़ी प्रशंसा की। शोक प्रस्ताव प्रसिद्ध आर्यनेता श्री सुभाष आहूजा द्वारा पढ़ा गया। आप दो आर्य कन्या विद्यालयों कच्चा बाजार अम्बाला छावनी एव जगाधरी के सस्थापक एवं दोनों समाजो के भिन्न-भिन्न समय में मन्त्री रहकर ५५ वर्ष तक सक्रिय समाजसेवी रहे। वह पाकिस्तान मे निरन्तर १२ वर्ष सर्वसम्मति से प्रधान रहे। वह ९१ वर्ष के थे।

उनके पुत्र श्री मनोहरलाल दीवान केन्द्रीय आर्यसभा के वर्तमान मन्त्री एवं आर्यसमाज माडल टाउन के प्रचारमन्त्री/कोषाध्यक्ष हैं के द्वारा आदर्श पिता की पुण्यस्मृति मे बहुत-सी आर्यसंस्थाओं को दान दिया गया। आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा को भी २०० रुपए भेजे हैं।

आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत का चुनाव

प्रधान—ओ० पी० वर्मा, उपप्रधान—रामकरण सहरावत, मंत्री—आनन्द आर्य, उपमंत्री—अशोक परमार, कोषाध्यक्ष—विश्वामित्र भीमवाले, पुस्तकालयाध्यक्ष—रणधीर मट्टो, प्रचारमंत्री—सी० एस० कौशिक, लेखानिरीक्षक—रमेशचन्द्र गुप्ता।

अत्यन्त तकनीकी उच्च परीक्षाओं में हिन्दी का विकल्प हुआ

भारत सरकार की भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के एक पत्र के अनुसार—कृषि वैज्ञानिक नियुक्ति मण्डल द्वारा आयोजित कृषि वैज्ञानिक सेवा/नेट भर्ती परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम का विकल्प दे दिया गया है। इनमें अंग्रेजी का कोई अनिवार्य प्रश्नपत्र नहीं होता। यही नहीं मण्डल द्वारा भर्ती के लिए आयोजित साक्षात्कारों में भी हिन्दी माध्यम का विकल्प दे दिया गया है और इसकी सूचना अभ्यर्थियों को प्रेषित साक्षात्कार पत्रों में दी जाती है और उनसे हिन्दी या अंग्रेजी माध्यम का विकल्प चुनने का अनुरोध किया जाता है। इसके अलावा व्यावसायिक विषयों के प्रश्नपत्रों को छोड़कर सभी परीक्षाओं के प्रश्नपत्र द्विभाषिक रूप में सुलभ कराये जाते हैं। अब व्यावसायिक विषयों के प्रश्नपत्रों को भी द्विभाषिक रूप में तैयार कराने के लिए संकल्पशील प्रयत्न किए जारहे हैं।

२. अनुरोध है कि इसका व्यापक प्रचार किया जाए और अधिक से अधिक उम्मीदवारों को हिन्दी माध्यम से परीक्षा मे बैठने के लिए प्रेरित किया जाए। ऐसी ही जिन-जिन अन्य परीक्षाओं में हिन्दी का विकल्प अभी तक नहीं हुआ है उसके लिए प्रयत्न किए जाएं तथा उक्त उदाहरण के आधार पर अंग्रेजी भाषा की अनिवार्यता को हटाने के लिए यत्न जारी रखे जाएं। —जगन्नाथ संयोजक, राजभाषा कार्य,

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, एक्स. वाई. ६८,

१० दिसम्बर, १९९४ सरोजिनी नगर, नई दिल्ली—११००२३

हविपा शराब के ठेकों की नीलामी का विरोध करेगी

अंबाला—हरयाणा विकास पार्टी के महासचिव व पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष वेदपाल ने कहा है कि मार्च के अन्त में होनेवाली शराब के ठेकों की नीलामी का हविपा जबरदस्त विरोध करेगी व इसके लिए जनांदोलन चलाएगी।

यहां बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि उनकी पार्टी पूर्ण शराबबन्दी के हक में है। सत्ता में आने पर आंध्रप्रदेश में एन. टी. रामाराव की तरह हरयाणा में बंसीलाल पूर्ण शराबबन्दी लागू करेंगे। उन्होंने एक नंबरी सरकारी दैनिक लाटरियों का भी विरोध किया व कहा कि अपने फायदे के लिए भजनलाल जनता के हितों से खेल रहे हैं। सत्ता में आने पर एक नंबरी लाटरियों पर भी पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाएगा।

बिजली की दरों में भारी बढ़ोतरी का हविपा नेता ने विरोध किया व कहा कि पहले से भारी बोझ तले दबी जनता पर यह एक और बड़ा बोझ जनता पर डाल दिया गया है जिसके लिए लोग भजनलाल को कभी माफ नहीं करेंगे। सरकारी भ्रष्टाचार व बिजली की बड़े पैमाने पर चोरी से बिजली बोर्ड लगातार घाटे में जारहा है व इस घाटे को पूरा करने के नाम पर बार-बार जनता पर गैर जरूरी बोझ डाल दिए जाते हैं। बोर्ड का घाटा इस वक्त १५०० करोड़ को पार कर चुका है।

उन्होंने बताया कि चार फरवरी को हरयाणा विकास पार्टी के अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमन्त्री बंसीलाल अम्बाला जिले के बरवाला व बराड़ा में जनसभाएं करेंगे। इस दौरान कई और कार्यकर्ता हविपा में शामिल होने का ऐलान करेंगे। ३०-१-९४—(जनसत्ता से साभार)

शुभ सूचना

आप सबको यह जानकर हर्ष होना चाहिए कि बहिन कलावती आचार्या कन्या गुरुकुल गणियार जिला परिषद् के चुनाव में बहुत ही अधिक वोटों से विजयी हुई हैं। हम आर्यजगत् की ओर से उनको हार्दिक बधाई देते हैं। प्रभु करे कि बहिन जी आर्यसमाज का कार्य अधिक से अधिक कर पाएं जिससे भूले भटकों को सन्मार्ग मिल जाए। हम बहिन जी का हार्दिक धन्यवाद करते हैं और सादर नमस्ते कहते हैं।

—संपादक सुधारक

(पृष्ठ ४ का शेष)

यहाँ आया जिसका नाम श्री धन्नाराम आर्य था। इनसे स्वामी जी की मुलाकात हुई। स्वामी जी लोहारू छोड़कर श्री धन्नाराम आर्य के साथ छानीबड़ी चले गये। वहां भी स्वामी ईशानन्द ने वेदों का भारी प्रचार किया। वहां पर स्वामी जी ने एक आर्यसमाज मन्दिर बनवाया। एक बहुत बड़ा हस्पताल भी बनवाया। एक हायर सैकेन्डरी स्कूल भी बनवाया। जिसने अपने जीवन में बहुत से परोपकार के कार्य किये। जिनका मैं व्याख्यान भी नहीं लिख सकता। धन्य हों ऐसे संन्यासी जिनका जीवन आर्यसमाज की भलाई के लिए बीता। स्वामी जी हर समय महर्षि दयानन्द सरस्वती के बाकी कार्य ही करते थे। आर्यसमाज लोहारू में भी स्वामी ईशानन्द ने एक बहुत बड़ी टीम तैयार की। मैं स्वामी ईशानन्द को महान् संन्यासी तो मानता ही हूं इसके साथ-साथ आर्यसमाज लोहारू का जन्मदाता भी मानता हू जिन्होंने अपनी शक्ति से भी अधिक कार्य किया और मैं स्वामी ईशानन्द को सच्चा राष्ट्रभक्त भी मानता हूं जिन्होंने अंग्रेजो से भी टक्कर ली थी। ऐसे राष्ट्रभक्त समाजसुधारक सन्यासी को हम लाखों बार प्रणाम करते है।

अंत में २५ अक्तूबर, १९९४ सायं सात बजे इस महान् सन्यासी आर्यसमाज लोहारू का दीपक इस संसार से सदा-सदा के लिए बिदा होगया। स्वामी जी के जाने के बाद जो क्षति हुई है उसका मैं उल्लेख नहीं कर सकता। मैं स्वामी ईशानन्द सरस्वती का सच्चा सेवक था जो अब स्वामी जी हमारे बीच में नही हैं। स्वामी ईशानन्द की प्रेरणा से मेरे पिता श्री चुन्नीलाल आर्य बने और मेरे पिता जी की शिक्षा से ही मैं आर्य बना। अगर स्वामी ईशानन्द मेरे पिता जी को आर्य नहीं बनाते तो मैं भी आज आर्य नही होता। कहीं नरक में जाकर बुरे ही धन्धे करता। अन्त में मैं उस महान् संन्यासी स्वामी ईशानन्द की आत्मा को शांति मिले। इसकी मैं प्रार्थना करता हूं।

शायरी

बचपन का था नाम रतिराम लेकिन होनहार थे।
राष्ट्र की सेवा करने के बाल अवस्था में विचार थे॥
बने सन्यासी देश की खातिर ईशानन्द कहलाये थे।
नवाब लोहारू ने स्वामी जी पर भारी जुल्म ढाये थे॥
बिलकुल ना घबराये स्वामी आर्यमन्दिर बनाया था।
जो भी पिछड़े हुए भाई थे सबको गले लगाया था॥
त्याग, तपस्या प्रेमभाव का सबको पाठ पढाते थे।
मेहनत करने में स्वामी जी जरा नही घबराते थे॥
लोहारू में आकर स्वामी ने परोपकार के काम किये।
आर्यमन्दिर को पूरा करके जग मे रोशन नाम किये॥
यदि स्वामीजी ना आते तो मन्दिर कौन बनाता यहां।
वार्षिकोत्सव साप्ताहिक सत्सग करता कौन कराता यहां॥
कहे हवासिंह स्वामी जी को लगी यहा फुलवारी है।
रक्षा करना फर्ज हमारा हम सबकी नैतिक जिम्मेवारी है॥

—हवासिंह आर्य, आर्यमित्र सेवक
आर्यसमाज मन्दिर, लोहारू (भिवानी)

एक कहानी पाखंड खंडन

सुनाऊं तुमको सांची मैं एक कहानी,
ध्यान लगाकर सुनो मिलेगी सीख परमसुख खानी ॥ टेक

१—आर्यसमाजी एक महाशय, कन्या जिनकी ध्यानवती।
गृहकार्यों में दक्ष सुशीला, मधुरभाषिणी बुद्धिमती ॥
वेद और उपनिषद् पढ़ती, करती सन्ध्या और हवन।
होता था अतिशुद्ध सुगंधित, परमसुशोभित सकल भवन ॥
ब्याही गई किन्तु पौराणिक, घर वह चतुर सयानी ॥ सुनाऊं···

२—सास एक दिन देवी के मन्दिर में, उसे साथ लाई।
पत्थर मूर्ति समक्ष खड़ी कर, बोली हे देवी माई ॥
शीश झुकाकर श्रद्धा से, जो इसको भोग लगाएगी।
खा लेगी वह उसे और तुझ पर प्रसन्न हो जाएगी ॥
पूरण सभी करेगी तेरी, इच्छाएं मनमानी ॥ सुनाऊं···

३—सुनकर बातें बहू सास की अपने मन में मुस्काई।
निकट शेर की मूर्ति बनी थी, जिसे देखकर चिल्लाई ॥
देखो फाड़ रहा है वह मुख, अपना मुझको खाने को।
दौड़ो-दौड़ो दुष्ट शेर से, माता मुझे बचाने को ॥
यूं कहकर वह बहू सास से लतिका-सी लिपटानी ॥ सुनाऊं···

४—बोली सास न डर नाहक तू, कहना मेरा मान अरी।
देख जरा असली-नकली को, कुछ तो कर पहचान अरी ॥
है यह शेर निरा पत्थर का, है बिल्कुल बेजान अरी।
कैसे तुझको खा जाएगा, सोच समझ नादान अरी ॥
मत घबड़ा यह कर न सकेगा कुछ भी बहू रानी ॥ सुनाऊं···

५—बोली बहू शेर पत्थर का, है यह मुझे न खाएगा।
तुम कहती हो यह नितान्त, निर्जीव न कुछ कर पाएगा ॥
तो पत्थर की देवी भी, यह क्या खाएगी हे माता।
है बेजान न कर सकती कुछ, किन्तु एक अचरज आता ॥
भोग लगाने को क्यों इसको, जन करते नादानी ॥ सुनाऊं···

६—न तस्य प्रतिमा अस्ति वेद का, मन्त्र स्पष्ट बतलाता है।
प्रतिमा उसकी नहीं ओम्, वह ब्रह्म विशुद्ध विधाता है ॥
चर्मचक्षुओं से न देखने में कदापि वह आता है।
किन्तु उपासक मन मन्दिर में उसका दर्शन पाता है ॥
मृग सम उसे ढूंढ़ते फिरते, इधर-उधर अज्ञानी ॥ सुनाऊं···

७—बोली सास बहू तूं ने मम नेत्र ज्ञान के खोल दिये।
वचन कहे अनमोल कि मानो माणिक मुक्ता तोल दिये ॥
मूर्ति पूजने अब न जाऊं न तुमको ले जाऊंगी।
पूर्ण प्रकाश पुञ्ज परमात्मा को आत्मा में पाऊंगी ॥
जाऊं आर्यसमाज सुनूंगी विमल वेद की वाणी ॥
सुनाऊं तुमको सांची मैं एक कहानी।
ध्यान लगाकर सुनो मिलेगी सीख परमसुख खानी ॥

संग्रहकर्ता—रामगोपाल आर्य, कृषि अनुसंधान केन्द्र
नौगावा (अलवर) पिन—३०१०२५

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्तीभवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ३०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० १३२०/७३ रजि० नं० P/RTK-४९ टेलिफोन १, ६६, ०८, ५३, ०९५

ओ३म्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—[illegible] शास्त्री सभामन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष २२ अंक १२ १४ फरवरी १९९५ (वार्षिक शुल्क ५०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-००

सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती द्वारा भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन

हजारों युवकों ने शराब न पीने की प्रतिज्ञा की

ग्राम कन्साला जिला रोहतक में दिनांक ९ फरवरी ९५ को श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती के शिष्य श्री रामवीर जी शास्त्री के परिवार द्वारा ग्राम से बाहर एक भव्य यज्ञशाला का निर्माण किया गया है। एक सप्ताह से इसमें यजुर्वेद पारायण यज्ञ ब्र० जीवानन्द नैष्ठिक की देखरेख में गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया। ८ फरवरी को रात्रि को आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की श्री तेजवीर, जगदीश, सत्यपाल नवयुवक भजन मण्डली के प्रभावशाली गीत हुए।

९ फरवरी को प्रातः यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने उपस्थित नरनारियों को यज्ञोपदेश करते हुए इसका उद्घाटन किया और यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वेदों में यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ (कार्य) कहा गया है। यज्ञ करनेवाले नरनारी सदा स्वस्थ रहते हैं तथा परोपकार के कार्यों में व्यस्त रहकर यशस्वी जीवन व्यतीत करते हैं। इसी भावना से प्रेरित होकर कर्मयोगी साधु स्वामी योगानन्द (पूर्व ब्रह्मचारी रामस्वरूप) ने एक विशाल अश्वमेध के आयोजन के लिए एक लाख साठ हजार रु० का दान दिया है। इस प्रकार हरयाणा भर में यज्ञ करके नवयुवकों को शराब जैसी सामाजिक बुराइयों को छोड़ने के लिए प्रतिज्ञा करवाई जावेगी और उन युवकों के सहयोग से मार्च मास में शराब के ठेकों की नीलामी के अवसर पर प्रत्येक जिला केन्द्र पर विरोध प्रदर्शन करके हरयाणा सरकार को आगामी वित्तीय वर्ष से शराबबन्दी करने के लिए ज्ञापन दिए जावेंगे। इस महत्त्वपूर्ण कार्य को सफल करने के लिए हरयाणा भर का प्रचार कार्यक्रम बनाया गया है।

स्वामी जी ने अपने उपदेश में ग्रामवासियों को सावधान किया कि यदि इसी प्रकार शराब का प्रचार बढ़ता गया तो परिवार नष्ट हो जावेंगे। आज शराब लगभग प्रत्येक परिवार में प्रवेश कर चुकी है। परिवार में कोई न कोई सदस्य शराब के जाल में फंस चुका है। अतः इस भयंकर खतरे से बचाने का एक ही उपाय पूर्ण शराबबन्दी लागू करवाना है।

आपने भारतवर्ष के इतिहास का उल्लेख करते हुए बताया कि मुसलमान आक्रमणकारियों के कारण हरयाणा में यज्ञपरम्परा ढीली होगई थी। मुसलमान बादशाहों ने यज्ञ करनेवाले ब्राह्मणों को समाप्त करने का यत्न किया क्योंकि ब्राह्मण ही क्षत्रियों को शराब जैसी बुराइयों से दूर रहने की प्रेरणा किया करते थे। बुराइयों से दूर रहकर ही क्षत्रिय वीर सैनिक बनते थे। अंग्रेजी सरकार ने इतिहास की पुस्तकों में सिकन्दर को महान् योद्धा लिखा है। परन्तु वह महान् नहीं अपितु महानीच था, जिसने अपना खजाना भरने के लिए भारतवर्ष के मन्दिरों को ध्वस्त किया तथा लाखों नरनारियों का अपने स्वार्थ के लिए नर-संहार किया। अन्त में संसार से खाली हाथ गया और अपने अतुलधन को न ले जाकर अपयश को अपने साथ ले गया। उसने अपनी मां तथा गुरु को धोखा दिया और अपने पिता का वध किया था। इस प्रकार अधर्म कमानेवाले बर्बाद होकर चले गये।

स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द का गुणगान करते हुए कहा कि उनके कारण भारत में पुनः वैदिकधर्म का प्रचार हुआ। हरयाणा के वीर क्षत्रियों ने उनकी प्रेरणा से वैदिकधर्म को अपनाया और उनके सुयोग्य शिष्य स्वामी श्रद्धानन्दजी ने हरयाणा में ५ गुरुकुलों की स्थापना करके वैदिक विद्वान् तैयार किये जिन्होंने भारत को स्वतन्त्र करवाने में प्रमुख भूमिका निभाई। आज हरयाणाभर में २५ गुरुकुल चल रहे हैं। अनेक आर्य शिक्षण संस्थाओं में यज्ञशाला भी बनाई गई हैं। इस प्रकार यज्ञपरम्परा पुनः चालू की जा रही है। आपने अपने शिष्य श्री रामवीर शास्त्री के पिता [illegible] जी की सराहना करते हुए बताया कि गोरक्षा आंदोलन में कन्साला ग्राम के वीर भारी संख्या में तिहाड़ जेल गये थे। पुलिस की लाठीचार्ज से इस ग्राम का एक युवक हरजस शहीद भी हुआ था। [illegible] ने जेल में ही दोनों समय यज्ञ करने तथा अपने पुत्र रामवीर को गुरुकुल में पढ़ाने का व्रत लिया था। इसी पवित्र कार्य को आगे बढ़ाने के लिए इनके परिवार ने ग्राम में यज्ञशाला का निर्माण करके अनुकरणीय कार्य किया है। स्वामी जी के निर्देशानुसार श्री रामवीर शास्त्री ने भी अपने पिताजी के पद-चिह्नों पर चलते हुए दैनिक यज्ञ करने का व्रत लिया तथा प्रतिवर्ष इस यज्ञशाला में किसी वेद का पारायणयज्ञ कराने का संकल्प किया। इस कार्यक्रम के पश्चात् सभी नरनारियों को श्रद्धापूर्वक भोजन करवाया गया।

दोपहर को स्थानीय राजकीय विद्यालय में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा व्यायाम तथा योगासन का आकर्षक प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रांगण में हजारों की संख्या में छात्र-छात्राएं तथा अध्यापकगण उपस्थित थे। गुरुकुल के ब्रह्मचारी बजानावासी ने लोहे की बेड़ें तोड़कर अपनी छाती पर हथौड़ी से एक पत्थर तुड़वाकर तथा चलती कार को रोककर अपने ब्रह्मचर्यबल से सभी को प्रभावित किया।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने इस अवसर पर ग्रामवासियों को उनके पूर्वजों का इतिहास सुनाते हुए कहा कि कन्साला ग्राम खोखर गोत्र के उन वीरों का है जिनके नाम रोहतक में खोखराकोट का टीला वीरगाथा अपने अन्दर समाया हुआ है। अपनी पुरानी वीरता के अनुरूप ग्राम के पढ़नेवाले युवकों को शराब जैसी बुराई से बचने के लिए प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम आज के पश्चात् शराब, मांस आदि दुर्व्यसनों से दूर रहेंगे। स्वामी जी महाराज के इस ओजस्वी भाषण से प्रभावित होकर हजारों युवकों ने अपने हाथ खड़े करके शराब का भविष्य में सेवन न करने की प्रतिज्ञा की।

आर्यसमाज तथा श्री रामवीर शास्त्री के परिवार ने स्वामी ओमानन्द जी महाराज को गुरुकुलों के ब्रह्मचारियो को छात्रवृत्ति देने के लिए ११ हजार रुपए भेंट किये।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाधीक्षक

भारत में शराबबन्दी आंदोलन–अमरीका से सबक सीखें

प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद्

अमरीका में १४ वर्ष (१९१९ से १९३३) तक मद्यनिषेध कानून लागू रहा। अमरीका की कांग्रेस और सीनेट (दोनों सदनों) द्वारा दो तिहाई से अधिक मतों से मद्यनिषेध के लिए किया गया संविधान पास करने तथा तीन चौथाई राज्यों के द्वारा अनुसमर्थित तथा अभिपुष्ट करने के बाद १६ जनवरी, १९१९ को यह संशोधन लागू हुआ। अमरीका में शराबबन्दी आंदोलन सन् १८२६ में शुरू हुआ। महिलाओं और पुरुषों के शक्तिशाली संगठनों के आंदोदन के फलस्वरूप एक-एक करके २६ राज्यों में मद्यनिषेध कानून बनाये और अन्त में संविधान का संशोधन भी पास किया गया। ९३ वर्ष के सतत् प्रयास ने पूरे देश की जनता तथा जनता द्वारा चुने गए विधायकों और संसद सदस्यों के मन बदलकर रख दिए। जनता के प्रतिनिधियों के मन ही नहीं बदले, वे तो अपने विचारों में इतने दृढ़ होगये कि १९१३ में दोनों सदनों ने अधिनियम पास किया कि जिन राज्यों में मद्यनिषेध लागू हो उनमें कोई भी अन्य राज्य शराब नहीं भेज सकता। उस समय के राष्ट्रपति टैफ्ट ने अपने निषेधाधिकार का सहारा लेकर उस अधिनियम को अस्वीकार कर दिया। परन्तु सांसदों ने दोनों सदनों में दो तिहाई से अधिक मतों से पुन: अधिनियम पास कर दिया। राष्ट्रपति का वीटो समाप्त होगया।

१९१९ मे संविधान संशोधन को लागू करने के लिए अमेरिका की कांग्रेस ने एक अधिनियम पास किया, जिसके अनुसार मद्यनिषेध लागू करने के लिए संघ सरकार को एक उच्चाधिकारी नियुक्त करने का अधिकार दिया गया था, उस समय के जाने माने राष्ट्रपति विल्सन ने अधिनियम को अपने निषेधाधिकार का उपयोग करते हुए नामंजूर कर दिया। अगले दिन ही कांग्रेस ने और सीनेट ने दो तिहाई से अधिक मतों से वह अधिनियम पास कर दिया और राष्ट्रपति के वीटो को बेअसर कर दिया। जनता तथा जनता के प्रतिनिधियों का यह हृदय परिवर्तन कैसे सम्भव हुआ, इसके लिये १८२६ से १९१९ तक के शराबबन्दी आंदोलन का इतिहास जानना जरूरी है।

चाहे देखने में विचित्र लगता हो, परन्तु अपने-अपने हिसाब से शराबबन्दी के समर्थक और विरोधी दोनों ही अमेरिका के शराबबन्दी आंदोलन से प्रेरणा लेते रहे हैं और आज भी ले रहे हैं। १८२६ से १९१९ तक का आंदोलन वास्तव में शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं को प्रेरणा देनेवाला है। १९१९ से १९३३ तक की गतिविधियां शराब पिलानेवालों को अपने पक्ष में दलील देने के लिये उत्साहित करती हैं। इसलिये इन दोनों कालों की गतिविधियों का विश्लेषण आवश्यक जान पड़ता है।

शराबबन्दी आंदोलन

शराबबन्दी आंदोलन का श्रीगणेश १८२६ में मद्य-त्याग सभा (Temperance Society) की स्थापना से हुआ। जनजागरण का कार्य तो चलता रहा, परन्तु १८६३ में कानून के द्वारा शराबबन्दी के लिये आंदोलन प्रारम्भ हुआ। आंदोलनकर्त्ताओं ने अपनी संस्था की शाखाएं सारे देश में बना डालीं और एक सशक्त आंदोलन बनकर खड़ा होगया। इस आंदोलन में महिलाएं बहुत सक्रिय होगईं और १८७४ में उन्होंने "ईसाई महिला मद्य-त्याग संघ" (Woemn's Christian Temperance Union) की स्थापना कर दी। महिलाओं द्वारा घोषित आंदोलन जोर पकड़ने लगा और पुरुष अनुभव करने लगे कि अब उनको भी बढ़-चढ़कर आंदोलन में कूद पड़ना चाहिए। पुरुषों ने भी १८९३ में शराब घर विरोधी लीग (Anti-Saloon League) नामी मजबूत संगठन खड़ा कर दिया। पुरुषों के उपरोक्त संगठनों ने जनमत तैयार करके यह प्रचार किया कि प्रतिनिधि ऐसे चुनकर भेजे जायें जो स्वयं शराब न पीते हों और जो मद्यनिषेध का कानून बनवाने का सार्वजनिकरूप से वचन दें। इस आंदोलन का इतना गहरा प्रभाव हुआ कि बीस वर्ष के भीतर ही नौ राज्यों में मद्यनिषेध कानून बन गये। १९१३ मे एक बहुत बड़ा सम्मेलन करके यह निर्णय किया गया कि संविधान में संशोधन करके पूरे देश में शराबबन्दी कानून लागू किया जाये। इस सम्मेलन के पश्चात् बड़ा जोरदार प्रचार किया गया। हजारों छोटे बड़े सम्मेलन देश के कोने-कोने में किये गये और उनमें जाने माने बुद्धिजीवियों ने अपने तर्कसंगत तथा ओजस्वी भाषणों से जनमत पलट डाला। नतीजा यह हुआ कि ४ वर्षों में ही १७ अन्य राज्यों ने भी मद्यनिषेध कानून बना दिये। ४८ राज्यों में से आधे से अधिक २६ राज्यों ने मद्यनिषेध कानून बना डाले और ईमानदारी से लागू भी कर दिये।

संविधान का संशोधन

१९१७ में संविधान के संशोधन के लिए मैदान तैयार होगया। जनता शराब के विरुद्ध खड़ी होगई थी और उनके द्वारा चुने गए प्रतिनिधि भी पूरी तरह तैयार होगये थे। जब दोनों सदनों में संशोधन पर मत लिये गये तो सीनेट में शराबबन्दी के हक में ६५ और उसके विरुद्ध केवल २० वोट पड़े। इसी प्रकार कांग्रेस में शराबबन्दी के हक में २८२ और विरोध में केवल १२८ वोट पड़े। दोनों सदनों में दो तिहाई से अधिक वोट शराबबन्दी के पक्ष में दिये गये सीनेट में ७६ प्रतिशत से अधिक और कांग्रेस में ६८ प्रतिशत से अधिक। अमरीका के संविधान में एक शर्त और रखी हुई है कि संविधान संशोधन लागू तभी हो सकेगा जब तीन चौथाई राज्यों द्वारा उस संशोधन की अभिपुष्टि होजाये। दो वर्षों से कम समय में ही तीन चौथाई ३६ राज्यों ने अभिपुष्टि करदी और १६ जनवरी, १९१९ से शराबबन्दी कानून लागू होगया। राष्ट्रपति विल्सन ने संघ सरकार द्वारा सब राज्यों में शराबबन्दी के तालमेल के लिए एक अधिकारी की नियुक्ति सम्बन्धी अधिनियम को मंजूरी नहीं दी, परन्तु दोनों सदनों ने तुरन्त दो तिहाई मतों से पुन: अधिनियम पास करके राष्ट्रपति की नामंजूरी को रद्द कर दिया।

यह तो आंदोलन की सफलता का इतिहास है, जो अत्यन्त प्रेरणादायक है और बेमिशाल है।

आत्मसन्तोष और बेफिक्री–सफलता से विफलता की ओर

इस अनुपम, अभूतपूर्व और बेमिसाल उपलब्धि से आंदोलनकर्ता आत्मसन्तुष्ट ही नहीं आत्मविभोर होगये और यह समझ बैठे कि उन्होंने अपना काम पूरा कर दिया। सारे देश के लिए कानून बन गया, अब उनके लिए कुछ करना शेष नहीं रह गया। अब जो कुछ करना है वह सरकार ने करना है वह अपनी जिम्मेदारी निभाये। उन्होंने इस तथ्य को आंखों से ओझल कर दिया और भुला दिया कि शराब के निर्माता और व्यवसायी, जिनके पास अपार धन था, उन्होंने संसद सदस्यों और मन्त्रियों को रिश्वत देकर अपने पक्ष में करने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगाया था और सीनेट के २० सदस्यों और कांग्रेस के १२८ सदस्यों को वे शराबबन्दी के विरुद्ध तैयार कर पाये थे। शराबबन्दी कानून लागू होते ही शराब के व्यापारियों ने भी शराबबन्दी संशोधन विरोधी संगठन बना डाला। धन की कमी तो उनके पास थी ही नहीं, उन्होंने समाचारपत्रों और सिनेमाघरों के द्वारा मद्यनिषेध के विरोध में प्रचार करवाना शुरू किया। नौकरशाहों और जनप्रतिनिधियों की सहायता लेकर अवैधरूप से शराब बनाना और बेचना शुरू किया। शराबबन्दी में लगे संगठन यह सोचते रहे कि जनता उनके बहकावे में नहीं आयेगी और उनकी शराब बिक नहीं पायेगी। परन्तु कुछ प्रचार और कुछ लोगों की और सरकारी तन्त्र की कमजोरी मद्यनिषेध के विरोध के लिए तर्क और तथ्य जुटाये जाते रहे। १९२८ में शराब के समर्थक राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार स्मिथ को जनता ने हरा दिया। इससे शराबबन्दी में लगे संगठन बेफिक्र होगये। वे समझ बैठे कि संविधान का संशोधन हटाया नहीं जा सकता, इस गलतफहमी और निष्क्रियता का फल यह निकला कि ४ वर्ष बाद हुए अगले चुनाव में लोग बहुत कम वोट डालने गये और शराब के व्यवसायियों का उम्मीदवार जीत गया। उसके पश्चात् १९१९ में लागू किया गया संशोधन रद्द कर दिया गया।

(क्रमशः)

कुसीद (वृद्धि के लिये धनप्रयोग)

पूज्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती आचार्य गुरुकुल झज्जर के आदेशानुसार सत्यार्थप्रकाश (स्थूलाक्षर) शुद्ध और सुन्दर छापने के लिए कम्प्यूटर से टाइप सैट करवाने के लिए मुझे सम्पूर्ण सत्यार्थप्रकाश के प्रूफ तीन-चार बार पढने का अवसर मिला। चतुर्थ समुल्लास में चारों वर्णों के कर्त्तव्य कर्म और गुणों के वर्णनक्रम में वैश्य के गुण, कर्म वर्णन में मनुस्मृति (१-९०) के श्लोक—

पशूनां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
वणिक्पथं कुसीदं च वैश्यस्य कृषिमेव च॥

में आये 'कुसीद' शब्द का अर्थ महर्षि दयानन्द जी ने शब्दार्थ से हटकर किया है—

"(कुसीद) एक सैकड़े में चार, छः, आठ, बारह, सोलह वा बीस आनों से अधिक ब्याज न लेना और न देना।"

संस्कारविधि पुस्तक के 'गृहाश्रमविधि' प्रकरण में वैश्य के कर्म-प्रसंग में ऊपर लिखे श्लोकस्थ 'कुसीद' शब्द का अर्थ "ब्याज का लेना" किया है किन्तु महर्षि दयानन्द जी ने नीचे फुट नोट लिखा है -

"सवा रुपये सैकडे से अधिक, चार आने से न्यून ब्याज न लेवे न देवे। जब दूना धन आजाये, उससे आगे कौडी न लेवे न देवे। जितना न्यून ब्याज लेवेगा, उतना ही उसका धन बढेगा। और कभी धन का नाश और कुसन्तान उसके कुल मे न होंगे।"

वर्णोच्चारण शिक्षा के पश्चात् पठन-पाठन व्यवस्था मे द्वितीय पुस्तक महर्षि दयानन्द जी ने "संस्कृतवाक्यप्रबोध" लिखी है उसमे भी "कुसीदग्रहणप्रकरणम्" नामक प्रकरण लिखा है—

"यद्येकवारं दद्याद् गृह्णीयाच्च तर्हि कुसीदवृद्ध्या द्वैगुण्ये धर्मोऽधिकेऽधर्म इति वेदितव्यम्।

जो एक बार दे लें तो ब्याजवृद्धिसहित मूलधन द्विगुण तक लेने में धर्म और अधिक लेने में अधर्म होता है, ऐसा जानना चाहिए।

प्रतिमासं प्रतिवर्षं वा यदि कुसीदं गृह्णीयाद् यदा समूलं द्विगुणं धनमागच्छेत्तदा मूलमपि त्याज्यम्।

जो महीने-महीने में अथवा वर्ष-वर्ष में ब्याज लेता जाय तो जब दूना धन आजाय फिर आगे कुछ भी न लेना चाहिए॥"

ब्राह्मण के घर में जन्मे और ब्रह्मचर्य से संन्यासी बने महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कुसीद (ब्याज पर लेन देन) को इतना महत्त्व क्यों दिया यह मैं अभी तक नहीं समझ पाया हूं। "सत्यार्थप्रकाश" जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ में 'कुसीद' शब्द की शब्दार्थ (धातुप्रत्ययजन्य अर्थ) से हटकर व्याख्या करना, "संस्कारविधि" सदृश ग्रन्थ में भी कुसीद के प्रसंग में न्यूनतम और अधिकतम सूद लेने देने के साथ यह लिखना कि "जितना न्यून ब्याज लेवेगा उतना ही उसका धन बढ़ेगा। और धन का नाश और कुसन्तान उसके कुल में न होंगे।"

"संस्कृतवाक्यप्रबोध" जैसी बालशिक्षा की प्रारम्भिक पुस्तक में भी 'कुसीदग्रहणप्रकरण' का लिखना और उसमें भी ब्याज से धनवृद्धि दुगुनी होने तक धर्म्य और अधिक को अधर्म्य बतलाना और साथ ही मूल से दुगुना धन मिल जाने पर मूल भी छोड़ देना जैसी बातें बुद्धिमान् सज्जनों के लिये विचारणीय और आचरणीय हैं।

मैंने अपनी जिज्ञासा पूर्ति के लिए मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति और इनकी संस्कृत टीका मन्वर्थमुक्तावली, मिताक्षरा तथा कौटिलीय अर्थशास्त्र, अष्टाध्यायी, काशिका, महाभाष्य, अमरकोश, पाणिनिकालीन भारत आदि ग्रन्थों में 'कुसीद' शब्द की व्याख्या देखी और व्यवहार सम्बन्धी जानकारी प्राप्त की तब महर्षि दयानन्दकृत 'कुसीद' शब्द की व्याख्या का आधार समझ मे आया।

महर्षि दयानन्द ने कुसीद (ब्याज लेने देने) का जो धार्मिक सिद्धांत लिखा है वह मनुस्मृति, कौटिलीयार्थशास्त्र आदि के अनुकूल है। मनु जी लिखते हैं—

कुसीदवृद्धिर्द्वैगुण्यं नात्येति सकृदाहृता॥ (८।१५१)

"वृद्ध्या धनप्रयोगः कुसीदं, तत्र या वृद्धिः सकृद्गृहीता सा द्वैगुण्यं नातिक्रामति, मूलवृद्धिर्द्विगुणैव भवति।" (कुल्लूकभट्टः)

वृद्धि के लिये धन देना अथवा लगाना कुसीद कहलाता है और यह धनवृद्धि दुगुने से अधिक नही होनी चाहिये।

याज्ञवल्क्य ने भी "कुसीदकृषिवाणिज्यं पशुपाल्यं विशः स्मृतम्" (१।११९) यहां मिताक्षरा टीका में कुसीद का अर्थ "वृद्ध्यर्थं धनप्रयोगः" लिखा है किन्तु यहां मर्यादा नही लिखी।

कौटिलीयार्थशास्त्र के धर्मस्थीय तृतीय अधिकरण के प्रकरण ६८ के ११वें अध्याय में ऋण लेने और ब्याज आदि का विस्तृत विवेचन किया गया है। वहां पर भी प्रथम सूत्र यही है—

"सपादपणा धर्म्या मासवृद्धिः पणशतस्य"

सौ रुपयों पर सवा रुपया (१५ प्रतिशत) मासिकवृद्धि धर्मानुकूल है।

मानक हिन्दी कोश मे 'कुसीदवृद्धि' का अर्थ ब्याज लिखा है और कुसीदजीवी का अर्थ किया सूदखोर महाजन।

कुसीद = साहूकार, सूदखोर
कुसीदम् = सूदखोरी, सूदखोरी का व्यवसाय
कुसीदा = सूदखोर स्त्री
कुसीदायी = सूदखोर की पत्नी
कुसीदी, कुसीदिकः = सूदखोर
कुसीदपथः = सूदखोरी, सूदखोर (पठान) का ब्याज, ५ प्रतिशत से अधिक का ब्याज (वामन शिवराम आप्टे कोश)

अमरकोश ने सूद के तीन नाम दिये है—
"अर्थप्रयोगस्तु कुसीदं वृद्धिजीविका" (अमरकोश वैश्यवर्ग २।४)
१. अर्थप्रयोग, २. कुसीद, ३ वृद्धिजीविका।

सूदखोर के चार नाम लिखे हैं—
"कुसीदिको वार्धुषिको वृद्ध्याजीवश्च वार्धुषि."
(अमरकोश वैश्यवर्ग २।५)
१. कुसीदिक, २. वार्धुषिक, ३. वृद्ध्याजीव, ४. वार्धुषि।

मनु, बृहस्पति, कात्यायन आदि ने चक्रवृद्धि, कालवृद्धि आदि ब्याज को गर्हित बतलाया है। (मन्वर्थमुक्तावली ८।१५३)

पांच हजार वर्ष प्राचीन व्याकरणशास्त्र पाणिनीय अष्टाध्यायी में ऋण (देयमृणे ४।३।४७), उत्तमर्ण (धारेरुत्तमर्णः १।४।३५), अधमर्ण (आवश्यकाधमर्ण्ययोर्णिनिः ३।३।१७०), वृद्धि (तदस्मिन् वृद्ध्यायलाभशुल्कोपदा दीयते ५।१।४७), प्रतिदान (प्रति प्रतिनिधिप्रतिदानयोः १।४।९२) और प्रतिभू (२।३।३९) आदि लेन देन सम्बन्धी पारिभाषिक शब्द सूत्रों में आये हैं।

कृषि वाणिज्य और गोपालन के साथ-साथ सूद पर ऋण देना भी लोगों की जीविका का एक अंग था। पाणिनि ने 'न्याय्य' सूद को 'वृद्धि' (५।१।४७) और ब्याज को ऊंची दर को 'कुसीद' कहा है (४।४।३१)। कुसीद को निन्दित माना जाता था (प्रयच्छति गर्ह्यम् ४।४।३०)। कुसीदिक व्यक्ति के लिये सामाजिक निन्दा सूचित होती थी। उसकी घरवाली को भी कुछ निन्दा का भाग मिलता था। उसे कुसीदायी = (सूदखोर की घरवाली) कहकर पुकारा जाता था।

वार्तिककार कात्यायन ने तगडे ब्याज को वृधुषि और सूदखोर को वार्धुषिक (४।४।३० वार्तिक ३ कहा है।

पाणिनि ने "कुसीददशैकादशात् ष्ठन् ष्ठचौ (४।४।३१) मे "दशैकादश" नामक ऋण का उल्लेख किया है जिसमे १० रुपये देकर एक रुपया महीने की वृद्धि से ११ रु० लिये जाते थे जो १० प्रतिशत मासिक ब्याज बनता था, इसे गर्ह्य = निन्दनीय माना है।

कौटिल्य, याज्ञवल्क्य, वसिष्ठ, नारद, गौतम, व्यास आदि ने १५ प्रतिशत सूद (सवा रुपया सैकडा) वृद्धि को धर्म्य माना है। बौधायन ने अधिकतम २० प्रतिशत वृद्धि का उल्लेख किया है।

व्याकरण महाभाष्यकार पतंजलि ने 'प्रयच्छति गर्ह्यम्' (४।४।३०) सूत्र पर "द्विगुणं मे स्यादिति प्रयच्छति—द्वैगुणिकः। त्रैगुणिकः।" मूल का दुगुना और तिगुना ब्याज कमानेवालों को निन्दा योग्य माना है।

पाणिनि के समय ब्याज मे मिलनेवाली धनराशि के अनुसार ऋण का नाम पडने की प्रथा थी (५।१।४७) जैसे पचक वह ऋण था जिस पर

पाच रुपये सूद मिले। पतंजलि ने सप्तक, अष्टक, नवक, दशक ऋण का भी वर्णन किया है।

देयमृणे (४।३।४७) के अनुसार जितने समय में ऋण चुकाना होता था तदनुसार उसका नाम पड़ता था। संवत्सर (वर्ष) में देय ऋण को सांवत्सरिक (४।३।५०) और ६ मास में देय ऋण को आवरसमक (४।३।४९) कहते थे। इसी प्रकार ग्रीष्म ऋतु में देय ऋण को ग्रैष्मक (४।३।४९) तथा कालापक एव आश्वत्थक नाम की ऋतु सूचक ऋण के हैं। जौ का भूसा आने पर देय ऋण को 'यवबुसक' कहते थे (४।३।४८)।

अष्टाध्यायी में कायिकवृद्धि (बन्धुआ मजदूर प्रथा) का संकेत 'अकर्तर्यृणे पञ्चमी (२।३।२४) सूत्र में है जहां "शताद् बद्धः। सहस्राद् बद्धः।" जैसे प्रयोगों को नियमित किया गया था, जिसका अर्थ था सौ रुपयों का अथवा हजार रुपयों का ऋण चुकाने के लिए अपने आपको बन्धक रख दिया है। कौटिलीय अर्थशास्त्र में भी इस प्रथा का उल्लेख है।

सज्ञाया धेनुष्या (४।४।८९) पाणिनि ने 'धेनुष्या' शब्द का संज्ञा विषय में निपातन किया है। 'धेनुष्या' उस दूध देनेवाली गाय को कहते थे जिसको ऋण लेनेवाला ऋणदाता को तब तक के लिए देता था जब तक उसके दूध से उधार लिये हुये रुपये पूरे न हो जाये।

"या धेनुरुत्तमर्णाय ऋणप्रदानाद् दोहनार्थ दीयते सा धनुष्या। पीतदुग्धेति यस्या. प्रसिद्धिः।" (काशिका)

अष्टाध्यायी (६।२।३८) सूत्र में 'महाप्रवृद्ध' शब्द आया है। ब्याज की उस अधिक से अधिक धनराशि को 'महाप्रवृद्ध' कहते थे जहा तक चक्रवृद्धि से बढ़ते-बढते और आगे ब्याज का बढ़ना सम्भव न हो। मनु ने (८।१५१) श्लोक में कहा है कि ब्याज की इकट्ठी रकम मूलधन से किसी भी हालत में अधिक नहीं होनी चाहिए। कौटिल्य का नियम है कि धनिक अथवा अधमर्ण (धारणिक) की अनुपस्थिति अथवा भूल चूक लापरवाही के कारण ब्याज बढ जाये तो उसे चुकता करने के लिए मूल का दुगुना दे दिया जाये "चिरप्रवासस्तम्भप्रविष्टो वा मूल्य-द्विगुणं दद्यात्" (अर्थशास्त्र ३।११)। शुक्र का भी यही मत है। इस प्रकार १०० कार्षापण का ऋण चक्रवृद्धि से प्रवृद्ध होकर २०० कार्षापण हो जाता था, तब उस ऋण को 'महाप्रवृद्ध' समझा जाता था।

बहुत प्राचीनकाल से ब्याज पर रुपयों के लेन देन का व्यवहार चला आरहा है। धनी व्यक्ति निर्धन को आवश्यकता पर धन न दे तो संसार का व्यवहार व्यापार नही चल सकता। लोभ मानवसुलभ ऐसा दुर्गुण है जो मानव को धर्म पथ से विचलित कर देता है। पुराकाल में और वर्तमानकाल में भी रुपयों के लेन देन पर ब्याज की विभिन्न दर मिलती हैं। जो व्यक्ति ब्याज पर धन लगाता है उसकी इच्छा दुगुना तिगुना अधिक से अधिक लाभ कमाने की होती है। इसके लिए हमारे शास्त्रकारों ने मर्यादा बाधी है कि १०० रुपयों पर अधिकतम सवा रुपया मासिक (१५ प्रतिशत) ब्याज (वृद्धि) लेना धर्म्य है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी प्राचीन धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्रों का साररूप सिद्धान्त अपने ग्रन्थों में लिखा है।

कुछ सज्जन शंका करते है कि महर्षि दयानन्द जी ने प्राचीनयुग का सिद्धात लिखा है तब सब कुछ सस्ता था। आज की मंहगाई में सवा रुपया सैकड़ा मासिक वृद्धि (ब्याज) कम है।

ऐसे सज्जनों से निवेदन है कि वे अपनी बुद्धि पर थोड़ा भार डालकर विचार करे। सस्ते समय में १०० रुपयो की जितनी क्रयशक्ति थी उसी हिसाब से सवा रुपये की भी क्रयशक्ति थी और आज के महगे समय में जितना १०० रुपयो में मिलता है उसी के अनुपात से उसके १५ प्रतिशत सूद सवा रुपये को क्रयशक्ति का भी उतना ही ह्रास हुआ है। धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र ने जो नियम बनाए हैं वे प्रतिशत के हिसाब से बनाए हैं। मंहगे अथवा सस्ते का प्रभाव उन पर नही पड़ता।

आज के मंहगाई के समय में भी भारतीय बैंक न्यूनतम ४-५ प्रतिशत से १०-११ प्रतिशत सूद पर रुपए जमा करते हैं और अधिकतम १३ से १७ प्रतिशत सूद पर उद्योगों के लिए ऋण देते हैं। यह ब्याज दर महर्षि दयानन्द के अधिकतम सवा रुपया सैकड़ा और न्यूनतम चार आने सैकड़ा ब्याज के निकटस्थ है।

समाज में प्रतिष्ठित जीवनयापन के लिए, समाज की भलाई के लिए, दान पुण्य और शुभकार्यों की सिद्धि के लिए धन कमाना अत्यावश्यक है। विष्णु शर्मा ने पचतंत्र में लिखा है—

न हि तद्विद्यते किञ्चिद्यदर्थेन न सिद्ध्यति।
यत्नेन मतिमांस्तस्मादर्थमेकं प्रसाधयेत् ॥२॥
यस्यार्थास्तस्य मित्राणि यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः।
यस्यार्थाः स पुमाँल्लोके यस्यार्थाः स च पण्डित. ॥३॥
अर्थेभ्योऽपि हि वृद्धेभ्यः संवृत्तेभ्यस्ततस्तत.।
प्रवर्तन्ते क्रियाः सर्वाः पर्वतेभ्य इवापगाः ॥६॥
गतवयसामपि पुसां येषामर्था भवन्ति ते तरुणाः।
अर्थेन तु ये हीना वृद्धास्ते यौवनेऽपि स्युः ॥१०॥

वेदों में भी स्थान-स्थान पर "वयं स्याम पतयो रयीणाम्" धन के स्वामी होने की प्रार्थना की गई है किन्तु साथ ही पापी लक्ष्मी हमारे घर में न घुसे इसके लिए भी सावधान किया है। अतः धनार्जन करते समय धर्म का ध्यान सर्वदा रखना चाहिए। धर्म ही एक ऐसा साधन है जो मानव की प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाता है। हम देख रहे हैं नर-मादा (स्त्री-पुरुष) के संयोग से यह मैथुनी सृष्टि चल रही है। हमारे धर्मशास्त्रों ने काम को धर्म के दायरे में बांध दिया है किसके लिए कौन गम्य है अथवा कौन अगम्य है। मनुष्य यदि मानवधर्म को त्यागता है तो मनुष्यता से गिर जाता है, मर जाता है।

गीता में भी कहा है—

"धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।"

आहार निद्रा भय मैथुन आदि मनुष्य पशु-पक्षी आदि सभी जीवधारियों में समानरूप से मिलते हैं। धर्म ही एक ऐसा साधन है जो मनुष्य को पशु आदि से पृथक् स्थापित करता है।

आहारनिद्राभयमैथुनं च
सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो
धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ॥

अग्नि उष्णता को त्यागने पर कोयला वा राख बन जाती है। सर्वत्र ऐसा ही समझना चाहिए।

भर्तृहरि जी लिखते हैं—

धनानि भूमौ, पशवश्च गोष्ठे
नारी गृहद्वारे, जनाः श्मशाने।
देहश्चितायां, परलोकमार्गे
कर्मानुगो गच्छति जीव एकः ॥

जिस धन की प्राप्ति के लिए मनुष्य उचित अनुचित सब कुछ करता है वह धन अन्त समय भूमि पर पड़ा रह जाता है। गाय घोड़ा आदि उत्तमोत्तम पशु गोशाला वा अश्वशाला में बन्धे रह जाते हैं। अर्धांगिनी (पत्नी) भी शिष्टाचारवश घर के द्वार तक रोकर रुक जाती है। पुत्र मित्र बन्धु बान्धव अर्थी उठाकर श्मशान भूमि तक साथ जाते हैं। जिस मानव शरीर की साज सज्जा और भोगसामग्री के लिए मनुष्य कोई कसर नही छोड़ता, वह भी चिता में भस्म हो जाता है। इस लोक को छोड़कर जब जीवात्मा परलोक गमन करता है तब उसके साथ उसके शुभ-अशुभ कर्म ही जाते हैं। उन्हीं के आधार पर परलोक में जाति आयु और भोग मिलते हैं।

इसलिये धर्म अर्थ काम मोक्ष रूप पुरुषार्थ-चतुष्टय की सिद्धि के लिए प्रथम आश्रम ब्रह्मचर्य अथवा बाल्यकाल में तपश्चर्यापूर्वक वेदादि शास्त्रों को पढ़कर धर्म का सम्यक् ज्ञान करना चाहिये। द्वितीय आश्रम गृहस्थ अथवा यौवन में लोकव्यवहारार्थ धर्मपूर्वक पर्याप्त धनार्जन करना चाहिये और धर्ममर्यादा में रहते हुए ही कामोपभोग करना चाहिये। तृतीय वानप्रस्थ आश्रम अथवा ढलती आयु मे पुनः ग्राम्य भोगों से निवृत्त होकर संयम-साधना करते हुए चतुर्थ आश्रम संन्यास अथवा वार्धक्य में मोक्षप्राप्ति के उपाय करने चाहियें।

महाकवि कालिदास ने महाराजा रामचन्द्र जी के पूर्वज रघुवंशियों के प्रसंग में इस प्राचीन परम्परा का उल्लेख 'रघुवंश' में किया है—

प्रथमेऽधीतविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्धक्ये मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम् ॥
रघूणामन्वयं वक्ष्ये ... ...

—वेदव्रत शास्त्री

शान्ति चाहते हो तो तृष्णा को जीतो

आज सम्पूर्ण विश्व में मानव अशांत, त्रस्त और दु:खी है। यह उल्टी बात देखकर आश्चर्य होता है कि भौतिक उन्नति चरमसीमा पर होते हुए वैज्ञानिक प्रगति से मानव शरीर को सुख सुविधाओं की प्रचुर सामग्री उपलब्ध है किन्तु फिर भी मानव अपने को सुखी अनुभव नहीं करता। शांति सब चाहते हैं किन्तु शांति जिस उपाय से मिल सकती है उसकी ओर किसी का ध्यान नहीं। सर्वत्र भौतिक साधनों को एकत्रित करने की एक होड़ में दौड़ लग रही है फिर बताओ शांति कैसे संभव होगी ? चिन्तन के क्षण में हम इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि भगवान् की सृष्टि की हर वस्तु त्याग और यज्ञ भावना का आदर्श प्रस्तुत करती हुई भगवान् के असीम प्रेम का परिचय दे रही है जबकि मानव का प्रेम प्रतिभौतिकता में विस्तृत होने के स्थान पर संकुचित होरहा है। सागर किरणों को कितनी उदारता से जल दे रहा है, किरणें उसे बादलों को दे रही हैं, बादल उसे पृथ्वी को दे रहे हैं, पृथ्वी नदियों को दे रही है, नदियां पुनः समुद्र को दे रही हैं। यह चक्र ही विश्व प्रेम, विश्व जीवन का आधार है। हम अपने पूर्ण पुरुषार्थ से ज्ञान, बल, धन को अर्जित करें किन्तु इन सभी उपलब्धियों का स्वामी अपने को न मानकर परमात्मा को मानते हुए त्यागपूर्वक उपभोग करे तभी संसार की सर्वत्र फैली अशांति, पीड़ा, कराह वेदना, चीत्कार को समाप्त कर शांति का मधुमय वातावरण लाया जा सकता है। अराति एक दूसरे के प्रति अदान वृत्ति एवं क्षीण बुद्धि ने तृष्णा को बढ़ा दिया है और हम हाय कंगाली का करुण क्रन्दन कर रहे हैं।

आज संसार की स्थिति इस प्रकार होगई है—'आग से सोने उठे ज्यों-ज्यों हवा की' मनुष्य की समस्याएं दूर न होकर विकट होती जा रही हैं। मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा को उक्ति चरितार्थ होरही है। समस्याओं का समाधान खोजने के लिए मनुष्य अग्रसर होरहा है किन्तु वे दूर होना तो दूर रहा बढती जारही हैं। इसका मूल कारण है कि केवल प्राकृतिक (भौतिक) उन्नति की ओर ही दृष्टि लगी हुई है आत्मिक उन्नति बिल्कुल उपेक्षित है। धन की उन्नति से कोई मनुष्य, समाज या राष्ट्र कभी तृप्त नहीं हुआ। भौतिक उन्नति से परिपूर्ण पाश्चात्य देश विविध समस्याओं में घिरे हुए किंकर्त्तव्य विमूढ होकर समाधान का मार्ग ढूढ रहे हैं। प्रत्येक देश मे पारस्परिक प्रतिद्वन्द्व के कारण जीवन नारकीय बन चुका है। दिन में चैन और रात्रि मे निद्रा गूलर का फूल बन चुकी है।

जितनी अधिक भौतिक सम्पन्नता बढ़ती है उतनी ही अधिक दरिद्रता। सबसे बड़ा दरिद्री कौन ? एक साधु को कहीं से एक पैसा मिल गया। वह सोचने लगा कि यह पैसा किसको दू ? उसने अनेक लोगों से पूछा। एक व्यक्ति बोला—यह उसे दे दो जिसकी असन्तुष्टि पेड़ पर लटकी हो। 'क्या मतलब ?' साधु ने चकित होकर पूछा। वह व्यक्ति बोला महाराज ! यह पैसा उसे दे देना चाहिए जिसकी सबसे अधिक आवश्यकता देखो।

साधु पैसा लेकर खोज में निकल पडा। हजारों मनुष्यो से उसने पूछा। एक से एक को अधिक जरूरतमन्द पाया। साधु हैरान था कि पैसा किसको दूं ? क्या अब सारे संसार में घूमकर पता लगाना पड़ेगा कि सबसे अधिक जरूरतवाला कौन है कौन सबसे अधिक असन्तुष्ट है ? बिना इसे जाने पैसा किसी को दिया नही जा सकता इसी विचार में मग्न साधु को एक विशाल सेना जाती हुई दिखाई दी। पूछने पर मालूम हुआ कि किसी राज्य का राजा जिसके अधिकार मे सात राज्य हैं आठवें को जीतने के लिए जारहा है।

साधु ने सोचा कि इससे बड़ा असन्तुष्ट कौन हो सकता है जिसका पेट सात राज्यों में नहीं भरा। यह सोचकर उसने वह पैसा राजा की पालकी में फेंक दिया। यह देखकर राजा के क्रोध का ठिकाना न रहा। उसने पालकी रुकवा दी और साधु से कहा—मूर्ख ! तूने यह क्या किया ?

साधु ने बड़े धैर्य के साथ उत्तर दिया—मुझे कहीं से यह पैसा मिला था। मैंने सोचा इसे किसको दू। अन्त में निर्णय किया कि जो सबसे बड़ा असन्तुष्ट है उसको दूं। सारे संसार की खाक छान डाली। आज तुम्हें देखकर यह ज्ञात हुआ कि तुमसे बडा दरिद्री और कोई नहीं होगा ? अतः 'स तु भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला' के अनुसार पैसा मैंने तुम्हें दे दिया।

यह सुनकर राजा ने क्रोध में भरकर कहा—तूने मुझे पहचाना नही कि मैं कौन हूं ? तूने मुझे दरिद्री मान लिया। तू जानता नहीं मैं सात राज्यों का राजा हूं।' साधु ने पूछा—अच्छा राजन् आप ही बताओ दरिद्री कौन है ? राजा बोला—'जो जरूरतों को पूरा करने में असमर्थ है वही दरिद्री है।' साधु ने सहजभाव से निर्भीकतापूर्वक कहा—तो तुम तो सबसे बड़े कंगाल ही हुये जो अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिए लाखों मनुष्यों का वध करने को विशाल सेना लेकर जारहे हो। अब तुम ही बताओ तुमसे बड़ा दरिद्री और असन्तुष्ट कौन है ? तुम अपनी खुशी के लिए दूसरों को खुशी मिटाने के लिए भाग-दौड़ कर रहे हो।'

वास्तविकता यही है आज मनुष्य अपनी समस्याओं के हल का एकमात्र उपाय पैसा समझ रहा है। सबकी दृष्टि पूंजी पर लगी है। संसार में हर आदमी बडा कहलाना चाहता है। अपनी नाक ऊंची करना चाहता है। आज बडा आदमी वह समझा जाता है जिसके पास बहुत अधिक पैसा है। पैसे की तृष्णा इस प्रकार बढती जारही है कि करोड़पति भी अपने को कंगाल समझता है क्योंकि वह अरबपति नही है।

वस्तुतः प्रश्न पेट भरने का नही है। पेट तो भरपेट अन्न से भर जाता है किन्तु तृष्णा का पेट तो सारे संसार की सम्पत्ति एक व्यक्ति को दे दो तब भी नही भरता। समस्या तो आध्यात्मिक है। इसलिए पूंजीवाद, समाजवाद, साम्यवाद कोई भी उसे हल नही कर सकता। यदि केवल शरीर के भोगों की समस्या होती तो माता बच्चे के लिए बडे से बडा त्याग करने को उद्यत न रहती। देश, धर्म, जाति के लिए वीर अपने प्राणों की आहुति न देते। शरीर के पीछे इसका एक अधिष्ठाता आत्मा और प्रकृति के पीछे उसका एक नियन्ता परमात्मा है। इतिहास बताता है जिनसे दुनिया थर्राती थी वह भी मृत्यु के सामने चुपचाप खाली हाथ ही चल दिये। सांसारिक सब ऐश्वर्य तो एक न एक दिन छूटना ही है। अतः प्रश्न पेट भरने का नही तृष्णा को जीतने का है। तृष्णा को जीतने का एकमात्र उपाय यज्ञमय और त्यागमय जीवन व्यतीत करना है। वेदमार्ग ही उसके लिए एक मार्ग है—'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः। मा गृध: कस्य स्विद्धनम्॥' जो व्यक्ति धनी होकर दान नही देता उसे अराति—समाज का दुश्मन कहा गया है। व्यक्ति को कमाने का पूर्ण अधिकार है किन्तु वह अपने धन का उपभोग उतना ही करे जितना उसकी जीवनचर्या के लिए आवश्यक है। शेष धन को समाज की उन्नति और सुख के लिए दान दे दे। केवल धर्म की भावना से प्रेरित होकर ही धन का वितरण त्याग है। राग या यश कामना से प्रेरित होकर धन का वितरण करना त्याग नही। अदान वृत्ति धनी के वध का कारण बनती है। अकेला भोग करनेवाला मानो धन का भोग नहीं करता अपितु केवल पाप का भोग करता है। अतः वेद उपदेश देता है—'शतहस्त: समाहर सहस्रहस्त: सकिर' सौ हाथों से कमा और हजार हाथों से सम्यक् दान कर। इसी यज्ञीय भावना से तृष्णा का पेट भर सकता है।

आज देश में सर्वत्र कंगाली, गरीबी को दूर करने का क्रंदन हो रहा है। गरीबी को मिटाने की अनेक योजनाएं चल रही है किन्तु गरीबी मिट नही रही क्योंकि योजनाएं लगडी हैं। केवल पेट की पूर्ति तो अन्न कर सकता है। यदि पेट की पूर्ति से बचा धन प्रजा के कल्याण में लगाया जावे तो जो आध्यात्मिक शांति अनुभव होगी वह ऊंची नाक के सुख से कहीं ऊंची होगी। जिस देश की प्रजा मे इस प्रजा के सुख अनुभव करनेवाले त्यागधन पुरुषों को सबसे ऊंचा माना जाए वहां ऊंचा हृदय तथा नाक दोनों एक दिशा मे बढ़ते हैं तब प्रजा की कंगाली बहुत आसानी से दूर हो जाती है क्योंकि पेट पालने के लिए हर व्यक्ति श्रम करता है और पेट पालने से बची हुई शक्ति सब एक दूसरे की सहायता में लगाते हैं। (हितोपदेशक से साभार) (क्रमशः)

नवनिर्वाचित सरपंच व जिला परिषदों का साहसिक कदम

(निज सवाददाता द्वारा)

(१) ग्राम मुकलान जिला हिसार के श्री सूबेसिंह आर्य पूर्व सरपच जिला परिषद् का सदस्य चुना गया है। जिन्होंने अपने चुनाव के दौरान एक बून्द भी शराब नही पिलाई। साफ शब्दो मे अपने हल्के में घोषणा की थी कि "मुझे कोई वोट दे या न दे मैं शराब नही पिलाऊंगा। हो जीतने पर लोगों के काम खूब करूंगा।" पनिहार चैक गाव में उनकी अग्निपरीक्षा हुई। गांव के कुछ लोगों ने कहा कि हमारी १०० वोट हैं, अगर आप हमे कुछ शराब की पेटियां दे दो तो हम आपको वोट दे सकते हैं। लेकिन इस आर्यवीर ने साफ कह दिया था कि आप अपने वोटो को मेरे ढोल में मत डालना। मैं चाहे हारू या जीतूं पेटी तो क्या एक बून्द शराब नही पिलाऊंगा। तब लोगों ने कहा कि हम आपकी परीक्षा ले रहे थे। आप एक अच्छे नवयुवक हैं। हम अपने वोट आपको ही देंगे। परिणामस्वरूप बिना शराब के इनकी शानदार जीत हुई।

(२) ग्राम रासीवास की श्रीमती शकुन्तला बी० ए० विधवा जिला भिवानी में वार्ड १५ से जिला परिषद् की सदस्या चुनी गई। इन्होंने एव इनके सुपुत्र श्री मेजर नपेन्द्रसिंह जी ने अपनी चुनाव सभाओं में साफ घोषणा की कि हम शराब नही पिलाएंगे। अगर आपने काम करवाने है तो हमें वोट दीजिए। बगैर शराब के अच्छे वोटों से विजयी हुई। अब शपथ लेने के बाद इन्होंने कहा कि मैं शराबबन्दी व महिलाओं मे पर्दाप्रथा को हटवाने की ओर विशेष ध्यान दूंगी।

ज्ञातव्य है कि यह पूर्वमन्त्री चौ० सूरजमल खाण्डा निवासी की सुपुत्री है।

(३) ग्राम सुलतानपुर की श्रीमती सत्यबाला देवी जिला हिसार से जिला परिषद् की सदस्या चुनी गई हैं। चुनाव के दौरान इनके पति श्री बलराज मलिक तथा श्रीमती ने साफ शब्दों में कहा था कि हम शराब नहीं पिलाएगे। दूध, चाय, फल, मिठाई खाओ। ये भी बहुत ज्यादा वोटों से विजयी हुई हैं।

(४) ग्राम कंवारी जिला हिसार में सभा उपदेशक श्री क्रांतिकारी जी के कनिष्ठ सगे भ्राता श्री धूपसिंह दहन अपने चार उम्मीदवार साथियों को हराकर ४०३ वोटों से सरपंच चुने गए हैं। २ शराबी उम्मीदवारों की तो जमानत जप्त हुई हैं। इन्होंने चुनाव के दौरान अपने लिखित घोषणा पत्र को छपवाकर वितरित किया जिसमें गांव के विकासकार्य के साथ-साथ गांव में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की बात भी लिखी थी। परिणामस्वरूप लोगों ने हजारों रुपए की शराब दूसरे उम्मीदवार की पी और वोट इनको दिए।

शपथ ग्रहण करने के बाद गाव की पंचायत बुलाकर शराबबन्दी लागू कर दी है। जो हासी के ठेकेदार की जीप गांव से बाहर खेतो में या सड़क पर शराब डालने आती थी उसे भी रोक दिया गया है।

(५) ग्राम गारनपुरा कलां जिला भिवानी में सर्व कर्मचारी संघ हरयाणा के प्रधान श्री मा० शेरसिंह जी का भतीजा श्री गजेसिंह जी सरपच चुने गए है। यह जीत भी बगैर शराब के हुई है। यहा भी चुनाव के समय एक घटना घटी कि गाव का एक हरिजन शराब पीकर प्रधान जी के घर आगया। प्रधान जी ने उसे धमकाया और साफ शब्दों में कहा कि पुन. हमारे घर शराब पीकर मत आना। हमें ऐसे वोटो को आवश्यकता नही है।

इसी प्रकार उपरोक्त नवनिर्वाचित सदस्यों से प्रेरणा लेकर अपने अपने गाव मे स्वय शराब छोड़कर गाव को भलाई के लिए शराबबन्दी का साहसिक कदम उठाए।

बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

ग्राम बालावास जिला हिसार में शराबबन्दी लागू

नवनिर्वाचित बहादुर महिला श्रीमती हुकमीबाई जो ग्राम बालावास (हिसार) में सरपंच चुनी गई है। जिन्होंने चुनाव में वायदा किया था कि अगर मैं सरपच बनी तो गांव में शराबबन्दी कर दूगी। १६ जनवरी को शपथ लेने के बाद २३-१-६५ को गांव की पंचायत बुलाकर प्रस्ताव पास कर दिया कि आज से आगे कोई शराब पिए हुए गलियों में नहीं मिलेगा। शराबी हालत में मिलने पर सख्त कार्यवाही होगी। गांव में ठेकेदार की जीप आती थी उसे बन्द कर दिया। अगर गांव में कोई अवैध तरीके से शराब बेचता हुआ मिला तो ५०० रु० दण्ड होगा। इस महिला सरपंच ने अपना वचन पूरा कर दिया है। यह महिला रिजर्वेशन कोटे ओड़ बरादरी से है।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

साप्ताहिक सत्संग में सम्मानित समारोह सम्पन्न

गरीब बस्ती में आर्यसमाज फतेचन्द कालोनी हिसार में साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर प्रात: हवन के बाद श्री दलजीतसिंह पहलवान की अध्यक्षता में एक सभा हुई जिसमें नगर के नवनिर्वाचित पार्षद वार्ड ३१ के श्री त्रिलोकचन्द जी का सम्मान किया गया। आर्यसमाज फतेचन्द कालोनी के प्रधान श्री जगमालसिंह आर्य ने एक शाल भेंट किया। इसके अतिरिक्त श्री गौरीशंकर कोषाध्यक्ष, श्री रामरख बिश्नोई आदि ने पुष्पमालाओं से सम्मान किया।

प्रि० बी०डी० जिन्दल (दयानन्द कालेज हिसार) का प्रवचन हुआ। आचार्य दयानन्द जी शास्त्री आदि कई विद्वान् उपस्थित थे। गरीब बस्ती में यह समारोह बड़े उत्साह से मनाया गया। काफी संख्या में नर-नारियों ने भाग लिया।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

योगेन्द्रसिंह आर्य ब्लाक समिति सदस्य चुने गये

गाव भैंसवाल कलां भक्त फूलसिंह की कर्मभूमि रहा है। इस गांव मे आर्यसमाज का बहुत प्रभाव रहा है। इस गाव का आसपास के इलाके में बडा असर है।

१५ दिसम्बर ६४ के चुनाव में इस गांव से श्री अमरसिंह सरपंच चुने गए हैं जो पहले भी सरपंच रह चुके थे। इन्होंने अपने गांव में शराब विरोधी कमेटी बनाकर शराब को बिल्कुल बन्द करवाया था और अब भी शराब को बिल्कुल बन्द करवाने का विचार रखते हैं। गाववालों ने उनको २५००००/- (ढाई लाख रुपए) की लागत की एक जीप भेंट की है।

ब्लाक समिति गोहाना वार्ड नं० २० से श्री योगेन्द्रसिंह आर्य पुत्र श्री यशपाल शास्त्री सदस्य चुने गए हैं जो कि आर्यसमाजी परिवार से सम्बन्ध रखते हैं। इनके दादा श्री कन्हैयाराम नम्बरदार हुआ करते थे जिन्होंने भक्त फूलसिह, दादा बासीराम, चौ० पीरूसिंह के साथ मिलकर आर्यसमाज के लिए बहुत काम किया।

योगेन्द्रसिंह आर्य अनेक संस्थाओं व गुरुकुलों में बढ़-चढ़कर दान देते हैं। गांव मे अपना स्कूल चला रहे हैं। हर वर्ष गांव में आर्यसमाज का प्रचार करवाते हैं तथा आर्यसमाज के लिए समर्पितभाव से काम करते हैं।

शोक समाचार

श्री रामचन्द्र जी प्रधान आर्यसमाज मदोना दांगी जिला रोहतक का ८० वर्ष की आयु मे दिनांक २६ जनवरी ६५ को हृदयगति बन्द होने से निधन होगया। उन्होंने आयुभर आर्यसमाज का तन, मन तथा धन से बड़ी लगन के साथ कार्य किया।

पंचायतों के चुनाव में विजयी शराबबन्दी समर्थक सरपंच

श्री राजबेल सरपंच
ग्राम पंचायत जूआं नं० १
जिला सोनीपत

श्री राजबीर सरपंच
ग्राम पंचायत जूआं नं० २
जिला सोनीपत

श्री करतारसिंह सरपंच
ग्राम पंचायत कान्ही १२½
जिला सोनीपत

श्रीमती इन्द्रावती सरपंच
ग्राम पंचायत तिहाड़ बाघडू
जिला सोनीपत

पं० जवाहरलाल नेहरू और ग्राम पंचायत

२ अक्तूबर १९५९ नागोर (राजस्थान) के स्थान पर नेहरू जी ने पंचायतों के सम्बन्ध में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए थे—

"लोगों ने कहा भाई ! जनता के हाथ में बागडोर आप दे तो रहे हैं जाने गलत चलें, सही चलें और काम खराब कर दे और उन पर भरोसा कैसे हो । यह बात गलत है क्योंकि कोई आदमी बगैर काम किए सीखता नही है तो फिर हमारे सामने यह नई बात होगई यह नया कदम होगया कि अब ऐसा प्रबन्ध करें कि अधिक से अधिक जनता के हाथ में काम करने की शक्ति आए इसलिए हम लोगों ने निश्चय किया है कि एक तो हर गांव में एक पंचायत होनी चाहिए और पंचायत को अधिक अधिकार मिलने चाहिए दूसरे सहकारी संघ होना चाहिए और उसको भी अधिकार होना चाहिए । मैं मानता हूं कि हमारे लोगों में कमियां हैं इन्हें तजुर्बा हासिल नहीं है इसलिए उनसे गलतियां होंगी ही । मगर उन पर यकीन और भरोसा करने तथा जिम्मेदारियां सौंपने के अलावा हमारे पास इसका कोई भी तो रास्ता नही है । मुमकिन है कभी-कभी इन जिम्मेदारियों का गलत दुरुपयोग भी लोग करें मगर जब हम समझते हैं कि हमारा मकसद ऊपर से कोई ढाचा लादने का नहीं है तो इसके अलावा हमारे सामने कोई चारा नही है ।

—धर्मवीरसिंह मलिक
भूतपूर्व सरपंच ग्राम पंचायत बोघल (सोनीपत)
एवं भूतपूर्व सदस्य जिला परिषद् रोहतक

नामकरण संस्कार

श्री केदारसिंह आर्य सभा कार्यालयाधीक्षक के भतीजे श्री उदयसिंह के नवजात पुत्र का नामकरण संस्कार ५ फरवरी ९५ को पं० रतनसिंह आर्य सभा उपदेशक द्वारा सम्पन्न हुआ । सभा को वेदप्रचारार्थ १०१) दान दिया ।

सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

झाड़ौदा कलां (दिल्ली) श्री पं अनिलकुमार जी आर्य सुपुत्र श्री दशरथ श्री ने अपने एक वर्ष के पुत्र जन्म दिवस पर २१ व २२ जनवरी १९९५ को सामवेद पारायण यज्ञ स्वामी वेदरक्षानन्द जी आर्ष गुरुकुल कालवा (जीन्द) हरयाणा और आचार्य चेतन जो नैष्ठिक वैदिक साधन आश्रम चामड़भैंया (अलीगढ़) उत्तरप्रदेश द्वारा विधि-विधान से संपन्न कराया । इस यज्ञ व्यवस्था में श्री रमेशकुमार जी आर्य, पं० सतीशकुमार जी आर्य, श्री रामधन जी आर्य, श्री खजानसिंह जी आर्य, पं० ताराचन्द जी आय आदि महानुभावों ने सहयोग प्रदान किया ।

—भक्त ओमराम, झाड़ौदा कलां, नई दिल्ली–७२

शोक समाचार

डा० बलवीर आचार्य (स्नातक, गुरुकुल झज्जर, रीडर, संस्कृत-विभाग, म०द०वि०) के लघु भ्राता कृष्णपालसिंह का दिनांक २३-१-९५ को बस दुर्घटना में देहावसान होगया । वे ३५ वर्ष के थे । इस दुःखद समाचार पर आर्यविद्या सभा के मन्त्री डा० प्रकाशवीर दलाल ने आर्यविद्या सभा की ओर से शोक संवेदना व्यक्त की है । परमात्मा शोक-संतप्त परिवार को इस अकथनीय असामयिक दुःख को संवहन करने की शक्ति प्रदान करे ।

हरयाणा सरकार शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं को अपमानित करने के स्थान पर सम्मानित करे

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान एवं शराबबन्दी सत्याग्रह के सर्वाधिकारी स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने हरयाणा के बिजली मन्त्री श्री वीरेन्द्रसिंह की आलोचना की है, जो उन्होंने गुरुकुल कुम्भाखेड़ा जिला हिसार के उत्सव पर भाषण देते हुए कहा था कि हरयाणा सरकार सामाजिक शराबबन्दी के हक में है। उन्होंने शराबबन्दी के कार्यों में समाजसुधारकों तथा सामाजिक संस्थाओं को आगे आने को भी कहा था। श्री स्वामी ओमानन्द ने हरयाणा सरकार के अधिकतर मन्त्रियों पर शराब पीने तथा शराब को बढ़ावा देने का आरोप लगाते हुए कहा है कि शराब के ठेकों में उनकी भागीदारी है। यही कारण है कि गत पंचायत के चुनाव के अवसर पर नाजायज शराब की नदियां बह रही थीं और सरकार के सहारे पर शराब के ठेकेदार मालामाल होगये। जितनी शराब उन्होंने वर्षभर में बेची उतनी ही पंचायत के चुनाव में केवल मतदाताओं को सस्ता पिलाकर बेची। उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की गई। इस प्रकार सरकार ने अपनी नशानिषेध की स्वयं पोल खोली।

स्वामी जी ने समाजसुधारकों द्वारा निरन्तर शराबबन्दी प्रचार का उल्लेख करते हुए कहा कि आर्यसमाज के विद्वान् तथा भजनोपदेशक अनेक वर्षों से शराब जैसी सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध निरन्तर प्रचार कर रहे हैं परन्तु शराब के ठेकों की नीलामी पर विरोध प्रदर्शन करने पर हरयाणा की पुलिस शराबबन्दी नेताओं तथा कार्यकर्त्ताओं पर बेरहमी से लाठीचार्ज करती है। स्वामी जी ने श्री वीरेन्द्रसिंह को परामर्श देते हुए कहा कि वे आर्यसमाज के प्रचारकों को जो शराबबन्दी का प्रचार कर रहे हैं, उन्हें अपमानित करने के स्थान पर हरयाणा राज्य की बसों में निःशुल्क यात्रा करने की छूट देकर सम्मानित करें।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाधीक्षक

आर्ययुवक परिषद् द्वारा शराबबन्दी प्रचार

हरयाणा आर्ययुवक परिषद् जिला रोहतक शाखा के अध्यक्ष श्री मनजीतसिंह दहिया ने अपनी बैठक में परिषद् के कार्यकर्त्ताओं को शराब के विरुद्ध जनजागृति उत्पन्न करने के लिए कहा है और लाखन माजरा, चांदी, नान्दल, इस्माइलपुर, करौंठी, बेन्सी, आदि ग्रामों में जनसभाओं का आयोजन करके शराब से होनेवाली बुराइयों से ग्रामवासियों को अवगत करवाया। आपने शराबबन्दी के लिए आन्ध्रप्रदेश की भांति हरयाणा की महिलाओं को भी संघर्ष करने की अपील की है। परिषद् के ३५ आर्ययुवक शराबबन्दी का प्रचार कर रहे हैं।

वार्षिक महोत्सव पर पहुंचें

बन्धुओ, माताओ, बहनो !

आपको यह जानकर अतिप्रसन्नता होगी कि आपका अपना प्यारा गुरुकुल भैयापुर (लाढौत) जिला रोहतक (जो कि अपने अल्पकाल में ही सुप्रबन्ध, उत्तम देखरेख, ब्रह्मचारियों के उत्तम स्वास्थ्य तथा अच्छी शिक्षा व्यवस्था के लिए ख्याति प्राप्त कर रहा है) अपना चतुर्थ वार्षिक महोत्सव दिनांक ४, ५ मार्च शनिवार, रविवार को धूम-धाम से मना रहा है।

इस शुभ अवसर पर अनेक आर्य, साधु संन्यासी, विद्वान्, भजनोपदेशक तथा नेतागण पहुंच रहे हैं। कृपया सपरिवार पहुंचकर धर्मलाभ उठाएं। गुरुकुल लाढौत रोड पर रोहतक से ४ कि.मी. पर स्थित है।

॥ कार्यक्रम ॥

- प्रातः ८.०० बजे से १०.०० बजे तक महायज्ञ।
- १०.०० बजे से ११.०० बजे तक भोजन।
- ११.०० बजे से ४.०० बजे तक भजनोपदेश व्याख्यानादि।
- ४.०० बजे से ५.०० बजे तक व्यायाम प्रदर्शन गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा।

निवेदक—
प्रबन्धक समिति गुरुकुल भैयापुर (लाढौत) रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ३०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० १३२०/७३ रजि० नं०P/RTK-४१ वद् १, ६६, ०८, ५३, ०६१

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष २२ अंक १३ २१ फरवरी १९९५ (वार्षिक शुल्क ५०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-००

ऋषि दयानन्द बोधांक

शिव का मर्म और महर्षि दयानन्द

प्रा० भद्रसेन (होशियारपुर) १४६०२१

शिव शब्द का अर्थ कल्याण, सुख, आनन्द है और शिव के जितने भी पर्यायवाची शब्द हैं उनमें से रुद्र, पशुपति को छोड़कर शेष (शम्भु, मयोभू, मृड, शंकर आदि) का अर्थ भी सुख, कल्याण ही है। जैसे कि—

'नम: शम्भवाय च मयोभवाय च। नम: शंकराय च मयस्कराय च नम: शिवाय च शिवतराय च॥ यजु० १६,४१

मूलशंकर ने शिवमन्दिर में घटित घटना के कारण सच्चे शिवदर्शन का संकल्प लिया। एक लम्बी साधना के पश्चात् महर्षि दयानन्द इस निश्चय पर पहुंचे कि शिव, सत्य वही है, जब जिस इच्छा, आशा से जो कार्य किया जारहा है वह कार्य पूर्ण होने पर इच्छानुरूप सुख, तृप्ति, प्राप्ति, सन्तोष आदि फल सामने आए अन्यथा वह प्रक्रिया, कार्य-कारण सम्बन्ध शिव, सत्य नहीं अर्थात् उस-उस आशा, फल, प्राप्ति का रास्ता, प्रक्रिया, पद्धति सही नहीं।

किसी फल, आशा, प्राप्ति का क्या रास्ता है? इसका परिचय हमें गुरु, शास्त्र और परम्परा से होता है। बतानेवाले को गुरु कहते हैं, गुरु=विद्वान् द्वारा ही शास्त्र बनाया जाता है। गुरु के अभाव में या उसकी उपस्थिति में भी शास्त्र (सर्वस्य लोचनं शास्त्रम्) राह बताता है। गुरु और शास्त्र के आधार पर चली हुई परम्पराएं भी सही राह पर चलने से ही सिद्धि होती हैं।

'गलत राह पर चलकर मंजिल, मिलती नहीं किसी को।
लेकिन कोई नहीं भटकता, सही राह पर चलकर॥"

—विजय निर्बाध

इसीलिए—स्वस्ति पन्थामनुचरेम ऋ० ५,५१,१५। अग्ने नय सुपथा यजु० ४०,१६ जैसी प्रार्थना बारम्बार वेदमन्त्रों में मिलती है।

जैसे कि हम अपने व्यवहार में देखते हैं कि कोई यात्रा तभी सफल होती है, जब रास्ता स्पष्ट, सुनिश्चित, सुरक्षित होता है। जब यात्रा जहां सुविधाभरी होती है, वहां मंजिल पर भी सरलता से पहुंचते हैं। यही बात जीवनयात्रा पर भी चरितार्थ होती है। प्रत्येक व्यक्ति स्वाभाविकरूप से अपना जीवन सफल बनाना चाहता है। सफल जीवन वही कहलाता है, जिसकी जीवनयात्रा सुविधाभरी हो और जो जीवन-लक्ष्य पर भी पहुंचे। अर्थात् जिसका परिणाम, प्रभाव, प्राप्ति, उपलब्धि सामने आए।

जैसे कि पौधे, वृक्ष पर फूल, फल सामने आता है तो अभिधावृत्ति से वहां सफल शब्द का प्रयोग होता है। तात्पर्य की दृष्टि से जीनेरूपी परिश्रम करने पर जब परिणाम, उपलब्धि होती है, तो सफल जीवन शब्द सार्थक होता है। यथा कार्य करने पर जब धन मिलता है, तो कार्य करनेवाला आपका परिश्रम सफल मानता है। एक विद्यार्थी सफल तभी कहलाता है, जब वह अपने परिश्रम से परीक्षा में सफल होता है।

ऐसे ही जीने का उद्योग करने पर यदि यश, नेकी, प्रसिद्धि, किसी क्षेत्र में विशेष उपलब्धि होती है या व्यक्ति किसी के काम आता है, तो यह किसी के जीवन की सफलता है। हां, जीवनयात्रा की सुविधा का अभिप्राय है—शरीर का स्वस्थ होना, विद्या-बुद्धियुक्त होना तथा धन की उचित प्राप्ति होते रहना। अर्थात् एक सफल जीवन वही है, जो स्वस्थ, विद्यावान्, बुद्धिमान्, धनसम्पन्न और यशयुक्त हो।

बाहर की सफल यात्रा की तरह किसी की जीवनयात्रा भी तभी शिव, सफल होती है, जब उसकी जीवनयात्रा का रास्ता स्पष्ट, सुनिश्चित, सुरक्षित होता है। जीवनयात्रा का रास्ता है, जीवन के उस-उस क्षेत्र के विचार। विचार ही आचार के आधार होते हैं। यदि व्यक्ति के विचार शिव, [illegible] सुनिश्चित होते हैं, तो वह सरलता से यहां-वहां [illegible] चल [illegible] है। पर जब विचारों में संशय होता है, तो व्यक्ति [illegible] लड़खड़ाने लगता है। तब कुछ कदम आगे चलता है, पुन: संशय में पड़कर कुछ कदम पीछे या इधर-उधर चलता, भटकता है।

नि:सन्देह आज जीवन की राह बतानेवाले गुरु, शास्त्र, रिवाज तो बहुत हैं, पर इनमें परस्पर बहुत अधिक विरोध प्राप्त होता है। ऐसी स्थिति में पाठक तब किस-किस को माने और किस-किस को छोड़े? इस दुविधा से पाठक सन्देह में डांवाडोल हो जाता है।

जैसे कि ईश्वर के सम्बन्ध में आज जो स्थिति बना दी गई है, वह इसका एक स्पष्ट प्रमाण है, क्योंकि अनेक देवी-देवताओं, अनेकों अवतारों, गुरुओं, बाबाओं तथा माताओं को ईश्वर के रूप में माना जाता है। इनमें केवल नाम का ही अन्तर नहीं है, अपितु प्रत्येक की आकृति, जीवन शैली, कार्य की प्रवृत्ति, स्थिति भिन्न-भिन्न है। इनमें से कुछ के अपने-अपने रिश्तेदारों की भरमार है, उन-उन से जुड़ी अनेक अनोखी कहानियां प्रचलित कर दी गई हैं, जहां परस्पर स्पष्ट विरोध भी मिलता है। प्रत्येक का अपने-अपने ढंग का धर्मस्थल है और प्रत्येक की अपनी-अपनी पूजा-पद्धति है, जिससे वरदान, मनोती की प्राप्ति होती है।

इस पर महर्षि दयानन्द का कहना है कि एक ईश्वर की ही स्वीकृति सरल, स्पष्ट होने से शिव=कल्याणकर है। क्योंकि संसार की रचना, व्यवस्था पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि इसमें एकरूपता है और यह एकरूपता एक ईश्वर को ही सिद्ध करती है। अत: एक ईश्वर की स्वीकृति, मान्यता हर तरह से शिव ही शिव है।

ऐसे ही धर्म भी कल्याण, सुख का आधार होने से शिव है और धर्म के शिवपन को सभी धर्मवाले स्वीकार करते हैं। अत. ईश्वर की तरह धर्म भी शिवरूप है। पर आज यत्र-तत्र-सर्वत्र धर्म के नाम पर भिन्न-भिन्न धर्मग्रन्थ पढ़े और पूजे जाते हैं।

२—भिन्न-भिन्न स्थलो पर भव्य से भव्य धर्मस्थलो के दर्शन, पूजन की अपनी-अपनी प्रथा प्रचलित है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

भारत में शराबबन्दी आंदोलन—अमरीका से सबक सीखें

प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद्

(गतांक से आगे)

भारत में शराबबन्दी आंदोलन

भारत में शराबबन्दी आंदोलन कांग्रेस के नेताओं ने आजादी की लड़ाई के अभिन्न अंग के रूप में चलाया। लोकमान्य तिलक और उनके बाद महात्मा गांधी ने पूरे देश में शराबबन्दी के लिए जनता का आह्वान किया। गांधी जी ने तो कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओं और विशेषकर महिलाओं द्वारा शराब की दुकानों पर पिकेटिंग करवाया। स्वतन्त्रता मिलने पर ऐसा सोचा जारहा था कि देशभर में पूर्ण शराबबन्दी हो जायेगी। गांधी जी तो आजादी मिलने के ६ महीने के अन्दर ही शहीद कर दिए गए। कुछ राज्यों ने १९३७ में ही जहां कांग्रेस की सरकारें बनीं, शराबबन्दी लागू की, राजा जी इन सबसे आगे थे। आजादी के तुरन्त बाद भी कुछ प्रांतों में पूरी और कुछ में अधूरी शराबबन्दी की। परन्तु गांधी जी के न रहने पर कार्यक्रम में शिथिलता आगई।

मोरार जी भाई और कुछ अन्य नेता तो इसमें लगे रहे, परन्तु वे अकेले पड़ते गये। धीरे-धीरे आंदोलन कमजोर होता गया और राजस्थान को छोड़कर कहीं सशक्त आंदोलन नहीं चल पाया। प्रधान-मन्त्री बनने पर मोरारजी भाई ने फिर पूर्ण नशाबन्दी का बीड़ा उठाया, परन्तु शराब को सशक्त लाबी के साथ मिलकर कुछ राजनेताओं ने उन्हें त्यागपत्र देने पर मजबूर कर दिया। पिछले दो वर्षों से अब आंदोलन जोर पकड़ने लगा है। महिलाएं मैदान में उतरी हैं, नशाबन्दी कार्यकर्त्ताओं के हौसले बढ़ने लगे हैं और आंदोलन को प्रदेशों और जिलों में सफलता मिलने लगी है। आन्ध्रप्रदेश इसको ताजा मिशाल है। किसानों में विशेषरूप से जागृति आई है, मजदूरों में अभी उतनी जागृति नहीं आई है, शहर के मजदूरों में जितनी होनी चाहिए उतनी चेतना नहीं आपाई है। परन्तु जितनी जनचेतना आने लगी है उससे लगता है कि अब देश में शराबबन्दी के लिए अनुकूल वातावरण बन रहा है। आज हरयाणा, उत्तरप्रदेश, उड़ीसा, केरल, महाराष्ट्र, नागालैंड, मिजोरम, मेघालय, मनीपुर आदि में सशक्त आंदोलन चल रहा है।

अमरीका की तरह ही अब वोट प्राप्त करने के लिए भी अनेक प्रदेशों के राजनेता शराबबन्दी के पक्ष में बोलने लगे हैं और लोगों से वायदे भी करने लगे हैं। इधर उच्चतम न्यायालय ने भी केरल में अवैध शराब बनाने और बेचनेवालों की सजा बढ़ाकर अच्छा संकेत दिया है। आंदोलन की सफलता को आशा प्रतिदिन बढ़ती जारही है। यदि नशाबन्दी कार्यकर्त्ता, महिलाएं और किसान मजदूर जमकर लड़ें तो सफलता में कोई सन्देह नहीं रहेगा। परन्तु इसके लिए जैसे अमरीका की महिलाओं की संस्था और पुरुषों की एन्टी सैलून लीग (Anti-Saloon League) ने जमकर काम किया और जनता को केवल उन उम्मीदवारों को वोट देने के लिए तैयार किया जो स्वयं नहीं पीते और शराबबन्दी कानून बनाने के लिए वचन देते हैं, वैसे ही भारत की भी शराबबन्दी संस्थाओं ने किया तो सफलता अवश्य मिलेगी।

टिकाऊ सफलता

सफलता मिलने पर सरकार पर सब छोड़ने की बात सोचना और बेफिक्र हो जाना अमरीका को बहुत महगा पड़ा। भारत में वह इतिहास न दोहराया जा सके, इसके लिए सतर्क रहना होगा। कानून के द्वारा शराबबन्दी हो जाने के पश्चात् पहिले से भी अधिक काम करना पड़ेगा। शराब छोड़ने के लिए सघन प्रचार करना पड़ेगा। शराब की लाबी भारत में अमरीका से कम शक्तिशाली नहीं है। इस लाबी ने आज भी अनेक राजनेताओं और नौकरशाहों को खरीद रखा है। इसलिए अवैध शराब बनाने और बेचनेवालों के माफियाओं को जनता विधायिका कार्यपालिका और न्यायपालिका को अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए ठिकाने लगाना पड़ेगा। सब कुछ करने पर जो अवैध शराब का सेवन करके मरेंगे या अपंग होंगे, उनको लेकर समाचारपत्रों और दूर-दर्शन आदि के द्वारा प्रचार करवा कर नशाबन्दी के कानून को बदनाम किया जाएगा। तथाकथित उदारीकरण की तथा विश्वेकीकरण की कृपा से देशी और विदेशी कम्पनियां भी इस प्रचार में शामिल होंगी।

विज्ञापनों द्वारा और दूरदर्शन द्वारा नशों का जो प्रचार आज चल रहा है, उसे रोकने के लिए अलग से आंदोलन करना पड़ेगा। यदि इन सब कार्यक्रमों में लापरवाही और कोताही की गई तथा आंदोलन में शिथिलता आई तो लम्बे प्रयास के बाद हासिल की हुई सफलता टिकाऊ न रहकर विफलता की ओर बढ़ेगी। विफलता का क्रम एक बार आरम्भ हुआ तो उसे रोकना कठिन होगा और अमरीका की तरह फिर शराब पूरे जोर शोर से आ धमकेगी। फिर निराशा व्याप्त होगी और जब समाज फिर दुःखी होगा तो नये सिरे से आंदोलन खड़ा करना होगा। इस स्थिति को रोकने के लिए नशाबन्दी कार्यकर्त्ताओं को कानूनी शराबबन्दी के बाद नई लगन और हिम्मत से काम करना होगा और शराब को सशक्त लाबी को कामयाबी के साथ जवाब देना होगा। भारत की करोड़ों गरीब जनता का कल्याण शराब और नशों से मुक्ति दिलाने पर ही सम्भव हो सकेगा।

आर्यवन में योगशिविर

दर्शनयोग महाविद्यालय, आर्यवन में १ से १० अप्रैल १९९५ तक दस दिवस का योग प्रशिक्षण शिविर लगेगा। ११-१२ अप्रैल को आर्यवन का उत्सव होगा।

शिविर में भाग लेनेवाले महानुभावों से निवेदन है कि प्रार्थनापत्र लिखकर १५ मार्च से पूर्व ही स्वीकृति ले लेवें तथा २५० रु० शिविर शुल्क (मन्त्री, आर्यवन, पो० सागपुर, जि० साबरकांठा गुजरात पिन—३८३३०७) के नाम मनीआर्डर द्वारा प्रेषित करके अपना पंजीकरण करवा लेवें।

धनजी बालजी बेलाणी
प्रधान आर्यवन

स्वामी सत्यपति परिव्राजक
शिविराध्यक्ष

काश ! ऐसा होता

शराब से भरी बोतलें—बोतलों से भरी पेटियां और पेटियों से भरा ट्रक सड़क का सीना रौंदता हुआ आगे बढ़ा जारहा है तेज गति से और वह सोच रहा है कि इस ट्रक में हजारों घरों की तबाही और बर्बादी का सामान जारहा है। इन बोतलों में बन्द हैं अनगिनत अपराध, हत्याएं, बलात्कार, इज्जत के सौदे, गाली गलोच, लड़ाई, झगड़े, मारपीट, हादसे, दुःख-दर्द और सिसकियां। हां, सिसकियां किसी मां की, किसी पत्नी की, किसी बहिन की, किसी बेसहारा बच्चे की, उस जैसे किसी मासूम बच्चे की जिसके बाप और भाई को निगल गया यह रंगबिरंगा पानी उसे और उसकी दुःखयारी मां को गमों के अथाह सागर में धकेल दिया ·····उलट क्यों नहीं जाता यह ट्रक टूट क्यों नहीं जाती ये बोतलें, टूटकर चूर-चूर क्यों नहीं हो जाती ? काश ! ऐसा हो जाए और बह जाए मिट्टी में मिल जाये यह जहर रुला-रुलाकर तड़पा-तड़पा कर मारनेवाला, जान लेनेवाला। काश ! इन बोतलों में यह जहर न होता। काश ! इनमें अमृत होता, जो जहां-जहां जाता वहां घर-घर में खुशियां बांटता, सुख बांटता, प्यार बांटता और शान्ति बांटता······काश ! ऐसा होता कभी ऐसा होता।

—रघुवीर वर्मा, विक्की पान भण्डार
पाल्हावास (रेवाड़ी)

एक महत्त्वपूर्ण पत्र

५ मार्च १९५९ को 'भारत भारती' 'साकेत' 'पंचवटी' 'जयद्रथवध' आदि ग्रंथों के रचयिता राष्ट्रकवि स्वर्गीय मैथिलीशरण गुप्त ने एक अन्तर्देशीय पत्र स्वर्गीय पं० नरदेव शास्त्री 'वेदतीर्थ' कुलपति महाविद्यालय ज्वालापुर (सहारनपुर) को लिखा था। यह पत्र मुझे आचार्य नरदेव जी द्वारा मिला अथवा किसी अन्य के द्वारा यह तो आज मुझे स्मरण नहीं है किन्तु १२ फरवरी १९९५ ई० को प्रातःकाल मेरी महाभारत (प्रथम खण्ड) पुस्तक के अन्दर रखा हुआ मिला। पत्र को पढ़कर मुझे प्रसन्नता हुई। गुप्त जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति जो श्रद्धा प्रकट की है वह उन्हीं के शब्दों में पढ़िये—

—वेदव्रत शास्त्री

"श्रीराम

६ नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली
५-३-५९

प्रिय शास्त्री जी,
प्रणाम। कृपा पत्र मिला। आभारी हूं। धन्यवाद।

वैष्णवकुल का होने पर भी मैं स्वामी दयानन्द सरस्वती को अपने देश का महापुरुष मानता हूं। उनके लिए मेरे मन में श्रद्धा है। कौन उनके महान कार्य स्वीकार न करेगा।

अभी कुछ दिन पूर्व झांसी में एक पंजाबी परिवार में मित्रता के नाते मैं गया था। वहां मेरे मित्र के पौत्र का यज्ञोपवीत संस्कार था। जिस बालक को यज्ञोपवीत दिया जारहा था वह अपनी माता को ममी और पिता को पापा कहा करता था। वेषभूषा का कहना ही क्या। आज उसका वटुवेश देखकर मुझे कौतूहल ही हुआ। उपराना वेदी में हवन के साथ वेदध्वनि सुनकर मैंने मन ही स्वामी को प्रणाम किया और कहा—

जो आज वेदध्वनि गूंजती है
कृपा उन्हीं की यह कूजती है।

और क्या लिखूं। मेरी हार्दिक शुभकामना स्वीकार कीजिए।

आपका
मैथिलीशरण"

आचार्य नरदेव शास्त्री जी की एक घटना और सदा स्मृति पटल पर रहती है।

मैं, आचार्य भगवान्देव जी, स्व० पं० जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती और पं० रघुवीरसिंह जी शास्त्री गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव पर गये थे। सायंकाल ५ बजे के लगभग हम सब शौच के लिए जलपात्र लेकर चले। आचार्य नरदेव जी शास्त्री से मिलने के विचार से हम पं० नरदेव शास्त्री की कुटिया पर गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर गये। अभिवादन करके बैठ गये। आचार्य नरदेव जी ने अपने सेवक को बुलाकर कुछ खाने के लिए लाने का आदेश दिया। हम सब के निषेध करने पर सेवक वहीं खड़ा होगया। आचार्य नरदेव जी ने कुछ क्षण पश्चात् कहा—अभी तक यहीं खड़ा है, अब तक तो ले आता।

सेवक ने एक किलो बर्फी लाकर आचार्य नरदेव जी के सम्मुख रख दी। आचार्य जी ने हम सबको बर्फी दे दी। आचार्य भगवान्देव जी कभी मिष्टान्न सेवन नहीं करते अतः उन्होंने अपनी बर्फी मुझे दे दी। तदुपरान्त स्व० सिद्धान्ती जी और रघुवीरसिंह जी शास्त्री ने भी उनका अनुकरण किया। यद्यपि उस समय मैं ब्रह्मचारी था और हृष्ट पुष्ट भी था पुनरपि एक किलो बर्फी एक साथ खाना कठिन था।

आचार्य नरदेव जी ने कहा—ब्रह्मचारी जी खाओ। आदमी और सब कुछ भूल जाता है किन्तु खाने पीने की बात नहीं भूलता।

—वेदव्रत शास्त्री

बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

जागरण का पर्व आया

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

शुभ्र यह शिवरात्रि का है—
जागरण का पर्व आया।
आर्यजनता के हृदय में,
बोध का संदेश लाया।

दिव्य इस शिवरात्रि ने ही,
ऋषि दयानन्द को जगाया।
ऋषि हृदय ने सत्य शिव के,
दर्शनों का भाव पाया।

प्राप्त कर बोधत्व ऋषि ने,
कर दिया तन-मन समर्पित-
विश्व-मानव के हितार्थों में—
तथा इस विश्व के हित।

सत्य शिव को प्राप्त करके—
फिर किया कल्याण जग का।
नष्ट कर डाला तिमिर सब—
विश्व के कल्याण मग का।

वेद की पावन पताका—
विश्व में फहरा दिया।
ओ३म् का ध्वज अवनि—
अम्बर में पुनः लहरा दिया।

घोर निद्रा में उनींदे दिन—
राष्ट्र को फिर से जगाया।
भर दिया दुर्धर्ष शक्ति—
घोर तन्द्रा को भगाया।

पर अभी अज्ञान-तम है,
विश्व में डेरा जमाए।
आसुरी हैं वृत्तियां भी—
आंख जन-जन पर गड़ाए।

इसलिए, हे आर्यपुत्रो!
लो पुनः संकल्प पावन।
वेद की पावन पताका—
को करे जगती नमन।

वेद के पथ पर चलें हम,
विश्व सारा हम चलाएं।
भूमि के सारे जनों को,
'आर्य' अब चलकर बनाएं।

वेद का अमृत जगत् को—
अग्रसर हो हम पिलाएं।
पूर्ण जगती पर चलो हम—
स्रोत वेदों का बहाएं।

आज इस शिवरात्रि पर हम—
लें पुनः व्रत दृढ़ हृदय से।
हम लड़ेंगे, हम भिड़ेंगे—
आज अनृत व अनय से।

आर्यसमाज धोलेड़ा जिला महेन्द्रगढ़ का चुनाव

प्रधान श्री जवाहरसिंह, उपप्रधान श्री रामप्रताप, मन्त्री पं० रामकुमार, उपमन्त्री श्री महावीर, कोषाध्यक्ष डा० हजारीलाल, पुस्तकालयाध्यक्ष श्री रामपत आर्य, प्रचारमन्त्री श्री अमरमुनि।

कुछ तड़प कुछ झड़प

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेदसदन, अबोहर

तुम इतिहास बना सकते हो

आर्यसमाज से निकले हुए एक व्यक्ति ने गायत्री परिवार नाम से एक नया मत खड़ा कर दिया। जड़पूजा करनेवालों ने स्त्री-पुरुषों की मूर्तिया बनवाकर पुजवाई। गायत्री परिवारवाले ने मृतकों की बजाय गायत्री मन्त्र को मूर्ति की कल्पना करके पत्थर पूजा का नया मार्ग खोज लिया। न जाने चारों वेदों के शेष सहस्रों मन्त्रों के साथ इतना पक्षपात क्यों किया जो उनको मूर्तिया न घड़ी गई। इन गायत्री परिवारवालों ने सरकार से भूमि लेकर उनमें आयुर्वेदिक वनस्पतियां उगाकर औषधियों के निर्माण के लिए शुद्ध जड़ी बूटियां उपलब्ध करवाने की दिशा में एक पग बढ़ाया। लोगो को यह कार्य अच्छा लगा।

आर्यसमाज के लोडर 'महासम्मेलनों' व स्कूलों का जाल ही बुनने में लगे रहे। समाज की शक्ति क्षीण होती गई। विद्वान्, संन्यासी व उपदेशकवर्ग घटता गया। सम्पत्ति आर्यसमाज के लिए विपत्ति बन गई।

आर्यसमाज में कोई सूझ-बूझवाला नेता होता तो पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के मार्गदर्शन में गुरुकुलों में पाच-दस ऐसी-ऐसी 'वनस्पति वाटिकाएं' बनवाता। संसार देखने आता। आज सारे विश्व में आयुर्वेद का प्रतिष्ठा बढ़ने लगी है। आर्यसमाज में लोग गुरुकुलों के मालिक सचालक तो बनना चाहते हैं जिससे गुरुकुलों की शोभा बढ़े और धर्मरक्षा हो ऐसे कार्यों में तनिक भी रुचि नहीं। कर्नाटक के आर्यों ने 'शातिधाम' की योजना बनाकर एक कन्या गुरुकुल तो स्थापित किया ही है। उपरोक्त कार्य हाथ में लेकर बहुत वैज्ञानिकरीति से वनस्पतियों का सर्वेक्षण भी किया है। कर्नाटक के भाई पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी को लेजाकर उनको वहा की वनस्पतियां दिखायेंगे और उनका मार्गदर्शन लेंगे। कर्नाटक का एक युवक श्री स्वामी जी से आयुर्वेद सीखने के लिए मठ में पहुंच चुका है।

मैंने आर्यसमाज परली को भी तीन वर्ष पूर्व यही सुझाव दिया था। उनके पास वनस्पति विज्ञान के विद्वान् डा० काले जैसा पुरुषार्थी वैज्ञानिक है। वे भी यह योजना हाथ में लेनेवाले हैं। अन्य गुरुकुलों को भी इस दिशा में कुछ करना चाहिए। गुरुकुल झज्जर, विराट्नगर, आर्यनगर, आबूपर्वत भी इस योजना को अपनाकर एक दूसरे के सहयोगी बन सकते हैं। इससे हमारे गुरुकुलों के स्नातक मानप्रतिष्ठा पायेंगे। आयुर्वेद के पारंगत विद्वान् बन सकेंगे।

यह पिछड़ापन है

हमारे लीडर किसी मिनिस्टर को मिलते हैं या पत्र लिखते हैं तो यह बात बढ़ा-चढ़ाकर प्रथम पृष्ठ पर छपवाते हैं। एक बार एक लीडर को राजीव गांधी जी का पत्र आया। संयोग से मैं उन्हें मिलने चला गया। उन्होंने आध घण्टे तक राजीव जी के उस पत्र की महिमा पर ही अपना कहानी टाइप का एक भाषण मुझे सुना दिया। मरता क्या न करता मुझे वह बेकार का भाषण सुनना पड़ा। कुछ दिन पूर्व गुरुकुल गौतमनगर नई दिल्ली का हमारा एक ब्रह्मचारी योगासनों की प्रतियोगिया में देहली प्रदेश में प्रथम और उत्तर भारत में द्वितीय आया। भारत के दैनिकपत्रों में यह समाचार छपा। मैंने भी पढ़ा कि अजय प्रथम आया। मुझे पता नहीं था कि यह हमारा ही अजय है। देहली के आर्यसमाजी पत्रों मे चित्र तो क्या छपना था इतना समाचार भी न दिया गया कि गुरुकुल का ब्रह्मचारी मांस अण्डा खाने वालों को पछाड़कर प्रथम आया है। यह पिछड़ापन ही तो है कि हमारे कर्णधार अंधेरे में टक्करें मारते हैं। कुछ एक को तो यह सुनकर सम्भवतः अच्छा भी न लगा होगा कि हरयाणा में जन्मा एक आर्यसमाजी आगे निकल रहा है। ऐसी प्रवृत्तिवाले व्यक्ति धार्मिक हो तो नहीं सकते। भले ही वे कोई सा पद भी क्यों न हथियालें।

गुरुकुलों के विचारार्थ

हमारे गुरुकुलों से निकले बहुत थोड़ा पढ़े-लिखे ब्रह्मचारियों ने प्राकृतिक चिकित्सा व आयुर्वेद तथा आकू प्रेशर सीखकर बहुत अच्छी सफलता पाई है। धन कमा रहे हैं। यतिमण्डल में स्वामी जगदीश्वरानंद जी ने कभी यह प्रस्ताव रखा था कि सब ब्रह्मचारियों, साधुओं व वानप्रस्थियों को स्वामी सर्वानन्द जी छः मास तक औषधियों का ज्ञान करवायें। सब गुरुकुलों मे योगासनों का वैज्ञानिक प्रशिक्षण व प्राकृतिक चिकित्सा का अध्ययन अनिवार्य किया जाय। लोग भाग-भागकर समाज मन्दिरों में दुःखनिवारण के लिए आयेंगे। कैनेडा से मेरे वैज्ञानिक मित्र डा० राजेन्द्र जी को पता चला कि गुरुकुल झज्जर व गुरुकुल गौतमनगर में योग आसनों के करनेवाले बड़े सुयोग्य ब्रह्मचारी हैं। डा० राजेन्द्र जी ने मुझे कहा, "बड़े आश्चर्य का विषय है कि गुरुकुलों में ऐसे-ऐसे रत्न हो फिर भी हम देश विदेश में उन्हें आगे लाकर धर्म-प्रचार न कर सके। ठग योग के नाम पर पश्चिम को लूट रहे हैं।"

करें भी तो क्या? निकटाई धारी बाबू अब गुरुकुलों को समाप्त करने के उपाय कर रहे हैं।

शाकाहार का प्रचार

राजस्थान में 'ओ३म् आश्रम' नाम से एक विशाल सस्था का निर्माण होरहा है। यह अच्छी बात है कि इस संस्था ने ओ३म् का आश्रय लिया है। वेद के प्रति भी श्रद्धा व्यक्त करते हैं। इस संस्था के महात्मा महेश्वरानन्द का पश्चिमी देशों में भी प्रभाव है। गोरे आश्रम के समारोह में भी आये बलाये जाते हैं। इन महात्मा जी की कृपा से पश्चिम के लाखों लोगों ने मांसाहार छोड़ दिया है। भारतीय भोजन को लोकप्रिय बनाने का आंदोलन छेड़ा है। आर्यसमाजी सोमनाथ, द्वारिका, पोरबन्दर की यात्रा गाड़िया चलाकर समझते हैं कि हम धर्मात्मा बन गये। हमने पुण्य लूट लिया। इस प्रकार से वेदप्रचार क्या होगा? देख लो नगरों की सब समाजें खाली पड़ी हैं गाव में तो फिर भी लोग सुनने आ जाते हैं। मैंने जालन्धर, भटिण्डा, अबोहर, देहली के वार्षिकोत्सवों से अधिक उपस्थिति वेदप्रचार मण्डल के सत्सगों में ग्राम रामसरा, झुमियांवाली व बाजीदपुर मे देखी। बसें भर-भरकर ढोने की बजाय अच्छा यह होगा कि बीस-बीस तीस-तीस की टोलियां बनाकर आर्य लोग गाव-गाव में शाकाहार, गो-दूध, प्रातः जागरण, प्राणायाम की महिमा बतायें। ईश्वर एक है। दया व न्याय उसके गुण हैं। वह सर्वत्र और सर्वज्ञ है। कर्म का फल कभी क्षमा न होगा। यज्ञ-हवन ही प्रदूषण का एकमात्र इलाज है। इतनी बातों का प्रचार ग्रामों में करते हुये देश के ओर-छोर निकल जाओ।

निजामशाही पर पहली चोट—एक नई पुस्तक

इन्हीं दिनों गुरुकुल कांगड़ी के एक पुराने सुयोग्य स्नातक श्री विराज की एक नई पुस्तक छपी है। मैंने विराज जी के प्रति आदर के कारण इसे उत्सुकता से पढ़ा। इसमें हैदराबाद सत्याग्रह की अपनी जेल बीती आपने बहुत रोचक ढंग से दी है। निजाम के अत्याचारों का भी संक्षेप में अच्छा वर्णन किया है। इस दृष्टि से पुस्तक पठनीय है। अच्छा होता यदि लेखक मुखपृष्ठ पर निजाम का वह ऐतिहासिक चित्र देता जिसमें उसे सरदार पटेल के सामने सिर झुकाते हुए दिखाया गया है। या फिर मुखपृष्ठ पर वीर शिरोमणि पं० नरेन्द्र जी का चित्र होता या महात्मा नारायण स्वामी व स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का चित्र दिया जाता।

पृष्ठ १६ पर लेखक ने लिखा है कि अन्तिम निजाम सन् १८८४ में गद्दी पर बैठा। यह तथ्य नहीं है। मीर उस्मान अली तो अगस्त सन् १९११ में गद्दी पर बैठा था। एक स्थान पर जवाहरलाल जी का जन्म कश्मीर का बताया गया है। यह भी ठीक नहीं है। सारी पुस्तक में सत्याग्रह के फील्ड मार्शल स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का नाम तक नहीं दिया। गुरुकुल के एक सुयोग्य स्नातक की यह भूल अखरनेवाली है। यह भूल कोई साधारणसी नहीं है। जिस महामुनि के तपोबल से संसार के धनियो में से एक मीर उस्मान को आर्यसमाज ने धूलि चटा दी उसका नाम तक न लेना हमें शोभा नही देता। उन दिनों सार्वदेशिक सभा ने हैदराबाद विषयक अपने एक प्रकाशन में 'हमारे नेता' शीर्षक के नीचे केवल दो ही चित्र दिए थे। एक महात्मा नारायण स्वामी का और दूसरा स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का। यह समस्त साहित्य मेरे पास सुरक्षित है। खेद का विषय है बाद में ऐसे-ऐसे लोग बोगस स्वतन्त्रता सेनानी बनवा दिये गये जिनका तत्कालीन पत्रों मे कहीं धनसंग्रह करने या नारे लगाने में भी नाम नहीं छपा।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

सांगवान खाप के ४० ग्रामों के शराबबन्दी कार्यकर्त्ता मार्च में

शराब के ठेकों की नीलामी का विरोध करेंगे

दिनाक १३ फरवरी ९५ को सांगू धाम के पवित्र ऐतिहासिक स्थान पर सांगवान खाप के ४० ग्रामों के नये तथा पुराने सरपचों एवं शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं की एक आवश्यक बैठक प्रिंसिपल बलबीरसिंह जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। इस बैठक में आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह जी तथा सभा के पूर्वमन्त्री श्री सूबेसिंह जी को विशेषरूप से आमन्त्रित किया था। मेजर सन्तलाल जो ने कार्यवाही का संचालन किया।

बैठक में श्री ऋषिपाल आचार्य आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखी-दादरी, श्री रवीन्द्रसिंह पूर्वसरपंच, मा० टेकराम ग्राम बादल, सूबेदार श्रीराम ग्राम बादल, श्री देवीराम आर्य ग्राम झोझूकला, प्रोफेसर राजेन्द्रसिह प्रवक्ता सांगवान खाप (डोहो), श्री रामफल महासचिव सांगवान खाप (बिरहीकला), कप्तान पदमसिंह ग्राम गुडाना, मा० रिसालसिंह सरपंच ग्राम झरवाई, श्री दिवानसिंह सरपंच ग्राम अटेला, श्री दलसुख आर्य ग्राम झोझूकलां, श्री समेरसिंह आर्य स्वरूपगढ़, स्वामी आनन्दमुनि पाण्डवान आदि ने सांगवान खाप के सभी ४० ग्रामों में पूर्ण शराबबन्दी लागू कराने के लिए सुझाव देते हुए कहा कि पूर्व-सरपंचों द्वारा जिन ग्रामों में शराब के ठेके बन्द करवा रखे हैं, नये सरपंचों को उन पर स्थिर रहना चाहिए और ठेकेदारों के लालच तथा सरकार के दबाव आदि में आकर ठेके खोलने के प्रस्ताव नहो करने चाहिएं तथा किसी भी ग्राम में ठेके खोलने के लिए स्थान न दिया जावे। ग्रामों में चोरी छिपे जीपों में शराब की बिक्री की आज्ञा न दो जावे, शराब पीनेवालों पर पंचायतें दण्ड देकर उस राशि का प्रयोग गांव में शराबबन्दी का प्रचार करने में खर्च किया जावे। सभा से एक भजनमण्डली मंगवाकर प्रत्येक ग्राम मे शराबबन्दी का प्रचार करवाया जावे। इस कार्य को सफल करने के लिए प्रत्येक ग्राम में एक पांच सदस्यीय समिति का गठन करके उन्हें पूर्ण अधिकार दिये जावें। मार्च में जिस तारीख को भिवानी में शराब के ठेको को नीलामी की जावेगी, उस दिन सभी ग्रामों के नरनारी भारी संख्या में पहुंचकर नीलामी को रुकवाने के लिए पूरी शक्ति से संघर्ष करे। एक बड़ी पंचायत भी बुलाकर इसकी तैयारी की जावे। इन सुझावो को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

श्री हीरानन्द आर्य पूर्व विधायक ने कार्यकर्त्ताओं का आह्वान करते हुए कहा कि शराबबन्दी का कार्य भलाई का है, अतः भलाई के कार्यों को करने के लिए सभी भले आदमी को संघटित होकर शराब की बुराई का जमकर विरोध करें।

श्री सूबेसिंह जी पूर्व सभामन्त्री ने उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को परामर्श दिया कि जिस प्रकार सांगवान खाप के किसी भी ग्राम में शराब का ठेका नहीं है, उसी परम्परा को चालू रखने के लिए आगामी मार्च मास में ठेकों को नीलामी रुकवाने के लिए पूरी शक्ति लगाकर अपने संघटन का परिचय देवें।

प्रो० शेरसिंह जी अध्यक्ष अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् ने शराबबन्दी किस प्रकार लागू हो सकती है, पर विस्तार से बताया कि महिलाओं को संघटित करके विरोध करना होगा। आंध्रप्रदेश की महिलाओं ने ही वहां की सरकार को शराबबन्दी लागू करवाने के लिए विवश किया है। आगामी चुनाव में उसी उम्मीदवार का समर्थन करें जो शराबबन्दी लागू करवाने का लिखित वचन देवे। शराबबन्दी लागू करवाने पर सागवान खाप को सभा की ओर से सोने का तगमा दिया जावेगा।

स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने अपने भाषण में सांगवान खाप के सरदारों को बधाई देते हुए कहा कि इस खाप के कार्यों की प्रशंसा सभी स्थानों पर की जाती है। यदि इसी प्रकार अन्य खाप भी मिलकर शराबबन्दी का कार्य करें तो शीघ्र ही हरयाणा प्रदेश में शराबबन्दी लागू हो जावेगी और शराब के सहारे पर चलनेवाली भजनलाल की सरकार टूट जावेगो। शुभकार्यों मे सफलता अवश्य मिलेगो। अतः निराश न होवे। अधर्म करनेवाले पराजित होंगे। सभा की ओर से शीघ्र ही अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया जावेगा। शराबियों से शराब न पीने की प्रतिज्ञा करवाई जावेगी और शराबबन्दी सत्याग्रह का बिगुल बजाकर संघर्ष किया जावेगा। ग्राम झोझू में एक शिविर शराब छुड़वाने का लगाया जावेगा। अंत में स्वामी जी ने पंचायत के आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाधीक्षक

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा शराब के ठेकों की नीलामी पर विरोध प्रदर्शन का कार्यक्रम

१ मार्च १९९५ करनाल, २ मार्च पानीपत, ३ मार्च कुरुक्षेत्र तथा कैथल कुरुक्षेत्र, ४ मार्च अम्बाला तथा यमुनानगर अम्बाला, ६ मार्च फरीदाबाद, ७ मार्च गुडगांव, ८ मार्च रेवाडा तथा महेन्द्रगढ रेवाड़ो, ९ मार्च रोहतक तथा सोनीपत रोहतक, १० मार्च भिवानी तथा जीन्द, ११ मार्च हिसार, १३ सिरसा।

अंतरंग सभा की बैठक की सूचना

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक २५ फरवरी ९५ को १२ बजे दयानन्दमठ रोहतक में होनी निश्चित हुई है। इस बैठक मे एक मार्च से होनेवाली ठेकों की नीलामी का जिलावार विरोध प्रदर्शन करने की तैयारी पर विचार किया जावेगा। इस अवसर पर हरयाणा के सभी आर्यसमाज, आर्यशिक्षणसंस्थाओं के अधिकारियों के अतिरिक्त शराबबन्दी समर्थक सरपंचों आदि को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया है।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

महर्षि दयानन्द

—नाज़ सोनीपत

वह सागर दया का, दयानन्द स्वामी।
बशर देवता-सा, दयानन्द स्वामी॥
जमाने में यकता, दयानन्द स्वामी।
वह बेबाक वक्ता, दयानन्द स्वामी॥
वह बे-लाग नेता, दयानन्द स्वामी।
पैगम्बर खुदा का, दयानन्द स्वामी॥
निडर और निराला, दयानन्द स्वामी।
था बरतरो बाला, दयानन्द स्वामी॥
वफा का खजाना, दयानन्द स्वामी।
खुशी का ठिकाना, दयानन्द स्वामी॥
मिला है जहां में न हरगिज मिलेगा।
ऋषिराज जैसा, दयानन्द स्वामी॥
समझ न सके राज जो दुनियावाले।
वह हर राज समझा, दयानन्द स्वामी॥
वह था जा के दुश्मन का भी यार-ए-जानी।
वह रहमत का दरिया, दयानन्द स्वामी॥
दयानन्द का 'नाज़' है नाम प्यारा।
जिसे लगता था काम निष्काम प्यारा॥

सभा का नया टेलीफोन नं० ४०७२२ अंकित करें

वैदिकधर्म की सार्वभौम महत्ता और उसके सच्चे स्वरूप का दर्शन करानेवाला महर्षि दयानन्द

—वेदप्रकाश साधक उपदेशक आर्यप्रतिनिधि सभा रोहतक

सो सो के लुट चुके थे हम उसने हमें जगा दिया।
अन्धों को आंखे मिल गई मुर्दों मे जान आ गई॥

आज हम उस महामानव का बोध दिवस मना रहे हैं जिसने बरसों सोई हुई आर्यजाति को नवचेतना और नया जीवन देने के लिए अपना तन मन धन लगा दिया। वैदिकधर्म उद्धारक, वैदिक सभ्यता और संस्कृति का सच्चा उपासक, वेदों का प्रकाण्ड पंडित, महान् क्रांतिकारी, सत्यवादी और समाजसुधारक का जीवन हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है।

सबसे प्रथम वह विचारों की क्रांति चाहते थे इसीलिए प्रत्येक मनुष्य के सोचने का ढंग बदलना ही उनका लक्ष्य था। मूलशंकर से दयानन्द कैसे बने? शिव और शव ये दो प्रश्न उनके सम्मुख थे। जिनका समाधान करने के लिए सारा जीवन लगा दिया। पार्थिव शिव देखकर जिज्ञासा उत्पन्न हुई क्या वही शिव है जो त्रिशूलधारी है और कैलाशपति है जो तुच्छ चूहे से अपनी रक्षा नही कर सकता।

अन्य मतवालों ने कहा परमात्मा शरीरधारी है चौथे आसमान, सातवे आसमान में रहता है, अवतार लेता है, क्षीरसागर में रहता है। परन्तु ऋषि ने कहा परमात्मा सर्वव्यापक, निराकार और सर्वशक्तिमान् है उसकी प्राप्ति मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा, कंठीमाला, घंटे-घड़ियाल से नहीं होगी परन्तु शुद्ध ज्ञान शुद्ध कर्म और शुद्ध उपासना से तथा योगांगों अर्थात् यम-नियम आदि को पालन करने से होगी। ये सब विचार ईश्वरीय ज्ञान वेद के आधार पर दिए। वेदोऽखिलो धर्ममूलम् यह उसकी घोषणा थी।

मैक्समूलर जर्मनी का विद्वान् था उसने कहा मेरे से कोई पूछे कि उन्नीसवीं सदी का क्या चमत्कार है तो मैं तार, टेलीफोन, दूरदर्शन आदि न कहकर यह कहूंगा कि सबसे बड़ा चमत्कार कोई है तो वह दयानन्द का वेदों का भाष्य है। धर्म के नाम पर आर्यजाति मे आडम्बर छलकपट रूढ़िवाद चल रहा था। धर्म का सच्चा स्वरूप बताते हुए महर्षि ने कहा धर्म तथा ज्ञान का गहरा सम्बन्ध है यह सम्बन्ध टूट जाने पर धर्म वरदान न होकर अभिशाप बन जाता है इसका सम्बन्ध टूट जाने पर दो प्रकार को प्रतिक्रिया होती है। एक ओर मनुष्य अन्धविश्वासी बन जाता है दूसरी ओर नास्तिक।

अनपढ़ लोग अन्धविश्वासी बन गए और पढ़े लिखे नास्तिक बन गए। बड़े-बड़े धनीमानी लोग व्यसनो अर्थात् शराब, मांस, जुआ, वेश्यागमनादि मे फंसे रहते थे परन्तु धर्मानुष्ठान अज्ञानपूर्वक कराते थे। कोई पाप हो जाता तो गंगा स्नान कराकर प्रायश्चित्त करा दिया जाता था।

इस दोषपूर्ण स्थिति को देखकर लोग धर्म से घृणा करने लगे। धर्म के नाम पर उपद्रव हत्याएं होने लगीं। परन्तु ऋषि दयानन्द ने धर्म का सच्चा स्वरूप बताया कि पक्षपात रहित होकर सत्य और न्याय की रक्षा करना धर्म कहलाता है जिससे लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार की उन्नति हो वही सच्चा धर्म है। वैदिकधर्म मानवीय मूल्यों अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के सिद्धान्त पर आधारित है इसलिए घोषणा की यह धर्म सार्वभौम (universal) महत्ता रखता है।

पंचायतनपूजा के नाम पर लोग शिव, विष्णु, अम्बिका, गणेश और सूर्य की मूर्ति बनाकर पूजा की जाती थी परन्तु वैदिकधर्म के आधार पर ऋषि ने कहा मातृदेवो भव पितृदेवो भव आचार्य देवो भव अतिथिदेवो भव का मार्ग बताया। पांचवां पति के लिए पत्नी और पत्नी के लिए पति पूज्य है। इसके अतिरिक्त समाज में जो कुरीतियां थीं अर्थात् बालविवाह, अनमेलविवाह, सतीप्रथा, छुआछूत, जाति-पाति मृतक श्राद्ध का विरोध किया और समाज का कलंक बताया। मृतक-श्राद्ध के स्थान पर जीवित माता-पिता आचार्य तथा विद्वानों की सेवा और तर्पण की शिक्षा दी।

इन सब कुरीतियों का मूल कारण अविद्या बताया। इसलिए ब्रह्मचर्यपूर्वक विद्याभ्यास के लिए गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर जोर दिया। शिक्षा का उद्देश्य चरित्रनिर्माण है यह आदर्श वाक्य महर्षि की देन है।

वेदामृत कलश उलीचो

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

ऐसा व्रत निभाना सीखो।
अमरबोध शिवरात्रि जागरण दयानन्द यति को॥

कौन हीरा और कौन कांच है।
इसकी पूरी करो जांच है॥
आलस और प्रमाद त्यागकर जागो आंख न मींचो॥१॥

ऐसा व्रत निभाना सीखो।
जड़पूजा से नाता तोड़ो।
एक ईश से नाता जोड़ो॥
सत्यव्रतधारी दयानन्द सम वेदामृत कलश उलीचो॥२॥

ऐसा व्रत निभाना सीखो।
पाखण्डों का खेत उजाड़ो।
रूढ़िवाद की चादर फाड़ो।
इस वैदिक फुलबगिया को मिल-जुल कर सींचो॥३॥

सच्चे शिव का व्रत निभाओ।
वेदज्ञान घर-घर फैलाओ।
मक्कारी ढोंगी भगतों के कान पकड़कर खींचो॥४॥
ऐसा व्रत निभाना सीखो॥

गीत

सत्यपाल आर्य 'मधुर'

जब तलक है जहां ये जमीं आसमां चांद तारे।
हम ऋणी स्वामी तब तक तुम्हारे।

सच्चे शिव की लगन ऐसी लागी।
छोड़ घर बन गये वीतरागी।
सत्य पथ पर बढ़े, आके मथुरा पढ़े वेद सारे॥१॥

वेद का ज्ञान लेकर चला तू।
कर गया सारे जग का भला तू।
सोचा औरों का हित, लाखों पापी पतितजन सुधारे॥२॥

पाप पाखंड तूने मिटाया।
घोर निद्रा से हमको जगाया।
लाल ललनाओं के, दीन बेवाओं के दुःख निवारे॥३॥

लाया तेरे लिए जो भी कांटे।
फूल नेकी के उसको भी बांटे।
क्रोध आया नहो, श्रेष्ठ गुण ये सभी तूने धारे॥४॥

क्या बताएं जो करके दिखाया।
आके हमको दुबारा जिलाया।
गूंजते हैं 'मधुर' वेद वीणा के सुर प्यारे-प्यारे।
हम ऋणी स्वामी तब तक तुम्हारे॥५॥

आर्यवीर दल का गठन

५ फरवरी को मा० वेदपाल प्रधान आर्यसमाज सुदकैनकलां की अध्यक्षता में आर्यवीर दल सुदकैनकलां जिला जीन्द का निम्न प्रकार से गठन किया गया—रामचन्द्र प्रधान, मा० कृष्णकुमार उपप्रधान, रमेशकुमार मन्त्री, तेलूराम उपमन्त्री व सुरेशकुमार अधिष्ठाता बनाये गये।

(पृष्ठ १ का शेष)

३—प्रत्येक धर्म के अपने-अपने तीर्थ हैं, वहां की यात्रा, स्नान की और वहां से कावर द्वारा जल आदि लाने की अलग-अलग पद्धतियां चल रही हैं।

४—हर धर्म की भिन्न-भिन्न निशानियां हैं। जिनके धारण, पहनने से वे-वे अपनी-अपनी निशानियों की खूबियां बताते हैं।

५—सभी धर्मवालों ने अपने-अपने मन्त्र, तन्त्र, जन्त्र, प्रचलित किए हुए हैं। जिनके स्मरण, ध्यान, जाप से अनेक तरह की सिद्धियों वाली अनेक कहानियां चलाई गई हैं।

६—हर धर्म में अनेक तरह के व्रत, पर्व हैं और उनकी अपनी अलग-अलग पूजापाठवाली पद्धति है। उस-उस की महिमाभरी अनेक कहानियां मानी जाती हैं। इसीलिए हर मास व्रत, पर्वों की भरमार छाई रहती है।

ये सारी बातें परस्पर पृथक्-पृथक् हैं, फिर किसको माने और किसको छोड़े?

इस पर महर्षि दयानन्द का विचार है कि कार्य-कारण सम्बन्ध के आधार पर जब हम विचार करते हैं तो स्पष्ट होता है कि धर्म का मुख्य भाव आचरण है, क्योंकि सच्चाई, ईमानदारी आदि धर्म के पालन से ही धर्म का फल—शिवरूप कल्याण, सुख सामने आता है। पूजापाठ, व्रत, तीर्थ तो सड़क के बोर्डों की तरह केवल राह बताने के लिए हैं और इनका फल हृदयशुद्धि, राह दिखाना ही है। असली धर्म तो अच्छाई को अपनाना ही है। आज जरूरत है हम धर्म के स्वरूप को बतानेवाली रचनाओं को सामने लायें। जैसे कि 'सरल सुखी जीवन'।

शिव=कल्याणप्राप्ति का एक और रूप है—जब एक मानव से दूसरे मानव को सद्भाव, सहयोग प्राप्त होता है, तो सभी सुखी, प्रसन्न होते हैं। यह तभी हो सकता है जब प्रत्येक मानव अन्य मानवों से अपनापन अनुभव करे और यह तभी होगा जब प्रत्येक में मानव जाति की एकता का विश्वास होगा।

एक जैसी आकृति होने पर एक जाति होती है या एक जैसी उत्पत्ति की प्रक्रिया या अपने समान को जन्म देनेवाले एक जाति के कहलाते हैं। जाति की इस परिभाषा से सारे मनुष्यों=स्त्री-पुरुषों की एक ही मानव जाति सिद्ध होती है। क्योंकि सभी की शरीर रचना, शरीर में प्राप्त होने वाले अंग और अंगों का कार्य एक जैसा ही है। सभी के खून का रंग जहां लाल है, वहां सभी के हृदयों में समान ढंग से अपने हित, सहयोग, सद्भाव की समान भावनाएं उभरती हैं। इससे सिद्ध होता है कि सारे मानवों की एक ही जाति है।

पर इतिहास साक्षी है कि मानव जाति की एकता को भाषा, प्रदेश, धर्म, वर्ग आदि के रूप में बांटा गया। इस बटाव को ध्यान में रखकर रोटी-बेटी का सम्बन्ध सीमित कर दिया गया। दूसरों के साथ ईर्ष्या-द्वेष, वैर-विरोध का खुलकर व्यवहार किया गया। अपनों को ऊंचा, अच्छा समझा गया और दूसरों को बुरा, हलका माना गया और उनको मिटाने, नुकसान पहुंचाने के अनेक ढग वर्ते गए।

यह बांटने का क्रम आगे से आगे चलता गया और एक धर्म को माननेवाले भी कहीं शिया-सुन्नी के रूप में परस्पर टकराये तो कहीं कुर्द के रूप में सताए गए, तो कभी अहमदियों के रूप में पीड़ित किए गए। कभी परस्पर बटाव के कारण दूसरों की प्रगति के साधन—शिक्षा, धर्म के रास्ते बन्द कर दिए गए। इसी दृष्टि से 'स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम्' की ध्वनि गुंजाई गई, तो कभी समय, स्थान परिवर्तित हो जाने पर भी पुराने शास्त्रों की लकीर पीटने की दुहाई दी गई। आज भी रुवांडा, यमन, बोसनिया में नरसंहार चल रहा है।

अतः शिव=कल्याण की मांग है कि हम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सुखप्रद रूप, बात को ही अपनायें और तभी शिव का व्रत मनाना सार्थक हो सकता है।

आर्यसमाज का सेवक चला गया

पलवल—आर्यसमाज जवाहरनगर पलवल के पूर्व प्रधान, अनथक कार्यकर्त्ता श्री डासूराम आर्य का दिनांक २५-१-९५ को स्वर्गवास होगया। आप बहत्तर वर्ष के थे। दिनांक ?-२-९५ को आर्यसमाज मन्दिर जवाहरनगर पलवल में श्रद्धांजलि सभा हुई जिसमें सैंकड़ों नर-नारियों ने भाग लिया। आप हिन्दी सत्याग्रह में जेल भी गए। श्री आनन्दस्वरूप जी भाटिया, श्री गोविन्दराम जी रहेजा, श्री धनपतराय जी आर्य, फरीदाबाद से श्री लक्ष्मीचन्द, देहली से श्री गुरुदत्त जी आदि ने दिवंगत आत्मा के परोपकारी एवं याज्ञिक जीवन पर प्रकाश डाला।

—आनन्दस्वरूप भाटिया, मन्त्री

शोक प्रस्ताव

केन्द्रीय आर्यसभा, यमुनानगर, आर्यजगत् के यशस्वी विद्वान्, वेदों के प्रकाण्ड पंडित, लेखनी के धनी पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है।

अपनी विशेष बैठक दिनांक २४-१-९५ को आर्यसमाज, माडल टाऊन में शोक प्रस्ताव पारित करते हुए इस अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षाविद्, अंग्रेजीभाषा में वेदों के सफल अनुवादक, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में केमिस्ट्री (विज्ञान) विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष, अनेकों राजनेताओं के गुरु, आर्यसमाज के सफल नेता, आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान्, पंडित गंगाप्रसाद जी उपाध्याय के योग्य सुपुत्र की दिवंगत आत्मा की सद्गति की कामना करते हुए केन्द्रीय आर्यसभा यमुनानगर यह मानती है कि इस क्षति की पूर्ति निकट भविष्य में सम्भव नहीं हो सकेगी।

—मनोहरलाल दीवान सभामन्त्री

शोक समाचार

वैदिक भक्ति साधनाश्रम के सचालक तथा महात्मा प्रभुआश्रित जी के सुयोग्य सुपुत्र महात्मा ओमाश्रित जी का २५ जनवरी, ९५ को निधन होगया। उनके स्थान की पूर्ति नहीं हो सकती। उन्होंने वैदिक वर्णाश्रम परम्परा के अनुसार वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर आर्यसमाज की महान् सेवा की है।

सभा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने शोक संवेदना प्रकट करते हुए प्रभु से प्रार्थना की है कि उनके परिवार में वैदिक परम्परा चालू रहे और वैदिक भक्ति साधन आश्रम परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाधीक्षक

आर्यसमाज सुदकैनकलां जिला जीन्द का चुनाव

प्रधान मा० वेदपाल आर्य, उपप्रधान श्री वीरेन्द्र आर्य, मन्त्री श्री सूबेसिंह, उपमन्त्री श्री सुरेन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष मा० हंसराज, उपकोषाध्यक्ष श्री सुरेश आर्य, प्रचारमन्त्री श्री प्रतापसिंह, उपप्रचार-मन्त्री श्री प्रेमदास, पुस्तकाध्यक्ष श्री फूलकुमार।

(पृष्ठ ४ का शेष)

श्री पांडुरंग की दयनीय स्थिति

पाषाण पूजा का झण्डा गुजरात, महाराष्ट्र में श्री पांडुरंग ने उठाया है। वह आर्यसमाज व ऋषि पर कृपा कर रहे हैं। न जाने वह कबीर जी, गुरु नानक, केरल के महात्मा नारायण स्वामी आदि पर क्यों नहीं बरस रहे। भागवतपुराण में मूर्तिपूजा करनेवालों को अधम और गधा तक लिखा है। भागवत के कर्त्ता के बारे में क्यों मौन हैं। पांडुरंग कुछ भी करलें पत्थर पूजा को पौराणिक पाषाण पूजा ही मानेंगे। देखिए विवेकानन्द स्मारक के ध्यानकेन्द्र में एक भी मूर्ति नहीं है। यह है दयानन्द की दिग्विजय।

आदर्श वैदिक विवाह संस्कार

डा० विश्वम्भरदयाल आर्य मन्त्री आर्यसमाज मिर्जापुर बाछोद जिला महेन्द्रगढ के सुपुत्र डा० सत्यनारायण यादव का विवाह संस्कार श्री स्व० शीशराम यादव ग्राम मन्दोला जिला रिवाड़ी की सुपौत्री राजबाला यादव के साथ दिनांक ८-१२-८४ को वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ।

श्री राव बन्सीसिंह पंचायत एवं विकास मन्त्री हरयाणा सरकार ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया तथा पं० मातूराम जी शर्मा उपदेशक सभा रोहतक द्वारा विवाह संकार सम्पन्न हुआ तथा सभा रोहतक को ५१ रु० विवाह पर दान दिया गया।

श्री डा० विश्वम्भरदयाल आर्य ग्राम बाछोद निवासी ने दहेज में कुछ भी लेने से इन्कार कर दिया। एक रु० नारियल हर नेग पर लिया गया।

नशे के नाम पर जहर

आजकल शहर में पनवाड़ियों के पास एक गोली मधु मुनक्का के नाम से बिक रही है। इसको खाने के बाद आदमी को इतना नशा होता है कि खानेवाले का दिमाग सुन हो जाता है और उल्टी-सीधी हरकतें करने लगता है। आजकल युवा पीढ़ी मे इसका प्रयोग ज्यादा होने लगा है। अगर यह हाल रहा तो आनेवाले समय में बच्चे भी इस गोली से बच नही सकते। यह गोली अत्यन्त घातक है। इसलिए स्वास्थ्य विभाग को बच्चों व युवाओं के भविष्य को ध्यान में रखते हुए इस गोली की जांच करनी चाहिए व इस पर पाबन्दी लगानी चाहिए। ताकि युवाओं को इस जहर से मुक्ति मिले व उनका भविष्य अन्धकारमय न बने।

—केवलकृष्ण गोयल, गुड़मंडी, हनुमानगढ़ टाउन

अधिकरण में हिन्दी के प्रयोग की अनुमति हुई

रेलवे दावा अधिकरण (ट्रिब्यूनल) में रेल मंत्रालय को अधिसूचना द्वारा सम्बन्धित पार्टियों को यह विकल्प दे दिया गया है कि दावा अधिकारियों के समक्ष वे अपने-अपने मामलों की पैरवी हिन्दी अथवा अंग्रेजी में करें। दावा अधिकरण के विकल्प पर अधिकरण के सभी आदेश और निर्णय हिन्दी में भी हो सकते हैं। इससे उन व्यापारियों को पर्याप्त सुविधा होगई है जो अपने मामलों की पैरवी हिन्दी में करना चाहते हैं। यह विकल्प देश के सभी भागों में लागू है।

२. इसी प्रकार केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण (सेंट्रल एडमिनिस्ट्रेटिव ट्रिब्यूनल) के समक्ष पार्टियां अपने कागजात हिन्दी में दायर कर सकती हैं और उन्हें न्यायपीठ अपने समक्ष प्रस्तुत कार्यवाहियों/पैरवी में हिन्दी के प्रयोग की अनुमति दे सकता है। हिन्दी भाषी क्षेत्र में स्थित पीठों में अन्तिम निर्णय के लिए भी हिन्दी के प्रयोग की अनुमति दे दी गई है।

३. दोनों अधिकरणों का दर्जा उच्च न्यायालय के समान है।

४. किन्तु अभी भी उपरोक्त विकल्प की जानकारी के अभाव में पार्टियां अपने दावों में प्रायः अंग्रेजी का प्रयोग करती रहती हैं। उन्हें कुछ व्यावहारिक कठिनाई भी हो सकती है। आपके सम्मानित पत्र के माध्यम से अनुरोध है कि उक्त विकल्प की जानकारी अधिक से अधिक व्यक्तियों को दी जाए जिससे विशाल समाज जो अंग्रेजी नहीं जानता, राहत की सांस ले सके और अन्य अधिकरणों को भी अच्छी सीख मिले। यदि कोई कठिनाई हो तो संयोजक, राजभाषा कार्य, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, नई दिल्ली—२३ को पत्र लिखे जाएं।

—जगन्नाथ, संयोजक, राजभाषा कार्य,
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, एक्स. वाई. ६८
सरोजिनी नगर, नई दिल्ली—११००२३

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्तीभवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० १३२०/७३ पंजि० ४०/२२ डाकपत्रक १, २६, ०८, ५३, ०१५

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष २२ अंक १४ २८ फरवरी १९९५ (वार्षिक शुल्क ५०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-००
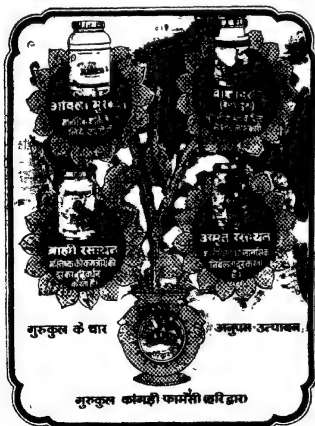
छह मार्च को जिनका बलिदान दिवस है—

गायें मुस्लिम और किराणी । जय जय लेखराम बलिदानी ॥

रक्तसाक्षी पं० लेखराम और उनका अमर बलिदान

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेदसदन, अबोहर—१५२११६

महर्षि दयानन्द की शिष्यपरम्परा में पं० लेखराम जी का व्यक्तित्व बहुत अनूठा है। सृष्टि के आदि में दयालु परमेश्वर ने अपनी दया का प्रकाश करते हुए अपने नित्य अनादि वेदज्ञान का अनुदान दिया। सृष्टि रचना के समय से लेकर आज पर्यन्त असंख्य पुण्यात्माओं, महात्माओं व वीरों ने वेद की रक्षा के लिए दारुण दुःख सहे हैं। अपने प्राणों तक की आहुति दी है। ऐसे अमर बलिदानी हुतात्माओं में नरनाहर पं० लेखराम का नाम नामी स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है। इस वीर विप्र के नाम व काम पर वेद-अभिमानी जितना भी गौरव करे थोड़ा है। आधुनिककाल के इतिहास में आर्यजाति की रक्षा व वैदिकधर्म प्रचार के लिए पं० लेखराम बलिदान अद्वितीय है। सिख गुरुओं के बलिदान के पश्चात् इस्लाम की आड़ में की गई हत्याओं में यह सबसे बड़ा बलिदान है।

यह बात और भी गौरवपूर्ण है कि पं० लेखराम का जीवन भी बड़ा पवित्र, शानदार व गौरवपूर्ण था और उनकी मृत्यु भी अत्यन्त शानदार, शिक्षाप्रद व प्रेरणाप्रद है। उनके बलिदान पर किसी आर्यवीर ने यथार्थ ही लिखा था—

> हथेली पै सिर जो लिए फिर रहे हो।
> वे सिर उसका धड़ से जुदा क्या करेंगे ?

महर्षि के जीवनचरित की घटनाओं की खोज के लिए आप सूरत (गुजरात) गए। वहां एक विपदाग्रस्त मुसलमान ने ईश्वर के नाम पर आपसे कुछ भिक्षा मांगी। ईश्वरभक्त लेखराम ने तत्काल उसे कुछ पैसे देते हुए कहा कि तू ईश्वर के नाम पर जान भी मांगता तो मैं जान भी वार देता। उस मुसलमान ने पं० शान्तिस्वरूप जी (पूर्व मौलाना मुहम्मद अली कुरैशी) को बताया कि पं० जी जैसा अटल ईश्वरविश्वासी और निडर व्यक्ति मैंने तो कभी देखा नहीं।

जगाधरी में पंडित जी प्रचार कर रहे थे। आर्यसमाज वहां था, परन्तु टूट चुका था। एक विरोधी ने पंडित जी की पगड़ी उतारकर पास में ही भाड़भूंजे की भट्ठी में फेंक दी। पगड़ी जल गई। पंडित लेखराम जी पूर्ववत् शांतचित्त व्याख्यान देते रहे। उनकी दृढ़ता व शांति देखकर समीप खड़ा एक चौधरी अत्यन्त प्रभावित हुआ। उसने आगे बढ़कर कहा—"आज तो पंडित जी की पगड़ी उतारकर जलाई गई कल मैं इनके प्रचार की व्यवस्था करूंगा देखूंगा कौन विरोध करता है।" पं० लेखराम जगाधरी में आर्यसमाज स्थापित करके ही लौटे।

जालंधर में आर्यजाटों ने प्रचार करवाया—पण्डित जी ने 'गुरु नानक मुसलमान थे' मिर्जा गुलाम अहमद को इस गप्प का उत्तर देने के लिए व्याख्यान की घोषणा करवाई। व्याख्यान जालंधर छावनी में सेना के आर्यजाटों ने करवाया। तब हरयाणा व पश्चिमी उत्तरप्रदेश के सैकड़ों आर्यजाट जालंधर छावनी में रहते थे। भारी भीड़ पण्डित जी का व्याख्यान सुनने आई। सैकड़ों सिख सैनिक भी सभा में उपस्थित थे। पण्डित जी को गुरुग्रन्थ साहेब व सिख इतिहास का अथाह ज्ञान था। प्रमाणों को झड़ी लगाकर सिद्ध कर दिया कि गुरु नानकदेव मुसलमान नहीं थे। वे वेद के सब मूलभूत सिद्धातों को मानते थे। पण्डित जी के व्याख्यान का अपूर्व प्रभाव पड़ा। भाषण की समाप्ति पर सेना के सिख जवानों ने पं० लेखराम जी को कंधों पर ऐसे उठाया जैसे विजयी पहलवान को दूसरे पहलवान व प्रशंसक उठाते हैं। सिख जवानों में पण्डित जी को उठाने की होड़-सी लग गई। अपनी-अपनी बारी के लिए सब झगड़ रहे थे।

स्मरण रहे कि सेना में वैदिकधर्म का प्रचार करनेवाले प्रथम आर्यविद्वान् पं० लेखराम जी ही थे। उनके प्रचार का श्रेय उन कट्टर आर्यजाटवीरों को प्राप्त है जो उस समय जालंधर छावनी मे नियुक्त थे। खेद है कि उनमे से किसी का नाम आज हम नहीं जानते। यह समाचार तब पत्रों मे छपा था और मेरे पास वह अंक है जिसमें महात्मा मुन्शीराम जी ने यह समाचार दिया था।

यहां प्रसगवश एक बात लिखना चाहता हूं। कसूर (पश्चिमी पंजाब) के आर्य वकील ला० दीवानचन्द जी ने एक बार पंजाब सभा के पत्र में एक सुन्दर लेख में लिखा था कि सिख पंथ की शक्ति सिख जाटों के कारण है। कारण जाट क्षत्रिय भावों से विभूषित होता है। इतिहासकार भी ला० दीवानचन्द जी के कथन से सहमत हैं। लालाजी ने तब लिखा था कि आर्यसमाज कृषकों में जाटों में और जोर से

(शेष पृष्ठ ७ पर)

वीर शिरोमणि पं० लेखराम के प्रति

क्या अन्त तेरा होगया तीखी छुरी की धार से ?
सींचो ऋषि की वाटिका, अपने लहू की धार से।
तूने अमर पद पा लिया उपकार से उपकार से ॥

ईश्वर की वाणी वेद पर तेरा अटल विश्वास था।
निर्भीक होकर गर्जना तेरा यह गुण इक खास था ॥
जीते विरोधी सैकड़ों निज तर्क की तलवार से।……

परिवार का घर बार का तुझको तनिक न ध्यान था।
बस लक्ष्य तेरा वीरवर बलिदान था, बलिदान था ॥
क्या अन्त तेरा होगया तीखी छुरी की धार से ?……

गाथा अमर तेरी पथिक, देती अनूठी प्रेरणा।
करता रहा ससार मे सचार प्रतिपल चेतना ॥
जन मन में कैसे घुस गया अपने मृदुल व्यवहार से।……

तू ज्ञान का भण्डार था, तेरी निराली शान थी।
सिर धर तली फिरता रहा, तेरी यही पहचान थी ॥
गूञ्जेगी जगती यह सदा, तेरी पथिक जयकार से।……
सींचो ऋषि की वाटिका, अपने लहू की धार से ॥

रचयिता—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा का निश्चय

१ मार्च से शराब के ठेकों की नीलामी का जिलेवार विरोध किया जावेगा

रोहतक—२५ फरवरी १९९५ को आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग बैठक दयानन्दमठ रोहतक में सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर हरयाणा प्रदेश से सभी जिलों से आर्यसमाज तथा आर्यशिक्षणसस्थाओं के अधिकारी सम्मिलित हुए।

सर्वप्रथम दिवंगत आर्यनेता स्वामी सत्यप्रकाशानन्द, डा. हरिप्रकाश संयुक्त पंजाब के पूर्वमुख्यमन्त्री कामरेड रामकिशन तथा श्री इन्द्रनारायण के देहावसान पर शोक प्रस्ताव करके दो मिनट का मौन धारण रखा गया। आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के वेदप्रचार तथा शराबबन्दी आदि विभागों एवं गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के आय-व्यय की सम्पुष्टि कीगई। सभा का आगामी वार्षिक अधिवेशन करने की तिथि १४ मई, १९९५ निश्चित कीगई। बैठक में शराबबन्दी लागू करवाने के लिए तथा १ मार्च से १३ मार्च तक शराब के ठेकों की नीलामी पर विरोध प्रदर्शन की तैयारी पर विस्तार से विचारविमर्श करने के पश्चात् सर्वसम्मति से निम्न प्रकार निश्चय किए गए।

१—आर्यसमाजों तथा आर्यशिक्षणसंस्थाओं के अधिकारियों को सभा ने निर्देश दिया है कि जब तक हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल हरयाणा में शराब से होनेवाली बर्बादी तथा वैदिक सभ्यता की रक्षा के लिए पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की घोषणा न करें तब तक श्री भजनलाल को किसी समारोह में आमन्त्रित न करें। जिन समारोह में श्री भजनलाल जावेंगे उनमें सभा का कोई अधिकारी सम्मिलित नहीं होगा और आर्यसमाज तथा आर्यशिक्षणसंस्था सभा के इस प्रस्ताव की अवहेलना करेगी, उनके विरुद्ध अनुशासन की कार्यवाही की जावेगी। आर्यजनता को स्मरण करवाया गया है कि गत वर्ष श्री भजनलाल को सभा के माननीय प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने एक पत्र लिखकर शराबबन्दी लागू करवाने की मांग की थी, परन्तु भजनलाल ने उनको परोपकार तथा जनकल्याण की मांग के पत्र का उत्तर देना तो दूर रहा, जब शराब के ठेकों की नीलामी पर आर्यनरनारी शांतिपूर्वक निहत्थे प्रदर्शन कर रहे थे तो सभा के वरिष्ठ नेताओं के साथ श्री भजनलाल के संकेत पर उनकी पुलिस ने दुर्व्यवहार किया तथा लाठीचार्ज करके उन्हें ज्ञापन देने से बलात रोका गया था। उधर शराबरूपी जहर के व्यापारियों का स्वागत किया जारहा था। ग्राम पंचायत के चुनावों के अवसर पर शराब का सरासर प्रयोग करवाया गया।

इस प्रकार के जहरीली शराब बेचनेवाले अपराधियों को उच्चतम न्यायालय ने केरल राज्य के एक अभियोग में उम्रकैद का दण्ड देने का निर्णय सुनाया है। परन्तु श्री भजनलाल ने अपने दामाद के शराब के कारखानों से शराब की बिक्री अधिक से अधिक करवाने के लिए ग्राम पंचायतों को शराब की एक बोतल की बिक्री करने पर १)५० का लालच दिया है और जो पंचायतें शराब के ठेके बन्द करवाने के प्रस्ताव भेजती हैं, उन पर अपने सरकारी अधिकारियों द्वारा प्रस्ताव वापिस लेने के लिए दबाव तथा लालच देकर पंचायती राज्य के नियमों को तोड़ा जाता है।

२—आर्यसमाज तथा आर्यशिक्षणसंस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं को निर्देश दिया गया है कि वे अपने-अपने जिला केन्द्रों पर होनेवाली शराब के ठेकों की नीलामी का पूरी शक्ति के साथ विरोध करें तथा समान विचारवाली धार्मिक संस्थाओं तथा राजनैतिक दलों का सहयोग प्राप्त करें।

३—आनेवाले विधानसभा तथा लोकसभा के चुनावों के अवसर पर चुनाव लड़नेवाले उम्मीदवारों से सवखाप पंचायत की बैठक में शपथपत्र लिखितरूप मे लिए जावें कि वे शराब का प्रयोग नहीं करेंगे तथा विजयी होने पर शरबबन्दी लागू करवाने में अपने वचन का पालन करेंगे। इसी प्रकार के शराबबन्दी समर्थक उम्मीदवारों को चुनाव में सफल करने के लिए सभी आर्यनरनारी उनकी तन, मन तथा धन से सहायता करें चाहे वे किसी भी दल के उम्मीदवार हों।

४—शराबबन्दी के कार्य को सफल करने के लिए महिलाओं तथा नवयुवकों में प्रचार करके उनका सहयोग प्राप्त किया जावे तथा उन पर कार्यभार डालकर उत्साहित किया जावे।

५—हरयाणा के प्रत्येक जिले में अश्वमेघयज्ञों का आयोजन करके शराब न पीने की प्रतिज्ञा करवाई जावे तथा शराबबन्दी का साहित्य मुफ्त वितरित किया जावे। इस कार्य हेतु स्वामी योगानन्द जी १ लाख ६० हजार रु० देने की घोषणा की है।

६—हरयाणा के प्रत्येक जिले में शराबबन्दी शिविरों का आयोजन करके मुफ्त दवाई दी जावे और इस प्रकार के रोगियों के आवास तथा भोजन की निःशुल्क व्यवस्था की जावे। इस कार्य में सभा की ओर से सहयोग दिया जावेगा।

७—आर्यसमाज मन्दिरों में प्रातः सायं वेदप्रचार तथा शराबबन्दी के गीत एवं व्याख्यानों के कैसट लाउडस्पीकर (ध्वनि विस्तारक) द्वारा सुनाने की व्यवस्था की जावे। —केदारसिंह आर्य कार्यालयाधीक्षक

आर्यसमाज तथा शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं से अपील

शराब के ठेकों की नीलामी पर विरोध प्रदर्शन में सम्मिलित होवें

शराब सभी बुराइयों की जड़ है। इसके सेवन से करोड़ों परिवार बर्बाद हो चुके हैं। ऋषिमुनियों की पवित्र धरती हरयाणा से वैदिक-संस्कृति तथा सभ्यता नष्ट होरही है। शराबियों से बहन-बेटियों की इज्जत को खतरा बना रहता है। नवयुवक इसके चस्के में फंसकर पथभ्रष्ट होरहे हैं। भारत की रक्षा के लिए वीर सैनिकों की कमी होती जारही है। परन्तु हरयाणा सरकार शराब के प्रचार तथा प्रसार को बढ़ावा देकर प्रतिवर्ष शराब के ठेकों की नीलामी कर रही है। उसे हरयाणा के कल्याण तथा भलाई की चिन्ता नहीं है, शराब के ठेकों में अधिकांश हरयाणा के मन्त्रियों की गुप्तरूप से भागीदारी रहती है। वे हरयाणा की वीर जनता को शराब के नशे में बेहोश रखकर सदा राज करना चाहते हैं।

आर्यसमाज अपने जन्मकाल से ही समाजसुधार के कार्यों में अग्रणी रहा है। संघर्ष करने से नया जीवन मिलता है तथा संघटन सुदृढ़ होता है। अतः आर्यसमाज तथा शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं से अनुरोध है कि शराब के ठेकों की नीलामी पर अपने-अपने जिलों में विरोध प्रदर्शन पर अपने सहयोगियों के साथ भारी संख्या में ओ३म् के ध्वज तथा शराबबन्दी के बैनर लेकर भाग लेवें और अपनी शक्ति तथा संघटन से हरयाणा सरकार को शराबबन्दी लागू करने के लिए विवश कर देवें और हरयाणे के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में सहयोग देवें।

प्रदर्शनों का कार्यक्रम

स्थान	दिनांक	नेतृत्व
करनाल	१ मार्च १९९५	श्री वेदप्रकाश, आचार्य देवव्रत
फरीदाबाद	२ ,,	प्रो० शेरसिंह, श्री लक्ष्मणदास आर्य
कुरुक्षेत्र	३ ,,	आचार्य देवव्रत, डा. मनोहरलाल आर्य
अम्बाला छा.	४ ,,	आचार्य देवव्रत, स्वामी सदानन्द
पानीपत	६ ,,	प्रिंसिपल लाभसिंह, लाला रामानन्द
गुड़गाव	७ ,,	प्रो० शेरसिंह, श्री सत्यपाल आर्य
रेवाड़ी	८ ,,	श्री सुखराम आर्य, पं. मातूराम प्रभाकर
रोहतक	९ ,,	स्वामी ओमानन्द सरस्वती, आचार्या सुभाषिणी जी, श्री कपिलदेव शास्त्री
जीन्द	१० ,,	स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी वेदानन्द सरस्वती, श्री देशराज वकील
हिसार	११ ,,	श्री सूबेसिंह, श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांति०
सिरसा	१३ ,,	स्वामी ओमानन्द सरस्वती, श्री सूबेसिंह

नोट—जिला कैथल के कार्यकर्त्ता कुरुक्षेत्र, यमुनानगर के अम्बाला-छावनी, महेन्द्रगढ के रेवाडी, भिवानी के जीन्द तथा सोनीपत के रोहतक के प्रदर्शन में सम्मिलित होवें। नीलामी स्थान की जानकारी जिलेवार आबकारी कराधान कार्यालय से लेवें। नीलामी का समय प्रातः १० बजे है। — वेदव्रत शास्त्री मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा

शिवरात्रि का ऐतिहासिक सम्बन्ध क्या है ?

प्रतापसिंह शास्त्री, पत्रकार

दक्षिण भारत में यथा गुजरात प्रदेश में शिवरात्रि का पर्व माघ बदि १३ को होता है और उत्तर भारत में विशेषकर हरयाणा में फाल्गुन बदि १४ को यह पर्व मनाया जाता है। इस अन्तर का कारण यह है कि दक्षिण भारत में अमावस्या और उत्तर भारत में पूर्णिमान्त मास की गणना प्रचलित है। पौराणिक बन्धु सनातनधर्मी लोगों के लिए इस व्रत में रात्रि में जागरण करने का विशेष महत्त्व है।

प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर अनशन व्रत रखा जाता है और मिट्टी के बर्तन में जल भरकर ऊपर से बेलपत्र, आक-धतूरे के फूल और अक्षत आदि डालकर शिवजी को चढ़ाया जाता है यदि आसपास शिवमूर्ति न हो तो शुद्ध गीली मिट्टी से भी शिवलिंग बनाकर उसे पूजने का विधान है। शिवालयों में जाकर, शिवमन्दिर में जाकर शिवलिंग पर मिठाई, दूध, जल तथा अन्य पूजा का सामान चढ़ाया जाता है, शिवालयों में जो पुजारी पण्डे पौराणिक लोग होते हैं वे जागरण करके शिवपुराण का पाठ सुनना सुनाना प्रत्येक व्रती का धर्म माना जाता है। दूसरे दिन प्रातःकाल जौ, तिल, खीर तथा बेलपत्र का हवन करके व्रत समाप्त किया जाता है इसकी विस्तृत पौराणिक कथा लिंगपुराण में पढ़े स्थानाभाव के कारण यहां नहीं दी जारही है।

कैलाश पर्वत पर बैठी हुई पार्वती ने शिवजी से पूछा—'भगवन्, इस प्रकार कौन-सा व्रत है जिसके करने से मनुष्य आपके सायुज्य को प्राप्त होजाये।' यह सुनकर महादेव जी ने कहा—'फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी को व्रत रखकर प्रदोषकाल में मेरा पूजन करके रात्रि को जो मनुष्य जागरण करता है वह अनायास ही मेरे सायुज्य को प्राप्त हो जाता है। हे पार्वती, मैं इस सम्बन्ध में एक इतिहास कहता हूं, सो तुम सावधान होकर सुनो। यह भी लिंगपुराण में पढ़ें क्योंकि पौराणिक कहानी लम्बी है।

आप अब यह सम्यक्तया समझ गये होंगे कि शिवजी महाराज भारतवर्ष के एक बहुत प्रसिद्ध राजा शासक थे उनका विस्तृत राज्य हरयाणा प्रदेश से हिमालय तक विस्तृत था उनके जन्म से पूर्व शिवरात्रि नहीं मनाई जाती थी अर्थात् शिवजी का वर्णन महाभारत में मिलता है इससे पूर्व नहीं। अतः सिद्ध हुआ कि महाभारतकाल से पूर्व शिवरात्रि पर्व नहीं था महाभारत के अनुसार शिवजी का राज्य कैलाश पर्वत पर था पीछे फैलाव होने पर सारा हरयाणा इसी के अन्तर्गत होगया। शिवजी के दो पुत्र थे—कार्तिकेय और गणेश। इस राज्य को फैलाने में इन दोनों का हाथ है। कार्तिकेय सेनापति था उसने बड़े-बड़े किले बनवाये रोहतक उसके रहने का स्थान था। महाभारत के सभापर्व में इसका बहुत सुन्दर वर्णन है महाराजा युधिष्ठिर ने जब राजसूययज्ञ किया तो अपने चारों भाई चारों दिशाओं में विजययात्रा के लिए भेजे पश्चिम में नकुल को भेजा गया। उस समय दिल्ली का नाम इन्द्रप्रस्थ होगया था, पहले खाण्डवप्रस्थ था। यहां से निकलकर पश्चिम में सबसे पहले जिस इलाके में नकुल पहुंचा, उसका वर्णन इस प्रकार है—

"ततो बहुधनं रम्यं गवाढ्यं धनधान्यवत् ।
कार्तिकेयस्य भवनं रोहीतकमुपाद्रवत् ॥"

अर्थात् इसके बाद नकुल ने कार्तिकेय के भवन रोहीतक पर चढ़ाई की। यह प्रदेश बहुत सुन्दर तथा धनधान्य से भरपूर था और गौवों से समृद्ध था। वहां शूरों तथा मत्तमयूरकों से नकुल को भारी युद्ध करना पड़ा। शूर व मत्तमयूरक ये दोनों उस समय इस प्रदेश में बसनेवाले क्षत्रियों के वंश या समुदाय थे। उस समय हरयाणा के दो भाग थे—मरुभूमि तथा बहुधान्यक। मरुभूमि (मारवाड़ रेगिस्तान) तथा बहुधान्यक बहुत अन्न उपजानेवाले भाग को कहते हैं इन दोनों को नकुल ने जीता।

शैरीषकम (सिरसा) तथा महेत्थम् (महम) का भी नाम यहां पर आया है। कार्तिकेय को पुराणों में देवताओं का सेनापति कहा गया है और मयूर (मोर) उसका वाहन और ध्वज चिह्न बताया गया है। सम्भवतः उसके यान की आकृति मोर जैसी रही हो। शिवजी के दूसरे पुत्र गणेश थे यह सेनाओं के शिक्षक थे, उन्हें परेड सिखाते थे। पाँच सैनिक की लाईन को एक पंक्ति कहा जाता था। दो पंक्तियों को मिलाकर एक गण बनता था इस तरह पहले-पहल गण बनाने के कारण ही उनका नाम गणेश हुआ। ये गण ही पीछे चलकर बढ़ते-बढ़ते खाप कहलाये जो आज भी इस इलाके में प्रचलित हैं। शूरों और मत्तमयूरों के वंशज ही पीछे चलकर यौधेय कहलाये जो इतिहास में अपनी वीरता के लिए इतने प्रसिद्ध हैं कि सिकन्दर की सेनाओं ने इन्हीं के डर से आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया था और इसी कारण सिकन्दर को हरयाणा की सीमा के परे से ही वापिस लौटना पड़ा था। यौधेय सैनिक भी कार्तिकेय को सेनापति के रूप में मानते थे।

सन् १९३५–३६ में डा० बीरबल साहनी की देखरेख में वर्तमान रोहतक शहर की आबादी के पास खोखराकोट के खण्डरों की खुदाई की गई तो इन्हीं यौधेयों के सिक्के ढालने के हजारों ठप्पे मिले। इनका समय ईसा से एक-दो सदी पहले का माना गया है इन सिक्कों पर शिवजी का वाहन नन्दी बैल खड़ा है। ऊपर ब्राह्मीलिपि में "यौधेयानां बहुधान्यके" यह लिखा है जिसका अर्थ है यौधेयों का बहुत अन्नवाला प्रदेश। लगभग १५०० वर्ष पहले विदेशी कुषाणों को जीतकर यौधेयों ने जो सिक्के चलाये, उनके बराबर में उनका वाहन (ध्वज चिह्न) मोर है। ब्राह्मीलिपि में "यौधेयगणस्य जयः" यह खुदा है। इनका मत्तमयूरक नाम इसलिए पड़ा कि इन्होंने कार्तिकेय के ध्वज चिह्न (मोर) को ही अपनाया है। इसलिए आज भी मोर को पवित्र पक्षी (राष्ट्रीय पक्षी) माना जाता है। मोर को मारने की सजा यहां मुस्लिमकाल, अंग्रेजकाल में भी पाबन्द रही है।

पहले सारे हरयाणा में शिवजी की जयन्ती पश्चात् उपासना इनके शासनकाल के बाद प्रचलित होगई लगती है। शिव-पार्वती के नाम पर सैकड़ों दन्तकथाएं, किस्से, कहानियां कहे जाते हैं। शिवालयों के अलावा किसी अन्य देवी देवता का मन्दिर इस हरयाणा में कहीं नहीं मिलेगा। नए मन्दिर हो सकते हैं शिवालयों के समकालीन मन्दिर नहीं हैं यहां लोकभाषा में मन्दिर का नाम ही शिवालय है। पुराणों में शिव का वाहन बैल को माना गया है। कृषिप्रधान होने के कारण यहां खेती तथा सवारी दोनों में बैल का ही वाहन माना गया है। किसान बैलगाड़ी ही रखता है यह दूसरी बात है अब ट्रैक्टर आदि भी वाहन होगये हैं। नन्दी बैल (हर के धान-बैल) की यहां के आर्थिक जीवन में इतनी प्रधानता होने के कारण भी इस राज्य का नाम "हरयाणा" शिवजी का राज्य हरद्वार तक विस्तृत था क्योंकि हरद्वार के पास के छोटे-छोटे पहाड़ों को शिवालक कहते हैं शिव के अलक अर्थात् जटायें। इसी से गंगा के शिवजी की जटाओं से निकलने की बात चल पड़ी इसी शासन से हर-हर महादेव का सैनिक नारा उद्भूत होकर सर्वत्र फैला।

शिवजी महाराज और उनके पुत्रों कार्तिकेय तथा गणेश के मानवीय गुणों के कारण, सुन्दर शासन व्यवस्था के कारण उनके ही शासनकाल में प्रजा के लोग उनका यशोगान करने लगे और पश्चात् यह यशोगान शिवजी के गुणों को अपनाने की बजाय धीरे-धीरे जैन-सम्प्रदाय द्वारा चलाई गई मूर्तिपूजा शिवलिंग पूजा आदि में बदल गई। वेदज्ञान के अभाव में पुराणों की उत्पत्ति ने इतिहास को बिगाड़कर रख दिया जिसके कारण पाखण्ड, अन्धविश्वास, अज्ञान व मूर्तिपूजा जैसे वेदविरुद्ध सैकड़ों मतमतान्तर फैल गये।

शिवपुराणोक्त शैव-सम्प्रदाय ने शिव जी की उपासना का प्रचार किया इसी सम्प्रदाय के पूजक थे महर्षि दयानन्द जी के पिता करसन जी तिवारी। वे कैलाशपति महादेव की शिवलिंग की पूजा करते थे। महर्षि दयानन्द जब १४ वर्ष के थे तब पिता करसन जी (तहसीलदार) ने नियमपूर्वक बालक को शैवभक्त की दीक्षा देने की तैयारी की और शिवरात्रि का व्रत रखने को कहा। सवत् १८९४

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को बोध कब होगा

डा० महेश विद्यालंकार

वर्तमान आर्यसमाज के रूप-स्वरूप, सभाओं, संस्थाओं, संगठनों, मन्दिरों, अनुयायियों आदि को देखकर तटस्थ ऋषिभक्त और विचारधारा में आस्था रखनेवाला व्यक्ति चिन्तित व मानसिक पीड़ा में है। इस संगठन का जो महत्त्व, प्रभाव तथा लाभ होना चाहिए, वह नहीं होरहा है। जो वर्तमान संसार में आर्यसमाज की प्रतिष्ठा, योगदान व उपयोगिता होनी चाहिए वह नहीं होरही है। दुनिया की सर्वोत्तम विचारधारा का धनी आर्यसमाज ठहराव, भटकाव और दिशाहीनता की स्थिति में जारहा है। इसके प्रचार-प्रसार की पकड़ सीमित होरही है। इसके अनुयायी तेजी से घट रहे हैं। इसकी विश्वसनीयता, तेजस्विता, कर्मठता और चारित्रिक प्रखरता पर प्रश्नचिह्न लगने लगे हैं। शरीर की दृष्टि से आर्यसमाज खूब मोटा-ताजा, फलता-फूलता नजर आरहा है, किन्तु आत्मा की दृष्टि से क्षीण व सिकुड़ता जारहा है। मैं निराशा या आलोचना की दृष्टि से नहीं लिख रहा हूं, अपितु वस्तुस्थिति का आकलन रख रहा हूं। जिससे हमें बोध हो सके कि हम किधर जारहे हैं? कहां खड़े हैं? क्या कर रहे हैं? हमारा लक्ष्य क्या था और करने क्या लगे? यदि वास्तव में आर्यसमाज को आगे बढ़ना है, ऋषि के मिशन का जन-जन को साथ देना है तो गम्भीरतापूर्वक संकल्प के साथ यह भावना जागृत करनी होगी—इदं आर्यसमाजाय इदन्न मम। कठोरतापूर्वक अपने स्वार्थ, पद, अहंकार और लाभ की दृष्टि को छोड़ना होगा। कुछ महत्त्वपूर्ण सुझाव दे रहा हूं यदि इनका ईमानदारी से पालन किया जाएगा तो अपना और समाज दोनों का कल्याण संभव है। आर्यसमाज पुनः अपने गौरव, सम्मान, उपयोगिता आदि की दृष्टि प्रभावी व आकर्षक बन सकेगा।

१. आर्यत्व की भावना

ऋषिवर ने हमें दृष्टि दी पहले आर्य बनो, फिर समाजी बनो। आर्य शब्द गुणवाचक है। जब तक आर्यत्व का आचरण नहीं, तब तक हम न आर्य हैं और न समाजी हैं। आर्यत्व के आचरण से हमारे जीवन में धार्मिकता, सात्त्विकता, नैतिकता और मानवता की भावना आती है। आज हमारे जीवनों से ये भाव तेजी से हट रहे हैं। पहले आर्यसमाज में जो भी अधिकारी, कार्यकर्त्ता, उपदेशक, पुरोहित, विद्वान्, सदस्य आदि होते थे उनके जीवनों से सुगन्ध निकलती थी, उनके जीवन बोलते थे। उनका आचरण स्थायी प्रभाव छोड़ता था। आज उल्टा होरहा है। इनके नजदीक जाने पर घृणा होने लगती है। यह हमारे पतन का मूल कारण बना। यदि आर्य और आर्यसमाजी में आर्यत्व का गुण-कर्म-स्वभाव व आचरण नहीं है तो वह दिखावटी, बनावटी, नकली, फर्जी, स्वार्थी आर्यसमाजी हैं। ऐसे व्यक्तियों को सभा, संगठनों व संस्थाओं से दूर रखना होगा।

दुर्भाग्य यह है कि ऐसे व्यक्ति ही तेजी से सर्वत्र आगे आरहे हैं। इससे आर्यसमाज को धक्का लग रहा है। वह पिछड़ रहा है। ऐसे व्यक्तियों के आचरण को देखकर भावनाशील, श्रद्धालु व्यक्ति आर्यसमाज में आने से कतराने लगे हैं। एक और भयंकर आर्यसमाजी कहलानेवाले व्यक्तियों में गिरावट आरही है। वह है—धार्मिकता का अभाव। धार्मिकता की कमी से व्यक्ति झगड़े, पदलिप्सा, स्वार्थसिद्धि आदि में फंसता है। हमने ऋषि के धार्मिक व योगी पक्ष को भुला दिया। यदि हम अपना और आर्यसमाज का हित चाहते हैं तो हमें आर्यत्व की भावना और गुणों को जीवन में उतारना होगा। इसी से परिवार और समाज में स्थायी प्रभाव आयेगा।

२. पदत्याग की भावना

आर्यसमाज में पद और अधिकार पाने का रोग बड़ी तेजी से फैला हुआ है। इसीलिए आर्यसमाज का प्रजातांत्रिक ढांचा तेजी से चरमराया, लड़खड़ाया और तेजी से टूट रहा है। परिणाम सामने है कि इसके चुनाव दंगल बनने लगे हैं। पदलिप्सा के कारण झगड़े बढ़ रहे हैं। सेवा, सहयोग, मिशन, संस्था की भावना पीछे छूट रही है। एक-एक व्यक्ति कई-कई पदों को लेकर सुख सुविधा-मान पाने की होड़ में दौड़ रहा है। पहले पद पाने की तिकड़म में समय लगाता है फिर पद पर बने रहने की चालबाजी भिड़ाता है। इससे भावनाशील, समर्पित मिशनरी भावना के लोगों को गहरी ठेस पहुंचती है और पहुंच रही है। वे धीरे-धीरे दूर व अलग होने लगते हैं और होरहे हैं। जब तक आर्यसमाज में कठोरता से इस आचारसंहिता का पालन नहीं होगा कि एक व्यक्ति को अधिक से अधिक तीन वर्ष का सेवा का अवसर दिया जाय। जो उसने अपना कर्त्तव्य दिखाना है, वह तीन साल में कर दिखाये। फिर दूसरे को अवसर मिले। एक व्यक्ति एक समय में एक ही पद पर रह सकता है। उसे ईमानदारी व लगन के साथ एक पद पर ही रहकर सेवा करनी होगी। इस नियम को सख्ती से पालन करने पर आर्यसमाज आगे बढ़ सकता है। नये लोग जुड़ सकते हैं। दूसरों पर प्रभाव पड़ सकता है। स्वार्थी सुविधाभोगी तिकड़मी व्यक्ति अपने आप दूर हो जायेंगे। इसके लिए आर्यजनता को सजग ईमानदार व ऋषि की भावना से ओत-प्रोत होना पड़ेगा। नये अधिकारी, कार्यकर्त्ता और सदस्य खूब मिलेंगे। धरती पर अच्छे लोगों का अभी अभाव नहीं हुआ है। जरा करके देखो तो सही, बात बनेगी। नये लोग जुड़ेंगे।

३. ऋषि के प्रति आस्था

आर्यसमाज में कई धड़े, वर्ग, टोले आदि बन रहे हैं। संन्यासी, विद्वान्, पुरोहित तथा वक्ता भी बट रहे हैं। ये अमुक वर्ग का वक्ता संन्यासी है। ये अमुक धड़े में जुड़ा हुआ है। इसको बुलाना है, उसको नहीं बुलाना है। उसको ऊपर बिठाना है, उसको नीचे रखना है। दयानन्द बंट रहा है, दयानन्द व्यापार बन रहा है। दयानन्द और आर्यसमाज को लोग अपने स्वार्थलाभ और महत्त्व के लिए प्रयोग करने लगे हैं। आर्यसमाज में तेजी से आश्रम, गद्दी, संस्थान, संगठन, सभाएं आदि बन रही हैं। पौराणिकों की तरह गद्दी की पूजा, मेले तथा अपने-अपने गुरुओं के स्थानों की पूजा होने लगी है। सभी अपने-अपने आश्रमों व संस्थाओं का रास्ता दिखा रहे हैं। कोई आर्यसमाज तथा दयानन्द का रास्ता दिखाकर राजी नहीं है। कोई हिमाचल, कोई जम्मू, कोई उत्तरकाशी, कोई हिमालय बुला रहा है। इससे आर्यसमाज का धनबल और जनबल दोनों बट रहे हैं। हर कोई अपने-अपने चेले-चेलियां बनाने में लगा हुआ है। इससे आर्यसमाज में पुजापा, चढ़ावा, प्रदर्शन और पौराणिकता बढ़ रही है। ऋषि ने जिन बातों का विरोध किया था, हम वही करने लगे हैं। हमारे घरों में मूर्तिपूजा तेजी से फैल रही है। हम देख रहे हैं। सिद्धांतों में समझौता नहीं होता है। जब तक हम पूर्ण निष्ठा, श्रद्धा व विश्वास के साथ गुरुवर देव दयानन्द को अपना गुरु, मार्गदर्शक तथा प्रेरक न मानेंगे तब तक आर्यसमाज व संगठन शक्तिशाली व प्रभावशाली न बन सकेगा। श्री देव दयानन्द को श्रद्धा, वरीयता, उच्चता आदि प्रस्त होनी चाहिए थी वह हम नहीं दे पा रहे हैं। इसीलिए बिखर रहे हैं। आर्यसमाज पिछड़ रहा है।

४. संस्थाओं समाज मन्दिरों की पवित्रता पर बल

आर्यसमाज के मन्दिरों व संस्थाओं में जो पवित्रता, धार्मिकता, आस्तिकता व प्रभावपूर्णता होनी चाहिए उसका अभाव होता जारहा है। हमारे सत्संगों में सरसता प्रभावपूर्णता, संगीत, भक्तिभावना आदि की कमी होरही है इसमें सुधार व आचारसंहिता की नितान्त आवश्यकता है। क्या अधिकारी व सदस्यगण यह व्रत लेने के लिए तैयार हैं कि हम अपने सत्संगों, यज्ञों, उत्सवों व अन्य कार्यक्रमों में पेंट पहनकर नहीं आयेंगे। इतने से भी बहुत कुछ बात बन जाएगी। जो देखेगा उस पर प्रभाव पड़ेगा। ये आर्यसमाज के कार्यक्रम से आरहे हैं या जारहे हैं। मन्दिरों को धार्मिकता व भक्तिभावना से जोड़ना होगा। जो भी सत्संग मे आए कुछ उनके अन्दर धार्मिकता, आस्तिकता व प्रभुभक्ति की भावना जागृत हो। कुछ करने से बात बनेगी। मन्दिरों को मन्दिर बनाकर रखो व्यापार का केन्द्र मत बनाओ।

यदि हम उक्त बातों पर आचरण करें, उनका पालन करें। निश्चय ही आर्यसमाज आगे बढ़ेगा। उसकी उपयोगिता, सार्थकता, व्यावहारिकता असंदिग्ध है। आर्यसमाज की विचारधारा की आज बहुत आवश्यकता है।

शान्ति चाहते हो तो तृष्णा को जीतो

(गतांक से आगे)

शतपथब्राह्मण में एक आख्यायिका आती है—एक समय किसी धनी पुरुष ने देवों तथा असुरों को अपने यहां निमन्त्रण पर बुलाया। पहले देवों को भोजन परोसा जाता था जब देव खा चुकते थे तब असुरों का नम्बर आता था। इस बार असुरों ने उस धनी पुरुष से यह शर्त रखी कि हम इस प्रकार अपमानित होकर भोजन नहीं करना चाहते। हर बार देवों को पहले भोजन मिलता है हम क्या उनसे विद्या, बुद्धि, बल में कम हैं। अतः पहले भोजन हमें मिलना चाहिए। धनी ने कहा अच्छा पहले पीछे की बात छोड़ो दोनों को एक साथ भोजन दे दूंगे किन्तु शर्त यह है कि सबकी कोहनियों को बांध दिया जाएगा। असुरों ने शर्त स्वीकार कर ली। फिर क्या था। एक पंक्ति में देवों को बिठा दिया गया और दूसरी में असुरों को। देवों ने एक दूसरे के सामने बैठने की शर्त सहित असुरों के साथ भोजन करना स्वीकार किया था अतः एक ही पंक्ति में वह आमने-सामने होकर बैठ गये असुर अलग-अलग। दोनों की कुहनियों पर पट्टी रखकर कसकर बांध दिया गया जिससे उनकी बाहें न मुड़ सकें और सुस्वादु विभिन्न व्यंजन दोनों के समक्ष परोसकर भोजन करने का निवेदन किया गया।

असुर बड़ी उलझन में पड़ गये गुलाब जामुन, बालूशाही, पेड़ा जो भी उठाया जाय वह मुंह में पहुंचने के बजाय सिर से भी ऊपर निकल गया क्योंकि बांह तो मुड़ नहीं सकती थी किन्तु देवों को कुछ भी कठिनाई नहीं हुई। बांह बिना मोड़े अपने हाथ से भोजन उठाकर अपने सामनेवाले पड़ोसी के मुख में देना प्रारम्भ कर दिया और इस प्रकार एक दूसरे की सहायता से भरपेट भोजन कर रसास्वादन किया जबकि असुरों को भूखा ही उठना पड़ा।

बस यह पड़ोसी के मुख में भोजन देने से प्राप्त होनेवाला आध्यात्मिक सुख ही कंगाली को दूर करने का एकमात्र साधन है। आलस्य श्रम की टांग तोड़ देता है और तृष्णा त्याग की। असुर लोग अपने-अपने मुख में भोजन करते हैं देव एक दूसरे के मुख में बस इसीलिए देव बनने की आवश्यकता है। आज आलस्य को दूर करने की महिमा तो खूब गाई जारही है अनेक योजनाएं बन रही हैं किन्तु तृष्णा को ऊंचे स्तर high standard of living का नाम दिया जारहा है। इसलिए तृष्णा की वृद्धि से धन की वृद्धि और धन की वृद्धि से हाय कंगाली का क्रन्दन बढ़ता जारहा है इसलिए अनैतिकता बढ़ती आरही है। जब तक तृष्णा के स्थान पर त्याग की यज्ञमय, दानमय जीवन की प्रतिष्ठा नहीं की जाती तब तक अनैतिकता को कम या समाप्त नहीं किया जा सकता।

दान हृदय की उदारतारूप वृत्ति का प्रकाश है। जो मनुष्य दुर्बल दीन-दुःखी जन को अन्न प्रदान नहीं करता, आगे खड़े को, घर आये को देखकर मन कड़ा कर लेता है, अपने काम धन्धे में मग्न रहता है ऐसे कठोर अन्तःकरण के मनुष्य को सुख नहीं प्राप्त होता।

भौतिक सुख सामग्री को तुच्छ समझना ही तृष्णा को जीतने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है। तृष्णा विजय पर ही सुख-शांति निर्भर है। केवल भौतिक सामग्री का प्रचुर उत्पादन कंगाली को दूर नहीं कर सकता। हां उत्पादन तो अवश्य बढ़ाया जाय किन्तु तृष्णा विजय की साधना भी साथ ही साथ हो। ये ही दो पैर हैं जिनके आधार पर समाज सुख शांति की ओर अग्रसर हो सकता है।

अतः यदि देश से अनैतिकता को दूर भगाना है और सच्ची सुख-शांति प्राप्त करनी है तो यह तथ्य समझना होगा कि रोग पेट में नहीं नाक में है। नाक का अर्थ है तृष्णा। पेट भरो नाक छोटी करो। पेट भरने के पश्चात् जो बचे उसे नाक लम्बी करने में मत लगाओ। उसे मानव समाज की निष्काम सेवा से उत्पन्न होनेवाले आध्यात्मिक आनन्द की प्राप्ति में लगाओ। अन्यथा सारी योजनाएं और आंदोलन लगड़े ही रहेंगे। चरित्रवान् मानव निर्माण की योजना बनाओ। चरित्रवान् मानव निर्माण का एक ही साधन है—आध्यात्मिक आनन्द द्वारा तृष्णा पर विजय। पेट भरो। नाक सिकोड़ो। तृष्णा को जीतो आत्मा का ऐक्य स्थापित होगा, अंगड़ापन दूर होगा दोनों पैर एक साथ प्रगति की ओर अग्रसर होंगे और दोनों के सहारे संसार में सुख-शान्ति मिल सकेगी।

तृष्णा जीतना ही शान्ति का मार्ग है। सुख और शान्ति एक नहीं हैं। सुख का आधार शरीर है जबकि शांति का आधार मन और बुद्धि तथा आनन्द और परमानन्द का आधार एकमात्र आत्मा है। जब तक नाक ऊंची करने के लिए तृष्णा को नहीं जीता जाएगा मन में शांति नहीं होगी और मन में शांति नहीं होगी तो आत्मा में आनन्द भी नहीं होगा। मन के असन्तुष्ट अशांत रहने पर इन्द्रियों की सन्तुष्टि असम्भव है फिर सुख और शांति कहां से मिलेगी? अतः तृष्णा को जीतकर मन को शांत करने का प्रयास करो इन्द्रियां भी शांत हो जाएंगी सन्तुष्ट होंगी और रथ बेकाबू नहीं होगा तब वास्तविक सुख-शांति और आनन्द की अनुभूति होगी।

विश्वशांति का महत्त्वपूर्ण आधार वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना है। जब सब में एक ही चैतन्य सत्ता विद्यमान है तब आपस में द्वेष एवं घृणा क्यों? पारस्परिक सहयोग के बिना सबका अस्तित्व खतरे में है। मनुष्य की वर्तमान दुर्दशा का कारण आर्थिक राजनैतिक भौतिक नहीं बल्कि हृदय की संकीर्णता है जो मात्र तृष्णा के कारण है। इसी से नैतिकता का अभाव होगया है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त विषमता को जन्म देता है। मानवीय अन्तःकरण में नैतिकता का उदय तृष्णा विजय पर ही सम्भव है। तृष्णा का त्याग उदारता लावेगा किन्तु त्याग कहने की वस्तु नहीं है वह तो आचरण की वस्तु है। जो तृष्णा को जीत लेगा वह त्याग को भी प्राप्त कर लेगा। देशभक्ति बिना त्याग के सम्भव नहीं, मनुष्य का अपना स्वरूप त्याग से ही निखरता है, त्याग की कितनी शक्ति है—महाराज वीरसेन अपनी राज्यसभा में बैठे थे। राज्य की विभिन्न समस्याओं पर विचारविमर्श होरहा था। उसी विचारविमर्श के बीच वीरसेन ने अपने मन्त्री से पूछा—'शांतिदेव का कुछ पता लगा?' नहीं। बहुत प्रयत्न करने पर भी हम उनका पता नहीं लगा सके। हम इसके लिए लज्जित हैं, महाराज! मन्त्री ने उत्तर दिया। उन्हें बन्दी बनाकर लानेवाले के लिए पांच हजार मुद्राओं का पुरस्कार भी घोषित कर दिया गया है एक दूसरे सभासद ने कहा। एक तीसरे सभासद ने चाटुकारिता दिखाते हुए कहा—उन्हें हम शीघ्र ही बन्दी बनाने में सफल होंगे। एक अन्य सदस्य कहने लगा—वे कहां किस वेश और स्थिति में हैं इसका अभी हमें कोई अनुमान नहीं लगा है। वह जीवित हैं या नहीं वह भी नहीं कहा जा सकता।

महाराज वीरसेन गम्भीर थे। ऐसा प्रतीत होता था कि इन सबके उत्तर से उन्हें तनिक भी सन्तोष न था। उनकी गम्भीरता को देखकर सभा में सन्नाटा छा गया। वातावरण की नीरवता को भंग करते हुए महाराज ने कहा—'मैं एक सप्ताह का समय और देता हूं। इस अवधि में महाराज शांतिदेव का पता लगा ही लिया जाना चाहिए।'

× × ×

वीरसेन विशाल साम्राज्य के स्वामी थे। उनकी वीरता पराक्रम और पुरुषार्थ की कीर्ति दूर-दूर तक फैली हुई थी। शांतिदेव उन्हीं के अधीनस्थ एक राज्य के राजा थे। उनकी उदारता, सेवाभावना और क्षमाशीलता की चर्चा लोक कथाओं के रूप में होने लगी थी। दीन-दुखियों की सहायता ही उनके जीवन का लक्ष्य था। न धन से मोह न पद की इच्छा चिन्ता। राज्य कोष का धन प्रजा के हित में लगाने में तनिक भी नहीं हिचकते। वे वस्तुतः अपनी प्रजा के हृदय सम्राट् थे। उनकी कीर्ति के प्रति ईर्ष्यालु प्रतिस्पर्धियों ने महाराज वीरसेन से शिकायत की—दान दक्षिणा का बहाना बनाकर शांतिदेव सारा धन आमोद-प्रमोद में लुटा रहे हैं। उनके इन कामों पर प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिए।

(हितोपदेशक से साभार)

(क्रमशः)

युगप्रवर्तक ऋषि दयानन्द

ऋषि दयानन्द की अनेक घटनाओं के बोधपर्व एक प्रमुख स्थान रखता है जिसको हर वर्ष हम उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हैं। आज हम उस महान् ऋषि, महान् युगप्रवर्तक का बोध दिवस मना रहे हैं जिसका इस धरती पर अन्धकार को दूर करने के लिए उदय हुआ। जिसके ज्ञान के तर्क से अन्धविश्वासों का अंधेरा दूर होगया तथा वह प्रकाश देश-देशांतरों में फैल गया। आज हम दृष्टिपात करें तो ऐसा कोई धर्म नहीं जो ऋषि दयानन्द की विचारधारा से प्रभावित न हुआ हो। यह कटु सत्य है कि जब तक मानव जाति रहेगी ऋषिवर का नाम इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा रहेगा।

आधुनिकयुग में महात्मा गांधी को प्रथम श्रेणी में रखते हैं जिनकी आज हम १२५वीं जयन्ती मना रहे हैं इसलिए उन्हें हम युगनिर्माता भी कहते हैं।

स्वामी जी के कार्यों का यदि मूल्यांकन करें तो देखें कि उस समय की परिस्थितियों में उस महान् ऋषि का प्रादुर्भाव हुआ जब भारत की दशा दयनीय थी, हम गुलाम थे, अंग्रेजों का प्रसार था। उस समय अंग्रेजी की शिक्षा देकर राजाराममोहनराय, केशवचन्द्र सेन को सम्मान दिया गया जिन्होंने ब्रह्मसमाज, देवसमाज और प्रार्थनासमाज जैसी संस्थाएं खोली। उस समय लोग धीरे-धीरे ईसाई बनते जारहे थे, हिन्दू जाति में अन्धविश्वास, मूर्तिपूजा नाना प्रकार की अन्ध कुरीतियां व्याप्त थीं। लोग वेदशास्त्र, दर्शन, उपनिषद् आदि को भूल गये थे। ऐसे समय मे उस महान् पुरुष ने आज से लगभग १६१ वर्ष पहले टंकारा में जन्म लिया। यहां समय-समय पर धर्मरक्षक आते रहे हैं लेकिन अभी तक जो महान् आत्माएं इस भूमि पर आईं उनकी शिक्षा कर्ममूलक नहीं थी वह केवल शिक्षा ज्ञानमूलक व भक्तिमूलक रही। इसलिए उनकी सोच एक सीमा तक कल्याणकारी रही। मेरे ऋषिदेव दयानन्द प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने भारत की अवनति के सारे कारणों का गहन अध्ययन किया वह भारत की स्वाधीनता का सार्वजनिकरूप से आह्वान करनेवाले प्रथम थे। तिलक, गोखले, गांधी, स्वामी श्रद्धानन्द आदि नेताओं को मूलप्रेरणा ऋषि से ही प्राप्त हुई।

हिन्दुओं की मूर्तिपूजा के खण्डन के कारण तत्कालीन हिन्दूसमाज उनके विरुद्ध था। शुद्धि के कारण तथा कुरान आदि बारे अर्थात् कहने से मुसलमान भी रुष्ट रहे वैसे सर सैयद अहमद खां स्वामी जी से प्रभावित रहे, यह अपवाद था। राजनीति चेतना के कारण अंग्रेज भी विरुद्ध होगये। उस समय की विषम परिस्थितियां किसी भी नेता के सामने पैदा नहीं हुईं। सभी उनके शत्रु थे समर्थन करनेवाला नहीं था। लेकिन उन्हें एक समर्थन प्राप्त था, वह था उस "सर्वशक्तिमान्" का, प्रभु की कृपा उन पर थी इसलिए वह निडर थे।

भारतीयों की निर्धनता देखकर वह द्रवित हो जाते थे। एक बार ऋषि गंगा के किनारे बैठे थे उन्होंने देखा कि एक मां अपने मरे हुए बच्चे को गंगा में बहाने से पूर्व उसके कफन को उतारकर ले जारही है देखकर रो पड़े कि भारत की यह दशा जो सोने की चिड़िया कहलाता था। उन्होंने देश की दशा को सुधारने का यत्न किया।

स्वामी जी के जीवन का महान् कार्य था कि ज्ञान और कर्म का सामंजस्य हो और उन्होंने प्रयास किया तथा सफलता मिली।

उन्होंने अपने उपदेशों में उपासना, ज्ञान और कर्म तीनों को अपने जीवन का अंग बनाया। सभी शास्त्रों में कहा है कि कर्म के बिना ज्ञान भारस्वरूप है और ज्ञान के बिना कर्म बन्धन है। वैसे ज्ञान का महत्त्व सर्वोपरि है। लेकिन ज्ञान ही हमें कर्तव्य का बोध कराता है। वास्तव में आज तक संसार में जो भी कुछ अनर्थ हुआ वह ज्ञान व कर्म का मेल न होने से हुआ। ज्ञान के बिना कर्म पाप है और कर्म के बिना ज्ञान पाप का कारण बनता है इसलिए ऋषि ने वेदों में कर्म पक्ष को प्रधानता दी।

जब तक संसार में वैदिकधर्म रहेगा, मानवता रहेगी तब तक मर्यादापुरुषोत्तम राम, योगिराज कृष्ण, जगद्गुरु शंकराचार्य तथा महर्षि दयानन्द का नाम सूर्य की भांति चमकता रहेगा। ऋषि ने हिन्दूसमाज के लिए जो कुछ किया उससे यह हिन्दूसमाज कभी भी उऋण नहीं हो सकता।

आइये आज हम सब उस महान् युगद्रष्टा, युगप्रवर्तक, समाज-सुधारक, क्रांतिकारी के बोध दिवस पर प्रण लेवें कि हमें भी बोध हो तथा आपसी झगड़े, पार्टीबाद, जातिवाद आदि से ऊपर उठकर कार्य करेंगे। आज ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है जो पुनः संगठन में गति ला सकें और त्यागभावना से ऋषि के सिपाही बनकर आर्यसमाज की वाटिका को सींचें तथा प्रचार-प्रसार में जुट जाएं।

—वेदमित्र हापुड़वाले
महामन्त्री महर्षि दयानन्द स्मारक समिति, अम्बाला कैंट

शास्त्रार्थ का निर्णय

१४ नवम्बर, १९९४ को अजमेर में सम्पन्न शास्त्रार्थ का निर्णय निम्न दो बातों के आधार पर होता है। ये दोनों बातें दोनों पक्षों ने शास्त्रार्थ से पूर्व स्वीकार की हैं। मेरे पास उनकी लिखित स्वीकृति या प्रतिज्ञा है।

(१) हस्तलेख विशेषज्ञ की आख्या। १४ नवम्बर १९९४ को शास्त्रार्थ से पूर्व नियम ११ के हस्तलेख को पाण्डुलिपियों का निर्णय हुआ है जो महर्षि के अपने हाथ की है। उन्हें हस्तलेख विशेषज्ञ के पास भेजकर यह आख्या लेनी है कि "अयुन्त इध्म०" के समिदाधान सम्बन्धी पाण्डुलिपि की मूलप्रति का पृष्ठ और प्रेसकापी का पृष्ठ पर जो संशोधन हैं, वे महर्षि दयानन्द के हाथ के हैं या नहीं। यह कार्य होरहा है। आख्या की प्रतीक्षा है।

(२) शास्त्रार्थ में उपस्थित सभी विद्वानों की सम्मतियां मैंने उपस्थित सभी विद्वानों को पत्र भेज दिए हैं कि वे अपनी-अपनी सम्मतियां भेजें। अब इस समाचारपत्र के माध्यम से पुनः निवेदन कर रहा हूं कि अपनी-अपनी सम्मति—अर्थात् शास्त्रार्थ कैसा रहा और प्रक्षेप सिद्ध हो सका या नहीं। मुझे यथाशीघ्र भेजने का कष्ट करें ताकि निर्णय घोषित किया जा सके।

— आचार्य धर्मवीर विद्यालंकार, संयोजक शास्त्रार्थ

दिल्ली प्रदेश में भी शराबबन्दी की मांग

दिनांक २९-१-९५ रविवार को दोपहर १ बजे आर्यसमाज नरेला (दिल्ली) की ओर से जाट धर्मशाला में एक सर्वदलीय जनसभा श्री लायकराम जी प्रधान आर्यसमाज की प्रधानता में सम्पन्न हुई, जिसमें नरेले की लगभग सभी संस्थाओं के लोगों ने भाग लिया और इस क्षेत्र की नुमाइन्दगी करनेवाले सांसद श्री बी० एल० शर्मा प्रेम तथा श्री इन्द्रराजसिंह जी विधायक के अतिरिक्त श्री भीमसेन जी शर्मा प्रधान ब्लाक कांग्रेस, श्री महेन्द्रसिंह जी खत्री, पं० मोहन भारद्वाज व राजेन्द्र जी सिंगल आदि अनेक नेताओं ने अपने विचार व्यक्त किए और सभा ने सर्वसम्मति से चार प्रस्ताव पास कर भारत सरकार और दिल्ली सरकार से मांग की कि—

(१) दिल्ली में पूर्ण नशाबन्दी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के १२५वें जन्म दिवस पर लागू की जावे और नरेले में शराब की दुकान लाने का घोर विरोध करते हैं।

(२) अण्डे और मांस की बिना लाईसन्स के खुली बिक्री पर रोक लगे।

(३) दूरदर्शन के भद्दे गन्दे और नंगे दृश्य हटाए जावें।

(४) देश में व्याप्त भ्रष्टाचार को देशरक्षार्थ तत्काल समाप्त किया जावे।

मा० पूर्णसिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज
नरेला, दिल्ली

स्वामी समर्पणानन्द जन्मशती समारोह

दिनांक १०-११-१२ मार्च १९९५ समारोहपूर्वक जीमखाना मैदान, मेरठ में मनाया जारहा है। १० तथा ११ स्थान—जीमखाना मैदान, मेरठ, १२ मार्च, १९९५ स्थान गुरुकुल भूमि समर्पणानन्द शोध संस्थान के अन्तर्गत वेद संगोष्ठी ९ मार्च, १९९५। इस अवसर पर चतुर्वेद पारायण महायज्ञ, कवि सम्मेलन, मद्यनिषेध सम्मेलन, सन्त-वर्णाश्रम सम्मेलन, मातृशक्ति सम्मेलन, स्नातक सम्मेलन, योगशिविर, निःशुल्क चिकित्सा शिविर, गोरक्षा सम्मेलन, संस्कृत वेद सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर बाहर से महान् संन्यासी विद्वान्, आर्यनेता, महोपदेशक एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

(पृष्ठ १ का शेष)

प्रचार करे। नगरों से लेखराम की राह पर अड़ने मरनेवाले पैदा नहीं होंगे परन्तु महाशोक ! कि कुछ लोग आर्यसमाज में जाट व कृषक का नाम तक नहीं सुन सकते। मैं रहस्य उद्घाटन इस समय नहीं करता। कभी कटु सत्य सब लिखूंगा। जातिवाद जाट में हो चाहे खत्री में—विषतुल्य ही है।

पं० लेखराम में बड़ा आत्मबल था। महात्मा मुन्शीराम जो भी उनकी डाट सुनकर अपने को सौभाग्यशाली समझते थे। ला० देवराज व रामबिलास शारदा भी गौरव से सुनाया करते थे कि हमें पण्डित जी ने कभी झाड़ पिलाई थी। वे नेता भी महान् थे जो अपने विद्वान् मनीषी का इतना सत्कार करते थे। आज नेता यह चाहते हैं कि संन्यासी विद्वान् हमें आकर मिलें। मेरे सामने एक लीडर ने आचार्य विशुद्धानन्द जी के पास नयाबांस देहली में अपना दूत भेजा कि आपसे मिलना चाहता हूं, आकर मिल जावें। विशुद्धानन्द जी ने कहा—मुझे तो कोई काम नहीं। कोई काम होता तो मिलने चला आता।" वाह रे नेता जी !

एक मुसलमान विद्वान् मौलाना अब्दुल्ला ने अपने एक ग्रन्थ में पण्डित जी के लिए कोहे वकार (गौरवगिरि—तेजस्विता, धीरता का पर्वत) विशेषण का प्रयोग किया है। सारे इस्लामी साहित्य मे इस विशेषण का प्रयोग केवल एक ही मुस्लिम नेता के लिए किया गया है और वे थे सर सैय्यद अहमद खां।

इसी मौलाना ने पण्डित लेखराम जी के हत्यारे को शैतान की संज्ञा दी है। उसे कायर व छलिया लिखा है। ईसाई मत के प्रसिद्ध पत्र नूर अफशां ने तो पण्डित जी की मौलिक व अद्भुत सूझ की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। उसने पण्डित जी की एक मौलिक युक्ति के लिए लिखा है कि हमने इस विषय में किसी ईसाई पादरी व किसी और विद्वान् से कभी ऐसी प्रबलयुक्ति न पढ़ी और न सुनी।

पण्डित जी के हत्यारे ने डी० ए० वी० कालेज के प्रिंसिपल श्री महात्मा हंसराज जी से भी शुद्ध करने को कहा था। महात्मा जी ने लिखा है मैंने तो उसे शुद्ध करने व पास रखने से ना करदी परन्तु पण्डित लेखराम तो हानि-लाभ का लेखा-जोखा किए बिना ही निडरता-पूर्वक धर्म सेवा किया करते थे।

मिर्जा गुलाम अहमद हेरफेर करने, नई-नई कहानियां घड़ने में सिद्धहस्त थे। उनके पुत्र ने कहा है कि मेरे बाप ने पं० लेखराम को कई बार अपनी युक्तियों से कायल (मनवा लिया) परन्तु वह सन्मार्ग पर न आया। मिर्जा गुलाम अहमद ने स्वयं लिखा है कि पं० लेखराम लाहौर में मस्जिद में मुझे मिलने आये। नमस्ते करके सत्य असत्य का निर्णय करना चाहा, परन्तु मैंने नमाज के (नमाज का बहाना बढ़िया होता है) कारण बात न की। कादियां के हिन्दुओ ने उसे मेरी बात सुनने ही न दी। बाप झूठा है या बेटा ? निर्णय मिर्जाई स्वयं करलें।

मिर्जा ने कहीं पं० लेखराम की हत्या तलवार से, कहीं छुरी से लिखी है। पुत्र ने लिखा है फरिश्ते ने खंजर से पण्डित जी की हत्या की। अब मिर्जाई जानें कि इलहाम देनेवाला अल्लाह मियां झूठा है या खलीफा साहेब झूठ बोल रहे हैं। मेरा मिर्जाई जमात के Head मुखिया मिर्जा वसीम अहमद (नबी का पोता) को शास्त्रार्थ का खुला चैलेंज है कि वह पं० लेखराम जी के बलिदान पर जब चाहे मुझसे शास्त्रार्थ करले। मिर्जा के एतद्विषयक सब इलहाम मिथ्या सिद्ध करूंगा। पं० लेखराम सच्चे ईश्वर पुत्र थे। हमें उनके बलिदान पर अभिमान है।

पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी तह० पलवल जिला फरीदाबाद (हरयाणा) के ३, ४, ५ मार्च, १९९५ को होनेवाले ५८वें वार्षिकोत्सव पर पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है।

यह प्रशिक्षण शिविर २५ फरवरी से ५ मार्च, ९५ तक चलेगा। उसमें १६ सस्कार कराने का प्रशिक्षण डा० धर्मदेव शर्मा एम० ए० पी० एच० डी० के माध्यम से दिया जायेगा।

प्रशिक्षण इच्छुक अपने साथ संस्कारविधि १ पैन, १ कापी तथा बिस्तर लेकर आयें। कोई भी साक्षर व्यक्ति इस प्रशिक्षण में भाग ले सकता है। अन्तिम दिन दो रंग का प्रमाणपत्र भी संस्था की ओर से दिया जायेगा।

—तेज तेवतिया, मुख्याधिष्ठाता (मैनेजर)
श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ
गदपुरी (फरीदाबाद)

आर्यसमाज मन्दिर में नवनिर्मित भवन का उद्घाटन

२२ जनवरी, ९५ रविवार को प्रातः ११ बजे आर्यसमाज मन्दिर नारायणगढ़ मे विशालयज्ञ के पश्चात् नवनिर्मित दो बड़े कमरे ३०×२० प्रत्येक का उद्घाटन श्री रामस्वरूप गुप्त पूर्व प्राचार्य के द्वारा किया गया। यह भवन श्री गुप्त जी के चार सुपुत्रों सर्वश्री कर्नल सतप्रकाश, वेदप्रकाश उद्योगपति, डा० सुभाष तथा सुरेश (व्यापारी द्वारा प्रदत्त धन से उनकी स्वर्गीय माता श्रीमती लक्ष्मीदेवी की स्मृति में बनवाया गया। उद्घाटन के पश्चात् प्रीतिभोज का आयोजन किया गया जिसमें क्षेत्र के सभी आर्यसमाजों के प्रतिनिधि भी शामिल हुए। आर्यसमाज के प्रधान श्री चौधरी राम जी ने आर्यसमाज की ओर से परिवार के लोगों को सत्यार्थप्रकाश, स्वामी जी का जीवन चरित तथा स्मृति चिह्न भेंट किए गए।

—रामनिरंजन मन्त्री

(पृष्ठ ३ का शेष)

विक्रमी की शिवरात्रि को बालक मूलशंकर (दयानन्द) को चूहे की छोटी-सी घटना ने की जो भगवान् शिवजी अपने ही ऊपर पेशाब पाखाना (मिंगन) करनेवाले, चढ़ावे को खानेवाले, उछलकूद करनेवाले चूहे को नहीं हटा सकता वह सच्चा शिव कैसे हो सकता है, वह हमारी रक्षा कैसे कर सकता है, सोचने पर मजबूर कर दिया। इसी घटना से बालक मूलशंकर को महर्षि दयानन्द बनाने का सूत्रपात किया। इसी शिवरात्रि ने दयानन्द को बोध प्रदान किया। आर्यसमाज के इतिहास मे शिवरात्रि को इसीलिए बोधरात्रि कहते हैं। जिस मूर्तिपूजा की जड़ों को सोमनाथ मन्दिर के लुटेरे महमूद गजनवी का खड्ग, औरगजेब का अत्याचार अपने बल से न हिला सका था उसको महर्षि दयानन्द के प्रबल तर्क तथा प्रचार ने मृदुतापूर्वक खोखला कर दिया। शिवरात्रि सबको प्रेरणा दे रही है ऐतिहासिक घटनाएं भी यह कह रही हैं कि प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्त्तव्य बनता है कि वह साधारण घटनाओं को भी अन्तर्दृष्टि से अवलोकन करने का अभ्यासी बने और अपने स्वीकृत व्रत को प्राणपण से पालता रहे यह शिवरात्रि पर्व प्रत्येक के लिए बोधरात्रि बनकर लाभदायक सिद्ध हो।

वैदिक यतिमण्डल के साधुओं की राजस्थान में प्रचार यात्रा

जयपुर। आर्यजगत् के शिरोमणि संन्यासी वैदिक यतिमण्डल के अध्यक्ष श्रद्धेय श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के सान्निध्य में दिनांक ३ मार्च से १८ मार्च तक राजस्थान में एक वाहनयात्रा का आयोजन किया गया है।

यह यात्रा जयपुर से ३ मार्च को प्रारम्भ होकर चूरु, नागौर, जोधपुर, सिरोही, जालौर, पाली व अजमेर जिले से होती हुई वापिस जयपुर में समाप्त होगी। इस यात्रा में स्वामी जी महाराज के साथ अन्य प्रमुख संन्यासियों में श्री स्वामी धर्मानन्द जी उड़ीसा, श्री स्वामी दिव्यानन्द जी ज्वालापुर, श्री स्वामी धर्मानन्द जी आबूपर्वत के अतिरिक्त लगभग बीस-पच्चीस अन्य संन्यासी, वानप्रस्थी व ब्रह्मचारी होंगे। सभा की दो भजनमण्डलियां यात्रा के साथ रहेंगी। इस यात्रा में न्यूनतम पांच वाहन होंगे। वाहनों में प्रचारसामग्री साहित्य आदि भी उपलब्ध होगा।

आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान के मन्त्री व वैदिक यतिमण्डल के सयुक्त मंत्री श्री सुमेधानन्द जी सरस्वती ने यतिमण्डल के सभी सदस्यों से अपील की है कि वे इस यात्रा में अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित हों। जो सज्जन इस यात्रा में सम्मिलित होना चाहते हैं वे दो मार्च की सायंकाल तक आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क (आर्यसमाज, आदर्शनगर), जयपुर पहुंचे।

उक्त यात्रा की व्यवस्था एवं प्रबंध आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान की ओर से किया गया है।

सभा का नया टेलीफोन नं० ४०७२२ अंकित करें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्तीभवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ७०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि॰ नं॰ १३२०/७३

७२२ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, ०९५

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक
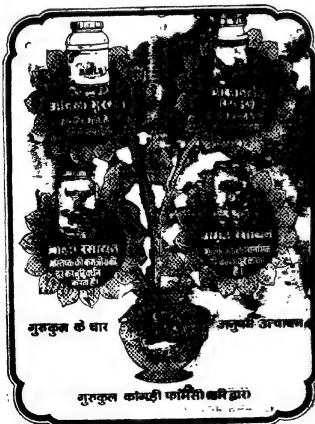
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम॰ए॰

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

वर्ष २२ अंक १५ ७ मार्च, १९९५ (वार्षिक शुल्क ५०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-००

आर्यसमाजों तथा आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से हरयाणा सरकार को ज्ञापन

हरयाणा प्रदेश में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की मांग

गत दस वर्षों से आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा प्रदेश में पूर्ण शराबबन्दी के लिए आंदोलन चला रही है। इस अवधि में सैकड़ों नहीं हजारों पंचायतों ने अपने ग्रामों में शराब की दुकानें बन्द करने के लिए प्रस्ताव पास किए हैं और उन प्रस्तावों पर सरकार को अमल करना पड़ा है, हालांकि कुछ ग्रामों से पंचायत के प्रस्ताव के रहते भी लंगड़े बहाने बनाकर ठेके नीलाम किए हैं। कुछ ग्रामों की जनता और पंचायतों को अदालत में भी जाना पड़ा और अदालतों ने ठेके बन्द करने के आदेश दिए। इसी कारण शायद सरकार को ऐलान करना पड़ा कि जहां पंचायत का प्रस्ताव समय पर मिलेगा, वहां ठेका नहीं रहेगा।

१—हमारी यह मांग है कि नई चुनी हुई पंचायतों को अवसर दिया जाना चाहिए ताकि वे प्रस्ताव पास करके गांव की जनता को इस बुराई से बचा सकें। जब सरकार कभी भी किसी गांव की पंचायत से दबाव देकर प्रस्ताव पास करवाने के बाद तुरन्त ठेका या उसकी शाखा खोल सकती है, तो ठेका बन्द करवाने के पंचायत के अधिकार पर समय की पाबन्दी क्यों ?

हरयाणा के मुख्यमन्त्री ने अपने वक्तव्य में कहा है कि १२१ ठेके जहां से यथासमय पंचायतों के प्रस्ताव आये बन्द कर दिये जायेंगे। साथ ही उन्होंने यह भी कहा है कि ठेकों की संख्या पहिले जितनी ही रहेगी। यह स्पष्ट है कि पंचायत के प्रस्ताव के बिना किसी भी गांव में ठेका नहीं खोला जा सकता, तो क्या सरकार प्रस्तावों के बिना या तुरन्त प्रस्ताव पास करवाकर ठेके खोलना चाहती है ? यदि ऐसा किया गया तो वह अवैध होगा। इसलिए हमारी मांग है कि ठेकों की नीलामी स्थगित कर दी जाये और पंचायतों को अपना निश्चित मत प्रकट करने का अवसर दिया जाये।

२—मुख्यमन्त्री के वक्तव्य के अनुसार पंचायतों को एक रुपया प्रति बोतल की जगह अब एक रुपया पचास पैसे दिए जायेंगे। हमारी मांग है कि पंचायतों को दी जानेवाली यह रिश्वत पूरी तरह बन्द की जाए।

३—शहरों के रेस्तरां में शराब की बिक्री बन्द करने का ऐलान करके सरकार शराब की बिक्री पर सीमित पाबन्दी लगाने का दावा करती है। परन्तु यह पूरी तरह भ्रामक है। क्योंकि शहरों में भी शराब के ठेके नीलाम किए जाएंगे और ३ (तीन) तारा तथा ५ (पांच) तारा होटलों में उनके अलावा शराबघर (बार) चलते रहेंगे तथा हर शहर में पर्यटन विभाग भी मधुशालाएं चलाते रहेंगे। सरकार ने बहाना विदेशी पर्यटकों का बनाया है। यदि यह सब कुछ विदेशी पर्यटकों के लिए किया गया है तो हम मांग करते हैं कि इन सभी शराबघरों से शराब केवल विदेशी पर्यटकों को दी जाए, अपने देशवासी और प्रदेशवासियों को नहीं।

४—अप्रैल १९९५ में उत्तर भारत के ८ प्रदेशों का आर्थिक संगठन बनने जा रहा है। उस संगठन का नाम होगा कन्कोर्ड (Concord) हरयाणा के मुख्यमन्त्री ने एक वक्तव्य में कहा था कि यदि हरयाणा के चारों ओर के राज्यों में शराबबन्दी होजाये तो वे भी अपने प्रदेश में शराबबन्दी तुरन्त कर देंगे। इस संगठन का कार्यक्षेत्र आठ प्रदेशों में विस्तरित होगा और हरयाणाप्रदेश सबके बीच में होगा उसके क्षेत्र के चारों ओर दूसरे प्रदेशों के क्षेत्र होंगे। किसी क्षेत्र का आर्थिक विकास और वृद्धि भी वहां की जनता के मानसिक संयम, गाम्भीर्य और संतुलन, शारीरिक स्वास्थ्य एवं आर्थिक साधनों के बुद्धिमत्ता से किए गए उपयोग पर निर्भर रहता है। शराब के चलन से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य तो बिगड़ता ही है, साथ ही कमाई करने की क्षमता में कमी आती है और उसका दुरुपयोग ऐसे पेय में लगाने में होता है जिससे किसी को कोई लाभ नही। इसलिए हमारी मांग है कि इस आर्थिक संगठन में आर्थिक विकास के कार्यक्रम में उस उद्देश्य में सहायक शराबबन्दी के मुद्दे को जोड़ लिया जाये और सभी प्रदेशों के साथ-साथ बल्कि सबसे पहले हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू की जाए। हम आशा करते हैं कि हरयाणा सरकार और उसके मुख्यमन्त्री अपने वचन का पालन करते हुए यह कदम शीघ्र उठायेंगे तथा अन्य पड़ोसी प्रदेशों को भी प्रेरणा देंगे।

५—अवैध जहरीली शराब को रोकना जनता के जीवन और स्वास्थ्य के लिए बहुत आवश्यक है। हम मांग करते हैं कि अवैध शराब के चलन का बहाना बनाकर वैध शराब पिलाते रहने की कुचेष्टा हरयाणा सरकार छोड़े और जानलेवा अवैध जहरीली शराब के सौदागरों को कड़ी से कड़ी सजा दे, जैसी उच्चतम न्यायालय ने केरल राज्य के एक गांव में जहरीली शराब के सौदागरों को सख्त सजा दी है और उन पर कोई रहम न करने का आदेश दिया। आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा अवैध शराब को समाप्त करने के लिए पूर्ण सहयोग देगी।

रोहतक जिला परिषद् के अध्यक्ष श्री आनन्दप्रकाश

श्री आनन्दप्रकाश जी न स्वयं शराब पीते हैं न दूसरों को पिलाते हैं। इन्होंने अपने चुनाव में किसी को शराब नही पिलाई। ये गांव दूबलधन के निवासी हैं। उन्होंने गाव दूबलधन में जो शराब का ठेका सरपंच राजेन्द्रसिंह ने खुलवा दिया था लेकिन श्री विजयकुमार जी संयोजक शराबबन्दी हरयाणा की प्रेरणा से शराबबन्दी प्रस्ताव पास कर रखा था उसकी लड़ाई आनन्दप्रकाश ने सब जज झज्जर, सेसन जज रोहतक से लड़ाई लड़ी, ट्रैक्टर भरकर गए। गर्मी, सर्दी की परवाह न करते हुए कार्य किया। आगे भी शराबबन्दी आंदोलन आदि के कार्यों में पीछे नही रहेंगे।

—प्रधान आर्यसमाज, दूबलधन

चम्बा दयानन्दमठ में एक वर्ष का गायत्री महायज्ञ

श्री स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती महाराज की यज्ञ के प्रति बहुत श्रद्धा है। क्योंकि यज्ञ लोक-परलोक कल्याण का बहुत बड़ा साधन है। यज्ञ का भाग सारे संसार को मिलता है। यज्ञ में डाली हुई आहुति का प्रभाव बहुत दूर तक होता है। अन्न, फल, फूल, मनुष्यों और पशुओं को सभी आहार की वस्तुओं पर यज्ञ का प्रभाव होता है। आहारीय सभी पदार्थों के दोष निर्मूल हो जाते हैं और विशेष गुण उनमें उत्पन्न हो जाते हैं। सूर्य भूमि से सभी द्रव्यों का रस खेंचता रहता है। जीव हितकारी और अहितकारी सभी द्रव्यों का सार सूर्य आकाश में वहां तक पहुंचा देता है जहां तक हवा और पानी का स्थान है। यज्ञ से निकली हुई रोगनाशक सुगन्ध को भी ऊपर आकाश में ले जाता है। वर्षा के समय जो भी सुगन्ध और दुर्गन्ध सूर्य द्वारा ऊपर गई है, वर्षा के पानी में मिलकर सब नीचे भूमि पर आती है। उस वर्षा के पानी में यज्ञ में डाले सभी पदार्थों के गुण भी साथ होते हैं।

मनुष्य और पशुओं के अनेक रोगों और अल्प आयु के कारण हैं वे सब दोष नष्ट होते हैं। मनुष्यों के मन, चिन्तन और विचारों में भी पवित्रता आती है। जैसे यज्ञ सभी के लिए हितकारी है इसी प्रकार मनुष्यों का मन भी "वसुधैव कुटुम्बकम्" इस प्रकार के विचारों का बनता है। मनुष्य सर्वहितकारी बातें सोचने लगता है। ईश्वर सारे संसार के लिए सुख-शान्ति चाहता है सब जीवमात्र के लिए। इसी प्रकार यज्ञ भी (सर्वहितकारी) संसारमात्र का हित करता है। इस प्रकार इन सब बातों से पता लगता है कि सबसे बड़ा पुण्यकार्य है। वैदिकधर्म का उपदेश आदि सृष्टि में ईश्वर ने किया है चार ऋषियों के द्वारा। धर्म को यदि एक शब्द से बताया जाये या कहा जाये तो वह केवल 'यज्ञ' शब्द ही है। यज्ञ से संसार का बहुत बड़ा उपकार होता है और यज्ञकर्ता आहुति डालकर कहता है—"इदन्न मम" यह मेरे लिए नहीं यह सारे संसार के लिए है। इस प्रकार यज्ञ एक निष्काम कर्म है। इससे बड़ा निष्काम कर्म और कौनसा हो सकता है। निष्काम कर्मों का फल ही मुक्ति है।

गत १३ अप्रैल, १९९४ वैशाखी से लोककल्याण सारे संसार की सुख की भावना से श्री स्वामी जी महाराज ने यह यज्ञ प्रारम्भ किया है जिसकी पूर्णाहुति १३ अप्रैल, १९९५ को होनी है। यज्ञ के उपकरण सामग्री, समिधा, घी आदि पर अब तक लगभग छह (६) लाख रुपए व्यय हो चुके हैं। इस पुण्यकार्य में दानी लोग बहुत उदारता से दान दे रहे हैं।

कुछ दानियों के नाम इस प्रकार है—

१) श्रीमती कमला आर्या	—६०,००० रुपये	
२) ,, वेदवती शर्मा, लन्दन	—४५,००० ,,	
३) श्रीमान् के० सी० आनन्द, चण्डीगढ	—२०,००० ,,	
४) श्रीमती पुष्पा मेहता, करतारपुर	—१६,००० ,,	
५) ,, दया कपूर, लन्दन	—१७,००० ,,	
६) श्रीमान् रामनाथ दुग्गल, अमृतसर	—२१,००० ,,	
७) ,, इन्द्र गौतम	—१४,००० ,,	
८) श्रीमती पुष्पा नैय्यर, चण्डीगढ़	—१४,००० ,,	इत्यादि।

दयानन्दमठ कमेटी के सदस्य अन्य नगर के नरनारी जुलाहकड़ी मोहल्ले की देवियां तथा पुरुष निरन्तर सहयोग दे रहे हैं और प्रतिदिन यज्ञ में सम्मिलित होते हैं। यज्ञ के प्रति लोगों में बहुत श्रद्धा है।

मठ में सेवा के अन्य भी कई कार्य होरहे हैं। निःशुल्क धर्मार्थ औषधालय, आयुर्वेद फार्मेसी, संस्कृत विद्यालय, दयानन्द आदर्श बाल विद्यालय, प्राकृतिक चिकित्सालय, प्रतिमास मठ में आई (नेत्र) कैम्प लगता है जिसमें गांवों के लोगों के ऑपरेशन होते हैं। सब रोगियों को भोजन व्यवस्था के साथ मठ में नि.शुल्क औषधियां भी दी जाती हैं।

इस प्रकार मनुष्यमात्र की सेवार्थ स्वामी जी महाराज के जीवन का एक-एक क्षण समर्पित है। ऐसे महात्मा ऐसे संन्यासी देश में बहुत से हों तो देश पर कोई दैवी आपत्ति नहीं आ सकती। विरोधियों के मन भी बदल जाते हैं।

यज्ञ पर व्यय—यज्ञ के लिए दान देनेवालों को दोहरा लाभ होता है। यज्ञ से प्राणिमात्र का कल्याण उससे पुण्य के भागी बनते हैं। उनका दिया हुआ दान धन, घी, समिधा, सामग्री आदि देनेवालों को मिल जाता है। इस प्रकार देनेवालों ने यज्ञ से लोककल्याण का पुण्य भी किया और वस्तु विक्रेताओं को कार्य और रुपया भी दिया। जो यह समझते हैं कि यज्ञ में घी, सामग्री आदि जलाकर धन नष्ट हो जाता है यह उनकी भूल है। रुपया तो वैसे का वैसा ही रह जाता है। एक से निकलकर दूसरे के पास चला जाता है और यज्ञ का लाभ पुण्य अलग है। रुपया कभी भी नष्ट नहीं होता। वह एक से चलकर दूसरे के पास पहुंच जाता है।

एक वर्ष तक चलनेवाले अभूतपूर्व यज्ञ की १३ अप्रैल, १९९५ को पूर्णाहुति समारोह पर आर्यसमाज के विद्वान्, संन्यासी, वानप्रस्थी तथा हिमाचलप्रदेश के राज्याधिकारी पहुंचेंगे। यह समारोह बहुत भव्य होगा। सभी देवियों, पुरुषों को इसमें पहुंचकर और महान् संन्यासी तपस्वी, त्यागी जिनका एक वर्ष का गायत्री यज्ञ का संकल्प है, जिन्होंने मठ से बाहर निकलने का द्वार एक वर्ष तक नहीं देखा उनका अमोघ आशीर्वाद प्राप्त कर पुण्यार्जन करें।

—स्वामी सर्वानन्द

आर्यसमाज के प्रदर्शन के साथ हुई शराब के ठेकों की नालामी

फरीदाबाद, २ मार्च। आज की नीलामी के दौरान आर्यप्रतिनिधि सभा व आर्यसमाज के पूर्व घोषित कार्यक्रम से सतर्क जिला प्रशासन ने आबकारी कराधान कार्यालय के समीप भारी पुलिस बन्दोबस्त किया हुआ था। आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रो० शेरसिंह ने गुरुकुल के विद्यार्थियों के साथ शराब विरोधी प्रदर्शन किया।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा ने जिला उपायुक्त फरीदाबाद के माध्यम से अपने ज्ञापनपत्र में हरयाणाप्रदेश सरकार के समक्ष पांच प्रमुख मांगे रखी हैं।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा प्रदेश में पूर्ण शराबबन्दी के लिए पिछले दस वर्षों से आंदोलन चला रही है। इस अवधि में हजारों ग्राम-पंचायतों ने अपने ग्रामों में शराब की दुकानें बन्द करने के लिए प्रस्ताव पास किए हैं और उन प्रस्तावों पर सरकार को अमल करना पड़ा है हालांकि कुछ गावों में पंचायत के पारित प्रस्तावों की भी अवहेलना की गई है।

सभा ने मांग की कि सरकार केवल उन्हीं गावों में शराब के ठेके खोले जहां की ग्राम पंचायत प्रस्ताव पारित कर सरकार से ये कहे कि हमारे गांव में ठेका खोला जाए।

सभा ने ग्राम पंचायतों को दी जानेवाले कथित 'सुविधा शुल्क' को बन्द करने की भी माग की है, जिसमें सरकार द्वारा ग्राम पंचायत को एक बोतल की बिक्री पर १–५० रुपया देने की घोषणा की है। सभा ने सरकार के इस दावे को भ्रामक बताते हुए कहा कि रेस्तरां में शराब की बिक्री बन्द करने का ऐलान करके सरकार ने लोगों को गुमराह करने की कोशिश की है।

सभा ने प्रदेश सरकार से अपील की है कि वह यह सुनिश्चित करे कि हरयाणा में भी शराबबन्दी पूर्णरूपेण लागू हो।

—साभार दैनिक जागरण—३-३-९५

साकार होने की राह पर अग्रसर एक शुभ संकल्प

वेद प्रचार मण्डल जिला जीन्द

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक बहुत दिनों से विचार करती आरही थी कि वेदप्रचार के कार्य को गति देने हेतु जिलास्तर पर वेदप्रचार मण्डलों का गठन किया जाए। सभा का उक्त मंतव्य आर्यसमाज के नियम तीन की भावना के एकदम अनुरूप ही था जिसमें महर्षि ने स्पष्ट विधान किया है कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और वेद का पढ़ना-पढाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।' इसका आशय यही है कि वेदप्रचार आर्यसमाज के एजेण्डा की सर्वोच्च प्राथमिकता है। यह वेदप्रचार के अभाव का ही दुष्परिणाम है कि आज का समाज रूढियों और अन्धविश्वास की गिरफ्त में आरहा है, बरसात में मेंढकों की तरह रोजाना मतमतान्तरों की संख्या में वृद्धि होरही है तथा धूर्त और पाखण्डी तथाकथित गुरु समाज को गुमराह कर रहे है तथा गुरुडम फैला रहे हैं। अतः आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा धन्यवाद एवं बधाई की पात्र है कि वेदप्रचार हेतु वेदप्रचार मण्डलों की स्थापना का बड़ा समीचीन निर्णय अधिकारियों ने लिया और उस निर्णय को क्रियान्वित भी किया।

जिलास्तर पर बैठकें आयोजित की गई। इसी सदर्भ मे सभा के तत्कालीन प्रधान प्रो० शेरसिंह जी अन्य अधिकारियों सहित रविवार १९-८-९० को जीन्द पधारे तथा आर्यसमाज मन्दिर जीन्द शहर में एक सभा हुई। इस सभा में जिले के विभिन्न स्थानों से लगभग १२५-१५० प्रमुख आर्यसज्जन शामिल हुए। प्रो० शेरसिंह जी ने विस्तार से वेदप्रचार की योजना समझाई तथा वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द के गठन का प्रस्ताव रखा। अन्य आर्यसमाजों ने भी अपने विचार एवं सुझाव रखे तथा बहुत ही सौहार्दपूर्ण वातावरण में बड़े उत्साह एवं उल्लास के साथ वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द के गठन का प्रस्ताव सर्वसम्मति से करतलध्वनि के बीच स्वीकृत हुआ। सभा का यह ऐतिहासिक कदम था जो आर्यजनों की आकांक्षाओं का ही प्रतिरूप था। प्रो० शेरसिंह जी ने सभा का यह निर्णय भी सुनाया कि सभा प्रत्येक मण्डल को सहायता रूप में १०००-०० (एक हजार रु०) मासिक अनुदान देती रहेगी। ऋषि ऋण से उऋण होने की दिशा में सभा का यह बहुत ही सार्थक एवं सराहनीय कदम था।

गुरुकुल कुम्भाखेड़ा एवं कन्या गुरुकुल खरल के संस्थापक एवं कुलपति तपोनिष्ठ कर्मयोगी संन्यासी स्वामी रत्नदेव सरस्वती (वर्तमान में स्वामी वेदानन्द) जिले की शोभा बढ़ा रहे हैं। तत्कालीन सभाप्रधान प्रो० शेरसिंह जी ने स्वामी रत्नदेव जी सरस्वती की मण्डल के संयोजक पद पर नियुक्ति की विधिवत् घोषणा की तथा स्वामी जी को अधिकार दिया कि वे अपने सहयोगी अधिकारियों एवं कार्यकारिणी का स्वयं गठन कर लेवें।

अगले ही रविवार दिनांक २६-८-९० को स्वामी रत्नदेव सरस्वती ने पुनः बैठक बुलाई तथा अधिकारियों एवं कार्यकारिणी का गठन किया। इन पंक्तियों के लेखक पर सहसंयोजक के पद का दायित्व सौंपा गया, युवा सदस्य श्री कर्णसिंह जी रेढू को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया तथा अठारह अन्य सदस्य कार्यकारिणी में लिए गए। इस प्रकार तीन अधिकारी तथा अठारह अन्य सदस्य मिलकर २१ सदस्यीय कार्यकारिणी अस्तित्व में आई। "मैं अकेला ही चला था जानिबे मंजिल मगर लोग साथ आते गए कारवां बनता गया" को चरितार्थ करता हुआ वेद प्रचार मण्डल जिला जीन्द ने कार्यक्षेत्र में पदार्पण किया। पं० चन्द्रभान जी आर्य की भजनमण्डली को वेदप्रचार के कार्य हेतु नियुक्त किया गया।

जीन्द जिला बहुत ही धार्मिक, श्रद्धालु, आस्थावान् जिला है। इसलिए अपने द्वारा दिए गए आश्वासनों के अक्षरशः अनुरूप आर्यजनता ने मण्डल को सहायता दी। आर्यसमाज जीन्द शहर ६००/- रु० आर्यसमाज नरवाना ५००/- रु० आर्यसमाज रामनगर रोहतक रोड जीन्द १००/- रु० तथा आर्यसमाज जींद जंक्शन १००/- रु० का मासिक अनुदान मण्डल को प्रारम्भ से ही देते चले आरहे हैं।

वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द की गतिविधियां बहुआयामी रही हैं। इन पंक्तियों का लेखक लगभग एक साल के लिए आर्यसमाज नैरोबी (केनिया) के निमन्त्रण पर वेदप्रचार हेतु विदेश में रहा और उस दौरान स्वामी रत्नदेव जी सरस्वती की कुशल देखरेख मे अत्यन्त आस्थावान्, सक्रिय आर्यसज्जन मा० रामसिंह जी आर्य (घोगडिया) ने सहसंयोजक का दायित्व सभाला तथा मण्डल के कार्य को बहुत आगे बढाया। दानवीर सेठ दीपचन्द के दान और आर्यसमाज रामनगर जीन्द के सहयोग से आर्यसमाज मन्दिर रामनगर में 'स्वामी भीष्म उपदेशक विद्यालय' की स्थापना की गई।

मण्डल की तत्कालीन भजनमण्डली के मुखिया प० चन्द्रभान आर्य को उक्त विद्यालय का आचार्य नियुक्त किया गया। उसी अल्पावधि मे विद्यालय ने एक महत्त्वपूर्ण देन आर्यसमाज को दी। प० चन्द्रभान ने अपने शिष्य श्री रमेशकुमार आर्य को प्रशिक्षण देकर एक योग्य भजनीक बना दिया जो पं० चन्द्रभान जी आर्य के पश्चात् पिछले डेढ-दो साल से मण्डल की सेवा में नियुक्त है। आज बड़े उत्साह और सेवाभाव से श्री रमेशकुमार जी आर्य की भजनमण्डली वेदप्रचार के कार्य में जुटी है।

स्वामी रत्नदेव जी की इच्छा थी कि वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द वार्षिकोत्सवों की परम्परा प्रारम्भ करे। प्रथम वार्षिकोत्सव सितम्बर १९९१ मे उचाना मण्डी में रखा गया। आर्यसमाज उचाना मण्डी तथा आसपास के देहात का भरपूर सहयोग मिला तथा उत्सव में सफलता मिली। जीन्द के तत्कालीन वेदभक्त एस० डी० एम० डा० रामभक्त लांगयान एस० सी० एस० ने प्रथम वार्षिकोत्सव का उद्घाटन किया। तब से आगे वार्षिकोत्सव एक के बाद एक सफलता और हाजिरी के मानो रिकार्ड ही तोडते चले गए। सितम्बर १९९२ में फिर जनता के आग्रह पर वार्षिकोत्सव उचाना मण्डी मे ही सम्पन्न हुआ। सितम्बर १९९३ में मा० रामसिंह आर्य तथा उनके समस्त सहयोगियों ने गांव घोगड़िया में वार्षिकोत्सव का प्रस्ताव रखा। घोगडिया उत्सव का उद्घाटन आर्यजगत् के मूर्धन्य सन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती के करकमलों से हुआ। स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए एक दिन आयोजकों से कहा था कि उत्सवों पर इतनी भीड़ मैंने अन्यत्र बहुत कम देखी है।

यह रिकार्ड भी तोड़ दिया सितम्बर १९९४ के डाहौला उत्सव ने जो कि संख्या में चौथा उत्सव था। इसका उद्घाटन भी स्वामी ओमानन्द सरस्वती वर्तमान में सभाप्रधान ने ही किया। चौ० विजयसिंह आर्य (चूहड़पुर) डाहौल उत्सव के स्वागताध्यक्ष थे तथा डाहौला के उत्साही आर्यसज्जन सर्वश्री कपूरसिंह आर्य, कितावसिंह आर्य, हुकमसिंह आर्य, लक्ष्मनसिंह आर्य, जगदीश आर्य, पंजाबसिंह आर्य, हैड मास्टर हरिसिंह आर्य, बलवानसिंह आर्य आदि ने रात-दिन अनथक प्रयास करके उत्सव को सफल बनाया। डाहौला उत्सव की सफलता बेजोड़ सफलता थी। आर्यसमाज के विख्यात भजनीक दादा शिवनारायण भी डाहौला के ही थे। उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए मण्डल ने उनके सुपुत्र श्री रविदत्त को सम्मानित किया। इसी प्रकार हरयाणा में शराबबन्दी आंदोलन के प्रमुख सूत्रधार एव जुझारू कार्यकर्त्ता श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनहरीदेवी को भी सम्मानित किया गया।

हमारी प्रचारयात्रा का भव्य शुभारम्भ हो चुका है, कार्य ने गति पकड़ ली है और हमें पूरी उम्मीद है कि सबके सहयोग से हम नई मंजिलें तय करेंगे। हम आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की अनुदानदाता समाजों का पुनः आभार मानते हैं कि वे वेदप्रचारकार्य में हमारा हाथ बंटा रही हैं। वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द सभा के शुभ सकल्प का ही साकार रूप है और हमें दृढविश्वास है कि परमपिता परमेश्वर की कृपा हम पर रहेगी, सभा का मार्गदर्शन रहेगा, हम वेदप्रचार की दुंदुभि बजाने में अवश्य सफल होंगे। —प्रो० ओमकुमार आर्य, जीन्द

गुरुकुल कुम्भाखेड़ा (हिसार) का २७वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

(निज संवाददाता द्वारा)

दिनाक ३-४ फरवरी, १९९५ को गुरुकुल कुम्भाखेड़ा का उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर अनेक विद्वानों, उपदेशकों एवं राजनेताओं ने भाग लिया। प्रतिदिन प्रातः हवन किया गया। यज्ञ पर आत्मा-परमात्मा पर विद्वानों के आध्यात्मिक प्रवचन हुए। प्रथम सभा में गुरुकुल के संस्थापक स्वामी वेदानन्द जी ने लोगों को आह्वान किया कि आप आर्यसमाज के सम्पर्क में आओ। अब समय आगया है आर्यसमाज द्वारा बहुत बड़ी क्रांति होनेवाली है। आर्यसमाज ही इस देश को बचा सकता है। श्री राजकुमार जी शास्त्रार्थ महारथी ने ओ३म् नाम की व्याख्या वेदों का महत्त्व तथा पाखण्ड पर विस्तार से विचार रखे। श्री वीरेन्द्रसिंह बिजली मन्त्री हरयाणा ने अपने भाषण में स्वीकार किया कि आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है जिसने समय-समय पर भारतीय संस्कृति सभ्यता को रक्षा की है। दूसरी तरफ कहा कि मैं सामाजिक तरीके से शराबबन्दी के हक में हूं। गुरुकुल की सहायतार्थ २१ हजार रुपये तुरन्त भेजने तथा ३० हजार रुपए अप्रेल मास में भेजने को घोषणा की। चौ० हीरासिंह जी सैनी प्रधान आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार ने भी अपने विचार रखे। हिसार आर्यसमाज की ओर से १५ हजार रुपए देने की घोषणा की।

आचार्य सत्यानन्द जी ने जहां गुरुकुलों के महत्त्व के बारे में बताया वहा कहा कि इस समय हरयाणा प्रांत में ३८ गुरुकुल हैं और १०० गोशालाएं हैं। सरकार को इनकी ओर पूरा ध्यान देना चाहिए। श्री दिलबाग शास्त्री जी ने भी अपने विचार रखे। रात्रि की अन्तिम सभा में सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने शराब से होनेवाले नुकसान से लोगों को अवगत कराया और महिलाओं से पर्दाप्रथा हटाने तथा समाजसुधार के कार्यों में आगे आने की अपील की। साथ में सरकार की शराब बढ़ावा नीति की कटु आलोचना की और बिजली मन्त्री के शराबबन्दी ब्यान को दुर्भाग्यपूर्ण बताया।

इसके अतिरिक्त पं० चन्द्रभान तथा पं० रमेशकुमार की भजन-मण्डलियों के समाजसुधार के प्रेरणादायक शिक्षाप्रद भजन हुए। गुरुकुल के छात्रों का भजनों व भाषणों का कार्यक्रम भी बहुत ही सराहनीय एवं रोचक रहा।

वेद-वेदांग पुरस्कार समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज सांताक्रुज द्वारा प्रवर्तित वेद-वेदांग, वेदोपदेशक एवं आर्यमहिला पुरस्कार समारोह दिनांक २९ जनवरी, ९५ को आर्यसमाज सांताक्रुज में सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ दिल्ली के उपकुलपति प्रो० वाचस्पति उपाध्याय ने की।

सिकन्दराबाद (आन्ध्रप्रदेश) के प्रख्यात वेदों के मर्मज्ञ एवं दर्शनाचार्य ९९ वर्षीय पं० गोपदेव शास्त्री को दसवें वेद-वेदांग पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उन्हें २५,००१/- रुपए की थैली रजत ट्राफी, शाल एवं श्रीफल से सम्मानित किया गया।

प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी, वैदिकधर्म के प्रचारक एवं भजनोपदेशक ८५वें वर्षीय प० आशानन्द जी का नौवें वेदोपदेशक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें रुपए १५,००१/- रजत ट्राफी, शाल एवं श्रीफल से सम्मानित किया गया।

आर्यसमाज जीन्द शहर का वार्षिक चुनाव

चौ० देशराज वकील प्रधान, श्री जगरूपसिंह वकील उपप्रधान, श्री मोहनलाल 'प्रभाकर' मन्त्री, श्री अशोककुमार उपमन्त्री, श्री रविन्द्रकुमार कोषाध्यक्ष, श्री रतनलाल पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री रामफूल स्कूल प्रबन्धक।

शराबबन्दी बैठक सम्पन्न

दिनांक ५-२-९५ को जिला सिरसा के शराब विरोधी मोर्चा के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश गोदारा द्वारा आर्यसमाज मन्दिर सिरसा में शराबबन्दी बैठक का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता स्वामी अग्निदेव जी भीष्म (हिसार) ने की। सभा के उपदेशक एवं संयोजक शराबबन्दी समिति जिला हिसार के श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा चलाया जारहा शराबबन्दी कार्यक्रम एवं अपने १० वर्ष के शराबबन्दी धरनों के अनुभव तथा शराब से होनेवाले नुकसान पर विस्तार से विचार रखे। श्री ओमप्रकाश गोदारा ने जिला सिरसा में होरहे शराबबन्दी कार्यक्रम एवं प्रगति पर प्रकाश डाला और भविष्य में ग्राम कालवान एवं ओढा से शराबबन्दी संघर्ष आरम्भ करने की घोषणा की।

इसके अतिरिक्त चौ० देवसीराम आर्य, श्री बलवीरसिंह अजमेरा, सरदार महेन्द्रसिंह नेताजी प्रधान हरयाणा विकास पार्टी जिला सिरसा, का० मनीराम, श्री अमरसिंह एडवोकेट, श्री हेतराम पूर्व बी०डी०ओ०, श्री जीवनराम, स्वामी प्रकाशानन्द, श्री लालसिंह नम्बरदार आदि ने विचार रखे। मीटिंग में १० गांव के लोगों ने भाग लिया। सभी वक्ताओं ने एक बात पर बल दिया कि गांव-गांव में शराबबन्दी समितियां बनाई जाएं और ठेकों की नीलामी पर जोरदार प्रदर्शन किया जाए।

—भागीरथ मन्त्री शराब विरोधी मोर्चा, सिरसा

महापर्व शिवरात्रि का संदेश

—वेदोपदेशक ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति

टेक—शिवरात्रि आज फिर आई है नूतन संदेशा लाई है।

तुम पड़े हुए किस उलझन में ग्रन्थियां लगी हैं सुलझाओ।
सत्यार्थ कसौटी लो कर में सन्मार्ग दिखाने आई है॥ शिव०

तुम चक्रवर्ती थे बने हुए और जगद् गुरु कहलाते थे।
इस विकृतरूप के मस्तानो क्या लज्जा तुम्हें नहीं आई है॥ शिव०

गुरुडम की घोर अन्धेरी में पाखण्ड धरा पर छाया है।
शास्त्रार्थ पुनः प्रारम्भ करो यह पाठ पढ़ाने आई है॥ शिव०

तुम ओ३म् नाम अनुगामी हो और आर्यपुत्र कहलाते हो।
इस राग द्वेष के चक्कर से तुम्हें मुक्त कराने आई है॥ शिव०

गोमाता के कण्ठ कटारी से भारत माता दुःखियारी है।
इस पाप को शीघ्र मिटाने की सौगन्ध दिलाने आई है॥ शिव०

अंग्रेज गये अंग्रेजियत का यह भूत सवाया छाया है।
निज भाषा के गौरव का सौरभ सिखलाने आई है॥ शिव०

मम्मी-डेडी, अंकल-आंटी भारत का मान घटाते हैं।
यह माता-पिता, चाचा-चाची का मान बढ़ाने आई है॥ शिव०

श्रद्धानन्द और लाल-श्याम नहीं लाल नजर कोई आता है।
उनकी यह धरोहर गंवा रहे कैसी आजादी आई है॥ शिव०

मद्यपान, अण्डे-मछली से हुई आसुरी वृत्ति है।
तुम राम-कृष्ण के वंशज हो यह भान कराने आई है॥ शिव०

अब भी शिवजी की पिण्डी पर ये मूषक उछलकूद करते।
यह निराकार ओंकार प्रभु का मान बढ़ाने आई है॥ शिव०

वेदाधिकार नहीं नारी को पाखण्डी शोर मचाते हैं।
मैदान में आ शास्त्रार्थ करो चैलेन्ज कराने आई है॥ शिव०

ये पापी नरपिशाच तान्त्रिक जो नरबलियां करवाते हैं।
बहिष्कार करो इन धूर्तों का यह बिगुल बजाने आई है॥ शिव०

पाषाण को माता मान रहे माता की जय बुलवाते हैं।
वह जगदीश्वर ही माता है यह बोध कराने आई है॥ शिव०

उस दयानन्द ऋषिराज का ऋण अब तक हमने न चुकाया है।
वेदों का नाद बजाने की यह शपथ दिलाने आई है॥ शिव०

कन्या गुरुकुल खरल जिला जींद का २०वां वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

(निज संवाददाता द्वारा)

दिनांक १०-११-१२ फरवरी, १९९५ को कन्या गुरुकुल का उत्सव सम्पन्न हुआ। प्रथम एक सप्ताह का यजुर्वेद पारायण यज्ञ किया गया। इस अवसर पर गुरुकुल के संस्थापक एवं वरिष्ठ उपप्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती, स्वामी वेदरक्षानन्द जी (गुरुकुल कालवा), स्वामी निर्मलानन्द जी (खनोरी), बहिन विशोका यति (हिसार), आचार्या बहिन दर्शना जी आर्या, पं० सुखदेव जी शास्त्री (रोहतक), मा० शेरसिंह जी (प्रधान सर्व कर्मचारी संघ हरयाणा), सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी, श्री जयप्रकाश जी पूर्व राज्यमन्त्री भारत सरकार, श्री ओमप्रकाश जिन्दल विधायक (हिसार), चौ० वीरेन्द्रसिंह पूर्वमन्त्री एवं स्थानीय विधायक, श्री रणदीप सुरजेवाला एडवोकेट आदि ने वेदों का महत्त्व, राष्ट्ररक्षा, नारीशिक्षा, गुरुकुलों का महत्त्व, शराबबन्दी, दहेजबन्दी, चरित्रनिर्माण, आर्यसमाज का देश की आजादी में योगदान, आर्यसमाज क्या है और क्या चाहता है, पाखण्ड, पर्दाप्रथा को हटाना तथा महर्षि दयानन्द जी के जीवन एवं कार्यों पर विस्तार से विद्वानों ने प्रकाश डाला।

जिन्दल साहब ने सवा लाख रुपये देने की घोषणा की, श्री शमशेरसिंह सुरजेवाला एम०पी० की ओर से उनके सुपुत्र श्री रणदीप ने दो कमरे बनवाने की घोषणा की, चौ० वीरेन्द्रसिंह जी ने २१ हजार रुपये सरकार के किसी मन्त्री द्वारा भिजवाने की घोषणा की, श्री जयप्रकाश जी ने ५१०० रुपए दिए, मा० शेरसिंह जी ने ११०० रुपए दिए, श्री धर्मपाल आर्य (खनोरी) ने यज्ञ का सब खर्च ४१०० रुपए दिए, अन्य फुटकर दान समेत कुल ४ लाख ७० हजार रुपए का दान प्राप्त हुआ। इस बार उत्सव पर हाजिरी भी रिकार्डतोड़ थी।

पं० ईश्वरसिंह तूफान, पं० रामनिवास, प० सहदेव बेधड़क, पं० रमेशकुमार, पं० रतनसिंह तथा महाशय जाम्बेराम जी के समाजसुधार के शिक्षाप्रद भजन हुए। समय-समय पर गुरुकुल की छात्राओं का भजन व भाषणों का कार्यक्रम रोचक एवं प्रेरणादायक रहा।

गुरुकुल के कुलपति स्वामी वेदानन्द जी के करकमलों द्वारा प्रथम व द्वितीय आनेवाले कबड्डी एवं कुश्ती के खिलाड़ियों को १००-५० रुपए का इनाम दिया गया। गुरुकुल कार्यकारिणी के प्रधान चौ० विजयसिंह नैन ने अन्त में विद्वानों एवं राजनेताओं का धन्यवाद किया और गांव खरल के लोगों से सेवक बनकर गुरुकुल का सहयोग करने की प्रार्थना भी की।

क्रांतिकारी के पौत्र श्री युद्धवीरसिंह का जन्मदिवस समारोह सम्पन्न

आर्यनिवास नलवा (हिसार) में श्री युद्धवीरसिंह पुत्र श्री सुरेन्द्रसिंह आर्य का प्रथम जन्मदिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। १० फरवरी १९९५ को रात्रि में वेदप्रचार हुआ। पं० शेरसिंह क्रांतिकारी (आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा) पं० अमरसिंह शास्त्री (वेदप्रचार मण्डल हांसी) तथा महाशय फूलसिंह आर्य (मोरखी) के शराबबन्दी व अन्य सामाजिक बुराइयों के खिलाफ शिक्षाप्रद भजन हुए। ११ फरवरी को प्रातः ८ से ११ बजे तक आचार्य [illegible] जी द्वारा ब्रह्मयज्ञ (संध्या) तथा देवयज्ञ (हवन) किया गया। स्वामी सर्वदानन्द जी (गुरुकुल धीरणवास) डा० ओमप्रकाश आर्य (कंवारी) श्रीमती लाजवन्ती आर्या (बालावास) ने अपने विचार रखे। बच्चे को आशीर्वाद दिया, भगवान् से लम्बी आयु एवं अच्छे स्वास्थ्य की कामना की। सभी विद्वानों ने आर्य परिवार को बधाई दी। आर्य परिवार की भांति प्रत्येक घर में पारिवारिक यज्ञ एवं सत्संग करवाने पर बल दिया।

अन्त में श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने विद्वानों एवं आगन्तुकों का धन्यवाद करते हुए इस वर्ष मार्च में ठेकों की नीलामी पर जिला हिसार में विरोध प्रदर्शन में बढ़-चढ़कर भाग लेंगे।

—[illegible] आर्यसमाज, नलवा

जिला हिसार व सिरसा में इस बार ठेकों की नीलामी पर भारी विरोध प्रदर्शन होगा

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हरयाणा प्रान्त में पूर्ण शराबबन्दी की मांग को लेकर ठेकों की नीलामी पर शराबबन्दी समिति जिला हिसार आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में जिला हिसार व सिरसा में भारी विरोध प्रदर्शन करेगी। शराबबन्दी मोर्चा [illegible] तथा अन्य धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक पार्टियां भी पूर्ण सहयोग देंगी। इस बार महिलाओं में तथा नवयुवकों में गांव गांव में सम्पर्क से देखने में आया है काफी उत्साह है। कई गांव के नवनिर्मित सरपंचों ने अब उपठेके बन्द करने के प्रस्ताव भी दिए हैं। कई गांव बालावास, कंवारी, रालवासकलां आदि में ठेकेदार की जीप भी रोक दी गई है। प्रदर्शन की तैयारी जोरों पर है।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी
संयोजक शराबबन्दी समिति जि० हिसार

आर्या सरपंच चुनी गई

श्रीमती रामबाई धर्मपत्नी श्री कृपाराम फरटिया भीमा में आर्या सरपंच का पद सम्भाला है। श्रीमती रामबाई का पुत्र श्री लेखराम आर्य बहुत ही त्यागी तपस्वी एवं ईमानदार मित्र हैं। ये आर्यसमाज लोहारू के अन्तरंग सदस्य भी छः साल तक लगातार बनते आरहे हैं। श्री लेखराम आर्य प्रधान श्री रामअवतार आर्य के नजदीकी हैं तथा आर्य-प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा चुनावों में उन उम्मीदवारों को चुने जो शराबबन्दी का समर्थन करें तथा शराब न पिलावें को देखते हुए २ दिसम्बर से ७ दिसम्बर १९९४ में एक ४९ गांवों की साइकिल जागृति यात्रा निकाली थी उस यात्रा में श्री लेखराम जिसकी माता जी सरपंच बनी हैं वे सात दिन तक प्रधान श्री रामअवतार आर्य के साथ रहे थे। आगे भी हम ऐसा ही शराबबन्दी एवं सभी बुराइयों के खिलाफ हर एक जिले में यात्रा निकालेंगे उस यात्रा में पंच-सरपंच, ब्लाक सदस्य तथा जिला परिषद् के सदस्य भी अधिक से अधिक शामिल किए जायेंगे। यह घोषणा प्रधान रामअवतार आर्य ने की।

गांव मायना में जगजीतसिंह आर्य सरपंच बने

गांव मायना जिला रोहतक के पंचायती चुनाव में चार उम्मीदवार सरपंची के लिए खड़े थे। उनमें से तीन ने लाखों रुपए शराब आदि में खर्च किए परन्तु शराब विरोधी और एक भी पैसा न खर्च करनेवाला नवयुवक जगजीतसिंह आर्य जो कि स्नातक है सरपंच बना। उन्होंने घोषणा की है कि वे पिछले सरपंच द्वारा खोला गया शराब का ठेका गांव में नहीं रहने देंगे। उनको सरपंच बनवाने में गांव मायना के आर्यसमाज के प्रधान मा० बलवानसिंह आर्य ने पूरा जोर लगाया। १२ पंचों में से कम से कम दस पंच ऐसे हैं जो कि शराब विरोधी हैं। इनमें चार महिलाएं तो शराब विरोधी आंदोलन की समर्थक हैं।

गुरुकुल कांगड़ी का वार्षिक उत्सव

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरद्वार का वार्षिकोत्सव ९ अप्रैल से १४ अप्रैल, १९९५ तक होगा। उत्सव पर आयोजित वेद सम्मेलन, संस्कृति सम्मेलन, सांस्कृतिक सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, व्यायाम सम्मेलनों में उच्चकोटि के विद्वान्, व्याख्याता, भजनीक, उपदेशक, विचारक, संन्यासी, वैज्ञानिक मार्गदर्शन करेंगे।

—महेन्द्रकुमार सहायक मुख्याधिष्ठाता

सभा का नया टेलीफोन न० ४०७२२ अंकित करें

सम्पादक के नाम पत्र

एक ओर हिन्दुओं की सुरक्षा की बेहद चिन्ता और दूसरी ओर स्वयं हिन्दुओं के द्वारा अपनी रीति-नीतियों की दिल्लगी।

हिन्दुओ मे आज सबसे महत्त्वपूर्ण विवाह दिखाई दे रहा है। तमाम तामझाम के साथ इसे हिन्दू आयोजित करता है। लाखों और कहीं-कहीं तो गुप्त तौर पर या खुलेआम इससे भी अधिक होता है। बाजे बजते हैं, नाच होता है, हंसी-मजाक होता है, दावते होती हैं, शराब की नदी बहती है—यह सब होता है किसी प्रकार की न समय की, न धन की, न वर-वधू के थकने की कोई चिन्ता नहीं होती है।

लेकिन मूलतः जिसका नाम विवाह है······ कर्मकाण्ड। परिक्रमा। फेरे। जब उसकी बारी आती है तो पैसा कम, लड़का-लड़की थक गये, समय कम और न जाने और क्या-क्या उत्पात् आ टपकते हैं। सारी बरात-बरात चिल्ला रही होगी पंडित जी जल्दी। मुश्किल आधे घण्टे विवाह होगा उसमे बीस मिनट कभी घरातियों की ओर से तो कभी बरातियों की ओर हू-हुल्लड़ चलेगा।

यह विचित्र विरोधाभास। यह कैसी हिन्दूधर्म की रक्षा की चिन्ता है।

—भूदेव साहित्याचार्य महोपदेशक

जिस सावधानी से आप बेटी के लिए वर का चयन करते हैं उसी तरह अपने वोट का हकदार चुनें—शेषन

भुवनेश्वर, १६ फरवरी (वार्ता): "अपनी बेटी या बहन के लिए जैसे आप लड़का चुनते हैं, उसी सावधानी से उम्मीदवारों को चुनकर वोट दीजिए।" यह सलाह मुख्य चुनाव आयुक्त टी. एन. शेषन ने दी है। वह कल एक कालेज छात्र संघ की सभा में भाषण कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि जिस तरह वर चुनते समय आप उसके चाल-चलन, उसकी ईमानदारी, समाज में उसकी इज्जत आदि का ध्यान रखते हैं, उसी तरह उम्मीदवार पर भी ध्यान दें। एक चरित्रवान् व्यक्ति को चुने और उसे अपना वोट दें, चाहे वह किसी भी पार्टी का नुमाइंदा हो। अगर देश में स्वच्छ प्रशासन स्थापित नहीं किया गया तो वह पांच या दस वर्ष में सोवियत संघ या यूगोस्लाविया की तरह टूट जाएगा।

श्री शेषन ने कहा कि पिछले चालीस साल में चुनाव तमाशा और हंगामा बन गया था। अब इसे तमाशा या हंगामा नहीं रहने दिया जाएगा। इसे एक गंभीर प्रसंग बनाया जाएगा। महाराष्ट्र में ८० प्रतिशत मतदाताओं ने वोट डालकर यह सिद्ध कर दिया है।

श्री शेषन ने मतदाताओं से आग्रह किया कि वह अपनी जमीर की आवाज पर वोट दें। उन्होंने कहा कि भारत में भ्रष्टाचार बढ़ने की मुख्य वजह चरित्र एवं सिद्धांत का अभाव है।

श्री शेषन ने कहा कि आपकी नजर में अगर कोई अच्छा आदमी चुनाव के मैदान में नहीं है तो अगली बार आप खुद आगे आएं और देश को बचाएं अन्यथा वैसे ही लोगों को चुनिए, जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपने को कुर्बान कर दिया था। श्री शेषन ने नौजवानों से कहा कि उन्हें जागना चाहिए। "जब तक आप नहीं जगेंगे देश का भला नहीं होगा।"

उन्होंने प्रशासन की कटु आलोचना करते हुए कहा कि ऊपर से नीचे तक प्रशासनिक तंत्र पूरी तरह ध्वस्त हो चुका है।

आर्यसमाज गुरुकुल कुरुक्षेत्र का वार्षिक चुनाव

प्रधान श्री ओंकार शास्त्री, उपप्रधान श्री शमशेरसिंह, मन्त्री श्री राजेन्द्रप्रसाद शुक्ल, उपमन्त्री श्री श्यामदेव, कोषाध्यक्ष श्री रमेशकुमार।

सराहनीय कार्य

जुलाई १९९२ के अन्तिम सप्ताह में रा० गो० घडौली पर भयंकर आपत्ति का समय था। अतिवृष्टि के कारण रास्ता कीचड़ से परिपूर्ण था। गोदाम में तूड़ा अति अल्प था। ट्रैक्टरादि के द्वारा यत्न करने पर भी असफलता हाथ लगी। वैरिंग टूट गये, वाहन फंस गये। इन विकट परिस्थितियों में कमेटी ने गायों को सूखे स्थान पर चराने हेतु ले जाने का निश्चय किया। ३ अगस्त, १९९२ को गोपालों ने गोमाताओं को भिवानी की तरफ चराने हेतु प्रस्थान कराया। दीपावली पश्चात् गोवर्धन पूजा के दिन गायें वापस गोशाला पहुंची।

५ दिसम्बर, १९९२ को श्री धर्मपाल जी अध्यक्ष हरयाणाप्रदेश कांग्रेस कमेटी व माननीय श्री बचनसिंह जी आर्य कृषि राज्य मन्त्री को उत्सव में गोशाला में आमन्त्रित किया। उत्सव में गोशाला मार्ग पक्का कराकर गोमाता के कष्टनिवारण की अपील की। गोमाता के कष्ट को अपना कष्ट समझकर दोनों गोभक्त नेताओं ने गोशाला सड़क को शीघ्र बनवाने की घोषणा करदी।

राज्य के अनेक कार्य होते हुए भी अन्यत्र आवश्यक योजनाओं पर व्यय से अधिक महत्त्व गोशाला राजमार्ग को देकर अतिशीघ्र पूर्ण कराना ही उनके सामाजिक चिन्तन एवं कार्यकुशलता को प्रदर्शित करता है। गोमाता के प्रतिवर्ष के वनवास को समाप्त कर दिया। प्रत्येक गोभक्त उनके सदैव स्मरणीयकार्य का गुणगान करता रहेगा। राष्ट्रीय गोशाला घडौली की गोमाता इस राजमार्ग पर चलते समय जुगाली करती हुई उन्हें सदैव आशीष देती रहेंगी।

वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना का भावानुवाद

लेखक—पं० चन्द्रभानु आर्योपदेशक आदर्शनगर, जीन्द

मेरे देश के ब्राह्मण होवें, वेदों के विद्वान्,
महारथी हों, क्षत्रिय यहां बलवान ॥ टेक ॥
तत्त्ववेत्ता हों विप्र सभी वेदाचारी।
धर्म अर्थ और काम मोक्ष के अधिकारी ॥
सुखी होवें सब नरनारी और मिटे तिमिर अज्ञान ॥१॥
क्षत्रिय हो बलवान शत्रु से डरें नहीं।
कोई किसी के साथ ज्यादती करे नहीं ॥
पिता से पहले मरे नहीं हो सदाचारी सन्तान ॥२॥
वैश्य होवें धनवान सदा उपकार करें।
देश धर्म जाति से हमेशा प्यार करें ॥
सत्य का ही व्यवहार करें, हो धर्मात्मा यजमान ॥३॥
फल-फूलों से लदी सभी फुलवारी हों।
कामधेनु और सुरभि गऊ हमारी हों ॥
स्वास्थ्यवर्द्धक सारी हों, यहां औषधि हे भगवान् ॥४॥
घर-घर अन्दर नित्य ही सन्ध्या-हवन करें।
शुद्ध वर्षा से पैदा यहां शुद्ध अन्न करें ॥
ओ३म् नाम का भजन करे, सब मिलकर चन्द्रभान ॥५॥

शान्ति चाहते हो तो तृष्णा को जीतो

(गतांक से आगे)

वीरसेन ने इस सम्बन्ध में शांतिदेव से पूछताछ की। उन्हें शांतिदेव को नीयत पर तो सन्देह न था किन्तु यह भी उन्हें अच्छा नहीं लगा कि शांतिदेव की दानशीलता उनके पुरुषार्थ से अर्जित यश को आच्छादित कर दे। वीरसेन शांतिदेव का अहित नहीं चाहते थे पर सुयश की लिप्सा प्रायः मनुष्य पर अहं का एक ऐसा झीना आवरण डाल देती है, जिसे समझना कठिन और हटाना विषम होता है।

एक दिन शांतिदेव को वीरसेन का संदेशा मिला—'आपके विरुद्ध मेरे पास कई शिकायतें आई हैं। उन्हीं की जानकारी के लिए मैं स्वयं आरहा हूं। अपनी इच्छा के विपरीत विवशतापूर्वक मुझे यह अप्रियकार्य करना पड़ रहा है।'

शांतिदेव को स्थिति का अनुमान होगया। उन्हें क्या करना है इसका भी उन्होंने तत्काल निर्णय कर लिया। एक सप्ताह बाद जब महाराज वीरसेन ने नगर में प्रवेश किया तो द्वारपाल ने विनयपूर्वक उन्हें चाबी का एक गुच्छा और पत्र दिया। चाबियां थीं राजकोष की और पत्र इस प्रकार था—'मुझे खेद है कि मेरे कारण आपको यहां आने का कष्ट करना पड़ा। जिस प्रकार मैंने अभी तक अपना जीवन व्यतीत किया है उसमें परिवर्तन करना मेरे लिए सम्भव नही है। अतः अत्यन्त विनयपूर्वक मैं आपसे विदा लेता हू। विश्वास मानिये कि मेरे पास जाते समय राज्यकोष की एक मुद्रा भी नही है।'

महाराज वीरसेन पत्र पढ़कर हतप्रभ होगये। राज्यकोष का हिसाब-किताब बिल्कुल ठीक था। प्रजा सुख-शांति से जीवन व्यतीत कर रही थी किन्तु उसके हितों का सच्चा प्रहरी उन्हें छोड़कर जा चुका था। वीरसेन ने शांतिदेव का पता लगाने की चेष्टा की पर अपने प्रयास में वह असफल रहे। वह वापस लौट गये। राजाज्ञा से शांतिदेव को विद्रोही घोषित कर दिया गया।

× × ×

आज सप्ताह का अन्तिम दिवस था। राज्यसभा में सब लोग गम्भीर मुद्रा में थे। सबको इस बात की चिन्ता थी कि शांतिदेव का पता न लगा सकने पर महाराज अवश्य क्रुद्ध होंगे, किसी को दण्ड भी दे सकते हैं अपनी अवज्ञा के अपराध में।

सहसा बाहर कुछ कोलाहल-सा हुआ और दूसरे ही क्षण सभासदों ने बड़े आश्चर्य के साथ देखा कि एक दीन हीन भिखारी ने राज्यसभा में प्रवेश किया है। उसके पीछे फटे पुराने कपड़े पहने शांतिदेव भी चले आरहे हैं।

महाराज वीरसेन एक क्षण के लिए सिंहासन से उठे फिर बैठते हुए बोले—'शांतिदेव को यथास्थान बिठाओ।' दीनहीन भिखारी भय से कांपता हुआ दरवाजे के पास खड़ा होगया महाराज वीरसेन के आग्रह पर उसने अपनी बात बताई—

'मैं अत्यन्त निर्धन किसान हूं। थोड़ी सी खेती के सहारे मैं किसी प्रकार अपना परिवार पाल रहा था। पिछले वर्ष सूखे में फसल नष्ट होगई। उधार लेकर बच्चों का पेट भरना पड़ा। उधार के रुपये न चुका सकने के कारण महाराज ने मेरी जमीन छीन ली। अब मेरे पास जीविका का कोई साधन न रहा। बच्चे भूखे मर रहे हैं।'

पर यह शांतिदेव तुम्हें कहां मिले और तुम इन्हें यहां क्यों लाये? वीरसेन ने बीच में ही टोका।

'बतलाता हूं महाराज! कल रात को मैं इसी सोच विचार में डूबा भगवान् को कोस रहा था तो घूमते हुए यह मेरे पास पहुंच गए। मेरी विपदा सुनी और उससे दुखित होकर बोले—मुझे महाराज वीरसेन के पास पहुंचा दो मेरे पहुंचते ही तुम्हें पांच हजार मुद्राएं मिल जाएंगी। मैं कुछ बात न समझ सका। इनके बार बार आग्रह करने पर ही मैं इन्हें यहां लाया हूं। अब जैसी आज्ञा दें आप।' भिखारी घबरा रहा था। महाराज वीरसेन ने भिखारी को कहा—घबराओ नहीं और तुरन्त कोषाधिकारी को बुलाकर पांच हजार मुद्राएं देकर भिखारी को विदा कर दिया। सभासदों को अपने-अपने घर जाने के आदेश हुए। सब चले गए तब उस कक्ष में रह गए केवल महाराज वीरसेन और शांतिदेव।

वीरसेन—'तुम्हें व्यग्रतापूर्वक खोज रहा था शांतिदेव! तुम्हें पाकर मैं बहुत प्रसन्न हूं।'

शांतिदेव—विजय का हर्ष किसे नहीं होता महाराज! मैं अपना अपराध स्वीकार करता हूँ आप मुझे दण्ड दें।

वीरसेन—दण्ड दूंगा! क्या मेरे दिये दण्ड को स्वीकार करोगे?

शांतिदेव—क्यों नही महाराज! राजाज्ञा की उपेक्षा करने का साहस कोई समर्थ भी नहीं करता फिर मैं तो ठहरा असमर्थ असहाय।'

वीरसेन—तो सुनो मेरी दण्ड व्यवस्था यह है कि तुम फिर अपने राज्य का पूर्ववत् संचालन करो और दूसरों की सुख-शांति के लिए अपनी सब शक्ति और क्षमता का पूर्णरूप से उपयोग करो।

महाराज वीरसेन कुछ क्षण रुककर पुनः आश्वस्त स्वर में बोले—'तुम्हारे मेरे बीच परोक्षरूप से एक प्रतिस्पर्द्धा चल रही थी। मैं तुम्हारे यश के प्रति ईर्ष्यालु था। पर तुमने तो अपनी त्याग शक्ति से मुझे चिरकाल के लिए पराजित कर दिया। मैं अपनी पराजय को स्वीकार करता हूं शांतिदेव और फिर इसके पहले कि शांतिदेव कुछ कहते महाराज बोले—सच कहता हूं शांतिदेव आज मेरे लिए पराजय का यह हर्ष असह्य होरहा है और इतना कहते-कहते महाराज वीरसेन ने शांतिदेव के चरणों में अपना मस्तक रख दिया।

सचमुच त्याग में बड़ी शक्ति है।

(हितोपदेशक से साभार)

आर्य महोत्सव सम्पन्न

जिला फरीदाबाद की सुप्रसिद्ध आर्यसमाज औरंगाबाद मितरौल जिला फरीदाबाद का वार्षिकोत्सव १०, ११ व १२ फरवरी को आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण में धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के अध्यक्ष श्रद्धेय स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने ग्रामवासियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि कुछेक निराशावादी व निरुत्साहित लोग कहते हैं कि शराब व लाटरी कभी बन्द नहीं हो सकती, लेकिन सच्चाई यह है कि जैसे सतीप्रथा, बाल-विवाह, छुआछूत आदि सामाजिक बुराइयां आर्यसमाज के प्रचारकों के प्रयत्नों से समाप्त होगई हैं इसी प्रकार से शराब, अश्लीलता व लाटरी (सरकारी जुआ) भी आर्यसमाज के आंदोलन के सामने नही टिक पायेगा। एक दिन इन बुराइयों का नाश अवश्य होगा। उन्होंने आर्यों से शराबबन्दी आंदोलन को समर्थन देने की अपील भी की है।

आर्य महोत्सव को हरयाणा आर्य युवक परिषद् के प्रधान श्री शिवराम विद्यावाचस्पति, आचार्य सत्यप्रिय जी, स्वामी रामदेव, स्वामी शांतानन्द, आचार्य आनन्द मित्र जी, श्री देवराज जी शास्त्री, सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री शोभाराम प्रेमी, श्री नरदेव जी आर्य, महाशय खेमसिंह सभा के भजनोपदेशक श्री तेजवीरसिंह, श्री उदयवीरसिंह, श्री चतरसिंह, ब्र० रणजीतसिंह चौहान आदि ने सम्बोधित किया तथा उपदेश व भजनों के माध्यम से शराब, छुआछूत, अश्लीलता, लाटरी व धार्मिक अन्धविश्वास आदि बुराइयों से दूर रहने की प्रेरणा दी। उत्सव को सफल बनाने में चौ० किशोरसिंह पूर्व सरपंच, विजयसिंह पूर्वसरपंच, दयाराम आर्य, श्री बहालसिंह भारद्वाज, प्रधान श्री बसीलाल आर्य, धर्मवीर आर्य, ब्र० नरवीर आर्य आदि का सहयोग प्राप्त हुआ।

—डालचन्द मन्त्री

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा चलाया जारहा शराबबन्दी कार्यक्रम जोरों पर

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा चलाया जारहा शराबबन्दी आंदोलन को और तेज करने के लिए सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने शराबबन्दी उपदेशकों को गांव-गांव में भेजने का कार्यक्रम बनाया है। इसके साथ आर्यसमाज के वयोवृद्ध प्रचारक श्री अर्जुनदेव आर्य को लोहारू ब्लाक में भेजा है। उन्होंने ब्लाक लोहारू में एक सप्ताह तक बहुत ही अच्छा प्रचार किया। जिन गांवों में प्रचार किया वह गांव इस प्रकार हैं—फरटिया भीमा, ढाणी तेज, ढाणी रहीमपुर, ढाणी श्री भगवन्तसिंह आर्य बुढेड़ी, फरटिया केहर, लोहारू सोहासड़ा, ढाणी श्यामा में श्री अर्जुनदेव आर्य का प्रचार बहुत ही सराहनीय रहा।

श्री अर्जुनदेव आर्य ने आर्यसमाज के उपप्रधान श्री भंवरसिंह आर्य के घर पर भी पारिवारिक यज्ञ किया। यज्ञ पर बोलते हुए आर्यसमाज के युवा प्रधान श्री रामअवतार आर्य ने बताया कि साथियों अब वक्त आगया है कि शराब जैसी भयंकर चण्डाली को समाज से नष्ट करना होगा तथा आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती का सहयोग करके प्यारे हरयाणा को बचाना होगा। इसके साथ-साथ मैं युवाओं को भी यही कहना चाहूंगा कि जब तक युवावर्ग इस भयंकर पापिनी शराब के विरुद्ध अपना कदम नहीं उठाएंगे, तब तक शराब जैसी भयंकर बीमारी हमारे समाज से नही जाएगी।

आज हमें उन नौजवानों की आवश्यकता है जो शराबबन्दी आंदोलन में अपना पूरा-पूरा सहयोग देकर पापी दुष्टनी, चण्डाली शराब को समाप्त करने में अपना पूरा कर्त्तव्य समझें। इस शराबबन्दी प्रचार में श्री जयपाल आर्य, नरेन्द्रपालसिंह आर्य, ओमवीर आर्य आदि साथियों ने अपना सहयोग दिया।

—हवासिंह आर्य, आर्यमित्र सेवक आर्यसमाज मन्दिर लोहारू, जिला भिवानी (हरयाणा)

संस्कृत को अनिवार्य भाषा के रूप में लागू करने की मांग

हिसार, १६ फरवरी (मोंदवाल) : हरयाणा संस्कृत अध्यापक संघ की जिला शाखा ने राज्य में आगामी शैक्षणिक सत्र से संस्कृत को अनिवार्य भाषा के रूप में लागू करने की मांग की है।

संघ द्वारा जारी बयान में कहा गया है कि त्रिभाषा फार्मूले के अन्तर्गत संस्कृत को अनिवार्य भाषा के रूप में लागू करने से सरकार को नैतिकशिक्षा का अतिरिक्त विषय लागू करने की जरूरत नहीं पड़ेगी क्योंकि संस्कृत शिक्षा ही नैतिक शिक्षा का एक रूप है।

शोक समाचार

श्री भजनलाल आर्य ग्राम खेड़ली जीता (फरीदाबाद) ८० वर्ष की आयु में दिनांक ११ फरवरी ९२ को पक्षाघात हो जाने से अकस्मात निधन होगया। वे धार्मिकता तथा सच्चाई के हमेशा पक्षधर रहे हैं। गुरुकुल इन्द्रपुरी को प्रतिवर्ष एक बोरी अन्न सहयोग दिया करते थे। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गये हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—ओमप्रकाश शास्त्री
मन्त्री आर्यसमाज किरंज

बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्तीभवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० १३२०/७३   रजि० नं० P/RTK-४१   ९६, ०८, ९६, ०९५

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
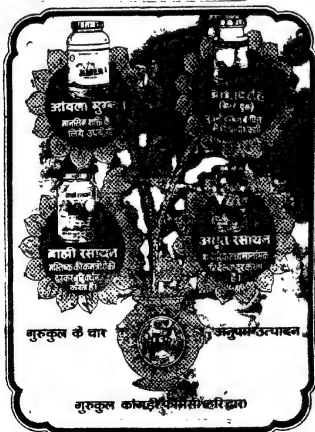
सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष २२ अंक १६   १४ मार्च, १९९५   (वार्षिक शुल्क ५०)   (आजीवन शुल्क ५०१)   विदेश में १० पौंड   एक प्रति १-००

शराबबन्दी आन्दोलन की गतिविधियां—

करनाल में पूर्ण नशाबन्दी लागू करवाने के लिए विरोध प्रदर्शन

(केदारसिंह आर्य द्वारा)

करनाल १ मार्च, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा के प्रस्तावानुसार १ मार्च से हरयाणा सरकार द्वारा आयोजित शराब रूपी जहर के ठेकों की नीलामी का विरोध प्रदर्शन का आरम्भ करनाल से आरम्भ किया गया। सभा के कार्यालय से एक जत्था २८ फरवरी की रात्रि को ही आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल पहुंच गया। इस जत्थे में मेरे साथ सभा के भजनोपदेशक श्री जयपालसिंह बेधड़क, श्री सत्यपाल, पं० विश्वमित्र तथा धर्मवीर आदि थे। १ मार्च को प्रातः सभा के उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी तथा पं० चन्द्रपाल सिद्धान्तशास्त्री भी करनाल पहुंच गये। आर्यसमाज मन्दिर में श्री रतनसिंह लाठर संरक्षक आर्यसमाज ने आवास तथा भोजन की व्यवस्था बहुत ही अच्छी की। प्रदर्शन आरम्भ करने से पूर्व आर्यसमाज मन्दिर में यज्ञ किया। पं० विश्वमित्र जी ने अपने गीत द्वारा परमपिता परमात्मा का गुणगान किया तथा हरयाणा की पवित्र भूमि से शराब रूपी जहर के कलंक को समाप्त करने की प्रार्थना की।

आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री वेदप्रकाश आर्य तथा सेवा निवृत्त प्रधानाचार्य श्री सुन्दरसिंह आर्य के साथ जिला न्यायालय परिसर में गए तथा जिला आयुक्त को मुख्यमन्त्री के ज्ञापन पर शराबबन्दी समर्थक वकीलों तथा प्रमुख नागरिकों के हस्ताक्षर करवाने के पश्चात् कालिदास रंगशाला जहां शराब के ठेकों की नीलामी की जा रही थी वहां विरोध प्रदर्शन के लिए प्रस्थान किया, परन्तु प्रातः से ही पुलिस ने नीलामी स्थल को जाने वाले चारों ओर के मार्ग लोहे के पाइप लगाकर बाधाएं खड़ी कर रखी थीं और पुलिस के सिपाही लाठियां तथा हथियार लेकर भारी संख्या में खड़े थे। इस प्रकार कठोर नाकाबन्दी के कारण प्रदर्शन रूप में जाने का कार्यक्रम नहीं बन सका। क्योंकि जिला उपायुक्त को ज्ञापन देना आवश्यक था। अतः हम पृथक् पृथक् मार्गों से दो-दो सत्याग्रही पुलिस को चकमा देकर नीलामी स्थल पर पहुंचने में सफल हो गए और पुलिस अधिकारियों से उपायुक्त महोदय को ज्ञापन देने की मांग की, परन्तु उपायुक्त महोदय अपने निवास पर थे। अतः हम पुनः उसी प्रकार पृथक् पृथक् उनके आवास पर पहुंचे परन्तु वहां पुलिस ने जाने से रोक दिया। हमने उनसे कहा कि हमें उनसे मिलने का अवसर दिया जावे, अन्यथा हम नारेबाजी करेंगे। उस अवस्था में हमें अन्दर जाने दिया और उपायुक्त महोदय को शराबबन्दी का ज्ञापन दिया। उन्होंने इस ज्ञापन को मुख्यमन्त्री को आज ही भेजने का आश्वासन दिया।

फरीदाबाद में शराब के ठेकों की नीलामी पर विरोध प्रदर्शन

करनाल के कार्यक्रम के पश्चात् हमारा जत्था फरीदाबाद में प्रदर्शन की तैयारी के लिए १ मार्च को सायंकाल गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में पहुंच गया और गुरुकुल के अधिष्ठाता श्री हुकमचन्द जी राठी के सहयोग से आर्य नरनारियों से प्रदर्शन में सम्मिलित होने के लिए टेलीफोन [illegible] सम्पर्क किया। गुरुकुल के अध्यापक श्री जितेन्द्र आर्य, श्री [illegible], श्री जयभारत, डा. सुरेन्द्र आर्य, श्री जगदीश, श्री [illegible]सिंह [illegible] आदि प्रदर्शन की तैयारी रात भर करते रहे।

२ मार्च को प्रातः ९ बजे प्रचारवाहन में बैठकर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों तथा अन्य कर्मचारियों के साथ स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द अमर रहें, तथा शराबबन्दी के जयघोष करते हुए जी टी. रोड से आर्यसमाज मन्दिर सैक्टर ७ पहुंच गये। सभा के क्रान्तिकारी उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य, पं० मातूराम प्रभाकर, पं० चन्द्रपाल सिद्धान्त शास्त्री, श्री धर्मवीर आर्य, श्री जयपाल बेधड़क, श्री सत्यपाल, श्री खेमसिंह आर्य, श्री चितरसिंह आर्य आदि इस जत्थे में सम्मिलित थे। हम से पूर्व सभा के कोषाध्यक्ष श्री लछमनदास आर्य, उनके बड़े भ्राता वहां पहुंच चुके थे। ९-३० बजे तक अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान प्रो. शेरसिंह जी दिल्ली से प्रदर्शन का नेतृत्व करने पधार गये। फरीदाबाद में आर्य महिला नेता श्रीमती दर्शना मलिक अन्य महिलाओं के अपने जत्थे के साथ पहुंच गई। थोड़ी देर में श्री स्वामी सिंहमुनि जी, हरयाणा युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री शिवराम आर्य, आर्यवीर दल फरीदाबाद के संचालक श्री वेदप्रकाश आर्य, श्री गोपीराम आदि भी अपने सहयोगियों सहित उपस्थित हो गये। दस बजे सैक्टर ७ की मार्केट से प्रो० शेरसिंह जी के नेतृत्व मे विरोध प्रदर्शन आरम्भ हुआ और शराबबन्दी लागू करो, जो सरकार शराब पिलाये वह सरकार निकम्मी है, जो सरकार निकम्मी है वह सरकार बदलनी है, शराब के ठेके बन्द करो आदि के गगनभेदी नारे लगाते हुए आबकारी कराधान के कार्यालय जहां नीलामी हो रही थी, पहुंचने में प्रदर्शनकारी सफल हो गए। यद्यपि वहां पुलिस भारी संख्या मे खड़ी थी। मुख्य द्वार के पास मंच बनाकर शराबबन्दी सम्मेलन आरम्भ हो गया। श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने उपस्थित प्रदर्शनकारियों तथा पुलिस के जवानों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हरयाणा ऋषि मुनियों की पवित्र धरती है। यहां दूध दही की नदियां बहती थीं, परन्तु आज हरयाणा की भ्रष्ट सरकार ने यहां शराब की नदियां बहा दी हैं। जी० टी० रोड पर कहीं भी पानी की प्याऊ दिखाई नहीं देती, परन्तु शराब के ठेके प्रति किलो मीटर पर शराब के विज्ञापनों के साथ शराबियों को आकर्षित कर रहे हैं। हम आज शराब रूपी जहर के ठेकों की नीलामी का विरोध करने आये हैं। हमें पुलिस प्रदर्शन करने में बाधा डाल रही है, परन्तु शराब के ठेके लेने वालों की सुरक्षा कर रही है। सरकार की इस जनविरोधी नीति से हरयाणा को भलाई नहीं हो सकती। श्रीमती दर्शना मलिक ने सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि शराबियों के उत्पात

(शेष पृष्ठ २ पर)

(पृष्ठ १ का शेष)

का परिणाम महिलाओं को अधिक भुगतना पड़ता है । परन्तु सरकार इसे जानते हुए भी प्रतिवर्ष शराब के ठेके अधिक संख्या में खोल रही है और इसकी अधिक से अधिक बिक्री करने के लिए ग्राम पचायतों को प्रति बोतल की बिक्री पर १.५० इनाम दे रही है। इस प्रकार सरकार स्वयं शराब की बिक्री को प्रोत्साहन देकर महिलाओं पर अत्याचार कर रही है। ऐसी सरकार बदले बिना हरयाणा का हित नहीं हो सकता। श्री शिवराम आर्य ने अपने सम्बोधन में कहा कि शराब पीकर कुछ पुलिस वालों ने फरीदाबाद में गत सप्ताह एक निर्धन महिला के साथ बलात्कार तथा पिटाई की है। इस प्रकार सरकार हरयाणा को विनाश की ओर ले जा रही है। आर्य युवक इस अत्याचार का विरोध करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सरक्षण में बड़े से बड़ा बलिदान देने के लिए तैयार है। सभा के उपदेशक श्री चन्द्रपाल जी, श्री भजनलाल आर्य, ब्र० दयानन्द ने भी शराब नीति का जमकर विरोध किया तथा श्री खेमसिंह आर्य ने प्रभावशाली शराबबन्दी की होली सुनाकर उपस्थित प्रदर्शनकारियों को उत्साहित कर दिया और सभी पूरी शक्ति के साथ नारे लगाने लग गए।

अन्त में प्रो० शेरसिंह जी ने उपस्थित नरनारियों तथा सिपाहियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हरयाणा की पवित्र धरती पर जहां वेद मन्त्रों की गूंज सारे संसार तक पहुंचती थी और यहां शिक्षा ग्रहण करने के लिए ग्रहण करने के लिए अन्य देशों के लोग आते थे। इस प्रकार संसार में प्रसिद्ध था। अंग्रेज सरकार ने इस पवित्र हरयाणा का नाम मिटाकर तथा इसके टुकड़े टुकड़े करके पंजाब में विलीन कर दिया था। आर्य नेताओं ने हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भारी सघर्ष करके हरयाणा को पुनः भारत के नक्शे में सम्मिलित इस भावना से करवाया था कि यहां पूर्व की भांति वेदप्रचार होगा और शराब, जुआ तथा मांस का प्रचार बन्द होगा। परन्तु हरयाणा का विरोध करने वाले आज हरयाणा में शराब का प्रचार तथा प्रसार करके हम पर शासन कर रहे हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि हरयाणा शराब तथा भ्रष्टाचार के कारण सारे संसार में बदनाम हो रहा है। हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल स्वयं अपने दामाद का शराब का कारखाना खुलवाकर शराब को बढ़ावा देकर कानून को तोड़ रहे हैं। शराब से हरयाणा की वैदिक संस्कृति भ्रष्ट हो रही है। अतः शराब बेचने वालों का स्थान जेलों में होना चाहिए। हमने इस सम्बन्ध में उच्चतम न्यायालय में याचिका दायर करके न्याय करने की मांग की है। हमें आशा है कि शीघ्र न्याय मिलेगा। आर्यसमाज परोपकार तथा समाज सुधार के कार्यों में सदा आगे रहा है और रहेगा। आर्यसमाज असत्य पर सत्य की विजय प्राप्त करेगा।

अन्त में फरीदाबाद के उपायुक्त को फरीदाबाद की आर्यजनता की ओर से प्रो० शेरसिंह ने ज्ञापन देते हुए सावधान किया कि यदि सरकार ने पंचायतों के प्रस्ताव किये बिना ग्रामों में ठेके खोले तो इसका जमकर विरोध किया जावेगा और इस अवैध कार्यवाही को न्यायालय में चुनौती दी जावेगी और सर्वखाप पंचायत के सहयोग से धरने दिए जावेंगे। उपायुक्त महोदय ने कहा ज्ञापन को मुख्यमन्त्री के पास उचित कार्यवाही हेतु भेज दिया जावेगा।

कुरुक्षेत्र में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने पुलिस के सिपाहियों को पछाड़ दिया

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से जिला कुरुक्षेत्र शराबबन्दी समिति के संयोजक आचार्य देवव्रत जी के प्रयत्न और साहस के कारण ३ मार्च को शराब के ठेकों की नीलामी पर प्रदर्शन काफी हंगामापूर्ण रहा। यद्यपि गुप्तचर विभाग की सूचना के आधार पर पुलिस ने एक दिन पूर्व ही गुरुकुल की नाकाबन्दी कर दी थी। गत वर्ष भी प्रदर्शन से पूर्व सभा के प्रचारकों के साथ गुरुकुल ब्रह्मचारियों का विश्वविद्यालय के तीसरे द्वार पर पुलिस के सैकड़ों सिपाहियों ने हथियारों से लैस होकर बलात् गिरफ्तार कर लिया था। इस बार सभा के प्रचारकों का जत्था फरीदाबाद के प्रदर्शन के पश्चात् २ मार्च सायंकाल कुरुक्षेत्र स्थित महर्षि दयानन्द वैदिक धाम में ही ठहर गए थे, जहां सभा कार्यालय के नवयुवक लिपिक श्री मनजीतसिंह ने डा० ओम्प्रकाश ललित के सहयोग से आवास तथा भोजन की व्यवस्था की थी। आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं से यहीं से सम्पर्क किया गया। कार्यक्रम के अनुसार ३ मार्च को प्रातः गुरुकुल के अध्यापक तथा ब्रह्मचारी अपना भेष बदलकर तथा पुलिस वालों को चकमा देकर वैदिक धाम के सामने पुराने बस अड्डे के पास पहुंचने में सफल हो गये। बैनर आदि छिपाकर रात्रि को ही किसी दुकान पर रख दिये थे। उसी स्थान पर हरयाणा विकास पार्टी के श्री साहबसिंह सैनी पूर्व विधायक तथा सभा के वकील चौ० अमरसिंह जी के नेतृत्व में उनके कार्यकर्ता भी उपस्थित हो गये। कुमारी सुदेश जी महिला सांस्कृतिक संघटन की बहिनों के साथ भारी संख्या में पहुंच गई। स्वामी आदित्यवेश भी अकेले अपनी कार में इस प्रदर्शन में सम्मिलित हो गये।

आचार्य देवव्रत के नेतृत्व में १० बजे सभा के कार्यकर्ताओं पं० अतरसिंह आर्य, पं० चन्द्रपाल सिद्धान्त शास्त्री, आर्यवीर शिवकृष्ण, पं० धर्मवीर आर्य, श्री सत्यपाल आर्य, श्री मनजीतसिंह, चौ० भगवानसिंह आदि ने आर्यसमाज तथा गुरुकुल के अध्यापकों तथा ब्रह्मचारियों ने ओ३म् ध्वजों एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के शराबबन्दी बैनरों के साथ ज्यों ही प्रदर्शन आरम्भ किया, पुलिस के सैकड़ों सिपाहियों ने सड़क पर खड़े होकर प्रदर्शन स्थल की ओर बढ़ने से रोक दिया। परन्तु आचार्य देवव्रत जी के निर्देश पर गुरुकुल के सैकड़ों ब्रह्मचारी आगे पीछे होकर पुलिस के सिपाहियों की घेराबन्दी तोड़ कर उनसे आगे निकल गये और पूरी शक्ति तथा उत्साह के साथ "जो आर्यसमाज से टकरावेगा चूर चूर हो जावेगा, लाठी गोली खावेंगे, शराब बन्द करवावेंगे, आई फौज दयानन्द वाली, रस्ता कर दो खाली" आदि गगनभेदी जयघोष करते हुए आगे ही आगे बढ़ गये। स्वामी श्रद्धानन्द चौक पर पुलिस ने पुनः रोकने का प्रयत्न किया परन्तु गुरुकुल के वीर सैनिकों ने स्वामी श्रद्धानन्द से बलिदान होने की प्रेरणा प्राप्त करके अपनी जान हथेली पर रखकर पुलिस के सिपाहियों को धक्के लगाकर उनकी घेराबन्दी को पुनः तोड़ने में सफल हो गये और अपना मार्ग बदलकर जहां शराब रूपी जहर के ठेकों की नीलामी हो रही थी, उसके समीप पहुंच गए। जिला प्रशासन ने अपनी असफलता की स्थिति में सड़क पर पुलिस की दो चार गाड़ियां आगे खड़ी कर दी और थोड़ा पुलिस को चौकस कर दिया। पुलिस की भारी फोर्स हथियारों के साथ खड़ी हो गई। प्रदर्शनकारी निहत्थे थे। अतः प्रदर्शन को शराबबन्दी सम्मेलन के रूप में परिवर्तित कर दिया। सभा के क्रान्तिकारी श्री अतरसिंह आर्य, पं० चन्द्रपाल सिद्धान्त शास्त्री हविपा के नेता श्री साहबसिंह सैनी, कुमारी सुदेश तथा आचार्य देवव्रत आदि नेताओं ने प्रदर्शनकारियों तथा पुलिस के सिपाहियों को इस अवसर पर सम्बोधित करते हुए कहा कि हरयाणा सरकार शराब पिलाकर जो किसान मजदूरों से करोड़ों रुपये राजस्व के रूप में प्रतिवर्ष एकत्रित कर रही है, उससे हरयाणा का विकास नहीं हो रहा अपितु विनाश हो रहा है। यदि शराब के ठेकों की आमदनी से जनता का विकास होता तो हरयाणा प्रदेश के बनते ही शराब के ठेके खोलने आरम्भ हो गए थे, परन्तु शराब के प्रचार तथा प्रसार से भ्रष्टाचार बढ़ता चला गया। आपसी झगड़ों में वृद्धि हुई। शराब के कारण दुर्घटनाओं का तांता लगने लगा। मुकदमेबाजी में करोड़ों रुपये की हानि होने लगी। बहन बेटियों की इज्जत सरेआम लूटी जाने लगी। आज ६० प्रतिशत जनता शराब के नशे में फंस चुकी है। हरयाणा के नवयुवक पथभ्रष्ट हो रहे हैं। इस प्रकार हरयाणा का भविष्य खतरे में है।

अब समय आ गया है कि हरयाणा की बहरी तथा शराब समर्थक सरकार को सावधान किया जावे कि आगामी चुनाव से पूर्व हरयाणा की पवित्र धरती पर पूर्ण शराबबन्दी लागू की जावे। अन्यथा शराब पिलाने वाली सरकार के मन्त्री तथा विधायक चुनाव में मुंह की खावेंगे। पुलिस कर्मचारी शान्तिपूर्वक सुनते रहे। आचार्य देवव्रत ने उपस्थित जिला अधिकारियों को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि इस

(शेष पृष्ठ ८ पर)

होली पर विशेष—

यह लो, आ गई होली

(सुखदेव शास्त्री वानप्रस्थी महोपदेशक दयानन्दमठ, रोहतक)

संसार के कालचक्र का संचालक, प्रवर्तक एवं सूत्रधार परमात्मा है। जैसा कि ऋग्वेद के प्रथम मण्डल, सूत्र १५५, मन्त्र में ६ में कहा गया है—

'चतुर्भिः साकं नवतिं च नामभिश्चक्रं न वृत्तं।'

अर्थात् प्रभु द्वारा प्रवृत्तित एवं संचालित यह कालचक्र भिन्न भिन्न नामों से चौरानवें भागों वाला है। जैसे कि—संवत्सर १, अयन-उत्तरायण-दक्षिणायन २, ये दोनों छः छः महीने तक क्रमशः रहते हैं, जैसे—सूर्य २३ जून से २२ दिसम्बर तक छः मास दक्षिणायन में रहता है और २३ दिसम्बर से २२ जून तक छः मास उत्तरायण में रहता है। इस उत्तरायणकाल में सूर्य अपनी किरणों से जल का आकर्षण करके उन्हें अन्तरिक्ष में धारण करता रहता है, और जब वह दक्षिणायन की ओर जाने लगता है, तब ही वर्षा ऋतु आरम्भ होती है। इन दोनों अयनों में उत्तरायणकाल को शास्त्रों में सर्वोत्तम माना है। जैसा कि भीष्म पितामह ने भी इसी अयन में मृत्यु की कामना की थी हुआ भी ऐसा ही।

शिशिर व हेमन्त को मिलाकर पांच ऋतुएं, मास १२, अर्धमास दो शुक्ल व कृष्ण पक्ष, दिवस ३०, याम प्रहर ८, लग्न मेष वृषादि १२, माघ फाल्गुन के इन मासों में मेष व वृष राशि होती है। ये सब गतियां हैं। इन्हें भिन्न भिन्न नामों से—चतुर्भि साकम्-चार के साथ, नवति च-नब्बे अर्थात् कुल चौरानवें भागों वाले चक्रं न वृत्तम्-एक चक्र के समान गोलाकार, व्यतान्-विशिष्ट गतिवाले इन काल चक्र अवयवों को, अवोविपत्—वे प्रभु कम्पित कर रहे हैं। प्रभु ही इस काल चक्र को चला रहे हैं। वे प्रभु इस ब्रह्माण्डरूप शरीर वाले हैं। सब लोक लोकान्तरो को विशेष मानपूर्वक चला रहे है। इसी कालचक्र में—

यह लो आ गई होली

लगभग सवा महीना व्यतीत हुआ है, हमने वसन्त पंचमी का पर्व मनाया था। हमने ऋतुराज वसन्त के शुभागमन का चालीस दिन पहले ही स्वागत किया था। किन्तु तब से अब तक प्रकृति की छटा में बहुत परिवर्तन आ गया है। उसका रूप-यौवन सुन्दर होता चला गया है। प्रकृति के चर-अचर जगत् ने भी अब अपना बाना बदल लिया है। बाग-बगीचों में फूलों की बहार तो है लेकिन किसान के खेतों में पके हुए जौ, गेहूं—जिनके बाल के दानों में सफेद दूध का अन्न रस भरा है, और पकने की तैयारी में खड़े हैं। इस अषाढ़ी अन्न के शुभागमन को प्रतीक्षा में भारत को कृषि प्रधान जनता और सबका अन्नदाता किसान मन में खुशी भरे हुए 'होली का त्यौहार' मनाने की तैयारी कर रहा है। तैयारी भी क्यों न करे, जिसने आषाढ़ से लेकर वर्ष भर कड़ी जुताई करके अपने-अपने खेतों की तैयारी की थी, अब उसके परिश्रम का सफल परिणाम आने वाला है। असल में यह त्यौहार कृषकों का ही है। अनेकों व्यापारिक धन्धों में फंसे, अत्यन्त दिन रात व्यस्त, स्वार्थान्धजन इसे क्या मनायेंगे ?

किसान अपने खेतों में उत्पन्न अनेकों साग व पत्तियों व नए उत्पन्न अन्नों का सेवन करके अपने शरीर के अनेक रोगों का इलाज भी कर लेते थे। चने की टाट व गेहूं की बालों को अग्नि में भूनकर 'होले' कहते थे। इसी को त्यौहार रूप में मनाने को 'होलिकोत्सव' कहा जाता है। होले खाना शरीर के लिए बहुत ही उपयोगी होते हैं। जैसे कि भावप्रकाश में कहा है—

'होलकोऽल्पानिलो, मेदकफदोषश्रमापहः।'

अर्थात् होले स्वल्पवातक हैं। मेद (चर्बी) कफ और थकान के दोषों का शमन करते हैं। अतएव किसान प्रत्येक मौसम में अपने खेतों में उत्पन्न अन्नों से अपना इलाज स्वयमेव कर लेता था। उसे मैडिकल में जाने की आवश्यकता नहीं होती थी, और न उस समय कहीं पर मैडिकल थे। असल में वह रोगी होता ही न था। उसका आहार, विहार, विचार उत्तम था। गाय घर पर चलता फिरता मैडिकल था। उसके घी-दूध-दही, गोबर-मूत्र आदि सभी तो दवाई का काम करते थे। उसके खेतों में उत्पन्न 'बथुआ' पेट के अनेक रोगों की दवा है। वैज्ञानिक उपायों से बनाई गई 'सीत राबड़ी' पेट के लिए रसायन का काम करती थी। आयुर्वेद का प्रचलन था। छोटी-मोटी दवाइयां तो सभी जानते थे-विशेषकर माताएं। उनके पास एक सब से बड़ा इलाज यज्ञ-हवन का था, जिसकी सुगन्धि से सारा ही वायुमण्डल रोग रहित होकर सुगन्धित रहता था। खांसी-जुकाम, बुखार, तपेदिक तक का इलाज हवन यज्ञों से स्वयमेव हो जाता था। उसके लिए सर्वोत्तम सामग्री होती थी, नए पके जौ, गेहूं आदि के अन्न की। इसी की वे अग्नि में आहुति देते थे। घर में नए अन्न आने पर सभी लोग 'देवयज्ञ' करते थे। देवयज्ञ में सभी लोग संगठित होकर अपनी एकता का परिचय देते थे। यहाँ तक कि गांव के बाहर 'होली' के रूप में एक बड़े यज्ञ का आयोजन करते थे। उसमें बहुत समय पहले ही 'कैर' की लकड़िया एकत्र करते थे, फागुन सुदि पूर्णिमा के दिन यह यज्ञ होता था। इस यज्ञ में जहां पीपल की समिधा डालते थे, इसके साथ ही गीली 'कैर' की समिधाएं भी डालते थे, साथ ही गोबर के बने उपले भी डालते थे। इसका वैज्ञानिक अथवा याज्ञिक कारण यह था कि इन दोनों के उठे धुए से आकाश मे बादल न रहते थे, क्योंकि इन्ही दिनो में यदि वर्षा हो जाती थी तो 'ओले' अवश्य पड जाते थे, जो फसल को नष्ट कर देते थे। इसके साथ ही इस समय हुई वर्षा से चने की टाटो मे कीडे भी लग जाते थे। अत वर्षा को रोकने का उपाय किसान इस सामूहिक वृहद् यज्ञ से करते थे। इस प्रकार शुद्ध रूप से यह त्यौहार मनाया जाता था। यह था इसका असली रूप। महाभारत युद्ध के बाद वैदिक धर्म का ह्रास होने के कारण इन यज्ञों का रूप ही बिगडता चला गया। अब आया कलियुग। चारों ओर 'होली का हुल्लड, होली का हुडदंग, होली का नंगा नाच होने लगा।' जो त्यौहार खुशी का त्यौहार था, आज उसके बिगड़े हुए रूप को देखकर तो हम अपने घरों के किवाड़ ही बन्द करलेते है।

यह देखो—नत्थू शराब के नशे मे धुत्त होकर गलियों में पडा-पडा होली खेलने का निमन्त्रण दे रहा है। इधर यह देखो—बदलू की बहू हाथ में टट्टी की भरे पानी की बाल्टी लेकर और हाथ में 'कोलडा' लेकर दूसरे पाने में होली खेलने आई है। कई शराबियों ने इसके साथ खेलना शुरू कर दिया है, यह रात तक होली खेलते रहे, घर से अनुपस्थित रहे। कैसे खेले होंगे होली, भगवान् ही जाने।

इधर यह देखो—सड़क पर आने जाने वाली सभी बसों में गन्दा-गोबर मिला हुआ पानी लड़के फेंक रहे हैं। कई यात्रियों की आखों में चोटे आई है। बसों के शीशे तोड़ दिए गए हैं। यह हरयाणा की लठमार होली। इस कारण से सभी बसे बन्द कर दी गई हैं। सरकार को लाखों का नुकसान इससे हुआ। सडक खाली हो गई है। एक सख्त बिमार था, उसे डाक्टर के पास ले जाना था—सवारी कोई मिली नहीं, उसकी यहीं पर मौत हो गई।

बडे खेद की बात है बड़े-बडे राष्ट्रपति व प्रधानमन्त्री भी इस प्रकार की होली खेलते हैं, वे आपस में गुलाल का रंग लगाते हैं। यदि गुलाल का रंग आखों मे गिर जाय तो अन्धे होने का भय रहता है। अच्छा होता यदि इत्र लगाते—इसे सही ढग से मनाते, यज्ञ हवन करते। बसों को कोई भी पत्थर न मारे ऐसा सख्त आदेश देते। बसों को चलती रखते। लोगों को सही रूप से होली मनाने की बात कहते। जो होली खेले उसी के साथ होली खेली जाती तो कोई भी साम्प्रदायिक दंगे न होते। उन्होंने इफ्तार की पार्टी मुस्लिमों

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आहार शुद्धि

मनुष्य शरीर अन्नमय कोष है। इसीलिए भोजन मनुष्य की पहली और अनिवार्य आवश्यकता है। आहार प्रकारान्तर से जीवन ही है, कोई विद्वान्, कवि या अन्य कलाकार ज्ञान, काव्य या कला खाकर पेट नहीं भर सकता। तैत्तरीयोपनिषद् के अनुसार इस पृथ्वी पर रहने वाले समस्त प्राणी अन्न से ही उत्पन्न होते हैं। अन्न से ही जीते हैं। अन्त में अन्न में ही विलीन हो जाते हैं। अन्न ही सबसे श्रेष्ठ है। अन्न रसमय शरीर के भीतर जो प्राण पुरुष है वह अन्न से व्याप्त है। वह प्राणमय पुरुष ही आत्मा है। अन्न औषधि है। सभी प्राणियों के क्षुधाजन्य सन्तापों को दूर करता है। उनके मन की गतिविधियों, दैनन्दिन जीवन की हलचलों का भी निर्धारण करता है।

आहार शास्त्री बताते हैं कि ८० प्रतिशत रोगों का कारण आहार का व्यतिक्रम हैं। पाचन सम्बन्धी अनेक असन्तुलन विभिन्न रोगों के पूर्व संकेतमात्र हैं। शरीर के अन्दर प्रभु ने ऐसी व्यवस्था कर दी है कि हमें कितना खाना चाहिये और कब खाना बन्द कर देना चाहिये यह स्वयं मालूम हो जाता है। यदि हम उस संकेत का पालन नहीं करते तो अनेक रोगों के शिकार बनते हैं। अन्न तीन भागों में विभक्त हो जाता है। पहले भाग से स्थूल अंश बल दूसरे भाग से मध्यम अंश रक्त, मांस और तीसरे भाग सूक्ष्म अंश से मन बनता है। इसलिए आहार शुद्ध होने पर चित्त को शुद्धि होती है। आहार जीवन का आधार है अतः इसे स्वाद के लिए नहीं अपितु औषधि रूप में सात्विकतापूर्वक लेना चाहिये। अन्न जो जीव के जन्म और पालन की श्रेष्ठता रखता है वह जीवों को खा भी जाता है यदि मनुष्य अभक्ष्य और अति पर उतर आता है।

इसलिए प्राचीन ऋषि अनुपयुक्त अन्न को त्याज्य ठहराते थे। उस समय मात्र पुण्यात्माओं का ही अन्न स्वीकार किया जाता था। किसी के सज्जन, धर्मपारायण होने की कसौटी भी एक ही थी—उसने किसका अन्न खाया, वह किस प्रकार उपार्जित था? पुण्यात्मा वही कहलाता था जिसका लोग अन्न ग्रहण करते थे।

अन्न से शरीर में जीवनी शक्ति आती है। प्राण ही शरीर में अन्न के रस को सर्वत्र फैलाता है। यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि प्राणों को आहार न मिलने पर वे शरीर को धातुओं को ही सोखने लगता है। इसीलिए कहा गया है कि 'जैसा खाये अन्न वैसा बने मन'। यह बात अत्यन्त सारगर्भित है। आत्म परिष्कार की साधना में आहार शुद्धि एक आवश्यक व्रत है। मन को सात्विक बनाए बिना आत्मोत्कर्ष नहीं हो सकता और मन आहार से ही सात्विक हो सकता है। अतः आहार शुद्धि की प्रथम आवश्यकता है।

तमोगुणी, उत्तेजित करने वाला, अनीति से उपार्जित अन्न, यहां तक ही नहीं कुसंस्कारियों द्वारा पकाया गया, परोसा गया भोजन न केवल मनोविकार उत्पन्न करता है वरन् रक्त को अशुद्ध, पाचन को विकृत करके स्वास्थ्य संकट भी उत्पन्न करता है। आत्मिक प्रगति और साधना की सफलता में कुधान्य, अभक्ष्य का विषवत प्रभाव पड़ता है। इसीलिये तो पिप्पलादि ऋषि पीपल के फल, कणाद जंगली धान्य, कृष्ण और रुक्मिणी जंगली बेर, पार्वती सूखे पत्तों पर रहते थे। यह उनके आहार तप थे।

सात्विक आहार से दीर्घ आयु प्राप्त होती है। आहार शुद्ध होता है तो वृद्धि शुद्ध होती है। मनुष्य का चरित्र उन्नत होता है। चरित्र उन्नत हो तो शान्ति प्राप्त होती है। भगवान् श्रीकृष्ण ने भी गीता में उचित भोजन पर बल दिया है। जिसका जिह्वा पर संयम नहीं उसका शरीर के किसी अङ्ग पर संयम नहीं हो सकता।

महाभारत का युद्ध समाप्त होने पर युधिष्ठिर आदि भीष्म जी के पास वहां पहुंचे जहां वे शर शया पर लेटे हुए थे। विनय करने पर भीष्म जी धर्मोपदेश कर रहे थे। युधिष्ठिर प्रश्न करते थे। पितामह धर्मोपदेश करते थे। एक प्रश्न के उत्तर के बाद द्रोपदी अचानक हंस पड़ी। भीष्म जी बोले—बेटी! तू इतनी शीलवती है फिर असमय बड़ों के सामने क्यों हंसी? द्रोपदी ने कहा—पितामह क्षमा करें। इस समय तो आप बड़े ऊंचे ज्ञान ध्यान की बात कर रहे हैं जिसे सुनकर मन को शान्ति मिलती है, हृदय के कपाट खुलते हैं किन्तु दुर्योधन की राज्यसभा में जब मेरा अपमान हुआ, जब दुराचारी दुःशासन ने मेरे चीर उतारने आरम्भ किए तब मेरे चिल्लाने, पुकारने पर भी आप क्यों चुप बैठे रहे? उस सभा में तो आप भी विराजमान थे। आपका यह ब्रह्मज्ञान उस समय कहां चला गया था? भीष्म पितामह ने गुत्थी सुलझाते हुए कहा—बेटी! तेरा सोचना ठीक ही है। उस समय मैं दुर्योधन का अन्यायपूर्वक अर्जित अन्न (कुधान्य) खा रहा था। इसलिए मेरी बुद्धि अशुद्ध हो गई थी व मन कुसंस्कारयुक्त हो गया था इसी कारण मैं अन्याय के विरुद्ध न बोल सका। अब अर्जुन के तीरों ने मेरे शरीर से ढेरों रक्त निकालकर उस अन्न के प्रभाव को समाप्त कर दिया है। अतः मेरा मन आत्मा पुनः जाग उठी है और ब्रह्मज्ञान वापिस आ गया है।

पाप की कमाई का अन्न मन को दूषित कर देता है। एक साधु कुटी बनाकर जंगल में रहते थे। उस राज्य के राजा को यह बुरा लगा कि उनके राज्य में एक त्यागी, तपस्वी, सन्त इतनी रद्दी सी कुटी में रहे। यह उन्हें अपने राज्य का अपमान सा लगा। राजा उनकी कुटी पर गया और निवेदन किया—प्रभो! आप इस रद्दी सी कुटी में रहते है इसे मैं अपना अपमान समझता हूं। आपके लिए नगर में ही आश्रम बनवा दूंगा आप उसमें रहने की कृपा करें। साधु ने प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया और कहा—राजन! हमारे लिए तो साधना हेतु जंगल में हो मंगल है आप बिल्कुल दुखी न हों। लकी बुरी होती है। राजा रोज साधु से अपने अनुरोध को दोहराता रहा। आखिर एक दिन साधु महाराज ने स्वीकृति दे दी। राजा उसी दिन सन्त जी को अपने साथ ले गया और महल में एक कमरा अलग देकर उनकी सब व्यवस्था कर दी तथा कर्मचारियों को आदेश दे दिये कि शीघ्र ही एक सुन्दर उद्यान सहित आश्रम नगर के एक किनारे पर बनाया जाय। साधु जी से निवेदन किया कि जब तक निर्माण न हो जाय महल में ही रहें। साधु जी रहने लगे महल से ही भोजन मिलने लगा।

तीन माह बाद एक घटना हुई। रानी स्नानागार में हीरों का हार भूल गई। कुछ देर बाद सन्त जी स्नान करने हेतु स्नानागार में पहुंचे। हार देखकर मन बदल गया। हीरों की चमक ने उन्हें चमका दिया। वे नहाना धोना तो भूल गये। हार उठाकर कोपीन में छिपाया और शीघ्रता से राज भवन से निकलकर विशाल वन का रास्ता पकड़ लिया।

इधर रानी ने जब श्रृंगार किया तो हार न देखकर स्मरण आते ही दासी को स्नानागार में भेजा किन्तु वहां हार होता तो मिलता। स्वयं गई। किन्तु वहां हार कहां था? अब खोज हुई स्नानागार में रानी के बाद कौन गया था? पता लगा स्वामी जी गये थे। रानी ने कहा उन्हीं से पूछो। उन्होंने कहीं रख दिया होगा। साधु जी से पूछें तो तब जब वे वहां हों उनका तो वहां चिन्ह भी न था। सबको यह विश्वास हो गया कि साधु जी हार चुरा ले गये। राजा के कानों तक बात पहुंची। उन्होंने चारों ओर सिपाही दौड़ाये किन्तु सब वापस आ गये स्वामी जी का कोई पता न चला।

साधु जी दिनभर भागते रहे। भागते-भागते जब ऐसे स्थान पर पहुंच गये जहां उनको पकड़े जाने की चिन्ता न रही। एक वृक्ष के नीचे भूख से व्याकुल बैठ गये। कन्दमूल ढूंढ़ा। मिला तो सही किन्तु ऐसा मिला कि खाने से पेट तो भर जाएगा किन्तु दस्त लगेंगे। पहले पेट भरना था अतः पेट भर लिया और वहीं लेट गये। आधा घण्टा बाद ही पेट में बादल गरजने लगे। रातभर दस्त होते रहे। रात्रि व्यतीत हुई सुबह हुआ। उनके मन में विचार आया—मुझे यह क्या हो गया कि रानी का हार चुरा ले आया। धिक्कार है तेरे साधुपन पर। क्या इसीलिए साधु बना था? चल हार वापस करके आ।

विचार आते ही साधु नगर को वापस चल दिये। नगर में घुसते ही हल्ला हो गया चोर साधु आ गया। लोग कहने लगे उसे पकड़ो। साधु ने कहा—पकड़ने की आवश्यकता नहीं है मैं स्वयं राजा के पास जा रहा हूं। सीधा राजमहल पहुंचकर राजा के आगे हार रखकर बोले यह लो राजन मैं तुम्हारा हार चुरा ले गया था उसे वापस करने आया हूं। राजा ने पूछा—क्या स्वयं आये हैं। साधु बोले—हां मैं स्वयं ही आया हूं। राजा ने आश्चर्य से कहा—स्वयं ही आये हो तो इस हार को आप क्यों ले गये थे? और ले गये थे तो फिर इसे वापस करने क्यों आए हो?

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आयी होली

ऊंच-नीच का भेद मिटाएं,
मानवता की ज्योति जलाएं,
बढ़ें निरन्तर प्रगति पथों पर-
सुन्दर सा संसार बनाएं,

नव आशा, अभिलाषा लेकर-
आयी होली, आयी होली।
सब के मन को भायी होली॥

प्रेम बढ़े फिर से जन-जन में,
'पर उपकार' भाव हो मन में,
शांति सुखों की बहे निरन्तर—
धारा, जगती के कण-कण में,

नव जागृति का लिए संदेशा—
आयी होली, आयी होली।
सबके मन को भायी होली॥

कर्मशील हों पुनः सभी हम,
धर्मशील हों पुनः सभी हम,
भारत मां का मान बढाए—
आगे बढ़कर पुनः सभी हम,

ऋतु बसन्त में हमें जगाने—
आयी होली, आयी होली,
सबके मन को भायी होली॥

—राधेश्याम आर्य एडवोकेट
एम. ए., एल. एल. बी., साहित्यरत्न विद्यावाचस्पति

बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

शराब ने हरयाणा का अमन नष्ट कर दिया

शराब को विश्व के जन स्वास्थ्य की चौथी गम्भीर एवं घातक समस्या माना गया है लेकिन इस चेतावनी के बावजूद भी हरयाणा में शराब की खपत का ग्राफ निरन्तर ऊंचा उठता जा रहा है। आजादी के बाद शराब का प्रचलन ५० गुणा बढा है। क्योंकि शराबखोरी को सरकार का नैतिक समर्थन प्राप्त है। शराब के खुले निर्बाध दौर ने ऋषियों की परम पवित्र वसुन्धरा को नरक बना दिया है। शराब से अमन व चैन नष्ट होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में आर्यसमाज के युवाओं को सामाजिक व आर्थिक क्रान्ति के लिए तैयार होना चाहिए। उक्त आह्वान हरियाणा आर्य युवक परिषद् (रजि०) शाखा के प्रमुख जिला अध्यक्ष मनजीतसिंह दहिया ने परिषद् के ब्लाक स्तरीय कार्यकर्ता अधिवेशन में किया।

श्री मनजीत ने कहा कि शराब के अलावा फिल्मो, वीडियो फिल्मों और टी.वी. के कार्यक्रमों में प्रदर्शित दृश्यों के कारण गृहस्थी परेशान है। छोटे-छोटे बच्चों के कोमल मन पर फिल्मों द्वारा प्रदर्शित दृश्य का इतना खराब प्रभाव पड़ता है जिससे वे जीवन पर्यन्त मुक्त नहीं हो सकते।

(पृष्ठ ३ का शेष)

को खुश करने के लिए तो दी, किन्तु क्या कोई मुस्लिम नेता भी होली मिलन की पार्टी उन्हें देने के लिए तैयार है? यदि नहीं तो इफ्तार की पार्टी का पाखण्ड क्यों? इसी प्रकार होली के दिन तो हरयाणा में शराब की नदियां बहेंगी। होली तो खुशी के रूप में नहीं मनेगी, दुःख, लड़ाई झगड़ा अवश्य बढेगा। क्या करें? इसे पहले 'कुश्ती' के रूप में मनाते थे? वह प्रथा भी आज समाप्त है। क्या करें? अतः इसे हवन यज्ञादि करके मनाएं। यजुर्वेद के अध्याय १८ के मन्त्र ३२, ३३, ३४ तथा अथर्व के मन्त्र काण्ड १८, मन्त्र १ से ७ तक आहुति देकर यज्ञ को पूरा करें। हलवा खीर का भोजन करें। होली के हुड़दंग से बचकर रहें। शराब न पावें। भाइयों से आपस में मिलें। नाराजगी दूर करें। तभी समाज का भला होगा।

आज भी सच कल भी सच

(कुन्दनलाल हमदर्द एम० ए०)

जहां प्रिय लघुओं से प्यार नहीं गुरु वृद्धों का सत्कार नहीं
कांटों का चमन हो जाता है।
जहां सास सताई जाती हो या बहू जलाई जाती हो
घर कोप भवन हो जाता है।
जहां नारी उठाई जाती हों निर्वस्त्र घुमाई जाती हों
वहां लंका दहन हो जाता है।
जिस घर में बोतल खुलती हो खरदूषण की जय बुलती हो
वहां वश हनन हो जाता है।
हो दान दहेज की चाह जहां पर धन पर रहे निगाह जहां
खुशियों का हरण हो जाता है।
वह घर जहां नाम की होड़ लगे सहयोग आदर की जोत जगे
सुख शान्ति सदन हो जाता है।
जिस कौम में मेल मिलाप नहीं जहां चुगली करना पाप नहीं
आरम्भ पतन हो जाता है।
जिस संघ में ईर्ष्या जलन रहे, आपा धापी का चलन रहे
कुरुक्षेत्र का रण हो जाता है।
जहां लेना देना खरा नहीं जहां गणित का पेटा भरा नहीं
चुपचाप गबन हो जाता है।
जहां नेता जल्दी में आते हों जल्दी वापिस चले जाते हों
श्रोता का मरण हो जाता है।
यदि वक्ता स्वार्थ रहित हो तो यदि तर्क कटाक्ष उचित हो तो
भाषण में वजन हो जाता है।
जहां राष्ट्र विरोधी सुर लय हो जहां सच कहने में भी भय हो
खतरे में वतन हो जाता है।
वह शासन जायेगा, जिस से जाकर पछतायेगा जिस से
अन्याय सहन हो जाता है।
यह देख के इंग्लिश पढ़ते हैं सब भारत इग्लैंड बनेगा अब
दुःख और गहन हो जाता है।
यह सुनकर बन गये सज्जन दुष्ट बेचैन अधीर उदास रुष्ट
हमदर्द का मन हो जाता है।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज छानी बड़ी का वार्षिक उत्सव दिनाक १८, १९, २० फरवरी १९९५ को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। १८ फरवरी यज्ञ के बाद गांव मे जलूस निकाला गया। जो बहुत ही प्रेरणादायक एवं उत्साहवर्धक रहा। जलूस की समाप्ति पर सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने ओ३म् ध्वज फहराया। राष्ट्रीय गान के बाद दो मिनट के लिए मौन खड़े होकर स्वर्गीय ईशानन्द जी को श्रद्धांजलि दी गई।

इसके अतिरिक्त स्वामी सुमेधानन्द जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा (राज०), पं० भरतसिंह जी शास्त्री मुख्याधिष्ठाता कन्या गुरुकुल पचगांव, पं० भरतलाल शास्त्री हांसी, सभा उपदेशक श्री क्रान्तिकारी जी, आखरी २० फरवरी को सायं आर्यसमाज के वयोवृद्ध मूर्धन्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा भी पधारे।

सभी विद्वानों ने वेदों का महत्व, धर्म क्या है? देश में बढ़ रहे पाखण्ड एवं सम्प्रदाय, महर्षि दयानन्द जी तथा स्वामी ईशानन्द जी के जीवन एवं कार्य, क्रान्तिकारी पं० रामप्रसाद बिस्मिल जी का जीवन एवं कार्य, नारी शिक्षा, सोलह संस्कारों का महत्व, आश्रम एवं वर्ण व्यवस्था तथा शराबबन्दी पर इतिहास के उदाहरण देकर विस्तार से विचार रखे।

पं० जबरसिंह खारी (हांसी), पं० दीपचन्द आर्य (खेड़ा), पं० ईश्वरसिंह व महाशय सुमेरसिंह (महम चौबीसी) के शिक्षाप्रद समाज सुधार के भजन हुए। प्रतिदिन यज्ञ किया गया। यज्ञ में बड़ी श्रद्धा से नर नारी घृत लाए। कई नर नारियों ने यज्ञोपवीत धारण किया। मंच सचालन मा० नोरगराम ने किया। महाशय साधुराम आर्य छानी निवासी ने शीघ्र यज्ञशाला बनाने का अपना वचन दोहराया। तीनों दिन प्रचार में श्रोताओं की हाजरी रिकार्ड तोड़ रही।

महावीरसिंह आर्य
मन्त्री-आर्यसमाज छानी बड़ी

सामवेद पारायण महायज्ञ तथा वेदप्रचार

श्री सत्यपाल जी आर्य सुपुत्र श्री नाथाराम जी ने १५ से १९ फरवरी १९९५ तक अपने निवास स्थान पातड़ा मण्डी, जिला पटियाला (पंजाब) में सामवेद पारायण यज्ञ सोल्लासपूर्वक सम्पन्न कराया। इस यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी वेदरक्षानन्द जी आर्ष गुरुकुल कालवा (जीन्द) हरयाणा थे। इस कार्यक्रम में आचार्य चेतनदेव जी वैदिक साधना आश्रम चामड़ भैया (अलीगढ़) उत्तरप्रदेश और आचार्य कृष्णदेव जी आर्ष गुरुकुल कालवा ने मधुर वेदपाठ और वेदोपदेश से मन्त्रमुग्ध कर दिया। श्री पं० धर्मपाल जी निर्मल खजूरी सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) की भजन मण्डली ने यज्ञोपरान्त तथा रात्रि वेदप्रचार में महर्षि दयानन्द गुणगान, बलिदानी वीरों की गाथा और गृहस्थियों के कर्त्तव्यों का रामायण महाभारत के इतिहास द्वारा उद्बोधन किया। इस पवित्र महोत्सव में श्री योगध्यान जी गुप्ता (कैथल), श्री धर्मपाल जी आर्य (खन्नौरी), श्री राजकुमार जी मगला इत्यादि इष्टमित्रों की सेवा सुश्रूषा अत्यन्त प्रशंसनीय रही। (प्रीतिलाल आर्य कैथल)

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज औरंगाबाद मोतरोल जिला फरीदाबाद का वार्षिक उत्सव दिनांक १०, ११, १२ फरवरी, १९९५ को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत् के मूर्धन्य तथा तपोनिष्ट स्वामी ओमानन्द सरस्वती प्रधान हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रान्त से शराब बन्द करवाने को बलपूर्वक घोषणा की। सभी आर्यों ने पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया। इस पवित्र उत्सव में आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक प० ओमाराम प्रेमी, पं० नरदेव आर्य भरतपुर, श्री तेजवीर हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा, पं० कमलदेव आर्य मथुरा, श्री उदयवीर आर्य मथुरा, यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य आनन्दमित्र आर्य संचालक गुरुकुल भादस, श्री दिनेश आर्य शास्त्री तथा उच्चकोटि के विद्वान् आचार्य सत्यप्रिय तिजारा, श्री चतरसिंह आर्य मेवात आर्य प्रचार मण्डल पधारकर समाज में व्याप्त कुरीतियों तथा शराबबन्दी, महर्षि दयानन्द के उपकारों पर प्रकाश डाला। इस उत्सव में महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल भादस के ब्रह्मचारियों ने रस्से पर आसन, छुरी से आत्मरक्षा तथा लाठी द्वारा रक्षा प्रदर्शन विशेष आकर्षक रहा। सभा को ८००/- रुपये दान दिया। डालचन्द आर्य प्रभाकर, मन्त्री

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस

आज २४-२-९५ को आर्यसमाज सफीदों में स्वामी दयानन्द जी का जन्मदिन बड़े हर्ष के साथ मनाया गया जिसमें यज्ञ, भजन कीर्तन, उपदेश हुए। इसमें आर्यसमाज के सभी सदस्य, महर्षि दयानन्द विद्या मन्दिर की अध्यापिकाएं, विद्यार्थी तथा आर्य प्राथमिक विद्यालय का अध्यापकवृन्द, बच्चे सभी ने भाग लिया।

जयभगवान आर्य
प्रधान-आर्यसमाज सफीदों

(पृष्ठ ७ का शेष)

साधु जी कहने लगे—राजन! मैं जंगल में कुटी बनाकर सात्विक आहार खाता था। तीन मास तक मैं आपका अन्न खाता रहा। इससे मन मैला हो गया। हार को देखा तो मुझे विचार ही नहीं आया कि चोरी करना पाप है, चुपचाप हार को उठाकर चला गया। रात को लगे दस्त। तुम्हारा खाया हुआ सब अन्न शरीर से निकल गया मेरा साधुपन लौट आया तब मैंने सोचा—मैंने यह क्या किया?' इसलिए तुरन्त हार वापस करने चला आया। मुझे आपके महल में रहने की इच्छा न थी न ही आपके आग्रह का पालन किया था। अब मैं पुन: जंगल में जा रहा हूं। यह कहकर साधु रमते राम की तरह वहां से चला गया।

वास्तव में दूषित अन्न मन को विकारी बनाता है अत: आहार शुद्धि का जीवन मे विशेष महत्व होता है।

राशिफल का चक्कर

मैं बाहर धूप में बैठा समाचारपत्र पढ़ रहा था। उसी समय एक व्यक्ति आया और कहने लगा—अंकल जी ! एक मिनट पेपर दिखाना। मैंने पूछा—एक मिनट में क्या देखना है ? वह बोला—आज मेरी राशि में क्या लिखा है ? मैंने राशिफलवाला पर्चा निकालकर दे दिया। उसकी राशि में लिखा था "धन की प्राप्ति" बस उसने जाते ही पचास रुपए की लाटरी की टिकटें खरीद ली जिसका परिणाम दुखान्त रहा।

ऐसे ही एक दिन एक व्यक्ति की राशि में लिखा था—"यात्रा न करें, दुर्घटना का भय" उस व्यक्ति ने उस दिन इण्टरव्यू के लिए बाहर जाना था। अब वह राशिफल पढ़कर चक्कर में पड़ गया। मैंने उसे बहुत समझाया, भाई कुछ नहीं होगा परन्तु उसकी समझ में न आया। बल्कि यूं कहने लगा आप तो राशि मानते नहीं मैं तो मानता हूं। मैंने कहा—अच्छा अपना राशिफल किसी दूसरे अखबार में देखो, यदि वहां भी यही लिखा हो तो मत जाना। पास ही एक सज्जन के यहां 'दैनिक जागरण' आता था। उसमें उसकी राशि में लिखा था —"शुभ सूचना मिले, बिगड़े काम बनें" अब वह यात्रा के लिए तैयार होगया।

भाइयो ! राशिफल के चक्कर में मत पड़ो। यह राशिफल झूठ का पुलन्दा है, लगे तो तीर नहीं तो तुक्का है। मैं देखता हूं लोग प्रतिदिन अखबारों में अपना राशिफल पढ़कर जीवन को जानबूझकर घोर अन्धकार की ओर ले जारहे हैं। जो लोग राशिफल में विश्वास रखते हैं, मैं उनसे पूछता हूं, राम और रावण की एक ही राशि है। राम सत्संग हाल में बैठा है और रावण सिनेमा हाल में बैठा हुआ है अर्थात् दोनों के कर्म पृथक्-पृथक् हैं। बताओ दोनों के फल एक जैसे कैसे हो सकते हैं। जैसा करोगे वैसा ही पाओगे। मिर्च के बीज बोने पर धान पैदा नहीं हो सकता। प्रकृति का अटल नियम है कर्मों के अनुसार फल मिलता है। अतः अन्याय और अत्याचार के बुरे कर्मों को छोड़कर सच्चाई और ईमानदारी से काम करोगे तो आपकी समस्याएं आसान होती चली जायेंगी।

महाभारत में विदुर जी धृतराष्ट्र को समझाते हुए बताते हैं, हे राजन् ! जैसे-जैसे मनुष्य दुष्टता को छोड़कर कल्याणकारी कर्मों में अपने मन को लगाता है वैसे-वैसे हो उसके अभीष्ट कार्य सिद्ध होते जाते हैं। इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है।

हे राजन् ! यदि दुष्ट अपनी दुष्टता को नहीं छोड़ता है तो जगत् का शासक परमेश्वर ऐसी व्यवस्था करेगा कि दुष्ट अपनी दुष्टता के कारण नीचे गिर जाएगा।

गीता के अनुसार जब हम लोगों से कहते हैं कि कर्म करो फल की चिन्ता न करो तब एक भाई कहने लगा—अजी क्या कर्म करें हमारी तो किस्मत ही खराब है। जो काम करते हैं उसी में घाटा नुकसान उठाना पड़ता है। अभी एक भैंस खरीद कर लाये थे, चार महीने तो दूध दिया फिर बीमार होकर मर गई। पूछने पर पता चला इन्जेक्शन मार-मारकर दूध निकालते थे और दूध में पानी मिलाकर सप्लाई करते थे। आप कहीं भी किसी व्यक्ति को देख लेना जिसकी नीयत में बेईमानी भरी पड़ी है वह रोता ही रहेगा।

याद रखो ! बिना परिश्रम के हेराफेरी से जो धन घर में आगया वह अनेक प्रकार के संकट पैदा करेगा। केवल ईमानदारी को राशि का फल ही सुखदायी रहेगा। अक्ल के अन्धे ! राशिफल को पढ़कर चलने वाले पछताते ही रहेंगे।

नित्य अखबारों में पढ़ते हैं जो अपना राशिफल।
तान्त्रिक इनको फंसा लेते हैं करके कपट छल।
लूट ले जाते हैं इनका मान, मर्यादा व धन।
कौन समझायेगा इनको कैसे समझेंगे ये जन।

—देवराज आर्यमित्र,
आदर्शनगर (डी)
मसेरना रोड, बल्लभगढ़—१२१००४

मेवाती गान

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

तर्ज—कहे रमा से रेवती ।।

पिया बन गयो शराबी, न्यों कहे रमा से रेवती ।।
बहुत बुरी सौबत अपनाई।
मैं बोलू तो करे लड़ाई।
ये है जाये सब पै हाबी, न्यों कहे रमा से रेवती ।।१।।
घर में करता रोज फजीता।
मुर्गा खावै दारू पीता।
हरदम रहें नैन गुलाबी, न्यो कहे रमा से रेवती ।।२।।
स्वय कुल्हाडी लिए हाथ मे।
सभी शराबी फिरें साथ में।
ये छोरे पंजाबी, न्यों कहे रमा से रेवती ।।३।।
इनकी लगा बुद्धि पै ताला।
कोई नही खोलने वाला।
दे घुमा ज्ञान की चाबी, न्यों कहे रमा से रेवती ।।४।।
सन्त स्वरूपानन्द ने आली।
बहुतेरो कविता लिख डाली।
कब होगी दूर खराबी, न्यों कहे रमा से रेवती।
पिया बन गयो शराबी, न्यों कहे रमा से रेवती ।।

(पृष्ठ २ का शेष)

मिनट के भीतर जिला उपायुक्त महोदय ने यहाँ आकर हम से ज्ञापन नहीं लिया तो प्रदर्शनकारी पुलिस का पुनः घेरा तोड़कर नीलामी स्थल पर कूच कर देंगे। हमें पुलिस की लाठी गोलियों से डर नहीं लगता। आर्यसमाज ने बड़े से बड़ा बलिदान देकर भारत को अंग्रेजों से आजाद करवाया था। अब हम राष्ट्र को शराब से भी आजाद करवाकर ही दम लेंगे। इस सिंह गर्जना को सुनकर जिला उपायुक्त महोदय ज्ञापन लेने के लिए वहां आ गए और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा हरयाणा विकास पार्टी की ओर से ज्ञापन दिया गया। उपायुक्त महोदय के चले जाने के पश्चात् पुलिस के कुछ शराबी सिपाहियों ने प्रदर्शन में सम्मिलित महिलाओं के साथ छेड़छाड़ करने पर प्रदर्शनकारी उत्तेजित हो गये और वीर महिलाओं ने जवाबी कार्यवाही करते हुए उन भ्रष्टाचारी पुलिस के सिपाहियों पर पत्थर फेंके। इस पर अत्याचारी तथा शराब के नशे में चूर सिपाहियों ने प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज कर दिया। घुड़सवार सिपाहियों ने भी अपनी शक्ति दिखानी चाही। इस प्रकार आर्यसमाज कोल जिला कैथल के ८० वर्षीय वृद्ध महाशय रामदिया जी के पैर पर लाठी लगने से उनकी टांग टूट जाने से वे गिर गये। उन्हें सभा उपदेशक पं० चन्द्रपाल ने उठाकर हस्पताल में पहुंचाया। उन्हें किसी अधिकारी ने नहीं सम्भाला। गुरुकुल के ब्रह्मचारी श्री गुलजारसिंह, श्री शमशेरसिंह, आर्यवीर दल हरयाणा के शिक्षक श्री शिवकृष्ण आर्य तथा महिला संगठन की नेता कु० सुदेश, ब्र० कमलेश भटनागर तथा हविपा के कई नेता पुलिस की लाठियों से घायल हो गए। इसपर भी अत्याचारी शासकों ने ३६ के लगभग प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार करके पुलिस की गाड़ियों में बलात् ले जाकर कुरुक्षेत्र तथा अम्बाला की जेलों में बन्द कर दिया। प्राप्त सूचनाओं के अनुसार जेल में भी शराबबन्दी कार्यकर्ताओं के साथ दुर्व्यवहार किया गया। इस अनैतिक कार्यवाही की सर्वत्र निन्दा की जा रही है। सभा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान प्रो० शेरसिंह जी को इसकी सूचना मिली तो वे बहुत दुखी हुए और सरकार को एक प्रेस वक्तव्य द्वारा हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल को चेतावनी दी है कि हरयाणा की आर्य जनता पुलिस दमन से घबराएगी नहीं और शराबबन्दी आन्दोलन को और अधिक शक्ति के साथ चलाती रहेगी। इन आर्य नेताओं ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र के वीर ब्रह्मचारियों तथा अन्य प्रदर्शनकारियों की वीरता की सराहना करते हुए कहा है कि पापी तथा शराबी सरकार को समाप्त करने का श्रेय इस प्रकार के वीरों को ही मिलेगा।

अम्बाला में प्रदर्शनकारियों को बस में बैठाकर पंजाब के जंगलों में उतार दिया

कुरुक्षेत्र के प्रदर्शन के पश्चात् ३ मार्च सायंकाल सभा का जत्था अम्बाला छावनी पहुंचा और यहां के सब से पुराने आर्यसमाज मन्दिर स्वामी दयानन्द मार्ग (कबाड़ी बाजार) में आकर डेरा डाला। मैंने सभा के उपदेशक अतरसिंह आर्य को साथ लेकर यहां के अन्य आर्यसमाज रैजमेण्ट बाजार, लालकुर्ती बाजार, आर्य महिला महाविद्यालय आदि में अधिकारियों से सहयोग देने के लिए सम्पर्क किया। जब हम वापिस आर्यसमाज मन्दिर स्वामी दयानन्द मार्ग पहुंचे तो पता लगा कि गुप्तचर विभाग का सिपाही जानकारी लेने आया था। यहां के नवयुवक तथा उत्साही पुरोहित पं० दाऊदयाल जी ने श्री सतीश मित्तल तथा श्री कृष्णलाल वर्मा के सहयोग से आवास तथा भोजन की सराहनीय व्यवस्था की। प्रातःकाल आर्यसमाज के लगनशील कार्यकर्ता श्री वेदप्रकाश आर्य सुपुत्र महाशय चुन्नीलाल हमारे पास पहुंच गये और उन्होंने अपनी ओर से हमारे जलपान की व्यवस्था की। स्वामी आदित्यवेश सरकारी विश्रामघर में ठहर गए थे।

गत वर्ष प्रदर्शन के समय से पूर्व ही पुलिस ने आर्यसमाज मन्दिर की घेराबन्दी कर दी थी और किसी को भी बाहर नहीं जाने दिया था। अतः इस बार हम प्रातः ८ बजे से पूर्व ही दो-दो की पृथक् टोलियां बनाकर आर्य महिला महाविद्यालय के प्रांगण में पहुंच गये। वहां से हमने फोन द्वारा आदित्यवेश तथा रणधीर पुरी को सन्देश भेजा कि आप भी अपने साथियों सहित यहां ९ बजे तक पहुंच जावें जिससे संगठित रूप से प्रदर्शन आरम्भ कर सकें परन्तु वे वहां १०-३० बजे तक नहीं पहुंचे। अतः हमने उनकी प्रतीक्षा करने के बाद आर्यसमाज के पुरोहित पं० दाऊदयाल जी को साथ लेकर तथा सभा के शराबबन्दी बेनर हाथों में उठाकर प्रदर्शन आरम्भ कर दिया। आर्य महाविद्यालय के सामने पुलिस की गाड़ियों ने चक्कर लगाना आरम्भ कर दिया। वे हैरान थे कि प्रदर्शनकारी आर्यसमाज में किस मार्ग से यहां पहुंच गये। सभा का जत्था आर्यसमाज अमर रहे तथा शराब के ठेके बन्द करो आदि के जयघोष करते हुए नीलामी स्थल की ओर चल पड़े। सरदार पटेल मार्ग पर आने जाने वाले यात्री शराबबन्दी नारों को बड़े ध्यान से सुन रहे थे परन्तु अम्बाला पुलिस के सिपाही उन्हें डराकर दूर भगा देते थे। सभा के उपदेशक पं० अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी अपने उच्च स्वर के साथ नारे लगाने के साथ-साथ शराबबन्दी पर व्याख्यान देते चले आ रहे थे और सभा के भजनोपदेशक स्वामी देवानन्द तथा श्री सत्यपाल भजन सुनाकर यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे।

जब हमारा जत्था नीलामी स्थल के समीप पहुंच गया तो बलदेव नगर के थानाध्यक्ष केवलकृष्ण तथा सदर थाना के प्रभारी मांगेराम ने अपने पुलिस के सिपाहियों को हथियारों से लैस करके बाधा खड़ी कर दी और हमें जहां शराब रूपी जहर के ठेके की नीलामी हो रही थी, वहां बलात् जाने से रोक दिया। हमने प्रदर्शन को शराबबन्दी सम्मेलन में बदल दिया और शराबबन्दी भाषण तथा भजन सुनाने लग गए। उसी अवसर पर हमारा साथ देने के लिए जिला अम्बाला हरयाणा विकास पार्टी के कार्यकर्ता चौ० विचित्रसिंह सांगवान (ठोल निवासी) जो कि पूर्व शराब के ठेकेदार हैं और अब आर्यसमाज के प्रचार तथा हरयाणा विकास पार्टी के शराबबन्दी के जनकल्याणकारी नीति से प्रभावित होकर शराब की बिक्री के देशद्रोही व्यापार को लात मार चुके हैं, अपने अन्य नवयुवक पार्टी कार्यकर्ताओं जिनमें सरदार जयसिंह उपप्रधान सरदार सुरजीतसिंह, श्री पूर्णमल सैनी महामन्त्री, श्री निर्मलसिंह प्रधान युवा हविपा, श्री परमजीत, श्री बलवीरसिंह, श्री गुरुदर्शनसिंह तथा श्री रमेशसिंह खैरा आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं, हमारे जत्थे में सम्मिलित होगये। हमारा उत्साह और बढ़ गया। विकास पार्टी के कार्यकर्ताओं ने भी पूरे जोश के साथ शराब हटाओ, हरयाणा बचाओ, जो सरकार निकम्मी है, वह सरकार बदलनी है, आदि नारे लगाकर अपनी आवाज बहरी सरकार के पास पहुंचाने का यत्न किया। हमने पुलिस अधिकारियों से उपायुक्त महोदय को ज्ञापन देने की मांग की। पुलिस वालों ने कहा कि उपायुक्त महोदय यहाँ आकर ज्ञापन लेंगे, हमने उन्हें वायरलैस द्वारा सूचना भेज दी है। परन्तु काफी देर तक वे नहीं आए और उनके स्थान पर पुलिस की गाड़ी हमारे जत्थे के सामने लगा दी और हमें धक्के मारकर बलात् बस में बैठाकर गैर कानूनी हिरासत में ले लिया। पुलिस की बस अम्बाला छावनी तथा अम्बाला शहर का चक्कर काटती हुई पंजाब के पटियाला जिले की राजपुरा तहसील के ग्रामों की ओर मुड़ गई। इसका पता हमें जब लगा तब हमने सड़कों पर पंजाबी भाषा में ग्रामों के नाम पढ़े। इस प्रकार हमें शराबबन्दी नारे पंजाब के ग्रामों में जहाँ उग्रवादी हिन्दुओं को बसों में से उतारकर गोली का शिकार करते रहे हैं, लगाने का अवसर मिल गया। जब हमें अम्बाला से ३० किलोमीटर पर ग्राम जोहला-कलां के खेतों में एक सफेदे के भारी जंगल में, जबरदस्ती बस से उतार दिया। दो बजे का समय था और हम सभी भूखे प्यासे थे। वहां से ५ किलोमीटर का सफर करके ग्राम अण्डापुर के बस अड्डे पर पहुंचे। वहाँ विकास पार्टी के कार्यकर्ताओं ने हमें जलपान करवाया तथा दो कार किराए की लेकर अम्बाला छावनी बस अड्डे पर पहुंचाया। पुलिस की इस अनैतिक कार्यवाही की सर्वत्र निन्दा की गई।

—केदारसिंह आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ३०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० १३२०/७३ — डाक न० ४०/२२ — पृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, ०९५

ओ३म् — कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री — सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष २२ अंक १७ — २१ मार्च, १९९५ — (वार्षिक शुल्क ५०) — (आजीवन शुल्क ५०१) — विदेश में १० पौंड — एक प्रति १-००

अयं त इध्म आत्मा०–प्रसंग एवं विवाद

(आचार्य वेदभूषण, अधिष्ठाता—अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद-२७)

उपरोक्त मन्त्र पर एक विवाद चल पड़ा है। वैसे तो वादे वादे जायते तत्व बोधः के अनुसार विचार विनिमय से बहुत सी बाते स्पष्ट हो जाती हैं।

पर कुछ विवाद व्यक्तिगत राग द्वेष और अपने आपको सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने को मनोवृत्ति को लेकर किए जाते है। ऐसे विवाद सार्वजनिक रूप में करना उचित नही क्योकि नीतिकार कहते है कि —

विद्या विवादाय धनं मदाय शक्ति परेषां परिपीडनाय।
खलस्य साधः विपरीतमेतत् ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय॥

विवाद के लिए विवाद करना विद्या का दुरुपयोग मात्र है। इससे समय, शक्ति और साधन तीनों की हानि होती है। अयंत इध्म आत्मा० इस मन्त्र पर जो विवाद उठा था वह उसका मुख्य विचारणीय प्रश्न था कि यज्ञों में इस एक मन्त्र को पढ़कर पांच घृत आहुति का जो विधान महर्षि ने किया है क्या इन आहुतियों को ब्रह्मचारी, गृहस्थी और वानप्रस्थी तीनों डालेंगे अथवा प्रजाकाम गृहस्थी ही डालेंगे।

हम विगत ग्यारह वर्षों से सतत् यत्नशील हैं कि आर्यजगत् में जो यज्ञ विधियां चल रही हैं इनमें एक रूपता लाई जानी चाहिए।

क्योंकि संगच्छध्वं संवदध्वं० इस मन्त्र में उपासना पद्धति की भी एक रूपता पर बल दिया गया है। दूसरे मतावलम्बी तो इस पर आचरण करते हैं और जो वेदानुयायी हैं वे वेद के इस आदेश की अवहेलना कर रहे हैं। यह दुःख की बात है। स्पष्ट रूप से हम देखते हैं कि नमाज और प्रेयर जो मस्जिदों व गिरजाघरों में की जाती है उनमें सर्वत्र एकरूपता पाई जाती है। एकरूपता लाने के प्रश्न पर हमने बहुत चिन्तन किया कि यह कैसे सम्भव होगा।

कुछ लोग कहते हैं कि आर्यों को धर्मार्य सभा के निर्णयानुसार अपनी विधि रखनी चाहिए। हमारा संगठन एक प्रजातन्त्रीय आधार पर स्थापित संगठन है। जैसे संगठन दलबन्दी के शिकार होते हैं इस दलबन्दी का परिणाम प्रायः विधि विधानों पर पड़ता रहता है। आज की धर्मार्य सभा एक निर्णय देगी तो फिर जब उसमें फेर बदल अवश्य होगा तो फिर विधि में फेर बदल अवश्य होगा।

अतः समूचे आर्यजगत् से हमारा एक विनम्र निवेदन है कि वर्तमान में आर्यजन जिन यज्ञों को करते कराते हैं उस विधि के मूल प्रणेता महर्षि देव दयानन्द थे। उन्होंने संस्कार विधि में यज्ञ की विधि का विधान कर दिया है। वे यज्ञ के रहस्यों को भली भांति जानते थे। इसलिए एकरूपता लाने की दृष्टि से भी हमें महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट विधि को मान्यता प्रदान कर समूचे आर्यजगत में उसी विधि के अनुसार सन्ध्या व यज्ञ विधि को करना चाहिए। महर्षि की विधि में यदि किसी को अन्तर्विरोध प्रतीत होता है तो इसे विद्वान् लोग परस्पर मिल बैठकर महर्षि के उचित विधान को समझ लें।

इस प्रसग में हम पत्र पत्रिकाओं में लेखादि लिखते रहते है। यज्ञ के सारे विधि विधान महर्षि दयानन्द सरस्वती के सर्वदा अनुरूप हों ऐसा यत्न करते है।

दिल्ली के राजोरी गार्डन स्थित वेद संस्थान में हम कुछ वर्ष पूर्व विशेष यज्ञ सम्पन्न कराने गए और वहा हमने अपने प्रवचन में अथवा ब्रह्मापद के आसन से यह निर्देश किया कि—यज्ञ मे पंच घृताहुति का विधान दैनिक यज्ञ में नही है। महर्षि ने सामान्य प्रकरण में इसका विधान सामान्य विधि मे किया है और प्रत्येक संस्कार में निर्देश दे दिए है कि इस मन्त्र से पाच घृताहुति किस किस संस्कार में दो जाएगी अथवा नही दी जाएगी। हमारा मन्तव्य है कि उक्त मन्त्र से पाच घृताहुति का विधान महर्षि ने विशिष्ट संस्कारों में ही किया है। जहा स्त्री पुरुष प्रजाकाम होंगे वही इन मन्त्रों के पांच आहुतिया दो जायेगी। ब्रह्मचारी और वानप्रस्थी तो केवल दैनिक यज्ञ ही करते है। वे इस मन्त्र से पाच घृताहुति नहीं डालेंगे।

इस पर वेद संस्थान के अध्यक्ष प्रिय अभयदेव जी ने श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द जी महाराज को पत्र लिखकर इसकी वास्तविकता जाननी चाही। इस आधार पर स्वामी जी ने एक लेख हमारे इस मन्तव्य के विरोध में लिखा। हमने स्वामी जी के लेख का युक्तियुक्त उत्तर देकर महर्षि के प्रमाण के साथ अपनी मान्यता का खण्डन किया।

घोड़े की बला तबेले पर

विवाद का मुख्य विषय है कि इस मन्त्र से पांच घृताहुति ब्रह्मचारी व वानप्रस्थी देंगे या नहीं। दैनिक यज्ञ में साधारण गृहस्थी भी आहुतियां नही देगा जैसा कि महर्षि ने विधान किया है। हमारे इस मन्तव्य का सबल आधार है और इसका निर्णय संस्कार विधि द्वारा स्पष्ट रूप से किया जाना चाहिए।

जब प्रतिवादी निरस्त्र हो गए तो विवाद के मुख्य विषय को अयं त इध्म आत्मा० इस मन्त्र के अर्थ पर पिल पड़े। अब इस मन्त्र के अर्थ पर एक सहस्र रुपए का इनाम भी रख दिया गया है। मुख्य प्रश्न की ओर से ध्यान हटाकर दूसरे प्रश्न में उलझाना मैदान छोड़कर भागने के समान है। मुख्य विवाद मन्त्र के अर्थ का नही है। विवाद का विषय पच पूर्णाहुति कौन देगा कौन नही देगा यह है। अब स्वामी जी महाराज ने अयं त इध्म आत्मा। इस मन्त्र के चार हो वरदान मागे गये है पाच नही पर ये पाच सिद्ध कर देगा उसे एक सहस्र इनाम को घोषणा परोपकारिणी सभा तथा आर्यमर्यादा आदि पत्रों में भी है।

हमारा स्वामी जी महाराज से विनम्र निवेदन है कि इस मन्त्र में यदि पाच वरदान नही मागे गए तो फिर इस मन्त्र को पाच बार

(शेष पृष्ठ ७ पर)

चिन्ता छोड़ो सुख से जियो

(१) दूरस्थ तथा संदिग्ध कार्यों को छोड़ सन्निकट एवं निश्चित कार्यों को हाथ में लेना ही हमारा मुख्य ध्येय होना चाहिए।

—सर विलियम ओसलर तथा टामस कार्लाइल

(२) सफलता का रहस्य आज की परिधि में रहना—मानव शरीर यन्त्र अत्यन्त विचित्र है और लम्बी यात्रा हेतु सन्नद्ध है। इस यन्त्र पर नियन्त्रण रखे जिससे वह आज की परिधि में रह सके। इस हेतु मस्तिष्क यन्त्र का बटन दबाकर मृत व्यतीत और अज्ञात भविष्य को लोह कपाटों में जड़ दीजिये। आज के लिये आप सुरक्षित हो जावेंगे। भविष्य की चिन्ता करनेवाले की शक्ति व्यर्थ नष्ट होती है। बीती की चिन्ता कराल काल की राह पर ले जा सकती है अतः बीती ताहि बिसारि दे। भविष्य के लिए सम्यक् आयोजन करने का उपयुक्त उपाय तो यही है कि हम अपनी समग्र बुद्धि और अदम्य उत्साह के साथ आज का कार्य उत्तम रीति से करने में जुट जाये। कल की चिन्ता छोड़ने का अभिप्राय है—कल पर विचार अवश्य कीजिए, उस पर मनन कीजिए, योजनायें बनाइये, तैयारियां कीजिए किन्तु उसके लिए चिन्तित मत हूजिये। सही विचारधारा प्रयोजन और परिणाम पर आधारित रहती है और हमें रचनात्मक कार्यविधि की ओर प्रेरित करती है। गलत विचारधारा प्रायः उद्वेग और स्नायु विघटन का हेतु बनती है।

प्रगति का एक चरण ही पर्याप्त है।

सहारा दे ज्योतिर्मय, विचलित न कर।

अधिक की कामना नहीं करता, प्रगति का एक चरण ही पर्याप्त है।

'एक ही साधे सब सधे'—रोग का अधिकांश कारण शारीरिक नहीं मानसिक होता है। विशाल भूत वापस नहीं आ सकता। भविष्य तेजी से हमारी ओर बढ़ता है। वर्तमान की उपेक्षा से काम नहीं चल सकता। आज के लिए कोई भी व्यक्ति कठिन से कठिन परिश्रम कर दिनभर के लिए मिठास धैर्य, स्नेह और पवित्रता से रह सकता है। यही जीवन है।

'समझदार के लिए हर सुबह नई जिन्दगी लेकर आती है।' यदि प्रतिदिन हम इस बात को सोच लें तो जीवन से निराशा चिन्ता हटकर उत्साह आ जाएगा। सुखी मानव तो वही है, आज को अपना बना ले और हो आश्वस्त कह दे। जी लिया बस आज मैं तो, कल जो करना हो तू करले।'

सब कुछ बदलता है, केवल परिवर्तन का नियम नहीं बदलता। बहती सरिता के जल में एक जगह पैर रखकर उसी जगह दूसरी बार पैर नहीं रखा जा सकता क्योंकि तब तक जल बह गया होता है। जीवन निरन्तर बदलता रहता है। अतः आज ही शाश्वत है फिर निरन्तर परिवर्तित, अनिश्चित एवं अनबूझे भविष्य की गुत्थियों को सुलझाने मे आज के सुख को क्यों नष्ट किया जाय। अतः आज को हाथ से न जाने दो उसका पूर्ण उपयोग करो। आज ईश्वरीय सृष्टि है हम इसे भोगेंगे और प्रसन्न रहेंगे।

कालिदास की कविता—'आज का स्वागत करो। यही जीवन है, जीवन का सार है। मानव अस्तित्व की सभी विविधायें, वास्तविकतायें, इसी में निहित हैं। इसमें विकास का वरदान है, कर्म का माहात्म्य है और सिद्धि का वैभव है। भूत स्वप्न है और भविष्य कल्पना। सुखद वर्तमान से ही भूत के सुखद स्वप्न की सृष्टि होती है और आनेवाला कल आशामय बन जाता है।

अतः आज का प्रेम से स्वागत करो यही उषा के प्रति हमारा अभिनन्दन है।

चिन्ताजनक परिस्थितियों को सुलझाने को चमत्कारी विधि—परिस्थिति का निर्भयता और ईमानदारी से विश्लेषण कर इससे यह मालूम हो जायेगा कि अनिष्ट क्या हो सकता है? उसे स्वीकार करें और शांतभाव से अपने समय और शक्ति को अनिष्ट को सुधारने में लगा दे तो काम बन जायेगा। चिन्ता एकाग्रता का ह्रास करती है। 'हानि का स्वीकार करना दुर्भाग्य के किसी भी परिणाम पर विजय पाने का पहला कदम है।' अनिष्ट को स्वीकार करने से मन को सच्ची शांति मिलती है।

न्यूयार्क के एक तेल व्यवसायी का अधिकारी इस बात से चिन्तित था कि तेल की सप्लाई नियमित ग्राहकों को न कर ड्राइवर लोग उसे बचाकर अपने ग्राहकों को बेच देते हैं। उस गैर कानूनी कार्य को एक सरकारी इन्सपेक्टर के रूप में ५ हजार डालर मांगे। न देता तो मामला अदालत तक जाने, अखबारों में छपने का भय था इससे उसके पिता का २४ वर्ष पूर्व व्यापार नष्ट हो जाता। वह चिन्तित था किन्तु अनिष्ट का सामना करने का निर्णय किया और जिला एटर्नी से मिलने का परामर्श अपने एटर्नी से मिला। वकील ने जिला एटर्नी से मिलाया तो मालूम हुआ कि जो व्यक्ति सरकारी एजेन्ट के रूप में रिश्वत मांगता था वह बदमाश ठग था। पुलिस उसकी तलाश कर रही है। बस वह प्रसन्न होगया। अतः अनिष्ट को स्वीकार करके उसे सुधारने का प्रयास करना चाहिए। निश्चिन्त हो सारी चिन्ता भुला देनी चाहिए। उस मानसिक स्थिरता से नवीन शक्ति की उद्भावना होती है जो जीवन की रक्षा करती है। जो मृत्यु के रूप में आनेवाले अनिष्ट से भी समझौता कर जीवन के शेष समय का आनन्द के साथ उपभोग करता है वह अनिष्ट को सुधार लेता है।

अतः सुलझने की चमत्कारी विधि है—अपने आप से पूछिये सम्भावित अनिष्ट क्या हो सकता है? यदि कोई अन्य उपाय न हो तो उसे स्वीकार कर लीजिए, धैर्यपूर्वक उसे सुधारने के लिए बढ़े चलिये।

(३) चिन्ता आपके साथ क्या कर सकती है?—'जो व्यवसायी चिन्ता से लड़ना नहीं जानते उन्हें अकाल मृत्यु का ग्रास बनना पड़ता है। भय से चिन्ता होती है और चिन्ता मनुष्य को उद्विग्न तथा हताश बना देती है। पेट की नसों को प्रमाणित कर अन्दर के गेस्टिक ज्यूसेज को विषम कर देती है जिससे उदर व्रण उत्पन्न हो जाता है। चिन्तित और दुखी व्यक्ति संसार की कटु वास्तविकता के अनुरूप ढल नहीं पाता वह अपने पड़ौसी वातावरण से सम्बन्ध विच्छेद कर काल्पनिक संसार में पलायन कर जाता है।

चिन्ता से रक्तचाप वृद्धि, गठिया, पेटव्रण, जुकाम, मधुमेह आदि अनेक रोग होते हैं। यह एकदम स्वस्थ व्यक्ति को भी रोगी बना देती है। एक रोगी विशेषज्ञ ने अपने प्रतीक्षालय में लिख रखा था जहां सब रोगियों की दृष्टि पड़े।

विशुद्ध धर्म निद्रा, संगीत तथा विनोद आदि मनोरंजक एवं सुख शक्तियां हैं।

स्वास्थ्य और सुख की कामना हो तो ईश्वर में श्रद्धा रखिये गहरी नींद सोइये।

मधुर संगीत में रुचि लीजिये और जीवन के आनन्द पक्ष का ही विचार कीजिये।

चिन्ता चेहरे के सौंदर्य को नष्ट कर देती है। मनुष्य कम उम्र में ही वृद्ध और क्लान्त बन जाता है। भगवान् भले ही पापों को क्षमा कर दें। किन्तु स्नायुसंस्थान हमें किसी भूल के लिए क्षमा नहीं करता। चिन्ता से स्नायु संस्थान कुप्रभावित होता ही है। आधुनिक नगर शोर-गुल के बीच भी जो व्यक्ति आन्तरिक शान्ति कायम रख सकते हैं उन्हें स्नायु रोग कभी नहीं होते। प्रसन्न मानसिक दशा रोगी के लिए व्याधि से संघर्ष करने में सहायक होती है। वस्तुस्थिति का सामना करने, चिन्ता छोड़ देने और रोग से छुटकारा पाने का प्रयत्न करने से रोग दूर हो ही जाता है।

(४) चिन्ताकारक समस्याओं का विश्लेषण एवं समाधान की तीन विधियां हैं—

१) तथ्यों का संग्रह कीजिए।

२) उनका विश्लेषण करें।

३) किसी निर्णय पर पहुंच कर कार्य करें।

जब तक सच्चे तथ्य हमारे सामने नहीं आते किसी भी समस्या का समाधान बुद्धिमानी से नहीं किया जा सकता उलझन चिन्ता का मुख्य कारण है। कोई व्यक्ति, यदि निष्पक्ष और व्यावहारिक दृष्टि से तथ्य संग्रह करने में लग जाय तो तथ्यों की जानकारी मात्र से ही उसकी चिन्ताएं सामान्यतया विलीन हो जाती हैं। किन्तु सोचने के झंझट से बचने के लिए हम सरल और चटपट उपाय खोज निकालते हैं। चिन्तित अवस्था में तथ्य संग्रह कठिन होता है किन्तु यह मानकर करें कि यह काम मैं किसी दूसरे व्यक्ति के लिए कर रहा हूं अतः प्रमाण के

(शेष पृष्ठ ८ पर)

शराबबन्दी आन्दोलन की गतिविधियां

पानीपत में प्रदर्शन से पूर्व ही सरकार ने ठेकों की नीलामी की

अम्बाला के प्रदर्शन के पश्चात् सभा का शराबबन्दी जत्था ४ मार्च की रात्रि को आर्यसमाज मन्दिर बड़ा बाजार पानीपत में पहुंच गया। ५ मार्च को रविवार था। अतः पं० चन्द्रपाल सिद्धान्त शास्त्री आर्यसमाज बड़ा बाजार तथा खेल बाजार तथा स्वामी देवानन्द आर्यसमाज घरोण्डा के साप्ताहिक सत्संगों में सम्मिलित हुए और वहां ६ मार्च को पानीपत में प्रदर्शन में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने की प्रेरणा की। सभा के उपप्रधान तथा आर्यसमाज बड़ा बाजार के प्रधान लाला रामानन्द जी ने अस्वस्थ होने पर भी सभा के कार्यकर्त्ताओं के लिए आवास तथा भोजन की व्यवस्था अपनी देखरेख में करवाई। स्वामी धर्मानन्द भी ६ मार्च को आर्यसमाज मन्दिर पहुंच गए। ६ मार्च को प्रातः यज्ञ करने के बाद हम प्रदर्शन की तैयारी के लिए आर्यसमाज माडल टाउन पहुंचे। वहीं थोड़ी देर में सभा की ओर से जि. पानीपत शराबबन्दी समिति के संयोजक प्रिंसिपल लाभसिंह जी हरयाणा विकास पार्टी के नेता अपने कार्यकर्त्ताओं के साथ पधारे। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के अधिष्ठाता श्री हुकमचन्द राठी ने भारतीय किसान यूनियन के कार्यकर्त्ताओं से पूर्व ही सम्पर्क कर रखा था अतः वे भी इस प्रदर्शन में सम्मिलित होगये। आर्यसमाज पटेलनगर व बड़ा बाजार के कार्यकर्त्ता तथा आर्य वरिष्ठ मा. विद्यालय पानीपत के प्रधानाचार्य भी उपस्थित थे। सभा के भजनोपदेशक स्वामी देवानन्द, श्री तेजवीर, श्री जगदीश तथा श्री रामकुमार आर्य ने प्रदर्शन के अवसर पर शराबबन्दी गीत सुनायें। आर्यसमाज माडल टाउन से प्रदर्शनकारी शराबबंदी के नारे लगाते हुए आबकारी एवं कराधान कार्यालय तक पहुंच गये। पुलिसकर्मी वहां भारी संख्या में खड़े थे। प्रदर्शन को रोकने का प्रयत्न किया, परन्तु कार्यकर्त्ता पूरे जोश तथा उत्साह के साथ नारेबाजी जारी रखी और प्रदर्शन को शराबबंदी सम्मेलन के रूप में बदल दिया।

सभा के उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, पं. चन्द्रपाल सिद्धान्ती शास्त्री, स्वामी धर्मानन्द, श्री [illegible]सिंह, श्री सुधीर मलिक, कप्तान बलबीरसिंह, आर्यसभा के प्रधान श्री रामधारी शास्त्री, हविपा के नेता श्री सुरेश [illegible]कर, श्रीमती अन्जू ने अपने भाषणों में हरयाणा में शीघ्र शराबबंदी लागू करने पर बल दिया। शराब के ठेकेदारों को ललकारते हुए कहा कि वे समय रहते शराबरूपी जहर बेचने के गन्दे व्यापार को छोड़कर अन्य व्यवसाय आरम्भ करें अन्यथा आपको इस दुष्कर्म का दण्ड भुगतना पड़ेगा। प्रिंसिपल लाभसिंह जी ने इस प्रदर्शन में भाग लेनेवाले सभी दलों के कार्यकर्त्ताओं का धन्यवाद किया और विश्वास दिलाया कि जिला पानीपत में शराबबन्दी का प्रचार पूरी शक्ति के साथ आरम्भ किया जावेगा।

गुड़गांव में प्रो. शेरसिंह जी के नेतृत्व में शराबबंदी प्रदर्शन शान्तिपूर्वक सम्पन्न

६ मार्च को पानीपत के प्रदर्शन के पश्चात् सभा के कार्यकर्त्ताओं के साथ हरयाणा राज्य परिवहन की गुड़गांव जानेवाली बस से सायंकाल ५ बजे तक हम आर्यसमाज मन्दिर जेकमपुरा गुड़गांव पहुंचे। वहां सभा के अन्तरंग सदस्य श्री पदमचन्द आर्य तथा आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश राय ने सभी सत्याग्रहियों के आवास तथा भोजन की व्यवस्था की। गुड़गांव के आर्यसमाज तथा स्थानीय आर्य केन्द्रीय सभा के अधिकारियों से टैलीफोन तथा रिक्शा द्वारा सम्पर्क करके उन्हें प्रदर्शन में सम्मिलित होने की प्रेरणा की। रात्रि को अचानक सभा के उपदेशक पं० चन्द्रपाल के पेट में दर्द उठा, उन्हें आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष श्री जगदीशराय के घर भेजा गया। वे स्वयं उन्हें स्थानीय सिविल हस्पताल में ले गये तथा उन्हें टीका आदि लगवाकर सारी रात अपने घर पर रखकर पूरी सेवा की। प्रातः आर्यसमाज मन्दिर में यज्ञ के पश्चात् उपस्थित नर-नारियों को भी प्रदर्शन में भाग लेने की अपील की। स्त्री समाज की बहनों ने चलने का आश्वासन दिया। इसके पश्चात् वैदिक कन्या विद्यालय में प्रधानाचार्य से भी सम्पर्क किया और विद्यालय के प्रधानाचार्य से भी सम्पर्क किया और विद्यालय के प्रबन्धक श्री सत्यपाल आर्य से फोन पर विद्यालय की अध्यापिकाओं को इस प्रदर्शन में सम्मिलित करने का अनुरोध किया। उस दिन विद्यालय में परीक्षाएं थीं तथापि प्रबन्धक महोदय ने विद्यालय की अध्यापिका श्रीमती ज्ञानदेवी आर्या, श्रीमती जनक मनोचा, श्रीमती पुष्पा शर्मा तथा मिथलेश कौशिक आदि प्रदर्शन में उत्साहपूर्वक भाग लिया और प्रदर्शनकारी मुख्य बाजारों में शराबबन्दी जयघोष करते हुए आबकारी कराधान कार्यालय की ओर बढ़ते गये। रिक्शा मे ध्वनिविस्तारक लगा हुआ था। आर्य वीर दल के वीर तथा सभा के प्रचारक श्री अर्जुनदेव आर्य, श्री धर्मवीर आर्य, पं० विश्वामित्र, सत्यपाल आर्य, स्वामी देवानन्द, श्री शिवराम आर्य आदि हरयाणा सरकार की शराब को बढ़ावा देने की नीति के विरोध में भाषण तथा भजन सुना रहे थे। प्रदर्शन का नेतृत्व अखिल नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान प्रो० शेरसिंह कर रहे थे। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के अधिष्ठाता श्री हुकमचन्द, अध्यापक श्री जितेन्द्र तथा शिवकृष्ण जी, भारतीय जनता पार्टी की जिला महिला अध्यक्ष श्रीमती अनुराधा शर्मा, भाजपा के ही श्री राधेश्याम सिंहल, हरयाणा विकास पार्टी युवा जिला अध्यक्ष मुकेश शर्मा, चौ० सजानसिंह वकील सरपंच ग्राम झाड़सा, स्वामी आदित्यवेश, श्री महेन्द्र शास्त्री, श्रीमती चमेली नगर परिषद् गुड़गांव, श्री शिवराम वाचस्पति अध्यक्ष ह० आ० यु० प० आदि भी इस प्रदर्शन में सम्मिलित थे। हविपा की ओर से महिलाएं भी भारी संख्या में साथ चल रही थीं। जब प्रदर्शनकारी नीलामी स्थल के समीप पहुंच गए तो जिला पुलिस अधीक्षक एवं उपमण्डल अधिकारी (नागरिक) ने अपनी पुलिस के हथियारबन्द सिपाहियों द्वारा नाकाबंदी करने का यत्न किया, इस पर प्रदर्शनकारी और अधिक शक्ति के साथ शराब हटाओ, देश बचाओ, लाठी गोली खावेंगे, शराबबन्दी करवावेंगे, आई फौज दयानन्दवाली, रास्ता कर दो खाली के ऊंची आवाज में नारे लगाने लगे। प्रो० शेरसिंह ने रिक्शा पर खड़े होकर ध्वनिविस्तारक से जिला प्रशासन को कहा कि हम संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकार के आधार पर जनता के हित की बातें जिला उपायुक्त को सभा का शराबबन्दी का ज्ञापन देकर ही वापिस जावेंगे। उपमण्डल अधिकारी ने ज्ञापन लेने को कहा। परन्तु प्रो० शेरसिंह ने बल देकर कहा कि यदि उपायुक्त महोदय स्वयं ज्ञापन लेने १० मिनट में नहीं आये तो हम पुलिस की घेराबन्दी तोड़कर उपायुक्त महोदय के आवास तथा नीलामी स्थल पर जावेंगे और शराब के ठेकेदार जो अपने स्वार्थ हेतु बोली दे रहे हैं, अपनी आवाज उन तक पहुंचावेंगे। १० मिनट के अन्दर ही जिला उपायुक्त महोदय श्री एम. पी. बिधलान स्वयं आए और प्रो० साहब से ज्ञापन ग्रहण करते हुए कहा कि आर्य जनता की भावना मुख्य मन्त्री के पास पहुंचा दूंगा। प्रो० शेरसिंह ने उपस्थित नर-नारियों की ओर से कहा कि शराबबंदी की लहर चल पड़ी है। आंध्रप्रदेश की भांति हरयाणा सरकार को भी जनकल्याण की मांग को मानना होगा, अन्यथा यह शराब समर्थक सरकार आगामी चुनाव मे मुंहकी खावेगी।

—केदारसिंह आर्य

आवश्यकता

आर्यसमाज मन्दिर राजनगर पालम कालोनी, नई दिल्ली-४५ को एक सुयोग्य वानप्रस्थी अथवा संन्यासी या जीवनदानी प्रचारक की तुरन्त आवश्यकता है। इनके लिए भोजन, आवास, बिजली, प्रचार व अन्य सुविधाओं की व्यवस्था समाज की ओर से निःशुल्क की जावेगी। इच्छुक महानुभाव शीघ्रातिशीघ्र निम्न पते पर सम्पर्क करें।

डॉ० जसवीर आर्य (मन्त्री)
C/O डोगरा क्लीनिक
राजनगर (निकट नया गुरुद्वारा)
पालम कालोनी, नई दिल्ली-४५

सिगरेट पर पाबंदी लगाने की मांग

"सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है" यह वाक्य सिगरेट के हर पैकेट पर छपा रहता है। सिगरेट पीने वाले स्वयं भी इस बात को जानते हैं कि सिगरेट पीना उनके लिए नुकसानदायक है, लेकिन यह बात बहुत कम लोग जानते हैं कि सिगरेट पीने से साथ में रहने वाले या बैठने वाले को भी नुकसान हो सकता है। मतलब यह कि सिगरेट न पीने वाले को भी सिगरेट के धुएं से नुकसान होता है।

पिछले दिनों अमरीका की मेडिकल एसोसिएशन ने सिगरेट की भर्त्सना करते हुए सरकार से यह मांग की कि सिगरेट पर भी एक नशीली दवा की तरह ही पाबन्दी लगनी चाहिए। एसोसिएशन का कहना है कि सिगरेट के जरिए निकोटिन हमारे शरीर में पहुंचता है जो बहुत हानिकारक है। इसलिए इसको उसी तरह विनियमित किया जाना चाहिए जिस तरह मरफीन या हेरोइन को किया गया है।

स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होने के बावजूद संसार में सिगरेट का प्रचलन दिन-पर-दिन बढता जा रहा है। बहुत से देशों की महिलाएं भी सिगरेट पीती हैं। बच्चों में भी देखा-देखी सिगरेट पीने की आदत पड़ जाती है।

अनुमान है कि विश्व मे २ खरब ५० अरब डालर मूल्य की सिगरेटें हर साल बिकती है। भारत संसार में तम्बाकू पैदा करने वाला तीसरा सबसे बड़ा देश है। पहला और दूसरा नम्बर क्रमशः चीन और अमरीका का है। तम्बाकू की कुल खपत में से ८० प्रतिशत खपत, संसार के सभी देशों में, भारत को छोड़कर सिगरेट के रूप में होती है, शेष २० प्रतिशत खपत दूसरे रूपों में लेती है। भारत में स्थिति बिल्कुल उल्टी है। भारत में सिगरेट की खपत विश्व की कुल सिगरेट-खपत की १० प्रतिशत है।

पिछले दिनों अमरीका में इस बात को लेकर काफी बहस हुई कि सिगरेट पर नशीली दवाओं की तरह पाबन्दी लगाए जाने से व्यक्तिगत स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप होगा या नहीं। अमरीका की मेडिकल एसोसिएशन यह बात जानती है कि जब तक सरकारी तौर पर निकोटिन को भी मारफीन अथवा हैरोइन जैसी दवाओं की श्रेणी में शामिल नहीं किया जाता, तब तक सिगरेट पर पाबन्दी नहीं लगाई जा सकती। फिर भी यदि खाद्य एवं औषधि विभाग द्वारा सिगरेट को वियनियमित किया जाता है तो सरकार का सिगरेट के वितरण पर पहले से ज्यादा नियन्त्रण हो जाएगा और वह नाबालिगों के हाथों में नहीं पहुंच पाएगी।

अमरीका की मेडिकल एसोसिएशन ने सिगरेट को नशीली दवाओं की तरह विनियमित किए जाने की जो मांग की है, उसके पीछे एक बहुत बड़ा कारण है। पिछले साल अमरीका की पर्यावरण संरक्षण एजेंसी ने एक रिपोर्ट प्रकाशित की थी। उस रिपोर्ट में यह बताया गया था कि अप्रत्यक्ष रूप से तम्बाकू पीने से अमरीका मे हर साल ३००० लोगों की मौत हो जाती है। अमरीका की इस संस्था द्वारा किए गए अध्ययन से यह पता चला कि जिन महिलाओं के पति सिगरेट पीते हैं उनको, उन महिलाओं की अपेक्षा जिनके पति सिगरेट नहीं पीते हैं, फेफड़े या कैंसर होने का खतरा ३० प्रतिशत अधिक होता है,

जापान में किए गए एक अध्ययन से भी इस बात की पुष्टि होती है। गत अक्तूबर माह में अन्तर्राष्ट्रीय कैंसर एसोसिएशन की वार्षिक बैठक में डा० ताकेशी होरायामा ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए यह बताया कि सिगरेट पीने से फेफड़े, भोजन-नली अग्न्याशय तथा गर्भाशय के कैंसर का खतरा ज्यादा हो जाता है। ४० साल से ५९ साल तक की महिलाओं द्वारा रोजाना हरी-पीली सब्जियों के खाने से यह खतरा कम हो जाता है—विशेषकर बड़ी आंत, पेट तथा फेफड़ों के कैंसर का खतरा। कुछ सीमा तक ६० साल तथा उससे अधिक उम्र की महिलाओं के सम्बन्ध में भी इस खतरे को टाला जा सकता है।

अमरीका के लुइसियाना स्टेट यूनिवर्सिटी मेडिकल सेंटर की डाक्टर एलिजाबेथ फोदम का कहना कि जो महिला जितनी अधिक तम्बाकू के धुएं के सम्पर्क में आती है, उसके लिए कैंसर व फेफड़े का जोखिम इतना ही बढ़ जाता है।

हालांकि अमरीका की मेडिकल एसोसिएशन ने सिगरेट के खिलाफ यह मांग सरकार से की है, लेकिन न तो अभी तक सिगरेट पीने वालों पर इसका कोई खास असर पड़ा है और न ही सिगरेट उत्पादक कम्पनियों पर। संभवतः यह जानती हैं कि सरकार निकोटिन को नशीली दवा की तरह विनियमित नहीं कर सकती। फिर भी अमरीका और जापान में किए गए अध्ययनों से जो निष्कर्ष निकले हैं वे तो सबके सामने हैं। इसलिए भले ही सिगरेट बनाने वाली कम्पनियां अपने उत्पादन और विज्ञापन में कोई कमी न करें, लेकिन पीने वाले तो सिगरेट पीना बन्द कर ही सकते हैं। ऐसा करने पर सिर्फ उनके स्वास्थ्य की ही रक्षा नहीं होगी, बल्कि उनके परिवार के अन्य सदस्यों के स्वास्थ्य की भी रक्षा होगी।

—विश्वनाथ गुप्त
(दैनिक हिन्दुस्तान)

ध्यान योग शिविर एवं सामवेद पारायण यज्ञ

पातंजल योग धाम आर्यनगर ज्वालापुर (हरद्वार) में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में दिनांक ३ अप्रैल १९९५ से ६ अप्रैल १९९५ तक ध्यान योग शिविर तथा १० अप्रैल से १४ अप्रैल तक सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। योग शिविर में यम, नियम, धारणा, ध्यान, समाधि आदि अष्टांग योग तथा शारीरिक व्यायाम का प्रशिक्षण दिया जायेगा।

अतः शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभार्थ पधारने का कष्ट करें।

स्वामी योगानन्द महामन्त्री

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता, आर्य गुरुकुल खानपुर के संस्थापक महाशय मंगलसिंह जी का ८५ साल की अवस्था में ५ मार्च को हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक निधन होगया। सूचना मिलते ही गांव में शोक की लहर दौड़ गई। वह अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

राव मंगलसिंह जी एक समाजसेवी, कट्टर आर्यसमाजी और देशभक्त व्यक्ति थे। स्वतन्त्रता आंदोलन में स्वामी क्षेत्रनाथ जी के साथ काम करते रहे। आर्यसमाज का कार्य तो जैसे उनका नित्य कर्म ही हो। जवानी के दिनों में गांव के व्यक्तियों को टोली बनाकर दिन में खेतों का काम और रात्रि को गांव-गांव में आर्यसमाज का प्रचार करना, उनका नित्य का काम था। ग्राम खानपुर में लगातार १३ वर्ष तक सरपंच रहे तथा अद्वितीय प्रगति की। जिला महेन्द्रगढ़ के पिछड़े क्षेत्र के छोटे से गांव में उच्च विद्यालय और आर्य गुरुकुल की स्थापना उनके उच्च व्यक्तित्व की ही देन है। जाति-पांति में उनका बिल्कुल विश्वास नहीं था। गरीबों के सदा हितैषी बनकर जिये। ग्राम खानपुर से गरीबों का रक्षक उठ गया ऐसा कहना अतिशयक्ति नहीं होगी। भगवान् से उनकी आत्मा को शांति तथा उनके परिवार को दुःख सहने की शक्ति की प्रार्थना करते हैं।

महाशय मंगलसिंह जी के तीन पुत्र हैं और तीनों ही आर्यसमाज के निष्ठावान् कार्यकर्त्ता हैं। उनका बड़ा पुत्र ओमप्रकाश आर्य अध्यापक नेता और समाजसेवी है। इनका कार्यक्षेत्र जिला महेन्द्रगढ़ है। मंझले पुत्र देवदत्त आर्य जिला फरीदाबाद के आर्यवीर दल के भूतपूर्व मंडलाधिपति तथा आर्यसमाज फरीदाबाद सैक्टर-१५ के मन्त्री हैं। छोटे लड़के रतनसिंह आर्य राजकीय महाविद्यालय, नारनौल को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर आर्यसमाज की दुन्दुभी बजा रहे हैं। ग्राम खानपुर ने एक निष्ठावान् आर्यसमाजी, समाजसेवी व गरीबों का रक्षक खोकर अपूर्णीय क्षति की है।

चन्द्रहास आर्य, मंत्री आर्यसमाज, खानपुर
तह. नारनौल, जि. महेन्द्रगढ़ हरयाणा

ग्राम लाडवा जि. हिसार में शराबबन्दी एवं गोरक्षा सम्मेलन सम्पन्न

दिनांक ५-३-९५ को प्रातः ११ बजे किसान यूनियन के संस्थापक श्री मांगेराम मलिक (उमरा) की अध्यक्षता में सम्मेलन सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि आचार्य तुलसी जैन थे। मुख्य वक्ता श्री ओम्-प्रकाश जी जिन्दल विधायक (हिसार), सभा उपदेशक एवं संयोजक शराबबन्दी समिति जि० हिसार के श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, श्री इन्द्रसिंह मलिक (उमरा), श्री धर्मवीर आर्य (बरवाला), किसान नेता त्यागी जी, गोशाला लाडवा के प्रधान श्री कृष्णकुमार जिन्दल सरपंच नलवा श्री गिरधाला राम (लाडवा) आदि ने गोरक्षा तथा शराबबन्दी पर विस्तार से विचार रखे। भजनलाल सरकार की शराब बढ़ावा नीति की कटु आलोचना की। कई जैन साध्वियों के भी आध्यात्मिक प्रवचन हुए। लोगों से घर-घर में गऊ पालने एवं शराब न पीने की अपील की।

इस सम्मेलन में हजारों नर-नारियों ने भाग लिया। गांव-गुवाड से अपने-अपने वाहन ट्रैक्टर आदि लेकर लोग पधारे। किसान नेता श्री महेन्द्रसिंह टिकैत दिल्ली में गिरफ्तार होने के कारण नहीं पहुंच सके। मंच संचालन श्री बलराज मन्त्री गोशाला लाडवा ने किया। कार्यक्रम बहुत ही प्रभावशाली रहा।

—स्वतन्त्रता सेनानी भगत रामेश्वरदास जी लाडवा

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

आर्यसमाज प्रधाना मोहल्ला रोहतक में १९-२-९५ को महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव समारोह सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ। इस पुनीत वेला में माननीय सुभाष जी बत्रा मुख्य संसदीय सचिव, हरयाणा सरकार के पधारने पर समस्त जनता द्वारा उनका हार्दिक अभिनन्दन किया गया। उन्होंने भाव विभोर होकर अपने भाषण में कहा कि ऋषि की विचारधारा को आम जनता तक अधिक से अधिक पहुंचाया जावे। मैं इसके लिये अधिक से अधिक सहयोग दूंगा। जितना दान आज संग्रह किया गया है उसका दस गुणा मेरे द्वारा इस पुनीत प्रचार कार्य हेतु दिया जाएगा।

इस शुभ वेला पर समाज सेवा में समर्पित दानी चरित्रवान् म० गुरुदत्त जी प्रधान, तथा रामदास जी बावला अन्तरंग सदस्य का मन्त्री महोदय द्वारा स्वागत किया। इसके अतिरिक्त अनेक मान्य विद्वन्मण्डल तथा संन्यासीवृन्द ने ऋषि के उपकारों का बखान किया। अन्त में एस० आर० विनायक ने अध्यक्षीय भाषण और शान्ति पाठ तथा ऋषि लंगर के साथ समारोह का समापन किया गया।

संयोजक समारोह
यशपाल शास्त्री, प्रधान
वैदिक सत्संग सभा, रोहतक

यज्ञ का महत्त्व

ग्राम महलाना जिला सोनीपत में कई महीनों से ऐसा सिलसिला चल रहा था कि जवान मौत होती थी और उसकी तेरहवीं होने से पहले अगली जवान मौत हो जाती थी। गांव वाले इस बात से बड़े चिन्तित हुए और उन्होंने चौ० ओमप्रकाश जी दहिया जे. ई. से इस बारे में समाधान पूछा तो उन्होंने कहा कि आप एक बड़ा यज्ञ करवाएं क्योंकि चौ० ओमप्रकाश दहिया यज्ञ में बड़ा विश्वास रखते हैं। वह प्रतिदिन प्रातः अपने घर पर यज्ञ करते है और अपने गाव तथा आस पास के गांव में हर खुशी एवं गमी के मौके पर यज्ञ करवाते हैं। उनके कहने से महलाना ग्रामवासियों ने १-३-९५ अमावस्या पर यज्ञ रख दिया और ६ विद्वानों पं० रतनसिंह आर्य उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक, प्रा० हरिचन्द स्नेही सोनीपत, पं० ईश्वरदयाल शर्मा सोनीपत, श्री कृष्णदत्त शास्त्री दिल्ली, बहालगढ़ आश्रम के ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणियों को बुलाकर १० किलो गऊ का घी और २० किलो हवन सामग्री से चार यजमान जोड़ों से यजुर्वेद से यज्ञ करवाया। सभी विद्वानों ने महर्षि दयानन्द के उपकार व यज्ञ, आज देश में गऊ हत्या और शराब से हानि पर पूरा प्रकाश डाला। गाव वालों ने विद्वानों का बड़ा सम्मान किया और ग्यारह किलो गऊ के घी का हलवा बनाकर प्रसाद बाटा गया। यज्ञ रखने से यज्ञ होने से पहले ही मौत होनी बन्द हो गई। गांव वालो का ईश्वर और यज्ञ की महिमा पर दृढ़ विश्वास हो गया।

—केदारसिंह आर्य

शराबी को चुनाव में टिकट नहीं देंगे : चौटाला

भिवानी—रासजपा के प्रधान महासचिव ओमप्रकाश चौटाला ने कहा है कि आनेवाले चुनावों मे रासजपा किसी भी शराबी प्रत्याशी को टिकट नही देगी। बातचीत में श्री चौटाला ने कहा कि अगर प्रदेश में उनकी पार्टी की सरकार बनती है तो छह मास में भ्रष्टाचार समाप्त कर देंगे। रासजपा अपने वायदे अनुसार सत्ता में आते ही लोकायुक्त की नियुक्ति करेगी। उन्होंने कहा कि ऐसे राजनेता जो सक्रिय राज-नीति से संन्यास ले चुके होंगे और अपने समय में रिश्वतखोरी के लिए बदनाम रहे होंगे, की भी सम्पत्ति की जाच करवाई जाएगी।

वसन्त का बलिदानी वीर हकीकतराय

भगवान् भारतवर्ष को लाखों हकीकत दीजिए।

वह कौम मिट सकती नही जिसमें हकीकत वीर हो।
कोई बतादे विश्व में ऐसा कोई वर वीर हो॥
जालिम के जुल्मो से हकीकत खौफ खाता है नहीं।
वह राम-सीता के लिए दीं गालिया सहता नही॥
इसको सजाये मौत का हुक्म जालिम ने दिया।
इसको मुसलमा बनने पर था लोभ हाकिम ने दिया॥
धर्म वैदिक छोड़कर गर तू मुसलमां बन गया।
जागीर लेकर इस जमी पर ऐशे जन्नत कर गया॥
मुंह तोड़ उत्तर था हकीकत ने उसे ऐसा दिया।
धर्म से बढ़कर न कोई वस्तु है यह कह दिया॥
समझाया काजी ने उसे पर वीर वह माना नही।
धर्म से बेहतर हिफाजत जान को जाना नहीं॥
लाहौर के मैदान में आया बसन्ती पर्व था।
सिर हकीकत दे गया उसको बडा ही गर्व था॥
उठ खड़े हो हिन्दुओं सोते रहोगे कब तलक।
घर में लुटेरे घुस रहे लुटने रहोगे कब तलक॥
आज फिर से धर्म वैदिक की परीक्षा आगई।
वह घोर काली ही घटाये फिर से घिर कर छागई॥
याद रक्खो आज भी ऐसे हकीकत है यहां।
धर्म से बढ़कर भला कोई हकीकत है कहां॥
भगवान् भारतवर्ष को लाखों हकीकत दीजिए।
कर्तव्य से बेहतर न कोई धर्म है वर दीजिए॥

वेदोपदेशक—ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति
अध्यक्ष—विश्ववेद परिवार संघ, शास्त्री सदन-११/१२४
पश्चिम आज़ाद नगर दिल्ली-११००५१

आर्यसमाज तथा गुरुकुल के आगामी उत्सव

आर्यसमाज बला जि० पानीपत	२२ से २४ मार्च
आर्यसमाज जसराणा जि० सोनीपत	२५ से २६ मार्च
गुरुकुल पंचगांव जि० भिवानी	२५ से २६ मार्च
आर्यसमाज सीवन जि० कैथल	२४ से २६ मार्च
आर्यसमाज बरोदा मार्ग गोहाना जि० सोनीपत	२४ से २६ मार्च
आर्यसमाज येडसी महाराष्ट्र	२४ से २६ मार्च
आर्यसमाज बहल जि० भिवानी	२५ से १ अप्रैल
आर्यसमाज महम जि० रोहतक	३१ से २ अप्रैल
आर्यसमाज चौरा माजरा जि० करनाल	३१ से २ अप्रैल
गुरुकुल कुरुक्षेत्र	३१ से २ अप्रैल
आर्यसमाज नई कालोनी गुड़गांव	३१ से २ अप्रैल

आर्य पर्वों की सूची

१- मकर संक्रान्ति	१४.१.९५	शनिवार
२- बसन्त पचमी	०४.२.९५	शनिवार
३- सीताष्टमी	२२.२.९५	बुधवार
४- महर्षि दयानन्द जन्मदिवस	२४.२.९५	शुक्रवार
५- शिवरात्रि (म० दयानन्द बोधोत्सव)	२७.२.९५	सोमवार
६- लेखराम तृतीया	०४.३.९५	शनिवार
७- नवसंस्येष्टि (होली)	१६.३.९५	गुरुवार
८- धुल्हण्डी (होली)	१७.३.९५	शुक्रवार
९- आर्यसमाज स्थापना दिवस	०१.४.९५	शनिवार
१०- रामनवमी	०९.४.९५	रविवार
११- हरितृतीया	३०.७.९५	रविवार
१२- श्रावणी उपाकर्म (रक्षाबन्धन)	१०.८.९५	गुरुवार
१३- श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	१८.८.९५	शुक्रवार
१४- विजयादशमी (सिद्धान्ती जयन्ती)	०२.१०.९५	मबलवार
१५- गुरु विरजानन्द दिवस	०५.१०.९५	गुरुवार
१६- महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली)	२३.१०.९५	सोमवार
१७- स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	२३.१२.९५	शनिवार

नोट:—इनके अतिरिक्त २६ जनवरी और १५ अगस्त ९५ को सभा कार्यालय का अवकाश रहेगा।

वेदव्रत शास्त्री
सभामन्त्री

बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

सर्वहितकारी के स्वामित्व आदि का विवरण
फार्म ४ (नियम ८ देखिए)

१. प्रकाशन स्थान	—दयानन्दमठ, रोहतक
२. प्रकाशन अवधि	—साप्ताहिक
३. मुद्रक का नाम	—वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	—है
पता	—दयानन्दमठ, रोहतक
४. प्रकाशक का नाम	—वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	—है
पता	—दयानन्दमठ, रोहतक
५. सम्पादक का नाम	—वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	—है
पता	—दयानन्दमठ, रोहतक
६. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझीदार या हिस्सेदार हों।	—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धांती भवन दयानन्दमठ, रोहतक

मैं वेदव्रत शास्त्री एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
वेदव्रत शास्त्री

(पृष्ठ १ का शेष)

पढ़ने का मुख्य आधार क्या होगा ? प्रत्येक मन्त्र के कुछ भाव अथवा अर्थ होते हैं जो क्रिया की जा रही है उससे मन्त्रों की किसी न किसी प्रकार की संगति अवश्य होती है। पांच बार घृताहुति इसी मन्त्र से क्यों ? क्या मन्त्रों की कमी थी ? या फिर किसी भी मन्त्र से बिना आधार के यों ही पांच बार आहुतियां देने का अर्थ हो आदेश कर दिया गया है ? हमारा निश्चयपूर्वक दृढ़ता के साथ कथन है कि इस मन्त्र में पांच-वरदान गृहस्थ प्रभु से मांगता है और यज्ञ से इन पांच वरदान की प्राप्ति भी होती है। मन्त्र की जब तक पांच से संगति नहीबैठेगी तब तक पांच बार के विधान के लिए कोई सबल आधार ही नहीं होगा तो पांच पूर्णाहुति का इसी मन्त्र से विधान निराधार माना जाएगा।

आप शब्दों की गणना से ग्रस्त है। इसीलिए आप उक्त एक सहस्र की घोषणा कर बैठे देखिए यजुर्वेद का एक मन्त्र—

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि-पुष्टिवर्धनम्।

इस मन्त्र में स्पष्ट रूप से त्रि-का विधान है महर्षि ने भी त्रि-का तीन अर्थ किया है। मन्त्र कह रहा है कि तीन प्रकार के अंबकों से यज्ञ करो। गिन रहा है दो ही—एक सुगन्धि दूसरा पुष्टिवर्धनम्। आप इस पर भी कहीं एक हजार रुपये के पारितोषिक की घोषणा न कर बैठें। यहां शब्द दो ही हैं पर वेद मन्त्र हैं दो में से तीन निकालना पड़ेगा। एक अंबक वह जो सुगन्धियुक्त है दूसरा जो पुष्टिवर्धक तीसरा सुगन्धि एवं पुष्टि भी देने वाला है। जैसे केसर-कस्तूरी आदि इन्ही तीन प्रकार के द्रव्यों से यज्ञ का विधान है।

जब दो से तीन हो सकता है । तो चार से पांच क्यों कर नहीं हो सकता है। चार वरदान तो आप स्वयं स्वीकार कर रहे हैं एक प्रजा, दूसरा पशु, तीसरा ब्रह्मचर्य और चौथा अन्नाद। आप जानते हैं यह अन्नाद दो प्रकार का होता है। एक जड़ और दूसरा चेतन। जितने सांसारिक भोग्य पदार्थ हैं वे सब आनन्द से परिगृहीत होते हैं दूसरा अन्नाद है स्वयं प्रभु पिता परमेश्वर इसकी उपासना ही दूसरे प्रकार का अन्नाद है। देखिए सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में महर्षि दयानन्द ने ईश्वर के सौ नामों की व्याख्या की है इसमें प्रभु का एक नाम अन्नाद भी गिनाया है। इस प्रकार प्रत्यक्ष में दिखाई पड़नेवाले चार शब्दों से ही पांच की सिद्धि होजाती है।

आपने जिन विद्वानों के अर्थ दिये उनके अर्थों में भी मौलिक भेद हैं पं० युधिष्ठिर जी आत्मा शब्द का अर्थ शरीर कर रहे हैं जबकि पं० राजवीर जी शास्त्री आत्मा शब्द का अर्थ आत्मा कर रहे हैं। शब्दों के अर्थों में उलझना व विवाद के लिए विवाद करना उचित नहीं है।

ब्राह्मण शब्दों में ऐसे शब्दों की भरमार है जिन्हें आप व्याकरण से सिद्ध नहीं कर सकते हैं । इसलिए महर्षि पतञ्जलि ने ब्राह्मण ग्रन्थों को वैदिक कोटि में मानकर ही ब्राह्मण ग्रन्थों को मुक्ति प्रदान कर दी है।

ब्राह्मण ग्रन्थ कर्मकाण्ड प्रधान है, कर्म की प्रधानता तो जीवन में भी गृह्य सूत्र भी कर्म व्यवस्था के ग्रन्थ हैं। इन्हें भी व्याकरण की प्रक्रिया से कहीं न कहीं छूट देनी पड़ेगी । वेदों में भी इध्मः शब्द है "अघमंष्ण में भी सत्यात्र्याभीद्धात्" इद्धात् का प्रयोग है यहां इद्ध में बिसर्ग का अभाव मानकर चलना होगा। उसका कारण यह है कि जब पहले इध्यस्व वर्धस्व पढा गया है उसके बाद इदह "निश्चय ही" मानकर अर्थ करेंगे तो बध्यस्व गौण हो जाएगा। जबकि इध्म और अध्यस्व की प्रधानता मन्त्र में स्पष्ट है अतः हमारा विचार है कि यहां "इद्धः" शब्द में विसर्ग का अभाव मानकर इद्ध ऐसा स्वीकार कर लिया जाना चाहिए। महर्षि ने इद्धः शब्द का अर्थ यजुर्वेद के १२वे अध्याय ३३वे मन्त्र में शुभलक्षणैः प्रकाशितः किया है। प्रजा के साथ इसकी संगति सटीक व युक्ति युक्त भी है। देखिए अयंत इध्म आत्माः। यह मन्त्र आश्वलायन गृह्य सूत्र में पठित है पर अश्वलायन ने कहां से लिया है इसका विवरण अनुपलब्ध है। क्योंकि गृह्यसूत्रकार मन्त्रकार नही है। वे तो गृह विधि का निर्देश करते। मन्त्र उद्धृत भर करते हैं। महर्षि ने वेद मन्त्रों के अर्थ करने की प्रक्रिया का उल्लेख करते हुए स्पष्ट लिखा है कि—वेदादि शास्त्रों में जो शब्द पढ़े जाते हैं उनके बीच मे यह नियम है कि जिस विभक्ति के साथ उसी विभक्ति में अर्थ कर लेना यह बात नहीं है। किन्तु जिस विभक्ति से शास्त्र मूल युक्ति और प्रमाण के अनुकूल अर्थ बनता हो उस विभक्ति का आश्रय करके अर्थ करना चाहिए।

महर्षि द्वारा वैदिक व्याकरण में प्रतिपादित सिद्धान्त के अनुसार परमात्मा में चमके और बढे आदि की कल्पना महत्वहीन हो जाती है। क्रिया पदों के जो चाहे आप अर्थ करले पर मन्त्र में अन्नाद्य जो दोनों प्रकार के अन्नादों का ग्रहण करने से पांच वरदान सिद्ध होते है। इसीलिए इस मन्त्र को पाच बार पढ़ने के लिए विधान किया है। अन्यथा अन्य मन्त्रों को पांच-पाच बार पढ़कर पाच-पांच आहुतियो का का विधान क्यों नही किया है ? मन्त्रार्थ और संगति मे जिसकी जैसी जितनी बुद्धि होती है वह उसी प्रकार का अर्थ कर लेता है, उसमे विवाद करना व्यर्थ है।

परन्तु जो मन्त्र जिस प्रकरण वा सन्दर्भ में पढा जाता है उसका अर्थ प्रासंगिक होना चाहिए अन्यथा कितना ही अच्छा अर्थ कोई करले लोक में ग्राह्य नही होगा। प्रायः देखा जाता है कि यज्ञ प्रकरण में मन्त्रों के अर्थ करते समय अनेक विद्वान् मन्त्रों के आध्यात्मिक अर्थ करने लग गये हैं। वे भूल जाते हैं कि यज्ञ का प्रकरण मूलतः आधिदैविक है — मन्त्रों के भौतिक व आधिदैविक अर्थों की संगति यज्ञ में की चाहिए। किन्तु अर्थों के विवाद में महर्षि देव दयानन्द की संस्कार के अनुरूप हो एक जैसी बनानी चाहिए तथा जिस जिस मन्त्र का जैसा-जैसा विनियोग महर्षि ने किया है उसे ठीक प्रकार समझकर वैसा ही सबको करना योग्य है।

इनके लिए व्यर्थ के विवाद तथा शास्त्रार्थ की चुनौती हास्यास्पद लगती है। ऋषि के निर्देश तो स्पष्ट और सरल है। वैसा ही सब चले व चलावें। जिससे वास्तव में अर्थ जनता संगठित व लाभान्वित हो सकेगी।

आशा है कि सभी सज्जन हमारे सहाश्रय को समझकर व्यर्थ में विवादों में नही उलझेंगे 'धियो यो नः प्रचोदयात्'।

श्री कृष्णचन्द्रजी आर्य अमृतमहोत्सव गौरव समारोह

आर्यसमाज पिंपरी, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा व पिंपरी चिंचवड नगर के सम्माननीय नागरिकों महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं महाराष्ट्र के कर्मठ आर्य कार्यकर्ता श्री कृष्णचन्द्र जी आर्य के ७५ वर्ष आयु के पूर्ण होने उपलक्ष में अमृतमहोत्सव २१, २२ व २३ अप्रैल ९५ को मनाने का संनिश्चय किया है। इस शुभ अवसर पर उन्हें एक अभिनन्दन ग्रंथ व रुपये पांच लाख की थैली देना निश्चित हुआ है। अतः आपसे सविनय प्रार्थना है कि इस कार्य में आप श्री कृष्णचन्द जी आर्य के विषय में अपने विचार, लेख, कविता इत्यादि व अपना पासपोर्ट साईज फोटो तुरन्त भेजें।

संयोजक —श्री कृष्णचंद्र आर्य अमृतमहोत्सव समिति
पिंपरी, पूना-४११०१७

आर्यसमाज की उन्नति के उपाय

आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा ध्येय है, सत्य हमारा कर्म॥

ससार में ईश्वर से बढकर दूसरी कोई शक्ति नहीं है। वेदों से बढकर ज्ञान पुस्तकें नहीं और महर्षि दयानन्द जैसा सत्य की खोज करने वाला और धर्म का निर्भय प्रचारक आज तक कोई नहीं हुआ। आर्यसमाज सर्वश्रेष्ठ सस्था है।

आर्यसमाज के सिद्धान्तों व कार्यों की तुलना नहीं है। अर्थात् आर्यसमाज जिन सिद्धान्तों को मानता है वे सब सत्य है क्योंकि वे ईश्वरीय या वैदिक है। आर्यसमाज ने मानव जाति के उत्थान व कल्याण के लिए जो कार्य किये है वे सर्वोपरि हैं। यद्यपि दीपक तले अन्धेरा देखकर समय-समय पर स्वार्थी व्यक्ति इसमें घुसते रहते हैं तथा अपनी कुवृत्तियो एवं दुश्चरित्र के कारण इसकी प्रतिष्ठा की हानि करते रहते है पुनरपि तुलनात्मक दृष्टि से अन्य संस्थाओं/समाजों की अपेक्षा इसके सदस्य अच्छे हैं। सब आर्यों का कर्त्तव्य है कि अपने सुकर्मों से मातृसंस्था का गौरव बढाये।

स्वानुभव, विचार व मति के अनुसार कुछ सुझाव

१- उपनियमों की ओर विशेष ध्यान देना—महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना करते समय आर्यसमाज के २८ नियम बनाए थे जिनमें से सस्था सचालन सम्बन्धी व्यवस्थाओं को पृथक् करके सार्वभौम, सर्वकालिक एव शाश्वत दस मानव कल्याण विश्व-सूत्र निश्चित किए। अन्यों को उपनियमो के रूप में मान्यता मिली जो श्री महाराज के निर्देशानुसार ही यथावश्यकता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा अनेक बार सशोधित हुए हैं। वह एक कटु सत्य है कि अत्यधिक संख्या में आर्य सभासद् उनसे अनभिज्ञ हैं। अनेक समाजों में यह पुस्तिका नही है। सभा अधिकारियों में भी इन पर विशेष ध्यान देने वाले नगण्य है। इन उपनियमों में आर्यसमाज के सदस्य कौन बन सकते है, प्रधान व मन्त्री आदि कितने समय के बाद बनाये जा सकते है—इत्यादि उत्तम व्यवस्थायें है। यदि इनके अनुसार इकाइयो का निर्माण व सचालन हो तो अनेक समस्यायें मिट सकती है। इनकी उपेक्षा करने के कुफलो का मैंने स्वयं साक्षात्कार किया है। किसी प्रसग में मैंने एक प्रतिष्ठित आर्य से सदस्यता शुल्क के सम्बन्ध मे निवेदन किया कि आय का शतांश देना चाहिए तो सहमत नही हुए और अन्त में कहने लगे कि—आप दे दो न। मैंने कहा कि मैं अकेला ही नहीं हमारे आर्यसमाज के अन्य अर्जक सदस्य भी शतांश देते है। चुनाव जीतने के लिए अनार्यों की भरती की जाती है। फलतः आर्यसमाज बच्छोवाली (लाहौर) जितने सदस्यों वाले समाज भी कागजों पर हैं। "इकत्तीस नाम पूरे करने है किसे हो का लिख दे" एक दिन यह सुनकर हार्दिक खेद हुआ। एक प्रत्यक्ष दृश्य और देखा। नये नामधारी आर्य सदस्य बनकर चुनाव जीतने का मनसूबा ढहता देख एक व्यक्ति मेरे प्रति कुवचन बोलने लगा। अधिक क्या कहूं आर्यसमाज के सदस्यों की संख्या चाहे थोड़ी क्यों न हो परन्तु दुराचारियो की भर्ती न की जावे और घुसे हुए प्रच्छन्न अनार्यों को कहा जाए कि आर्यसमाज पर कृपा करो। कुकर्मों पर प्रायश्चित करके सुकर्मों की प्रतिज्ञा लो अन्यथा पृथक् हो जाओ। यह सुनकर कि आर्यसमाज मे कुछ अभक्ष्यभक्षी भी सम्मिलित हैं अन्तरात्मा रो उठती है।

२- धर्मकार्यों के लिए दशांश निकालना—सब आर्यसमाजी यदि अपनी आय का दसवा भाग निकालकर उत्तम सत्कार्यों में लगावें तो उनका यश फैलेगा और सार्वजनिक कार्यों के लिए भीख भी कम मांगनी पडेगी। यह भी ध्यान रहे कि उनकी कमाई पवित्र हो।

३- आर्यसमाज मन्दिर वैदिक धर्म प्रचार के केन्द्र व मानव सेवा आश्रम हो—जहाँ जहाँ आर्यसमाज हो वहाँ वहाँ उत्तम, विशाल भवन बनवाकर उनके द्वार मानव सहायतार्थ सदैव खुले रहें। इसके लिए उनमे भजन मण्डली, पुरोहित तथा सेवक का स्थायी प्रबन्ध हो और वे अपने उद्देश्यों के प्रति सजग व क्रियाशील रहें। अपना आचार व व्यवहार आदर्श बनाये रक्खे।

४- अन्याय और पाखण्डों का प्रखर विरोध किया जाये—अपने इतिहास प्रकृति और स्वरूप के अनुसार यथासमयस्थिति (यथासामर्थ्य) अधर्म व अन्धविश्वासों तथा शोषण के विरोध में आवाज उठाते हुए रचनात्मक परोपकारी कार्यों में आगे रहने से ही आर्यसमाज के अस्तित्व का भान आम जनता को होगा तथा आर्यसमाज की उन्नति होकर प्राणिमात्र का कल्याण होगा। उक्त कार्य में एकजुट होकर आर्य कार्य करें।

५- समर्पित प्रचारक व विचारक कार्यकर्ताओं की बातों पर ध्यान दिया जावे—शताब्दी प्रसंग में तथा यदा कदा डा० भवानीलाल भारतीय प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु आदि आर्यसमाज के जागरूक, तड़प वाले आर्य विद्वानों ने जो-जो सुझाव दिए है उनका पालन होना चाहिये।

—धर्मपाल आर्य 'वीर' शास्त्री

क्लंगापाली, बरगढ़ में सात सौ ईसाई वैदिक धर्म में

ईसाई बहुल मधुपुर (सोहेला) क्षेत्र के ५-६ गांव के २५० से अधिक परिवारों के ७०० से अधिक इसाइयों ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म की दीक्षा ग्रहण की। गत एक वर्ष से उनकी भावना वैदिक धर्म ग्रहण करने की थी परन्तु अब तक यह सुविधा नही हो पाई थी। उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती की प्रेरणा पर ५ फरवरी को वैदिक यति मण्डल के मन्त्री एवं गुरुकुल आमसेना के आचार्य श्री स्वामी व्रतानन्द जी की अध्यक्षता मे इस समारोह का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम का संचालन उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विशोकेसन जी शास्त्री ने किया। श्री स्वामी विशुद्धानन्द जी एवं श्री कर्मवीर शास्त्री ने संस्कार करवाया। सारा आयोजन बहुत आकर्षक एवं प्रभावशाली रहा। इस अवसर पर इस क्षेत्र के अनेक आर्यबन्धु भी उपस्थित थे।

(पृष्ठ २ का शेष)

लिए निष्पक्ष एवं शांत दृष्टिकोण अपनाना सम्भव होगा। यह सोच लूं कि मैं एक वकील हूं विरोधी पक्ष की ओर से पैरवी करने की तैयारी कर रहा हूं।

चिन्ता का कारण क्या है? मैं क्या उपाय कर सकता हूं। ये दो प्रश्न करके चिन्ता को दूर किया जा सकता है अनुभव ने समय-समय पर प्रमाणित किया है कि अमुक निर्णय पर पहुंच जाने का मूल्य कितना अधिक होता है। एक बार निर्णय पर पहुंच कर क्रियान्वयन की अवस्था में परिणाम की जिम्मेदारी और उसकी चिन्ता को ताक में रख दीजिये। सावधानी से तथ्य के आधार पर अमुक निर्णय पर पहुंच कर तत्काल ही उसके पालन में जुट जाइये।

समस्या के सम्बन्ध में ४ विश्लेषण—१) समस्या क्या, २) इसका हेतु क्या, ३) उसके सभी सम्भव साधन क्या, ४) किस समाधान की सलाह देते हैं। इस विश्लेषण पर ३ चौथाई समस्या स्वयं हल हो जाती है।

चिन्ता विश्लेषण की मौलिक विधियां—तथ्यों का आकलन, उनकी सावधानी से छानबीन, एकबार लिए निर्णय पर कार्य आरम्भ करना। संसार में आधी चिन्तायें तो इसलिए होती हैं कि लोग अपने निर्णय के आधार को जाने बिना ही निर्णय कर लेने का प्रयास करते हैं।

(हितोपदेशक से साभार)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्तीभवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ३०७२२) से प्रकाशित।

वर्ष २२ अंक १८ २८ मार्च, १९९५ (वार्षिक शुल्क ३०) (आजीवन शुल्क ३०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

शराबबन्दी आन्दोलन की प्रतिक्रिया

रेवाड़ी में प्रदर्शन करने पर पुलिस ने सभा का शराबबन्दी बैनर तथा ओ३म्ध्वज छीना

(केदारसिंह आर्य...)

७ मार्च को दोपहर बाद मे प्रदर्शन करने के पश्चात् सभा का जत्था हरयाणा राज्य परिवहन की बस द्वारा सायकाल रेवाडी पहुच गया। आर्यसमाज मन्दिर में सभी के आवास तथा भोजन की व्यवस्था सराहनीय थी। मन्दिर मे ऋषिलगर चलता है जहा बाहरसे आनेवाले यात्रियो तथा आर्यसमाज के प्रचारकों को आदरपूर्वक सारी सुविधा दी जाती है। सभा के अन्तरग सदस्य श्री सुखराम आर्य सभा के उपदेशक प० मातुराम प्रभाकर के सहयोग से प्रदर्शन की एक सप्ताह से तैयारी कर रहे थे। उन्होंने रेवाडी क्षेत्र के आर्यसमाज तथा गुरुकुल खासेडा के अधिकारियों से सम्पर्क किया तथा उन्हें ८ मार्च के प्रदर्शन मे सम्मिलित होने की प्रेरणा की। प्रात आर्यसमाज मन्दिर में यज्ञ तथा प० विश्वमित्र आर्य के भजनोपदेश के पश्चात् आर्य नर-नारी श्री सुखराम के नेतृत्व में हाथो में ओ३म्ध्वज शराबबन्दी बैनर लेकर रिक्शा में ध्वनिविस्तारक रखकर पं० मातुराम प्रभाकर महर्षि दयानन्द की जय, आर्यसमाज अमर रहे, शराब के ठेकेदार देश के गद्दार, शराब के ठेके बन्द करो, दूध-दही का प्रबन्ध करो आदि नारे लगवा रहे थे। इस प्रदर्शन में स्वामी इन्द्रवेश भी सम्मिलित होगये। स्त्री आर्यसमाज की प्रधान श्रीमती सरला कालेडा, अखिल भारतीय महिला परिषद रेवाडी की अध्यक्षा श्रीमती शशि यादव, सदस्य जिला परिषद भी अन्य महिलाओं के साथ प्रदर्शन में उत्साहपूर्वक भाग ले रही थीं। श्री

रामचन्द्र आर्य पूर्व बी डी ओ, श्री ओमप्रकाश ग्रोवर आर्य नेता अपने अन्य सहयोगियों के साथ प्रदर्शन को सफल करने मे पूरा सहयोग दे रहे थे। जब प्रदर्शनकारी नीलामी स्थान आबकारी कराधान कार्यालय के निकट पहुच गये तो जिला प्रशासन पुलिस के सहारे प्रदर्शनकारियो को बलात रोकने का प्रयत्न किया परन्तु प्रदर्शनकारी उनका घेरा तोड़कर और आगे बढ़ गये। थोडी देर मे पुलिस और अधिक सख्या मे हथियारो तथा लाठियो से लैस होकर सडक पर खडी होगई और प्रदर्शनकारियो को पीछे धकेलना आरम्भ कर दिया। प्रदर्शनकारी लाठी-गोली खायगे, शराब बन्द करवायेंगे। आई फौज दयानन्दवाली के रास्ता करदो खाली आदि के जयघोष और शक्ति से लगाने लगे। इसी बीच पुलिस के दो लठधारी सिपाहियो ने सभा प्रचारक श्री धर्मवीर तथा उसके साथी को धक्का मारा तथा उनसे ओ३म्ध्वज तथा सभा का शराबबन्दी बैनर बलात् छीनकर डण्डा तोड दिया। इस पर प्रदर्शनकारी और उत्तेजित होगये और अत्याचारी पुलिस मुर्दाबाद के नारे लगाने लगे। इस प्रकार तनाव बढ़ने पर जिला उपायुक्त जिला पुलिस अधीक्षक को अपने साथ लेकर प्रदशनकारियो के बीच आगये और पुलिस के सिपाहियो द्वारा अनैतिक कार्यवाही करने पर खेद प्रकट किया। श्री सुखराम आर्य ने सभा तथा आर्यसमाज रेवाडी की ओर से उपायुक्त महोदय को शराबबन्दी का ज्ञापन देते हुए माग की कि हरयाणा प्रदेश की पवित्रता की रक्षा तथा खुशहाली को स्थिर बनाने के लिए शराब पर पूर्ण पाबन्दी लगाई जावे क्योंकि महर्षि दयानन्द तथा महात्मा गाधी ने शराब के सेवन को राष्ट्रहित के विरुद्ध बताया है। शराब के कारण करोडो परिवार बर्बाद हो चुके। प्रशासन और जनता मे फैले भ्रष्टाचार और अनैतिक जीवन के गिरावट में मूल कारण शराब ही है। शराब के सेवन से नवयुवक पथभ्रष्ठ हो रहे हैं। राष्ट्ररक्षार्थ वीर सैनिको की कमी होरही है। स्मरण रहे अच्छे सैनिक हरयाणा की वीर भूमि ही राष्ट्र को देती रही है क्योंकि यहा दूध-दही की नदिया बहती थी। परन्तु आज भजनलाल की सरकार ने अपने दामाद को शराब का कारखाना खुलवाकर उसे ससार की सर्वाधिक धनवान बनाने का स्वप्न ले रहा है। उसे हरयाणा के कल्याण की चिन्ता नही है। कई नेताओ जिनमें श्रीमती पुष्पा आर्या शास्त्री, श्री वेदप्रकाश विद्रोही, श्रीमती शशि यादव, स्वामी इन्द्रवेश आदि ने भी भाषण दिय।

उपायुक्त महोदय ने इस माग को मुख्यमन्त्री तक पहुचाने का वचन दिया। इसी अवसर पर हरयाणा विकास पार्टी का एक जत्था शराबबन्दी के नारे लगाता हुआ वहा पहुच गया और गिरफ्तारी की माग की। उनके साथ सभा के उपदेशक प० अर्जुनदेव आर्य तथा प० अनिल आर्य भी पुलिस की गाडी मे बैठकर थाने मे गय। नीलामी पूरी होने पर उन्हे छोड दिया गया।

सामवेद पारायण यज्ञ एव वैदिक धर्म प्रचार

वैदिक भक्ति एव योग साधना आश्रम बीबीपुर (जीन्द) का वार्षिक महोत्सव २४ से २८ फरवरी १९९५ तक ब्रह्मचारी ब्रह्मपुत्र जी की अध्यक्षता मे धूमधाम से मनाया गया। सामवद पारायण यज्ञ स्वामी वेदरक्षानन्द जी के ब्रह्मत्व म साथ प्रात सम्पन्न हुआ। प० ईश्वरसिंह जी तूफान आय प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजनमण्डलियो ने यज्ञोपरान्त व रात्रि मे बीबीपुर तथा बहबलपुर गाव मे वदिक धर्म का प्रचार किया। आय प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपप्रधान स्वामी रत्नदेव जी आचाय बलदेव जी ससद सदस्य आचाय [illegible] जी शास्त्री, स्वामी धर्मानन्द जी आदि महानुभावो ने जनता को सम्बोधित तथा हवनकुण्ड मे आहुतिया प्रदान की।

स्वामी श्रद्धानन्द (आश्रम बीबीपुर)

प्रसन्नता की लहर

आप सब को यह जानकर हर्ष होना चाहिए कि श्रद्धेय स्वामी सोमानन्द जी महाराज के आशीर्वाद से स्वामी वेदमुनि जी की अध्यक्षता में नैष्ठिक ब्रह्मचारी जीवानन्द जी के ब्रह्मत्व में होली के पावन पर्व पर हम छिल्लरकी (गुड़गांवा) ग्रामवासियों ने अतीव श्रद्धा एवं हर्षोल्लास सहित बृहद् यज्ञ कराया जिसमें हम सब ने ओ३म् पिता को साक्षी मानकर श्रद्धा एवं भक्तिभाव से आहुतियां डालकर प्रतिज्ञा की कि हम किसी भी प्रकार का नशा नहीं करेंगे क्योंकि ये नशे हमारे वेदशास्त्रों के विरुद्ध हैं और हमारी शारीरिक एवं मानसिक शक्ति को क्षीण करते हैं। इतना ही नहीं अपितु अनेक विकारों के जन्मदाता हैं। हम सभी भारतवासियों से प्रार्थना करते हैं कि वे भी इन सामाजिक बुराइयों से दूर रहकर देश के भविष्य को उज्ज्वल बनायें। हम हैं आपके मंगलाभिलाषी समस्त छिल्लरकी ग्रामवासी।

नौजवानों और बुजुर्गों ने जब शराब-मीट आदि छोड़ने की प्रतिज्ञा करते हुए आहुतियां डाली तो माताओं और बहनों में खुशी की लहर दौड़ गई और हमको खीर हलवा खिलाया तथा दान-दक्षिणा देकर सहर्ष विदा किया एवं सुधारक और सर्वहितकारी के ग्राहक बने।

—जीवानन्द नैष्ठिक

ऋषि जन्मोत्सव तथा बोधोत्सव

आर्यसमाज बुढलाडा की ओर से दिनांक २६-२-९५ को आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण में ऋषि जन्मोत्सव तथा बोधोत्सव इकट्ठा एक ही दिन मनाया गया। कार्यक्रम बहुत ही धूमधाम हर्षोल्लास और पूरी तैयारियों के साथ सम्पन्न हुआ। ध्वजारोहण आर्यसमाज के प्रधान श्री मेघराज गोयल ने अपने कर-कमलों द्वारा किया। डी० ए० वी० माडल स्कूल के छात्र-छात्राओं ने ध्वज वन्दना "जयति ओ३म् ध्वज व्योमविहारी" गाकर वातावरण को अपने स्वरों से झंकृत कर दिया। वैदिक जयघोष के द्वारा आकाश गूंज उठा।

उसके बाद यज्ञ का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा श्रद्धेय श्री महावीरप्रसाद जी आर्य, (आर्यसमाज बुढलाडा के पुरोहित) ने किया। यज्ञ कार्य बहुत ही श्रद्धा, प्रेम व भक्तिभरे वातावरण में सम्पन्न हुआ। यज्ञ के बाद नगर के सैकड़ों नर नारियों, डी० ए० वी० माडल, तथा डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल के छात्र-छात्राओं की बड़ी संख्या के बीच मञ्च का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। मञ्च संचालन श्रीमती किरन गर्ग प्रधानाचार्य डी० ए० वी० माडल स्कूल ने किया। स्कूल के छात्र-छात्राओं ने आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के जीवन, उनकी मान्यताओं तथा जीवन के आदर्शों पर गीत, कविताएं, काव्यावलियां (कव्वाली) तथा भाषण प्रस्तुत किए। श्री मेघराज गोयल ने पाखण्डवाद तथा मिथ्यावाद को छोड़कर तर्कबुद्धि से वास्तविक सत्य को अपनाने का आह्वान किया।

इस कार्यक्रम में सर्वश्री देशराज बांसल, सुरेशकुमार बांसल, प्रभुदयाल, अमरनाथ सिंगला, श्रीमती किरन गर्ग का तथा सम्पूर्ण अध्यापिकावर्ग डी० ए० वी० माडल स्कूल का परिश्रम व योगदान सराहनीय था।

देशराज बांसल, मन्त्री

नेत्रहीन किन्तु साहसी हिन्दी आशुलिपिक

दिल्ली सरकार के रोजगार निदेशालय में कार्यरत हिन्दी आशुलिपिक श्री श्रीगोपाल शिसोदिया ने अपने नेत्रहीन होने के बावजूद बड़े ही आत्मविश्वास से इस चुनौती को स्वीकार कर यह सिद्ध कर दिया है कि विकलांग व्यक्ति दया के पात्र नहीं वरन् उचित प्रोत्साहन के अधिकारी हैं। श्री शिसोदिया सामान्य हिन्दी टाइप मशीन पर बड़े ही आत्मविश्वास से टाइप करते हैं।

उन्हें इस प्रयास में और अधिक सफलता प्राप्त करने के लिए एक ब्रेल आशुलिपिक मशीन रोजगार निदेशालय ने विशेष प्रयत्न कर उपलब्ध करा दी है। इस मशीन की सहायता से श्री शिसोदिया १०० से १२० शब्द प्रति मिनट की गति से हिन्दी में आशुलिपि से डिक्टेशन लेकर उसे सामान्य टाइप मशीन पर टाइप कर सकते हैं।

श्री शिसोदिया शतरंज के क्षेत्र में भी विशेष महारत हासिल कर चुके हैं इस खेल में नेत्र के अलावा तीक्ष्ण बुद्धि की भी आवश्यकता होती है। इस [illegible] मिला [illegible] इस क्षेत्र में भी दिल्ली सरकार का [illegible] करने के लिए श्री शिसोदिया आत्मविश्वासपूर्वक पूरी लगन से जुटे रहेंगे।

श्री शिसोदिया ने अपनी नेत्रहीनता को अपने लक्ष्य में बाधा नहीं बनने दिया। यह एक उदाहरण है विकलांग व्यक्तियों के लिए कि वे भी इस उदाहरण से प्रेरित हो [illegible] लगन से अपने क्षेत्र में सफलता के लिए कमर कसें। उन्हें दया की नहीं उचित प्रोत्साहन की आवश्यकता है।

कहा जाता है कि हिन्दी आशुलिपि सीखने में कठिनाई होती है। इस भ्रम को दूर करने के लिए यह उचित होगा कि श्री शिसोदिया की कला का प्रदर्शन कराया जाय जिससे अन्य युवक-युवतियां भी प्रेरणा ले सकें। आवश्यकतानुसार श्री कृष्णमोहन अग्रहरि, उपप्रादेशिक रोजगार अधिकारी (मुख्यालय) बैटरी लेन, राजपुरा रोड, दिल्ली-५४ (फोन नं० २५१७१०२ या २५१८३६३) से सम्पर्क किया जा सकता है।

जो हिन्दी से प्यार नहीं करता वह भारत से प्यार नहीं करता

२४ अक्तूबर १९९४ को रबड़ बोर्ड द्वारा आयोजित राजभाषा सम्मेलन में अपने उद्‌घाटन भाषण में केरल विधान सभा के उपाध्यक्ष के० नारायणकुरुप ने कहा—

"हिन्दी पढ़ने से उत्तर भारत के आदमियों के अधीन हो जाएंगे" ऐसी चिंता भी छोड़ना है। हम भारतीय हैं—यह भावना पैदा करने के लिए भारत को एक भाषा की जरूरत है।

हमारा चिंतन, मनन और लेखन कहना उसी भाषा में होना चाहिए। "कोई भी व्यक्ति हिन्दी से प्यार नहीं करता तो यह समझना है कि वह भारत की अखण्डता को नहीं मानता और भारत को पूरी तरह प्यार भी नहीं करता।" भारत की सेवा करना हर एक भारतीय का कर्तव्य है। और समूचा भारत का विकास हरेक भारतीय का लक्ष्य है। यह कर्तव्य निभाने के लिए, और लक्ष्य प्राप्ति के लिए हमारी राष्ट्रभाषा, राजभाषा और सम्पर्क भाषा हिन्दी का पूरा विकास और प्रचार होना चाहिए।

तमिल, मलयालम, उर्दू, तेलुगु, कन्नड़, असमी, गुजराती, पंजाबी आदि सभी भाषाएं श्रेष्ठ हैं। सांस्कृतिक और साहित्यिक पूर्ण भी हैं। लेकिन भारत का दिल सारे भारतीयों का दिल है। इसलिये हरेक का हृदय स्पन्दन भारत का हृदय ताल बनाने के लिए हमारे लिए एक ही भाषा की जरूरत है। सबको एक सूत्र में बांधने का सूत्र है भाषा। ('रबड़ समाचार' के फरवरी-मार्च १९९० के अंक से साभार)

जगन्नाथ संयोजक, राजभाषा कार्य,
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् सरोजिनीनगर, नई दिल्ली

ध्यानयोग-शिविर

(३ अप्रैल से ९ अप्रैल तक, और १० अप्रैल से १४ अप्रैल तक सामवेद पारायण यज्ञ)

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी योगधाम में श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में ध्यानयोग शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसमें आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि अष्टांगयोग का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा यम, नियमादि का पालन भी कराया जायेगा। शिविरार्थी शारीरिक निर्बलता तथा मानसिक अशान्ति से छुटकारा पाने के लिए विविध यौगिक उपायों से लाभ प्राप्त करके आत्मदर्शन का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। शिविर में यथासमय अन्य विद्वानों के प्रवचन तथा भक्ति संगीत होगा।

—योगधाम, आर्यनगर, ज्वालापुर, हरद्वार-२४९४०७

स्वामी दयानन्द उपदेशक रेवाड़ी में शराब की बिक्री

विस्वत सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि रेवाड़ी (हरयाणा) में जिस स्थान पर बैठकर एक सप्ताह तक जनता को वेदोपदेश दिया था, वहां आजकल असमाजिक तत्व शराब तथा गांजा आदि मादक पदार्थों की बिक्री कर रहे हैं। श्री राममेहर एडवोकेट रोहतक की अध्यक्षता में एक शिष्टमंडल शीघ्र ही रेवाड़ी जा रहा है, वे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को अपना सुझाव देंगे कि किस प्रकार इस ऐतिहासिक तथा पवित्र स्थान की सुरक्षा की जा सकती है।

—केदारसिंह आर्य

२३ मार्च को जिनका बलिदान दिवस था—

शहीदों के सम्राट

महान् क्रान्तिकारी शहीदे-आज़म सरदार भगतसिंह

क्या महात्मा गांधी ने फांसी से बचाने की कोशिश की थी ?

(लेखक—डा० शान्तिस्वरूप शर्मा, पत्रकार, कुरुक्षेत्र)

एक पुरानी कहावत है 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात।' इस कहावत को सार्थक किया ढाई तीन साल के छोटे से बालक ने। बालक अपने पिता की उंगली छोड़ खेत में बैठ गया। पिता ने बालक से पूछा कि वह क्या कर रहा था ? तुरन्त विश्वासपूर्ण उत्तर आया, "बन्दूकें बो रहा हूं।" ये शब्द बालक भगतसिंह ने ही पिता किसनसिंह को कहकर उन्हें स्तब्ध कर दिया था।

सरदार भगतसिंह का जन्म ८ सितम्बर १९०७ को जब माता विद्यावती की कोख से हुआ तो ऐसी घटनाएं हुईं जिनके कारण उनका नामकरण भागोंवाला-भाग्यवान भगतसिंह हुआ। उसी दिन चाचा सरदार अजीतसिंह का निर्वासन समाप्त हुआ। पिता सरदार किशन-सिंह व चाचा सरदार स्वर्णसिंह की जेल से रिहाई हुई।

स्कूल प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करते ही आप नवां कोट लाहौर चले गए जहां आपको खालसा स्कूल के स्थान पर डी० ए० वी० स्कूल में दाखिल कराया गया क्योंकि वहां खालसा स्कूल की तरह 'गॉड सेव द किंग' का गीत प्रार्थना के रूप में नहीं गाया जाता था। एक शहीद को धीरे विकसित किया जा रहा था। पिता जी ने एक बार आपके बारे में पूछताछ की तो उत्तर पाया "वह तो शिष्य क्या, स्वयं गुरु है। वह तो लगता है पहले ही सब कुछ पढ़ा हुआ है।"

१९१५ में गदरपार्टी के अंग्रेजों के विरुद्ध गदर करने के प्रयास के असफल होने के कारण नेता गिरफ्तार हुए, काले पानी या फांसी की सजा हुई। फिर १९१९ में जलियांवाला काण्ड हो गया। इन घटनाओं से बालक भगतसिंह बहुत प्रभावित हुआ। काण्ड के दूसरे दिन आप अमृतसर पहुंचे और वहां से खून से सनी मिट्टी का मस्तक पर तिलक किया और कुछ मिट्टी शीशी में डालकर घर ले आए। शीशी के चारों तरफ फूल रखे गए बहुत दिनों तक यही होता रहा।

१९२१ में नौवीं के इस विद्यार्थी का पढ़ाई से मन उचाट हो गया। मन आन्दोलन में कूदने को लालायित हो उठा। पिता की आज्ञा पाकर आन्दोलन में कूद गए। स्वदेशी के प्रचार व विदेशी के बहिष्कार का बीड़ा उठाया। विदेशी वस्त्रों की होली जलने लगी।

फिर आपको नेशनल कालिज में दाखिल किया गया। नेशनल कालिज के साथ ही शेरे-पंजाब लाला लाजपतराय ने द्वारकादास पुस्तकालय की भी स्थापना की थी। वहां राजनैतिक बहस होती जिनमें आप आतंकवाद व समाजवाद का समर्थन करते।

१९२३ में एफ० ए० पास करके बी० ए० प्रथमवर्ष में दाखिला पाया। बड़े भाई जगतसिंह की मौत के बाद आपके विवाह की बात चलने लगी। सगाई की तारीख निश्चित भी हो गई। लेकिन आपके दिल में मौत से शादी की बात पनप रही थी। उस निश्चित तारीख से पहले ही फरार हो गए। पिता जी के लिये खत रख गये जिसमें ऐलान था कि उनकी ज़िन्दगी आजादी-ए-हिन्द के असूल के लिये वक्फ हो चुकी थी। सांसारिक सुखों के लिये उनके दिल में कोई स्थान न था।

१९२८ में साइमन कमीशन भारत आया। अक्तूबर के अन्तिम सप्ताह में उसे लाहौर आना था। उसके बहिष्कार की योजना बन चुकी थी। प्रदर्शन के आयोजन का नेतृत्व 'नौजवान भारत सभा' ने करना था। आप ने लाला लाजपतराय को आगे रहने के लिये मना लिया था। भीड़ से रास्ता साफ करने का भार ए.एस.पी. साण्डर्स के कन्धों पर था। पुलिस की टोली भीड़ पर बरस पड़ी। लाला जी गम्भीर रूप से घायल हुए और १७ नवम्बर को वो शहादत पा गये।

१७ दिसम्बर को लाला जी की मौत का बदला लेना निश्चित हुआ। आप पं० चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में राजगुरु के साथ निकले। साण्डर्स पर गोलियों की बौछार हो गई। उसके सिर के साथ कन्धे भी छिद गए। अंग्रेज सरकार हिल गई। वहां से आप कलकत्ता पहुंच गए क्योंकि लाहौर में पुलिस का पहरा सख्त था।

कलकत्ता में उस समय कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हो रहा था। बात नेहरू कमेटी की रिपोर्ट लागू करवाने की चल रही थी। यानि मद्रास के पूर्ण स्वराज्य के निर्णय से पीछे हटा जा रहा था। आपने सोचा कि कुछ ऐसा हो कि लोगों में वास्तविक चेतना जागे।

फिर असेम्बली में बम फेंकने की योजना बनी। दिन निश्चित हुआ ८ अप्रैल १९२९ का। आपने अखबार में लिपटा बम सरकारी बेंचों के पीछे वाली खाली जगह पर लकड़ी की दीवार के पास फेंका। बहुत जोर का धमाका हुआ। फिर एक और बम फेंका गया। फिर 'इन्कलाब जिन्दाबाद' व 'साम्राज्य का नाश हो' के नारे हाल में गूंजे। आपको गिरफ्तार कर लिया गया।

लाहौर कत्ल केस शुरू हुआ। २५६ गवाह अदालत में पेश हुए और ७ अक्तूबर १९३० को फैसला सुनाया गया। आपको राजगुरु सुखदेव सहित मृत्युदण्ड सुनाया गया। देश पर मर मिटने का सुअवसर आन पहुंचा था। इस फैसले ने देशभर में खलबली मचा डाली। फिर इन नौजवानों को बचाने के प्रयास शुरू हुए। आपके पिता जी ने वायसराय के पास बचाव पत्र लिखा जिससे आपको बहुत दुःख हुआ। आपने कहा, "यह समाचार इतना दुःखदायी था कि मैं इसे शान्त होकर सहन नहीं कर सकता।"

काकोरी में आपसे सलाह के लिए आए साथी विजयकुमार सिन्हा से आपने कहा था, "भाई ऐसा न हो कि फांसी रुक जाए। हम मरकर ही क्रान्ति की सेवा कर सकते हैं।" वायसराय से अपील के लिये प्राणनाथ चोपड़ा एडवोकेट को तैयार किया गया। गांधी जी पर भी इन तीनों को बचाने के लिये दबाव पड़ रहा था।

लार्ड इरविन ने लिखा है कि जब गांधी जी उसके पास पहुंचे तो वे खोये-खोये थे। उन्होंने इरविन को बतलाया था कि देश के नेता चाहते थे कि इन तीनों की फांसी माफ की जाए। लार्ड इरविन का प्रस्ताव था कि यदि गांधी जी 'गांधी इरविन पेक्ट' की तसदीक कांग्रेस के इजलास में करवाते तो फांसी पीछे हटाई जा सकती थी। गांधी जी इसके लिए तैयार न हुए।

आपने वायसराय से अपील की थी 'हम शाही कैदी है। आप हमें फांसी पर लटकाने की बजाय सेना से गोली से उड़ा देने का हुक्म दें।' अन्तिम बार मिलने आई माता जी को आपने कहा था, "लाश लेने के लिए कुलबीर को भेजना। आप मत आना। कहीं आप रो पड़ीं तो लोग कहेंगे कि भगतसिंह की माता रो रही है।"

फिर २३ मार्च १९३१ की पावन शाम आ पहुंची थी। फांसी का दिन २४ मार्च था। लेकिन फांसी २३ मार्च को ५-३० शाम को दी गई। मौत के परवाने 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारे लगाते निकल पड़े थे। आपने उस समय आए मंजिस्ट्रेट से कहा था, "आप भाग्यशाली है कि आज आप अपनी आंखों से यह देखने का अवसर पा रहे हैं कि भारत के क्रान्तिकारी किस प्रकार प्रसन्नतापूर्वक अपने सर्वोच्च आदर्श के लिए मृत्यु का आलिंगन करते है।"

कराची कांग्रेस अधिवेशन में सबसे पहले इन तीनों शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई थी। सरदार भगतसिंह ऐसा प्रकाश पुञ्ज है जो सदा हमारा मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।

✶

आदर्श पंचायत के आदर्श सरपंच

आप सबको यह जानकर हर्ष होना चाहिए कि ग्राम सैनका-घुड़ाणा के दोनों सरपंच श्री ईश्वरसिंह जी और श्री धर्मवीर जी, शराब-मास की तो बात ही क्या धूम्रपान तक नहीं करते हैं। जैसे इनका नाम वैसा ही उनका काम है। इतना ही नहीं ग्राम सैनका पंचायत के जितने भी मेम्बर हैं वे भी मांस की तो बात ही क्या शराब भी नहीं पीते हैं। कुछ मेम्बर धूम्रपान अवश्य करते हैं परन्तु आगे छोड़ने के लिए आश्वासन देते है। ग्राम घुड़ाना (जीवापुर) पंचायत के कुछ मेम्बर कभी-कभी शराब पी लेते हैं। वैसे दुःख मानते हैं और छोड़ने के लिए आश्वासन देते हैं। दोनों पंचायत के सरपंच और मेम्बर अपने-अपने गांव को आदर्श बनाने की प्रतिज्ञा लेते हैं। हम ऐसी आदर्श पंचायतों के लिए हार्दिक बधाई देते हुये हार्दिक धन्यवाद करते हैं और भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि वे अपने-अपने गांव को सब प्रकार से अच्छा बनाने में समर्थ हों। दोनो पंचायतों के सरपंच और मेम्बर साधु महात्माओं के शिष्य हैं और आर्य विचारधारा के समर्थक हैं। यह श्रेय स्वामी वेदमुनि जी एवं बाबा मोनोगिरि जी को जाता है। स्वामी सोमानन्द जी का आशीष मिल जाता है और नैष्ठिक का सहयोग पहुंच जाता है।

ग्राम सैनका की पंचायत

१ सर्वश्री ईश्वरसिंह सरपंच सुपुत्र कन्हैयालाल, २. रामफल उपसरपंच सुपुत्र श्रीराम, ३. रामकुमार पंच सुपुत्र नत्थूराम, ४. नरेश पंच सुपुत्र सुरजन, ५ बीरसिंह सुपुत्र फूलसिंह, ६. श्रीमती सुशीलादेवी पंच धर्मपत्नी रणधीरसिंह, ७. श्रीमती किरणदेवी धर्मपत्नी घमण्डीराम, ८. श्रीमती सावित्रीदेवी पंच धर्मपत्नी ताराचन्द।

ग्राम घुड़ाणा (जीवापुर) की पंचायत

१. सर्वश्री धर्मवीर सरपंच सुपुत्र श्रीराम, २. रामशरण उपसरपंच सुपुत्र भगत मुरूराम, ३. गंगाराम पंच सुपुत्र चुनीलाल, ४. भागमल पंच सुपुत्र अर्जुनसिंह, ५. शिवनाथ पंच सुपुत्र मास्टर शहजाद, ६. अतरसिंह पंच सुपुत्र छुट्टनलाल, ७. श्रीमती मूर्तिदेवी पंच धर्मपत्नी निहालसिंह, ८. श्रीमती इलायचीदेवी पंच धर्मपत्नी हुकमचन्द, ९. श्रीमती रामेश्वरी धर्मपत्नी मास्टर लालसिंह, १०. सत्यनारायण (सदस्य ब्लाक समिति) सुपुत्र रंगबीर जी, व्यसन रहित।

वेदाचार्य—जीवानन्द आर्य, सम्पादक सुधारक

वार्षिक उत्सव

नई दिल्ली, १४ मार्च। वेदों का ज्ञान मानव मात्र के कल्याण के लिए है और उनमें निहित ज्ञान-विज्ञान विश्व के समक्ष विद्यमान अनेक समस्याओं का निदान प्रस्तुत करता है। वेद में सामाजिक समरसता का सन्देश भी निहित है।

ये विचार वेद मन्दिर इब्राहीमपुर में दयानन्द संस्थान के वार्षिकोत्सव और महात्मा वेदभिक्षु जयन्ती समारोह के अवसर पर प्रमुख राजनीतिक और सामाजिक नेताओं ने व्यक्त किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता गोरक्ष पीठाधीश्वर महन्त अवैद्यनाथ संसद सदस्य ने की।

उन्होंने कहा कि राष्ट्र को सुदृढ और बलशाली बनाने के लिए वेद के विश्व को श्रेष्ठ बनाने के सन्देश को अपनाना और छुआछात तथा जाति-पांति के भेदभाव से मुक्त कराना ही समय की मांग है। इस दिशा में महात्मा वेदभिक्षु द्वारा किए गए योगदान को भी उन्होंने सराहना की।

मारीशस आर्यसमाज के प्रधान श्री मोहनलाल मोहित ने कहा कि वहां भी वेद और वैदिक साहित्य के प्रचार में दयानन्द संस्थान का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

इस अवसर पर क्षेत्र के विधायक श्री जितेन्द्रप्रसाद, कैप्टन देवरत्न आर्य, स्वामी जगदीश्वरानन्द, बनारसीसिंह, अभिविनय भारती, चमनलाल क्षत्रिय, श्री वेदव्रत मीमांसक एवं कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र चोपड़ा ने भी महात्मा वेदभिक्षु को श्रद्धांजलियां समर्पित की। संस्थान की अध्यक्षा राकेशरानी की ओर से संस्था की भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला। वेद मन्दिर में नवनिर्मित वानप्रस्थाश्रम कक्ष का उद्घाटन भी स्वामी सत्यपति ने दीप प्रज्वलित कर किया।

मन्त्री—धर्मवीर

ग्राम प्रभुवाला (हिसार) में वेदप्रचार की धूम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उत्साही सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी की प्रेरणा एवं पुरुषार्थ से १३-३-९५ को रात्रि में ग्राम प्रभुवाला में वेदप्रचार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्वामी सर्वानन्द गुरुकुल धीरणवास, स्वामी परमानन्द (भिवानी) स्वामी अग्निदेव भीष्म (हिसार), बहिन विशोकायति (हिसार), आचार्य दयानन्द शास्त्री (हिसार), आचार्य राजकुमार शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी (महेन्द्रगढ़), चौ० सुबेसिंह जी पूर्व एस. डी. एम. एवं पूर्व सभामन्त्री, श्री शिवराम विद्यावाचस्पति (पलवल), श्री केदारसिंह आर्य सभा कार्यालय अध्यक्ष (रोहतक), श्री अतरसिंह आर्य संयोजक शराबबन्दी समिति जि० हिसार आदि ने वेदों का महत्त्व, धर्म क्या है? राष्ट्ररक्षा, पं० रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन एवं कार्य, आर्यसमाज का इतिहास, नारी शिक्षा तथा शराबबन्दी पर विस्तार से विचार रखे।

इसके अतिरिक्त पं० विश्वामित्र, महाशय खेमसिंह क्रान्तिकारी, स्वामी देवानन्द, श्री दीपचन्द आर्य की भजनमण्डलियों के शिक्षाप्रद समाजसुधार के भजन हुए।

प्रातःकाल धर्मशाला में आचार्य दयानन्द जी द्वारा बृहद्यज्ञ एवं देवयज्ञ किया गया। आचार्य राजकुमार जी ने ओ३म् नाम की व्याख्या बड़े सुन्दर ढंग से की। सभा के उपप्रधान स्वामी वेदानन्द जी ने राष्ट्र रक्षा पर विचार रखते हुए नवयुवकों का आह्वान किया कि आप आएं। हरयाणा में आर्यसमाज द्वारा बड़ा भारी परिवर्तन होने वाला है। पं० विश्वामित्र एवं खेमसिंह जी के ईश्वरभक्ति के भजन हुए।

उसके बाद सभी विद्वानों का काफला उकलानां मण्डी में पहुंचा। वहां ११ से ३ बजे तक शराबबन्दी सम्मेलन हुआ। श्री कांशीराम प्रधान आर्यसमाज प्रभुवाला, का० बलबीरसिंह अजमेरा का विशेष योगदान रहा। सभा को ८०० रु० दान दिया गया।

सत्यपाल आर्य
मन्त्री, आर्यसमाज प्रभुवाला

श्री भगवानदेव 'चैतन्य' सम्मानित

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के पूर्व महामन्त्री, वेदप्रचार अधिष्ठाता, प्रान्तीय संचालक आर्य वीर दल, सम्पादक आर्य वन्दना एवं वरिष्ठ साहित्यकार श्री भगवानदेव 'चैतन्य' जी को वैदिक प्रचार प्रसार में उनके द्वारा किए गए सराहनीय कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर तथा सनातनधर्म सभा के तत्वावधान में आयोजित यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर दिनांक १५-२-९५ को एक भव्य समारोह में महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान की ओर से प्रदान किया गया। —अखिलेश भारतीय सुन्दरपुर हि० प्र०

अनमोल वाणी

- अपना चित्त शुद्ध हो तो शत्रु भी मित्र हो जाते हैं, सिंह और सांप भी अपना हिंसाभाव भूल जाते हैं। विष अमृत हो जाता है, आघात हित होता है, दुःख सर्वसुखस्वरूप फल देनेवाला बनता है, आग की लपट ठण्डी-ठण्डी हवा हो जाती है। जिसका चित्त शुद्ध है, उसे सब जीव अपने जीवन के समान प्यार करते हैं। कारण, सबके अन्तर में एक ही भाव है।
- मनुष्य देखने में कोई रूपवान, कोई कुरूप, कोई साधु, कोई असाधु दीख पड़ते हैं, परन्तु उन सबके भीतर एक ही प्रभु विराजते हैं, दुष्ट मनुष्य में भी ईश्वर का निवास है, परन्तु उसका संग करना उचित नहीं। साधनावस्था में ऐसे मनुष्यों से, जो उपासना से ठट्ठा करते हैं, धर्म तथा धार्मिकों की निन्दा करते हैं, एकदम दूर रहना चाहिए। जिसके मन में ईश्वर का प्रेम उत्पन्न हो गया, उसे संसार का कोई सुख अच्छा नहीं लगता। जो प्रभु के प्रेम में बावला हो गया है, जिसने अपना सब कुछ उनके चरणों में अर्पण कर दिया है, उसका सारा भार प्रभु अपने ऊपर ले लेते हैं।

देश को जोड़नेवाली भाषा है संस्कृत

डा० सत्यव्रत शास्त्री से गोविन्द सिंह की भेंट

संस्कृत के वरिष्ठ आचार्य और रचनाकार डा० सत्यव्रत शास्त्री को इस वर्ष राजस्थान संस्कृत अकादमी का सबसे बड़ा सारस्वत सम्मान मिलने की घोषणा हुई है। संस्कृत में ऐसे बहुत कम लोग हैं जो पांडित्य के साथ-साथ सृजन के भी पक्षधर हों। डा० सत्यव्रत शास्त्री संस्कृत के उद्‌भट विद्वान् तो हैं ही, वे सृजक भी हैं। साथ ही देश-विदेश में संस्कृत के प्रचार-प्रसार में भी उनका बड़ा योगदान है।

तीन महाद्वीपों के छह विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर होने का गौरव डा० सत्यव्रत को है। वे बताते हैं, थाइलैंड के राज परिवार में संस्कृत के पठन-पाठन की शुरुआत मैंने ही करवाई। वहां महाराजा की पुत्री को उन्होंने संस्कृत पढ़ाई और एम. ए. करवाई। थाइलैंड के चलालोंकोर्न और शिल्पाकोर्न विश्वविद्यालय, बेंकाक, उत्तरपूर्वी विश्वविद्यालय, नौंखाई में संस्कृत की शिक्षा शुरू करवाई। इनके अलावा जर्मनी, हंगरी, कनाडा और अमेरिका के विश्वविद्यालयों व शिक्षण संस्थाओं में वे विजिटिंग प्रोफेसर रह चुके हैं। डा० सत्यव्रत का मानना है कि विश्व में आज भी शिक्षा संस्कृति प्रेमी लोग भारत-भारतीयता को जानने-समझने के लिए संस्कृत पढ़ना चाहते हैं। वे सिर्फ अपनी अन्तःप्रेरणा से संस्कृत सीखना चाहते हैं, किसी प्रलोभन की वजह से नहीं। रोजी रोटी का तो वहां कोई मतलब ही नहीं। इसलिए यदि संस्कृत के पढ़ाने की समुचित व्यवस्था हो तो विश्व के अनेक और देशों में भी भारतीय संस्कृति फैल सकती है। संस्कृत को वे विश्व की सर्वाधिक पूर्ण भाषाओं में से मानते हैं। उच्चतम न्यायालय ने संस्कृत को जिस तरह से धर्मनिरपेक्ष भाषा कहकर हाल ही में फैसला दिया है, उससे वे बड़े प्रसन्न हैं। चूंकि देश की तमाम भाषाएं (द्रविड मूल की भाषाएं भी) संस्कृत के नजदीकी सम्पर्क में रही हैं और सब भाषाओं में संस्कृत के शब्द हैं, इसलिए यह देश को जोड़ती है; यही नहीं सम्पूर्ण दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में भी संस्कृत शब्दों की भरमार है।

डा० सत्यव्रत शास्त्री १९५५ से आज तक दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत पढ़ा रहे हैं। सृजनात्मक लेखन में उनके तीन महाकाव्य, एक प्रबन्ध काव्य, एक पत्र काव्य, तीन खंड काव्य और एक प्रहसन है। वाल्मीकि रामायण की भाषा शास्त्रीय अध्ययन इनकी विशिष्ट शोध कृति है। आधुनिक संस्कृत साहित्य में डा० सत्यव्रत शास्त्री एक संवेदनशील साहित्यकार के साथ ही प्रखर आलोचक के रूप में जाने जाते हैं, इनके ऊपर न सिर्फ पीएचडी हो चुकी है बल्कि डी. लिट. भी मिली है। कविता की लयात्मकता और प्रवाहपूर्ण भाषा इनकी रचनाओं की विशिष्टिता है।

संस्कृत के पारम्परिक काव्यशास्त्र की लीक से हट कर इन्होंने अपना काव्य मार्ग बनाया है। 'श्री बोधिसत्वचरितम्' में अनेक जीवों की नायक रूप में प्रस्तुति विशिष्ट है। 'श्रीराम कीर्ति महाकाव्यम्' के साथ इन्होंने रामायण के विकास में अपना योगदान किया है। इनके अलावा 'श्री गुरुगोविन्दसिंह चरितम्', 'इन्दिरा गांधी चरितम्' और 'बृहत्तर भारतम्' इनकी प्रमुख रचनाएं हैं। सबसे कम उम्र में (१९६८) संस्कृत साहित्य के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार पानेवाले वे एकमात्र साहित्यकार हैं। इस तरह डॉ० सत्यव्रत शास्त्री को पुरस्कृत कर राजस्थान की संस्कृत अकादमी ने अच्छा ही किया है।

(साभार दैनिक नवभारत टाइम्स १९-३-९५)
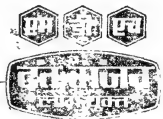
आटा-टिकाडला का उत्सव सम्पन्न

५-६ मार्च को गुरुकुल गोशाला आटा-टिकाडला का २४वां वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी सेवानन्द, वानप्रस्थी वनमुनि, सुखदेव, विश्वमुनि, स्वामी प्रकाशानन्द, श्री विश्वामित्र एवं पं० चिरंजीलाल जी भजनोपदेशक तथा श्री हवासिंह तूफान एवं श्री रामनारायण बिचाऊ, आचार्या उर्मिला, डा० सवितार्या गुरुकुल नरेला व सावित्रीदेवी शास्त्री, एम०ए० सम्मिलित हुए। भारतीय गोरक्षा सम्मेलन हुआ। डा० रघुवीरसिंह गोप्रेमी भी उपस्थित हुए। सभा को ११००) रु० का सहयोग दिया गया।

ओमस्वरूप आर्य, कुलपति

आर्य सरपंच चुने गए

श्री मीरसिंह आर्य झूपा खुर्द ब्लाक लोहारु से नौजवान साथी जिनकी आयु २२ वर्ष है ग्रामवासियों के सहयोग से आर्य सरपंच चुने गए। श्री मीरसिंह आर्य छात्र हैं, तथा वे गुण इनमें विद्यमान हैं जो एक आर्य में होते हैं। बड़े हर्ष के साथ कहना पड़ता है कि श्री मीरसिंह आर्य अपने चुनाव में शराब न पिलाने एवं शराब हटाने का संकल्प करवाते थे। ये श्री रामअवतार आर्य युवा नेता प्रधान आर्यसमाज के मित्रों में से हैं। इन्होंने भी शराबबन्दी आन्दोलन में अपना सहयोग देने का वचन दिया है। ये एक होनहार तथा लम्बे चौड़े नौजवान साथी है। ऐसे युवा सरपंच पर हमें गर्व है जिन्होंने सरपंच बनने से पहले ही शराबबन्दी की घोषणा की है। आर्यसमाज के युवा प्रधान श्री रामअवतार आर्य को शराबबन्दी एवं समाज में फैली सभी बुराइयों के खिलाफ अपना पूर्ण रूप से सहयोग देने का वादा किया है। सरपंच बनने के तुरन्त बाद श्री मीरसिंह आर्य ने श्री रामअवतार आर्य प्रधान की प्रधानता में एक युवाओं की बैठक बुलाकर शराबबन्दी में अपना पूरा-पूरा सहयोग दिया है। सरपंच ने अपने सभी पंचों को भी शराबबन्दी के लिए कहा है। आगामी मई में सभी साथी मिलकर एक शराबबन्दी यात्रा लोहारु के सभी गांवों में निकालेंगे। इस यात्रा का नेतृत्व युवा प्रधान श्री रामअवतार आर्य करेंगे। (हवासिंह आर्य)

मैं देख रहा हूं

आप इसे पढ लीजिए मत पूछिये क्या तर्ज है
इसके अन्दर देश का दुख दर्द बढ़ता मर्ज है

मैं देख रहा हूं बहुत भयकर उठने हुए तूफान को
मैं देख रहा हूं अधिक नास्तिक माने ना भगवान् को
मैं देख रहा हूं निज भक्ति मे भूने शक्तिमान को
मैं देख रहा हूं मूढमति कुछ पूज रहे पाषाण को
मै देख रहा हूं धूल फेंक कर अटा रहे जो भान को
मै देख रहा हूं मिटा रहे जो आज वेद के ज्ञान को
मै देख रहा हूं रौब जमाते निर्धन पर धनवान को
मैं देख रहा हूं हावी होते निर्बल पर बलवान को
मैं देख रहा हूं दुखी किया है आज किसने किसान को
मै देख रहा हूं लुटती धरती लुटता गन्ना धान को
मै देख रहा हूं फूटी टूटी सी निर्धन की छान को
मै देख रहा हूं बिल्डोजर से गिरते हुए मकान को
मैं देख रहा हूं भव्य भवन और कोठी आलीशान को
मैं देख रहा हूं ऊची बिल्डिग चूम रही असमान को
मैं देख रहा हूं सोने चादी की लुटती हुई खान को
मैं देख रहा हूं बैंक विदेशों में भरते बेईमान को
मैं देख रहा हूं खाली किसने किया भरे खलिहान को
मैं देख रहा हूं लूट रहे जो बहुमूल्य सामान को
मैं देख रहा हूं बिन मतलब ही उड़ते हुए विमान को
मैं देख रहा हूं भ्रष्टाचार के कमरे बने दालान को
मैं देख रहा हूं टोटल होटल के किये गये भुगता को
मै देख रहा हूं बहन बेटियों की जाती हुई शान को
मैं देख रहा हूं फूक रहे जो ऋषियों के उद्यान को
मै देख रहा हूं अम्बर में अभिमानी के अभिमान को
मैं देख रहा हूं दुखी आज वेदो के विद्वान् को
मैं देख रहा हूं मालाओं से सम्मानित अज्ञान को
मैं देख रहा हूं भक्षक रक्षक बुरे भले इन्सान को
मैं देख रहा हूं भूल गए क्यो वीरों के बलिदान को
मैं देख रहा हूं आगे बढ़ता जर्मन और जापान को
मैं देख रहा हूं नीचे गिरता निशदिन हिन्दुस्तान को
मैं देख रहा हूं इंगलिश में बाते करते श्रीमान् को
मैं देख रहा हूं संस्कृत के होते हुए अपमान को
मैं देख रहा हूं दूर यज्ञ से किये गये यजमान को
मैं देख रहा हूं ऋषि दयानन्द कर गए जन कल्याण को
मै देख रहा हूं ऋषिवर के क्यो माने ना अहसान को
मैं देख रहा हूं सत्यार्थप्रकाश रतन की खान को
मैं देख रहा हूं फिर भी यहां पर गप्पे भरे कुरान को
मैं देख रहा हूं चोटी कटवा कर बनता क्रिष्टान को
मैं देख रहा हूं खर्च चर्च का बनता इंगलिशस्तान को
मैं देख रहा हूं भारत घटता बढ़ता पाकिस्तान को
मै देख रहा हूं भारतवर्ष में छपती हुई कुरान को
मैं देख रहा हूं आर्यावर्त मे लगती हुई आजान को
मै देख रहा हूं बहुतों को चिपटे भूत मसान को
मै देख रहा हूं मैली चद्दर चढ़ती मिया सुजान को
मै देख रहा हूं मस्जिद बनती बनता कब्रिस्तान को
मै देख रहा हूं गऊ काटता अब्दुल खान पठान को
मैं देख रहा हूं हुई रक्त से धरती लहु लुहान को
मैं देख रहा हूं गीत सुनाता अरब बिलोचिस्तान को
मैं देख रहा हूं माग रहे कुछ यहां पर खालिस्तान को
मै देख रहा हूं धन के बल पर ले रहे धर्म ईमान को
मैं देख रहा हूं निर्भय बिल्ली डरा रही है श्वान को
मै देख रहा हूं खीच रहा चूहा बिल्ली के कान को
मैं देख रहा हूं बीड़ी सिगरेट पीता हुआ नौजवान को
मैं देख रहा हूं तास जुए मे युवक हुए गल्तान को

मैं देख रहा हूं फिरें थूकते चबा-चबा कर पान को
मैं देख रहा हूं शराब की प्याली से होते जलपान को
मैं देख रहा हूं नशे में कुछ का कुछ बकता महमान को
मैं देख रहा हूं सजी सड़क पर विष की भरी दुकान को
मैं देख रहा हूं नशे में भिड़ते टूटे हुए वहान को
मैं देख रहा हूं प्रदूषण से भर दिया सभी जहान को
में देख रहा हूं कटवा डाला वनखंड बियाबान को
मैं देख रहा हूं वेजिटेबिल से उतरे पकवान को
मैं देख रहा हूं कमरतोड़ मंहगाई आई जान को
मैं देख रहा हूं कन्या जलती जलता कन्यादान को
मैं देख रहा हूं जाति पाति की उड़ती तेज उड़ान को
मैं देख रहा हूं निज आंखों से पतन और उत्थान को
मैं देख रहा हूं चालाकों को जाने और अन्जान को
मैं देख रहा हूं हवा में बातें करते हुए हैवान को
मैं देख रहा हूं किस विधि इनके करूं मैं दूर गुमान को
मैं देख रहा हूं लगा रहा हूं अब ऐसे अनुमान को
मैं देख रहा हूं आग लगाऊं किस दिन पा अवसान को
मैं देख रहा हूं बदल रहा हूं नौजवानों के ध्यान को
मैं देख रहा हूं देखो तुम भी ताककर मेरे मचान को
मैं देख रहा हूं मन्त्री मण्डल राष्ट्रपति प्रधान को
मैं देख रहा हूं लीडर को इस चलती हुई जबान को
मैं देख रहा हूं पुलिस के होते अत्याचार महान को
मैं देख रहा हूं मिनिस्टरों के तनते हुए वितान को
मैं देख रहा हूं जनरल कनरल मेजर और कप्तान को
मैं देख रहा हूं बजा रहे जो अपनी बेतुक तान को
मैं देख रहा हूं देश मिटे नित बनते हुए प्लान को
मैं देख रहा हूं कुकृत्य कर-कर जाते गंगा स्नान को
मैं देख रहा हूं आग लगादी किसने मनु विधान को
मैं देख रहा हूं कहां चली गई ऋषियों के सन्तान को
मैं देख रहा हूं वीर भूमि अब खाली राजस्थान को
मैं देख रहा हूं दुष्टों से कम्पित भूमि बयमान को
मैं देख रहा हूं घूम-घूम कर अब ऐसे स्थान को
मैं देख रहा हूं जगह कहां है दुष्टों के श्मशान को
मैं देख रहा हूं लम्बा चौड़ा कुरुक्षेत्र मैदान को
मैं देख रहा हूं खड़े हुए वो लख माता की शान को
मैं देख रहा हूं आंच न आने दी थी जिसने आन को
मैं देख रहा हूं देखूंगा अब होता युद्ध घमशान को
मैं देख रहा हूं चमक उठी है लक्ष्मी की कृपाण को
मैं देख रहा हूं ऊधम के डायर पर लगे निशान को
मैं देख रहा हूं फांसी पर बिस्मिल के स्वाभिमान को
मैं देख रहा हूं वीर बोस के जोशीले व्याख्यान को
मैं देख रहा हूं तेग शिवा ने काढ़ धरा है म्यान को
मैं देख रहा हूं गदा उठाए महावीर हनुमान को
मैं देख रहा हूं जकड़ लिया है पटेल ने उसमान को
मैं देख रहा हूं चन्द कवि ने कर दिया खड़ा चौहान को
मैं देख रहा हूं पृथिवीराज की तीखा तीर कमान को
मै देख रहा हूं महाबली अर्जुन के गांडीव बाण को
मैं देख रहा हूं श्रीकृष्ण कब दें जंगी ऐलान को
मैं देख रहा हूं कहूं कहां तक है लम्बी दास्तान को

आर्यों ऋषियों का हम पर बहुत भारी कर्ज है
जितना जिससे बन सके वो तार देना फर्ज है
आप इसे पढ लीजिए मत पूछिए क्या तर्ज है।

बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

टंकारा ऋषि बोधोत्सव भव्यतापूर्वक सम्पन्न

टंकारा—महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में २६, २७, २८ फरवरी १९९५ को भव्य ऋषिबोधोत्सव समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। समारोह में भिन्न भिन्न प्रदेशों से पधारे हुए आर्य जनों ने भाग लिया। भारत की राजधानी दिल्ली से पांच बसें ऋषि भक्तों को लेकर वहां पहुंचीं और एक बस राजस्थान से गई। इस बार अब तक की सर्वाधिक उपस्थिति थी। एक सप्ताह पूर्व यजुर्वेद पारायण यज्ञ प्रो० धर्मेन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में हुआ। यज्ञ में मुख्य यजमान के रूप में टंकारा ट्रस्ट के प्रधान श्री दरबारीलाल एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमला, मैनेजिंग ट्रस्टी श्री ओंकारनाथ एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शिवराजवती, मन्त्री श्री रामनाथ सहगल एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमलेश सहगल, श्री लखाभाई पटेल, सपत्नीक उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त वहां पांच हवनकुण्ड और रखे थे जिनपर भिन्न-भिन्न प्रदेशों से पधारे हुए प्रतिष्ठित ऋषि भक्त एवं विद्वानों ने अपनी-अपनी आहुतियां दी।

भिन्न भिन्न प्रदेशों तथा विदेशों से पधारे हुए ऋषि भक्तों का टंकारा ट्रस्ट की ओर से स्वागत एवं सम्मान किया गया। मैनेजिंग ट्रस्टी श्री ओंकारनाथ ने ऋषि भक्तों को टंकारा के इतिहास एवं टंकारा में टंकारा ट्रस्ट द्वारा चल रहे कार्यों की जानकारी दी। भिन्न भिन्न प्रदेशों से पधारे हुए प्रतिष्ठित ऋषि भक्तों ने अपने-अपने विचार रखे और टंकारा ट्रस्ट द्वारा चल रहे कार्यों में पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

दोपहर ३ बजे श्री धर्मवीर खन्ना के नेतृत्व में जामनगर की आर्य शिक्षण संस्थाओं के छात्र-छात्राओं द्वारा भाषण प्रतियोगिता एवं भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पधारे हुए ऋषि भक्तों ने हजारों रुपये पारितोषिक के रूप में दिये। रात्रि ८ बजे से ११ बजे तक पं० आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार, प्रो० रत्नसिंह, महात्मा आर्यभिक्षु, प्रो० धर्मेन्द्र शास्त्री आदि के प्रवचन हुए और पं० सत्यपाल के मनोहर भजन हुए।

टंकारा गांव में प्रातः ५ बजे से ६ बजे तक प्रभात फेरी की। वह दृश्य काफी देखने वाला था। २७ फरवरी को टंकारा ट्रस्ट के प्रधान श्री दरबारीलाल ने प्रातः १० बजे ध्वजारोहण किया और कहा कि हम आर्यसमाज के कार्य को तीव्र गति से चलायेंगे, इसके लिए हमें जो भी कुर्बानी देनी होगी देंगे। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि हमारे जितने भी डी. ए. वी. विद्यालय हैं उनमें ओ३म् ध्वज अवश्य लगायेंगे।

गुजरात में हमारे डी. ए. वी. विद्यालय कम हैं, अतः अब टंकारा के आस पास तथा गुजरात में २०-२५ डी. ए. वी. विद्यालय अवश्य आरम्भ करेंगे। हमारे जितने भी विद्यालय हैं सभी में आर्यसमाज की स्थापना की जा रही है और यज्ञशाला का निर्माण किया जा रहा है। हमारे सभी विद्यालयों में धर्मशिक्षा का विषय अनिवार्य हो गया है। इसलिये सभी विद्यालयों में धर्मशिक्षक नियुक्त किये जा रहे हैं। कक्षा आठ में वही छात्र उत्तीर्ण हो सकेंगे जो कि धर्मशिक्षा में उत्तीर्ण होंगे।

श्री ओंकारनाथ, श्री दरबारीलाल, श्री रामनाथ सहगल, श्री हंसमुख परमार, श्री लखाभाई पटेल, श्री जयदेव आर्य आदि प्रतिष्ठित महानुभावों के नेतृत्व में शोभायात्रा का आयोजन किया गया। इस बार शोभा यात्रा में सभी ऋषि भक्तों ने भगवे रंग की पगड़ियां पहनी हुई थीं और गायत्री मन्त्र लिखे हुए उपवस्त्र धारण किए हुए थे। शोभा यात्रा टंकारा के मुख्य बाजारों से होती हुई महर्षि दयानन्द जन्म स्थान पर श्रद्धांजलि अर्पित की हुई उस शिवालय में पहुंची जहां स्वामी दयानन्द जी को सच्चा बोध हुआ था।

शोभायात्रा के बाद आयोजित सार्वजनिक सभा में गुजरात के राज्यपाल महामहिम श्री स्वरूपसिंह तथा भारत सरकार के पूर्व रक्षा-मन्त्री श्री चौ० बन्सीलाल विशेष अतिथि के रूप में पधारे थे। उनके आगमन पर भिन्न-भिन्न प्रान्तों के प्रतिनिधियों ने उनका पुष्पमालाओं से स्वागत किया और श्री दरबारीलाल जी ने शब्दों द्वारा उनका स्वागत किया। उन्होंने जानकारी दी कि महामहिम श्री स्वरूपसिंह आर्य-समाजी परिवार से सम्बन्धित हैं और इनमें आर्यसमाज कूट-कूटकर भरा है। ये डी. ए. वी. की संस्थाओं से भी जुड़े हुए है। राज्यपाल ने ट्रस्ट को रु० ५००/- दान दिये।

चौ० बंसीलाल के भी टंकारा पधारने पर प्रधान जी ने उनका धन्यवाद किया। उन्होंने ट्रस्ट को रु० ११००/- दान दिये। टंकारा ट्रस्ट के प्रधान श्री दरबारीलाल एवं मैनेजिंग ट्रस्टी श्री ओंकारनाथ ने दोनों को दोशाला एवं स्वामी दयानन्द जी का चित्र भेंट किया।

श्री स्वरूपसिंह ने कहा कि मैं आज से दो वर्ष पूर्व कार्यक्रम पर आने वाला था, परन्तु कुछ विशेष कारणवश नहीं आ सका। ऋषि दयानन्द को ही यह श्रेय है कि आज विधवा विवाह, नारी शिक्षा प्रगति पर है और अन्य कुरीतियों का उन्मूलन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी का जन्म तो गुजरात में हुआ परन्तु उनका कार्यक्षेत्र उत्तर भारत रहा। चौ० बन्सीलाल ने अपने विचार रखते हुए कहा कि गुजरात ने हमें तीन महापुरुष दिए हैं: राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, लौहपुरुष सरदार पटेल एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती। तीनों ने ही देश को आजादी दिलाने तथा भारत के उत्थान के लिए जो कार्य किया वह प्रशंसनीय है। राज्यपाल श्री स्वरूपसिंह जी ने टंकारा ट्रस्ट के प्रधान श्री दरबारीलाल, मैनेजिंग ट्रस्टी श्री ओंकारनाथ, श्री लखाभाई पटेल, श्री हंसमुख परमार, श्री जयदेव आदि एवं आचार्य विद्यादेव शास्त्री को शाल भेंट किये।

श्री रामनाथ सहगल ने आर्यसमाज टंकारा के लिए अपील करते हुए रु० ५१००/- आर्यसमाज टंकारा को दानस्वरूप दिया। उनकी अपील पर डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, जयपुर के प्रिंसिपल श्री एम० एल० गोयल ने रु० ११००/- की राशि दानस्वरूप दी। श्री सहगल की अपील पर आर्यसमाज टंकारा के लिए लगभग २५-३० हजार रुपये की राशि एकत्र होगई। रात्रि ८ बजे से ११ बजे तक श्रद्धांजलि सभा हुई जिसमें आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार, प्रो० धर्मेन्द्र शास्त्री, प्रो० रत्नसिंह, महात्मा आर्यभिक्षु आदि के प्रवचन और पं० सत्यपाल पथिक जी के मधुर मनोहर भजन हुए। भिन्न-भिन्न प्रदेशों से पधारे हुए लगभग २० व्यक्तियों ने भी अपने विचार रखे और ऋषि दयानन्द को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस बार बम्बई के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री अरुण अब्रोल इस कार्यक्रम में पधारे और वे यज्ञ के मुख्य यजमान बने तथा श्रद्धांजलि सभा में अपने विचार रखे। वे आर्य परिवार से सम्बन्धित हैं और टंकारा पहली बार पधारे। उन्होंने दयानन्द उपदेशक विद्यालय एवं टंकारा में चल रहे कार्यों के लिए एक लाख (१,००,०००/-) की राशि देने की घोषणा की।

टंकारा ट्रस्ट के निर्णय

दिनांक २८-२-९५ को प्रातः ९ बजे से ११ बजे तक टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टियों एवं प्रतिष्ठित ऋषि भक्तों की एक बैठक टंकारा महालय में आयोजित हुई। प्रधान श्री दरबारीलाल ने अपने विचार रखते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द जन्म स्थान को विश्वदर्शनीय बनाने के लिए ३-४ आर्किटेक्टों को अलग-अलग बुलाया जाये और मास्टर प्लान बनवाया जाये और दिल्ली में एक बैठक आयोजित की जाये जिसमें मास्टर प्लान के आधार पर इन्टरनेशनल लाईब्रेरी, रिसर्च सेन्टर आदि आरम्भ किए जाने का प्रस्ताव पारित किया जाये।

बैठक में यह प्रस्ताव भी पारित हुआ कि टंकारा में जो सह-शिक्षा का विविध लक्षी दयानन्द विद्यालय चल रहा है उसे तुरन्त बन्द कराकर छात्र-छात्राओं के लिए पृथक् पालियों में विद्यालय आरम्भ किया जाये। यह भी निश्चय हुआ कि टंकारा में एक दयानन्द माडल स्कूल लड़कों एवं लड़कियों के लिए अलग-अलग आरम्भ किया जाये।

श्री दरबारीलाल जी ने वहां इस बार १,११,१११/- (एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह) रु० की राशि डी०ए०वी० के भिन्न-भिन्न विद्यालयों से दिलवाने का आश्वासन दिया।

टंकारा ट्रस्ट की बैठक में यह निश्चय हुआ कि विदेशों से लगभग १० उपदेशकों जो कि हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी में भी धाराप्रवाह प्रवचन दे सकें की मांग है, इनके लिए टंकारा उपदेशक विद्यालय में कम से कम ५०-६० छात्र अवश्य होने चाहिए। इस पर टंकारा ट्रस्ट का कितना ही व्यय क्यों न हो जाये। इसके अतिरिक्त जो स्नातक छात्र टंकारा उपदेशक विद्यालय में प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहे उन्हें प्रशिक्षण तो निःशुल्क दिया ही जाये साथ ही उन्हें छात्रवृत्ति भी दी जाये।

टंकारा के इस बोधोत्सव को सफल बनाने का श्रेय उपदेशक विद्यालय के प्राचार्य विद्यादेव शास्त्री एवं उनके कार्यकर्ताओं को है। उनकी लगन, निष्ठा एवं कर्तव्यपरायणता की सभा ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

—रामनाथ सहगल मन्त्री

भूल सुधार

पृष्ठ ६ पर प्रकाशित कविता के रचयिता सभा के भजनोपदेशक स्वामी देवानन्द हैं।

लुट जाये न खजाना

जीवन के रास्ते में कांटे भरे पड़े हैं,
कोई पग में चुभ न जाये,
कांटों से बचके चलना,
बस इतना ध्यान रखना,
लुट जाये न खजाना ॥१॥

रंगीन फैशनों की मस्ता भरी है दुनिया,
ये तुमको खींच लेगी,
तुम इसमें खो न जाना।
संयम से काम लेना,
लुट जाये न खजाना ॥२॥

मीठे ठगों ने अपना यहां जाल है बिछाया,
कहीं इसमें फंस न जाना,
लालच से दूर रहना।
सन्तोष मन मे रखना,
लुट जाय न खजाना ॥३॥

अज्ञानता का भू पर छाया है घोर अन्धेरा,
इस अन्धकार में तुम,
रस्ता न भूल जाना।
बुद्धि से काम लेना,
लुट जाये न खजाना ॥४॥

ईश्वर को याद रखना, साथी वह तुम्हारा,
साहस से काम करना,
मिल जायगा ठिकाना।
बस इतना ध्यान रखना,
लुट जाय न खजाना ॥५॥

देवराज आर्य मित्र
आर्यसमाज, बल्लभगढ़

कविता

आओ साथियो मिलकर चलें, रुकने का अब काम नहीं।
जब तक मंजिल तय न होगी, हमें पल भर आराम नहीं ॥
अनुकूल हम समाज करेंगे, ये संकल्प हमारा है।
समाजसुधार का काम करेंगे, यही हमारा नारा है ॥
बालक बूढ़े जवान चलो, उस मंजिल तक हम जायेंगे।
वैदिक धर्म की जय बोलकर, आर्य देश बनायेंगे ॥
पापी पाप करते रहते हैं, उनका नाम मिटाना होगा।
नर्कमय हो गया देश अब, देश को स्वर्ग बनाना होगा ॥
महर्षि दयानन्द जी न आते तो विद्या कौन पढ़ाता यहाँ।
छुआछात का जोर बढ़ा था, पाखण्ड कौन मिटाता ॥
उठो आर्यो होश में आकर, शराब को दूर भगाना होगा।
शराब हटाकर ही दम लेंगे, सबको ये पाठ पढ़ाना होगा ॥
ओमानन्द ने हुई हैरानी, शराब ने जुल्म ढाए देखो।
शराब अफीम के कारण लाखों घर उजाड़े देखो ॥
ये क्या शराब बीमारी चाली, जिसका कोई अनुमान नहीं।
शराब हटेगी देश बचेगा, वरना हो सकता कल्याण नहीं ॥
हाथ जोड़कर सबको कहता ओमानन्द का कहन पुगाओ तुम।
नौजवानो अब होश में आकर, शराब को दूर भगाओ तुम ॥
लाखों बहनें होंगी विधवा, शराब ने ये सब कर डाला।
अब भी समझा रहा सबको, छोड़ दियो ये सब प्याला ॥
गुरुकुल के जब वीर चलेंगे, पीछा नहीं छोड़ेंगे ये।
शराब के ठेकेदारो सुनलो, पीछे ना मुंह मोड़ेंगे ये ॥
कहे आर्य बनो मेहनती, यही हमारा नारा है।
तन, मन, धन से करो सहायता, भारत देश हमारा है ॥
कहे हवासिंह बात मान लो, अगर जीवन सफल बनाना है।
सत्यमेव जयते का नारा, घर घर में पहुंचाना है ॥

हवासिंह आर्य, आर्यमित्र, आर्यसमाज मन्दिर, लोहारु

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्तीभवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ — फोन नं० ४०७२२ — पृष्टिसंख्या १, ६६, ०८, ५३, ०१६

सर्वहितकारी रोहतक

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री | सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष २२ अंक २० | १४ अप्रैल, १९९५ | (वार्षिक शुल्क ५०) | (आजीवन शुल्क ५०१) | विदेश में १० पौंड | एक प्रति १-२५

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित
उनकी उत्तराधिकारिणी सभा

श्रीमती परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर ३०५ ००१
दूरभाष-२४५६४

एवं

विश्व की प्रथमार्यसमाज

(आर्यसमाज मुम्बई काकडवाडी)

विट्ठलभाई पटेलमार्ग गिरगांव, बम्बई-४० ००४
दूरभाष-३८२ २१८१

के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

पूजनीय स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अभिनन्दन समारोह

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित उनकी उत्तराधिकारिणी सभा श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर एवं विश्व की प्रथम आर्यसमाज, आर्यसमाज मुम्बई (काकडवाडी) के संयुक्त तत्त्वावधान में आगामी ऋषि मेले पर दिनांक ४ नवम्बर १९९५ को पूजनीय सर्वानन्द जी महाराज का ३१ लाख की थैली से अभिनन्दन करने का निश्चय किया गया है।

स्मरण रहे कि पिछले वर्ष मुम्बई में आर्यसमाज मुम्बई (काकडवाडी) ने पूज० स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती का साढ़े सात लाख की थैली से सम्मान कर उनकी इच्छानुसार एक स्थायी कोष एवं ट्रस्ट की स्थापना करके यह निर्णय लिया था कि इस कोष से प्राप्त ब्याज की राशि द्वारा विभिन्न भाषाओं में गुरुकुल के मेधावी छात्रों को वैदिक विद्वान् बनाने में व्यय किया जायेगा।

पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी की गणना आर्यजगत् के सर्वोच्चतम त्यागी और तपस्वी संन्यासियों में की जाती रही है। वे आर्य यति मण्डल के अध्यक्ष, श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर के प्रधान एवं दयानन्दमठ दीनानगर के अध्यक्ष हैं। उन्होंने इच्छा व्यक्त की है कि अभिनन्दन की राशि का श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर के अन्तर्गत एक स्थाई कोष बना दिया जाये व उसके ब्याज की राशि से महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित ग्रन्थों एवं वेद भाष्यों को विभिन्न विदेशी भाषाओं में अनुवाद कर प्रकाशित किया जाय। सभा ने महर्षि के ग्रन्थों का विदेशी भाषाओं में अनुवाद करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया है।

इस सम्मान का प्रस्ताव परोपकारिणी सभा के उपप्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने सभा के सम्मुख रखा। जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। यह भी निर्णय हुआ कि इस समारोह का आयोजन महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित विश्व की प्रथम आर्यसमाज, आर्यसमाज मुम्बई (काकडवाडी) एवं श्रीमती परोपकारिणी सभा के संयुक्ततत्त्वावधान में किया जाय। पूजनीय स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (कार्यकारी प्रधान) एवं कैप्टन देवरत्न आर्य (उप-प्रधान) को इस अभिनन्दन समारोह का क्रमशः अध्यक्ष एवं संयोजक मनोनीत किया गया।

समस्त आर्य संस्थाएं, समृद्ध आर्यजनों एवं पूजनीय स्वामी जी के प्रशंसकों एवं भक्तों से प्रार्थना है कि वे धन संग्रह कर इस समारोह को सफल बनायें।

चैक या ड्राफ्ट श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर के नाम से निम्न पते पर भेजने की कृपा करें—

डा० धर्मवीर-संयुक्त मंत्री	
श्रीमती परोपकारिणी सभा	कैप्टन देवरत्न आर्य
दयानन्द आश्रम, केसरगंज	६०३ मिल्टन अपार्टमेन्ट्स
अजमेर-३०५ ००१	जुहूतारा रोड बम्बई ४०० ०४९

आपका दान आयकर की धारा८०G के अन्तर्गत आयकर से मुक्त होगा।

गजानन्द आर्य
मन्त्री—श्रीमती परोपकारिणी सभा

रेवाड़ी में महर्षि दयानन्द के ऐतिहासिक उपदेश स्थल की सुरक्षा योजना

महर्षि दयानन्द अपने प्रचार कार्य में हरयाणा के प्रसिद्ध नगर रेवाड़ी पधारे थे। उन दिनों यहां राव राजा युधिष्ठिरसिंह राज्य करते थे। वैसे भी रेवाड़ी सन् १८५७ स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने वाले वीर राजा तुलाराम की समर स्थली भी रही है। ऐसे बहादुरों की नगरी में महर्षि दयानन्द कई दिन तक व्याख्यान देते रहे। एक व्याख्यान उन्होंने गोरक्षा पर भी देते हुए यादवों को स्मरण कराया कि तुम श्रीकृष्ण के वंशज हो, अतः तुम्हें यहां पर गौओं की रक्षार्थ गोशाला खोलनी चाहिए। महर्षि के

प्रेरणादायक भाषण को सुनकर राव राजा युधिष्ठिरसिंह बहुत ही प्रभावित हुए और उन्होंने गोशाला की स्थापना के लिए तुरन्त अभियान आरम्भ कर दिया और गोशाला बनकर तैयार हो गई थी।

इसके साथ ही ऋषि दयानन्द रेवाड़ी में स्थित छतरियों में ही ठहरे थे, वे छतरियां आज भी विद्यमान हैं। वहीं पर वे व्याख्यान भी दिया करते थे और वहीं पर रहकर वेदभाष्य भी किया करते थे। वह स्थान महर्षि के निवास के कारण महर्षि के स्मारक के रूप में आर्यसमाज का होना चाहिए। किन्तु आज उसी महर्षि की पवित्र वेद भाष्य की वेदी पर शराब व सुलफा रखा जा रहा है। उसका पूर्ण रूप से विवरण प्राप्त करने के लिए श्री राममेहर जी एडवोकेट की देखरेख में एक समिति नियुक्त की गई है जो कि पूर्ण विवरण तैयार करने के लिए १६ अप्रैल ९५ रविवार को प्रातः ९ बजे रेवाड़ी जाएगी। पूर्ण जानकारी होने पर इस स्थान को महर्षि के स्मारक रूप में विकसित करने के लिए एवं इसके हस्तान्तरण के लिए प्रयत्न करके इसे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में देने के लिए पूर्ण रूप से प्रयत्न किया जायगा। इस समिति के सदस्य हैं—श्री राममेहर जी एडवोकेट, श्री आचार्य बलवीर जी, श्री डा० सुरेन्द्रसिंह जी महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक व श्री सुखदेव जी शास्त्री।

शराबबन्दी आन्दोलन की गतिविधियां—

जीन्द में स्वामी ओमानन्द जी तथा स्वामी वेदानन्द जी के नेतृत्व में शराबबन्दी प्रदर्शन

९ मार्च ९५ को रोहतक में शराबबन्दी प्रदर्शन के पश्चात् मेरे साथ सभा के उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, पं० मातूराम शर्मा प्रभाकर,' श्री धर्मवीर, स्वामी देवानन्द, श्री ईश्वरसिंह तूफान, पं० चिरंजीलाल, श्री जयपाल, श्री सत्यपाल आदि हरयाणा राज्य परिवहन की बस से जीन्द में प्रदर्शन की तैयारी के लिए आर्यसमाज मन्दिर पहुंच गये। आर्यसमाज के प्रधान चौ० देसराज एडवोकेट तथा उनके अन्य अधिकारियों ने हमारे आवास तथा भोजन की व्यवस्था तथा जीन्द के अन्य आर्यसमाज के अधिकारियों से सम्पर्क करके सराहनीय योगदान दिया। १० मार्च की प्रातः यज्ञादि से निवृत्त होकर जब हम प्रदर्शन की तैयारी में व्यस्त थे, तभी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती सभा प्रधान तथा सभा उपप्रधान स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती भी अपने गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों के साथ पधार गये। आर्यसमाज जीन्द के प्रधान श्री देशराज जी भी अपने समाज के कार्यकर्ताओं के साथ प्रकर्शन की तैयारी के लिए रानी तालाब पर एकत्रित हो गए। आर्य सभा के श्री रामधारी शास्त्री, स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी धर्मानन्द तथा हरयाणा विकास पार्टी के नेता श्री जयप्रकाश आदि भी वही पहुंच गए। ग्रामो से भारी संख्या में शराबबन्दी प्रदर्शन मे भाग लेने के लिए महिलाये गीत गाती हुई वहां उपस्थित हो गई। इस प्रकार वहा शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन हो गया। जीन्द के आर्यसमाज के उत्साही नवयुवक पं० विद्यासागर शास्त्री तथा श्री नरेशपाल दहिया के युवा एकता मंच के कार्यकर्त्ता भी पूरे जोश के साथ शराबबन्दी के नारे लगाते हुए सम्मिलित हो गये। गुरुकुल खरल तथा गुरुकुल कुम्भाखेड़ा से वैद्य दयाकृष्ण आर्य, श्री भरतसिंह आर्य, श्री सत्यपाल आर्य, श्री प्रदीपकुमार आर्य, श्री रोनकीराम आर्य, मा० नरेशचन्द आर्य, जिला भिवानी के शराबबन्दी समिति के सयोजक प्रिंसिपल बलवीरसिंह तथा नीमड़ी वाली से श्री शेरसिंह आर्य आदि अपने दो वाहनों में प्रदर्शन में भाग लेने के लिए सम्मिलित हो गए।

प्रदर्शन आरम्भ करने से पूर्व रानी तालाब पर सभा के उपदेशक पं० अतरसिंह आर्य, पं० मातूराम आर्य, प० चिरंजीलाल, पं० ईश्वरसिंह, स्वामी देवानन्द तथा पं० चन्द्रभानु आर्य ने शराबबन्दी के भाषण तथा भजन सुनाकर उपस्थित जनसमूह में प्रदर्शन हेतु उत्साह का वातावरण तैयार कर दिया। १० बजे प्रदर्शन स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, स्वामी वेदानन्द सरस्वती तथा चौ० देशराज जी एडवोकेट, स्वामी इन्द्रवेश तथा श्री जयप्रकाश के सामूहिक नेतृत्व में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, आर्य वीर दल, आर्य सभा तथा हरयाणा विकास पार्टी के बैनरो, ओ३म् के झण्डों के साथ साथ प्रदर्शनकारी "शराब के ठेके बन्द करो", "जो सरकार शराब पिलाए, वह सरकार निकम्मी है, जो सरकार निकम्मी है वह सरकार बदलनी है" "शराब हटेगी देश बचेगा" तथा "आर्यसमाज अमर रहे" आदि के नारे पूरे जोश के साथ लगा रहे थे। इनका उत्साह देखकर ऐसा लग रहा था कि इस प्रकार के नवयुवकों के होते हुए आर्यसमाज का भविष्य उज्ज्वल है। प्रदर्शनकारी जब शराब के ठेकों की नीलामी स्थल के पास पहुचे तो पुलिस ने बलात् रोकने का प्रयत्न किया परन्तु आर्यसमाज तथा हविपा के नेताओं ने उपायुक्त महोदय को शराबबन्दी का ज्ञापन देने तक प्रदर्शन जारी रखा। अतः जिला प्रशासन को विवश होकर प्रदर्शनकारियो की मांग स्वीकार करनी पड़ी और उपायुक्त महोदय ज्ञापन लेने के लिए स्वयं आ गये और सभा के अधिकारियों ने उन्हें ज्ञापन देते हुए सावधान किया कि ग्राम पंचायतों की स्वीकृति लिए बिना ठेके खोले गए तो वहां धरणे आदि देकर शराब की बिक्री नहीं होने दी जावेगी। इसके बाद श्री जयप्रकाश तथा आर्यसमाज के नेताओं ने गिरफ्तारी दी और इन्द्र देवता ने शराबबन्दी कार्यकर्ताओं का स्वागत करने के लिए वर्षा रूपी फूल बरसाये। —केदारसिंह आर्य

जिला हिसार में ठेकों की नीलामी पर प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज व गिरफ्तारी

गत वर्ष की भांति इस बार भी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा शराबबन्दी समिति जि० हिसार, हरयाणा विकास पार्टी, किसान यूनियन, महिला सगठन तथा देहात के आर्यसमाजों के कार्यकर्ताओं ने संयुक्त रूप से भारी प्रदर्शन किया।

दिनांक ११-३-९५ को एक प्रदर्शनकारियों का जत्था हरयाणा विकास पार्टी के कार्यालय से चला जिसका नेतृत्व चौ० मनीराम गोदारा उपप्रधान एवं चौ० जगन्नाथ पूर्व मन्त्री कर रहे थे जिसमें सैंकड़ों नरनारी सम्मिलित थे। शराबबन्दी के नारे लगाता हुआ काफला पंचायत भवन जहां ठेकों की नीलामी हो रही थी, उस ओर बढ़ रहा था। दूसरा जत्था सभा की ओर से श्री क्रान्तिकारी अतरसिंह आर्य संयोजक शराबबन्दी समिति जि० हिसार के सम्पर्क एवं पत्र-व्यवहार से क्रान्तिमान पार्क में इकठ्ठा हुआ जिसका नेतृत्व सभा के वरिष्ठ उपप्रधान स्वामी वेदानन्द जी, स्वामी सर्वानन्द जी गुरुकुल धीरणवास, चौ० सूबेसिंह पूर्व सभामन्त्री तथा श्री क्रान्तिकारी जी कर रहे थे जिसमें सैंकड़ों महिलाएं तथा आर्य बन्धु जोश के साथ नारे लगाते हुए महर्षि दयानन्द की जय, आर्यसमाज अमर रहे, शराब के ठेकेदार देश के गद्दार हैं, शराब क्या करती है बेटी बाप से डरती है आदि गगनभेदी नारों से शहर गूंजा रहा था। जुलूस पंचायत घर की ओर बढ रहा था और प्रदर्शनकारियों में जोश उमड़ रहा था। सारा शहर प्रदर्शनकारियों की ओर टकटकी लगाये देख रहा था। कुछ भारतीय किसान यूनियन के कार्यकर्ता भी नई कचेहरी में अपने दो वर्ष पुराने धरना स्थल से चलकर आए।

पंचायत भवन के इर्द गिर्द धारा १४४ लगा रखी थी। हजारों की संख्या में पुलिस बल के साथ उपमण्डल अधिकारी श्री शर्मा वहां उपस्थित थे। घोड़ा पुलिस भी तैनात थी। धारा १४४ तोड़कर जब प्रदर्शनकारी बढ़ रहे थे पुलिस ने लाठीचार्ज कर दिया। प्रदर्शनकारियों मे तथा पुलिस में काफी देर तक खींचा-तानी चली। इसी समय हरयाणा विकास पार्टी के उपप्रधान मनीराम गोदारा सहित कई महिलाओं को भी चोटें आई। बाद में श्री सूबेसिह जी तथा अतरसिंह आर्य की अपील पर पुलिस बल व प्रदर्शनकारी कुछ शान्त हुए। फिर यह विरोध प्रदर्शन शराबबन्दी सम्मेलन में बदल गया।

रिक्शा पर माइक लगाकर भाषणों का सिलसिला आरम्भ हो गया। मंच संचालन श्री क्रांतिकारी जी ने किया। सर्वप्रथम चौ० मनीराम गोदारा, सभा के प्रधान स्वामी वेदानन्द जी (स्वामी रत्नदेव जी), स्वामी सर्वानन्द जी, चौ० सूबेसिंह पूर्व सभामन्त्री, वैद्य दयाकृष्ण आर्य, श्री अतरसिंह आर्य, श्री राजपाल आर्य (कुम्भा) श्री ईश्वरसिंह आर्य (गंगनखेड़ी), श्रीमती लज्जावन्ती आर्या (बालावास), चन्द्रप्रभा (बरवाला), श्रीमती धनपतिदेवी सरपंच महोदया (उमरा), श्रीमती महेन्द्रकौर एडवोकेट किसान यूनियन महिला विंग की प्रधाना, चौ० मनीराम सहरावत स्वतन्त्रता सेनानी (खरड़), श्री करतारसिंह पूर्व प्रधान ट्रक यूनियन हिसार आदि नेताओं एवं कार्यकर्ताओं ने अपने विचार रखे। सरकार की शराब बढावा नीति की कटु आलोचना की। आर्य नेताओं ने जनता को सम्बोधन करते हुए साफ शब्दों में कहा कि एक वर्ष के अन्दर हरयाणा प्रान्त से यह भ्रष्ट भजनलाल सरकार तथा यह शराब दोनों जायेंगे। आप सब कसम उठाओ न शराब पीएंगे न पीने देंगे। स्वामी वेदानन्द जी ने कहा यह देश ऋषि मुनियों की भूमि है। यह शराब मांस तथा लाठी गोली की सरकार ज्यादा दिन नहीं चल सकती। आर्यसमाज के द्वारा क्रान्ति आने वाली है और बहुत बड़ा परिवर्तन होगा। जब तक हरयाणा मे पूर्ण शराब बन्द नहो होगी आर्यसमाज चैन से नहीं बैठेगा। (शेष पृष्ठ ७ पर)

समाज सुधारकों का प्रमुख मुद्दा : शराबबन्दी

(प्रतापसिंह शास्त्री)

लगभग दस वर्ष से हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्दमठ रोहतक ने शराबबन्दी मुद्दे को लेकर सारे प्रदेश को एक दिशा दी है और एक आंदोलनात्मक वातावरण तैयार करने की अहम भूमिका निभाई और दृढ़ निश्चय के साथ स्वामी ओमानन्द जी ने शराबबन्दी आंदोलन का नेतृत्व करने की घोषणा कर दी है। भारतीय किसान यूनियन भी लगभग डेढ साल से धरने आदि के माध्यम से शराबबंदी आंदोलन के लिए सक्रिय है। हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा ने गत कई वर्षों से मार्च के महीने में शराब के ठेकों की नीलामी के अवसर पर हरयाणा के जिला स्तर पर रैलो, धरने, विरोध प्रदर्शन करके अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया है तथा अपनी आर्य भजन मण्डलियों तथा आर्य उपदेशकों के माध्यम से हरयाणा ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में आंदोलनात्मक वातावरण की धूम मचा रखी है। सैकड़ों गांवों की पंचायतों से शराब के ठेकों को समाप्त करने का प्रस्ताव पारित करवा कर हरयाणा सरकार को भेजने भिजवाने के पवित्र कार्यक्रम को हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने हाथ में लेकर गरीब किसान मजदूर का महान् हितकारी कार्य किया है। जिसका विशेष वर्णन समय-समय पर 'सर्वहितकारी' पत्र में प्रकाशित होता रहता है। मैं उस वर्णन की पुनरावृत्ति इस लेख में नही कर रहा।

दादरी का विशाल शराबबन्दी सम्मेलन, बालसमन्द गाव जो मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल के आदमपुर हल्के का सबसे 'बड़ा गांव' है का ठेका बन्द कराने का लम्बा ऐतिहासिक संघर्ष व धरना, भूख हड़ताल, प्रदर्शन तथा सम्मेलन जो हुआ उसे कौन नही जानता। उसमें जी जान की बाजी लगाने वाले क्रांतिकारी अतरसिंह आर्य, हिसार के क्षेत्र में शराबबन्दी आंदोलन के प्रतीक बन गये है और मुख्यमन्त्री के गढ़ बालसमन्द में ठेका बन्द कराने का श्रेय हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक क्रांतिकारी अतरसिंह आर्य को ही है। इसी आंदोलित वातावरण का राजनैतिक लाभ उठाने के लिए १९ फरवरी १९९५ को रोहतक में आर्य सभा ने शराबबन्दी सम्मेलन बुलाया था। इस सम्मेलन में ५ हजार के लगभग व्यक्ति सम्मिलित हुए थे। सम्मेलन में घोषणा की गई कि वर्ष १९९५ हरयाणा में शराबबन्दी वर्ष के रूप में मनाया जायेगा। साथ ही वहां यह नारा लगाया जा रहा था :

'जो सरकार पिलाये शराब, वह सरकार निकम्मी है, जो सरकार निकम्मी है, वह सरकार भगानी है।' यद्यपि यह सम्मेलन समाज सुधारक दो संन्यासियों ने बुलाया था और इसका उद्देश्य शराबबन्दी के बहाने राजनीति ही था। किन्तु शराबबन्दी की बात चाहे राजनेता कहे या समाज सुधारक कहे जनहित में होने के कारण यह एक अच्छी शुरुआत है। सम्भव है एन.टी. रामाराव की भांति कोई राजनेता भविष्य में हरयाणा में भी सरकारी आदेशों से शराबबन्दी कर दे। ऐसे संकेत भी राजनेताओं की रैलियों में मिलने लगे हैं।

बहुत दिनों के बाद आर्यसमाजियों का एक अच्छा जमावड़ा रोहतक में देखने को मिला। संख्या की दृष्टि से यह सम्मेलन भले ही फीका रहा हो पर उत्साह की कोई कमी न थी। इस सम्मेलन में महिलाएं और युवक भी अच्छी खासी संख्या में थे। शराबबन्दी के नारे पर कुछ महिलाएं और युवक भी अच्छी खासी संख्या में थे। शराबबन्दी के नारे पर कुछ महिलाएं उठ खड़ी हुईं और उन्होंने मुट्ठी तानकर स्वयं भी शराब के विरोध में नारे लगाए। मध्य आयु की एक महिला ने संन्यासी का भाषण रोककर कहा कि—"स्वामी जी शराबबन्दी करवा दे हमारी बहू बेटियां बच जाएंगी हम तेरे साथ हैं" इसका यह अर्थ है कि अगले चुनाव में हरयाणा की राजनीति में शराब ही एक अहम मुद्दा होगा क्योंकि शराब के विरोध में आर्य सभाई घोषणा कर रहे हैं वहां चौ० बंसीलाल और मा० हुकमसिंह भी निरंतर ऐलान कर रहे हैं कि सत्ता में आते ही वे २४ घंटे के अन्दर-अन्दर शराब पर पाबन्दी लगा देंगे। इन घोषणाओं का असर भी हो रहा है और लोगों का रुझान शराबबन्दी की ओर बढ़ रहा है।

हरयाणा की जनता का यह दुर्भाग्य समझिए कि शराबबन्दी आंदोलन के मुख्य नेता प्रो० शेरसिंह का छोटा भाई श्री विजयकुमार रिटायर्ड डी० सी० पिछले दिनों रक्त कैंसर के शिकार हो गए और अपनी बीमारी के ही इलाज में अब उनका सारा समय बीत रहा है अन्यथा वे सफल नेतृत्व कर रहे थे। स्वामी ओमानन्द को आयु ८५ वर्ष हो गई है उनकी शारीरिक क्षमता भी सम्भवतः साथ नहीं दे रही है जितना कि देना चाहिए किन्तु फिर भी वे दृढ़ संकल्प से शराबबन्दी आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे हैं। प्रो० शेरसिंह का स्वास्थ्य ठीक होने के बावजूद ८० वर्ष के लगभग पहुंच गये है। फिर भी वे आंदोलन की भागदौड़ में जुटे हुए हैं। हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा किया गया आंदोलनात्मक वातावरण कहीं सशक्त नेतृत्व के अभाव में युवा संन्यासियों अथवा चौ० बंसीलाल की तरफ तो नहीं खिसक जायेगा। आर्यसमाज को मिलता-मिलता श्रेय राजनेता ले जायेंगे ? इसकी सम्भावनाएं बढ़ती जा रही हैं। इस ओर सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द व पूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिंह को अवश्य ही सोचना चाहिए। यह ठीक है कि आर्यसमाजों तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से हरयाणा सरकार को ज्ञापन देकर हरयाणा प्रदेश में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने की मांग सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द व अखिल भारतीय मद्य निषेध समिति के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह व शराबबन्दी आंदोलन के संयोजक विजयकुमार आदि नेताओं ने की है। शराबबन्दी के लिए प्रचार व प्रयास सराहनीय है किन्तु 'ज्यों-ज्यों दवा की मर्ज बढ़ता ही गया" के अनुसार ग्राम पंचायत, जिला परिषद्, नगरपालिका आदि के चुनाव में एक-एक गांव व शहर से कई-कई लाख की शराब पिलाई गई।

> **इस शराब के पीछे घर उजड़ गये, परिवार तबाह हो गये, जमीनें बिक गईं, औरतों के जेवर कौड़ियों के भाव बेचे गये, बच्चे सड़कों पर रुल गये, मां बहनों बेटियों की इज्जत सुरक्षित नहीं। शाम को अंधेरा होने के बाद कोई महिला तो दूर भला आदमी भी गली में नहीं निकल सकता।**

इस शराब के पीछे घर उजड़ गए, परिवार तबाह हो गये, जमीनें बिक गईं, औरतों के जेवर कौडियों के भाव बिक गए, बच्चे सड़कों पर रुल गए, मां बहनों, बेटियों की इज्जत सुरक्षित नहीं। शाम को अंधेरा होने के बाद कोई महिला तो दूर भला आदमी भी गली में नहीं निकल सकता।

९ बजे के बाद कोई बहू बेटी बस में सफर नहीं कर सकती। कितनी घटिया सरकारें व राजनेता इस प्रदेश की जनता को मिलते रहे कि किस प्रकार हरयाणा की राज्य सरकारों ने शराब को बढ़ावा दिया। जहां गांव में ठेके नहीं थे वहां भी ठेके खुलवाये। देशी शराब पर एक रुपया और अंग्रेजी शराब की बिक्री पर पंचायतों को दो रुपया देकर ललचाया गया। शराब पीने के लिए अहाते खुलवाए और आज भी विश्नोई होते हुए (वैष्णव) जिनके २९ सिद्धांतों में शराब निषेध की पूर्ण आज्ञा है चौ० भजनलाल अपने सम्प्रदाय के सिद्धांतों का खुला उल्लंघन कर रहे हैं। दो वर्ष पहले हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा ने शराबबन्दी आंदोलन की गति को थोड़ा सा जब तेज किया तब भले आदमियों ने इकट्ठे होकर गाव-गाव में शराब के विरुद्ध मोर्चा जमाया था। गांव के छोटे, बूढों की देखरेख में युवकों ने शराब पीने वालों के विरुद्ध शराबियों से गधे बांध दिये थे, जूतों के हार टांग दिए थे और बांस पर घाघरी लहराई थी। जो शराब पीएगा उसे घाघरी पहनाकर जूतों का हार डालकर गधे पर बैठाकर सारे गांव की गलियों में जुलूस निकाला जाएगा तथा शराब पीने वाले पर ११०२ रुपया जुर्माना किया जायेगा। तब शराबी

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आकाशवाणी रोहतक पर स्वामी ओमानन्द जी की वार्ता

आकाशवाणी रोहतक केन्द्र से सभाप्रधान श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की दिनांक १८ अप्रैल ९५ को सायंकाल ७ बजे वार्ता होगी। सर्वहितकारी के पाठक वार्ता सुनकर लाभ उठावें।

गुरुकुल गदपुरी में प्रवेश आरम्भ

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी त० पलवल जि० फरीदाबाद हरयाणा जो दिल्ली से ४५ और मथुरा से ९६ कि० मी० जी० टी० रोड पर स्थित है। यहां दूसरी कक्षा से दसवीं कक्षा तक तथा महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री, प्रभाकर कक्षाओं में १ अप्रैल से प्रवेश प्रारम्भ है।

यह विद्यापीठ प्रकृति के सुरम्य-सात्विक वातावरण में स्थित है। यहां सरकारी विद्यालयों में पढाए जाने वाले सभी विषयों के साथ संस्कृत तथा धर्मशिक्षा हिन्दी माध्यम से योग्य तथा अनुभवी गुरुजनों द्वारा अध्यापन का कार्य होता है।

गुरुकुल में छात्रावास, यज्ञशाला, पुस्तकालय, व्यायामशाला की सुन्दर व्यवस्था है। छात्रों के रहन-सहन, आचार-व्यवहार और चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

अत: अपने बच्चों को प्रवेश दिलाने के लिए किसी भी दिन आकर स्वय मिले या पत्र द्वारा सम्पर्क स्थापित करे।

मख्याधिष्ठाता—श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ
गदपुरी (फरीदाबाद)

गुरुकुल प्रवेश सूचना

सर्व आर्यजनों को सूचित किया जाता है कि श्रीमद्दयान्द आर्ष विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर व महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक द्वारा मान्यता प्राप्त आचार्य गुरुकुल में अपने बच्चों (केवल लड़कों) का भविष्य उज्ज्वल बनाने हेतु प्रवेश करायें। कक्षा ५ उत्तीर्ण, स्वस्थ मेधावी होना अनिवार्य है। शीघ्रता करें। दस रुपये अग्रिम भेजकर नियमावली प्राप्त करे।

आचार्य
आचार्य कुल ऋतस्थली, मेघाखेड़ी
(मु० नगर) २५१००१

वैवाहिक विज्ञापन

जाट आर्य युवक उम्र ३७ वर्ष कद ५ फुट ६ इंच, रंग गेहुंआ, वैद्य विशारद, अपनी जमीन व मकान, सरकारी सर्विस, वेतन चार अंकों में हेतु दहेज व जाति बन्धन रहित, कुछ पढी-लिखी, गृहकार्य में दक्ष, आयु २५ से ३२ वर्ष तक, शुद्ध शाकाहारी, विधवा एवं तलाकशुदा भी स्वीकार्य। सम्पर्क करें या लिखें।

समरपाल आर्य
दुग्ध सयंत्र बल्लभगढ़
जिला फरीदाबाद (हरयाणा)

डा० सुदर्शनदेव आचार्य को पौत्र शोक

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरद्वार के शिष्ट परिषद (सानेट) के सदस्य डा० सुदर्शनदेव आचार्य के पौत्र ऋषिदेव का दिनांक २७-३-९५ को स्थानीय प० भगवनदयाल शर्मा हस्पताल में निधन हो गया। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि शोकाकुल परिवार को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

शोक समाचार

श्रीमती सन्तोषकुमारी (धर्मपत्नी श्री देशराज टक्कर) का मंगलवार, दिनाक २८ मार्च, १९९५ को स्वर्गवास हो गया है।

रविवार दिनाक २ अप्रैल १९९५ को मकान नं० ४८/३, सुभाष नगर, समीप सगीत सिनेमा, सुभाषनगर पार्क रोहतक में दोपहर २-०० से ४-०० बजे तक एक शोकसभा में उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

नव साल २०५२ की शुभकामनायें

पावन पर्व मंगलमय, नवा विक्रमी साल।
स्वागत किया सभी ने, उठकर प्रातःकाल॥
उठकर प्रातःकाल, किया हार्दिक अभिनन्दन।
सुख सौहार्द समृद्धि में, रहे स्वस्थ सभी जन॥
रहे अखण्ड देश अपना, दिग्-दिगन्त विजय हो।
सब विधि यह नव साल शान्ति मंगलमय हो॥

शुभाकांक्षी—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

यज्ञ से रोगों का उपचार

ग्राम करीरा (महेन्द्रगढ़) में दैविक प्रकोप बहुत अधिक चला था जिसमें कई नौजवान लड़के लड़कियों की दिमागी बुखार से मृत्यु होगई। डाक्टरों के उपचार करने के उपरान्त भी शान्ति नहीं हुई। अप्रैल १९९२ से ९४ तक यह बिमारी चलती रही। करीरा ग्राम के मुख्य व्यक्ति स्वामी शरणानन्द जी महाराज के आश्रम दड़ौली के पास गए। उन्होंने इस बिमारी से छुटकारा के लिए २४ हजार गायत्री के मन्त्रों से यज्ञ करने की प्रेरणा दी। सभी ग्रामवासियों ने स्वामी जी की प्रेरणा से काफी घृत और सामग्री द्वारा गायत्री यज्ञ किया। आठ दिन तक निरन्तर यज्ञ होता रहा, जिसके फलस्वरूप वह बिमारी समाप्त ही गई। तत्पश्चात् करीरा ग्रामवासियों की यज्ञ में श्रद्धा हो गई। अब अग्रेजी महीने के प्रथम रविवार को हर महीने लगभग ५ किलो घृत से यज्ञ होता है। इस समय करीरा गांव में बिल्कुल शांति है। इस यज्ञ में अधिक संख्या माता बहिनों की है। यज्ञ हेतु घी और सामग्री सभी ग्रामवासी दिल खोलकर देते हैं। गायत्री महायज्ञ सारे गांव के सहयोग से चल रहा है। यदि अन्य ग्रामों में इसी प्रकार यज्ञ होते रहे तो बीमारी न होगी और सब आनन्द से रहेंगे। पूर्व सरपंच रामनिवास आर्य तथा मा० चिरंजीलाल आदि ने यह घटना मुझे सुनाई।

विश्वामित्र आर्य
सभा भजनोपदेशक

हिसार रोड चाणक्य नगर मानव चौक अम्बाला शहर

सभा के अन्तरंग सदस्य विश्वबन्धु आर्य के प्रयत्न से हिसार रोड चाणक्यपुरी मानव चौक अम्बाला शहर में नवीन आर्यसमाज की स्थापना की गई है। इसका वार्षिक चुनाव निम्नप्रकार किया गया है—

प्रधान डा० वेदव्रत सूद, मन्त्री डा० धर्मवीर गोयल, उपमन्त्री डा० नरेन्द्र गुप्त, कोषाध्यक्ष श्री नीरम गुप्त।

नये आर्यसमाज की स्थापना

हरयाणा के मेवात (जिला गुड़गावां) क्षेत्र के प्रसिद्ध मेव बहुल ग्राम लुहीगा कलां (निकट पुन्हाना) में दिनांक २६-२-९५ को "आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात" के तत्वावधान में आर्यसमाज की स्थापना तथा आर्यसमाज मन्दिर का शिलान्यास कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

ज्ञातव्य है कि यह गांव पूर्णतः मेव बहुल है। यहां हिन्दू जनसंख्या अनुपात मात्र ६, ७ प्रतिशत है। इस कार्यक्रम में स्थानीय मुस्लिम समुदाय की सहभागिता तथा आर्थिक व नैतिक सहयोग प्रशंसनीय रहा।

इस आयोजन में गुड़गावां, मगोना, फिरोजपुर झिरका, पिनगवां, पुन्हाना, जुरहरा आदि के आर्य बन्धुओं का पूर्ण सहयोग रहा है।

इस अवसर पर उपस्थित समुदाय को अनेक संन्यासी, प्रचारक तथा कई गणमान्य व्यक्तियों ने सम्बोधित किया। उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए आर्य वेदप्रचार मण्डल के अध्यक्ष श्री मानीराम जी मंगला ने गाव के लोगों से स्थानीय कब्रिस्तान व श्मशान भूमि पर कुछ लोगों द्वारा किये गये अवैध कब्जों को तुरन्त स्वेच्छा से समाप्त कर देने की भी अपील की।

स्थानीय नवस्थापित आर्यसमाज का चुनाव निम्नप्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री डालचन्द आर्य, उपप्रधान श्री किशनपाल शर्मा, मन्त्री—रघुवीरसिंह, कोषाध्यक्ष—गोपालप्रसाद जी।

दीवानचन्द आर्य प्रेस सचिव
आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात पुन्हाना

आर्यसमाज आर्यनगर हिसार का चुनाव

दिनांक १७-३-९५ को आर्यसमाज मन्दिर आर्यनगर में आर्यसमाज आर्यनगर की बैठक हर वर्ष की तरह सम्माननीय पं० रामजीलाल आर्य, सांसद (राज्यसभा) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

इस शुभ अवसर पर गुरुकुल आर्यनगर से आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री व श्री मानसिंह पाठक जी ने मुख्य यज्ञ करवाया। गांव के मुख्य गणमान्य आर्य सज्जन, बुजुर्ग, नौजवान, पचायत के सदस्यगण व सभी महानुभावों ने यज्ञ में अपनी आहुति दी तथा बुराई त्यागने व अच्छाई अपनाने का मन से संकल्प लिया। श्रद्धेय आचार्य जी ने त्योहार की मर्यादा, होली का भगत प्रह्लाद, होलिका तथा योगिराज श्रीकृष्ण के जीवन से सम्बन्ध, हिन्दू समाज द्वारा अन्य प्रचलित मत-मतान्तरों का अन्धाधुन्ध अनुकरण, उसका कारण व समाधान, शराब, धूम्रपान, जुआ-ताश जैसी बुराइयों से बचने व स्वाध्याय करने, आर्यसमाज के सत्संगों का आयोजन करने, माता-पिता को प्रातःकाल उठकर चरण-स्पर्श, नमस्ते करने आदि अच्छाइयां जीवन में अपनाने व व्यावहारिक आर्य बनने सम्बन्धी अनेक विषयों पर सारगर्भित मधुर प्रवचन किया। सभी उपस्थित महानुभावों ने आचार्य जी के उपदेश में गहरी रुचि ली। कई नवयुवकों ने यज्ञोपवीत लिये व बुजुर्गों ने अपने पुराने यज्ञोपवीत बदले। सीताराम आर्य ने आर्यसमाज की वर्ष १९९४-९५ की आय-व्यय का लेखा-जोखा सहित वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी। जिसमें वर्ष भर की आर्यसमाज आर्यनगर की गतिविधियों का उल्लेख व वर्तमान में सक्रिय बिन्दुओं का जिक्र किया गया।

सम्माननीय सांसद श्री (जो कि आर्यसमाज आर्यनगर के संरक्षक हैं तथा शुरू से आर्यसमाज के कार्यों में सक्रिय रहे हैं) ने भावपूर्ण मार्ग-दर्शनरूप में अपना वक्तव्य दिया व हर प्रकार से अपनी ओर से सहयोग करने की बात कही तथा प्रचार सम्बन्धी आर्यसमाज के कार्य को सक्रिय रखने, गांव में पूर्ण शराबबन्दी सम्बन्धी अपनी मनःइच्छा से अवगत कराया। सभी उपस्थित महानुभावों ने सांसद जी के सुझावों का स्वागत किया। सभी सदस्यों ने वर्तमान कार्यकारिणी के कार्यों की प्रशंसा की व आगे भी इसी कार्यकारिणी के कार्य करने पर खुशी व्यक्त की।

—सीताराम आर्य, सहमन्त्री

यजुर्वेद पारायण यज्ञ और वार्षिकोत्सव

वैदिक यज्ञ समिति झाड़ौदा कलां नई दिल्ली-७२ की ओर से बाबा हरिदास के विशाल मन्दिर पर २७ से ३१ मार्च १९९५ तक ब्रह्मचारी चेतनदेव जी "वैश्वानर" वैदिक साधना आश्रम चामड़-भैया (अलीगढ़) उत्तर प्रदेश की अध्यक्षता में वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। यजुर्वेद पारायण यज्ञ स्वामी वेदरक्षानन्द जी आर्ष गुरुकुल कालवा (जींद) हरयाणा के ब्रह्मत्व में पांच दिनों तक सम्पन्न हुआ। प्रातः यज्ञोपरान्त रात्रि में अलीगढ़ बुलन्दशहर के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री महाशय चुन्नीलाल जी तथा उनके ढोलकवादक श्री बाबूराम जी के मनोहर भजन हुये। उन्होंने राम-कृष्ण के आदर्शों पर चलने की प्रेरणा दी और नवयुवकों को महाराणा प्रताप, ऊधमसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल आदि की वीरगाथायें प्रस्तुत कीं। इस कार्यक्रम में श्री दयाचन्द जी, श्री रमेश जी, श्री रामधन जी, पं० ताराचन्द जी, पं० अनिलकुमार जी, पं० सतीशकुमार जी, श्री बजानसिंह जी, श्री परसराम जी आदि आर्य महानुभावों का विशेष सहयोग रहा अतः ये सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

भक्त शीशराम आर्य, प्रधान वैदिक यज्ञ समिति
झाड़ौदा कलां नई दिल्ली-७२

आचार्य की आवश्यकता

सभा द्वारा संचालित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि० फरीदाबाद के लिए आचार्य की तुरन्त आवश्यकता है। वैदिक सिद्धान्तों का विद्वान्, गुरुकुल शिक्षा पद्धति का समर्थक, अध्यापनकार्य में अनुभवी को प्राथमिकता दी जावेगी। इच्छुक महानुभाव अपनी योग्यता अनुभव तथा आयु के प्रमाणपत्रों सहित सम्पर्क करें।

मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

(पृष्ठ ३ का शेष)

गांव छोड़कर भाग गये थे। शराब को बुराई अधिकांश क्षेत्रों में समाप्त प्रायः हो गई थी और भूल चूक कर जो शराब पी लेता था उसे जुलूस और दण्ड के भय से रात ईखों के खेतों में बितानी पड़ती थी।

आज पुनः आवश्यकता है उसी प्रकार से शराबबन्दी आन्दोलन को गति दी जाये। आज समाज सुधारकों द्वारा शराबबन्दी मुद्दे से आंदोलित हरयाणा राजनेताओं से भी प्रभावित हो रहा है क्योंकि उन्होंने जनता की नब्ज पहचान ली है, वे शराब को मुख्य मुद्दा बना रहे हैं और इस मुद्दे को लेकर जन साधारण अभियान शुरू कर दिया है। महिलाओं विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के लिए अत्यन्त संवेदनशील यह मुद्दा जो शुरू में सुप्त धारा की तरह महसूस नहीं होता था किन्तु ताज्जुब नहीं बंसीलाल के अभियान को निर्णायक गति देने वाला सिद्ध हो। शराब और जुए (लाटरी) को राज्य की आय की एक प्रमुख एवं सम्मानित स्रोत बनने की ओमप्रकाश चौटाला और भजनलाल की नीति ने सर्वाधिक मार परिवार के दायरे में चलने वाली अर्थव्यवस्था को दी है। शराबी पतियों से औरतों का जीना दूभर हो रहा है और लाटरी का नशा नौजवानों को तोड़ रहा है।

(दैनिक वीर प्रताप जालन्धर, २१ मार्च १९९५ से साभार)

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद में प्रवेश प्रारम्भ

आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सचालित
गुरुकुल का संक्षिप्त परिचय

१. संस्थापक—अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी।
२. प्रवेश समय—१ अप्रैल से ३० जून तक।
३. प्रवेश योग्यता—तीसरी से कक्षा दसवी तक।
४. मान्यता—गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय एवं आर्ष पाठविधि (महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक)।
५. विषय—वेद, उपनिषद्, व्याकरण, संस्कृत, गणित, विज्ञान, अंग्रेजी, हिन्दी, सामाजिक, धर्मशिक्षा आदि।
६. शुल्क—प्रवेश शुल्क ५०० रुपये।
भोजन शुल्क ३०० रुपये।
शिक्षा तथा छात्रावास व्यवस्था निःशुल्क।
७. वेशभूषा—२ कुर्ते, २ पायजामे, २ लंगोट, १ तौलिया, बिस्तर, ऋतु अनुकूल मच्छरदानी एवं भोजन हेतु १ थाली, २ कटोरी, १ गिलास, १ लोटा, १ चम्मच, १ ट्रंक।
८. क्रीडा वेशभूषा—एक सफेद शर्ट, खाकी नेकर, सैण्डो बनियान, जूता (पी० टी० शूज) सफेद जुराब।
९. आचार्य वर्ग—प्रत्येक विषय के अध्यापन हेतु सुयोग्य अनुभवी एवं प्रशिक्षित अध्यापकों की व्यवस्था है जो रात्री को ट्यूशन के रूप में भी नि.शुल्क पढ़ाते हैं।
१०. गुरुकुल में छात्रावास, यज्ञशाला, पुस्तकालय, व्यायामशाला तथा संग्रहालय आदि की व्यवस्था है। यहां छात्रों के रहन-सहन, आचार व्यवहार, स्वास्थ्य तथा चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाता है तथा धार्मिक शिक्षा के साथ छात्रों के सर्वाङ्गीण विकास पर बल दिया जाता है।

अतः अपने बालकों को सदाचारी तथा सुयोग्य बनाने के लिए गुरुकुल में प्रवेश करवाकर उनका भविष्य उज्ज्वल बनावें।

मार्ग निर्देश—यह गुरुकुल भारत की राजधानी दिल्ली एवं सूरजकुण्ड के समीप दिल्ली से मथुरा जानेवाली सड़क पर अरावली पर्वत के सुरम्य परिवेश तथा पाण्डवों की प्राचीन राजधानी इन्द्रप्रस्थ के भू-भाग में अवस्थित है। दिल्ली-मथुरा मार्ग पर सराय ख्वाजा (फरीदाबाद) बस अड्डे पर उतरकर अनगपुर ग्राम का आर रेलवे फाटक पार करने ही साथे गुरुकुल आ सकते है।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद) डाकघर नई दिल्ली-४४
फोन : ८-२७५३९८

समाज के सभी वर्णों में समन्वय पर बल

हरद्वार—'शूद्र के प्रति यदि कोई अपराध हुआ है, तो उसका पश्चात्ताप और परिमार्जन करने का आदेश वेद देते हैं।' वास्तव में वेदों के प्रख्यात मंत्र 'ब्राह्मण अस्य मुखमासीत्' का सांकेतिक अर्थ लेने के स्थान पर उसका शाब्दिक अर्थ समाज में प्रचलित हो गया और उससे अनेक भ्रांतियां पैदा होगई है। दरअसल कहा गया है कि पूर्ण परम पुरुष परमात्मा के विभिन्न अंग के अभाव मे पूर्णता आ ही नहीं सकती।

यह बात वेदो के प्रकाण्ड विद्वान् और गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य रामनाथ वेदालकार ने यहा विश्वविद्यालय के प्राच्य विद्या संकाय द्वारा आयोजित 'राष्ट्रीय वैदिक सगोष्ठो' मे अपने व्याख्यान में कही।

उन्होने कहा कि वेदो में तो केवल 'आर्य' और 'दास' दो ही भेद किये गये है। ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य आर्य श्रेणी मे है। दास या शूद्र तो उसे कहा गया है जो 'दस्युकर्म' करता है। अर्थात् निकम्मा, समाज से गर्हित कार्य करनेवाला, अवगुणो और दुष्प्रवृत्तियों से भरे व्यक्ति को, भले वह किसी भी वर्ण का हो दस्यु, दास या शूद्र ही कहा जाएगा।

'वैदिक वर्णव्यवस्था का वैज्ञानिक आधार' विषय पर तीन दिन तक चलनेवाली इस सगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता वि० वि० के कुलाधिपति श्री सूर्यदेव ने की तथा उद्घाटन भाषण पूर्व केन्द्रीय मन्त्री तथा अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ के अध्यक्ष प्रो. शेरसिह ने दिया।

आरम्भ मे कुलपति डा० धर्मपाल ने संस्कृत में अतिथियो का स्वागत किया और देश भर से आए वैदिक विद्वानो से आग्रह किया कि वर्तमान परिस्थितियो मे वर्णव्यवस्था को लेकर जो भ्रांतिया फैली हुई हैं, दूर करने के लिए अभियान चलाए।

सगोष्ठी मे लखनऊ, चण्डीगढ़, गोरखपुर, वाराणसी, इलाहाबाद, जम्मू, दिल्ली, मेरठ, जोधपुर, वृन्दावन, मुजफ्फरनगर आदि स्थानों से वैदिक विद्वान् इसमें भाग ले रहे हैं।

प्रो० शेरसिह ने कहा कि वैदिक आश्रम व्यवस्था और वैदिक वर्ण व्यवस्था का परस्पर अटूट सम्बन्ध है। एक को अपनाए और समझे बगैर दूसरी के प्रति श्रम की गुंजाइश बनी रहने की सभावना रहती है। उन्होने कहा कि आज जितनी गालिया मनु को दी जा रही हैं, उतनी किसी और को नहीं और यह सब मूल बातों को समझे बगैर हो रहा है। दरअसल वैदिक वर्णव्यवस्था में नहीं, बल्कि उसके अमल में कमी आगई है। स्वयं मानव द्वारा यह विकृति का शिकार समाज के एक वर्ग को होना पड़ा है। यह स्वाभाविक ही है कि जिसे विकृतियों के दुष्परिणाम भुगतने पड़े हैं, उनकी आस्था इस व्यवस्था के प्रति उठ-सी गई है।

प्रो० शेरसिह ने कहा कि बराबरी के अवसर, शिक्षा, अर्थोपार्जन आदि के लिए पूरे समाज को मिलने चाहिएं। उसमे जो अपनी योग्यता और रुचि से जिस क्षेत्र मे कार्य करना चाहे, उसी के आधार पर उसे अवसर मिलना चाहिए। मनुष्य के अपने अवगुणों के चलते ही वह अपने लिए समाज में वर्ण का वरण करता है। व्यवस्था दोष के कारण उसे अवसर की समानता नहीं मिल रही है, अतः उसने सारा दोष वर्ण व्यवस्था पर मढ़ दिया है। (नवभारत टाईम्स से साभार)

दीक्षान्त समारोह पूर्व महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय मे यज्ञ

दिनाक २४-३-८५ को सायं ५.३० विश्वविद्यालय में दीक्षान्त समारोह की सफलता के लिए यज्ञ किया गया जिसके अन्दर श्री के. सी. भारद्वाज कण्ट्रोलर (म. द यूनि.) को यजमान बनाया गया दीक्षान्त समारोह २६-३-८५ को हुआ। डा. बलवीर जी ने यजमान को आशीर्वाद दिया। डा. सुरेन्द्र और यज्ञशाला समिति के मन्त्री श्री मजीत जी ने दीक्षान्त समारोह की सफलता के लिए प्रार्थना करवाई इसके बाद श्री राममेहर एडवोकेट का भाषण हुआ। अपने भाषण में उन्होने यज्ञ की महिमा पर प्रकाश डाला और कहा प्रत्येक शुभ काम करने से पहले यज्ञ करना चाहिए इसलिए आज हमने दीक्षांत समारोह से पूर्व यज्ञ सफल होना है या तरक्की करनी है, तो जो आज का कार्य है, उसको कल पर मत छोड़ो, यही जीवन का एक रहस्य है और इसी में व्यक्ति के जीवन की सफलता का रहस्य छुपा हुआ है। अन्त में यज्ञशाला समिति के प्रधान श्री योगेन्द्र चाहर ने यज्ञ में सम्मिलित सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। —सुरेश आर्य

तपोवन देहरादून का ग्रीष्मोत्सव १९ अप्रैल से होगा

देहरादून—वैदिक साधन आश्रम, तपोवन में प्रतिवर्ष अप्रैल में होनेवाला ग्रीष्मोत्सव और अक्तूबर में होनेवाला शरदोत्सव अब प्रभूत लोकप्रियता प्राप्त कर चुके हैं और इन अवसरों पर आयोजित बृहद् यज्ञों की पूर्णाहुतिवाले दिन तो दूर के स्थानों से आगत श्रद्धालुओं का मेला हो जाया करता है। इकले-दुकले आनेवालों के अतिरिक्त दिल्ली आदि नगरों से बड़े-बड़े यात्री-समूह विशेष बसों से भी आते हैं।

इस वर्ष का ग्रीष्मोत्सव १९ अप्रैल से आरम्भ होकर २३ अप्रैल तक चलेगा। योग-साधना-शिविर का निर्देशन डा० स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती महाराज करेंगे और आपके ही ब्रह्मात्व में ऋग्वेद-महायज्ञ भी होगा। प्रवचनकर्ताओं में मुख्य श्री यशपाल आर्यबन्धु (मुरादाबाद) होंगे। रात्रि को वाल्मीकि रामायण की कथा भी हुआ करेगी। गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार के भी प्रवचन होंगे। महोत्सव की तैयारियां श्रद्धा और उत्साह के साथ चल रही हैं।

देवदत्त बाली मन्त्री वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी, तपोवन

(पृष्ठ २ का शेष)

इसके बाद स्वामी वेदानन्द जी के साथ हजारों नरनारियों ने गिरफ्तारी दी। बसों, ट्रकों व फोरविलरों में भरकर पुलिस लाईन थाना में ले जाया गया। दो घण्टे के बाद सब को छोड़ दिया गया। नर नारियों ने वहां भी पुलिस प्रशासन तथा भजनलाल सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।

प्रदर्शन में जीन्द के प्रदर्शन के बाद श्री केदारसिंह जी सभा कार्यालय अध्यक्ष अपने आठ साथियों के साथ हिसार नागोरी गेट पहुंचे। स्वामी वेदानन्द जी श्री क्रांतिकारी के साथ नलवा से आए। इसके अतिरिक्त आर्य जी एक कैन्टर में ४६ महिलाओं को भी कंवारी, नलवा, बालावास, खेतो की ढाणियों से लाए। जिनके नाम हैं—श्रीमती सुनेहरी आर्या धर्मपत्नी क्रांतिकारी, केलादेवी, गीनादेवी, सन्तरादेवी, केलादेवी, सन्तोषदेवी, रोशनीदेवी, परमेश्वरीदेवी पूर्व पंच, भतेरीदेवी, जगवन्तीदेवी ग्राम नलवा, श्रीमती लज्जावन्ती आर्या, शान्तिदेवी, रामप्यारीदेवी बालावास, श्रीमती धर्मोदेवी, विमलादेवी, नीम्बोदेवी, पार्वतीदेवी, भतेरीदेवी, धनपतिदेवी, सुनेहरीदेवी, सन्तोष-देवी, प्यारोदेवी, रत्तीदेवी, तारोदेवी, सन्तरादेवी, हरदेईदेवी, बहिन चन्द्रपति, बहिन बीरमति, हरकोरीदेवी, फूलपतिदेवी, गिरदावरीदेवी, नानड़देवी, सन्तोषीदेवी, सन्तरादेवी, नरमोदेवी ग्राम कंवारो से, गंगन-खेड़ी से श्री ईश्वरसिंह जी आर्य अपनी माता भरथी, इन्द्रोदेवी, रेशमा-देवी, बीरमतीदेवी, चीनीदेवी तथा रणबीर आर्य, राममेहर आर्य, बलजीत आर्य, श्री मागेराम आर्य के साथ अपनी जीप द्वारा पहुंचे। श्री राजपाल जी आर्य ग्राम कुम्भा से मानादेवी, एकतारानी, चौ० रतनसिंह आदि के साथ अपनी जीप लेकर आए। श्रीमती मायादेवी आर्या, श्रीमती चन्द्रकला आर्या, श्रीमती राजदुलारी हिसार, श्रीमती कमला वी खैरोखा, श्रीमती शांतिदेवी ईशरवाल, श्रीमती सावित्रीदेवी, श्रीमती कृष्णा आर्या धर्मपत्नी आचार्य दयानन्द हिसार आदि ने भाग लिया।

इसके अतिरिक्त ग्राम बालसमन्द शराबबन्दी समिति के सदस्य श्री प्रतापसिंह आर्य, महावीर आर्य, रामनिवास आर्य, रघुवीरसिंह राठी, रणबीर पहलवान, छाजुराम आर्य, सत्यवीर बेनीवाल, राजेश आर्य, श्रीराम आर्य, हवासिंह आर्य, घमण्डीलाल, जगदीश पंच, रघुवीर नम्बरदार, लालचन्द ढाका, ज्ञानीराम पूर्व प्रधान, भीमसिंह, पृथ्वीसिंह, दलीपसिंह दिवानसिंह पुत्र जयपाल, वैद्य दयाकिसन गुरुकुल कुम्भा, आचार्य रामस्वरूप, मा० आजादसिंह पाठक गुरुकुल आर्यनगर, मा० बेनीसिंह, बिरसालाराम गोसेवक गुरुकुल धीरणवास, श्री बदलुराम आर्य प्रधान आर्यसमाज मुकलान, श्री भादरसिंह आर्य उपप्रधान मुकलान, चौ० जवाहरसिंह आर्य ढाणी पाल, श्री दीपचन्द आर्य खेड़ा, श्री काशीराम आर्य प्रधान आर्यसमाज प्रभुवाला, श्री उदमीराम आर्य आर्यनगर, श्री बन्सीधर आर्य, श्री जयसिंह योगी हिसार, वानप्रस्थी श्री सीताराम, श्री सुशील शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज हांसी, श्री जगमालसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज फतेहचन्द कालोनी हिसार, सूबेदार हरचन्द आर्य प्रधान आर्यसमाज बालावास, श्री कर्णसिंह आर्य, स्योनन्द, सत्यपाल, भादर हरिजन, बीरसिंह हरिजन कंवारी, श्री कृष्णकुमार जिन्दल सरपंच नलवा, नत्थूराम नम्बरदार, बदलुराम झसमा, बागमल, रामपत दहिया, हरद्वारीलाल, रणसिंह, महेन्द्रसिंह पूर्व सरपंच, जगदीश, सुमेरसिंह, अनिलकुमार नलवा, श्री सुवेसिंह आर्य सनीपाना, आचार्य दयानन्द शास्त्री, ब्र० महेश शर्मा, ब्रह्मसिंह आर्य, अमरेन्द्र आर्य दयानन्द ब्राह्म विद्यालय हिसार, श्री सुरेन्द्रसिंह आर्य विधवान, श्री दीपचन्द सेठ राजली वाले हिसार, कप्तान चन्दगीराम भोजराज, रामस्वरूप बिश्नोई कालीरावन आदि लोगों ने प्रदर्शन में भाग लिया। श्री स्वामी वेदानन्द, श्री धर्मवीर ब्रह्मचारी, सत्यपाल आर्य, श्री अर्जुनसिंह सभा उपदेशक, श्री अनिलकुमार आर्य आदि रोहतक से पधारे। इस बार का विरोध प्रदर्शन ऐतिहासिक रहा। हजारों नर-नारियों ने बड़े उत्साह के साथ बढ़-चढ़कर भाग लिया। रिकार्ड तोड़ हाजरी देखकर सी. आई. डी. हैरान थी। सारा जिला प्रशासन भयभीत नजर आ रहा था। —केदारसिंह आर्य

ग्राम मुहजादपुर का उप ठेका बन्द

ग्राम मुहजादपुर (हिसार) का उपठेका पूर्व सरपंच राजवीर ने हांसी के ठेकेदार से मिलीभगत कर खुलवा दिया था। सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने दो तीन बार नव निर्वाचित सरपंच श्री भालसिंह जी से सम्पर्क किया और इस ठेके को बन्द करवाने बारे पुरजोर प्रार्थना की। परिणामस्वरूप नये वर्ष का पंचायत ने प्रस्ताव न देने के कारण १ अप्रैल १९९५ को उप ठेका बन्द हो गया। जिससे गांव के सज्जन लोगों में तथा विशेषकर महिलाओं में खुशी की लहर फैल गई। इस उप ठेके के खेतों में होने से अन्य दो तीन गांव पर बुरा प्रभाव पड रहा था। ग्राम पंचायत ने ठेकेदार को सावधान कर दिया है कि अगर गांव में अवैध तरीके से आपकी जीप बोतलें डालने आई तो जुर्माना भी हो सकता है, जीप जलाई जा सकती है। ठेकेदार ने कहा अब हमारी जीप गांव में नहीं आएगी। इस प्रकार अन्य गांवों में भी शराबबन्दी हो सकती है। अतः

शराब से कर लो किनारा, वरना जीवन है अंधियारा।

नलवा (हिसार) के उप ठेके के ताला बन्द

गत ५-६ महीने से नलवा में पूर्व सरपंच श्री महेन्द्रसिंह की भूल या अन्य कारण से नलवा बस अड्डे पर शिक्षण संस्थाओं तथा गांधी पार्क के सामने सरकारी ठेके की शाखा खोल दी गई थी। सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी के प्रयास एवं सुझाव पर नव नव निर्वाचित सरपंच श्री कृष्णकुमार ने १३-२-९५ को सर्वसम्मति से प्रस्ताव ठेके को बन्द करवाने के लिए पास कर सम्बन्धित अधिकारियों को भेज दिया था। ११ मार्च को ठेके की नीलामी पर भी उपायुक्त को कह दिया था। लेकिन ठेकेदार ने जिला प्रशासन से मिलकर ३१ मार्च की रात्रि को अपना स्टाक उठाने की बजाय अन्य पेटियां रखकर १ अप्रैल को प्रातः शराब बेचने लग गया। क्रांतिकारी जी ने रात्रि को भी सरपंच से सम्पर्क किया और प्रातः [illegible] गांव के मुखियाओं तथा ग्राम पंचायत से मिलकर उनको इकट्ठा किया। ठेकेदार की अनैतिक तथा अवैध तरीके से शराब बेचने से अवगत कराया। तब सरपंच व आर्य जी के नेतृत्व में सैकड़ों लोगों ने ठेके पर जाकर ठेकेदार के करिन्दों को ठेके से बाहर निकालकर श्री कृष्णकुमार सरपंच ने श्री क्रांतिकारी के कहने पर ठेके के पंचायत का ताला लगा दिया।

तत्पश्चात् सरपंच व श्री अतरसिंह आर्य संयोजक शराबबन्दी समिति जि० हिसार के नेतृत्व में एक शिष्टमण्डल जिला उपायुक्त व श्री राजेन्द्र यादव सदर थाना इंचार्ज हिसार से मिला। तुरन्त ठेके से बोतल उठवाने तथा लोगों के भारी रोष बारे कहा। ये भी साथ कहा अगर शीघ्र बोतलें नहीं उठवाई तो जनता बोतलों को सड़क पर फोड़ देगी। उन्होंने शीघ्र ही बोतलें उठवाने का आश्वासन दिया है। सरेआम सरकार व जि० प्रशासन पंचायत की बगैर स्वीकृति के गांव में ठेका खोलकर संविधान का उल्लंघन कर रहे हैं। सरकार की कथनी करनी एक नहीं है।

भलेराम आर्य, प्रचार मन्त्री
नलवा (हिसार)

कंवारी में अवैध शराब की बिक्री पर रोक

ग्राम कवारी (हिसार) में दिनांक १९-३-९५ को श्री धर्मसिंह की की अध्यक्षता में गांव की चौपाल में पंचों व ग्राम सभा के प्रमुख लोगों की एक पंचायत हुई जिसमें गांव की भलाई के लिए गांव में अवैध शराब की बिक्री पर तुरन्त रोक लगाने तथा गांव की गलियों में शराब पीकर हुल्लड़बाजी करने वालों का सामाजिक बहिष्कार करने तथा दुबारा हरकत करने पर पुलिस में पकड़वाने का निर्णय लिया गया। साथ में कुछ सेवा निवृत फौजियों द्वारा शराब बेचने पर रोक लगाई है। ये फैसले सर्वसम्मति से लिए गए हैं। इस पंचायत फैसले से सज्जन पुरुषों और विशेषकर महिलाओं ने राहत की सांस ली है। क्योंकि गत दिनों ठेकेदार की जीप रोकने के बाद भी ४-५ असामाजिक तत्त्व ग्राम बमाना के ठेके से चोरी से शराब लाकर अवैध शराब बिक्री का धन्धा कर रहे थे, जिससे गांव की शान्ति भंग होती थी। आए दिन लडाई झगड़े होते थे।

—डा० प्रेमप्रकाश आर्य, कंवारी

आर्यसमाज मन्दिर का उद्घाटन

दिनांक २६-२-९५ को ग्राम लुहिगा कलां नजदीक पुनाहना जिला गुड़गावां हरयाणा में आर्यसमाज मन्दिर का उद्घाटन हुआ, जिसमें श्री सत्यपाल आर्य प्रधान आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात ने ग्यारह हजार रुपये एव श्री प्रभुदयाल जी प्रधान आर्यसमाज अर्जुननगर गुड़गावां ग्यारह सौ रुपये, आर्यसमाज नूंह ग्यारह सौ रुपये, आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका ग्यारह सौ रुपये एव पांच सौ रुपये आर्यसमाज नगीना, पांच हजार रुपये आर्यसमाज पिनगवां द्वारा एकत्रित करके दिए। इस अवसर पर श्री मानीराम मंगला प्रधान आर्य वेदप्रचार मण्डल ने तीन हजार इंटे एवं एक ट्रक क्रेसर, श्री सुभाष आर्य प्रधान आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका ने एक ट्रक ईंटे (तीन हजार) इस नव निर्माण मन्दिर को देने की घोषणा की। मंच संचालन श्री सुभाष जी सिंघल मन्त्री आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका ने किया। कार्यक्रम प्रातः यज्ञ से प्रारम्भ हुआ एवं समाप्ति सहभोज से हुई। इस अवसर पर काफी संख्या में मुसलमान भी उपस्थित थे तथा उन्होंने आर्थिक सहयोग भी दिया।

सहभोज के पश्चात् मेवात मण्डल की बैठक हुई, जिसमे मेवात क्षेत्र में आर्यसमाज के कार्य को गति देने पर विचार हुआ। जिसमें मण्डल की ओर से एक मासिक पत्रिका निकालने पर भी चर्चा हुई। परन्तु पदमचन्द आर्य पूर्व मन्त्री मेवात मण्डल ने सुझाव दिया कि नई पत्रिका के झंझट में न पड़कर हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के सर्वहितकारी को सभी आर्यसमाजें मंगावें एवं मेवात मण्डल के सभी कार्यक्रम सर्वहितकारी में भिजवाये। सभा मेवात मण्डल के सभी समाचार पूर्ण रूप से अवश्य प्रकाशित करेगी। इस आश्वासन के बाद पत्रिका प्रकाशन का विचार त्याग दिया।

ता० १८-१९ मार्च ९५ को मरोडा आश्रम नजदीक पिनगवां (गुड़गावां) के उत्सव को भी सफल बनाने की अपील की गई।

बैठक मे ७-३-९५ को गुड़गावां में शराब विरोध प्रदर्शन में भाग लेने के लिए पुरजोर शब्दों में पदमचन्द आर्य ने विशेष तौर से मेवात क्षेत्र व मण्डल के अधिकारियों से अपील की और सभी ने पूरा-पूरा आश्वासन भी दिलाया। —पदमचन्द आर्य

राममुनि साधु आश्रम बाघोत जि० महेन्द्रगढ़ का उत्सव

१८-१९ मार्च १९९५ को स्वामी निजानन्द सरस्वती गंगोत्री के कर-कमलों से उद्घाटन हुआ। दोनों दिन श्री पं० मातूराम शर्मा प्रभाकर उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा श्री आचार्य राजकुमार शास्त्री द्वारा विशेष यज्ञ हुआ और बहुत प्रभावशाली प्रवचन हुए। आस पास के गांवों की माताओं ने बहुत ही श्रद्धा से घी और सामग्री लेकर यज्ञ में भाग लिया। कार्यक्रम बहुत सात्विक और प्रभावशाली रहा। आर्य प्रतिनिधि सभा को स्वामी राममुनि जी महाराज ने एक सौ इकावन रुपये दान भी दिया।

आर्यसमाज मिर्जापुर बाछौद जिला महेन्द्रगढ़ का चुनाव

प्रधान—श्री मोरमुकटसिंह आर्य, उपप्रधान—श्री बाबूराम आर्य, महामन्त्री—डा० विश्वम्भरदयाल आर्य, उपमन्त्री—श्री राजेन्द्रकुमार आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री मामचन्द चौहान, संयोजक—श्री हरपालसिंह आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री रोहतास आर्य, प्रचार मन्त्री—श्री अर्जुनसिंह आर्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक फोन : (७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ४०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३   रजि० नं० P/RTK-७२   दूरभाष : १, ६६, ०८, ५२, ०६६

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष २२ अंक २१   २१ अप्रैल, १९९५   (वार्षिक शुल्क ५०)   (आजीवन शुल्क ५०१)   विदेश में १० पौंड   एक प्रति १-२५

हरयाणा में पंजाबी को दूसरी भाषा लागू करने का विरोध होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने हरयाणा के उन राजनैतिक दलों के नेताओं की कड़ी भर्त्सना की है जो कि अपने राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए हिन्दी भाषी हरयाणा प्रदेश में पंजाबी को राज्य की दूसरी भाषा लागू करवाने के लिए प्रतिदिन मतदाताओं से वायदा कर रहे हैं। स्वामी जी ने पंजाबी को भाषा नहीं एक बोली बताते हुए कहा कि हरयाणा में बृज, बागड़ी आदि कई बोलियां हैं, जिनमें एक पंजाबी भी है। स्वामी जी ने स्मरण करवाया कि पंजाब राज्य का बटवारा पंजाबी तथा हिन्दी भाषा के आधार पर किया गया था। इससे पूर्व पंजाब के तत्कालीन मुख्यमन्त्री सरदार प्रतापसिंह कैरों ने हरयाणा पर पंजाबी को जबरन ठोंसना चाहा था। इस धींगामस्ती की कार्यवाही का विरोध करने के लिए १९५७ में हिन्दी रक्षा आन्दोलन किया था और उसमें ५० हजार हरयाणा के नरनारियों ने जेल काटी थी। उसी के परिश्रम स्वरूप भारत के नक्शे में पुनः हरयाणा सम्मिलित हुआ था।

स्वामी ओमानन्द जी ने हरयाणा के पंजाबी समर्थक नेताओं को लताड़ते हुए कहा कि यदि उनमें शक्ति तथा साहस है तो वे हरयाणा में पंजाबी को दूसरी भाषा बनवाने से पूर्व पंजाब राज्य में राष्ट्रभाषा हिन्दी को लागू करवाकर नैतिकता का उदाहरण प्रस्तुत करें। आपने पंजाब में हिन्दी की दुर्दशा का विवरण देते हुए कहा कि पंजाब की सीमा में प्रवेश करते ही राष्ट्रभाषा हिन्दी का अपमान होना आरम्भ हो जाता है। राष्ट्रीय राजमार्ग (जी.टी. रोड) पर हिन्दी का नामो-निशान नहीं मिलता। हिन्दी भाषी यात्रियों को पता नहीं लगता कि वे कौन से नगर तथा ग्राम में पहुंच गये हैं और बसें कहां जा रही हैं,

स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में अन्त में कहा है कि हमारे सारे धार्मिक ग्रन्थ संस्कृत भाषा में हैं। सारी भाषाएं संस्कृत से निकली है। अतः हमें संस्कृत को अनिवार्य पढ़ाई लागू करवाने के लिए बल देना चाहिए जिससे हमारी वैदिक सभ्यता तथा संस्कृति की रक्षा हो सके। यदि कोई पंजाबी तथा अन्य भाषा पढ़ना चाहता है तो देवनागरी में पढ़वाने की व्यवस्था करनी चाहिये। आपने हरयाणा सरकार को सावधान किया कि हिन्दी भाषी हरयाणा में पंजाबी को जबरदस्ती लादने का दुःसाहस न करे अन्यथा आर्यसमाज पूर्व की भांति हिन्दी रक्षा आन्दोलन करेगा। (केदारसिंह आर्य)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक अधिवेशन १४ मई को

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा के निश्चयानुसार सभा का वार्षिक अधिवेशन १४ मई ९५ रविवार को होना निश्चित हुआ है। इसमें [illegible] तथा [illegible] के [illegible] [illegible] पर विचार किया जायेगा। अतः आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित आर्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने सभासदों से प्राप्त वार्षिक शुल्क की राशि का दशांश (१०वा भाग) कम से कम २५०/- वेदप्रचार तथा ५०/- रु० सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक धनादेश (मनी-आर्डर) अथवा सभा के उपदेशकों द्वारा भेजने का कष्ट करें जिससे आर्यसमाज के प्रतिनिधियों को अधिवेशन का एजण्डा भेजा जावे।

आशा है आर्यसमाज के अधिकारी हरयाणा में आर्यसमाज के भविष्य को उज्ज्वल बनाने तथा सामाजिक बुराइयों को दूर करने में अपना योगदान देकर कर्तव्य का पालन करेंगे।

वेदव्रत शास्त्री
सभा मन्त्री

ठेकों का विरोध

यमुनानगर। शराब के ठेकों की नीलामी के बाद जगह-जगह ठेके खुलने से नगरवासियों में भारी रोष है।

कई धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने इसका विरोध करते हुए मांग की है कि शराब के ठेके आबादी से दूर स्थापित किए जाएं। अभी ये ठेके नगर के व्यस्त क्षेत्र में हैं जिनके कारण अभद्रता की घटनाएं होती रहती हैं। (नवभारत टाइम्स)

ठेका बन्द किया जाए

सोनीपत। सोनीपत जिले के वाजिदपुर सबौली गांव की ग्राम पंचायत ने सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित करके गांव में स्थित शराब के उप ठेके को अविलम्ब बन्द किए जाने की मांग की है। पिछली पंचायत द्वारा वर्ष १९९४-९५ की अवधि के लिए यह उप ठेका खोले जाने का प्रस्ताव पास किया गया था, लेकिन मौजूदा ग्राम पंचायत इस ठेके के सख्त खिलाफ है। (नवभारत टाइम्स)

आर्यसमाज औरंगाबाद मौतरोल जि० फरीदाबाद का चुनाव

प्रधान-श्री बहालसिंह भारद्वाज, उपप्रधान-श्री लेखराम आर्य, महामन्त्री श्री डालचन्द आर्य, उपमन्त्री-श्री बसीलाल आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री नत्थीराम आर्य, प्रचारमन्त्री-श्री सोहनलाल आर्य, लेखा निरोक्षक-श्री दयाराम आर्य।

शोक समाचार

आर्यसमाज जुआं जिला सोनीपत के पूर्व प्रधान श्री हरगोविन्दसिंह जी का ८० वर्ष की आयु में दिनाक ११ अप्रैल ९५ को गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक में देहान्त हो गया। वे कुछ समय से बीमार थे। वे बहुत परिश्रमी, लगनशील तथा सामाजिक कार्यकर्ता थे। आयुभर शराब, हुक्का आदि व्यसनों से दूर रहे तथा समाज सुधार के कार्यों मे रुचि रखते थे। अनपढ़ होते हुए भी इतिहास के ज्ञाता थे।

—केदारसिंह आर्य

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालयः हरिद्वारम्

९ अप्रैल १९९५

कुलपतिप्रतिवेदनम्

डॉ० धर्मपालः कुलपतिः

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥ (यजुर्वेद १९/३९)

श्रद्धेयाः संन्यासिनः, सम्मान्याः लोकसभाध्यक्षाः श्री शिवराजपाटिल-महोदयाः, परिद्रष्टृपदभाजः श्रीमहावीरसिंहमहोदयाः, कुलाधिपतयः श्रीसूर्यदेवमहाभागाः, सार्वदेशकार्यप्रतिनिधिसभाप्रधानपदभाजः श्रीराम-चन्द्रवन्देमातरम् महाभागाः, मञ्चस्थाः विद्वांसः, नवस्नातकाः ब्रह्मचारिणः, विश्वविद्यालयस्य सहयोगिनो नराः, नार्यश्च ।

अद्य गुरुकुल कांगड़ीविश्वविद्यालयस्य चतुर्णवतितमे दीक्षान्तसमा-रोहक्रमे समागतानां महानुभावानां स्वागतं व्याहरन् अमन्दमानन्द-मनुभवामि । सहृदयानां मान्यानामातिथ्यक्रमे यदि जायेत क्वचित् काचित् त्रुटिस्तर्हि नूनं सा मर्षणीया ।

हे प्रियस्नातकाः ! देवानामीप्सिततमं गुरुकुलमिदममरहुतात्मना पुण्यश्लोकेन स्वामिश्रद्धानन्देन चतुर्नवतिवर्षेभ्यः प्राग् भगवत्याः भागिरथ्याः पवित्रे तटे स्थापितम् । एतस्माद् गुरुकुलाद् विद्या-पारङ्गता देशप्रेमरससिक्ताः ये स्नातका उपाधिवन्तः समभवन् तेषु प्रतिष्ठावन्तो लब्धकीर्तयः पं० इन्द्रविद्यावाचस्पति-आचार्यरामदेव-स्वामिसमर्पणानन्द-पं० अभयदेव-आचार्यप्रियव्रत-डॉ० सत्यकेतु-पं० चन्द्रगुप्त- डॉ० रामनाथ वेदालंकार- स्वामिधर्मानन्दप्रभृतयः सम्प्रत्यपि गुरुकुलस्य कीर्तिं सर्वासु दिक्षु प्रसारयन्ति । अस्माकं प्रत्ययोऽस्ति द्रढीयान् यन्नवाः स्नातका इत उपाधिं गृहीत्वा विश्वविद्यालयस्य यशोगाथां गायं गायं स्वकर्मसु दक्षता प्रकटयन्तः प्रतिष्ठामवाप्स्यन्ति ।

हे आर्यबान्धवाः ! अस्मिन् दीक्षान्तसमारोहावसरे विश्वविद्या-लयस्य संक्षिप्तं प्रगतिवृत्तं भवतु नाम भवता कर्णगतमिति विमृश्य समासेनोदीर्यते । यद्यपि अर्थबाधया समुन्नतिः प्रबाध्यते तथापि गुरुकुलस्य प्रोन्नतिर्न हीयते । साम्प्रतममुष्मिन् विद्यालये चत्वारः सकायाः प्रवर्धमानास्सन्ति । ते प्राच्यविद्या-मानविकी-विज्ञान-जीव-विज्ञानसंकायाः सन्ति । एकैकस्य संकायस्य विभागानां विवरणं प्रस्तूयते ।

प्राच्यविद्यासंकायः

१ वेदविभागः— वेदविभागः डॉ० मनुदेवबन्धुमहोदयस्य अध्यक्षतायामुन्नतिपथमारोहति । अस्मिन् विभागे प्रोफेसरपदभाग् रामप्रसादवेदालंकारो विराजते । अयमेव आचार्यपदभुपकुलपति-पदञ्चालङ्करोति । वेदविभागे वेद-ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषद्-वेदाङ्गा-दीनां सर्वाङ्गीणा शिक्षा दीयते । कर्मकाण्डपरम्परां द्रढयितुं डॉ. मनुदेव बन्धुमहोदयस्य निदेशकत्वे वैदिकप्रयोगशालाऽपि प्रवर्तते । अस्मिन्नेव विभागे विश्वविद्यालयस्यानुदान-सहायतया वैदिकवाङ्मयनिर्वचन-कोषनाम्न्यां बृहत्शोधयोजनायां डा० रूपकिशोर-डॉ० अशोककुमारौ कार्यं कुरुतः । अस्मिन्नेव विभागे एकवर्षीयो वैदिक-कर्मकाण्ड-प्रमाण-पत्रपाठ्यक्रमोऽपि प्रचलति । अत्र डॉ० दिनेशचन्द्रः अध्यापने शोधकर्मणि च निरतोऽस्ति । डॉ० मनुदेवस्य निर्देशने द्वौ छात्रौ पी-एच. डी. उपाधिभ्यां विभूषितौ । वेदविभागेन वेदमन्त्रोच्चारण-प्रतियोगिताऽपि समायोजिता ।

२ संस्कृतविभाग.— संस्कृतविभागे प्रो० वेदप्रकाशशास्त्री अध्यक्षपदमलङ्करोति । अयमेव सम्प्रति प्राच्यविद्यासंकायस्य अध्यक्ष-पदभारं वहति । अस्मिन् विभागे डॉ० सोमदेव डॉ० रामप्रकाशौ रीडर-पदभाजौ स्त. । प्रवक्ता चास्ति डॉ० ब्रह्मदेवः । अस्मिन् विभागे पञ्चविंशति. शोधछात्राः शोधकर्मरताः । अस्मिन्नेव विभागे संस्कृत-दिवससमारोहः सम्मानित । अस्य विभागस्य प्रो० वेदप्रकाशशास्त्रिणा सह अन्ये सहयोगिन. अखिलभारतीयप्राच्यविद्यासम्मेलने भागं ग्रहीतु गता । प्रो० वेदप्रकाशशास्त्रिणः निदेशकत्वे त्रिदिवसीया राष्ट्रिया वैदिकसगोष्ठी समायोजिता । प्रो० वेदप्रकाशशास्त्रिणः अनेकेषु विश्व-विद्यालयेषु विषयविशेषज्ञरूपेण तैस्तैर्विश्वविद्यालयैः सादरं आमन्त्रितः ।

३. दर्शनविभागः डॉ० विजयपालशास्त्रिणोऽध्यक्षतायां प्रगतिमान् वर्तते । अस्यैव विभागस्य प्रोफेसरपदभाग् डॉ० जयदेववेदालंकारः सम्प्रति विश्वविद्यालयस्य कुलसचिवपदमलं-करोति अस्मिन्विभागे डॉ० त्रिलोकचन्द्र-डॉ० उमरावसिंहबिष्टौ कार्यं कुरुतः । अत्र प्राच्य-पाश्चात्यदर्शनशास्त्रे शोधकार्यं प्रचलति ।

४. प्राचीनभारतीयेतिहासविभागः— विभागाध्यक्षः डॉ० कश्मीरसिंहः चारुतया कार्यं निभालयति । विभागे प्रोफेसरपदभाग् डॉ० श्यामनारायणसिंहोऽस्ति । डॉ० राकेशशर्मा प्रवक्तृपदे कार्यं करोति । इतिहासविभागान्तर्गतः पुरातत्त्वसंग्रहालयः डॉ. कश्मीरसिंहस्य निदेशकत्वे चारुतयोन्नतिं करोति ।

५. योगविभागः— डॉ० ईश्वरभारद्वाजस्याध्यक्ष्येऽयं विभागः प्रचलति । अस्मिन् विभागे स्नातकोत्तरश्रेण्यां पाठ्यक्रमः समारब्धः । सम्प्रति युगानुरूपं अस्य विभागस्य महती ख्यातिः प्रवर्धते । समये-समये ईश्वरभारद्वाजस्य आकाशवाणीतः वार्ता प्रसरन्ति । अयं सम्मेलनेष्वपि भागं गृह्णाति ।

६. श्रद्धानन्दशोधसंस्थानम्— अस्माकं विश्वविद्यालये अभिनवं श्रद्धानन्दशोधसंस्थानं संस्थापितम् । अत्र डॉ० भारतभूषण अध्यक्ष-पदभारं वहति । डॉ० महावीरस्तत्रैव रीडरपदभागस्ति । आशास्ते भविष्यति काले बहुलतया शोधकार्यं प्रचलिष्यति ।

मानविकीसंकायः

७. हिन्दीविभागः— हिन्दीविभागे डॉ० सन्तरामोऽध्यक्षपदमलं-करोति । अस्मिन् विभागे डॉ० विष्णुदत्तराकेश आचार्यपदभारं वहन् मानविकीसंकायस्याध्यक्षपदमपि सनाथीकरोति । अस्मिन् विभागे डॉ० भगवान्देवपाण्डेय—डॉ० ज्ञानचन्द्र रावलौ रीडरपदभाजौ । डॉ० कमलकान्तबुधकरः पत्रकारितायां स्वरुचिं तनुते । डॉ. भगवान्देवपाण्डेयः अस्मिन्नेव वर्षे डी० लिट० उपाधिना आत्मानं घोषयति ।

८. आंग्लभाषाविभागः— डॉ० नारायणशर्मणः आध्यक्ष्येऽयं विभाग प्रचलति । अस्मिन् विभागे प्रो० सदाशिव भगत डॉ० श्रवण-कुमार शर्मा डॉ० अम्बुजशर्मा डॉ० कृष्णावतारादयः कार्यनिरताः सन्ति । डॉ० अम्बुजकुमारः शिष्टपरिषद सदस्योऽस्ति ।

९. मनोविज्ञानविभागः— प्रो० ओम्प्रकाशमिश्रस्य अध्यक्षता-यामयं विभागः कार्यं करोति । अस्मिन् विभागे "इकोलोजिकल पर्सपे-क्टिव एण्ड विहेवियर" विषये एकं राष्ट्रियं विद्वत्सम्मेलनमभूत् । अत्र शताधिकैर्विद्वद्भिः भागो गृहीतः । अस्मिन्नेव विभागे अस्मिन् वर्षे "पर्सनल मैनेजमेण्ट एण्ड इण्डस्ट्रियल रिलेशन्स" विषये अभिनवः पाठ्यक्रमः समारब्धः । सम्प्रति पञ्चविंशतिः छात्राः अध्ययनरताः सन्ति । अस्मिन् विभागे डा० सतीशचन्द्र धमीजा, डा० एस.के. श्रीवास्तव, डा० चन्द्रपाल खोखर प्रभृतयः कार्यरताः सन्ति ।

१०. प्रौढ़शिक्षाविभागः— अस्मिन् विभागे डॉ० रामदत्तशर्मा अध्यक्षपदभारं वहति । अयं विभागः साक्षरतावर्धनाय नित्यशः कार्यं करोति । मध्ये-मध्ये प्रतियोगिता अपि समायोजयति । डॉ० जगदीश्वर-सिंहमलिकः सहायकरूपेण कार्यं करोति । (क्रमशः)

१९१९ की खूनी बैसाखी जब जलियांवाला बाग की धरती खून से लाल हो गई थी

लेखक—स्वतन्त्रता सेनानी डा० शान्तिस्वरूप शर्मा पत्रकार, कुरुक्षेत्र

७६ वर्ष बीत गये, अमृतसर के जलियांवाला बाग की धरती पर अंग्रेज तानाशाह जनरल डायर ने तोप के गोलों से हजारों देशभक्तों को भून दिया। जब वह जलियांवाला बाग में अपने दो लीडरों डा० सहफूदीन किचलू और डा० सत्यपाल की गिरफ्तारी का प्रोटेस्ट एक जन सभा में कर रहे थे। काफी लोग मारे गये और काफी जख्मी हो गये। जहां वह एक बूंद पानी के लिए तरस-तरस कर शहीद हो गये।

पंजाब राज्यपाल श्री ओडायर ने अमृतसर सेना को सौंप दिया। पानी, बिजली के कनक्शन काट दिये गये, लोगों को अंग्रेजी यूनियन जैक को सलाम करने पर मजबूर किया गया। स्कूल और कालेज के विद्यार्थियों को नंगे पैरों गर्म भूमि पर यूनियन जैक को सलामी देने पर मजबूर किया जाता था। महिलाओं और पुरुषों दोनो को पेट के बल पर रेंगना पड़ता था और कहना पड़ता था कि "मैंने अपराध किया है, मैं भविष्य मे कोई अपराध नही करूंगा मुझे क्षमा किया जाए।"

महात्मा गांधी अफ्रीका से भारत वापिस आये। देश के सभी नेताओं ने महात्मा जी को बतलाया कि अंग्रेज विश्वासघाती है। अंग्रेजों ने महात्मा जी को अपने जाल में फंसा लिया। उस समय विश्व की पहली बड़ी लड़ाई चल रही थी। अंग्रेजों ने कहा कि यदि वे लडाई जीत गए तो भारत को आजाद कर देंगे। महात्मा गांधी ने अंग्रेजों की रुपये से और सेना को भरती में सहायता की।

अंग्रेज युद्ध जीत गए। अंग्रेज वायसराय से गांधी जी ने देश की स्वतन्त्रता का वचन याद दिलाया। अंग्रेजो ने कहा कि भारत राज संभालने के अभी योग्य नहीं। उन्हें अंग्रेजों के विश्वासघात का दु:ख हुआ। गांधी जी ने सारे देश की जनता से इस विश्वासघात के विरुद्ध जलूस व जलसे करने का आह्वान किया। सारे देश में आंदोलन किया गया। कांग्रेस के नेताओं ने कांग्रेस की बागडोर महात्मा गांधी को सौंप दी। अंग्रेजों ने इस आन्दोलन को दबाने के लिए रोलट एक्ट लगा दिया। जिसके अनुसार बड़े-बड़े लीडरों को नजरबन्द कर दिया गया। पंजाब में डा. सहफूदीन किचलू और डा. सत्यपाल को गिरफ्तार करके नजरबंद कर दिया गया।

सारे देश में प्रदर्शन हुए, अमृतसर में भी भारी प्रदर्शन हुआ। अपने दोनों लीडरों की गिरफ्तारी से बड़ा रोष हुआ और अमृतसर के निवासियों ने एक बड़ा जुलूस निकाला जो जिलाधीश की कोठी की ओर बढ़ा। अंग्रेजी पुलिस ने जुलूस पर लाठीचार्ज किया जिससे एक देशभक्त मारा गया। जुलूस वालों को इसका भारी रोष हुआ। उन्होंने एक अंग्रेज की हत्या कर दी और बदला ले लिया। जनरल डायर को बड़ा गुस्सा आया और जलसे जुलूसों पर पाबन्दी लगा दी। नेताओं ने घोषणा कर दी कि जलियां वाले बाग में १३ अप्रैल को जलसा होगा। १३ अप्रैल को बैसाखी का मेला था जिससे उस जनसभा में भारी उपस्थिति थी। जब जनरल डायर को पता लगा कि जलियांवाला बाग में बड़ी जनसभा हो रही है। उसने घोषणा की कि वह उसकी आज्ञा पालन न करने वालों को सजा देगा। उसने बिना कोई वार्निंग दिए तोपों के गोलों से देशभक्तों को भून दिया।

इस तानाशाह के विरुद्ध सारे देश मे प्रदर्शन हुए। सारे देश में जलियावाला बाग दिवस मनाया गया। अंग्रेजी सरकार ने लोगो की आखों में धूल डालने के लिए हंटर कमेटी बनाई। जिसके सामने जनरल डायर ने बताया था कि उसके पास केवल उतने ही गोले थे जिनका प्रयोग किया गया था। यदि और गोले होते तो मैं उन्हें भी चलाता।

डायर को रिटायर्ड करके लन्दन भेज दिया गया। एक भारतीय नवयुवक ऊधमसिंह जिसने यह कांड देखा था, ने इस खून का बदला लेने की प्रतिज्ञा की। वह २० वर्षों तक जनरल डायर की ताक में रहा। जब वह लन्दन में एक सभा में भारत के विरुद्ध भाषण देकर आ रहा था, तो सरदार ऊधमसिंह ने गोली मारकर जनरल डायर की हत्या कर दी। उसने खुशी से नाचते हुए कहा कि "मैंने भारत के अपमान का बदला ले लिया है।" उसे गिरफ्तार कर लिया गया। मैजिस्ट्रेट के सामने उसने अपना नाम राम मुहम्मदसिंह बतलाया और न्यायालय से मांग की कि उसे फांसी की सजा दी जाए ताकि वह अपने मित्र शहीदे-आजम सरदार भगतसिंह से जल्दी जाकर मिल सके वह मेरा इंतजार कर रहा है।

हम उस वीर सरदार ऊधमसिंह और शहीदान जलियावाला बाग को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

ग्राम उमरा (सातबास जड़िया) में महा पंचायत

अध्यापिका बहिन सुशीला को गत दो वर्ष पहले परीक्षाओं मे नकल रोको अभियान के तहत अपने कर्त्तव्य का पालन करने पर उनका अपहरण कर और बाद में जघन्य हत्या करने के बाद दोषियो को दण्ड दिलाने हेतु सर्वकर्मचारी संघ, अध्यापक संघ, अन्य संगठन तथा खापों के प्रयास से सी. बी. आई. की जांच आरम्भ हुई। मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल के नजदीकियों को दोषी पाया गया। सी बी. आई. की जांच में मुख्यमन्त्री बाधा खडी कर रहा है। दोषियों को दण्ड दिलाने और साथ में श्री भजनलाल को त्यागपत्र देने की मांग को लेकर गत दिनों ३१ आदमियों पर आधारित एक जन संघर्ष समिति का गठन किया गया। जन संघर्ष समिति ने चौथी महा पंचायत ग्राम उमरा में ३० मार्च १९९५ को दादा बलजीतसिंह मलिक आहुलाना की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। अनेक खापो एवं संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। पंचायत हाई स्कूल के प्रांगण में ११ बजे आरम्भ हुई। सभा उपदेशक एवं संयोजक शराबबन्दी समिति जि० हिसार के श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी, डा० बाबूराम, पूर्णसिंह डाबडा, दलबीर गाधी (सांगवान खाप), राममेहर पूर्व सरपंच उमरा, अध्यापक संघ के प्रधान मा० किताबसिंह, सुबेदार हरिसिंह (स्योराण खाप), सम्पूर्णसिंह (लाडवा खाप), रामराह खाप, टेही खाप आदि अनेक प्रतिनिधियों ने बहिन सुशीला काण्ड, रोहतक रणबीर सुहाग काण्ड, नारनौंद शमशेर काण्ड, शराबबन्दी कार्यकर्ताओं पर लाठीचार्ज आदि के लिए सरकार की कटु आलोचना की। लोगों को संगठित होकर इस भ्रष्ट सरकार को हटाने तथा दोषियों को दण्ड दिलाने बारे सभी खापों में जन जागरण के लिए महापंचायत बुलाकर कुर्बानी देने के लिए तैयार रहना चाहिये। सर्वसम्मति से सब प्रस्ताव पास किए गए। अगली पंचायत २२ अप्रैल को स्योराण खाप की ओर से बाढडा में रखी गई है। जब तक न्याय नही मिलता संघर्ष जारी रहेगा।

बलवन्तसिंह आर्य
मन्त्री-आर्यसमाज उमरा

आवश्यकता

राजस्थान प्रान्त के आर्यजनों द्वारा विधानसभा पर प्रदर्शन

मुख्यमन्त्री को ज्ञापन

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के आह्वान पर लगभग तीन हजार आर्य स्त्री पुरुषों ने दि० २४ मार्च को राजस्थान विधान सभा पर जोरदार प्रदर्शन किया। यह प्रदर्शन प्रान्त में पूर्ण नशाबन्दी हेतु, सारे खुर्द शराब कारखानों को रोकने तथा लाटरी पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु किया गया था।

२३ मार्च की सायंकाल ही प्रान्त के कोने-कोने से आर्यजनों का आगमन प्रारम्भ हो गया। २४ मार्च को प्रातःकाल १० बजे रामनिवास बाग में नेहरू मूर्ति के पास हजारों की संख्या में आर्यजन एकत्रित हो गए। दोपहर ११ बजे आर्यों का जुलूस एस. एम. एस. रोड, टोंक रोड होता हुआ अजमेरी गेट पहुंचा। वहां पर अलवर से जैन समाज तथा अन्य संगठनों के कार्यकर्ता भी जुलूस में सम्मिलित हो गए। जुलूस का नेतृत्व सभा प्रधान श्री विद्यासागर शास्त्री तथा सभा मंत्री श्री स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती कर रहे थे। यह जुलूस अजमेरी गेट से नेहरू बाजार, बापू बाजार होता हुआ जौहरी बाजार पहुँचा। जौहरी बाजार में जैन समाज के लोगों ने सभा के अधिकारियों का स्वागत किया। दिगम्बर जैन समाज के अखिल भारतीय महामन्त्री श्री पाटनी जी तथा अलवर के श्री खिल्लीमल जैन भी सभा के अधिकारियों के साथ-साथ जुलूस के आगे-आगे चल रहे थे। अन्य प्रमुख व्यक्तियों में सभा के कोषाध्यक्ष श्री सत्यनारायण शाह, उपप्रधान श्री केशवदेव वर्मा, उपप्रधान श्री ओमप्रकाश झवर, श्री शुद्धबोध शर्मा तथा श्री छोटूसिंह जी एडवोकेट और श्री सत्यव्रत सामवेदी आदि अनेक व्यक्ति थे।

प्रान्त के अनेक भागों से आर्यजन अपने-अपने जत्थे लेकर आए जिसमें सर्वश्री श्रीकृष्ण सावक, सोमदेव जी भूत, डा० रामकृष्ण, आचार्य वेदप्रिय, रामदेव जी कोटा, श्री मुकन्ददास जी वानप्रस्थी, हरेन्द्रजी, दाउलाल जी, फकीरचन्द जी, मिश्रा जी जोधपुर, हरगोविन्द जी भरतपुर, वैद्य दिनेश, वजेश जी भुसावर, सूरजमल साथी, सीकर के अतिरिक्त बारां, सुनेल, झालरापाटन, झुंझुनू, सीकर, चिड़ावा, लाडनू, कुसुम्बी, नागौर, मेड़ता, छोटी खाटू, बांसवाड़ा, सनवाड़, उदयपुर, निम्बाहेड़ा, बसेड़ा, चित्तौड़, तिजारा, राजगढ़, खेरथल, जडराना, अलवर, गंगापुर, हिण्डौन, सवाई माधोपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, तोहर आदि स्थानों से आर्यजन जुलूस में सम्मिलित थे। जयपुर की आर्यसमाजों के महिला, पुरुष भी जुलूस में सम्मिलित थे। ग्राम नोदड़ से एक ट्रैक्टर लेकर आर्यजन पहुंचे।

जुलूस के सचालन की व्यवस्था सर्वश्री ज्ञानेन्द्र आर्य, सीताराम आर्य, नरेन्द्र आर्य, देवेन्द्र आर्य व श्री मा० मदनमोहन जी गंगापुर सिटी कर रहे थे।

जौहरी बाजार में जुलूस के पहुचने पर सभा मन्त्री श्री स्वामी सुमेधानन्द जी ने ट्रैक्टर पर बने मंच से आर्यजनों को सम्बोधित किया। सम्बोधन के बाद जुलूस बड़ी चौपड़ होता हुआ जलेब चौक में विधान सभा के सामने पहुचा। वहां जुलूस ने सभा का रूप ले लिया। सभा को अनेक वक्ताओं ने सम्बोधित किया जिनमें सभा प्रधान श्री विद्यासागर शास्त्री, सभामन्त्री श्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, श्री छोटूसिंह एडवोकेट, जैन समाज से श्री पाटनी जी व श्री खिल्लमल जी जैन तथा विधायकों में श्रीमती उजला अरोड़ा, रूपाराम चोधरी, रामनारायण मीणा, दिनेश जोशी व गोपीराम गुर्जर ने सम्बोधित किया। अलवर से आई डा० शुची आर्या ने भी अपने विचार रखे। मंच संचालन श्री धर्मवीर आर्य ने किया।

बाद में सभा प्रधान श्री विद्यासागर शास्त्री के नेतृत्व में १५ सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल मुख्यमन्त्री श्री भैरोंसिंह शेखावत को ज्ञापन देने गया। सभामन्त्री श्री स्वामी सुमेधानन्द जी ने मुख्यमन्त्री जी को ज्ञापन दिए। शिष्टमण्डल में सर्वश्री छोटूसिंह, केशवदेव वर्मा, ओम्प्रकाश झवर, सत्यव्रत सामवेदी, ओमप्रकाश पत्रकार, अलवर इत्यादि के नाम उल्लेखनीय है।

मुख्यमन्त्री जी ने शिष्टमण्डल को आश्वासन दिया कि सारे खुर्द कारखाने में शराब नहीं बनेगी। प्रान्त में पूर्ण नशाबन्दी के सम्बन्ध में मुख्यमन्त्री जी स्पष्ट नहीं कह सके। लाटरी के सम्बन्ध में शीघ्र कार्यवाही करने का आश्वासन दिया।

ज्ञापन देने के बाद सभामन्त्री जी ने आर्यजनों को बताया कि जब तक सरकार प्रान्त में पूर्ण नशाबन्दी लागू नहीं करती है तब तक आन्दोलन जारी रहेगा। आगामी १४, १५, १६ अप्रैल को जसराना में आर्य सम्मेलन के अवसर पर बैठक में आन्दोलन की आगामी रूपरेखा की घोषणा की जावेगी।

इस कार्यक्रम में भोजन की व्यवस्था आर्यसमाज, आदर्शनगर, जयपुर तथा जयपुर की अन्य आर्यसमाजों की ओर से की गई थी। श्री हरिबक्स जांगिड़, श्री बलदेवराज जी आर्य ने भोजन बनवाने में विशेष पुरुषार्थ किया। सभा मन्त्री जी ने आर्यजनों तथा अन्य संगठनों के प्रतिनिधियों का धन्यवाद किया। —ब्रह्मप्रकाश गुप्ता, कार्यालय मन्त्री

पंचम-श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार—१९९५

आर्यसमाज सान्ताक्रुज द्वारा संचालित पंचम-श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार के लिए प्रविष्ठियां आमन्त्रित की जाती हैं। यह पुरस्कार मस्कत निवासी श्री मेघजी भाई नैनसी की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री कनकसिंह मेघजी भाई के आर्थिक सहयोग से प्रारम्भ किया गया था। पुरस्कार समारोह प्रतिवर्ष जुलाई के प्रथम सप्ताह में मनाया जाता है।

उद्देश्य—आर्य साहित्य के लेखकों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से इस पुरस्कार का प्रारम्भ किया गया है। जिन लेखकों ने आर्यसमाज की सेवा अधिकतम साहित्य लिखकर की है उन्हें इस पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

पुरस्कार—पुरस्कार प्राप्त लेखक को रुपये १५००,१/- की राशि, रजत ट्राफी व शाल से सम्मानित किया जायेगा।

नियम—१. जिस आर्य विद्वान् ने जीवन पर्यन्त वैदिक साहित्य के द्वारा आर्यसमाज की अधिकतम सेवा की हो।

२. जिनके प्रकाशित ग्रन्थों का सम्बन्ध आर्यसमाज के दर्शन, इतिहास, सिद्धान्त अथवा आर्य महापुरुषों के जीवन आदि से है, वे ही पुरस्कार की सीमा में माने जाएंगे।

३. ग्रन्थ लेखक को अपनी समस्त रचनाओं की दो-दो प्रतियां आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प०) बम्बई को भेजनी होगी। एक बार ग्रन्थ प्राप्त होने के पश्चात् पुन: अगले वर्ष भेजने की आवश्यकता नहीं होगी।

४. लेखक का चयन एक समिति करेगी जिसका मनोनयन आर्यसमाज सान्ताक्रुज की अन्तरंग सभा का निर्णय अन्तिम निर्णय माना माना जाएगा।

५. इस पुरस्कार हेतु लेखक अपने ग्रन्थों की दो-दो प्रतियां संयोजक-आर्य साहित्य पुरस्कार आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई-५४ को ३० अप्रैल १९९५ तक भेजने की कृपा करें।

कैप्टन देवरत्न आर्य
सयोजक-पुरस्कार समिति एवं प्रधान-आर्यसमाज सान्ताक्रुज

आदर्श आर्य सरपंच

श्री जयसिंह जी आर्य ग्राम शेरपुर (गुड़गांवा) बहुत वोट प्राप्त करके सरपंच चुने गए। पता लगा है कि इस सरपंच ने अपने चुनाव में किसी भी व्यक्ति को शराब-मास आदि अभक्ष्य पदार्थ न खिलाया और न पिलाया। यहां तक कि सारा परिवार किसी भी प्रकार का नशा नहीं करता है। इस सरपंच के अन्य सहयोगी भी व्यसन रहित हैं।

श्रद्धेय स्वामी ओमानन्द जी महाराज के आशीर्वाद से स्वामी शान्तानन्द जी की अध्यक्षता में स्वामी वेदमुनि जी एवं नैष्ठिक जीवानन्द द्वारा सरपंच जी ने समस्त व्यय वहन करते हुए स्वामी शान्तानन्द जी के आश्रम में यज्ञ करवाया। अपने भाई की सुपुत्री समता सहित कन्या गुरुकुल जसात की कन्याओं को भी बुलाया और सबको खीर हलवा खिलाया। अपने पंचों सहित ग्राम की सब प्रकार की उन्नति के लिए वायदा किया। आस-पास के लोगों ने भी व्यसनों को छोड़ने का प्रण किया। दान-दक्षिणा देकर हम सबको विदा किया। ऐसे आदर्श सरपंच को उनके साथियों सहित हार्दिक बधाई देते हैं। हार्दिक धन्यवाद। जीवानन्द नैष्ठिक

आचार्य की आवश्यकता

सभा द्वारा संचालित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि० फरीदाबाद के लिए आचार्य की तुरन्त आवश्यकता है। वैदिक सिद्धान्तों का विद्वान्, गुरुकुल शिक्षा पद्धति का समर्थक, अध्यापनकार्य में अनुभवी को प्राथमिकता दी जावेगी। इच्छुक महानुभाव अपनी योग्यता अनुभव तथा आयु के प्रमाणपत्रों सहित सम्पर्क करें।

मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

हरद्वार में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जन्मदिवस पर मर्यादाविहीन बलात्कारी आचरण स्त्रीशिक्षा के नाम पर सहशिक्षा लागू करने का षड्यन्त्र

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की सबसे पुरानी शिक्षण संस्था गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार की सीनेट की बैठक के अवसर पर असामाजिक गुण्डों तथा राजनैतिक दलों के कार्यकर्ताओं द्वारा आर्यसमाज के नेताओं को दोपहर बाद ३ से रात्रि १२ बजे तक घेराव किये जाने की घोर निन्दा की है। स्वामी जी ने हरद्वार की पुलिस पर भी आरोप लगाते हुए कहा है कि पुलिस ने घेराव करने वालों के विरुद्ध कोई कार्यवाही न करके सिद्ध किया कि गुण्डो के साथ उसकी साठ गांठ थी। आर्यसमाज के नेता निरन्तर ९ घण्टे भूखे प्यासे बन्धक रखे गये। जब उन्होंने बाहर जाने का यत्न किया तो बाहर भी नहीं जाने दिया गया। पुलिस की उपस्थिति में आर्यजगत् के वयोवृद्ध सन्यासी ओमानन्द सरस्वती तथा महिला नेता पं० प्रभातशोभा आदि के साथ दुर्व्यवहार भी किया गया।

घेराव करनेवाले आर्यसमाज के नेताओं से बलात् गुरुकुल कांगड़ी में सहशिक्षा चालू करवाने का हठ कर रहे थे। आर्यसमाज सदा से ही सहशिक्षा का विरोध करता रहा है। क्योंकि नवयुवक तथा नवयुवतियां एक स्थान पर पढ़ने पर चरित्रवान् नहीं रह सकते। अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि सिद्धान्तों के अनुसार स्थापित गुरुकुल कांगड़ी में आर्यसमाज के विरोधी स्त्री शिक्षा के नाम पर सहशिक्षा बलात् लागू करने का षड्यन्त्र रच रहे हैं। उन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम राम के पवित्र जन्मदिवस पर मर्यादा विहीन बलात्कारी आचरण किया। —केदारसिंह आर्य

आर्यसमाज बनाया

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दि. आ. प्र. सभा)

सम्वत् अठारह सौ छिहत्तर का, दिवस सुहाना आया।
चैत्र सुदी प्रतिपदा ऋषि ने आर्यसमाज बनाया॥
स्वाभिमान राष्ट्र-प्रहरी ने ध्रुव सम निभाया।
पावन पथ की खोज लगाने जहां तहां पता लगाया॥
लक्ष्य पवित्र प्राप्त करने को जीवन सुख बिसराया।
चैत्र सुदी प्रतिपदा ऋषि ने आर्यसमाज बनाया॥१॥
भव्य भूमि भारत गारत हो रही अविद्या छाई।
ऊंच नीच और भेदभाव का चलन महा दुखदाई॥
वातावरण अशान्त वेद का सुखद मार्ग दरशाया।
चैत्र सुदी प्रतिपदा ऋषि ने आर्यसमाज बनाया॥२॥
बाल विवाह सतीप्रथा पर्दाप्रथा को दूर किया।
मत मतान्तर पाखण्डों के गढ को चकनाचूर किया॥
फूका आर्य जाति में जीवन भीषण कष्ट उठाया।
चैत्र सुदी प्रतिपदा ऋषि ने आर्यसमाज बनाया॥३॥
रच सत्यार्थप्रकाश काट दिये मत पन्थों के बाजू।
सत्य असत्य तोल दिखाया लेकर धर्म तराजू॥
कहे 'स्वरूपानन्द' पिया विष अमृत हमें पिलाया।
चैत्र सुदी प्रतिपदा ऋषि ने आर्यसमाज बनाया॥४॥

शोक समाचार

आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० ब्रह्मप्रकाश जी शास्त्री की धर्मशीला पत्नी श्रीमती सरलादेवी शर्मा का दि० ७-४-९५ को प्रात:काल देहावसान हो गया। अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक विधान से निगम बोध घाट पर किया गया। श्रद्धांजलि सभा १६-४-९५ को सायंकाल ३ से ५ बजे सम्पन्न हुई।

बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

आर्यसमाज राज्य को शराब से मुक्त करके ही दम लेगा

पलवल, १२ अप्रैल। जाने माने इतिहासकार तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अध्यक्ष स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने कहा है कि आर्यसमाज हरयाणा को शराब रहित बनाकर ही दम लेगा। उन्होंने कहा कि अगले चुनावों मे उसी उम्मीदवार को विजयी बनाया जाएगा, जो शराब का सेवन न करता हो। स्वामी ओमानन्द यहां श्रद्धानन्द नगर स्थित आर्यसमाज के ३८वें वार्षिकोत्सव को सबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि राजनेता ही शराब को बढावा दे रहे हैं, परन्तु जनता को जागरूक होता देख राजनेता घबरा गये है। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज देश की एकता अखण्डता को तोड़ने नही देगा। उन्होने कहा कि वेद मे कही भी मूर्तिपूजा का आदेश नही है। श्राद्ध भी जीवित माता पिता व पितरों का करना चाहिए। मृतक श्राद्ध का कही विधान नही है।

उन्होने कहा कि हमें निस्वार्थ सेवा करनी चाहिए। महर्षि दयानन्द को उनकी राष्ट्र को समर्पित निस्वार्थ सेवा ही महान् बना गई। उन्होने कहा कि धर्म की मर्यादाए नही तोडनी चाहिए तथा कभी भी सिद्धान्तों से गिरे व्यक्ति की सगति नही करनी चाहिए। परस्त्री को मातृवत् समझना चाहिए तथा पराए धन पर नजर नहीं डालनी चाहिए।

तीन दिन तक चले इस वार्षिकोत्सव को प० ओकार मिश्र 'प्रणव', स्वामी विजयानन्द, पं० चित्र उपाध्याय, श्रीमती उर्मिला आर्या, प० ओमप्रकाश वर्मा, मगलदेव, पं० उदयवीर, अजीतकुमार आर्य ने भी सम्बोधित किया। (दैनिक जागरण १३-४-९५ से)

राष्ट्र अखण्ड रहे

मेरा देश अखण्ड रहे सदा मेरा राष्ट्र अखण्ड रहे।
क्यों उदास है आज तिरंगा दुखी-दुखी क्यों पावन गंगा।
आतकित क्यों कंचनजंघा। मडित झूठ सत्य है नंगा।
कसम हमें हल्दीघाटी की। कसम हमे पावन माटी की।
प्रण हित प्राण समर्पित करते। ऋषि-मुनियों की परिपाटी की।
छल-छद्मों से दूर रहें हम दूर-दूर पाखण्ड रहे।
मेरा देश अखण्ड रहे सदा मेरा राष्ट्र अखण्ड रहे।
मातृभूमि की धूल बनें हम। हंसते-खिलते फूल बने हम।
अन्यायी को दण्ड के लिए। शिव का सुदृढ त्रिशूल बनें हम।
राष्ट्र वेद अक्षत चन्दन है। राष्ट्र स्वर्ग सुन्दर नन्दन है।
राष्ट्र हमे प्राणो से प्यारा। राष्ट्र यशोदा का आगन है।
मन में देश प्रेम की ज्वाला सबके सदा प्रचण्ड रहे।
मेरा देश अखण्ड रहे सदा मेरा राष्ट्र अखण्ड रहे।
तन भी मन भी हो निज वश में। भरी रहे बिजली नस-नस में।
पराधीन जीना क्या जीना। मरण छिपा होता अपयश में।
डंडे का जीवन झण्डा है। झण्डे का यौवन डंडा है।
डंडा ऊचा झण्डा ऊंचा। डंडे बिना न कुछ झण्डा है।
अन्धकार की छाती चीरो वीरो ऊंचा दण्ड रहे।
मेरा देश अखण्ड रहे सदा मेरा राष्ट्र अखण्ड रहे।
तेरा मेरा भाव भूलकर। चले सदा हम एक डगर पर।
द्वैत भुला दे दर्प सुला दे। मातृभूमि के हित जाये मर।
देश बचे निज वेश बचेगा। ऋषियो का सन्देश बचेगा।
धर्मस्थल अपवित्र हुए तो। कैसे धर्म अशेष बचेगा।
सबसे बड़ा राष्ट्र मन्दिर है मन में यही घमण्ड रहे।
मेरा देश अखण्ड रहे सदा मेरा राष्ट्र अखण्ड रहे।

रचयिता—सारस्वत मोहन मनीषी
(साभार जन ज्ञान जारी है)

आर्यसमाज के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज उमरा (हिसार) का चुनाव सम्पन्न

प्रधान— श्री ज्ञानीराम मलिक आर्य
उपप्रधान— श्री बलवन्तसिंह आर्य
मन्त्री— श्री भरतसिंह आर्य
कोषाध्यक्ष— सुबेदार सुबेसिंह आर्य

अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
सभा उपदेशक

आर्यसमाज महमूदपुर माजरा जि. रोहतक

प्रधान— मा० महेन्द्रसिंह
उपप्रधान— प्रतापसिंह
मन्त्री— अतरसिंह
कोषाध्यक्ष— मा० विजय

आर्यसमाज जवाहरनगर पलवल

प्रधान— श्री धनपतराय आर्य
उपप्रधान— श्री तीर्थदास रहेजा
मन्त्री— आनन्दस्वरूप भाटिया
कोषाध्यक्ष— गोविन्दराम रहेजा

आर्यसमाज आर्यनगढ़ उ. प्र.

प्रधान— श्री कपिलदेव
उपप्रधान— श्री राजेन्द्रराम शर्मा
मन्त्री— श्री राजीवकुमार आर्य
कोषाध्यक्ष— श्री श्रीचन्द गुप्ता

आर्यसमाज नगर सोनीपत का उत्सव

२२-५-९५ से २८-५-९५ तक मनाया जा रहा है। २२-५-९५ से २५-५-९५ तक वेद कथा होगी। २६-५-९५ को बच्चों के लिए एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इसमें भाग लेने वाले प्रतिभागी २४-५-९५ तक मन्त्री आर्यसमाज नगर सोनीपत के पास नाम भेज सकते हैं। इस प्रतियोगिता का समय प्रातः १०-०० बजे है।

वीरेन्द्रदेव शर्मा
मन्त्री

गुरुकुल कुम्भाखेड़ा (हिसार) में गोशाला शिलान्यास समारोह सम्पन्न

दिनांक १२-४-९५ को सादे समारोह में मध्याह्न १ बजे गुरुकुल कुम्भाखेड़ा में श्री संजीवकुमार उपायुक्त हिसार के करकमलों द्वारा गोशाला भवन का शिलान्यास किया गया। तत्पश्चात् चौ० हरिसिंह सैनी प्रधान आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम श्री महीपाल शास्त्री व वैद्य दयाकृष्ण आर्य ने उपायुक्त महोदय के सम्मान में दो-दो शब्द कहे। उसके बाद गुरुकुल के दो छात्रों ने संस्कृत भाषा में स्वागत गान गाया। आचार्य कृष्णपालसिंह जी ने अभिनन्दन-पत्र भेंट किया और गुरुकुल प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री दयाकिशन आर्य (कापड़ो) ने दोनों महानुभावों को गुरुकुल की ओर से एक-एक महर्षि दयानन्द की जीवनी भेंट की। श्री दिलबागसिंह शास्त्री ने विस्तार से गुरुकुल की व्यवस्था एवं गतिविधियों से अवगत कराया और साथ में गुरुकुल को अधिक से अधिक आर्थिक योगदान देने की मांग की।

मुख्य वक्ता के रूप में सभा उपदेशक एवं संयोजक शराबबन्दी समिति जिला हिसार के श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने कहा कि २७ वर्ष पूर्व इस पिछड़े इलाके में स्वामी वेदानन्द जी ने गुरुकुल खोल कर बहुत ही सराहनीय कार्य किया है। यह सब स्वामी की तपस्या तथा प्रधान श्री दयाकिशन आर्य के पुरुषार्थ का फल है जो गुरुकुल सुचारू रूप से चल रहा है। साथ में आर्यसमाज का गौरवमय इतिहास बताकर गोकरुणानिधि का हवाला देकर गोमाता का आर्थिक लाभ बताकर प्रत्येक गृहस्थी को एक-एक गौ घर में पालने पर बल दिया। शराब से होने वाले नुकसान से अवगत कराते हुए लोगों से शराब छोड़ने की अपील करते हुए जिला प्रशासन से गांव-गांव में जो ठेकेदार पुलिस से मिलीभगत करके अवैध शराब बेच रहे हैं उनपर तुरन्त रोक लगाने की मांग की ताकि गांव की शान्ति भंग न हो। ८ दिन के संघर्ष के बाद लोगों की भावनाओं की कदर कर नलवा गाव का ठेका बन्द करवाने पर उपायुक्त महोदय का धन्यवाद किया।

चौ० हरिसिंह सैनी ने गुरुकुल शिक्षा का महत्त्व बताते हुए उपायुक्त महोदय को ज्यादा से ज्यादा आर्थिक सहयोग करने का सुझाव दिया। उपायुक्त महोदय ने बताया कि आर्यसमाज शिक्षा के क्षेत्र में तथा अन्य सामाजिक बुराइयों को खत्म करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि सामाजिक उत्थान एवं मानव निर्माण का कार्य आर्यसमाज ही कर सकता है। यह महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित की हुई स्वतन्त्र संस्था है। राजनीतिज्ञ लोगों के बस की बात नहीं। धर्महीन राजनीति को भी लंगड़ी बताया। तथा गुरुकुल शिक्षा पद्धति को भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का रक्षक बताया। लोगों से शराब न पीने की भी अपील की।

इस अवसर पर अपनी ओर से उपायुक्त महोदय ने नए दरवाजे खिड़कियों के लिए ८० हजार रुपये, ५ सौर ऊर्जा, १० गैस कनैक्शन, २० शौचालय, खेल का सब सामान, लाइब्रेरी के लिए कुछ अंग्रेजी की पुस्तकें देने की घोषणा की, और साथ में अगर पंचायत ढाई एकड़ भूमि दे दे तो सवा लाख रुपये लगाकर एक खेल स्टेडियम बनवाने का आश्वासन भी दिया। अन्त में श्री दिलबाग शास्त्री ने सभा अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि का पुनः गुरुकुल की ओर से धन्यवाद किया।

चान्दीराम आर्य कुम्भाखेड़ा

गुरुकुल पंचगांव का १४वां वार्षिक उत्सव सम्पन्न

कन्या गुरुकुल पंचगांव जिला भिवानी के संस्थापक स्वतन्त्रता सेनानी महाशय मनसाराम जी त्यागी की पुण्य तिथि पर श्रद्धांजलि समारोह के साथ गुरुकुल का उत्सव २५-२६ मार्च १९९५ को मनाया गया।

इस अवसर पर आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, स्वामी [illegible] जी, श्री जीवानन्द जी नैष्ठिक, [illegible] जी शास्त्री, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, चौ० सूबेसिंह जी पूर्व सभा मन्त्री, श्री हीरानन्द जी आर्य पूर्व मन्त्री आदि ने सर्वप्रथम महाशय मनसाराम जी त्यागी के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धांजलि दी और लोगों से उनके जीवन से प्रेरणा लेकर इस गुरुकुल की तन मन धन से सेवा करने की अपील की। नारी शिक्षा एवं उत्थान, गुरुकुल शिक्षा का महत्त्व, गोरक्षा, राष्ट्र रक्षा, महर्षि दयानन्द जी के नारी जाति पर उपकार, भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता, आर्यों का गौरवमय इतिहास, पाखण्ड, भ्रष्टाचार तथा शराबबन्दी पर विस्तार से प्रकाश डाला।

स्वामी ओमानन्द जी ने विशेषकर कई दानी वीरों के उदाहरण देकर लोगों से गुरुकुल की सहायता करने की अपील की। हरयाणा को ऋषि मुनियों की भूमि बताया और नवयुवकों का आह्वान किया कि तगड़े होकर इस शराबबन्दी के कार्य में जुटो। शराब अवश्य बन्द होगी और आर्यसमाज की जीत होगी। स्वामी जी ने यह भी घोषणा की कि हम कई गांवों में बड़े-बड़े हवन करके शराबियों की शराब छुड़वायेंगे। चौ० सूबेसिंह ने ग्राम बालसमन्द तथ नाथा का उदाहरण देकर श्री क्रान्तिकारी व श्री धर्मपाल 'घोर' की गाव के नवयुवकों के सहयोग से शराब के ठेके धरने देकर बन्द करवाने पर प्रसन्नता प्रकट की। साथ में सरकार की शराब बढ़ाओ नीति की कटु आलोचना की। श्री राम अवतार आर्य पूर्व प्रधान आर्यसमाज लोहारू ने मई मास मे स्वामी ओमानन्द जी के मार्गदर्शन में १ क्विंटल घी का हवन करने तथा ५०० नवयुवकों के साथ शराबबन्दी जनजागरण के लिए पद यात्रा करने की घोषणा की। श्रीमती विनोदबाला शर्मा ब्लोक चेयरमैन ने महिलाओं को शराबबन्दी अभियान में बढ़चढ़ कर भाग लेने का आह्वान किया। पं० सत्यनारायण आर्य प्रधान आर्यसमाज दादरी ने भी गुरुकुल को तन, मन, धन से सहायता करने का वचन दिया।

इस अवसर पर जिला आयुक्त श्री सुनील गुलाटी ने एक नव निर्मित कमरे का शिलान्यास किया जो गांव की पंचायत ने बनवाया था। उपायुक्त महोदय ने अपनी ओर से एक कमरा और पानी की टंकी शीघ्र बनवाने की घोषणा की। उत्सव के अन्तिम दिन पधारकर श्री जगबीरसिंह जी सांसद ने अपने कोटे से एक कमरा और एक गैस कनैक्शन देने की घोषणा की। परिवहन मन्त्री से मिलकर गुरुकुल के गेट के आगे बस अड्डा बनाने का भी वचन दिया ताकि सभी बसे आने जाने वाली यहां ठहर सकें। श्री धर्मपाल विधायक दादरी ने भी २१०० रु० दिए। श्री सूबेसिंह जी ने भी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से ११०० रु० दिए। श्री हीरानन्द आर्य समेत कई सज्जन ११००-११०० रु० देकर गुरुकुल के आजीवन सदस्य बने। फुटकर दान में भी लगभग २२ हजार रुपये उत्सव पर प्राप्त हुए। सभी राजनेताओं ने गुरुकुल शिक्षा की भूरिभूरि प्रशंसा की।

२६ मार्च को पांच बजे सायं बहिन चन्द्रावती विधायिका लोहारू की अध्यक्षता में छात्राओं का पी. टी., आसन, लाठी चलाना, डम्बल आदि का व्यायाम प्रदर्शन हुआ। प्रतिदिन प्रातः आचार्या ओमव्रती आचार्या तथा श्री भरतसिंह शास्त्री मुख्याधिष्ठाता द्वारा हवन किया गया।

इसके अतिरिक्त पं० विश्वामित्र, पं० दीपचन्द, महाशय आजादसिंह छीलर के पाखण्ड व सामाजिक बुराइयों के खिलाफ शिक्षाप्रद समाजसुधार के भजन हुए। समय-समय पर गुरुकुल की छात्राओं के भजन एवं भाषण का कार्यक्रम भी सराहनीय रहा। श्री सुमेरसिंह आर्य कप्तान यशपाल शास्त्री, धर्मपाल शास्त्री, योगमुनि, श्री मोहब्बतसिंह आर्य आदि का इस उत्सव को सफल बनाने में विशेष सहयोग रहा। श्री जोखीराम आर्य नांगलकलां निवासी ने भी गत दिन अपनी नेक कमाई में से गुरुकुल को ३० हजार रुपये दान दिये। अप्रैल मास में मैचिंग ग्रांट के बाद शीघ्र ही एक कमरा बनाया जाएगा।

मंच का संचालन श्री सत्यवीर शास्त्री ने किया। गुरुकुल की कार्यकारिणी प्रधान सेठ बनवारीलाल जी आर्य के नेतृत्व मे पूरी निष्ठा से गुरुकुल की सेवा कर रही है।

हरिसिंह प्रभाकर, मन्त्री

आर्यसमाज उमरा (हिसार) का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

सात वास (जडिया) के सबसे बड़े गाव उमरा मे कई वर्षों के बाद सभा के उपदेशक श्री अतरसिह आर्य क्रांतिकारी के पुरुषार्थ एव प्रेरणा से ४-५ अप्रैल १९९५ को आर्यसमाज उमरा की ओर से वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। चौ० हीरासिह मलिक (आर्य) इसी गाव के थे जो हैदराबाद व हिन्दी आन्दोलन मे सक्रिय रहे एवं जेल में भी गए। कुछ बुजुर्ग स्वर्ग सिधार गए कुछ फूट का शिकार हैं। अब गांव मे साग करवाना, शराबखोरी, विवाह-शादी में कपड़े पहनकर नाचना आम बात है। क्रान्तिकारी जी ने २० मार्च को कुछ बुजुर्गों की मीटिंग कर आर्यसमाज के उत्सव करवाने की स्वीकृति लेकर विद्वानों से सम्पर्क किया।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान स्वामी वेदानन्द जी, स्वामी सर्वदानन्द कुलपति गुरुकुल धीरणवास, आचार्य राजकुमार शास्त्रार्थ महारथी, श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी सयोजक शराबबन्दी समिति जिला हिसार तथा प० अर्जुनदेव (रोहतक) आदि विद्वान् पधारे। जिन्होंने आर्यसमाज का इतिहास, राष्ट्ररक्षा, मनुष्य जीवन का लक्ष्य, देश की आजादी में क्रान्तिकारियों की भूमिका, नारी शिक्षा एव उत्थान, गुरुकुल शिक्षा का महत्त्व, धर्म क्या है, आर्य-समाज क्या चाहता है, मूर्तिपूजा, व्यर्थ पाखण्ड तथा शराबबन्दी पर विस्तार से प्रकाश डाला।

स्वामी वेदानन्द जी ने बताया कि क्रान्ति मथुरा से स्वामी विरजानन्द से चलकर स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, भगत फूलसिह तथा स्वामी ओमानन्द जी के रूप मे आई। जिन्होने देश की आजादी में, शिक्षा के क्षेत्र में, वेदप्रचार तथा अन्य सामाजिक बुराइयों को खत्म करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, और आज भी हमें निराश होने की आवश्यकता नहीं। आर्यसमाज के माध्यम से बहुत बड़ा परिवर्तन आएगा। क्रान्तिकारी जी ने भी इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होने वाले नुकसान से लोगों को अवगत कराया। सात बास में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने पर बल दिया। साथ में भविष्य में गांव में सांग न करवाने तथा विवाह शादी में कपड़े पहनकर नाचने पर पाबन्दी लगाने पर जोर दिया। आचार्य जी ने राधा स्वामी व अन्य मजहबों के उनकी ही पुस्तकों के उदाहरण देकर गलत बातों की बखिया उधेड़ी। विशेषकर महिलाओं को पाखण्डों से दूर रहने की अपील की। शास्त्रार्थ के लिए खुला चेलेंज किया।

पं० विश्वामित्र, पं० चिरंजीलाल, स्वामी देवानन्द, महाशय सुमेरसिंह व ईश्वरसिह, महाशय दीपचन्द तथा पं० ईश्वरसिंह तूफान की भजन मण्डलियो के शिक्षाप्रद, प्रेरणादायक समाज सुधार के भजन हुए जिनका लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

एक दिन बलवन्तसिंह के चबूतरे पर तथा दूसरे दिन आदर्श पब्लिक स्कूल में हवन किया गया। तीन महिलाओ महिला विंग की प्रधान लिछमीदेवी, मीनादेवी, सुदेशदेवी तथा मा० दिलबाग, प्रताप-सिह, आजादसिंह, कुलवन्तसिंह जी ने यज्ञोपवीत लिया। श्री महेन्द्रसिंह मलिक समेत ३ नवयुवकों ने शराब न पीने का व्रत लिया। स्वामी सर्वदानन्द व श्री राजकुमार जी ने ईश्वर, जीव, प्रकृति, यज्ञोपवीत व यज्ञ के महत्त्व पर विचार रखे। श्री प्रतापसिंह, बलवन्तसिंह तथा श्रीमती धनपतिदेवी सरपंच उमरा के परिवार ने भोजन आदि की श्रद्धा से सेवा की। गांव वालों ने विद्वानों की भूरि भूरि प्रशंसा की। सभा को १०५० रु० दान दिया गया। पांच सर्वहितकारी के सदस्य बनाए गए।

अतरसिंह आर्य मन्त्री
आर्यसमाज उमरा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक फोन। (७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन। ४०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३   रजि० नं० P/RTK-…   संवत् १, ९६, ०८, ५३, ०९५

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष २२ अंक २१   २८ अप्रैल, १९९५   (वार्षिक शुल्क ५०)   (आजीवन शुल्क ५०१)   विदेश में १० पौंड   एक प्रति १.२५

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (पंजीकृत)

फोन : ४०७२२

सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक

क्रमांक   दिनांक २१ अप्रैल १९९५

साधारण सभा के प्रतिनिधियों की सेवा में
वार्षिक साधारण सभा का एजेण्डा (कार्यसूची)

माननीय प्रतिनिधि महोदय,   नमस्ते

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की वार्षिक साधारण सभा का अधिवेशन १४ मई १९९५ रविवार को प्रातः ११ बजे सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक में होगा। अतः आपसे अनुरोध है कि अपने सुझाव तथा सहयोग देने के लिए समय पर पधारें।

विचारणीय विषय

१. गत वर्ष दिवंगत आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को श्रद्धांजलि।

२. गत सभा अधिवेशन दिनांक १९ दिसम्बर १९९३ की कार्यवाही की सम्पुष्टि।

३. सभा कार्यालय, वेदप्रचार विभाग, सर्वहितकारी साप्ताहिक, शराबबन्दी, आर्य विद्या परिषद्, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, गुरुकुल कुरुक्षेत्र आदि के गत वर्ष के आय-व्यय की सम्पुष्टि तथा वर्ष १९९५-९६ के वार्षिक बजट की स्वीकृति।

४. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार तथा पंजाब सभा के प्रस्तावनानुसार १९७५ में हुए पंजाब सभा के बटवारे पर सर्वसम्मत प्रस्ताव के आधार पर हरयाणा सभा को सांझे कोष से ३५% धनराशि आज तक प्राप्त नहीं हो सकी। इस सम्बन्ध में कई बार सार्वदेशिक सभा तथा पंजाब सभा के अधिकारियों को लिखित तथा मौखिक पंजाब सभा के चार्टर्ड एकाउंटेन्ट द्वारा तैयार की गई सन् १९७४-७५ की बैलेन्स शीट (शेष-पत्र) के आधार पर हरयाणा सभा को ३५% धनराशि ब्याज सहित देने की मांग की गई है, परन्तु इस सम्बन्ध में हरयाणा सभा के साथ न्याय नहीं किया गया। इस समस्या के समाधान के लिए उचित कार्यवाही करने पर विचार।

५. वेदप्रचार के प्रसार, आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ करने, सभा तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं की सम्पत्तियों की सुरक्षा करने तथा मण्डलवार अश्वमेध यज्ञ के आयोजन पर शराब आदि दुर्व्यसन परित्याग करने की प्रतिज्ञा करवाने तथा शराबबन्दी आन्दोलन को प्रभावशाली बनाने पर विचार।

६. अन्य आवश्यक विषय प्रधान जी की अनुमति से।

ज्ञातव्य

१. सभा प्रधान जी को विचारणीय विषयों के क्रम में आवश्यक परिवर्तन करने का अधिकार होगा।

२. जिन आर्यसमाजों ने अभी तक सभा को प्राप्तव्य वेदप्रचार दशांश तथा सर्वहितकारी साप्ताहिक का वार्षिक शुल्क नहीं भेजा है, वे तुरन्त धनादेश (मनीआर्डर) अथवा सभा के उपदेशकों द्वारा भेजने की कृपा करें, जिससे उन्हें प्रवेशपत्र समय पर दिया जा सके।

३. जो प्रतिनिधि महानुभाव अपने सुझाव अधिवेशन में रखना चाहें अथवा किसी प्रकार की जानकारी लेना चाहें, वे कृपया ७ मई ९५ तक लिखित रूप में सभा कार्यालय में भेज देवें।

संलग्न-आय-व्यय विवरण तथा बजट।

भवदीय
वेदव्रत शास्त्री
सभामन्त्री

रामनवमी पर्व के उपलक्ष्य में हवन

दिनांक ९-४-९५ को प्रातः ७ बजे आर्य निवास नलवा (हिसार) में रामनवमी के उपलक्ष्य में सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी द्वारा हवन किया गया। यज्ञ पर स्कूली बच्चों के अतिरिक्त नजदीक की ढाणी से भी लोगों ने भाग लिया। क्रांतिकारी जी ने कहा मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आदर्शों पर चलकर उनके चित्र की नहीं चरित्र की पूजा करनी चाहिये। साथ में बल देकर कहा जब तक हम अपना व्यवहार एवं चरित्र नहीं सुधारेंगे तब तक हमारा स्वयं का सुखी गृहस्थ का जीवन तथा देश का सुधार नहीं हो सकता। हमें अपने पूर्वजों के बताए रास्ते पर चलकर धर्म व राष्ट्र की रक्षा करनी चाहिए। बुराइयों को छोड़कर अच्छाइयों को अपनाना चाहिए।

भलेराम आर्य प्रचारमन्त्री आर्यसमाज नलवा

ग्राम धमाना (हिसार) का उपठेका बन्द

(निज सम्वाददाता द्वारा)

गत दो वर्ष से पूर्व सरपंच श्री सुलतानसिंह यादव ने हांसी के ठेकेदार मांगेराम की मिलीभगत से ग्राम धमाना में प्रथम बार पंचायत प्रस्ताव देकर उपठेका खुलवाया था। गत दिनों सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने आर्यसमाज धमाना के अधिकारियों व नव निर्वाचित सरपंच के भ्राता श्री रामकुमार यादव व सरपंच श्री मुन्शीराम यादव से सम्पर्क किया। परिणामस्वरूप नई पंचायत ने ठेका बन्द करवाने का प्रस्ताव संबंधित अधिकारियों को भेज दिया। तीन अप्रैल १९९५ को ठेकेदार अपना स्टाक उठाकर ले गया। ठेका पूर्ण बन्द हो गया। महिलाओं व सज्जन लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई। इस ठेके पर आए दिन गांव गुआंड के शराबी आते थे और लड़ाई झगड़े होते रहते थे। ठेका उठवाने पर ग्राम पंचायत का श्री क्रांतिकारी ने धन्यवाद किया।

आर्यकुमार सभा रादौर जि० यमुनानगर का चुनाव

ब्र० सौरभ प्रधान, उपप्रधान श्री विजयकुमार नागपाल, मन्त्री श्री अनुराग शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री रवीन्द्रकुमार, खेलमन्त्री श्री आनन्दकुमार।

आर्यसमाज जाजनपुर जिला कैथल

श्री दीदारसिंह प्रधान, श्री भलेराम मन्त्री, श्री खजानसिंह कोषाध्यक्ष।

मेरी केरल यात्रा

गूँज रही ईश्वर की वाणी—[१]

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन अबोहर-१५२११६

बीसवीं सदी के आरम्भ में केरल में पम्पा नदी के तट पर ग्रामीण क्षेत्र में हिन्दू महासम्मेलन करने की परम्परा आरम्भ हुई। शिवरात्रि के पर्व पर यह महोत्सव एक सप्ताह से भी ऊपर चलता है। कभी वेदभक्त तपोनिधि महात्मा चट्टम्पि स्वामी जी ने इसे सम्बोधित किया था। उनका नाम नामी इस सम्मेलन से जुड़ा हुआ है। श्री स्वामी जी की दो पुस्तकों की केरल में चर्चा है। एक 'ख्रिस्तमत खण्डनम्' और दूसरी 'वेदाधिकार निरूपणम्'। इन दोनों पुस्तकों में महर्षि दयानन्द का नामोल्लेख नहीं है परन्तु दोनों पर महर्षि दयानन्द की स्पष्ट छाप है। ये दोनों कृतियां लुप्त हो चुकी थीं। श्री आचार्य नरेन्द्र भूषण जी के परम पुरुषार्थ से आज चट्टम्पि स्वामी जी का नाम केरल में पहले से भी बड़े आदर से लिया जाने लगा है और 'वेदाधिकार निरूपणम्' सैद्धान्तिक पुस्तक की टीका श्री नरेन्द्रभूषण जी ने ही की है। चट्टम्पि स्वामी जी के वेद विषयक विचार वही हैं जो महर्षि दयानन्द जी महाराज व पूर्व ऋषियों के हैं।

यह बात मैंने प्रसंगवश यहां लिखी है। मैं इस महासम्मेलन में पहले भी कई बार भाग ले चुका हूं। इस बार आचार्य नरेन्द्र भूषण जी का आदेश था कि कर्नाटक से स्वामी ब्रह्मदेव जी व आप इस महासम्मेलन में आयें। सब विचारों के हिन्दू इसमें भाग लेते हैं। आचार्य नरेन्द्र भूषण जी को इस **Convention** (परिषद्) की जान माना जाता है। पहले हम इसमें खुलकर महर्षि दयानन्द जी या वैदिक मिशन का नाम लिए बिना अपनी बात कहा करते थे। अब केरल के ओर छोर वैदिक धर्म फैल रहा है। संगठन की ओर हमने ध्यान न दिया। इसके कई कारण थे। हमारी नीति बहुत सफल रही। श्री पं० लेखराम जी का अन्तिम आदेश हमारा प्रेरणास्रोत रहा।

स्वामी विवेकानन्द के कहीं भी मन्दिर नहीं परन्तु सर्वत्र उनके साहित्य का प्रचार है। उनका नाम है। उनके चित्र बिकते व मिलते हैं। देहली में बीसियों स्कूलों के आर्यसमाजी डींग मारते हैं परन्तु किसी भी चित्र विक्रेता के पास देहली में ऋषि का चित्र मुझे न मिला। क्यों? पं० लेखराम के आदेश की उपेक्षा। केरल में लाखों लोगों तक हमारा साहित्य पहुंच चुका है। सब विश्वविद्यालयों, कालेजों व विद्यालयों में हमारा साहित्य पहुंच गया है व निरन्तर जा रहा है। हमारे साहित्य की खूब मांग है। धन का अभाव है नहीं तो सहस्रों पृष्ठ और छप जावें।

लोगों में मैंने आर्य साहित्य के लिए भूख देखी। लोग वेदामृत के प्यासे हैं पैसा चाहिए। आर्यसमाजियों का धन गन्दी नालियों में जा रहा है। यदि श्रेष्ठ गुरुकुलों व वैदिक साहित्य पर धन व शक्ति लगाई होती तो देश का चित्र ही कुछ और होता। मैं बीस फरवरी को तीन बजे महर्षि दयानन्द भवन पहुंचे तो मुझे बताया गया कि शीघ्र स्नान करो आपका साढ़े तीन बजे महासम्मेलन में भाषण है। मैं स्नान करते ही कार में बैठकर पण्डाल में पहुंच गया। चार बजे मेरा व्याख्यान वैदिक धर्म और आधुनिक जगत् विषय पर हुआ। मैंने इसमें ईश्वर, जीव, प्रकृति की नित्यता, वेद के आविर्भाव और वेद के जीवन सन्देश पर प्रकाश डाला।

मेरा व्याख्यान समाप्त होते ही **Hindu Convention** (महा सम्मेलन) के अध्यक्ष श्री उपेन्द्रनाथ जी कुरुप खड़े हुए। उन्होंने धन्यवाद तो बाद मे किया और उठते ही यह घोषणा कर दी कि रात्रि को मेरा एक और व्याख्यान होगा। यह मेरा सम्मान नहीं। यह तो वैदिक धर्म के लिए तिल तिल जलने वाले आचार्य नरेन्द्रभूषण जी दिग्विजय है कि लोग वेद-अमृत का पान करना चाहते हैं।

अगले ही दिन देश के सबसे बड़े दैनिक मलयालम मनोरमा व मातृभूमि आदि राष्ट्रीय पत्रों के प्रथम पृष्ठ पर मेरा व्याख्यान छापा। मनोरमा [illegible] ईसाइयों का [illegible] है। इस दैनिक ने मेरा एक साक्षात्कार भी लिया। वह भी सम्मानपूर्वक प्रकाशित किया। दुर्भाग्य से पश्चिमोत्तर सरकार के [illegible] टोले ने उत्तर भारत में आर्यसमाज का ऐसा अवमूल्यन कर दिया है कि आर्यसमाजी लीडर को प्रेस महत्त्व ही नहीं देता।

केरल में प्रति सप्ताह प्रतिमास कई कई बार श्री नरेन्द्रभूषण जी के वक्तव्य, भाषण व लेख पत्रों में आते ही रहते हैं। आज केरल में कौन ऐसा अभागा होगा जिसने नरेन्द्र जी का नाम नहीं सुना होगा। उनकी तो छोड़िये मेरे पहुंचते ही कुछ ही मिनटों में एक देवी मुझे मिलने आई। उसने श्रद्धापूर्वक नमस्ते करते हुए अंग्रेजी में कहा, यद्यपि आपसे कभी भेंट नहीं हुई परन्तु आपका चित्र देखा है इसलिए पहचानती हूं कि आप प्रो० 'जिज्ञासु' हैं। मुझे आशीर्वाद दीजिए।

यह युवती अमरीकन है। जोन **Joan** नाम की यह देवी विशुद्ध भारतीय वेशभूषा में रहती है। दृढ़ शाकाहारी है। जन्मभूमि, मातृभूमि आदि कई दैनिक पत्रों के माननीय संवाददाता मुझे मिले। मत समझें कि केरल में आज केवल नरेन्द्रभूषण ही वैदिक धर्म का झण्डा उठाये हुए हैं। हमारे पास अब अनेक युवक हैं। सब सुशिक्षित हैं। विधर्मी भी खिंच रहे हैं। हम पचास सहस्र से ऊपर विधर्मियों को आर्य धर्म की दीक्षा दे चुके हैं। सैकड़ों विदेशियों को शुद्ध किया है। हम अखबारों में यह ढोल नहीं पीटा करते।

हमारे पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ही हमारे एकमेव नेता हैं। परमेश्वर हमारा रक्षक है। हमारे स्वामी जी की यही आज्ञा है कि शुद्धि का काम चुपचाप ही किया करो। केरल में एक विशेष परिवर्तन यह हुआ है कि अब प्रायः सब वक्ता वेद की चर्चा करते हैं। पहले केवल वेदान्त का ही नाम लिया जाता था। अब तो वयोवृद्ध योगी महात्मा श्रीधर जी के आश्रम में मुझे उनकी एक कृति का विमोचन करने को कहा गया तो साथ ही यह आज्ञा दी गई कि वेद-वेदान्त व उपनिषद् विषय पर भाषण देना है। मैंने वेद की नित्यता, वेद ही धर्म का मूल तथा षड्दर्शनों की वैदिकता को लेकर श्रोताओं के सामने ईश्वर का वेदोक्त स्वरूप पर प्रकाश डाला। उपनिषदों के प्रमाण देकर वेद की महिमा बताई।

एक हर्ष का विषय है कि दलित भाइयों ने केरल में एक नया संगठन बनाया है जो वेद के प्रति श्रद्धा रखता है। ये भाई जातिवाद के विष से दूर हैं। मेरे होते ही उनके एक विराट् सम्मेलन में आचार्य नरेन्द्र भूषण जी का व्याख्यान हुआ। मुझे गाड़ी पकड़नी थी सो मैं इस सभा में व्याख्यान न दे पाया।

केरल में हमारे कार्यालय में बड़े-बड़े सम्पादक, पत्रकार व संवाददाता तो आते ही हैं, राष्ट्रीय पत्रों के टेलीफोन भी आते ही रहते हैं। हिन्दुओं से संबंधित या धर्म विषय में कोई भी विवाद पत्रों में आये तो उसको निपटाने के लिये पं० लेखराम के विप्र योद्धा नरेन्द्र भूषण जी की व्यवस्था ही अन्तिम मानी जाती है। सब पत्र उनसे व्यवस्था मांगते हैं। आर्यसमाज के ठेकेदार जो जातिवाद, प्रान्तवाद का झण्डा उठाए हुए हैं और आप्त पुरुष स्वामी सर्वानन्द जी महाराज पर भी कीचड़ उछालकर स्वयं को धन्य मानते हैं। वे स्वामी जी के प्यारे चरणानुरागी के Image (प्रतिष्ठा) से अपनी तुलना तो करें। तनिक शीशा तो देखें।

यह मत समझें कि केवल मलयालम दैनिक ही आचार्य नरेन्द्र भूषण जी को पूछते हैं। Indian Express व The Hindu दैनिक के भी कई अंक मेरे पास हैं। स्वामी विद्यानन्द जी से पूछ प्रेस, दूरदर्शन उनका कितना मान करता है।

वे दूरदर्शन व आकाशवाणी वालों की उपासना नहीं करते। मंत्रियों के चक्कर नहीं काटते परन्तु आकाशवाणी व दूरदर्शन में केरलीय जनता उनके मुख से जीवन सन्देश सुनती है। सारे केरल में प्रभु की वाणी वेद गूंज रही है, यह देखकर मेरा रोम रोम पुलकित हो गया। आचार्य नरेन्द्र भूषण लीडरों के झगड़ों, कचेहरियों व मुकदमों से दूर रहे। उनका जीवन सफल हो गया है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

जि० सिरसा में ठेकों की नीलामी पर भारी विरोध प्रदर्शन

(निज संवाददाता द्वारा)

१२ मार्च १९९५ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कर्मचारियों का जत्था सायंकाल चौ० सुबेसिंह पूर्व सभामन्त्री जी के साथ सिरसा आर्यसमाज मन्दिर में पहुंचा। वहां आर्य विद्यालय एवं डा० सांगवान आदि से श्री केदारसिंह आर्य ने सम्पर्क किया। प्रातः सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी भी सिरसा पहुंच गए। १२ मार्च को सायं आर्यसमाज मन्दिर सिरसा में चौ० सुबेसिंह जी की अध्यक्षता में एक मीटिंग दोनों समाजों के अधिकारियों व सदस्यों की हुई, जिसमें विचार-विमर्श के बाद संयुक्त रूप से वेदप्रचार हेतु एक वेद प्रचार मण्डल सिरसा का गठन किया गया। सर्वसम्मति से पं० श्रीराम शर्मा को मण्डल का प्रधान चुना गया। १० हजार रुपये पुस्तकालय हेतु व आर्ष ग्रन्थों का साहित्य भी तुरन्त लाने की स्वीकृति दी गई। एक हजार रुपये प्रति मास वेदप्रचार मण्डल सिरसा को सभा की ओर से देने की योजना भी चौ० सुबेसिंह जी ने बताई। स्वामी ओमानन्द जी ने इसकी स्वीकृति दे दी।

१३ मार्च को प्रातः ८ बजे सभा का शराबबन्दी बैनर लगाकर आर्य विद्यालय के छात्रों तथा अन्य प्रदर्शनकारियों का नेतृत्व करते हुए डा० रणवीरसिंह सांगवान एवं चौ० सुबेसिंह एक जुलूस के रूप में चले। नगर की गलियों में शराबबन्दी नारे जोश के साथ लगाए जा रहे थे। जुलूस जब आर्यसमाज मन्दिर के सामने पहुंचा तब सभा प्रधान तपोनिष्ठ संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी ने गुरुकुल झज्जर के छात्रों के साथ सम्मिलित होकर जुलूस का नेतृत्व किया। माईक को श्री क्रान्तिकारी जी ने संभाला। जोश के साथ शराब के ठेके बन्द करो, आर्यसमाज अमर रहे, आर्ई फौज दयानन्द वाली अब रस्ता कर दो खाली आदि नारे लगाते हुए निलामी स्थल की ओर बढ़ रहे थे। रैस्ट हाउस के नजदीक जहां ठेकेदार उपस्थित थे वहां पुलिस ने रोक लिया और तुरन्त १४४ की धारा लगा दी गई। वहां जुलूस शराबबन्दी सम्मेलन में बदल गया।

सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द जी ने जनता का आह्वान करते हुए कहा कि शराब सब पापों की जड़ है। इससे भ्रष्टाचार आदि सब बुराइयाँ फलती हैं। स्वामी जी ने इतिहास के उदाहरण देकर बताया कि यादववंशी, कुरुवंशी सब जुआ व शराब से नष्ट हो गए। तुम्हारी तो औकात ही क्या है। दूसरी ओर सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि यह भजनलाल सरकार शराब जुआ सब बुराइयों को बढ़ावा दे रही है। भजनलाल को आजकल बिश्नोई रत्न की उपाधि दे रखी है, परन्तु यह कार्य सारे उल्टे कर रहा है। अपने दामाद अनूप बिश्नोई को शराब की फैक्ट्री लगाकर शराब की नदियां बहा रहा है। उन्होंने कहा कि हम आर्यसमाजियों ने ५० हजार लोगों ने जेल में जाकर हरयाणा बनवाया। इसी कारण आज भजनलाल कुर्सी पर बैठा है। सरकार को चाहिए कि हरयाणा प्रान्त में शराब बन्द करे क्योंकि यह ऋषि मुनियों की भूमि है।

चौ० सुबेसिंह ने सुझाव दिया कि सरकार जिस गांव में ठेका खोलने का प्रस्ताव दे वहीं ठेका खोले अन्यत्र नहीं। आज ठेके की नीलामी कर सरकार तथा प्रशासन सरे आम कानून का उल्लंघन कर रही है। डा० सांगवान ने कहा आर्यसमाज तोड़ फोड़ में विश्वास नहीं रखता। हमारा प्रदर्शन प्रजातन्त्र तरीके से शान्तिपूर्वक है। ग्रामीण जनता शराब से तंग है। सरकार को परोपकारी मांग मान लेनी चाहिए। पंचायतों को लालच व दबाव न देवें। श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने कहा कि शराब से किसान व मजदूर बुरी तरह बरबाद हो रहा है। आर्यसमाज १० वर्ष से शराबबन्दी के लिए सघर्ष कर रहा है और हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी की माग कर रहा है। सरकार को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

सभा उपदेशक श्री अनिलकुमार आर्य, पं० श्रीराम शर्मा मुख्याधिष्ठाता वेदप्रचार मण्डल सिरसा पूर्व बी. डी. ओ. श्री हेतराम आर्य ने भी विचार रखे। सत्यपाल आर्य के शराबबन्दी गीत हुए। स्वामी ओमानन्द जी ने उपायुक्त महोदय को ज्ञापन दिया। उपायुक्त महोदय ने सभा की माग को सरकार तक पहुंचाने का आश्वासन दिया।

उसके बाद आर्यसमाज मन्दिर में स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता में बैठक हुई। जिसमें दोनों आर्यसमाजों के अधिकारी एवं कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। स्वामी जी ने मिलकर कार्य करने का आश्वासन दिया। डा० रणवीरसिंह सांगवान ने आर्यसमाज सिरसा की ओर से शराबबन्दी सभा को ११०० रु० दान दिया। आर्यसमाज मन्दिर सिरसा के प्रधान श्री उदेयराम आर्य ने भी ५०० रु० सभा को दान दिया और श्री उदेयराम जी ने स्वामी जी को एक ऋषि बताया और उनके नेतृत्व में आर्यसमाज का कार्य करने का वचन दिया। श्री क्रान्तिकारी जी ने सभा द्वारा १ मार्च से १३ मार्च तक प्रत्येक जिला में आर्य जनता के सहयोग से स्वामी ओमानन्द जी के नेतृत्व में सफल विरोध प्रदर्शन किए हैं। वास्तव में स्वामी ओमानन्द जी वर्तमान में स्वामी दयानन्द जी तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी का अधूरा कार्य पूरा कर रहे हैं। चौ० सुबेसिंह जी ने भी बताया कि विद्यार्थीकाल में एक शिविर के माध्यम से स्वामी ओमानन्द जी का सम्पर्क हुआ और अब ३ वर्ष से इनके साथ मिलकर यह शराबबन्दी का कार्य कर रहा हूँ।

स्वामी ओमानन्द जी ने अन्त में कहा—सिरसा आर्यसमाज का गढ़ रहा है, साधन सम्पन्न क्षेत्र है। कार्य करने वालों की कमी है। आज आपने एकता का परिचय दिया है। तगड़े होकर जुटो। शराब हरयाणा में अवश्य बन्द होगी, और अन्त में आर्यों की जीत होगी। डा० सांगवान ने स्वामी जी एवं अन्य विद्वानों का धन्यवाद किया।

प्रदर्शन में सभा उपदेशक श्री अर्जुनदेव, श्री प्रकाशानन्द सिरसा श्री देवसीराम आर्य, श्री जगदीश सिवर, प्रधान आर्यसमाज मन्दिर सिरसा, मन्त्री श्री राजेन्द्र आर्य, इन्द्रपाल आर्य, रामजस आर्य, स्वामी देवानन्द, श्री धर्मवीर शास्त्री, श्री मनफूलसिंह, बालचन्द आर्य, प्रि० दलीपसिंह जी, श्री रामगोपाल तथा आर्य विद्यालय के अध्यापक व छात्रों का विशेष योगदान रहा। श्री केदारसिंह आर्य के प्रयत्न से सिरसा के ग्रामों से सर्वहितकारी के ४० नए सदस्य बनाये गये।

हरियाणा युवक परिषद्

हरयाणा आर्य युवक परिषद् (रजि०) शाखा जिला रोहतक के तत्त्वावधान में पुरुषोत्तम वर्मा की माता श्रीमती शान्तिदेवी तथा उनकी विधवा पत्नी श्रीमती गीतादेवी को सम्मानित किया गया। उन्हें सम्मानित करने के लिए प्रदेशाध्यक्ष श्री शिवराम आर्य उनके पैतृक गांव लाखन-माजरा में आए।

श्री दहिया ने बताया कि श्री पुरुषोत्तम वर्मा गत वर्ष फरवरी माह में रेल में डाकुओं से लड़ते हुए शहीद हो गए थे। उसने रेल को लूटने से भी बचाया था। इसमें सेकड़ों आर्य युवकों ने भाग लिया।

जबरदस्ती शराब का ठेका खोलने का विरोध

गांव जुई में शराब का ठेका धरना आदि देकर उठवाया था। अब सरपंच और ठेकेदार मिलीभगत से ठेका खोलने के लिए आमादा हैं जिस पर गांव के लोगों ने काफी रोष प्रकट किया है। अब तक किसी ने भी उनको ठेका रखने के लिए जगह नहीं दी है। गाव वाले ए. डी. सी. से मिल चुके हैं। उसके बावजूद भी सरकार ठेका खोलने पर उतारू है।

बाबूलाल आर्य जुई (भिवानी)

गुरुकुल बचाओ संघर्ष समिति

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरद्वार की गत ९ अप्रैल ९५ की घटनाओं से उद्वेलित हुए हरद्वार क्षेत्र के आर्यसमाजियों की एक हंगामी बैठक आर्यसमाज आर्यनगर परिसर में श्री अर्जुनदेव जी पूर्व प्रिंसिपल ज्वालापुर इन्टर कालिज, एवं अधिष्ठाता तथा पूर्व कुलसचिव गुरुकुल कांगड़ी की अध्यक्षता में हुई। यह बैठक क्षेत्रीय आर्य परिषद् हरद्वार ने बुलाई थी। समाचार-पत्रों में छपी रिपोर्ट बैठक के संयोजक तथा आर्यसमाज हरद्वार के प्रबन्धक डा० वीरेन्द्रकुमार जी पंवार ने पढ़कर सुनाई और उपस्थित ग्यारह संस्थाओं के प्रतिनिधियों और सैंकड़ों विद्यार्थियों ने अपने मान्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती प्रधान परोपकारिणी सभा अजमेर एवं कुलपति और कुलाधिपतियों के साथ की गई मारपीट पर तीव्र आक्रोश प्रकट किया गया। बैठक में सीटने की दृढ़ता पर उन्हें बधाई दी गई कि वहां प्रदर्शित गुण्डागीरी के बावजूद वे गुरुकुल कांगड़ी में सहशिक्षा की मांग को ठुकराते रहे। वास्तव में गुरुकुल में नियुक्त कुछ गैर आर्यसमाजी और पौराणिक प्राध्यापक योजनाबद्ध रूप से गुरुकुलीय आर्यसमाजी इयन्ता को नष्ट करने का सुनियोजित षड्यन्त्र बनाए हुए हैं और इस योजना को विफल करने का बैठक में सर्वसम्मति से संकल्प लिया गया। घोषणा की गई कि गुरुकुल भूमि में कभी भी सहशिक्षा नहीं होने दी जाएगी। यह दायित्व हरद्वार के नगरनिवासियों का है कि वे अपनी कन्याओं के लिए कालिज बनायें और चलायें और उनमें हम भी सहयोग देंगे। परन्तु घेराव और गुण्डागर्दी की धौंस में हमें मजबूर नहीं किया जा सकता कि हम २० करोड़ रुपया अपनी शक्ति से इकट्ठा करके ऐसा कन्या कालिज खोलें। बैठक में मांग की गई कि शिक्षक संघ इस मुद्दे को जो महज प्रबन्धकों पर सतत दबाव रखने के लिए चलाया जा रहा है और उसके जो चार प्राध्यापक जो मारपीट की योजना में प्रमुख थे, उनकी अविलम्ब सेवा समाप्त की जाये। बैठक में यह भी विचार उमड़ा कि राजनैतिक पार्टियां गुरुकुल कांगड़ी पर ललचाई दृष्टि न डालें। उनका क्षेत्र अलग है और शिक्षा का क्षेत्र अलग है तथा गुरुकुल की आर्य सामाजिक धारणा पर कोई आघात सहन नहीं किया जायेगा। आर्यसमाज द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों के नष्ट करने हेतु कोई समझौता नहीं किया जा सकेगा, चाहे हमें कितना ही बलिदान करना पड़े।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए 'गुरुकुल बचाओ संघर्ष समिति' का गठन किया गया। जिसमें इक्कीस सदस्यों वाली समिति गठित की गई। जिसके संरक्षक डा० रामेश्वरदयाल गुप्त पी-एच डी. अध्यक्ष आर्यसमाज के पुराने महारथी और गुरुकुल कांगड़ी को संकट के दिनों में बचाने वाले श्री अर्जुनदेव जी चुने गये। डा० वीरेन्द्र पंवार एम. ए आयुर्वेद भास्कर को समिति का महामन्त्री चुना गया। डा० सत्यव्रत राजेश, वेदव्रत शास्त्री, ब्र० कर्मवीर, डा० प्रमोद गोयल, श्री देशकुमार चन्दवानी, डा० रघुनन्दनसिंह, श्रीमती सन्तोष रंगन, पण्डिता उमा भारती, श्यामसिंह कटारपुर, प्रकाशचन्द, स्वामी भजनानन्द, छात्र संघ अध्यक्ष यशवन्तसिंह, वैदिक शोध संस्थान अध्यक्ष डा० सत्यव्रत निगमालंकार, ब्र० सत्यदेव वेदालंकार, डा० हरिश्चन्द्र शास्त्री, डा० राजेन्द्र बालियान इत्यादि सदस्यों को बैठक ने सर्वसम्मति से चुना। इस समिति का डेपुटेशन कुलपति आदि से मिलेगा और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को अपनी आख्या भेजेगा। इसकी आगामी बैठक १६ अप्रल ९५ को साय ४ बजे अध्यक्ष जी की कोठी आर्यनगर में हुई, जिसमें भारी प्रदर्शन आदि की रूपरेखा तयार की गई।

५४६, आर्यनगर
७-ज्वालापुर (हरद्वार)

मन्त्री
वीरेन्द्र पंवार

आर्यसमाज [नई मण्डी] रेवाड़ी का चुनाव

प्रधान पं० नाथूराम शर्मा, उपप्रधान मा० [illegible] आर्य, मन्त्री श्री रामकुमार आर्य, उपमन्त्री श्री मनोहरलाल, कोषाध्यक्ष श्री सुखराम आर्य, पुस्तकाध्यक्ष श्रीमती सुमित्रादेवी।

आर्यसमाज [illegible] डा० सुठाना जि. महेन्द्रगढ़

प्रधान श्री जगतराम, उपप्रधान श्रीगूगनसिंह, मन्त्री श्री धर्मदत्त, उपमन्त्री श्री सुभाष, कोषाध्यक्ष श्री वीरेन्द्र सुपुत्र श्री सुरेन्द्र।

श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर में प्रवेश

श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर यमुनानगर में चार वर्षीय उपदेशक के पाठ्यक्रम में प्रवेश आरम्भ है। प्रवेशार्थी की न्यूनतम योग्यता कक्षा दशम तथा अधिकतम बी. ए. वा तत्सम है।

प्रवेश शुल्क मात्र दो सौ रुपया है। शेष सभी प्रकार का व्यय संस्था वहन करेगी। प्रवेशार्थी ३० जून से पूर्व श्री प्रधानाचार्य से पत्र-व्यवहार करें।

आचार्य वागीश्वर, प्रधानाचार्य
श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय
शादीपुर यमुनानगर

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद में प्रवेश प्रारम्भ

आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित

गुरुकुल का संक्षिप्त परिचय

१. संस्थापक—अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी।
२. प्रवेश समय—१ अप्रैल से ३० जून तक।
३. प्रवेश योग्यता—तीसरी से कक्षा दसवीं तक।
४. मान्यता—गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय एवं आर्ष पाठविधि (महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक)।
५. विषय—वेद, उपनिषद्, व्याकरण, संस्कृत, गणित, विज्ञान, अंग्रेजी, हिन्दी, सामाजिक, धर्मशिक्षा आदि।
६. शुल्क—प्रवेश शुल्क ५०० रुपये।
भोजन शुल्क ३०० रुपये।
शिक्षा तथा छात्रावास व्यवस्था निःशुल्क।
७. वेशभूषा—२ कुर्ते, २ पायजामे, २ लंगोट, १ तौलिया, बिस्तर, ऋतु अनुकूल मच्छरदानी एवं भोजन हेतु १ थाली, २ कटोरी, १ गिलास, १ लोटा, १ चम्मच, १ ट्रंक।
८. क्रीडा वेशभूषा—एक सफेद शर्ट, खाकी नेकर, सेण्डो बनियान, जूता (पी. टी. शूज) सफेद जुराब।
९. आचार्य वर्ग—प्रत्येक विषय के अध्यापन हेतु सुयोग्य अनुभवी एवं प्रशिक्षित अध्यापकों की व्यवस्था है जो रात्री को ट्यूशन के रूप में भी निःशुल्क पढ़ाते हैं।
१०. गुरुकुल में छात्रावास, यज्ञशाला, पुस्तकालय, व्यायामशाला तथा संग्रहालय आदि की व्यवस्था है। यहां छात्रों के रहन-सहन, आचार व्यवहार, स्वास्थ्य तथा चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाता है तथा प्रारम्भिक शिक्षा के साथ छात्रों के सर्वाङ्गीण विकास पर बल दिया जाता है।

अतः अपने बालकों को सदाचारी तथा सुयोग्य बनाने के लिए गुरुकुल में प्रवेश करवाकर उनका भविष्य उज्ज्वल बनायें।

मार्ग निर्देश—यह गुरुकुल भारत की राजधानी दिल्ली एवं सूरजकुण्ड के समीप दिल्ली से मथुरा जानेवाली सड़क पर अरावली पर्वत के सुरम्य परिवेश तथा पाण्डवों की प्राचीन राजधानी इन्द्रप्रस्थ के भू-भाग में अवस्थित है। दिल्ली-मथुरा मार्ग पर सराय ख्वाजा (फरीदाबाद) बस अड्डे पर उतरकर अनंगपुर ग्राम की ओर रेलवे फाटक पार करते ही सीधे गुरुकुल आ सकते हैं।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद) डाकघर नई दिल्ली-४४
फोन: [illegible]

आओ आर्यसमाज चलें

आज रविवार है। आज समाज में साप्ताहिक सत्संग होता है। वहां संध्या हवन के बाद भजन उपदेश होते हैं। जीवनोपयोगी बातें सुनाई बताई जाती हैं।

एक भाई ने कहा, टीवी पर सीरियल शुरू होने वाला है। उसे देखकर कहीं जाऊंगा। दूसरे भाई ने तो हद कर दी। उसने कहा, आर्यसमाज में हवन ही तो होता है उसे हम घर कर लेते हैं। तीसरे भाई ने कहा, दुकान पर अकेला हूं, इसे छोड़कर कैसे जाऊं। पता नहीं ग्राहक कब आ जाएगा। मैंने कहा ग्राहक और मौत का इन्तजार मत करो। ये दोनों अपने समय पर ही आते हैं। सब कुछ यहीं रह जायेगा। जो दौलत आपके साथ जायगी उसको जमा करो। यह सब आर्यसमाज के सदस्यों का हाल है।

मैं आर्यसमाज में लगभग ८-३० पर पहुंचा। यह देखकर बड़ा शोक हुआ कि साप्ताहिक सत्संग में यज्ञ करने के लिए चार आसनों पर चार व्यक्ति भी नहीं हैं। मैंने पूछा प्रधान/मन्त्री कहां रहते हैं, कभी आते हैं या नहीं। अजी उन्हें तो सिर्फ एक ही दिन फुरसत मिलती है जब वार्षिक चुनाव होता है। शान्ति पाठ के बाद जय बोल रहे हैं 'आर्य समाज अमर रहे'। यदि यही हालत रही तो आर्यसमाज कैसे अमर रहेगा?

आर्यसमाज पर ओ३म् का झण्डा है ही नहीं, है तो फटा पुराना लटक रहा है। जय बोल रहे हैं "ओ३म् का झण्डा ऊंचा रहे"। जब तक आर्यसमाज के प्रत्येक सदस्य के घर पर ओ३म् का ध्वज नहीं लगेगा तब तक जयघोष करना केवल प्रदर्शन है।

आर्यसमाज के कई वर्षों से वेद प्रचार के लिए कोई वार्षिक उत्सव नहीं हुआ और नारा लगाते रहे हैं "वेद की ज्योति जलती रहे"। ऐसी स्थिति में वेद की ज्योति जलेगी या बुझेगी। अब आर्यसमाज वेद प्रचार नहीं करता, कमाने के लिये, स्कूल खोलता है। स्कूलों में भी सहशिक्षा चालू करके दयानन्द मिशन की हत्या करता है। जय बोलते हैं "स्वामी दयानन्द की जय हो"। दयानन्द के नाम पर दुकानें खोलकर व्यापार कर रहे हैं। आर्यसमाज के द्वारा चलाये जा रहे स्कूल के छात्रों से मैंने पूछा, हाथ खड़ा करो जो अंडा खाते हैं। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ जब सब ने हाथ उठा दिया। इन बच्चों को कौन बतायेगा कि हमें क्या खाना चाहिये क्या नहीं।

जिस आर्यसमाज में अयोग्य अधिकारी हों जो यज्ञोपवीत पहनना तो दूर रहा, कभी संध्या हवन नहीं करते, जिनके घरों में महिलाएं मूर्तियों की पूजा करती हैं, उस आर्यसमाज को क्या गति होगी और कैसे प्रगति होगी। बहुत से सदस्यों का घर आर्यसमाज के पास है फिर भी सत्संग में नहीं आते और चुनाव के दिन पद प्राप्त करने के लिए लड़ते झगड़ते हैं। नियम उपनियमों की अवहेलना करके वोटों के लिए सदस्यों की संख्या बना रखी है, आचरण वैदिक मन्यताओं के विरुद्ध है।

आर्यसमाज का उद्देश्य स्वामी दयानन्द जी ने आर्यसमाज के छठे नियम में स्पष्ट घोषित कर दिया है कि संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। पहले अपने शरीर को स्वस्थ बनाओ फिर आत्मज्ञान प्राप्त करके आत्मा को बलवान् बनाओ, तब समाज की उन्नति कर सकोगे। केवल जयघोष बोलते रहने से कुछ नहीं होगा। आज आर्यसमाज का उद्देश्य अग्नि में घी सामग्री भस्म करने तक ही सीमित होकर रह गया है। देवपूजा, संगतिकरण और दान और यज्ञ की भावना है उसे भूल गया है। जहां आर्यसमाज के फाटक [illegible] हड़ताल की सूचना दे रहे हों वहां संसार का उपकार तो क्या अपना भी नहीं होगा। कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम् से पहले [illegible] स्वयं आर्यम् करना होगा। तब 'वैदिक धर्म की जय' [illegible]।

दर्द दिल कहा तक कहूँ कुछ कहा नही जाता।
आंखे भर आई, गला रुक गया, अब सहा नही जाता।।

देवराज आर्यमित्र
आदर्शनगर-डो. बल्लभगढ़-१२१००४

संघर्ष के बाद नलवा (हिसार) का ठेका बन्द

मंगाली के ठेकेदार ने जिला प्रशासन से मिलकर ३१ मार्च को ठेके से अपना स्टाक उठाने को बजाय ४०-४५ पेटी और लेकर रख ली। सभा उपदेशक एवं संयोजक शराबबन्दी समिति जिला हिसार के श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने रात्रि को गांव नलवा जाकर सरपंच से सम्पर्क किया। १ अप्रैल को प्रातः ६ बजे पुनः ग्राम पंचायत व प्रमुख लोगों से सम्पर्क कर गांव इकट्ठा किया। ४०-५० लोगों को साथ लेकर बस अड्डे पर आये जहां ठेकेदार ठेका खोलकर शराब बेच रहा था। ठेकेदार के कारिन्दों को बाहर निकालकर आर्य जी ने सरपंच श्री कृष्णकुमार से ठेके को पंचायत का ताला लगवा दिया।

उसके बाद एक शिष्टमण्डल हिसार उपायुक्त महोदय से मिला और स्टाक उठवाने बारे ज्ञापन दिया। आश्वासन के बावजूद प्रशासन ने कोई ध्यान नहीं दिया। ठेके पर ग्राम पंचायत व आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं का धरना जारी रहा। इसी दौरान ठेकेदार ने पंचायत को लालच देने की बात कही। लेकिन सरपंच श्री कृष्णकुमार ने साफ इन्कार कर दिया। कह दिया कि मैं किसी भी कीमत पर शिक्षण संस्थाओं के बीच गांव नलवा में ठेका नहीं खुलने दूंगा। तत्पश्चात् ठेकेदार ने धमकी दी कि मैं पुलिस बुलाकर ताला खोलूंगा। तब श्री क्रान्तिकारी जी व सरपंच साहब ने साफ कह दिया कि जा जल्दी तेरी पुलिस ले आ हम देखते हैं किस प्रकार ठेका खोलेगा। हम किसी भी कीमत पर ठेका नहीं चलने देंगे। न हम शराब पीयेंगे न शराब पीने देंगे।

परिणामस्वरूप ८ अप्रैल को सायं ६ बजे ठेकेदार दो जीप लेकर आया। कहा चाबी दे दो मैं अपना स्टाक उठा ले जाऊंगा। नलवा में ठेका नहीं खोलूंगा। इस प्रकार जन सगठन के आगे सरकार व प्रशासन तथा ठेकेदार को घुटने टेकने पड़े। यह धर्म को अधर्म पर जीत हुई है। ८ दिन के बड़े संघर्ष के बाद नलवा गांव का ठेका पूर्ण बन्द हो गया है। —भलेराम आर्य प्रचारमन्त्री, आर्यसमाज नलवा

ढूढ़ियावाली में शराब ठेका ३० तक बन्द करने का अल्टीमेटम

सिरसा, २२ अप्रैल (जनसत्ता)। हरियाणा शराब विरोधी मोर्चा के जिला प्रधान व हविपा नेता ओमप्रकाश गोदारा ने कहा है कि अगर जिला प्रशासन ने जिला के गांव ढूढ़ियावाली में खोले गए शराब के उपठेके को बन्द नहीं किया तो एक मई को शराब विरोधी मोर्चा के कार्यकर्ता उस ठेके को तालाबंदी कर देंगे।

यहां जारी एक बयान में ओमप्रकाश गोदारा ने बताया कि ढूढ़ियावाली गांव की पंचायत ने २३ फरवरी, १९९३ को ही सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास करके सरकार के पास भेज दिया था कि पंचायत इस गांव में शराब का कोई ठेका नहीं खुलवाना चाहती। मगर इसके बावजूद इस गांव में शराब एक उपठेका खोल दिया गया। इससे इस गांव के ज्यादातर लोगों में प्रशासन व सरकार के प्रति रोष है।

गोदारा ने बताया कि शराब के इस उपठेके को बन्द करने के लिए बीते सप्ताह के दौरान हविपा नेता हरीचन्द मेहरा' ठाकुर बहादुरसिंह, ओमप्रकाश गोदारा, जयसिंह व प्रह्लादसिंह और रामकुमार खैरका के नेतृत्व में सैकड़ों गांववासियों ने जिला के उपायुक्त एल.सी. गुप्ता से भेंट की थी। मगर अभी तक इस गांव में शराब का उपठेका बन्द नहीं किया गया है।

उन्होंने चेतावनी दी है कि अगर ३० अप्रैल तक यह ठेका बन्द न किया गया तो एक मई को शराब विरोधी मोर्चा के कार्यकर्ता खुद ठेके को बन्द कर देंगे।

पर्यावरण शुद्धि में यज्ञों का चमत्कारी योगदान

देव संस्कृति दिग्विजय अभियान शांतिकुञ्ज हरद्वार के तत्वावधान में आगामी नवम्बर १९९५ में अश्वमेध महायज्ञ आंवलखेड़ा (आगरा) मे ससम्मान होगा। इस महायज्ञ की मुख्य विशेषता होगी कि यज्ञ में प्रचलित सभी कर्मकाण्डों, वैदिक मन्त्रों, पूजन-सामग्रियों के साथ-साथ वायु, मिट्टी, पानी, सूक्ष्म जीवाणुओं, पौधों एव मानवीय मन पर पड़ने वाले प्रभावों का वैज्ञानिक विश्लेषणों के लिए भारत सरकार के उच्च अधिकारियों एवं विश्व के शीर्षस्थ वैज्ञानिकों से सम्पर्क किया जा रहा है। इस आशय की जानकारी शांतिकुंज के व्यवस्थापक श्री बलरामसिंह परिहार ने दी है।

श्री परिहार ने बताया कि गत फरवरी माह में उ. प्र. के गोरखपुर शहर में आयोजित अश्वमेध यज्ञ का वैज्ञानिक विश्लेषण 'इन्वायर मेंटल एंड टैक्निकल कन्सलटेंट्स' नामक एक संस्था ने किया था। वैज्ञानिक विश्लेषण का परिणाम आश्चर्यचकित कर देने वाला है। उपरोक्त संस्था के निदेशक डा० मनोज गर्ग ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि अश्वमेध यज्ञ के पहले गोरखपुर क्षेत्र में हवा में व्याप्त सल्फर डाइआक्साइड की मात्रा ३.०३६ माइक्रोग्राम थी जो यज्ञ समाप्ति पर केवल ०.८ माइक्रोग्राम रह गयी है। बताया जाता है कि सल्फर डाइआक्साइड का मनुष्य के शरीर पर बहुत खतरनाक प्रभाव पड़ता है तथा फेफड़े के कैंसर का एक प्रमुख कारण माना जाता है। इसी प्रकार यज्ञ से पूर्व हवा मे व्याप्त नाइट्स आक्साईड की मात्रा १.१६ माइक्रो ग्राम से घटकर १.०२ माइक्रो ग्राम हो गई है। यज्ञ से शहर के अन्दर कीटाणु तथा विषाणुओं की संख्या मे भी कमी आई है। यज्ञ से पहले शहर के प्रति सौ एम एल. पानी मे साढ़े चार हजार बैक्टीरिया पाये जाते थे। जबकि यज्ञ के पश्चात् अब प्रति सौ एम. एल. पानी में मात्र बारह सौ बैक्टीरिया पाये जा रहे हैं। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि पानी की कठोरता एवं इसमे व्याप्त आइरन एवं फ्लोराइड में भी यज्ञ द्वारा कमी लाई जा सकती है। मिट्टी और यज्ञावशेष सम्बन्धी जांच निष्कर्षों की प्रतीक्षा की जा रही है।

गोरखपुर अश्वमेध यज्ञ के वैज्ञानिक विश्लेषण एवं उसके लोक कल्याणकारी परिणाम से प्रभावित होकर अश्वमेध के आयोजकों ने भारत सरकार के पर्यावरण मन्त्री श्री कमलनाथ से आग्रह किया है कि आगामी नवम्बर माह में आयोजित आवलखेड़ा अश्वमेध यज्ञ का सभी प्रकार से वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाये तथा भारतीय यज्ञीय परंपरा से होने वाले लाभों से विश्वमानस को परिचित कराया जाये। देव संस्कृति दिग्विजय अभियान शातिकुञ्ज हरद्वार के तत्वावधान में आयोजित पच्चीस अश्वमेध यज्ञों के देशव्यापी सत्परिणाम हुए हैं।

इस श्रृंखला मे एक विशाल १०८-कुण्डीय गायत्री महायज्ञ २९ अप्रैल से ३ मई तक लुधियाना में भारत नगर चौक स्थित पंजाबी भवन के पास के मैदान में हो रहा है। २९ अप्रैल को अपराह्न दो बजे कलशयात्रा से इस यज्ञ का शुभारम्भ होगा। बाद में देवपूजन अग्नि स्थापन, यज्ञ, सत्संग, प्रवचन, संगीत आदि के कार्यक्रमों के साथ विभिन्न सरकार सम्पन्न होंगे तथा बुधवार ३ मई को पूर्णाहुति होगी।

प्रस्तुति : हेमराज बंसल

(दैनिक ट्रिब्यून)

शराब के उपठेके खोलने का प्रयास विफल

तोशाम २२ अप्रैल (सर्स)। शराब ठेकेदारों के उपठेके खोलने के प्रयासों को ग्राम पचायत व ग्रामीणों ने विफल कर दिया है।

उपमण्डल तोशाम के ढाणी माहू गांव की ग्राम सभा के सचिव दिलीपसिंह ने बताया कि पंचायत ने यहां ठेका खोलने की अनुमति दे दी थी लेकिन गाव वालों ने दबाव डालकर अनुमति रद्द करवा दी।

आर्यसमाज हमारा है

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ. प्र.)

तिमिराच्छन्न धरणि पर जिसने,
वेद ज्ञान की रश्मि बिखेरा।
तोड़ दिया जिसने निर्भय हो,
पाखण्डों का कलुषित घेरा।
ज्ञान पुष्प से जगती तल का,
जिसने भाग्य संवारा है।
वह आर्यसमाज हमारा है॥

अन्यायों—अत्याचारों का,
जिसने है प्रतिकार किया।
शूद्र तथा नारी को समुचित-
जिसने है अधिकार दिया॥
वेद ज्ञान के बल पर जिसने—
असुरों को ललकारा है।
वह आर्यसमाज हमारा है॥

जगा रहा सम्पूर्ण धरा को,
सत्य धर्म की बातों से।
मानवता की रक्षा करता—
आडम्बर प्रतिघातों से।
कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का—
लगा रहा जो नारा है।
वह आर्यसमाज हमारा है॥

मई मास में आर्यसमाज के उत्सव

आर्यसमाज खानपुर जिला महेन्द्रगढ़	६, ७ मई
आर्यसमाज कोसली जिला रेवाड़ी	२२ से २८ मई
आर्यसमाज सोनीपत शहर	२२ से २८ मई
आर्यसमाज विधवान जिला हिसार	२०, २१ मई
आर्यसमाज भाडवा जिला भिवानी	२६ से २८ मई
आर्यसमाज गोन्दर जिला कैथल	२४ से २८ मई

जो आर्यसमाज अपने उत्सव रखना चाहते हैं, वे शीघ्र सभा से सम्पर्क स्थापित करें, अथवा पत्र लिखें।

१४ मई को कोई भी आर्यसमाज अपना उत्सव आदि न रखें क्योंकि १४ मई को सभा का वार्षिक अधिवेशन रोहतक में हो रहा है। आर्यसमाज के जो सभा के प्रतिनिधि हैं, उन्हें रोहतक भेजने का कष्ट करें।

सुदर्शनदेव आचार्य
वेदप्रचार अधिष्ठाता

शुद्धि और विवाह

जीन्द २३ अप्रैल। यह विवाह संस्कार आर्यजगत् के प्रतिष्ठित पुरोहित पं० विद्यासागर शास्त्री कृष्णा कालोनी (जीन्द) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। एक अमेरिकन लड़की जिसका नाम **Anderson** से बदलकर प्रभा रखा गया, और वैदिक रीति से शुद्धि कर पाणि ग्रहण संस्कार आर्यसमाज रेलवे रोड जीन्द जंक्शन में गणमान्य लोगों की उपस्थिति में राजपाल तंवर के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री पृथ्वीसिंह चहल, श्री कृष्णलाल आर्य, श्री मा० हरगोविन्द, श्री श्यामलाल ड्राईवर, श्री मा० रामचन्द्र आदि लोगों ने दम्पति को आशीर्वाद और शुभ कामनायें प्रदान की। आर्य पुरोहित ने कहा, कि कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का नारा तभी सफल होगा जब देशवाद, जातिवाद, प्रान्तवाद और भाई भतीजावाद से हटकर युवा वर्ग सड़े-गले बन्धनों को तोड़कर मानव-मानव से प्रेम का रिश्ता जोड़ें और "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना से कार्य करें, तभी विश्व खुशहाल होगा।

मा० हरगोविन्द
मन्त्री, आर्यसमाज रेलवे रोड जीन्द

आर्यसमाज नजफगढ़ का ६१वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक १४, १५, १६ अप्रैल १९९५ को आर्यसमाज नजफगढ़ का उत्सव धूमधाम से मनाया गया। १४ अप्रैल को ३ बजे से ५ बजे तक शहर की मुख्य गलियों में जुलूस निकाला गया। जिसमें देहात के आर्यों के अतिरिक्त कन्या गुरुकुल लोवा कलां की छात्राएं तथा कई स्कूलों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। वेद की ज्योति जलती रहे, ओ३म् का झण्डा ऊंचा रहे, महर्षि दयानन्द की जय हो, आर्यसमाज अमर रहे, शराब पीना छोड़ दो, शराब के ठेके बन्द करो तथा आई फौज दयानन्द वाली रस्ता कर दो खाली आदि नारों से आकाश गूंज रहा था। प्रतिदिन प्रातः हवन किया गया। यज्ञ पर प्रतिदिन सहपत्नीक कई सज्जन यजमान बने। यज्ञ पं० भरतलाल ने सम्पन्न करवाया।

इस अवसर पर आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, पूर्व सांसद स्वामी इन्द्रवेश, महात्मा तेजमुनि, स्वामी ओमानन्द जिज्ञासु, श्री ओमप्रकाश सिद्धान्त शिरोमणि, मा० निहालसिंह आर्य, पं० मगनलाल शास्त्री तथा सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी आदि ने महिला सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन तथा खुले अधिवेशन में अपने विचार रखे। इसके अतिरिक्त सभी विद्वानों ने शराबबन्दी तथा सरकार की शराब बढ़ावा नीति की कटु आलोचना करते हुए लोगों से शराब न पीने की अपील की। स्वामी ओमानन्द जी ने कहा जब तक हरयाणा प्रान्त में शराब बन्द नहीं होगी आर्यसमाज चैन से नहीं बैठेगा। स्वामी इन्द्रवेश ने कहा कि एक वर्ष के बाद हरयाणा प्रान्त से भजनलाल सरकार व शराब दोनों जायेंगी, ऐसे आसार दिखाई दे रहे हैं।

पं० नारायणसिंह आर्य की मण्डली के शिक्षाप्रद समाज सुधार के भजन हुए। बीच बीच में स्कूल के विद्यार्थियों व लोवा कलां गुरुकुल की छात्राओं के भी भजन व भाषणों का रोचक कार्यक्रम रहा। आवास व भोजन व्यवस्था का प्रबन्ध उत्तम था।

—अभयराज आर्य, मन्त्री

(पृष्ठ २ का शेष)

उनका पुत्र वेदप्रकाश व पत्नी प्रातः छः सात बजे से लेकर रात्रि बारह व एक बजे तक प्रेस का काम करते हैं। ईसाइयों के मुसलमानों के मशीन साधन हैं। आज आफसैट प्रेसों का युग है। वे भी बैंक से ऋण लेकर आफसेट मशीन लगाना चाहते हैं परन्तु कुछ राशि आप भी तो लगानी पड़ती है। इसका प्रबन्ध कैसे करें ?

ऋषि-जीवन मलयालम में धीरे-धीरे छप रहा है। वेद भाष्य की मांग बढ़ रही है। इस अकेले विद्वान् ने रोगों से पीड़ित होते हुए भी ऋषि के कई छोटे-बड़े ग्रन्थ अनूदित करके छाप दिए हैं। सत्यार्थप्रकाश समाप्त होने वाला है। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका देखने को नहीं मिलती। सब लोग मांगते हैं। कागज के भाव चढ़ रहे हैं।

केरल के मुस्लिम बहुल क्षेत्र में दस सहस्र से ऊपर की विराट् सभा में आचार्य जी ने वैदिक ऋषि बोध पर्व पर व्याख्यान दिये। केरल के इस बेजोड़ वक्ता व विद्वान् को सुनते हुए लोग देर रात तक बैठे रहते हैं। मैंने आग्रह करके उनका धारा प्रवाह ओजस्वी भाषण बन्द करवाया। वैदिक मिशन के Zonal Organiser क्षेत्रीय संगठनकर्त्ता पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी के शिष्य पं० पुरुषोत्तम जी ने कहा कि आज रात्रि आपको दस सहस्र की उपस्थिति में भाषण देना है। मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि रात्रि में इतने लोग जंगल में आयेंगे, परन्तु हर्ष का विषय है कि उपस्थिति दस सहस्र से भी ऊपर थी। दिन भर का थका टूट गया। कुर्सी पर बैठा-बैठा सोया था नरेन्द्रभूषण जी ने जगाया कि दूर-दूर से युवक मिलने आए हैं। जाति भंग हो चुकी है। यह देखकर मैं झूम उठा। आर्य मात्र को यह सुनकर अभिमान होगा कि पं० पुरुषोत्तम जी की प्रेरणा व पुरुषार्थ से एक ट्रस्ट हमें गुरुकुल की व आश्रम की स्थापना के लिए एक सौ एकड़ से अधिक भूमि दे रहा है। भूमि प्राप्ति में एक कानूनी अड़चन दूर हो गई तो गुरुकुल खुल जायेगा। यह भूमि न मिली तो फिर दो एकड़ भूमि खरीदकर हम गुरुकुल इसी वर्ष स्थापित कर देंगे। हमें तीन लाख कहीं से मिल जायें तो भूमि ले लेंगे। हमारे पास तो इस समय केवल सवा लाख है। स्वामी श्रद्धानन्द का पवित्र लहू रंग लायेगा। हमारी कामना पूर्ण होगी। प्रभु का कार्य है। प्रभु पूर्ण करेंगे। हम तो केवल ईश्वर की अलख जगा रहे हैं।

यह पुरुषोत्तम एक विचित्र प्रचारक है। मुस्लिम बहुल जिला में हमारे 'आर्षनादम्' मासिक के छः सात सौ ग्राहक हैं। हैं किसी सामाजिक पत्रिका के एक ही जिला में इतने ग्राहक ? हमारे ग्राहकों में विधर्मी भी हैं। पुरुषोत्तम जी की सेवायें तो अद्भुत हैं। हम उनका क्या देते हैं ? कुछ भी नहीं। पूज्य स्वामी जी महाराज ही कुछ देते रहते हैं।

मैं इकतीस वर्षों से केरल जा रहा हूं। पहले कोई भोजन भी नहीं पूछता था। मार्ग व्यय की तो बात ही न करो। अब एक दूरस्थ स्थान पर आचार्य नरेन्द्रभूषण जी के साथ मैं प्रथम बार गया। नरेन्द्र जी भी वहां प्रथम बार गए। दूर-दूर से सुशिक्षित युवक उनके दर्शनार्थ आए। प्रातः आठ बजे से सायं छः बजे तक प्रवचन, शंका समाधान चलता रहा। मैं तो केवल एक घण्टा बोला। नरेन्द्र जी तो एक क्षण के लिए भी विश्राम न कर सके। हर्ष का विषय तो यह है कि एक ही सज्जन ने सब अतिथियों को चाय, अल्पाहार व भोजन करवाया। ये है जीवन के लक्षण। ऋषि कहते चोट मारो, लोहा गर्म है। मकड़ी के जाले से निकलो। परम धर्म वेद का प्रचार करो।

अब शुरू होगा 'शराब छोड़ो बोतल तोड़ो' आंदोलन

शिमला, २२ अप्रैल (प्रेट्र)। भारत छोड़ो दिवस (९ अगस्त'८५) से 'शराब छोड़ो बोतल तोड़ो' आन्दोलन पूरे देश मे शुरू कर दिया जायेगा।

यह घोषणा अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने सुजानपुर टीहरा मे आयोजित एक विशाल महिला सम्मेलन के अवसर पर की। इस सम्मेलन में पूरे प्रदेश के नशाबन्दी आदोलन मे सक्रिय भाग लेने वाले कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त हमीरपुर एव कांगड़ा जिला की महिला मण्डलो के प्रतिनिधियों एव युवती मण्डलों की सदस्यों ने भाग लिया।

इस अवसर पर अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद की महामन्त्री श्रीमती प्रभात शोभा पंडित ने अपने भाषण में महिलाओं का आह्वान किया कि वर्तमान सरकार गांधी जी के आदर्शों के विपरीत चल रही है। गांधी जी ने तो राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं द्वारा शराब की दुकानों पर धरने करवाकर शराब के विरुद्ध एक जोरदार अभियान पूरे देश में चलाया था और यह भी कहा था कि यदि मुझे एक घंटे के लिए भारत का तानाशाह बना दिया जाये तो सबसे पहला काम मैं पूर्ण नशाबन्दी का ही करूंगा।

प्रो० शेरसिंह ने महिलाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि अब समय आ गया है कि महिलाएं घर परिवार की खुशहाली की खातिर शराब के विरुद्ध जोरदार अभियान चलाकर सरकार को शराबबन्दी करने पर मजबूर करें।

इस सम्मेलन में एक प्रस्ताव द्वारा सरकार की इस बात के लिए निंदा की गई कि उसने गांव-गांव में ऐसी जगहों में ठेके खोले हैं जो कायदे कानून के विरुद्ध हैं। इस अवसर पर हिमाचल सरकार की नई आबकारी नीति की निन्दा की गई। एक अन्य प्रस्ताव में कहा गया है कि ग्राम पंचायतों और महिला मण्डलों को अनुमति के बिना किसी भी गांव में शराब का ठेका नहीं खोला जाना चाहिए। केवल ग्राम पंचायतों की ही स्वीकृति काफी नहीं, जब तक कि महिला मण्डलों की भी स्वीकृति प्राप्त न हो।

इस विशाल महिला सम्मेलन का उद्घाटन प्रसिद्ध सर्वोदय नेता एवं विनोबा जी के साथी यशपाल मित्तल ने किया। कामरेड प्रीतम पहाड़िया, सुन्दरलाल वर्मा, स्नेहलता जैन, कृष्णा, मनोहर मेहता, मुकेश सिन्हा एवं हि. प्र. नशाबन्दी परिषद् के महामन्त्री रमेश गुप्ता ने भी इस सम्मेलन में शराब की बुराइयों की खुलकर चर्चा की और महिलाओं को आगे आकर इस बुराई के विरुद्ध जोरदार लड़ाई लड़ने की प्रेरणा दी ताकि राज्य सरकार शराबबन्दी करने पर मजबूर हो सके।

आचार्य की आवश्यकता

सभा द्वारा संचालित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि० फरीदाबाद के लिए आचार्य की तुरन्त आवश्यकता है। वैदिक सिद्धान्तों का विद्वान्, गुरुकुल शिक्षा पद्धति का समर्थक, अध्यापनकार्य में अनुभवी को प्राथमिकता दी जावेगी। इच्छुक महानुभाव अपनी योग्यता अनुभव तथा आयु के प्रमाणपत्रों सहित सम्पर्क करें।

मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक फोन : (७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ४०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ फोन नं० ४०७२२ सृष्टिसंवत् १, ६६, ०८, ५३,०६६

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०
वर्ष २२ अंक २२ ७ मई, १९९५ (वार्षिक शुल्क ५०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

सिद्धान्तहीन समस्याओं का हल नहीं

प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष, रक्षावाहिनी

मैं तो बार-बार कह चुका हूं कि पंजाब की अपनी कोई समस्या नहीं है, वह तो समस्या पैदा करता है अपने लिये, पड़ोसी प्रदेशों के लिये और देश के लिए। मैं आभारी हूं जनसत्ता तथा हिन्दुस्तान टाइम्स का, कि उन्होंने मेरे इस समस्या से जुड़े हुए लेख छापे। यह समझ लेना चाहिये कि पंजाब की कोई समस्या है ही नहीं, और जब समस्या है ही नहीं तो उसका हल क्या हो सकता है। पंजाब वाले तो समस्या पैदा करते हैं, हिंसात्मक तरीके अपनाकर भारत सरकार को डरा लेते हैं और डरी हुई भारत सरकार सौदा कर लेती है, और कीमत सदा चुकाता है हरयाणा। पंजाब में पानी की कमी नहीं, २५ लाख एकड़ भूमि में अधिक पानी के कारण सेम आ चुकी परन्तु पानी चाहे पाकिस्तान में जाता रहे, हरयाणा को पानी नहीं देना। भारत सरकार अपने फैसले तीन बार बदल चुकी और हर बार पहिले से ज्यादा पानी पंजाब को देती रही परन्तु अब पंजाब फिर उन फैसलों को बदलवाने पर तुला हुआ है।

चण्डीगढ़ हिन्दीभाषी है, यह शाह कमीशन का फैसला है, परन्तु पंजाब ने जिद लगा रखी है। फाजिल्का-अबोहर हिन्दी-भाषी होते हुए भी उसपर कब्जा जमाए हुए है। अक्तूबर १९५६ में इस इलाके को हिन्दी भाषी माना, हस्ताक्षर किये, १९६५ में अकाल तख्त पर बैठकर माना, और जनवरी १९७० में स्वयं संत फतहसिंह ने चण्डीगढ़ के बदले देने की पेशकश की, इसी आधार पर २९ जनवरी १९७० को प्रधानमन्त्री ने फैसला सुनाया। फैसले पर दीवाली मनाई। परन्तु अब फिर मुकरने में कोई लज्जा का अनुभव नहीं करते। अब फिर भारत सरकार फैसले की बात करने लगी है और विरोधी दल भी पीछे नहीं। हर फैसले की कीमत हरयाणा को चुकानी पड़ती है। हरयाणा ने अपनी ऐसी साख बना डाली है कि जितना-जितना चला जाये वह बेशक चला जाये जो रह जाये उसके खसम हम। यही कारण है कि कीमत चुकाते समय भी इसे नहीं पूछा जाता। कीमत हरयाणा चुका रहा है और फैसला कर रहे हैं राजीव तथा लोंगोवाल या नरसिंहराव और बेअन्तसिंह।

पंजाबी भाषा का प्रश्न—

संसार का बड़े से बड़ा बुद्धिमान् मुझे यह समझा दे कि "पंजाबी हरयाणा की दूसरी भाषा हो" यह पंजाब की समस्या कैसे हो गई। हरयाणा की कौनसी भाषा पहिले हो, कौनसी दूसरी और कौनसी तीसरी, यह समस्या तो हरयाणा की है और उसी को फैसला करना चाहिये। हरयाणा भी तो इस समस्या पर विचार तभी कर सकता है जब हरयाणा के ४० या ५० लाख लोग इसकी मांग करें। हरयाणा के लोगों ने तो कभी यह मांग नहीं की। यह मांग तो पंजाब के अकालियों की या अधिक से अधिक सिखों में टिकपाने के लिए तथाकथित कांग्रेसी सिखों की ओर से भी कभी-कभी उठती रही है। न तो हरयाणा के लोगों ने प्रधानमन्त्री से यह मांग की और न ही उन्होंने हरयाणा के लोगों से पूछा, अचानक गये और लुधियाना में जाकर घोषणा कर दी। प्रधानमन्त्री को स्वयं महसूस होना चाहिये कि उन्होंने कितना अनुचित काम किया है। उन जैसे सुलझे हुए और विद्वान् नेता के लिए यह अशोभनीय है। यदि उन्होंने यह समझकर यह सब कुछ किया है कि इससे तथाकथित पंजाब की समस्या हल हो जायेगी तो उनसे भोला इन्सान कोई नहीं और यदि कांग्रेस को इस फैसले के कारण सिखों की वोटें मिल जायेंगी, तो यह उनका भ्रम टूट जाना चाहिए, क्योंकि बिहार और उत्तर प्रदेश में उर्दू को दूसरी भाषा का दर्जा देने के बाद, पिछले दो चुनावों में कितनी मुस्लिम वोट कांग्रेस ले पाई इससे उनका भ्रम दूर हो जाना चाहिए। भाषा तो इलाके की होती है मजहब की नहीं। भाषा को मजहब के साथ जोड़ना अपने आप में गलत बात है। परन्तु आज तो गलत सही का भेद ही खत्म होगया।

राज्यों का पुनर्गठन और राजभाषा—

आजादी की लड़ाई के दौरान यह फैसला हुआ था कि पूरे देश में प्रान्तों का पुनर्गठन भाषा के आधार पर हो, ताकि लोगों की अपनी भाषा में हर प्रदेश में राज-काज होने लगे। १९५२ और १९५६ के बीच में देश में सभी प्रदेश एकभाषी प्रदेश बन गये। परन्तु एक भाषी प्रदेश बनाने के लिए कहीं भी लकीर खींच दें, कुछ लोग अन्य भाषायें बोलने वाले सभी प्रदेशों में बने रहेंगे। आगे चलकर झगड़े न हों, इसके लिए दो फैसले लिये गये, एक का प्रावधान तो संविधान में पहिले से ही था, कि प्राथमिक शिक्षा अपनी मातृभाषा में दिये जाने का अधिकार भाषाई अल्पसंख्यकों को है। जहां तक राजकाज में दूसरी भाषा का दर्जा देने की बात है, उसके सम्बन्ध में राज्य पुनर्गठन आयोग ने यह फैसला किया कि जिस भाषा के बोलनेवाले लोगों की संख्या ३० प्रतिशत या उससे अधिक हो, वे लोग अपनी भाषा के लिए राजकाज की दूसरी भाषा माने जाने की मांग कर सकते हैं और वह उचित मांग माननी पड़ेगी। इस फैसले पर पंडित जवाहरलाल नेहरु की अध्यक्षता में हुई मुख्यमन्त्रियों की बैठक ने अपनी मोहर लगा दी। हर प्रदेश में अनेक भाषाओं के बोलनेवाले भाषायी अल्पसंख्यक रहते हैं, तब किस-किस भाषा को राजकाज में लागू करने की स्वीकृति देंगे। दिल्ली में तो सभी भाषाओं के लोग रहते हैं, वहां राजकाज की कितनी भाषाएं होंगी। इसीलिए ३० प्रतिशत का सिद्धान्त राज्य पुनर्गठन आयोग प्रधानमन्त्री और मुख्यमन्त्रियों ने माना। अन्यथा भाषाई प्रान्त बनाने का कोई तुक नहीं थी।

इस सर्वमान्य सिद्धान्त की ही क्यों, हर सिद्धान्त की मिट्टी पलीद करती है वोट की अन्धी चाह। अन्धी इसलिये कि वह एक बार ही मिलती है, दो बार नहीं। हर बार एक सिद्धान्त की बलि चढ़ानी पड़ती है। परन्तु इस आन्धी दौड़ में शायद ही कोई सिद्धान्त बच पाये, जिसकी बलि न चढ़ानी पड़े। परन्तु यह सर्वभक्षी वोट रूपी चण्डी सबकी बलि लेकर भी क्या तृप्त हो सकेगी?

दूसरी भाषा राजभाषा माने जाने पर सभी दस्तावेज उस भाषा में भी छपेंगे और खर्चे बढ़ेंगे। परन्तु आज तो सभी दलों की ऐसी मानसिकता बनती जा रही है, खर्च बढ़ाते जाओ, लूटते जाओ, शराब पिलाते जाओ और राजस्व कमाते जाओ। कल यदि मेवात के लोगों को उकसाकर मुसलमानों की मांग उर्दू को दूसरी भाषा बनाने की उठाई गई तो क्या हरयाणा की तीन राजभाषाएं होंगी?

(शेष पृष्ठ ७ पर)

वेदवाणी:—

हमारा शरीर एक अद्भुत रथ

(सुखदेव शास्त्री महोपदेशक दयानन्दमठ, रोहतक)

ओ३म् । सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रमेको अश्वो वहति सप्तनामा ।
त्रिनाभिचक्रं अजरं अनर्वं यत्रेमा विश्वा भुवनानि तस्थुः ॥
ऋग्वेद, सूक्त-१६४, मन्त्र-२ ।

१. रथम्—इस शरीर रूपी रथ में, सप्त-सात प्रदीप, युञ्जति-जुड़े हुए है ।

"कर्णाविमौ नासिके चक्षुषोमुखम्—इन शब्दों में वेद इन दीपकों का उल्लेख कर रहा है । शब्द के लिए दो कान, गन्धज्ञान के लिए दो नाक विवर, रूप के लिए दो आंखें तथा रस विज्ञान के लिए जिह्वा । इन सातों दीपकों के ठीक प्रज्वलित रहने पर हमारा यह शरीर रथ प्रकाश मे गति करेगा । इनके बुझ जाने पर अन्धकार में टकरा कर टूट-फूट जायगा ।

२. यह शरीर रूपी रथ, एक चक्रम्—विलक्षण चक्रों वाला है । इसमें मूलाधार से लेकर आठ चक्र सहस्रार चक्र तक सारे ही चक्र अद्भुत एवं विलक्षण हैं, जैसा कि अथर्व० १०, २, ३१ में अष्ट चक्रों के विषय में कहा गया है—

"अष्टचक्रा नव द्वारा देवानां पूरयोध्या ।
तस्या हिरण्यःकोशः स्वर्गो ज्योतिषावृता ॥

अर्थात् आठ चक्रों एवं नौ द्वारों वाली देवों की अयोध्या—अपराजिता शरीर रूपी नगरी है । इस शरीर रूपी नगरी में आठ चक्र ये हैं—

१. मूलाधार चक्र—इसका स्थान गुदा मूल है । इसके संयम व शोधन से ब्रह्मचर्य को सिद्धि होती है ।

२. स्वाधिष्ठान चक्र—इसका स्थान मूत्रेन्द्रियमूल है । इसके संयम, शोधन से अमोघ वीर्य शक्ति प्रदान होती है ।

३. मणीपूरक चक्र—इसका स्थान नाभिकेन्द्र है । इसके संयम व शोधन से तप, श्रम, अध्यवसाय बढ़ता है ।

४. अनाहत चक्र—इसका स्थान हृदय में है । इसके संयम-शोधन से आत्मा अवस्थिति होती है ।

५. विशुद्धि चक्र—इसके संयम शोधन से अन्तःकरण की पवित्रता होती है ।

६ जीवन चक्र—इसका स्थान नासिका मुख मूल है । इससे शारीरिक सुडौलता प्राप्त होती है ।

७. आलाचक्र—इसका स्थान भौओं के मध्य में है । इससे तेजस्विता व लावण्य आता है ।

८. सहस्रार चक्र—इसका स्थान कपाल है, जहां ब्रह्मरन्ध्र है । इससे संयम से मेधा जागृत होती है । नव द्वारों का वर्णन ऊपर किया जा चुका है । इसी में चमकीला मस्तिष्क रूपी कोश है, और ईश्वरीय ज्योति से आवृत स्वर्ग यहीं पर है ।

इस प्रकार इस शरीर रूपी रथ को, एकः अश्वः मुख्य प्राण जो कि, सप्तनामा—सात नामों वाला है, वहति—वहन कर रहा है । प्राणा वात्र इन्द्रियाणि—प्राण ही ये सब इन्द्रियां है । इन सातों नामों वाला यह मुख प्राण ही इस शरीर का धारक व संचालक है । यह, चक्र—शरीर चक्र त्रिनाभिः—तीन बन्धनों वाला है । शरीर में ये तीन बन्धन इन्द्रिया, मन, बुद्धि हैं । ये तीन ही मनुष्य के महान् शत्रु काम का अधिष्ठान बनते हैं । अतः ये तीन बन्धन मनुष्य के बड़े बन्धक हैं । ये तीनों, अजरं—अत्यन्त गतिशील हैं । ये तीनों, अनर्वं—नष्ट न होने वाले हैं ।

यह शरीर रूपी रथ वह है, यत्र—जहां, इमा विश्वाभुवना—इस ब्रह्माण्ड के सभी लोक—अधितस्थुः—ठहरे हुए हैं । शरीर में मस्तिष्क द्युलोक है । हृदय अन्तरिक्ष है तथा पांव पृथ्वी लोक हैं । इन सब लोकों में रहने वाले देव भी इस पिण्ड के अन्दर रह रहे हैं । सूर्य चक्षु के रूप में, चन्द्रमा मन के रूप में तथा अग्नि वाणी के रूप में यहा विद्यमान है । इस प्रकार यह शरीर ब्रह्माण्ड के सभी देवों का अधिष्ठाता है ।

मन्त्र का भावार्थ:—यह शरीर रूपी रथ अद्भुत है । यह सब लोकों का अधिष्ठान है । उन लोगों के अधिपति सब देव भी यहां उपस्थित हैं । अतः शारीरिक शक्ति का विकास करना चाहिए ।

शराबबन्दी गतिविधियां

सिरसा जिले के ठुठियांवाली गांव में पंचायत के प्रस्ताव द्वारा २३-२-९३ को हरियाणा सरकार ने सरकार ने शराब का ठेका बन्द करने का आदेश दिया था परन्तु अगले साल सरकार ने सरपंच द्वारा एक प्रस्ताव गलत तरीके से पास करवाकर उपठेका खोल दिया जिस पर गांव के लोगों ने एतराज किया और सरपंच निलम्बित कर दिया गया परन्तु उपठेका वहीं रहा । दूसरे साल भी पंचायत ने प्रस्ताव पास करके सरकार को भेजा । अब नई पंचायत ने प्रस्ताव पास करके भेजा परन्तु कोई असर नहीं हुआ । ग्रामसभा इकट्ठी होकर उपायुक्त सिरसा के पास गई परन्तु कोई हक की बात डी. सी. ने भी नहीं की और एक्साईज अफसर के पास गांव के लोगों को भेज दिया जिस पर शराब माफिया का असर दिखाई दिया क्योंकि उसकी आधा शराब के ठेकेदार की थी । तंग आकर गांव के लोगों ने १४-४-९५ को शराब के ठेके पर ताला लगा दिया परन्तु शराब माफियों के गुण्डों और पुलिस ने मिलकर गांववासियों को भगा दिया । अब तंग आकर गांव के लोगों ने उपायुक्त सिरसा को नोटिस दिया है कि यदि एक मई तक ठेका बन्द ना हुआ तो गांव के लोग धरने पर बैठेंगे व ताला लगाएंगे । गाववासी हरयाणा की सभी शराब विरोधी संस्थाओं से भी सहायता की अपील करते हैं ताकि गांव को इस जहर से छुटकारा मिल जावे ।

इसी तरह शराब विरोधी मोर्चा के प्रयास से शराब के ठेके तो कुछ गांवों में बन्द होगए परन्तु शराब माफिया और प्रशासन मिलकर उन गांवों में शराब की खुली बिक्री करके ठेकों की तरह बेच रहे हैं । एस. पी. सिरसा को भी लिखा परन्तु असर नहीं हुआ । गांव चोयला, बचेद, कावुआना, मम्बड़ खेड़ा, केहरवाला, माखेड़ा जिला के मुख्य गाव है जहां प्रशासन की सहायता से शराब खुले आम बिक रही है । आपके माध्यम से मे आर्यवीरों को व शराब विरोधी मोर्चे के लोगों से निवेदन करना चाहता हूं इस विषय में कुछ सोचें ।

ओमप्रकाश गोदारा, संयोजक जिला शराब विरोधी मोर्चा चोयला

म० निहालसिंह द्वारा संस्थाओं को दान

श्री निहालसिंह आर्य अध्यापक द्वारा गुरुकुलों, विद्वानों धर्मस्थानों को सन् १९९४ में दी गई दान राशि—

पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी, महर्षि दयानन्द मठ, दीनानगर (पंजाब) ५००० रु., गुरुकुल कालवा जींद छात्रों को हलवा भोज तथा राशि २४०० रु., राष्ट्रीय गोशाला ग्राम धड़ोली जिला जींद २१०० रु., आर्य गुरुकुल झज्जर गोशाला तथा यज्ञ में ११०० रु., स्वामी सर्वानन्द जीवन चरित्र प्रकाशन दयानन्द मठ दीनानगर ११००., राज आर्यनेता चौ० छोटूराम धर्मशाला, बहादुरगढ़ रोहतक ११०० रु., आर्य कन्या गुरुकुल लोवा कलां रोहतक ११०० रु., वेदश्रमी अष्टाध्यायी छात्रवृत्ति गुरुकुल लोवाकलां १००० रु., आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा महर्षि महर्षि दयानन्द मठ दैनिक यज्ञ में, रोहतक ५०० रु., महर्षि दयानन्द मठ भोजनालय रोहतक ६०० रु., वैदिक साधना आश्रम गोरड़ रोहतक ५००., अष्टाध्यायी मेधावी छात्र पुरस्कार गुरुकुल झज्जर ५००., आर्य छात्र पुरस्कार तथा यज्ञ में गुरुकुल गौतमनगर ३०० रु., गुरुकुल घासेड़ा, रेवाड़ी (हरयाणा) १७२ रु., आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ रोहतक १५० रु., आर्य गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली १०१ रु., आर्य गुरुकुल (कन्या) लोवा कलां १०१ रु., १०१ रु०., राज आर्य सभा महासम्मेलन दिल्ली १०० रु., गुरुकुल पूठ ग्राम (पूठ पुष्पावती) गंगा बुलन्दशहर १०० रु., अंग्रेजी हटाओ समिति नकोदर शहर (पंजाब) १०० रु., आर्य गुरुकुल दाधिया मण्डल रेवाड़ी (हरयाणा) १०० रु., गुरुकुल आमसेना कालाहाण्डी उड़ीसा १०० रु. । कुल योग १८४७४ रु.

मेरी केरल यात्रा

गूंज रही ईश्वर की वाणी—[२]

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन अबोहर-१५२११६

जिस सम्मेलन को मैंने पहले चर्चा की है उसका उद्घाटन लोकसभा के उप सभापति श्री मलिकार्जुन ने किया। वह कर्नाटक के निवासी हैं। मैंने उनका भाषण आकाशवाणी पर ही सुना। आपने भाषण में प्रायः वेदोक्त दृष्टिकोण ही दिया। आपने भी वेद की महिमा पर बहुत कुछ कहा। वेद सब के लिए है। यह भी कहा कि जन्म की जाति पांति धर्म विरुद्ध है। हिन्दुओं को कुरीतियों से मुक्त होकर संगठित होने की प्रेरणा दी। आपने अपने व्याख्यान में आचार्य नरेन्द्रभूषण जी की भी चर्चा की।

एक बात विशेष रूप से देखी जा सकती है कि केरल में अब प्रवचनों में लेखों में 'यथेमां वाचं कल्याणीम्' इस ऋचा का प्रमाण सब देने लगे हैं। यह वैदिक मिशन की एक उपलब्धि है। मैं अपने साथ एक मलयालम-पुस्तक लाया हूं। स्वामी विवेकानन्द सम्बन्धी इस पुस्तक में स्वामी विवेकानन्द के मुख से भी इस मन्त्र का प्रमाण प्रस्तुत किया गया है। अब यह प्रमाण कहां से निकल आया? पहले क्यों न दिया? यह सब कुछ हमारे ए तपस्वी विद्वान् की सतत साधना का फल है। इस प्रसंग मे मुझे केरल की एक पुरानी घटना याद आती है। कोई बीस वर्ष पूर्व केरल में मार्क्सवादी सरकार के दिनों मे हम एक सम्पन्न ब्राह्मण भूपति श्री रामचन्द्र से मिलने गये। उन दिनों कम्युनिस्टों ने बहुत लूट खसूट मचाई थी। उस व्यक्ति की भी सम्पत्ति छीनी गई थी।

उसने सजल नेत्रों से कहा कि हमारी यह दुर्दशा इसलिये हुई है कि हमने स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुकार न सुनी। उस सज्जन ने केरल में स्वामी श्रद्धानन्द जी के दर्शन किए थे। स्वामी जी ने तब कहा था कि वेद और ऋषि की सुनो, अन्यथा तुम्हारी जात पात तुम्हारा सर्वनाश कर देगी। अब एक-एक हिन्दू नेता के मुख पर स्वामी श्रद्धानन्द जी का वही सन्देश है।

केरल से एक मासिक 'प्रगति' पत्र छपता है। इसके सम्पादक प्रकाशक एक सुयोग्य विचारक हैं। वह हमारे कार्यालय आते रहते हैं। नरेन्द्र जी दूसरे पत्रों के लिए कम ही लिखते हैं परन्तु इस पत्रिका के प्रत्येक अंक में आपका एक खोजपूर्ण सैद्धान्तिक लेख होता है। 'आर्यों का आदि देश' विषय पर स्वामी विद्यानन्द जी की पुस्तिका मलयालम में छप चुकी है। मैं भी ३१ वर्षों में इस विषय पर केरल में कई व्याख्यान दे चुका हूं। अब सब प्रबुद्ध हिन्दू इस विषय पर सूझ बूझ बोलते हैं।

चेगन्नूर के एक हिन्दी कालेज में इस बार भी मेरा भाषण हुआ। इसके संचालक एक ईसाई सज्जन हैं। इसमें 'ईशा वास्य' मन्त्र से प्रार्थना होती है। आचार्य नरेन्द्र भूषण जी भी इस कालेज के प्रधान रहे हैं। अब भी मार्गदर्शक हैं।

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय की प्रसिद्ध पुस्तक **Peason and Religion** के आधार पर नरेन्द्र जी ने केरल की आवश्यकता के लिए एक मलयालम पुस्तक लिखी है। इसका विमोचन भी मेरे द्वारा हुआ। कोटयूर मालाबार में श्री गोपीनाथ जी के गृह पर हुए समारोह में सभी ने इसकी मांग की परन्तु हमारे पास तो इसकी इतनी प्रतियां ही नहीं थीं।

इस यात्रा में मैं वायकुम भी गया। यह वही नगर है जहां हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अस्पृश्यता के विरुद्ध सत्याग्रह का नेतृत्व किया था। स्वामी जी महाराज से सम्बन्धित वहां के सब स्थानों की जानकारी रखने वाला अब कोई वृद्ध वहां जीवित नहीं है। सौभाग्य से हमारे एक प्रमुख व लोकप्रिय आर्यवीर श्री कृष्णकुमार जी ने कई वर्ष पूर्व उस सत्याग्रह के एक सत्याग्रही से सब जानकारी ले ली थी। अतः कुछ वर्ष पूर्व प्रिय कृष्णकुमार जी ने मुझे वे सब स्थान दिखा दिये थे। यहां इस बार कृष्ण जी के निवास पर एक सन्ध्या-यज्ञ रखा गया। आचार्य नरेन्द्रभूषण जी का प्रवचन हुआ। इस समारोह में कृष्ण जी के कई मित्रों ने श्रद्धापूर्वक यज्ञ मे भाग लिया।

केरल में वैदिक धर्म ग्रहण करते ही सब युवक मांसाहार छोड़ देते हैं। वैसे भी केरल में शाकाहार का अच्छा प्रचार हो रहा है। यह बताना भी आवश्यक है कि श्री कृष्ण जी का अपना विशाल वैदिक पुस्तकालय है। इनके पिता जी का भी अलग पुस्तकालय है। इस परिवार में आर्य युवक नियमित रूप से सत्संग करते रहते हैं।

कृष्ण जी एक कुशल चित्रकार हैं। उनका अपना कालेज है जहां कई कला प्रेमी उनसे चित्रकारी की कला सीखते हैं। वेद और यज्ञ में कृष्ण जी की श्रद्धा देखकर मन गद्गद हो जाता है। इन्हीं दिनों केरल में घटी एक घटना की दक्षिण भारत के सब पत्रों में चर्चा थी। शबरीमला मन्दिर वहां हिन्दुओं का एक बड़ा तीर्थ है। आंध्र तामिलनाडू से भी लाखों तीर्थयात्री वहां जाते हैं। इस तीर्थ के बड़े पुजारी की नियुक्ति कुछ निश्चित समय के लिये ही होती है। वर्तमान पुजारी ने एक बड़े चर्च में जाकर ईसाई विधि से पूजा की। इसमें ईसाइयों का क्या प्रयोजन था, यह समझदार हिन्दुओं ने ताड़ लिया। इस पर समाचारपत्रों में खूब विवाद छिड़ गया।

शृङ्गेरी व कांचीपुरम के शंकराचार्य चुप्पी साधे थे। तिरुपति वाले भी चुप थे। मातृभूमि दैनिक ने इस प्रसंग मे नरेन्द्र जी की व्यवस्था मांगी। उन्होंने कुछ कहने से इनकार कर दिया। वैसे हमारा दृष्टिकोण वे लोग जानते ही थे। न करने पर भी पत्रों का आग्रह बना रहा। मलयालम मनोरमा का भी फोन आया। और भी कई पत्र वाले आये। आचार्य नरेन्द्रभूषण जी ने स्पष्ट कहा कि मैं तो वेद को परम धर्म मानता हूं परन्तु जिस गद्दी पर यह पुजारी है उन ग्रन्थों के अनुसार इनकी पूजा पद्धति को देखा जावे तो इसे त्यागपत्र देकर दण्ड भुगतना होगा। पुजारी ने अपनी भूल की घोषणा तो मेरे होते ही कर दी। नरेन्द्रभूषण जी की व्यवस्था भी पत्रों में छप गई।

यह है नरेन्द्रभूषण जी का व्यक्तित्व। आर्यसमाज में कभी स्वामी आत्मानन्द जी, स्वामी वेदानन्द जी पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु व पं० बुद्धदेव जी जैसे पण्डितों का लोहा मानते थे। आज यही गौरव केरल में आचार्य नरेन्द्र भूषण जी को प्राप्त है। उनके पाण्डित्य को सब स्वीकार करते हैं।

केरल में एक नई प्रकाशन संस्था ने जन्म लिया है। यह प्रकाशन संस्थान बहुत आगे निकल रहा है। वह नरेन्द्रभूषण जी का साहित्य भी छापने को उत्सुक है। मेरा मत तो यही है कि कोई एक आर्ष पुस्तक हो उन्हें देनी चाहिए। हमारा अधिक साहित्य हम स्वयं ही प्रकाशित करें। यह संस्थान सायण भाष्य भी छाप रहा है। इनमें नरेन्द्र जी का सहयोग मांगा। उन्होंने कहा कि वेद मन्त्र शुद्ध छापे जावें, मेरी इसमें इतनी ही रुचि है। उन्होंने वेद मन्त्रों की शुद्ध छपाई का भार नरेन्द्र जी पर ही डाल दिया है। सम्पादक के रूप मे इसपर उनका भी नाम होगा।

सायण भाष्य के छपने से अनर्थ तो होगा ही परन्तु अब केरलीय जनता इतनी मूर्ख नहीं कि इस अनार्ष विषैले भाष्य को स्वीकार कर ले। अब तो घर-घर में ऋषि दयानन्द घुस चुका है। हमारा साहित्य घर-घर जा रहा है। दूसरे प्रकाशक पुस्तक विक्रेता व साहित्य अकादमी भी नरेन्द्र जी के साहित्य के वितरक हैं। एक और ब्राह्मण ने अपनी ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका छपवाई है। आर्यसमाज तो एक स्कूल कम्पनी बनकर रह गया है। इनपर इन बातों का क्या प्रभाव हो सकता है।

गुरुकुलों ने आर्ष ज्योति जगा रखी है। इसलिए यहां वहां ऋषि भक्त आर्ष साहित्य में भी कहीं-कहीं अच्छी रुचि लेते हैं। ऐसे लोगों को चाहिये कि इस विष का प्रतिकार करने के लिए सामवेद का सुन्दर भाष्य तो मलयालम मे पूरा करके छपवा दें। यह भाष्य अभी पूरा नहीं हुआ। पत्रों में क्रमशः कुछ छपा भी था। 'स्वाध्याय सन्दोह' जैसा ग्रन्थ लिखने का भी उनका विचार है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद का जीवन-दर्पण

लेखक—डा० शान्तिस्वरूप शर्मा, पत्रकार, कुरुक्षेत्र

अमर शहीद पं० चन्द्रशेखर आजाद की जीवन कथा एक ऐसे विलक्षण व्यक्ति की कहानी है जिसने अपने शरीर को दुश्मन के द्वारा छूने तक न दिया, अंग्रेजी सरकार जिसको गिरफ्तारी के लिए सिर पटकती रही और जिसका भय सरकार को एक दुःस्वप्न की तरह ग्रसता रहा।

आपका जन्म २३ जुलाई सावन सुदी दूज सोमवार दिन के दो बजे १९०६ को भांवरा, मध्य प्रदेश में पं० सीताराम तिवारी की तीसरी पत्नी श्रीमती जगरानी की कोख से हुआ। देशभक्ति के इस सितारे ने एक बार जब स्वतन्त्रता आन्दोलन के क्षेत्र में पदार्पण किया तो मृत्यु पर्यन्त हर पल संघर्ष किया। शरीर काफी भारी था, चेहरे पर चेचक के दाग थे, दाहिनी आंख पर चोट का निशान था, लेकिन व्यक्तित्व में अद्भुत आकर्षण था।

असहयोग आन्दोलन के समय उम्र १४-१५ की रही होगी जब आपको भारत मा के लिए १५ बेंतों की सजा झेलनी पड़ी। कसूरी बेंत की मार खाते जाते और 'भारत माता की जय', 'वन्दे मातरम्' का घोष करते जाते।

आप साहस की प्रतिमूर्ति थे। भय ने कभी उनको छुआ नहीं। कहते थे कि बचपन में उन्हें शेर का मांस खिलाया गया था। विमरपुरा गांव के सातार नदी के किनारे ब्रह्मचारी रूप में रहते थे। जंगली जानवरों का भय तो लेशमात्र भी न था।

यूं ही एक बार आपको पोस्टर चिपकाने थे। पुलिस का बड़ा सख्त पहरा था। पोस्टर भी कोतवाली के पास लगाने का दुस्साहस कर बैठे। पुलिस वाला खम्भे के पास खड़ा था। आपने सीधी ओर मामूली लेई लगाई और उल्टी तरफ पूरी लेई लगाई। फिर सीधी ओर से पोस्टर पीठ पर चिपका खम्भे से पीठ लगाकर खड़े रहे। मौका पाकर निकल गए। सिपाही आश्चर्यचकित रह गया।

एक बार आपको पकड़वाने का षड्यन्त्र ठाकुर नाहरसिंह के मुंह लगे नौकर मोहना ने रचा। आपको भनक पड़ गई। आपको खूनी पेचिश लगी थी। लेकिन फौरन निकल गए तथा २८ मील का पैदल सफर करके झांसी पहुंच गए।

बम्बई में दिन में चना-चबेना खाकर गुजारा करते। रंगसाजों के साथ बिना खिड़की की कोठरी में रहते। जहां की हवा बीड़ी के धुएं से भरी रहती। ठंड में भी नीचे अखबार बिछाकर लंगोट बांध अपनी धोती ऊपर लेकर सो जाते। अपने ओढ़ने का कपड़ा साथियों को दे देते। हफ्ते में एक बार ही नहाना मिलता। जन पथ के नल पर स्नान होता। चोर बाजार से कपड़े खरीदते।

दिल में कभी कोई भेदभाव न था। बुन्देलखण्ड कम्पनी में उस्ताद सिराजुद्दीन व कल्लू पुरोहित के साथ मोटर मकैनिक का काम सीखते। उस्ताद की लड़की की शादी थी। ओरछा से बंहगी में दो कनस्तर देसी घी लाना था। इसलिए जंगल के रास्ते घी लाने का फैसला हुआ। आपका साथ रामानन्द ने दिया।

असम्भव शब्द तो आपके शब्दकोष में ही नहीं था। किसी भी कार्य को करने की तत्परता आप में थी। पं० रामप्रसाद बिस्मिल तो आपका 'क्विक सिल्वर' कहते थे। कोई भी एक्शन आपके बिना पूरा नहीं होता था। मौत से खेलना आपके लिए गुड्डे गुड्डी का खेल खेलना था। बाबा पृथ्वीसिंह आजाद ने आपके बारे में कहा था कि आजाद की संगत में ऐसा लगता था कि अगर मौत से खेलना हो तो साथ में ऐसा ही खिलाड़ी चाहिए।

वे दूरदर्शी थे। गोपनीयता के प्रति पूरे सजग थे। एक्शन के बाद कोई प्रमाण पीछे न छोड़ते थे। किसी भी साथी के पकड़े जाने के बाद ठिकाना बदल लेते थे। बात विश्वास व अविश्वास की नहीं थी, नीति की थी। कोई भी ऐसा कार्य नहीं करते थे जिससे साथियों का जान बचना खतरे में पड़ जाये। योगेश बाबू के छुड़ाने के प्रयास के समय अपनी शक्ति कम होने के कारण चुप्पी साध गये। विरोध भी हुआ लेकिन अटल रहे। वे जानते थे कि भावुकता में अनुचित कदम उठाना गलत था।

वे सच्चरित्रता के प्रतीक थे। टिमरपुर में ठाकुर मलखानसिंह की बहन की विधवा सहेली ने आपको लुभाने का प्रयास किया था। छत पर अकेले आपकी खाट पर जा बैठी। आप उठ खड़े हुए और जब कोई और रास्ता न बचा तो छत से कूदकर निकल गए। सरदार भगतसिंह के मजाक करने पर आपने कहा था कि आपकी प्रेमिका 'पिस्तौल' सदा आपके साथ रहती है।

२७ फरवरी १९३१ को सुबह सुखदेवराज आपसे मिलने आए। आल्फ्रेड पार्क इलाहाबाद में बैठ बात करने लगे। वीरभद्र वहीं से आपको देख निकला और म्योर कालिज के सामने फिर नजर आया। इतने में सी. आई. डी. एस. पी. नाटबावर सिपाहियों सहित आ धमके। फिर गोलियां चलीं। एक गोली एस. पी. के कन्धे में लगी। वह पेड़ की ओट में हो गया। आपकी जांघ में भी गोली लग चुकी थी। आप जामुन के पेड़ की ओट से गोलियां चलाते रहे। लड़ते-लड़ते वीर गति को प्राप्त हुए। पुलिस ने भयभीत हो पांवों पर गोलियां चलाईं। आपकी मृत्यु की तसदीक होने के बाद ही आपके पास आए। जांघ व पांव के अतिरिक्त गोलियां सिर व छाती में लगीं। एस. पी. ने भी इस वीर सपूत के निशानेबाजी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। २२ फरवरी का वह दिवस हमें सदा उस वीर शहीद की याद दिलाता रहेगा तथा हमें देशभक्ति के लिए तत्पर व अटल करता। रहेगा।

बाढ़ड़ा भिवानी में सर्वखाप पंचायत सम्पन्न

बहिन सुशीला काण्ड के दोषियों को गिरफ्तार कर सख्त दण्ड देने बारे २२-४-८५ को लोहारू खाप की ओर से बाढ़ड़ा में लोहारू ८४ के प्रधान श्री कांशीराम की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। पंचायत ११ बजे से ३ बजे तक चली। जिसमें कई खापों के सैंकड़ों लोगों ने भाग दिया। मुख्य वक्ता श्री [illegible]सिंह, लहणासिंह पूर्व तहसीलदार, श्री सूबेदार प्रधान किसान यूनियन भिवानी, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, श्री [illegible]सिंह मथोल, मा० [illegible]सिंह मलिक, श्री दलबीरसिंह पौची [illegible] शोभूकलां, श्री कमलसिंह सांगवान एडवोकेट आदि ने विचार रखे। सभी वक्ताओं ने सी.बी.आई. द्वारा मुख्यमन्त्री भजनलाल के परिवार के लोगों को हत्यारे घोषित करने पर मुख्यमन्त्री को हथकड़ी लगाने की मांग की। साथ में मुख्यमन्त्री के उस ब्यान की निन्दा की। उसने कहा था शायद सुशीला जीवित हो सकता है। दोषी सभी छूट गए हैं।

क्रान्तिकारी ने विशेषकर लोगों से शराब न पीने की अपील की। सरकार की शराब बढ़ावा नीति की आलोचना की। पंचायत में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास किया गया कि मुख्यमन्त्री को किसी भी खाप में न बुलाया जाये। सारी खापें उसका बहिष्कार करें। भविष्य में भी सभी खापों में जन जागरण अभियान जारी रहना चाहिए जब तक कि मुख्यमन्त्री को नहीं हटाया जाता और दोषियों को दण्ड न मिले। अगली पंचायत २३ मई को बनखंडी फवारा चौक के पास जीन्द में होगी।

—करतारसिंह सचिव जन संघर्ष समिति

अमरसिंह जाखड़ गांव मोरखनाली जि. सिरसा

श्री अमरसिंह जाखड़ गांव मोरखनाली जिला सिरसा के सरपंच चुने गए। ये शराबबन्दी समर्थक हैं। गांव में इन्होंने अवैध रूप से बिकने वाली शराब पूर्ण रूप से बन्द करवा दी है। गांव के विकासकार्य में इनकी विशेष रुचि है। इस गांव के आसपास सरपंच नहीं जिन्होंने गांव में शराबबन्दी का पग उठाया है। मा० रामकिशन आर्य [illegible] विद्यालय मोरखनाली (सिरसा)।

७ मई, १९९५

नमस्ते अभिवादन विश्व स्तर पर लोकप्रिय हो रहा है

लोकप्रिय अन्तर्राष्ट्रीय अभिवादन:-'नमस्ते'

द्वारा—प्रतापसिंह शास्त्री, पत्रकार, हिसार

हिन्दू जाति (आर्य जाति) में किसी समय अर्थात् सृष्टि से महाभारत पर्यन्त जातीय नाम के अनुकूल ही उसका एक 'अभिवादन' पद था। जिस पद से हमारे वेद शास्त्र रामायण, महाभारत, इतिहास, पुराण, उपनिषद्, आर्ष संस्कृत साहित्य आदि परिपूर्ण हैं। जिसके तुल्य संसार की किसी जाति, देश व भाषा में दूसरा सार्थक भावपूर्ण अभिवादन नहीं है, वह शब्द 'नमस्ते' है। दुर्भाग्यवश जहां हमने अपने गौरवशाली 'आर्य' नाम को भुलाया और हम विभिन्न नामों तथा सम्प्रदायों के मायाजाल में फंस गये वहीं हमने अनेक प्रकार के अभिवादन शब्दों की रचना कर ली। प्रत्येक सम्प्रदाय वालों ने अपने-अपने पृथक् अभिवादन सूचक शब्द निश्चित कर दिये हैं यथा—जय श्री राम, राम राम, जय राम जी की, जय सीताराम, जय श्री कृष्ण, जय गोपाल, जय शिव शंकर, भोले की, सत श्री अकाल, जो बोले सो निहाल, सत साहिब, जय गंगे माई, जय माता दी, प्रणाम, नमस्कार, दण्डवत्, पायलागन, बन्दे, जय हिन्द, सलाम, बन्दगी, तसलीम, राधा स्वामी, अदाब अर्ज, गुडमार्निंग, गुड इवनिंग, गुडबाई, धन निरंकार आदि।

एक विद्वान् ने 'नमस्ते' शब्द की परिभाषा करते हुए लिखा है—नमः ते अर्थात् नमः के प्रसिद्ध अर्थ सत्कार, श्रद्धा, आदर एवं नमन, झुकना आदि हैं। ते का अर्थ है तुम्हारे लिए इसलिए 'नमस्ते' का अर्थ हुआ मैं तुम्हारा आदर करता हूं, सत्कार करता हूं, तुम्हारे लिए नमन करता हूं। विद्वान् महोदय आगे लिखते हैं कि जब हम हाथ जोड़कर और सिर झुकाकर किसी को नमस्ते करते हैं, नमस्ते कहते हैं तो उसका मतलब होता है कि सिर प्रतीक है बुद्धि का, हाथ प्रतीक है बल का, और हृदय प्रतीक है प्रेम का अर्थात् हम कहते हैं कि जितनी बुद्धि हमारे अंदर है उससे, जितनी शक्ति बल हमारे अन्दर है उससे जितना प्रेम हमारे हृदय में है उससे हम आपके सामने सिर झुकाते हैं। हम बुद्धिपूर्वक विवेक से उसका हितचिन्तन करेंगे इसलिए सिर झुकाते हैं, बल से सहायता करेंगे अतः हाथ जोड़ते हैं हृदय से प्रेम करेंगे इसलिए जुड़े हुए हाथों के निचले भागों को छाती पर, वक्षस्थ पर रखते हैं और उपरि सिरे को सिर के नीचे।

अभिवादन शिष्टाचार का ही एक मुख्य अंग है हमारे पूर्वज परस्पर मिलते समय नमस्ते शब्द द्वारा एक दूसरे का अभिवादन करते थे। मनु महाराज ने मनुस्मृति में लिखा—

"अभिवादात् परं विप्रो ज्यायांसमभिवादयन्।
असौ नामाहमस्मीति स्व नाम परिकीर्तयेत॥"

अर्थात् जब नमस्ते अभिवादन करें तो कहें—"मैं अमुक नाम वाला आपको विनयपूर्वक नमस्ते करता हूं।

मनुस्मृति में आगे किन-किन को किस-किस प्रकार अभिवादन करे यह सविस्तार वर्णन है:—

रामायण में अयोध्या काण्ड श्लोक १६ सर्ग ३ में श्रीराम ने महाराजा दशरथ के समीप जा, हाथ जोड और अपना नाम लेकर पिता के चरणों में प्रणाम किया। वृद्धों को नमस्कार करने से क्या लाभ है? मनु लिखते हैं—"जो नमस्कार करने के स्वभाव वाला और प्रतिदिन वृद्धों की सेवा करता है उसके आयु, विद्या, यश और बल—इन चारों की वृद्धि होती है।" अभिवादन कैसे करना चाहिए इस विषय में महर्षि मनु ने लिखा अलग-अलग हाथ करके गुरु के पैर छुए, दाहिने हाथ से दाहिना और बाएं हाथ से बांया।

अयोध्या काण्ड सर्ग ५ श्लोक २४ में कहा है—उसी समय श्रीराम भी वहीं पहुंचे, वे माता कौशल्या को प्रणाम कर और उन्हें प्रसन्न करते हुए कहने लगे।

किष्किन्धा काण्ड सर्ग ५ श्लोक १५ में कहा है—मैं इन बाजूबन्दों को नहीं जानता और कान के कुण्डलों को भी नहीं पहचानता। हां मैं इन नूपुरों (बिछुओं) को अवश्य ही पहचानता हूं ये निश्चित रूप से सीता जी के हैं क्योंकि प्रतिदिन उनकी चरणवन्दना के समय मैं इन्हें देखा करता था।

इसी प्रकार अशोक वाटिका में पहुंचकर अवसर पाकर हनुमान ने सीता जी को हाथ जोड़कर प्रणाम किया तत्पश्चात् राम का सन्देश दिया और वार्तालाप किया। इन उदाहरणों से यह सिद्ध होता है कि रामायण काल में अभिवादन के लिए 'नमस्ते' शब्द का प्रयोग होता था। जहां तक वेदों का सम्बन्ध है उनमें सर्वत्र नमः, नमस्ते का वर्णन मिलता है। संध्या के मनसा परिक्रमा मन्त्रों में छः बार—'तेभ्यो नमः रक्षितृभ्यो नमः इषुभ्यो नमः अधिपतिभ्यो नमः' इत्यादि 'नमः' नमस्ते, नमस्कार का प्रयोग मिलता है। संध्या में नमस्कार मन्त्र—नमः शम्भवाय च नमः शंकराय च नमः शिवाय च आदि में भी नमः व नमस्ते का प्रयोग है इत्यादि सैंकड़ों मन्त्र नमस्ते अभिवादन के पक्ष में प्रस्तुत किए जा सकते हैं। विश्नोई सम्प्रदाय के संस्थापक जम्भा जी ने नमस्कार मन्त्र राजस्थानी भाषा में अपनी शब्द वाणी में निर्धारित किया है।

यह नमस्ते शब्द एकता में बांधने का सर्वश्रेष्ठ भावपूर्ण अभिवादन है किन्तु हमने अनेकानेक सारहीन वाक्यों को अपनाकर 'जितनी डफली उतने राग वाली' लोकोक्ति को चरितार्थ कर दिया। देश के स्वतन्त्र होने पर 'जय हिन्द' को राष्ट्रीय अभिवादन बनाने का सरकार की तरफ से प्रयास किया गया था किन्तु यह भी प्रचलित नहीं हो सका। हां, जयघोष के रूप में अवश्य इसे लोगों ने मान्यता दी।

अब आप नमस्ते की लोकप्रियता को देखें:—'नेपाल सरकार ने अपने राष्ट्र में राष्ट्रीय अभिवादन 'नमस्ते' उद्घोषित कर एक अभिनन्दनीय कार्य किया है यह शब्द भारत तथा नेपाल राज्य की सांस्कृतिक भावनाओं के सर्वथा अनुरूप है।'

पं० जवाहरलाल नेहरू के समय में अमेरिका में अन्तर्राष्ट्रीय सर्वधर्म सम्मेलन हुआ था। उस अवसर पर इस बात पर विचार किया गया कि सम्मेलन के दिनों में किसी एक अभिवादन को सर्वमान्यता देकर उसका प्रयोग किया जाये। सब धर्मों के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने अभिवादनों की प्रशंसा एवं विशेषता पर अपने विचार व्यक्त किये। भारतवर्ष के आर्यसमाज के प्रतिनिधि श्री पं० अयोध्याप्रसाद जी ने नमस्ते शब्द की व्याख्या की और उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डाला। यह शब्द लोगों को इतना प्रिय लगा कि सर्वसम्मति से 'नमस्ते' को अभिवादन रूप में अपना लिया गया। उसी का परिणाम था कि जब नेहरू जी अमेरिका सरकार के निमन्त्रण पर एक बार वहां गये तब वहां किसी विद्यालय के निरीक्षण के मौके पर वहां के छात्रों ने पं० नेहरू को 'नमस्ते' कहकर अभिवादन किया था। पं० नेहरू भी बड़े प्रभावित हुए और प्रतीत होता है इसीलिए पं० नेहरू ने वहां से लौटते समय बम्बई के हवाई अड्डे पर स्वागतार्थ एकत्रित जनसमूह को उन्होंने 'नमस्ते' से ही अभिवादन किया था। पं० नेहरू के बाद लाल बहादुर शास्त्री जब ताशकन्द समझौते के अन्तर्गत रूस गए तब उन्होंने धोती कुर्ता पहने हुए रूसी जनसमूह का नमस्ते से ही अभिवादन किया था और उन्हें जनसमूह का स्वागत उत्तर भी नमस्ते में मिला था। श्रीमती इन्दिरा गान्धी, चौ० चरणसिंह, मोरारजी देसाई, राजीव गान्धी आदि सभी प्रधानमन्त्री जनसमूह को नमस्ते शब्द से अभिवादन करना अच्छा समझते थे किन्तु इन्दिरा गांधी को 'जय हिन्द' शब्द से भी विशेष प्रेम था वह लाल किले की प्राचीर से भाषण देते हुए हमेशा तीन बार जय हिन्द बोलती थी और लोगों को भी साथ बोलने को कहती थी।

पं० प्रकाशवीर शास्त्री लोकसभा के सदस्य थे, आर्यनेता थे, उन्होंने पं० जवाहरलाल नेहरू को गुरुकुल ज्वालापुर महाविद्यालय में आमन्त्रित किया। वे हैलीकाप्टर से वहां पधारे। सभी ब्रह्मचारियों ने पं० नेहरू का 'नमस्ते' से अभिवादन किया। (क्रमशः)

धर्म और अधर्म

(स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती आर्ष गुरुकुल कालवा)

'धर्म' जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन, ाायाचरण, पक्षपातरहित, सर्वहित करना, सत्यभाषणादि युक्त यम-ायमादि पालन कराना है। न्याय-सत्य का ग्रहण और अन्याय-असत्य ा सर्वथा परित्याग रूप आचार, जो कि प्रत्यक्षादि आठ प्रमाणों सुपरीक्षित और वेदोक्त एवं वेदों से अविरुद्ध हैं, ऐसे सर्वतन्त्र ाद्धान्त जिनको सदा से सब मानते आए, मानते हैं, मानेगे अर्थात् ो तीन काल में सबको एक-सा मानने योग्य है (जो सबके अविरुद्ध ाता है), जिसको आप्त अर्थात् सत्यमानी, सत्यवादा, सत्यकारी रोपकारक पक्षपात रहित विद्वान् मानें, जो सृष्टि नियमों के अनुकूल ा। सब मनुष्यों को यही एक मानना योग्य है।

धर्म से जो विपरीत है, अर्थात् जिसका स्वरूप ईश्वर को आज्ञा थावत् पालन न करना, अन्यायाचरण, पक्षपात सहित अन्यायी ोकर सबके अहित के काम करके अपना ही हित करना, मिथ्या ाषणादि युक्त, विषयभोगरतता, जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से ापरीक्षित और अनार्ष ग्रन्थ प्रोक्त अवैदिक एवं अविद्या हठ अभिमान ाूरतादि दोषयुक्त होने के कारण वेद विद्या से विरुद्ध है, जो तीन ाल में एकसा मानने योग्य न हो और परस्पर विरुद्धाचरण युक्त ो, अविद्वान् अर्थात् दुराग्रही स्वार्थियों पाखण्डियों धूर्तों-मूर्खों द्वारा ातिपादित मत तथा जो सृष्टि नियमों के विरुद्ध है। सब मनुष्यों के लिये इनका छोडना योग्य है।

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयस्‌सिद्धिः स धर्मः (वैशेषिक दर्शन १।१।२)

जिनके आचरण करने का फल (अभ्युदय) इस संसार में (अर्थात् इस वर्तमान जन्म=इहलोक और परजन्म=परलोक मे उत्तम सुख और निःश्रेयस् अर्थात् मोक्ष सुख पाकर स्वतन्त्रता से सुख ही सुख का अनुभव करना होता है उसको प्राप्ति होती है, उसी का नाम धर्म है। इससे विपरीत फल अधर्म का होता है अर्थात् अधम से इहलोक और परलोक में दुःख ही दुःख उठाना पडता है और यह जन्म-मरण चक्र का कारण बनता है।

धर्म का फल भद्र अर्थात् अभ्युदय और निःश्रेयस् की सदा प्राप्ति होती है। धर्माचरण से कभी दुःख नही प्राप्त हो सकता, सदा सुख की प्राप्ति ही होती है और अधर्माचरण से कभी सुख नही प्राप्त हो सकता, सदा दुःख की प्राप्ति ही होती है। ईश्वर ने वेदों मे सब मनुष्यों के हित के लिए जिसका उपदेश किया है जिससे करने की आज्ञा दी है, प्रेरणा की है, वही धर्म अर्थयुक्त होता है और जिसका ईश्वर ने निषेध किया है, वह अनर्थयुक्त होने से अधर्म है। ऐसा जानकर सब मनुष्यों को इस अधर्म का त्याग करना चाहिये और धर्म का आचरण करना चाहिये अर्थात् इसी धर्म के अनुसार सब काम करने चाहिये। इस प्रकार के धर्माचरण से उपासक ईश्वर-सानिध्य=परमेश्वर की समीपता प्राप्त करता है।

धर्मं चर, अधर्मं त्यज—

सदा दृढ़कारी कोमल स्वभाव, जितेन्द्रिय, हिंसक-क्रूर-दुष्टाचारी पुरुषों से पृथक् रहने वाला उपकारी, धर्मात्मा व्यक्ति, मन के दमन और विद्यादि दान से सुख को प्राप्त होवे। इसलिए मिथ्या भाषणादि रूप अधर्म को छोड़ने के धर्माचरण से दुष्ट अधर्मयुक्त दुष्ट लक्षणों का नाश करता है। अधर्मात्मा मनुष्य धर्म की मर्यादा छोड़ के मिथ्या भाषण, कपट, पाखण्ड और विश्वासघात आदि कर्मों से पराये पदार्थों को लेकर प्रथम बढता है। धनादि ऐश्वर्य से खान-पान, वस्त्र-आभूषण, यान-स्थान, मान-प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है, अन्याय से शत्रुओं को भी जीत लेता है। परन्तु पश्चात् जड़ काटे हुए वृक्ष की तरह वह अधर्मी शीघ्र नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। क्योंकि किया हुआ अधर्म निष्फल कभी नही होता। परन्तु इस संसार में जैसे गाय को सेवा का फल दूध आदि शीघ्र नहीं होता, वैसे ही जिस समय मनुष्य अधर्म करता है, उसी समय अधर्म का फल भी नही होता। इसलिए अज्ञानी लोग अधर्म करने से नहीं डरते। तथापि यह निश्चय जानो कि वह अधर्माचरण धीरे-धीरे उस अधर्मकर्ता के सुखों को रोकता हुआ सुख के मूलों को काटता चला जाता है और पश्चात् अधर्मी दुःख ही दुःख भोगता है। यदि बहुतसा धन राज्य और अपनी कामना अधर्म से सिद्ध होती है तो भी अधर्म सर्वथा छोड़ देवे और ऐसा वेद विरुद्ध धर्माभास जिसके करने से उत्तरकाल में दुःख एवं संसार की उन्नति का नाश होवे, वैसा नाममात्र का धर्म और कर्म कभी नहीं करना चाहिए।

जो पुरुष धर्म का नाश करता है, धर्म उसी का नाश कर देता है और जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म भी उसी की रक्षा करता है। इसलिए मारा हुआ धर्म कभी हमको न मार डाले (धर्म विरुद्धाचरण से हम नष्ट न हो जावें) इस भय से धर्म का हनन (त्याग, अधर्माचरण) कभी नहीं करना चाहिये। सब मनुष्यों को चाहिये कि धर्म से वेदादि शास्त्रों का पठन-पाठन, गायत्री, प्रणवादि का अर्थ विचार, ध्यान, कर्मोपासना, ज्ञान, सत्योपदेश और योगाभ्यास आदि उत्तम कर्मों से इस शरीर को ब्रह्मसम्बन्धी करें। अर्थात् इस जन्म को ब्रह्मसान्निध्ययुक्त करें और 'ओ३म्' पदवाच्य परब्रह्म परमात्मा की कृपा से और अपने धर्मयुक्त पुरुषार्थ से परस्पर शरीर मन और आत्मा को प्राप्त होनेवाला त्रिविध दुःख नष्ट हो जावे। और हम सब लोग प्रीति से एक दूसरे वर्त्त के धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की सिद्धि में सफल हो सदैव स्वयं आनन्द मे रहकर सबको आनन्द में रखें।

ईश्वर और धर्म दोनों का घनिष्ठ सम्बन्ध है। धर्माचरण से मनुष्य का अन्तःकरण शुद्ध होता है, जिससे उसे इष्टदेव परमदेव दर्शनीय ब्रह्म का प्रत्यक्ष होता है। जिसकी कृपा से त्रिविध दुःखों और दशधा पापों से मुक्त होकर जन्म मरण के चक्र से निकल परम सुख को प्राप्त होता है।

(पृष्ट ३ का शेष)

मैं कहा करता हूं कि आज तो लड़ाई लेखनी व जीप की है। जितना अधिक साहित्य प्रकाशित करोगे उतना ही ऋषि मिशन फैलेगा। हमारा केरल में एक भी स्कूल नहीं, कोई मन्दिर नहीं फिर भी हम विश्वविद्यालयों में हैं, प्रेस मे हैं, मन्दिरों में हैं और मठों व आश्रमों में हमारी आवाज गूंज रही है। क्यों ? हमारा आदर्श पं० लेखराम, स्वामी वेदानन्द व पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय रहे हैं। घूम-घूम कर प्रचार होगा तो ईश्वर की वाणी गूंजेगी। यहां तो तुम्हारे कालेजों, स्कूलों वाले मांस अण्डे का प्रचार कर रहे हैं। वेद में गोमांस की गन्दी निराधार बातें लिखते हैं। आर्य बाहर से आये, ऐसा विचार इन पुस्तकों मे है। वेद में इतिहास मानते हैं। नाम तो गिनाओ कि कौन-कौन प्रिंसिपल वेद को नित्य ईश्वर का नित्य ज्ञान मानता था ? प्रभु की कृपा से केरल में ईश्वर की वाणी गूंज रही है।

प्रवेश सूचना

योग, सांख्य, वैशेषिक, न्याय आदि वैदिक दर्शनों का संस्कृत भाष्यों सहित अध्ययन करने एवं वैदिक योग प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु प्रवेश आरम्भ है। भोजन, वस्त्र, पुस्तक, आवास आदि सुविधाएं निःशुल्क।

विद्यार्थी १८ वर्ष से ऊपर, व्याकरणाचार्य, शास्त्री व समकक्ष योग्यता वाला, यम नियम का पालन करने और पूर्ण अनुशासन में चलने वाला, वैदिक सिद्धान्तों पर श्रद्धा-विश्वास रखने वाला हो। स्थान सीमित हैं। इच्छुक ब्रह्मचारी शीघ्र सम्पर्क करें।

आचार्य—दर्शन योग महाविद्यालय,
आर्यवन, रोजड,
पो० सागपुर, जि० साबरकांठा
गुजरात—पिन-३८३३०७

शराब का ठेका बन्द करवाने के लिए महिलाओं द्वारा धरना एवं ठेके पर ताला लगाया

(निज सम्वाददाता द्वारा)

ग्राम सुल्तानपुर (हिसार) में जगदीश पूर्व सरपंच की भूल के कारण तीन वर्ष में बस अड्डे के निकट शराब का उपठेका खुला हुआ था। इस गांव में शराब लोग ज्यादा पीते हैं। महिलाएं शराबियों से बहुत परेशान हैं। इस बार नवनिर्वाचित सरपंच श्री धारासिंह मलिक ने फरवरी मास में ठेका बन्द करवाने हेतु सर्वसम्मति से पंचायत प्रस्ताव पास करवाकर सम्बन्धित अधिकारियों को भेज दिया था। परन्तु सरकार व प्रशासन ने कोई ध्यान नहीं दिया। हांसी के ठेकेदार श्री मांगेराम ने प्रशासन से मिलकर ठेका पुन: खोल दिया।

कुछ भाऊक नवयुवक १ अप्रैल को धरने पर बैठे जिनमें शराब पिये हुवे भी थे। कुछ समय के बाद वह उठ गए। ठेकेदार के हौसले बुलन्द होगए। गांव में शराबियों का पुन: बोलबाला होगया। महिलाएं दुःखी हैं।

३० अप्रैल को गांव की महिलाओं की मीटिंग हुई। १ मई को जिला परिषद् की सदस्या श्रीमती सत्यबाला सुल्तानपुर की अध्यक्षता में सैकड़ों महिलाओं ने ठेके पर जाकर ठेकेदार के कारिन्दों को बाहर निकालकर ताला लगा दिया और धरने पर बैठ गईं।

सूचना मिलते ही सभा उपदेशक एवं संयोजक शराबबन्दी समिति जिला हिसार के श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी भी धरने पर आया। वहां सभा को सम्बोधित करते हुवे सर्वप्रथम बहादुर महिलाओं का धन्यवाद किया। इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान से अवगत कराया। सरकार की शराब बढावा नीति की कटु आलोचना की। महिलाओं को धरनों का अपना अनुभव बताते हुवे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। साथ में गांव के लोगों को लताड़ा कि तुम्हें शर्म आनी चाहिए। तुम शराब पीते हो और अब तमाशा देख रहे हो, माताए-बहिने ठेके पर धरना दे रही हैं।

रात्री को भी ४२ महिला धरने पर रहीं वही उनका भोजन घरों से आया। श्री क्रान्तिकारी भी गांव के नवयुवको के साथ रात्री को धरने पर बैठा। रात्री को आंधी, वर्षा, भूचाल आया। महिलाएं दरी ओढ़कर धरने पर जमी रहीं। प्रात:काल अत्तरसिंह आर्य ने निकट के गांव मुहजादपुर में जाकर सुल्तानपुर के सरपंच श्री धारासिंह से सम्पर्क किया। सरपंच वहां एक शादी में आया हुआ था।

सरपंच गाव का शराबबन्दी हेतु सहयोग न मिलने पर दुःखी था। श्री क्रान्तिकारी जी ने सरपंच को सब बातें समझाते हुए कहा अपने सातबास के ११ गांव में सुल्तानपुर के सिवाए कही भी ठेका नही है। आप थोड़ी सी हिम्मत करो। इन महिलाओं को साथ दो और इस पाप के अड्डे को गांव से उठाकर पुण्य के भागी बनो। सरपंच ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। धरना जारी है जब तक ठेका पूर्ण बन्द नहीं होगा धरना जारी रहेगा। महिलाएं शराबन्दी गीत गा रही हैं। सायंकाल आर्य जी की प्रेरणा से बच्चे शराबबन्दी नारे लगा रहे हैं धरने पर दृश्य देखने योग्य है। महिलाओं में काफी उत्साह है।

जिन महिलाओं ने शुरुआत की है उनके नाम इस प्रकार हैं— जिला परिषद् को सदस्या श्रीमती सत्यबाला, असमतिदेवी, केलादेवी, मालीदेवी, मनोदेवी, पारवती, जीवणी, कमलेश, फूलपति, ओमपति, भरपाई, जीओ, सरस्वती, निम्बो, धर्मो, रामकला, बिरदे, छोटो, राजो चन्द्रो, पनमेशरी, फूला, शान्ति, चन्द्रपति, फुली, जरमनो, कान्ता, मुलां, फतिया, छोटो, हरवंशकौर, सरती, सुजानी, ओमपति, सुनिता, मतो, नरेश, खजानी, शान्ति, लिच्छमी, भागा, केला, कृष्णा, बिमला, रोशनी, बीरो, सरवती गुड्डी, बला, मना, राजपति, चन्द्र आदि।

कुछ नवयुवक जो क्रान्तिकारी के साथ प्रथम रात्री धरने पर रहें। श्री सुरजमल, केलाराम, रघुबीर, बलवान, बलराज पंच, राजकुमार, दलबेर, बलवन्त, ईश्वर, जगबी, बलबीर, बिजेसिंह रूपचन्द, कर्णसिंह, बलवान पंच आदि।

ज्ञातव्य है कि यह धरना विशुद्ध असमतीदेवी व सत्यबाला की अध्यक्षता में महिलाओं का धरना है। क्रान्तिकारी जी ने ३ मई को पुन: आश्वासन दिया है कि शीघ्र ही उमरा-कंवरी मुहजादपुर, नलवा बालवास को महिलाओं का भी सहयोग मिलेगा। आपकी १००% जीत होगी।

(पृष्ठ १ का शेष)

विद्यालयों दूसरी भाषा का प्रश्न—

भारत सरकार ने तीन भाषाई सूत्र बनाया।

१. मातृभाषा, २. यदि मातृभाषा हिन्दी हो तो एक क्षेत्रीय भाषा, यदि हिन्दी न होकर अन्य भाषा हो, तो हिन्दी, ३. अंग्रेजी। १९६८ में अन्नादुरै सरकार ने तीन को जगह दो भाषाई सूत्र तमिलनाडु के लिए बना दिया। १ मातृभाषा, २. अंग्रेजी। हिन्दी की शिक्षा समाप्त। भारत सरकार ने जो विद्यालयों से बाहर हिन्दी पढना चाहे उनके लिये अपदस्थ शिक्षकों को हिन्दी पढ़ाने के लिए रख लिया। करुणानिधि ने आन्दोलन की धमकी दी। मैं अन्नादुरै से मद्रास में मिला। मेरी किसी बात का जवाब तो उनके पास नहीं था, परन्तु उन्होने कहा कि तुम हिन्दीवालों को तमिल पढ़ाओ, मैं सबको हिन्दी पढ़ा दूंगा। उनकी इस बात से राष्ट्रीय एकता का एक सूत्र मेरे हाथ लगा। मैंने सोचा कि दक्षिण भारत की भाषाओं के पढ़ाने का प्रबन्ध हिन्दीभाषी प्रदेशों में होना चाहिए। मैंने बन्सीलाल जो उस समय हरयाणा के मुख्यमन्त्री थे, कुछ विद्यालयों में तेलगू दूसरी भाषा के रूप में पढ़ाई जा रही है। तथाकथित पंजाबी भाषा के तथाकथित विशेषकर पंजाब के अकाली और कांग्रेसी सिख तेलगू की पढ़ाई हरयाणा में समाप्त करने के लिए कह रहे हैं। जैसे हरयाणा का राज वे चला रहे हैं। १९-४-९५ को गान्धी जी की १२५वीं जयन्ती मनानेवाली हरयाणा की समिति की बैठक में मैंने चण्डीगढ में यह बात उठाई थी।

दूसरी भाषा के रूप में सभी भारतीय भाषाएं—

मैं अनेक वर्षों से यह बात कह चुका हूं, परन्तु इधर ध्यान जाता ही नहीं। कैसा दुर्भाग्य है देश का, कि तोडनेवाली बात तो केवल सुनते ही नहीं उस पर अमल भी करते हैं और देश को जोडनेवाली बात को सुनकर भी अनसुनी कर देते हैं। मैं मानता हूं कि सभी प्रदेशों में दूसरी भाषा के रूप में भारत की सभी भाषाओं के पढाने का प्रबन्ध कुछ-कुछ विद्यालयों में अवश्य हो। उन भाषाओं के पढ़नेवालों के लिए प्रत्येक प्रदेश के प्रशासन और सचिवालय में हर भाषा के लिये स्थान आरक्षित हो, ताकि उन स्थानों पर नियुक्ति की आशा से विद्यार्थी पूरी रुचि से उन भाषाओं को सीखे। ऐसा प्रबन्ध करने पर हर प्रदेश के साथ उसकी भाषा में पत्र-व्यवहार हो सकेगा। भाषाओं के बोलने का अभ्यास करने के लिए छुट्टियों में विद्यार्थी जो भाषा सीख रहे हैं उसके प्रदेश में एक महीने के लिए जाकर रहें। इस प्रकार सब भाषायें ही नहीं नवयुवकों के दिल भी जुड़ेंगे और हिन्दी और अन्य भारतीय भाषायें अधिकृत स्थान ले सकेगी। विदेशी भाषा और विदेशी संस्कृति का भूत लोगों के सिर से उतरेगा। भारत वास्तव में राष्ट्रीयता की की भावना से सिंचित एक महान् राष्ट्र बन सकेगा।

तथाकथित पंजाबी हिन्दू और अकालियों की मनोवृत्ति एक—

जैसे अकाली किसी बात पर टिकते ही नहीं, वही हालत तथाकथित पंजाबी हिन्दू की भी है। कुछ महत्त्वाकांक्षी भाजपाई और कांग्रेसी नेताओं ने ऐसा गुमराह किया है, इन लोगों को, कि उनकी स्थिति बड़ी हास्यास्पद होगई है। वे लोग अमृतसर में रहनेवाले की भाषा तो हिन्दी बताते हैं और रोहतक में रहनेवाले की पंजाबी। जो लोग ४८ वर्ष से हरयाणा में बसे हुए हैं, यदि उनको कोई पंजाबी कहदे, तो वे कहते हैं कि इतने वर्षों के बाद भी क्या वे हरयाणवी नहीं हो गये। यदि उनको कोई हरियाणवी कहे तो वे कहते हैं कि वे तो पंजाबी हैं, पंजाबी सभा भी उन्होंने बना डाली है और उसके नाम पर सब जगह आरक्षण माग रहे हैं। जब कहें कि इनकी भाषा पंजाबी है तो ये कहते हैं कि पंजाबी नहीं हिन्दी है और जब कहें कि इनकी भाषा हिन्दी है तो ये कहने लगते है, हिन्दी नहीं पंजाबी है। वे क्या हैं और उनकी भाषा क्या है, कोई नहीं जान सका, स्वयं वे भी नहीं। अकाली और तथाकथित पंजाबी हिन्दू कहीं टिकते ही नहीं। तथाकथित पंजाब की समस्या इनकी ही देन है। भुगतना पड रहा है हरयाणा को। हरयाणा क्यों भुगत रहा है यह मैं पहिले ही बता चुका हूं।

वैदिक यति मण्डल की बैठक

सार्वदेशिक वैदिक यति मण्डल की एक बैठक आबू पर्वत जिला सिरोही राजस्थान में होगी। २७ से २९ मई आर्य गुरुकुल, देलवाड़ा आबू पर्वत सभी नैष्ठिक वानप्रस्थी, संन्यासी अवश्य पहुंचने की कृपा करें।

सर्वानन्द सरस्वती प्रधान

इस्लाम पर आर्यों की विजय

७-३-१९९५ को गांव गढ़ी कलां में इस्लाम अर्थात् मुसलमानों का सामूहिक जलसा होने वाला था, जिसमें महाशय टेकचन्द आर्य गांव कुराड़ (सोनीपत) निवासी के दिल मे उमंग हुई कि मैं भी उस जलसे मे शामिल होऊं और अपने धार्मिक विचार उनके सामने रख सकूं। इसलिए ६-३-९५ को गढ़ी कलां पहुंच गए। वहां पर हाजी शमशेर अहमद महल्ला, कदमरसूल कराना (उत्तरप्रदेश) हाफिज बशीर अहमद महल्ला तलादेही भिनभाना जि० मुजफ्फरनगर (उ.प्र.), हाजी जमशेर मदरसा ईदगाह कालोनी सोनीपत व भूतपूर्व सरपंच आगे गढ़ी कलां और भी काफी हाजी मौलवी थे इनसे मेरी बातचीत हुई। मैंने कहा कि मैं भी इस जलसे में अपने विचार रखना चाहता हूं। उन्होंने कहा आप लिखकर दीजिए। मैंने उनके कहने पर लिखा जो कि निम्नलिखित है—

इस सारी प्रजा का मालिक एक है, और हम सब उसी की सन्तान हैं। जो उसकी सन्तान से प्यार नहीं करता, जो सारी बहिन बेटियों की इज्जत को अपनी नहीं समझता, जो स्वार्थवश होकर दूसरे प्राणियों को कष्ट देता है, वह खुदा का प्यारा नहीं हो सकता। खुदा हर जगह है, क्योंकि वह सर्वव्यापक है। खुदा का कहीं एक जगह पर ठिकाना नहीं है, जो एक जगह पर हो वह खुदा नहीं हो सकता। खुदा न्याय करता है। खुदा के न्याय में किसी की सिफारिश नहीं होती, न उसका कोई बिचोलिया है। हमे वह रास्ता अपनाना चाहिए जिससे उसकी सारी प्रजा को सुख मिले। सब प्यार से रहें।

यह लेख मैंने उनको दिया ताकि इन्हीं विचारों के आधार पर मेरा भाषण (तकरीर) कराया जाए। आपकी बड़ी मेहरबानी होगी। सब ने इन विचारों को ठीक माना और मुझे विश्वास दिलाया कि हम जलसे में तकरीर के लिए समय देंगे और कहा ७-३-९५ को आठ बजे प्रातः आ जायें। मैं सुबह ८ बजे मस्जिद में पहुंच गया। सारे हाजी मौलवी मिले। हाजी शमशेर अहमद ने मेरा लेख मौलवियों को दिखाया। उनमें से कुछ आदमियों ने इन्कार किया कि आपको समय नहीं मिलेगा। मेरे विचारों की सारे जलसे में चर्चा थी। वहां किसी की हिम्मत नहीं हुई कि मेरी तकरीर जलसे में कराई जाए।

हर मुल्लां की जबान पर मेरे नाम की चर्चा थी। मैं जिधर से निकलता था मेरी तरफ उंगली उठती थी। यह सब ऋषि दयानन्द की कृपा है कि जहां कई हजार आदमी इस्लाम के मानने वाले इकट्ठे हों और मैं एक साधारण मनुष्य घोषणा करता हूं कि आओ मिल बैठकर विचार करें, वह रास्ता अपनाएं जो बुद्धि की कसौटी पर पूरा उतरे, परन्तु मेरे सामने कोई बात करने के लिए नहीं आया।

महाशय टेकचन्द आर्य
गांव कुरार (सोनीपत)

प्रवेश परीक्षा

आर्य जगत् की सुप्रसिद्ध संस्था आर्ष विद्या केन्द्र प्रभात आश्रम मेरठ की प्रवेश परीक्षा इस वर्ष दिनांक १५, २०, २५, ३० जून को होगी। प्रवेशार्थी छात्र स्वस्थ, मेधावी एवं पंचम कक्षा उत्तीर्ण हों। सुदूर प्रान्त से आये प्रवेशार्थियों को वरीयता दी जाएगी।

पत्र-व्यवहार का पता :
व्यवस्थापक—प्रभात आश्रम
भोला, मेरठ उ. प्र. २५०५०१

बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक फोन : (७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ४०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ पंजि० सं० [illegible] दूरभाष १, ५६, ०८, ६६,०६ ६

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष २२ अंक २३ १४ मई, १९९५ (वार्षिक शुल्क ५०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

भारत के संविधान एवं जनता के साथ राजनीतिक सत्ताधीशों द्वारा सामूहिक बलात्कार

"अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः"

इस श्लोक द्वारा विश्वविख्यात कवि कालिदास ने हिमालय की तराई में बसे भारतीय क्षेत्र को 'देवतात्मा' विशेषण से अलंकृत किया था। इस 'सुरालय' (देवालय) प्रान्तर के नाम को आज कांग्रेसी मुख्यमन्त्री महोदय एक नया अर्थ प्रदान कर रहे हैं, वह बरातों को अधिक शराब पिलाने की प्रेरणा दे रहे हैं, अधिक शराब पिलाने को सुविधा प्रदान करके, यानि कि पवित्र देवभूमि हिमाचल प्रदेश को 'सुरा-आलय' शराब का मन्दिर बनाए बगैर उनकी वीरता या भद्रता भला कैसे साबित होगी। यह कांग्रेस-शासित राज्य है। लेकिन भाजपाई राज्यों से इनका शराब को लेकर कोई टकराव नहीं। न ही इन भोले-भाले मन्त्री जी को यह पता है कि सरकार की ओर से शराब सुलभ कराने के बाद बेटी के बाप का क्या हाल होगा। हर तरह के दुःख दर्द के पचड़े में पड़ना राजाओं को शोभा नहीं देता। गरीब लोग होते ही क्यों हैं अगर उन्हें दुःख नहीं झेलना हो! और अब तो बेटी के ब्याह में सरकारी सहायता भी मिलने लगी है।

उधर, जिस तरह राजस्थान की भाजपाई सरकार ने मुख्यमन्त्री श्री भैरोंसिंह शेखावत के नेतृत्व में 'केडिया' नाम की शराब-निर्माता कम्पनी को निहाल करने के लिए राजस्थान के सुरम्य आदिवासी अंचल के किसानों की जमीन छीन ली है, उससे लगता है 'राम और कृष्ण' जैसे 'विष्णु' के अवतारों के पुजारी, इस राजनीतिक दल के नेता अब अपने भगवान् को 'क्षीर-सागर' की बजाय मदिरा के समुद्र में डुबोएंगे। अब शेष-शैया पर शयन करने की बजाय शराब का जहरीला नाग इनके 'विष्णु' को जब तक डस नहीं लेगा तब तक इनकी पूजा पूर्ण नहीं होगी। इन्हें यह भी भूल गया कि गीता के प्रणेता योगिराज श्रीकृष्ण को अपने यदुवंशी बन्धु-बान्धवों के मदिरा सेवनादि भ्रष्ट आचरणों के कारण, उनके विनाश का साक्षी बनना पड़ा था और जीवन के अन्तिम चरण में उनकी व्यथा का कोई पारावार न था। लेकिन कांग्रेस को इस मुद्दे पर भाजपा से कोई टकराव नहीं मोल लेना।

आखिर करें क्या। इस देश की राजनीति ऐसी भ्रष्ट पाखण्डी बेहया हो चुकी है कि चाहे गांधी की नामलेवा कांग्रेस हो, अयोध्या में राम का नाम लेकर नरसंहार की स्थिति पैदा करनेवाली भारतीय जनता पार्टी, चाहे 'गरीबों के मसीहा' बने लालूप्रसाद हों या दिल्ली के जगदीश मुखी, राजनीति की काली कोठरी में जानेवाले सभी सत्ताधीशों को शराब की 'कलंक-रेखा' अपनी 'सौभाग्य रेखा' ही प्रतीत होती है। शारीरिक, बौद्धिक, पारिवारिक और आर्थिक—हर दृष्टि से भारत के गरीब किसान, मजदूर, अध्यापक, कारीगर—सबको तबाह करके 'शराब की पाईप लाईन से राजस्व बटोरना' एकमात्र वह पैशाचिक धन्धा जिस पर सब राजनीतिक दल एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में हैं और एक को दूसरे का पूर्ण समर्थन है। सभी राजनीतिक दलों में 'मद्यनीति' को लेकर जो 'चमत्कारिक एकरूपता' है, वह कोई रहस्य नहीं।

वास्तविकता यह है कि मद्यपान केवल पापों की जड़ ही नहीं—यह उपजता भी पापाचार से ही है। जब तक कोई समाज पतन की एक सीमा से भी नीचे न गिर जाए—वो मद्यपान जैसी बुराई को बढ़ावा दे ही नहीं सकता। आज देश में 'विश्वसनीयता के अभाव' का संकट इतना गहरा चुका है कि कभी-कभी सन्देह होने लगता है कि इस खाई से हमारा देश बाहर भी आ सकेगा या नहीं। हर दल की सरकार 'शराब-माफिया' के 'पे-रोल' पर है। कहावत है "हाथ लेता है आंख शरमाती है"। शराब-निर्माताओं के टुकड़ों का मुहताज सरकारें आम आदमी के सुख-दुःख की सोचेंगी, जो ऐसी आशा करता है उससे अधिक मूर्ख और कौन होगा। जहां-जहां राजनीतिक दलों ने शराब की बिक्री के विषय में अपना रवैया बदला है, उन्होंने भी कोई लोक-कल्याण की कामना से यह पवित्र कार्य नही किया। बल्कि इस 'हथकण्डे' के बिना 'कुर्सी' मिलना मुश्किल था। भ्रष्ट उपायों से धन [illegible] की इच्छुक सरकारें, अफसर या मन्त्री या पीने का लती-लोभी आदमी [illegible] अपने स्वार्थ में इतना लिप्त हो चुका है कि वह देशहित [illegible] न सोच सकता है न कर सकता है। इस अधोगति को केवल मुक्त[illegible] जनता, विशेषतः परिवार के हित से चिन्तित महिलाएं आत्म-बलिदान से ही दूर कर सकती हैं।

बहुत पहले जंगे आजादी के दौरान एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी 'देश की बात', इस पुस्तक को अंग्रेजों ने जब्त कर लिया था। [गुरुकुल जैसी राष्ट्रीय और देशभक्त संस्था की छात्रा न होती तो हमें भी उस पुस्तक के दर्शन न होते। लेकिन आर्यसमाज की क्रान्तिकारी विचार-धारा से ओत-प्रोत वायुमण्डल में वह पुस्तक हमें अपने पाठ्यक्रम में साधारण-ज्ञानवर्धक ग्रन्थ के रूप में दी गई] इसमें बहुत विशद रूप से अंग्रेजों की धांधली और खोटी नीयत का चित्र प्रस्तुत किया गया था। चाहे अपने देश की बनी वस्तुएं भारत में बेचकर भारत के उद्योग-धन्धे नष्ट करने की बात हो, चाहे अलग-अलग बहानों और हथकण्डों से भारत के विभिन्न प्रदेशों को ब्रिटिश साम्राज्य में शामिल करने का हक हो—अपनी हर उल्टी-सीधी करतूत को कानूनी जामा पहना कर अंग्रेज भारत पर अन्यायपूर्ण शोषण का शिकजा कस रहे थे। अतः 'देश की बात' के लेखक ने अंग्रेजो को 'सभ्य लुटेरे' कहकर कोसा था। आज शराब की बिक्री भी उसी 'सभ्य लूट' की कथा दोहरा रही है। संविधान का चीरहरण करके सभी राजनीतिक दलों के सत्ताधीश शोषक इस 'सभ्य लूट' में भागीदारी कर रहे हैं। आम जनता के पास इन 'स्वदेशी संवैधानिक लुटेरों' की 'असंवैधानिक लूट' से लड़ने की ताकत नहीं है और जनता की इस मजबूरी को ये 'लुटेरे' भी भली-भांति जानते हैं। अपनी रक्षा की रणनीति से अनभिज्ञ जनता यह देख-देख कर बेहाल है कि सभी राजनीतिक दल 'सामूहिक बलात्कार' की मानसिकता से उसे तबाह कर रहे हैं। एक के शोषण से तंग आकर वो दूसरे के हक में मतदान करते हैं। लेकिन जनता का शोषण बन्द नहीं होता। बल्कि नया आनेवाला दल अन्याय और भ्रष्टाचार के और भी

(शेष पृष्ठ ८ पर)

शराबबन्दी आन्दोलन की गतिविधियाँ—

पाल्हावास शराबबन्दी प्रगति के पथ पर

डा० अनिलकुमार आर्य, संयोजक—शराबबन्दी समिति, जिला रेवाड़ी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

पाल्हावास जिला रेवाड़ी में सन् १९९३-९४ में यहां के बहादुर नागरिकों ने संगठित होकर सरकार द्वारा खोले गए शराब के ठेके के खिलाफ जमकर सत्याग्रह किया था। पूरे दस महीने शराबबन्दी संघर्ष समिति, पाल्हावास क्षेत्र के सदस्यों ने गांव के शराब के ठेके के सामने निरन्तर चौबीसों घण्टे धरना चलाया था। चूंकि धरने में बैठनेवाले लगभग सभी किसान थे, इसलिये दिसम्बर, जनवरी में खेतों की बिजाई के लिए उन्हें जरूर बीच में हटना पड़ा, परन्तु ठेका स्थान के आस-पास खेतों में काम करते पुरुषों एवं महिलाओं ने तो वर्ष भर ही वहां आनेवाले "शराबियों का पीछा रखा, जिससे उस दुकान पर कोई खास बिक्री नहीं हो सकी। प्रतिनिधि सभा हरयाणा के आर्य नेताओं व अन्य प्रगतिशील सामाजिक राजनैतिक संगठन कर्त्ताओं तथा क्षेत्र की जनता के सहयोग से पाल्हावास के बुद्धिमान् निवासियों ने इस प्रकार शराब के ठेकेदारों को साढ़े सात लाख रु० का नुकसान पहुंचाया जबकि ठेका सवा सात लाख रु० में नीलाम हुआ था।

गांव का तत्कालीन सरपंच शराब समर्थक था। उसी के प्रस्ताव और मिलीभगत से उक्त शराब ठेका गांव में खुलवाया गया था। दूसरे वर्ष भी सरपंच ने ठेके को मंजूरी दे दी। इसलिए आबकारी आयुक्त हरयाणा ने पुनः यहां ठेका खोलने के आदेश भेज दिये। नीलामी तिथि से कुछ दिन पूर्व जिला रेवाड़ी के आबकारी अधिकारियों ने ठेकेदारों से पाल्हावास के ठेके की बोली भी देने के लिए तैयार रहने को कहा। लेकिन लोगों के संघर्ष ने करिश्मा दिखाया। सभी ठेकेदार बोली देने से नटते चले गए। गत वर्ष को हानि के भय से उन्होंने हाथ खड़े कर दिये थे। उनका कहना था, 'ठेके हम मुनाफा कमाने के लिए लेते हैं। इसलिए बर्बाद होने की दुकानदारी हमने नहीं करनी। पिछले वर्ष ही पाल्हावास से मुश्किल से पीछा छुटाया है, अब के फिर मुसीबत में जान हमने नहीं झोंकनी। अभी तो वहां से केवल आर्थिक नुकसान ही नहीं हुआ था, यदि इस बार फिर वहां की शान्त जनता से छेड़छाड़ की तो हो सकता है हमें जान-माल का भी खामियाजा भुगतना पड़े। उसकी भरपाई हम कहां से करेंगे" और यह संवाद एक से दूसरे ठेकेदार के कानों में पहुंचता गया तथा सब इन्कार करते गए। इस तरह हमारे नालायक सरपंच ने मुंह की खाई, सरकार को अपना गन्दा इरादा छोड़ना पड़ा तथा जनता की विजय हुई।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि जनता यदि उठ खड़ी हो किसी अच्छे उद्देश्य पर तो सरकार की कोई ताकत नहीं कि अपनी मनमानी चला सके। देर-सवेर उसे झुकना ही पड़ेगा यह जनसंघर्ष की ही बदौलत था कि पाल्हावास से इस शरारत के पानी 'शराब' का ठेका हटा, किसी मन्त्री या अधिकारी की मेहरबानी से नहीं। सरपंच की मांग के बावजूद सरकार अपना यह नापाक कदम गांव की ओर बढ़ा नहीं पाई क्योंकि यहां की जनता में जागृति और संगठन था जिसके भय से शराब के ठेकेदार थर्राए वरना आबकारी प्रशासन तो ढूंढता फिरता है कि कोई सरपंच उन्हें अनुमति देनेवाला मिले और वे इस पाप के अड्डे को उसके यहां जमा सकें। इस सरकार के निकम्मेपन की भी हद हो रही है।

अगर अच्छा राज हमें लाना है तो उसे चुननेवाली प्रजा भी हमें अच्छी बनानी होगी जो सूझबूझ के साथ अच्छे राजनेताओं और इस उद्देश्य के समर्पित अच्छी पार्टियों का चुन सके। अगर लोग पी-पी कर डालते रहेंगे वोट शासन में आते रहेंगे शराबी कबाबी और यूं ही लोगों पर करते रहेंगे चोट। ऊंचे चरित्र और नशे से मुक्त जनता ही चरित्रवान शासक और कल्याणकारी राज का चयन कर सकती है। इसीलिये हर्ष के साथ गुणगान कर रहा हूं उन जननायकों का जो जन-उन्नयन के इस महान् पुरुषार्थ में जुटे हुए हैं। पाल्हावास का भी नाम रोशन ऐसे ही उत्साही लोगों ने किया है, जिन्होंने जिले की शान बना दिया अपने गांव को और हरयाणा में चले शराबबन्दी आन्दोलन के दौर में अपने क्षेत्र को पीछे रहने से बचाया। जिला रेवाड़ी का पाल्हावास ऐसा गांव था [illegible] हरयाणा में अन्य स्थानों पर उठे शराब विरोधी क्रान्तिकारी कदमों के साथ अपने कदम मिलाये। अकेली शराबबन्दी को हम सम्पूर्ण क्रान्ति तो नहीं कह सकते, यह आन्दोलन तो मात्र क्रान्ति की सीढ़ी को एक प्राथमिक पीढ़ी है, जिसके बिना जनता-जनार्दन को सचेत मन-मस्तिष्क से लैस रखा ही नहीं जा सकता। इसलिये किसी भी सुधार की सोचने से पहले हमें शराब को तो समाज से निर्मूल करना ही होगा और तभी अपने क्षेत्र, प्रान्त व राष्ट्र में व्याप्त जघन्य सामाजिक अन्याय, घोर आर्थिक विषमता और शर्मनाक शासकीय शोषण से मुक्त होने के लिए क्रान्ति अन्य शेष चरणों को पार किया जा सकता है। इसलिये मुझे गर्व होता है उन सब पर जो अपने समाज से नशे की बुराई को समाप्त करने के लिए कृतसंकल्प हैं।

हालांकि हमारे गांव पाल्हावास की जनता में क्रान्तिकारी आक्रोश तो अभी उत्पन्न नहीं हुआ है। लेकिन शान्तिप्रिय जोश अवश्य यहां के समझदार तबके के स्वभाव में शामिल हो चुका है। इसलिए गांव और समाज में जागृति व सुधार लाने के लिए अगुवा लोग अपने-अपने रसूख के अनुसार विभिन्न समितियों में एकजुट होने लगे हैं। जब सारे गांव की किसी साझी समस्या से निपटना होता है तो सब इकट्ठे होकर सोचते हैं और मिलकर उसका समाधान करते हैं। जैसे अब शराब की अवैध बिक्री के विरुद्ध एक विशेष चेतना यहां जागृत हुई है और इसे बन्द कराने के लिए सभ्यजन आगे आ रहे हैं क्योंकि इस नशा जल की नाशलीला अभी गांव में रुकी नहीं है। अब यह महसूस होने लगा है कि शराब के खिलाफ उनकी लड़ाई अभी भी अधूरी है। गांव के शराब ठेकेदारों के माध्यम से रुकी तो ठेकेदारों ने अवैध रूप से इसके प्रवाह को यहां चालू कर दिया। पहले खुले आम ठेके से बिकती थी। अब चोरी छिपे अपने घरों से इसे जरायम पेशा लोग बेचने लगे। शराब के ठेके पर विजय पाने के बावजूद शराबबन्दी कार्यकर्ताओं को इसकी अवैध बिक्री सदा चिढ़ाती रही है। बेशक पहले ठेके के रूप में शराब माफिया की खुली डकैती भी वह जो लोगों के सचेत दमखम के सामने चल नहीं सकी। परन्तु उनके कुकर्म की मार तो पड़ ही रही है चाहे चोरी से ही सही और इसे बन्द कराने पर ही गांव को राहत मिल सकती है। हमने इस दौरान अनेकों बार पुलिस से मिल कर छापे मरवाये हैं, परन्तु इनका पीछा लगातार नहीं किया जा सका क्योंकि इस जुर्म में गांव के ही कुछ लोग संलिप्त होने के कारण आपस में पार्टीबाजी जोर पकड़ने लगी और आपसी खींचातानी व दुश्मनी का भय सुधारक कदमों को लड़खड़ा देता था, इसके अलावा पंचायत का भी सहयोग नहीं मिलता था।

अब एक शुभ शुरुआत हुई है, गांव ने नया सरपंच शराब नहीं पीनेवाला बनाया है। पंचायत के उपसरपंच श्री नन्दलाल जो एक स्वतन्त्रता सेनानी बुजुर्ग हैं, इस मामले में विशेष रुचि ले रहे हैं। इन्होंने अपने प्रभाव से आसपास होनेवाली शराब बिक्री को रुकवा दिया परन्तु अभी भी कुछ समाज विरोधी तत्व गांव के अन्य स्थानों पर इस गन्दे धन्धे में फंसे हुए हैं। गांव में ऐतिहासिक शराब ठेका विरोधी धरने का सूत्रपात करनेवाली समाज सुधार समिति ने इसे रोकने बारे नोटिस दिया है। नवनिर्मित समाज उत्थान समिति, पाल्हावास के पदाधिकारी इनकी ढिठाई को देखकर प्रशासनिक अधिकारियों से भी मिले हैं। यह साहसी समाजसेवी इन अपराधियों पर अपना पूरा दबाव डाल पाते कि बीच में ही लावणी का जोर आ गया है, इसलिए सुधार की रफ्तार को जरा धीमा होना पड़ा है। कुछ भी हो समाज का यह हितैषी वर्ग इस जरायम पेशे के खिलाफ कठोर कानूनी कार्यवाही कराने के लिए अब मन बना चुका है क्योंकि कहने और समझाने से यह लोग बाज मजा ले रहे हैं और गांव को इसकी मजा मिल रही है। यह हरामखोर वर्ग शराबियों की नासमझी का फायदा उठाकर उनकी गृहस्थी के सुख-चैन को लूटता है और गांव के सामाजिक अनुशासन को भंग करता रहा है।

(क्रमशः)

आर्यो सावधान !

महर्षि दयानन्द जन्म-स्थान टंकारा में महर्षि की मान्यताओं की हत्या

(लेखक—प्रो० रत्नसिंह, बी-२१ गांधीनगर, गाजियाबाद)

इस वर्ष शिवरात्रि पर २६ फरवरी १९९५ को महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के वार्षिकोत्सव पर जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। लगभग ४४ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द जी के जन्म-स्थान टंकारा में 'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा' का गठन हुआ था। आरम्भिक वर्षों में श्री कुंवर चांदकरण शारदा अजमेर आर्यजगत् के प्रसिद्ध नेता महाशय कृष्ण जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज तथा डाक्टर मथुरादास मोगावाले आदि ऋषिभक्त इस ट्रस्ट के ट्रस्टी रहे। इस ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार व प्रसार करना है। शिक्षा के सम्बन्ध मे महर्षि का स्पष्ट मत है कि बालक और बालिकाओं के विद्यालय एक-दूसरे से पृथक् हो और उनमें दो कोस की दूरी रहे। लड़कियों को पाठशाला में पांच वर्ष का लड़का और लड़कों को पाठशाला में पांच वर्ष की लड़की भी न जाने पावे। महर्षि दयानन्द ब्रह्मचर्य पर अत्यन्त बल देते थे। इसी को ध्यान में रखकर उन्होंने सहशिक्षा का विरोध किया है। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि दोनों विषम लिंग एक-दूसरे के लिए आकर्षण के केन्द्र हैं और एक दूसरे के दर्शन और स्पर्शन होने पर एक-दूसरे के प्रति आकर्षण का होना स्वाभाविक है। उस स्थिति में उनका ब्रह्मचर्य अखण्डित न रह सकेगा। इसीलिए ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए लड़के और लड़कियों के विद्यालयों का पृथक्-पृथक् होना आवश्यक है। महर्षि दयानन्द पूर्णतः आर्ष पाठविधि के पोषक हैं। शिक्षा माध्यम के बारे में उनका स्पष्ट मत है कि बालकों को प्रारम्भिक शिक्षा उनकी मातृभाषा के माध्यम से ही देनी चाहिए।

महर्षि दयानन्द का शिक्षा सम्बन्धी इन सभी मान्यताओं को धता बताते हुए टंकारा ट्रस्ट के वर्तमान अधिकारियों ने महर्षि की जन्म-भूमि पर एक हाई स्कूल खुलवा दिया है। पाठकों की जानकारी के लिए यह लिखना आवश्यक है कि ट्रस्ट के आरम्भिक काल में ऋषि भक्तों ने टंकारा स्थित मोरवी नरेश के विशाल महल को डेढ़ लाख रुपये में खरीद कर उसी स्थान पर सन् १९५९ की शिवरात्रि का आयोजन ६, ७ व ८ मार्च को किया था। कुछ दिनों बाद उस विशाल भवन में 'महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा' की स्थापना की गई जिसमें केवल पुरुष ही शिक्षा प्राप्त करते हैं और अनिवार्यतः सभी वहीं छात्रावास में रहते हैं।

यह भी जानना आवश्यक है कि इस पवित्र टंकारा ट्रस्ट के वर्तमान प्रधान हैं श्री बाबू दरबारीलाल जी जो डी. ए. वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली के भी प्रधान हैं और मन्त्री है श्री रामनाथ जी सहगल तथा बम्बई निवासी श्री ओंकारनाथ जी आर्य इस ट्रस्ट के प्रबन्धक ट्रस्टी हैं। श्री दरबारीलाल जी को डी. ए. वी. की दुनिया से बाहर के आर्यसमाजी कम ही जानते हैं। उनके जीवन का लक्ष्य अधिक से अधिक डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल खोलना है। उन्हीं के पुरुषार्थ से देश भर में लगभग पांच सौ डी. ए. वी पब्लिक स्कूल खुल चुके हैं। उनका विश्वास है कि इन पब्लिक स्कूलों के माध्यम से ही महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार हो सकेगा। इन पब्लिक स्कूलों की बानगी भी ले लीजिए। १. इनमें शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी (मातृभाषा नहीं), सहशिक्षा अनिवार्य। ३. ब्रह्मचर्य का कोई स्थान नहीं क्योंकि लड़के और लड़कियों को परस्पर मिलने की पूर्ण स्वतन्त्रता है। ४. प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का बहिष्कार, ५. नेकटाई का प्रयोग अनिवार्य, ६. स्कूल परिसर में 'नमस्ते' पर प्रतिबन्ध, ७. परस्पर अभिवादन मे 'गुड मार्निंग' का प्रयोग, ८. खानपान में अण्डा, मांस और मदिरा से परहेज नहीं, ९. ऊंची फीस और प्रवेश के समय कई-कई हजार रुपये के डोनेशन, १०. प्राचीन गुरु-शिष्य परम्परा के लिए कोई स्थान नहीं, ११. स्कूलों के अनेक प्रिंसिपलों (पुरुष) का विलासी जीवन, मांस और शराब का खूब प्रयोग. १२. अर्थकाम शुचिता का कोई ध्यान नहीं, १३. इस नास्तिकता से ओत-प्रोत वातावरण में किसी-किसी स्कूल में यज्ञशाला भी बनवाई है और धर्मशिक्षा का पीरियड भी लगाया जाता है। क्यों? इसके पीछे क्या उद्देश्य है? इस समय उसकी चर्चा करनी अप्रासंगिक है।

जैसा कि मैंने आरम्भ में लिखा है कि २६ फरवरी को मैं टंकारा गया था। वहां ओ३म् ध्वजारोहण करने के बाद बाबू दरबारीलाल जी ने अपने प्रवचन में कहा, "मुझे प्रसन्नता है कि हम यहां पर महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करने के लिए एकत्रित हुए। इन सपनों को साकार करने के लिए हमने निश्चय किया है कि महर्षि जन्म-स्थान टंकारा सहित गुजरात प्रान्त में २५ डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल खोले जायेंगे।' श्री दरबारीलाल जी की इस घोषणा को सुनकर उनके परम सहयोगी एवं मित्र श्री रामनाथ सहगल ने तो हर्षित होकर तालियां बजवाई और मुझे भारी मानसिक पीड़ा हुई। कुछ क्षणों के लिए मैं अचेत होगया। मैं सोचने लगा कि क्या महर्षि के सपने साकार होंगे इन डी. ए. वी. पब्लिक स्कूलों से, जिनका स्वरूप ऊपर दिया जा चुका है? क्या दयानन्द सहशिक्षा पोषक था? क्या दयानन्द ब्रह्मचर्य विरोधी था? क्या दयानन्द अनार्य था? क्या दयानन्द मद्यं मांसं च मीनं च मुद्रा मैथुनमेव च। इन पंच मकारों का समर्थक था?

श्री दरबारीलाल जी की इस घोषणा के बाद ट्रस्ट कार्यालय में श्री ओंकारनाथ जी और श्री रामनाथ सहगल की उपस्थिति मे मैंने श्री दरबारीलाल जी से कहा, "आपने उपदेशक विद्यालय परिसर में सहशिक्षा का विद्यालय खुलवाकर ऋषि दयानन्द की मान्यता के विरुद्ध कार्य किया है और यह भारी पाप किया है।" टंकारा से गाजियाबाद लौटकर मैंने ४ मार्च को श्री दरबारीलाल जी को एक पत्र यह जानने के लिए लिखा कि २८ मार्च को टंकारा मे ट्रस्ट की आयोजित बैठक मे सहशिक्षा के स्कूल के बारे मे क्या निर्णय लिया है। उन्होंने मेरा पत्र श्री सहगल के पास भेज दिया और उन्होंने वह पत्र श्री ओंकारनाथ जी के पास उत्तर देने के लिए भेज दिया। खेद है कि डेढ़ मास व्यतीत होने पर भी मुझे किसी ने उत्तर नहीं दिया। बहुत प्रतीक्षा करने के बाद अब सार्वजनिक रूप मे यह सारी स्थिति आर्य जनता के सामने प्रस्तुत करने के लिए मुझे बाध्य होना पड़ा है। विश्वस्त सूत्र से जो मुझे जानकारी मिली है उसके अनुसार श्री दरबारीलाल जी और श्री रामनाथ सहगल ने निश्चय कर लिया है कि टंकारा मे डी ए वी. पब्लिक स्कूल अवश्य खुलेगा। डी ए. वी. शिक्षा अधिकारी को निरीक्षण करने के लिए शीघ्र भेजा जा रहा है। जिस स्थान पर डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल खुलने जा रहा है, वह स्थान महर्षि के जन्म गृह से केवल एक सौ गज की दूरी पर है। आर्यो! क्या दयानन्द को बदनाम करने का यह षड्यन्त्र नहीं है? क्या इस अपमान को हम सहेंगे? क्या हमारा रक्त अब पानी हो चुका है? इस पाप के विरोध मे जनमत तैयार करो।

श्री दरबारीलाल जी को इस पते पर विरोध पत्र लिखो—आर्यसमाज अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली। हमें क्या करना है, इस बारे में अपने रचनात्मक सुझाव मेरे पास भेजने की कृपा करें। इतना ध्यान अवश्य रखें कि बाहर के शत्रु से मोर्चा लेना सरल है परन्तु अपने घर के विरोधी से लड़ना मुश्किल है। इनके पास डी ए.वी. पब्लिक स्कूलों का अरबों रुपया है। अपने धन पर इन्हें घमण्ड भी है।

अन्त मे मैं अपने पूज्य आर्य सन्यासियों से भी निवेदन करना चाहता हूं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब आर्यसमाज पर विरोधियों के आक्रमण हुए हैं, तब-तब उस आक्रमण का सामना करने लिए आर्यजनता का नेतृत्व आर्य सन्यासियों ने ही किया है। हैदराबाद राज्य में जब निजाम अत्याचार चरम सीमा पर पहुँच गए तो आर्य

(शेष पृष्ठ ६ पर)

पुन्हाना (मेवात) आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात के तत्वाधान में

दिनांक १९-३-९५ को फिरोजपुर झिरका के नजदीक मरोड़ा वैदिक आश्रम के वार्षिकोत्सव के अवसर पर सम्पन्न आर्य वेदप्रचार मण्डल की बैठक मे दिनांक २८-५-९५ से ४-६-९५ तथा फिरोजपुर झिरका में आर्यवीर दल का शिविर लगाये जाने की सर्वसम्मति से घोषणा की गई। मरोड़ा आश्रम का वार्षिकोत्सव १८, १९-३-९५ को बडे धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। अनेक सुप्रसिद्ध संन्यासी गण व वक्ताओं ने अपने-अपने विचार "बदलते राष्ट्रीय घटनाक्रम में आर्य समाज की भूमिका" विषय पर प्रगट किये। इस अवसर पर ग्राम-वासियों ने वेदप्रचार मण्डल के समक्ष अपनी निम्न मांगें रखी जिनको मण्डल प्रधान श्री भानीराम जी मंगला ने यथाशीघ्र पूरा करने का विश्वास दिलाया।

१. मन्दिर को जलापूर्ति समस्या को दूर कराया जावे।

२ मरोड़ा मन्दिर में गुरुकुल की स्थापना की जावे।

मण्डल प्रधान श्री मंगला जी ने लोगों से अपील की कि जब तक यहां गुरुकुल की व्यवस्था बने तब तक सभी बन्धु निकटवर्ती गुरुकुल "भादस" में बच्चों को भेजने की कृपा करें।

२ जलापूर्ति के लिये सम्बन्धित अधिकारियों से मिलकर तुरन्त आपूर्ति करने का विश्वास दिलाया।

श्री मंगला जी की अध्यक्षता में ग्राम मरोड़ा में स्थानीय आर्य समाज की स्थापना भी की गई तथा अनुरोध किया गया कि ग्रामवासी प्रतिदिन आश्रम में आकर सन्ध्या व यज्ञ करें। इसके लिए हर रविवार को आस-पास के आर्यसमाजों से आचार्य एवं पुरोहित भेजने का भी आश्वासन दिया।

श्री सुन्दरलाल जी आर्य महामन्त्री मेवात गोरक्षा संघर्ष समिति ने क्षेत्र की गोहत्या समस्या पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस सब के पीछे शासन की तुष्टिकरण नीतिजन्य व्यवस्था व अधिकारियों की विवशता व "स्वार्थ" ही मुख्य कारण है।

आपने इस सन्दर्भ में तीन प्रस्ताव भी रखे जो सर्वसम्मति से पारित किये गये, प्रस्ताव निम्न हैं।

१. मेवात में सरकारी गौ सदन खोलें जायें ताकि जो गौवें पुलिस गोहत्यारों से पकड़ती है उनके रक्षण-पोषण की व्यवस्था भली प्रकार हो सके।

२. हरयाणा के गोरक्षा कानून में संशोधन कर इसे राजस्थान के कानून जैसा बनाया जाये।

३. गोरक्षा के लिए पुलिस में प्रशिक्षित स्पेशल उड़नदस्तों का भी गठन किया जाये। इन प्रस्तावों की कापी मुख्यमन्त्री हरयाणा सरकार को भेजकर मांग की गई है।

जलसे में शासन की दुर्नीति के परिणामस्वरूप मेवात से अल्प-संख्यक हिन्दुओं के पलायन पर भी गहरी चिन्ता प्रगट की गई। ७ दिसम्बर ९२ के मेवात के व्यापक पैमाने पर हुए "धर्मस्थल-ध्वंस" के जघन्य अपराधियों के सभी मामले हरयाणा सरकार द्वारा वापिस लिये जाने की घोर निन्दा की गई। इस अवसर पर गुरुकुल भादस के छोटे-छोटे ब्रह्मचारियों ने योग प्राणायाम आदि के बड़े भारी रोचक व आश्चर्यजनक, प्रभावशाली प्रदर्शन दिखाये।

दीवानचन्द आर्य प्रेस सचिव, पुन्हाना
आर्यवेद प्रचार मण्डल मेवात पुन्हाना

आर्यसमाज जाजनपुर का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज जाजनपुर जिला कैथल का वार्षिक उत्सव ७-८-९ अप्रैल को धूम-धाम से मनाया गया जिसमें स्वामी ओमानन्द जी प्रधान, सभा स्वामी वेदानन्द जी उपप्रधान सभा, प्रोफेसर शेरसिंह जी के ओजस्वी भाषण हुए और प० चिरंजीलाल प्रतिनिधि सभा हरयाणा व श्री रामनिवास जी भजनोपदेशक के क्रान्तिकारी भजनोपदेश हुये सभा को १२०० रुपये दान दिया।

प्रवेश सूचना

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती उपदेशक महाविद्यालय
टंकारा, राजकोट-३६३६५० (गुजरात)

चार वर्षीय एवं पांच वर्षीय पाठ्यक्रम में प्रवेश प्रारम्भ। आवेदन पत्र भेजने की अन्तिम तिथि १५ जून १९९५, पाठ्यक्रम चार वर्षीय हेतु योग्यता हाई स्कूल उत्तीर्ण। पांच वर्षीय पाठ्यक्रम हेतु योग्यता हाई स्कूल उत्तीर्ण (संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी) आवश्यक। आवास, भोजन, पुस्तक, वस्त्र आदि की व्यवस्था ट्रस्ट की ओर से निःशुल्क। आयु १५ से २५ वर्ष तक अविवाहित तथा आर्यसमाज के प्रधान एवं मन्त्री की ओर से चरित्र प्रमाण पत्र लाना आवश्यक। आश्रम के नियमों का पालन करना होगा। अनुशासन भंग करने पर पृथक् भी किया जा सकता है। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें—

आचार्य विद्यादेव शास्त्री, श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट,
टंकारा, राजकोट-३६३६५० (गुजरात)

प्रवेश सूचना

(सत्र १९९५-९६)

महाशय हीरालाल आयुर्वेदिक-प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र (पंजीकृत)
बस स्टैण्ड टहना पो० मस्तापुर, जिला रेवाड़ी-१२३४०१

"सम्मेलन" हिन्दी विश्वविद्यालय, इलाहाबाद द्वारा संचालित तथा केन्द्रीय सरकार के शिक्षा विभाग एवं विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा हिन्दी स्तर के समकक्ष केवल नौकरी के लिए मान्य—

निम्नलिखित परीक्षाओं के आवेदनपत्र आमंत्रित हैं

अन्तिम तिथि ३० जून ९५

क्रम सं०	नाम परीक्षा	प्रवेश योग्यता	पाठ्यक्रम अवधि
१	प्रथमा समकक्ष हिन्दी मैट्रिक (एस०एल०सी)	आठवीं/छठी कक्षा उत्तीर्ण	१ वर्ष
२	साहित्य रत्न समकक्ष बी०ए० ऑनर्स	इंटरमीडिएट/समकक्ष आयुर्वेदरत्न	३ वर्ष
३	शिक्षा विशारद समकक्ष हिन्दी टीचर डिग्री कोर्स	बी०ए०/मध्यमा/प्रभाकर/ शास्त्री	१ वर्ष
४	एन०डी० डिप्लोमा —प्राकृतिक चिकित्सक	आयुर्वेदरत्न	२ वर्ष
५	उपवैद्य —कम्पाउण्डर	मिडिल अथवा समकक्ष	१ वर्ष
६	वैद्यविशारद—आर०एम०पी० II क्लास बनने के लिए	मैट्रिक/प्रथमा/उपवैद्य	२ वर्ष
७	आयुर्वेदरत्न—आर०एम०पी० I क्लास बनने के लिए	बी०ए०/वैद्य विशारद	२ वर्ष

नोट—वैद्यविशारद/आयुर्वेदरत्न का पंजीकरण किसी राज्य सरकार द्वारा खोले जाने पर ही होगा। विवरणपत्रिका मय आवेदनपत्र के २० रु० नकद जमा कराकर या डा० द्वारा ३० रु० का धनादेश "कार्यालयाध्यक्ष" के नाम भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।

दूरभाष : ८७६७८ कार्यालय समय—केवल रविवार प्रात: १० बजे से सायं ५ बजे तक — वैद्य क्षेत्रपाल आर्य संस्था अध्यक्ष

नोट : १. कार्यालय प्रत्येक रविवार को प्रातः १० बजे तक खुला रहता है।

२ परीक्षा सम्बन्धी किसी कार्य के लिए रविवार का सम्पर्क करें।

आर्यसमाज जसराणा में आर्य सम्मेलन

सामवेद पारायण यज्ञ व आर्य सम्मेलन २४-२६ मार्च ९५ को आर्य समाज आश्रम जसराणा में सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी भुवानन्द जी तथा वेदपाठ कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणी बहनों द्वारा किया गया। जिसे प्रतिदिन सपत्नीक यजमानों ने सम्पन्न कराया। इसमें अन्तिम दिन शराबबन्दी सम्मेलन में आर्यनेता श्री सुखवीरसिंह चेयरमैन (सोनीपत) तथा अखिल भारतीय डेन्टल परिषद् के चेयरमैन व अन्य विद्वानों ने अपने विचार रखे। सम्मेलन में श्री रमेश आर्य, कर्मवीर आर्य, सुखवीर आर्य का विशेष सहयोग रहा। आर्यवीर दल के ब्रह्म० यशवीर, ब्रह्म० निरजन ने विशेष व्यवस्था की। श्री महाशय ईश्वरसिंह, श्री जयपाल जी व श्री सरदारसिंह ने भजनों द्वारा मन्त्र मुग्ध कर दिया। सम्मेलन की सफलता पर श्री जितेन्द्र देव (मन्त्री) ने सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। निम्नलिखित चन्दा भी एकत्रित हुआ।

१. श्री जितेन्द्रदेव सु० श्री मा० मांगेराम (जसराणा)	५१००/-
२. श्री सुखवीरसिंह मलिक (भैंसवाल)	५१००/-
३. हरीसिंह जी प्रधान	५०१/-
४. श्री सुबेदार साहब	५०१/-
५. श्री सूरजमल जी	५०१/-
श्री महेन्द्रसिंह जी	२०२/-

ठेके खोलने का विरोध

सोनीपत, जिले के गन्नौर उपमण्डल के दो गावों हतोली तथा डुमेटा की ग्राम पंचायतों के विरोध के बावजूद इन गांवों में खोले गए शराब के ठेकों को बंद नहीं किया जा रहा है जिससे ग्रामीणों में भारी रोष है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार उक्त दोनों ग्राम पंचायतों ने अपने-अपने क्षेत्रों में शराब के ठेके न खोले जाने के संदर्भ में प्रस्ताव पास करके सरकार के पास भेज दिए थे, लेकिन सरकार ने इन प्रस्तावों पर कोई कार्रवाई नहीं की है। ग्रामीणों का कहना है कि उनके यहां शराब के ठेके खुलने से विशेष रूप से युवकों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। पंचायतें ठेके बंद कराने के पक्ष में हैं परन्तु ठेके यथावत् चल रहे हैं।

गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर जिला-जालन्धर जो भारत का एकमात्र सर्वथा निःशुल्क गुरुकुल है जहां भोजन, दूध आदि का कोई किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता। यह गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय हरिद्वार से मान्यता प्राप्त है, उसमें कक्षा-६ उत्तीर्ण छात्रों का प्रवेश १६ मई ९५ से आरम्भ होगा

विद्याविनोद (+२, इण्टरमीडिएट) के लिए मैट्रिक उत्तीर्ण छात्रों का तथा अलंकार (+३, बी०ए०) के लिए +२ परीक्षा या इण्टर-मीडिएट उत्तीर्ण छात्रों का प्रवेश ३ जुलाई-९५ से आरम्भ होगा।

छात्रों को भोजन, दूध, शिक्षा, आवास आदि की सर्वथा निःशुल्क सुविधा दी जाएगी। प्रवेश सीमित संख्या में होगा, इच्छुक माता/पिता शीघ्र मिलें या पत्र व्यवहार करें।

आचार्य श्री गुरु विरजानन्द
गुरुकुल, करतारपुर

आर्य वधू चाहिए

दृढ़ आर्य परिवार बंसल (अग्रवाल) २७ वर्ष, ५ फुट साढ़े ५ इंच स्वस्थ रंग गेहुंआ बी० ए० इकहरा बदन सूरत में प्राइवेट कं० में बहुत अच्छे मा० वेतन पर सेवारत युवक हेतु नितान्त शाकाहारी आर्य परिवार की अनुरूप योग्य कन्या की आवश्यकता, विवाह शीघ्र, प्रथम पूर्ण विवरण लिखें। दिल्ली के आसपास प्राथमिकता। अग्रवालेतर वैश्य मात्र की योग्य कन्या भी स्वीकार्य।

(प्रियंसदनम्) ७६३, सैक्टर-१४ सोनीपत (हरयाणा) १३१००१

यज्ञशाला उद्घाटन समारोह

गोशाला जुलाना (जीन्द) की यज्ञशाला व सत्संग भवन के भवन के उद्घाटन समारोह के उपलक्ष्य में २५ से २७ अप्रेल १९९५ तक स्वामी वेदरक्षानन्द जी के ब्रह्मत्व में बृहद्यज्ञ तथा वेदोपदेश कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। २७ अप्रेल को जीन्द के जिलाधीश श्री आलोक निगम द्वारा यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। इस यज्ञशाला व सत्संग भवन का निर्माण डा० समुद्रसिंह जी जुलाना वाले ने किया है। जिलाधीश महोदय ने गोशाला की अनेक मांग पूर्ण करने का आश्वासन दिया। इस उत्सव में स्वामी गोरक्षानन्द जी, स्वामी निर्मलानन्द जी पं० सूरजभान जी, पं० चन्दनसिंह जी आदि महानुभावों ने गोविषयक अपने सारगर्भित भाषण दिये।

प्रबन्धक—स्वामी प्रकाशानन्द सरस्वती
स्वामी गोरक्षानन्द गोशाला जुलाना (जीन्द) हरयाणा

मां बनने की लालसा में बच्चे के खून से नहाई

गाजियाबाद, अपनी कोख से बच्चे को जन्म देने की ख्वाहिश को पूरा करने के लिए एक महिला ने एक तांत्रिक के बहकावे में आकर गैर के बच्चे की बलि दे दी। पुलिस ने महिला को मोदीनगर में बारह दिन बाद गिरफ्तार करके बच्चे का शव बरामद कर लिया।

पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) ओ० पी० सागर के अनुसार, मोहल्ला विजय नगर में गत १४ अप्रैल को राजकुमार की पत्नी राजो ने एक चार वर्षीय लड़का उठाया और तांत्रिक के कहने पर उसने उसकी जीभ काटकर देवी को चढ़ाई तथा उसको मारकर उसके खून से नहाई फिर पूजा की। इतना सब करने के बाद तांत्रिक ने उसके पुत्र होने का आश्वासन दिया। बच्चे का शव पास में ही एक गड्ढा खोदकर दबा दिया गया।

रोजो को देखने के लिए पुलिस थाने में लोगों का हुजूम लग गया तथा पुलिस इंस्पेक्टर मोदीनगर, अजयसिंह यादव ने तान्त्रिक और पूजा में सहयोगी चार अन्य लोगों को भी गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

पुलिस अधीक्षक ने बताया कि बच्चे का शव चार दिन पूर्व गड्ढे से निकालकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया था। मृतक के मां-बाप ने बच्चे की गायब होने की सूचना पुलिस को दी थी लेकिन पुलिस ने गंभीरता से नहीं लिया था। लोगों को गड्ढे की मिट्टी पर पानी पड़ा होने से कुछ शक हुआ तथा वहां सख्त पहरा देकर गड्ढा खोदा गया तथा बच्चे का क्षत-विक्षत शव बरामद किया गया।

नरबलि की जिले में पिछले दो वर्षों में यह तीसरी घटना है। पहले मामलों में एक महिला जमरोशनी ने अपने ही पुत्र की बलि रईस होने के लिए दी थी तथा दूसरे मामले में एक महिला ने पुत्र प्राप्ति की इच्छा से एक बालक की नरबलि दी थी। (हिन्दुस्तान ३०-४-९५)

संस्कृत दसवीं तक जरूरी

नई दिल्ली, देश के सभी केन्द्रीय विद्यालयों में संस्कृत भाषा को दसवीं कक्षा तक अनिवार्य विषय बनाया जाएगा।

आर्यसमाज के कार्यकर्ता पार्षद बने

आर्यसमाज तथा आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा के श्री राजकुमार जी वार्ड नं० ११ से पार्षद चुने गये हैं।

नि:शुल्क ध्यानयोग व पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

हर वर्ष की भांति आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में १८ जून से २५ जून तक नि:शुल्क ध्यानयोग और यज्ञो व सोलह संस्कारो के मूल मनोवैज्ञानिक रहस्यों के विवेचन एवं उनकी एकरूपता लाने के लिए विशिष्ट पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविरमध्य शिक्षित विशेष योग्यतावाले माताए तथा बन्धु विशेष लाभ प्राप्त कर सकेंगे। शंका समाधान के लिए प्रत्येक शिवरार्थी को समय दिया जायेगा। अन्तिम दिन परीक्षा होगी, प्रमाण-पत्र दिये जायेंगे।

शिविराध्यक्ष-श्रद्धेय आचार्य श्री विश्वबन्धु जी तर्क शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी (बुढीना) उ० प्र० योग साधना शिविर निदेशक और यज्ञ ब्रह्मा-पूज्य श्री स्वामी धर्ममुनि जी महाराज (दुग्धाहारी) मुख्याधिष्ठाता आश्रम।

२५ जून रविवार प्रात: ७ बजे यज्ञारम्भ ६ बजे पूर्णाहुति तत् पश्चात् शिविर समापन समारोह। इस अवसर पर अनेक उच्चकोटि के वक्ता विद्वान् पधार रहे हैं।

आवश्यक निवेदन—योग दर्शन-गीता, सत्यार्थप्रकाश, पञ्चमहायज्ञ विधि, संस्कार विधि लेखनार्थ कापी-पैन, ऋतु अनुसार बिस्तर साथ लेकर आयें। भोजन तथा निवास का प्रबन्ध आश्रम की ओर से होगा। इस सुअवसर से योग एवम् यज्ञ-संस्कार प्रेमी माताए तथा बन्धु अधिक से अधिक संख्या में पाधार कर लाभ उठायें। आश्रम दिल्ली रोड पर हरयाणा रोडवेज बस स्टाप बहादुरगढ के निकट है।

शिविर में भाग लेने के इच्छुक बन्धु व माताए १५ जून तक अपना नाम भेज देवें।

ब्र० आत्मदेव शास्त्री

आर्य युवक निर्माण शिविर

हरयाणा आर्य युवक परिषद् (रजि०) के तत्वावधान मे नौजवानों को योगासन, दण्ड बैठक, प्राणायाम, लाठी, कराटे बाक्सिग, ध्यानयोग व प्राकृतिक चिकित्सा का प्रशिक्षण देने के लिए हरयाणा प्रदेश के विभिन्न जिलों मे "आर्य युवक निर्माण प्रशिक्षण शिविर" लगाये जा रहे हैं। इन शिविरों के माध्यम में युवाजनों को वैदिक विद्वानों द्वारा सन्ध्या हवन, भारतीय संस्कृति एवं वैदिक सिद्धान्तो की जानकारी दी जायेगी।

२६ मई से ४ जून तक आदर्श विद्या निकेतन हाई स्कूल १६ सैक्टर फरीदाबाद मे, ५ जून से ११ जून तक आर्यसमाज नलवा (हिसार) मे, १२ जून तक आर्यसमाज औरगाबाद मितरौल (पलवल) में, २१ जून से ३० जून तक राज्यस्तरीय शिविर चौ० चरणसिह कृषि महाविद्यालय कौल (कैथल) मे, २८ जून से ४ जुलाई तक मातनहेल (रोहतक) में युवक निर्माण शिविर लगाये जायेंगे। अत: यदि आप चाहते हैं कि आपके जीवन में यौवन, यौवन में शक्ति का संचार हो तो आप युवक निर्माण शिविर में भाग लेकर अपने भविष्य को उज्ज्वल बनायें, लेकिन ध्यान रखे—शिविर मे तप व साधना के इच्छुक युवक ही भाग लें।

शिवराम आर्य विद्यावाचस्पति

सुलतानपुर (हिसार) का ठेका शराब बन्द

सातबास (जड़िया) का प्रसिद्ध गांव सुलतानपुर १ मई को जिला परिषद् सदस्या श्रीमती सत्यबाला एवं श्रीमती अजसवन्ती धर्मपत्नी श्री ईश्वरसिह मलिक की अध्यक्षता मे ठेके के ताला लगाकर सैकड़ों महिलाओं ने घरना आरम्भ कर दिया। नव निर्वाचित सरपंच श्री घासीसिह मलिक का भी पूर्ण सहयोग रहा। साथ में सभा उपदेशक एवं संयोजक शराबबन्दी समिति जिला हिसार के श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी का सहयोग व मार्गदर्शन भी आरम्भ से अन्त तक रहा। ठेकेदार ने अनेक षड्यन्त्र रचे। लेकिन सब फेल होगए। ६ दिन के महिलाओ के कड़े संघर्ष के बाद ठेकेदार ६ मई को साय ६ बजे २ वाहन लेकर आया। चाबी मांगी और अपना ७५ पेटी शराब का सारा स्टाक उठाकर ले गया। लिखित मे दे गया कि मैं सुलतानपुर में ठेका नहीं खोलूंगा। बाद में बच्चों ने ठेके के मकान को भी धराशाही कर दिया। गांव में खुशी की लहर दौड़ गई।

इस ठेके के बन्द होने से सातबास के ११ गांव को भी राहत मिली है। अब यह महिलाओं का आन्दोलन और तेज होगा। अब शीघ्र ही ११ गांव मे अवैध शराब की बिक्री पर भी रोग लगेगी। नलवा के बाद यह दूसरा ठेका संघर्ष के बाद बन्द हुआ है। अन्त में ठेकेदार व प्रशासन ने महिला संगठन के आगे घुटने टेकने पड़े, यह अधम पर धर्म की जीत हुई है।

बिजेसिंह मलिक सुल्तानपुर

आर्यसमाज नजफगढ़ का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज नजफगढ का ६६वां वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। शोभायात्रा इस उत्सव की शान थी, इस शोभायात्रा में गुरुकुल एव कन्या गुरुकुल सम्मिलित थे, स्वामी ओमानन्द जी गुरुकुल झज्जर, स्वामी मानाचार्य कन्या गुरुकुल लोवा, स्वामी इन्द्रवेश जी पूर्व (सासद) बिजनौर, स्वामी स्वरूपानन्द जी वेद प्रचार अधिष्ठाता आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली, स्वामी धर्ममुनि जी बहादुरगढ़, महात्मा धर्मवीर गुरुकुल घासेड़ा, निहालसिंह आर्य, डा० महावीर शिवाजी कालेज, नई दिल्ली, पं० नारायणसिह आर्य नजफगढ उपरोक्त सभी ने भाषण देकर उत्सव की शोभा को बढाया है। समापन समारोह से पूर्व भी भव्य समारोह हुआ उसमें अखिल ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष प० मदनलाल शर्मा ने सर्वप्रथम अपने गुरु पं० कमलनयन ज्योतिष शास्त्री का अभिनन्दन तथा कुछ वैदिक विद्वानों को द्रव्य दक्षिणा एवं साल द्वारा सम्मान करते हुए बतलाया कि महर्षि देवदयानन्द के अधूरे कार्यो को हमें पूर्ण करना है, उनके सपनों को साकार करना है, उनका जीवन सच्चाई के लिए था वे चरित्र के पुजारी थे। श्री शर्मा जी को आर्यसमाज के अधिकारियो ने महर्षि देवदयानन्द का चित्र भी भेंट किया तथा कुछ वैदिक साहित्य भी भेंट किया।

धीरेन्द्र शास्त्री

(पृष्ठ ३ का शेष)

सत्याग्रह का नेतृत्व पूज्य नारायण स्वामी जी महाराज और सञ्चालन स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने किया। सिन्ध प्रान्त में सत्यार्थ-प्रकाश पर लगे प्रतिबन्ध के विरोध में जो आन्दोलन चला उसका नेतृत्व महात्मा नारायण स्वामी जी ने किया। पंजाब में चले हिन्दी सत्याग्रह का नेतृत्व पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी महाराज ने किया और गोरक्षा आन्दोलन का नेतृत्व तपोनिष्ठ संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने किया। यह भी सत्य है कि अब तक जितने प्रहार हुए हैं वे आर्यसमाजों तथा सत्यार्थप्रकाश और हिन्दी भाषा पर हुए हैं परन्तु टंकारा ट्रस्ट के प्रधान श्री दरबारीलाल जी का प्रहार आर्यसमाज के जन्मदाता तथा सत्यार्थप्रकाश के रचयिता महर्षि दयानन्द के ऊपर हुआ है। अत: पूज्य संन्यासियों के चरणों में मेरा निवेदन है कि महर्षि दयानन्द के पावन जीवन को डी. ए. वी. माध्यम से जिस प्रकार कलंकित किया जा रहा है उसका प्रतिरोध करने के लिए जो आंदोलन चलाया जाये उसका नेतृत्व यति मण्डल अपने पवित्र एवं सशक्त हाथों में ले।

इस बात का ध्यान अवश्य रहे कि हो सकता है कि आर्यजनता के दबाव से श्री दरबारीलाल जी घोषणा कर दें कि इनके खोले हाई स्कूल में अब सह-शिक्षा नहीं रहेगी। उसी भवन में एक पाली में लड़के पढ़ेंगे और दूसरी में लड़कियां। इससे आर्यजनों का सन्तोष नहीं होगा। हमारी तो एक ही मांग है कि महर्षि जन्म भूमि पर जो भी विद्यालय चले वहां केवल आर्ष पाठविधि ही रहे। हमें इस पर भी विचार करना होगा कि डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल खोलने का एक दूषित अनार्ष विचार मन में आ चुका है, अत: यह विचार एक न एक दिन विष वृक्ष भी बन सकता है। क्या ऐसा कुछ किया जा सकेगा कि विचार जन्म लेने से पहिले ही ध्वस्त कर दिये जायें। उचित तो यह है कि इस मानसिकता को समूल नष्ट कर दिया जाये। हमारा दृढ़ विश्वास है कि प्रकाश और अन्धकार विद्या और अविद्या पुण्य और पाप और सत्य और असत्य की भांति वेदोद्धारक, ब्रह्मचर्य का पोषक और प्राचीन वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति का मूर्तरूप दयानन्द और डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल एक साथ नहीं रह सकते।

नमस्ते अभिवादन विश्व स्तर पर लोकप्रिय हो रहा है

लोकप्रिय अन्तर्राष्ट्रीय अभिवादन:-'नमस्ते'

द्वारा—प्रतापसिंह शास्त्री, पत्रकार, हिसार

(गतांक से आगे)

पं० नेहरु एक हाल कमरे में तख्त पर बैठे हुए थे उनके अंगरक्षक से उन्हें सिगरेट दो, उन्होंने शास्त्री जी से पूछा कि यहां धूम्रपान आदि के विषय में कोई नियम है ? प्रकाशवीर शास्त्री ने कहा कि संस्था की चारदीवारी में कोई कभी धूम्रपान नहीं करता । पं० नेहरु दो-ढाई घंटा वहां रहे, उन्होंने वहां के अनुशासन का पालन करते हुए धूम्रपान नहीं किया तथा संस्था से विदाई लेते समय भी 'नमस्ते' अभिवादन का ही प्रयोग किया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उत्सवों पर राष्ट्र के प्रधानमन्त्री, केन्द्रीय मन्त्री तथा तथा विदेशी नेतागण भी पधारते रहे हैं सभी ने 'नमस्ते' अभिवादन का ही प्रयोग किया है। आर्यसमाज के जितने भी व्यक्ति सांसद चुने गये उन्होंने सर्वत्र 'नमस्ते' अभिवादन को ही अपनाया। स्वामी श्रद्धानन्द के सुपुत्र सांसद थे इन्द्रविद्यावाचस्पति, अमरनाथ विद्यालंकार शिक्षामन्त्री भारत सरकार, शिवकुमार शास्त्री सांसद, रघुवीरसिंह शास्त्री सांसद, आनन्द स्वामी रामेश्वरानन्द सांसद, पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती सांसद, स्वामी ओम सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक सभा आदि जीवन पर्यन्त 'नमस्ते' अभिवादन का ही प्रयोग करते रहे किन्तु 'नमस्ते' का राष्ट्रीय अभिवादन करने कराने की ओर विशेष प्रयत्न नहीं हुए।

'नमस्ते' यद्यपि भारत का 'राष्ट्रीय अभिवादन' तो आज तक भी नहीं बन पाया किन्तु उसे सामाजिक मान्यता व सम्मान जितना अधिक मिलता है उतना किसी अन्य अभिवादन के लिए प्रयुक्त होनेवाले शब्दो को नहीं मिलता तथापि इसी कारण 'नमस्ते' को अन्तर्राष्ट्रीय अभिवादन के रूप में भारत सरकार द्वारा स्वीकृत किया जा चुका है। विदेशों में भारतीय राजदूत विशेष समारोहों में अभिवादन के लिए नमस्ते का ही प्रयोग करते हैं।

प० नेहरु व लालबहादुर शास्त्री जब रूस गए थे तब दोनों के अलग-अलग अवसरों पर उनके स्वागतार्थ मार्गों में जो पट्टिकाएं लगाई गई थी 'नमस्ते प्रधानमन्त्री स्वागतम्' भी हिन्दी भाषा में था। जब रूस के प्रधानमन्त्री बुलगानिन हरयाणा के रोहतक जिला के भटगांव में पधारे तब बिटोड़ो [जिसमें भैंस गाय के गोबर के उपले होते हैं] पर सफेदी कराई गई थी और मार्ग की पट्टिकाएं 'नमस्ते' व 'स्वागतम्' से सजी थी।

रूस के प्रधानमन्त्री ख्रुश्चेव जब भारत आए तब पं० नेहरु और उनके मन्त्रिमण्डल ने तथा जनसमूह ने उनका स्वागत नमस्ते अभिवादन से ही किया था। अमेरिका में पं० नेहरु डलेस वार्ता के समय श्रीमान् डलेस ने फोटोग्राफरों से निरन्तर हाथ मिलाने के कारण थक कर नेहरु जी से विनोद में कहा था—'हमें परस्पर भारतीय ढंग से अभिवादन करना चाहिए।' पं० नेहरु ने कहा—"अभिवादन के भारतीय तरीके 'नमस्ते' का यह बड़ा लाभ है कि बिना थके हजारों आदमियों को अभिवादन किया जा सकता है।' दूसरी बार जब रूस के प्रधानमन्त्री श्री ख्रुश्चेव भारत आए तो भारतीय संसद में उन्होंने हाथ जोड़कर 'नमस्ते' द्वारा सदस्यों का अभिवादन किया था इस पर खूब तालियां बजाई गई। इसका उल्लेख करते हुए ब्रिटेन के एक समाचार पत्र में लिखा था—अमेरिका के राष्ट्रपति आईनहोवर को भारत यात्रा से पूर्व 'नमस्ते' शब्द को याद कर लेना चाहिए था।' सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के एक सम्मेलन में रामलीला मैदान में स्व० आनन्दबोध सरस्वती ने तत्कालीन प्रधानमन्त्री चन्द्रशेखर व विपक्ष के नेता श्री राजीव गांधी को आमन्त्रित किया था। दोनों नेताओं ने आर्य जनसमूह को हाथ जोड़कर नमस्ते के द्वारा ही अभिवादन किया था। अजमेर में सन् १८७५ में प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी आर्यसमाज शताब्दी समारोह पर पधारी थीं तब उन्होंने भी मंच पर उपस्थित होकर नमस्ते का प्रयोग अभिवादन के लिए किया था। मोरीशस एक छोटासा देश है वहां की जनता में 'नमस्ते' अभिवादन के रूप में लोकप्रिय है। वहां के प्रधानमन्त्री व मन्त्रीगण हमेशा नमस्ते का ही प्रयोग करते हैं।

पूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिंह चीन गये थे वहां पर उन्होंने सर्वत्र नमस्ते द्वारा अभिवादन किया तथा वहां के लोगों ने भी हाथ जोड़कर नमस्ते अभिवादन से उनका स्वागत किया। चीन जैसे कम्युनिष्ट देश में 'नमस्ते' शब्द लोकप्रिय है। श्रीमती इन्दिरा गांधी जब मिस्र की राजधानी काहिरा तथा जापान आदि के दौरे पर गई थी तब काहिरा के एक समाचार पत्र ने 'अलअहराम' में एक चित्र प्रकाशित किया गया था जिसमें प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी को 'नमस्ते' शब्द से अभिवादन किया गया था।

अतएव राष्ट्रीय अभिवादन द्वारा किसी देश अथवा जाति को एक सूत्र में अनुशासित करने के लिए शिक्षित एवं सभ्य समाज का कर्तव्य हो जाता है कि वह इस सार्थक भावपूर्ण तथा सरल अभिवादन को व्यापक रूप में अपनाकर उसे 'राष्ट्रीय अभिवादन' के पद पर आसीन करने का पूर्ण प्रयत्न करे।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ऊंचे कीर्तिमान स्थापित करने में जुट जाता है। न मालूम फिर राज मिले या न मिले, इस आशंका से वह कम से कम समय में अधिक लूट लेना चाहता है। अतः मतदाता की भाग्यलिपि नहीं बदलती।

आजादी मिलने के बाद से लगातार 'मद्य-निषेध' के आन्दोलन में लगे रचनात्मक गांधीवादी कार्यकर्ताओं की टोली जिन्होंने 'सत्ता' की बजाय 'सेवा' को ध्येय बनाया, कांग्रेस के सत्ताधीश वर्ग के सामने दीन-कुण्ठित और हतप्रभ होती गई। जब 'बाड़ खेत को खाए' और स्वजन ही छलनेवाले बन जाय, उस अनैतिक और विश्वासघाती माहौल में कांग्रेस की छत्रछाया में वह सब होना ही था जिसकी कभी आशा नहीं थी। भारत के इतिहास की यह कसी विडम्बना है कि जब पूरे देश में केवल कांग्रेस का एकछत्र राज्य था, तब से 'मद्य-नीति' को लेकर कांग्रेस के दो पक्ष आमने-सामने खड़े चले आ रहे हैं और सत्ताधीश पक्ष हमेशा 'शराब' का पक्षधर रहा है। आज भी, जबकि गांधी जी की १२५वीं जयन्ती मनाने के लिए कांग्रेस में अलग समिति बनाई गई है, 'मद्य-निषेध' का मुद्दा एकदम उपेक्षित है, गोया कि समाज-कल्याण के साथ इसका कोई नाता ही नहीं। इसके विपरीत टेलीविजन पर आधुनिक युवकों और युवतियों के सम्पन्न वर्ग को पीते-पिलाते जश्न मनाते इस तरह दिखाया जा रहा है मानो कि यही जीवन का 'स्वर्ग' हो। यह सारे तथ्य मिलकर क्या संकेत दे रहे हैं—क्या भारतीय संस्कृति की दावेदार सरकारों से भी यह दीवार पर लिखा स्पष्ट सन्देश नहीं पढ़ा जाता। सन्देश यह है कि 'नेहरु' और 'गांधी' दो विपरीत दिशाओं की ओर जानेवाले नाम हैं। एक के प्रजातन्त्र की अवधारणायें पश्चिम से जुड़ी हैं और दूसरे की भारत की रामायणी संस्कृति से।

मतदाता 'अभिमन्यु' को नहीं मालूम कि वह प्रजातन्त्र के नाम पर बनी इन शोषक सरकारों के कुचक्र से अपनी कैसे रक्षा करे। महाभारत के बदनाम व्याह महारथियों की तरह समाज के सभी शक्तिशाली वर्ग शराब पिलाने के घृणित धन्धे में संलिप्त हैं। द्रोणाचार्य भीष्म पितामह जैसे विद्वान् और बुजुर्ग भी इस हवस की दौड़ में हड्डी के लिए लालायित पशु जैसा व्यवहार कर रहे हैं। लगता है सारा देश एक कामान्धता का शिकार हो गया है। देश की इस मूर्च्छा से हर विवेकशील व्यक्ति स्तब्ध है, भारत बेचारा नवकिशोर अभिमन्यु की तरह चक्रव्यूह भेदने का अधूरा मन्त्र ही जान पाया। महात्मा गांधी एवं अन्य साहसी क्रान्तिकारियों से उसने 'विदेशी' शोषकों से जूझने की कला तो सीख ली, लेकिन विश्वासघाती स्वदेशी नेताओं की चरित्रहीनता से निपटने की शक्ति वो नहीं जुटा पाया। कहीं-कहीं अपनी पारिवारिक विपदा से त्रस्त होकर बहिनों ने अवश्य कटिबद्ध होकर इन राजनीतिक आततायियों से अपनी रक्षा कर भी ली तो भी जो प्रश्न ज्वलन्त रूप से हमारे चेहरे को घूर रहा है वह यह कि ये निर्वाचित सरकारें 'आततायी' क्यों बनती हैं? स्वाधीनता-संग्राम की यह 'फलश्रुति' कहां तक न्यायसंगत है? और यदि पुकार-पुकार कर जगाने के बाद भी अहिंसात्मक रीति से इस सरकारी 'बलात्कार' से हमें मुक्ति नहीं मिलती तो क्या हमें इसी मूक भाव से सब सहना है या कि बड़े से बड़ा बलिदान देकर इस भयंकर स्थिति को बदलना है। यदि देश के सत्पुरुषों का पौरुष पूरी तरह अस्त नहीं हो गया, यदि भारत के भविष्य के प्रति हम पूरी तरह उदासीन नहीं—तो देश के भाई-बहनों को समय रहते चेतना होगा और नशाबन्दी के राष्ट्रीय संग्राम में आगे आना होगा। उठो, जागो, पहले ही बहुत देर हो चुकी है। (नशाबन्दी सन्देश अप्रैल १९९५ से)

शराब बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इनसे दूर रहें।

सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक फोन। (७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ४७७२२) से प्रकाशित।

वर्ष २२ अंक २६ ७ जून, १९९५ (वार्षिक शुल्क ५०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रिवार्षिक चुनाव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली के दिनांक २७ मई, १९९५ को कच्छी भवन, रामकोट,

हैदराबाद (आ०प्र०) में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुए निर्वाचन को चुनाव अधिकारी के० देवरत्न आर्य द्वारा विधिवत् पूरा कराया गया और तदनुसार नवनिर्वाचित पदाधिकारियों एवं सदस्यों की अन्तरंग सभा की पहली बैठक २८ मई १९९५ को आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश के भवन में हुई। इस प्रकार विधिवत् नवनिर्वाचित अन्तरंग सभा की सूची प्रकाशित की जा रही है।

१. स्वा० विद्यानन्द सरस्वती गुरु स्वा० सत्यानन्द प्रधान २. प्रो० शेरसिंह पुत्र श्री शोभाराम उपप्रधान ३. श्री केशवदेव वर्मा पुत्र श्री स्व० दुर्गाप्रसाद उपप्रधान ४. स्वा० धर्मानन्द गुरु स्वा० ओमानन्द उपप्रधान ५. स्वा० सत्यानन्द सरस्वती उपप्रधान ६. श्री सत्यवीर शास्त्री पुत्र श्री चिन्दु जी शास्त्री उपप्रधान ७. प्रो० विट्ठलराव पुत्र गोविन्द राव उपप्रधान ८. श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव पुत्र श्री रघुवीर सहाय उपप्रधान ९. स्वा० सुमेधानन्द सरस्वती गुरु स्वामी सर्वानन्द सरस्वती मन्त्री १०. श्री विनोदविहारी भटनागर पुत्र श्री रंगीलाल उपमन्त्री ११. श्री रणजीतसिंह पुत्र श्री चन्दनसिंह उपमन्त्री १२. संभाजीमानिक राव पवार उपमन्त्री १३. श्री धर्मपाल आर्य पुत्र श्री दीपचन्द आर्य कोषाध्यक्ष १४. डा० धर्मवीर पुत्र श्री भीमसेन आर्य पुस्तकालयाध्यक्ष १५. स्वा० सुमेधानन्द गुरु स्वा० सर्वानन्द जी अन्तरंग सदस्य १६. श्री गजानन्द आर्य पुत्र श्री लालमणि आर्य अन्तरंग सदस्य १७ स्वा० ओमानन्द सरस्वती गुरु स्वामी सर्वानन्द जी अन्तरंग सदस्य १८. श्री विद्यासागर शास्त्री पुत्र श्री रामनारायण अन्तरंग सदस्य १९. श्री ओमप्रकाश भंवर पुत्र श्री भंवरलाल अन्तरंग सदस्य २०. राव हरिश्चन्द्र आर्य पुत्र धन्नाराम अन्तरंग सदस्य २१. श्री जयसिंह गायकवाड़ पुत्र श्री गंगाधरराम अन्तरंग सदस्य २२. डा० राधाकृष्ण वर्मा पुत्र रामचन्द्र वर्मा अन्तरंग सदस्य २३. डा. गोविन्दराव गोजे पुत्र श्री नारायणराव गोजे अन्तरंग सदस्य २४. स्वा० व्रतानन्द गुरु स्वा० धर्मानन्द अन्तरंग सदस्य २५. श्री चन्द्रपाल राणा पुत्र श्री पूर्णसिंह अन्तरंग सदस्य २६ श्री प्रकाशवीर विद्यालंकार पुत्र श्री रामानन्द अन्तरंग सदस्य २७. श्री भाऊलाल शर्मा अन्तरंग सदस्य २८. डा शिवनारायण पुत्र श्री जसलालसिंह अन्तरंग सदस्य २९. श्री देवदत्त शर्मा पुत्र श्री रामनारायण शर्मा अन्तरंग सदस्य ३०. श्रीमती प्रभातशोभा पत्नी प्रो० शेरसिंह अन्तरंग सदस्य ३१. श्रीमती विमला श्रीवास्तव अन्तरंग सदस्य ३२ श्री भोजोलाल ठक्कर अन्तरंग सदस्य ३३. श्री मंगलसेन चोपड़ा अन्तरंग सदस्य ३४ डा० नारायणदास अन्तरंग सदस्य।

(के० देवरत्न आर्य) (स्वा. विद्यानन्द सरस्वती) (स्वा सुमेधानन्द सरस्वती)
निर्वाचन अधिकारी प्रधान मन्त्री

अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष
प्रो० शेरसिंह द्वारा

९ अगस्त, १९९५ से समूचे देश में 'शराब छोड़ो-बोतल तोड़ो-देश को जोड़ो' के नारे के साथ सम्पूर्ण नशाबन्दी अभियान छेड़ने का ऐलान

मार्च १९९५ की १०-११ तारीख को मेरठ में जो अखिल भारतीय नशाबन्दी कार्यकर्त्ता सम्मेलन सम्पन्न हुआ था, उसमें कार्यकर्त्ताओं ने माना था कि देश और समाज को मद्यमुक्त कराने के लिए १९९५ का वर्ष बहुत महत्त्व रखता है। एक तो आन्ध्रप्रदेश की बहिनों ने आन्दोलन को सफलतापूर्वक चलाकर देश के सामने जो आदर्श प्रस्तुत किया है उससे एक नई आशा और उत्साह अन्य प्रदेश की महिलाओं के मन में भी जागा है। दूसरे, तीन-तीन महान् विभूतियों, गांधी, विनोबा और मोरार जी भाई की जयन्ती हमारी सरकार मना रही है। इन तीनों नेताओं को यदि सार्थक श्रद्धाञ्जलि देनी हो तो हमारे देश को मद्य से राजस्व कमाने की वृत्ति को तत्काल त्यागना आवश्यक है।

सच तो यह है कि गांधी जी के नेतृत्व में जो स्वाधीनता आंदोलन चल रहा था उसमें अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति और शराब से मुक्ति— ये दोनों समानान्तर मुद्दे थे। यहां तक कि जब गांधी-इर्विन पैक्ट हुआ तो गांधी जी ने कह दिया कि अंग्रेजों के विरुद्ध पिकेटिंग जारी रहेगी। अतः जब तक शराब के जाल से देश मुक्त नहीं होता तब तक हमारी स्वाधीनता अधूरी ही है। भारत में उत्तरोत्तर बढ़ती शराब की गुलामी देखकर गांधी जी की दूरदर्शिता पर श्रद्धा करनी पड़ती है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

जात पात : उद्‌गम, विकास और विकार

भगवानदेव "चैतन्य"

जातपात को ईश्वरीय व्यवस्था मानने से समाज में कितनी घृणा, द्वेष एवं अव्यवस्था फैली है—यह बात सर्वविदित है। आरक्षण आंदोलन के समय कितनी ही राष्ट्रीय सम्पत्ति की हानि हुई तथा कितने ही देश की प्रतिभाओं ने अपने आपको आहुति कर दिया, राष्ट्र ने वे दुर्दिन भी देखे। सत्यता यह है कि कोई भी व्यक्ति अपने कर्मों के आधार पर ही बड़ा या छोटा, ज्ञानी या अज्ञानी तथा ब्राह्मण या शूद्र बनता है। जीवात्मा तो कर्म करने में स्वतन्त्र है। जन्म से कोई भी व्यक्ति ब्राह्मण या शूद्र हो ही नहीं सकता है। जन्मजातप्रथा जन्म और जाति तथा वर्ण के ठीक-ठीक आशय को न समझने के कारण प्रचलित हुई है। इस भूल के कारण ही जाति-पाति एवं छुआछूत को बढ़ावा मिला। "वर्ण" संस्कृत का शब्द है, जिसका भाव है—चुनाव करना। व्यक्ति अपनी जीविका के लिए जो पेशा या कार्य अपनी योग्यता के आधार पर चुनता है—वही उसका वर्ण होता है। इस प्रकार व्यक्ति के द्वारा अपने पेशे के चुनाव करने की प्रक्रिया को वरण करना और जिस पेशे को वह चुनता है उसे "वर्ण" नाम से पुकारा जाता है।

इसके विपरीत जाति शब्द का अर्थ है—आकृति जाति-लिंगाख्या, अर्थात् जिन प्राणियों की आकृति एक समान हो उनकी एक जाति होती है। इस प्रकार भिन्न-भिन्न जातियां भिन्न-भिन्न नामों से पुकारी जाती है। जैसे—मानव, घोड़ा, कुत्ता आदि जातियां। तथ्य यह है कि सभी मनुष्यों की एक ही जाति है और वह है—मानव जाति। वर्ण और जाति को एक नहीं माना जा सकता है। इसे एक मानने के कारण ही आज बहुत से अनर्थकारी परिणाम भुगतने पड़ रहे हैं।

अब सोचने की बात यह है कि इन शब्दों का दुरुपयोग कैसे और क्योंकर व कब से होने लगा। प्रारम्भ में मानवजाति का वर्ण भी एक ही था मगर धीरे-धीरे आर्यजाति का यथेष्ट विस्तार होगया और इनके समय सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएं आने लगी। इन्हीं समस्याओं के समाधान तथा चतुर्विध उन्नति के लिए आर्यों ने वेदज्ञान के आधार पर आश्रम व्यवस्था तथा वर्ण व्यवस्था का निर्माण किया। यह वर्ण व्यवस्था चार भागों में विभक्त थी—(१) ब्राह्मण, (२) क्षत्रिय, (३) वैश्य और (४) शूद्र। इनका कार्य क्रमशः इस प्रकार से विभाजित किया गया—ब्राह्मण=समाज की अज्ञानता से लड़नेवाला चिन्तक वर्ग, क्षत्रिय=समाज के अन्याय-अत्याचार से लड़नेवाला योद्धा वर्ग, वैश्य=अभावों से लड़नेवाला और शूद्र=शारीरिक श्रम से कृषि, दस्तकारी आदि करनेवाला। इस वर्ण व्यवस्था को साधारण शब्दों में हम अध्यापक, सैनिक, व्यापारिक और श्रमिक वर्ग से भी पुकार सकते हैं। आर्यों ने समाज का यह विभाजन आध्यात्मिक एवं भौतिक दृष्टि से उन्नत होने के लिए किया था। इसमें किसी प्रकार की घृणा या ऊंच-नीच के लिए कोई भी स्थान नहीं था। चारों वर्णों की विधिवत् स्थापना हो जाने पर उनकी सन्तान अपने माता-पिता के वर्ण को स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं होती थी। ब्रह्मचर्य आश्रम में विद्याध्ययन कर लेने पर वह अपना वर्ण चुनने में पूर्ण स्वतन्त्र थी। स्वाभाविक रूप से यह चुनाव गुण, कर्म एवं स्वभाव के आधार पर ही होता था। अपनी योग्यता अनुसार अपने वर्ण का चुनाव या वर्ण परिवर्तन उस समय के समाज में एक सामान्य बात थी। उस समय वर्ण का सम्बन्ध जन्म से नहीं था। "वर्ण" शब्द अर्थात् चुनाव करना ही इस बात का द्योतक है कि वर्ण का जन्म से कोई सम्बन्ध नहीं है।

कालान्तर में आर्यों द्वारा सामाजिक व्यवस्था को सुचारु एवं व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए बनाई गई इस अद्भुत व्यवस्था का रूप कुछ स्वार्थी तत्त्वों के कारण इतना विकृत होगया कि यही व्यवस्था अव्यवस्था का कारण बन गई और सामाजिक वातावरण दूषित हो गया। वर्ण व्यवस्था के विकृत रूप के कारण समाज को क्या-क्या परिणाम भुगतने पड़े इसकी चर्चा करने से पहले इस बात पर चिन्तन करना आवश्यक है कि यह वर्ण व्यवस्था किन कारणों से जन्ममूलक बन गई। इतिहास में ऐसे प्रमाण उपलब्ध हैं कि प्रारम्भ में गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर ही वर्ण व्यवस्था का प्रचलन था तथा सभी वर्णों को बराबर का सम्मान दिया जाता था। एक दूसरे वर्ण में अनुकूलता के आधार पर वैवाहिक सम्बन्ध होते थे तथा वर्ण परिवर्तन भी किए जा सकते थे मगर समय की गति के साथ-साथ वंश परम्परा का उदय हुआ।

गुण कर्म पर आधारित वैदिक वर्ण व्यवस्था ने जन्ममूलक रूप धारण कर लिया तो इसके बड़े ही भयानक परिणाम हुए तथा आज भी होरहे हैं। वैदिक धर्म व संस्कृति का ग्रन्थ वेद केवल कुछेक तथाकथित ब्राह्मणों की बपौती बनकर रह गया तथा अन्य वर्ण विशेषकर शूद्र वर्ण के लिए इसका पढ़ना तो क्या सुनना तक वर्जित होगया। तथाकथित पण्डितों ने घोषित कर दिया—स्त्रीशूद्रौ नाधीयातामिति श्रुतिः। अर्थात् स्त्री और शूद्र वेद न पढ़ें। इसका सबसे बड़ा कुपरिणाम यह हुआ कि वेद की शिक्षा से हीन आर्यजाति विवेकहीन और पंगु बनकर रह गई। सामाजिक स्तर पर से वेदों के लुप्त हो जाने पर ही सत्य सनातन वैदिकधर्म में पाखण्डवाद का प्रवेश होगया तथा पौराणिक गपोड़ों की मनघड़न्त कथाएं प्रचलित होने से आर्यजाति अनेक धार्मिक वर्गों में बंट गई। शैव, शाक्त, वैष्णव आदि वर्गों में बंटकर वे एक दूसरे के शत्रु तक बन गए। धर्म के नाम पर इन्हें व्यक्तिवाद, कोरा वैराग्यवाद, पाखण्ड, गुरुडम प्रथा तथा अन्य अनेक सामाजिक कुरीतियों ने जकड़ लिया। इससे न केवल सामाजिक ढांचा बल्कि राजनैतिक ढांचा भी चरमराकर छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त होगया। यही नहीं, जन्मगत जाति के आधार पर ये राजा आपस में ही टकराने लगे। इससे यहां की राजनैतिक अवस्था इतनी दयनीय होगई कि मुट्ठीभर विदेशी आक्रमणकारी इनके मन्दिरों को तोड़कर अरबों की सम्पत्ति छीनकर ले गए और जनता को गुलामों के रूप में बेचा गया।

वर्ण व्यवस्था को जन्ममूलक मानने के कारण ही आर्यजाति छिन्न-भिन्न होकर कितने ही वर्ष गुलाम रही। इतनी सशक्त तथा योग्य आर्यसन्तान आपसी फूट, घृणा और द्वेष के कारण विधर्मी बन गई। तथाकथित सवर्णों की आंखें इतने पर भी नहीं खुलीं तथा शूद्रों को पुनः गले लगाने के कोई प्रयास नहीं किए। किसी ने ठीक ही कहा है कि इन लोगों ने बटाओ का फार्मूला सीख लिया था मगर जमा और गुणा का फार्मूला नहीं सीख सके। कुछ लोगों ने आर्यधर्म अपनाने की इच्छा भी व्यक्त की मगर दम्भी और पाखण्डी तथाकथित पण्डितों ने ऐसे प्रावधान से बिल्कुल ही मना कर दिया। यहां तक कि उन्होंने स्वयं अपने में से निकले हुए लोगों को भी शुद्ध करके पुनः अपने साथ मिलाने से भी साफ इन्कार कर दिया। तथाकथित इन हिन्दुओं की इस आत्मघाती नीति का ही परिणाम है कि भारत के वर्तमान मुसलमानों में नब्बे प्रतिशत लोग तथा ईसाइयों में शतप्रतिशत व्यक्ति राम कृष्ण की ही सन्तान हैं। अत्यन्त दुर्भाग्य का विषय है कि पौराणिक मतावलम्बी हिन्दू आज भी बड़ी कठिनता से इस बात को गले से नीचे उतारने के लिए तैयार हो पाते हैं कि जन्ममूलक वर्ण-व्यवस्था ही हमारे पतन का मूल कारण रही है तथा शूद्रों को भी वेदादि सत्य शास्त्रों के पढ़ने का अधिकार देना चाहिए। उन्हें अपने शूद्रत्व का बोझ उतारने के लिए सत्य का मार्ग प्रशस्त किया जाना चाहिए। आज भी कई ऐसे तथाकथित विद्वान् हैं जो कि शूद्रों को अछूत ही घोषित करते हैं। स्वतन्त्रता के प्रथम उद्‌घोषक, समाज और राष्ट्र की समस्याओं तथा समाज और राष्ट्र की मूलभूत कठिनाइयों को समझकर उनका सही समाधान बतानेवाले महान् क्रान्तिकारी और समाजसुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इस समस्या को भी गंभीरता से लिया तथा इसके समाधान के लिए भी ठोस आधार प्रस्तुत किए हैं। शुद्धि मन्त्र के प्रणेता महर्षि दयानन्द जी ही थे। यदि जोड़ और गुणा की यह प्रथा महर्षि जी ने न चलाई होती तो संभवतः आज कोई राम, कृष्ण व वेद का नाम लेनेवाला भी न बचा होता। महर्षि दयानन्द ने एक बहुत बड़ा स्वप्न देखा था कि आर्यावर्त में पुनः वैदिक साम्राज्य हो तथा ऊंच-नीच की दीवारें ध्वस्त होकर

क्रमशः

कुछ तड़प कुछ झड़प

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेदसदन, अबोहर—१५२११६

अमरीका की आज्ञा से शाकाहार प्रचार—गुरुकुल करतारपुर के मन्त्री श्री चतुर्भुज मित्तल ने एक रोचक घटना सुनाई। श्री चतुर्भुज के एक मित्र एक दिन अपने एक डाक्टर मित्र के पास गये और कहा कि आजकल आपको पेटदर्द व सिरदर्द के लिए कौनसी गोली देने की अमरीका से आज्ञा मिली है। उनके इस कथन को सुनकर कुछ लोग चकित से हो गये। उन्होंने अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा, "हमारे डाक्टरों व बुद्धिजीवियों की तो सोच ही समाप्त हो चुकी है। ये लोग तो वही कुछ कहेंगे जो अमरीका से आर्डर मिलेगा।"

अमरीका का आदेश होगा तो ये मांस अण्डा का प्रचार करेंगे। अमरीका आज्ञा देगा तो यह गो-दुग्ध का गुणगान करेंगे। अमरीका कहेगा तो यह नीम के वृक्ष की स्तुति करेंगे। अमरीका का आर्डर मिलेगा तो यह प्रदूषण को रोकने के लिए वृक्षों की महिमा गायेंगे। यह बात सर्वत्र सत्य है। हृदय-रोग विशेषज्ञों के एक सम्मेलन में एक आर्यपुरुष को कुछ कहना पड़ा। उन्होंने विशेषज्ञों से पूछा कि हृदयरोग का मुख्य कारण व इस रोग से बचाव के लिए आप क्या कहना चाहेंगे? डाक्टरों ने कहा फेफड़ों में जो रक्तसंचार में गतिरोध हो जाता है तो हृदयरोग का भय पैदा हो जाता है। लम्बे श्वास लेने से, स्वच्छ वायु के सेवन से मनुष्य इस रोग से बहुत कुछ बच सकता है।

उस वृद्ध आर्य ने कहा हमारे तो सन्ध्या-वन्दन का ही एक मुख्य अंग प्राणायाम (Long Breathing) है। हमारे गुरुकुलों में प्रातः जागरण व स्वच्छ वायु का सेवन नित्य-नियम में आजाता है। हमारी प्रत्येक बात की अंग्रेजी पठित लोगों ने खिल्ली उड़ाई अब अमरीका ने आज्ञा दे दी है प्राणायाम किया करो। अमरीका में प्रत्येक स्कूल में भोजन सम्बन्धी एक पुस्तिका पढ़ाई जाती है। पहले उसमें एक वृत्त (Circle) बनाकर आहार का ज्ञान करवाया जाता था। विटामिन, प्रोटीन आदि की तोतारटन के साथ उसमें मांस अण्डा अंकित होता था। प्रत्येक पदार्थ इसी कसौटी पर कसकर खाया जाता था। अब वृत्त का स्थान त्रिकोण को दिया गया है। इसमें दालें, अन्न, फल व शाक आदि लिखे हैं। त्रिकोण में ऊपर एक छोटे से भाग में मांस-अण्डे को सीमित कर दिया गया है। मांस अण्डा पहले पूरे वृत्त पर छाया होता था।

यह वैदिक विचारधारा की बहुत बड़ी विजय है। अब अमरीका का Order मिल गया है मांस अण्डे से बचो। शाकाहारी बनो। हमारे देश में तो Red Blood (रक्त वर्णिम) मालटा फल प्राप्त करने के लिए मालटे के पेड़ को बकरों का रक्त पिला-पिलाकर मालटे की खेती विकसित करने के परीक्षण किए गए। यह मनुष्य की क्रूरता का एक उदाहरण है। यह भी ध्यान रहे कि पौधों को लहू पिलाये बिना ही हमारे कृषक Red Blood मालटा उगाते आए हैं। पंजाब केसरी में बकरे का रक्त पिलाने की बात एक महाजन ने अपनी आत्म-कथा में लिखी। इसे पढ़कर मुझे रोना आया। जानते हो यह क्रूर-कर्म कौन करता रहा? यह श्रीमान् थे ला० मेहरचन्द जी महाजन जो महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के प्रधान बनाए गए और कालेज पार्टी के एक नेता थे। सच्च बोलने की मूर्खता मैं करता ही रहता हूं। आर्यों को यह नया ज्ञान करवा रहा हूं।

अपने ही भार से—कुछ व्यक्ति व संस्थाएं अपने ही भार के नीचे दबकर मर जाते हैं। मकड़ी स्वयं जाला बुनकर उसी में बन्दी बन जाती है। कुछ लोगों की कृपा से आर्यसमाज की भी वही स्थिति हो रही है। बाबुओं की कृपा से गुरुकुल कांगड़ी की जो दुर्दशा सुन रहा हूं उसका वर्णन करते हुए मेरा कलेजा फटता है। गुरुकुल के मालिकों की कृपा से भारतीयता को वहां से विदाई न मिले तो और क्या हो? वैदिक दृष्टिकोण, वैदिक शिष्टाचार और आहार व्यवहार सबकी छुट्टी धीरे-धीरे होरही है। सम्पत्ति के झगड़े शेष रह जायेंगे। नये-नये स्कूल समाजी खोल रहे हैं। स्कूल खोलकर फिर कहते हैं आर्यसमाजी अध्यापक चाहिए। श्रद्धालु आर्यजनता को मूर्ख बनाने के लिए कहा जाता है कि हम नैतिक शिक्षा के अध्यापक रखेंगे। कई बार नैतिक शिक्षा के अध्यापकों के लिए विज्ञापन भी निकलते हैं। गुरुकुल के स्नातक, शास्त्री व एम०ए० पास को प्राथमिकता दी जाएगी। ऐसा एक विज्ञापन पढ़कर एक सज्जन बोले, "देखो जी यह कालेजों स्कूलों वाले आज तक एक नैतिक व्यक्ति भी उत्पन्न नहीं कर सके। इन्होंने पैदा क्या किया है? लुटेरा, छलिये व ठग!" इन शब्दों पर बुरा मानने की आवश्यकता नहीं। क्या यह सत्य नहीं?

नैतिक शिक्षकों के नाम पर गुरुकुलों के स्नातकों को खरीदने का धंधा चल रहा है। कालेजों के बी०ए०, एम०ए० पास व स्वयं पब्लिक स्कूलों के मुखिया प्रिंसिपल नैतिक शिक्षा क्यों नहीं पढ़ाते? क्या उनका काम मोटे-मोटे वेतन लेना व मौज मारना ही है। ये सब बातें सुनकर मैं सोच में डूब गया। उस भाई ने यह भी कहा कि पब्लिक स्कूलों के सारे प्रिंसिपल अंग्रेजी नहीं जानते। न बोल सकते हैं और न लिख सकते हैं। बस जोड़-तोड़ करना व धन बटोर कर आगे करना ही इनका मुख्य काम है। एक वरिष्ठ पत्रकार के शब्दों में समाज के नाम पर पब्लिक स्कूल खोलकर आर्यसमाज पब्लिक से कट चुका है। आर्यसमाज के सभी शहरी सम्मेलन केवल 'स्कूल सम्मेलन' होते हैं जिनमें इन्हीं स्कूलों की मंडली हुकम से आजाती है। सरकारी अनुदान प्राप्त स्कूलों कालेजों के कितने शिक्षक महात्मा हंसराज दिवस पर देहली में देखे जाते हैं? ऐसे आर्य स्कूलों व डी०ए०वी० स्कूलों के शिक्षकों पर प्रबन्धकों का हुकम नहीं चलता। आओ! समाज-द्रोह के पाप से बचो। आत्म-हत्यारे न बनो। समाज मन्दिरों को किराये पर चढ़ाना बन्द करो। वेदप्रचार को मुख्य कर्म समझो। गुरुकुलों को बेच-बेचकर अपने पेट भरने का पाप भी बन्द करो। सच्चे आस्तिक व ईशोपासक बनो।

आर्यजाति के गौरव चौधरी पीरूसिंह जी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने अपने जीवन में एक बहुत बड़ी भूल की। श्री महाराज इतिहास मर्मज्ञ थे। उन्हें आर्यसमाज का इतिहास लिखना चाहिए था या अपने किसी शिष्य से लिखवाना चाहिए था। घर बैठे लोगों से रिपोर्ट मंगवाकर इतिहास के ग्रंथ नहीं लिखे जा सकते। यह कार्य साधना मांगता है। स्वामी जी ने इस दिशा में जितनी साधना की, उसका वर्णन कर पाना मेरे बस की बात नहीं।

आज उन्हीं के एक लेख के आधार पर आर्यजाति के एक रणबांकुरे चौ० पीरूसिंह जी पर कुछ लिखने लगा हूं। आर्यसमाजियों में एक महा-रोग है। राजनीति के क्षेत्र में सेवा करनेवालों पर जो नित्य प्रति समाचार पत्रों में लेख छपते ही हैं। यदि हम ऊधमसिंह, मदनलाल जी धींगरा के विशेषांक नहीं निकालेंगे तो भी दैनिक पत्रों में उन पर बहुत कुछ छपेगा। वैदिकधर्म पर प्राण वारनेवालों की तो चर्चा हमारी वेदी से होती नहीं। कोई प० लेखराम बलिदान पर्व मनाता है? हरयाणा के चौ० पीरूसिंह आर्यसमाज के एक महान् निर्माता, सच्चे देशभक्त, गोभक्त, सत्यवादी और आदर्श ऋषिभक्त थे। कुछ लोग तो इसलिए भी उनकी चर्चा नहीं करते क्योंकि वे एक ग्रामीण थे और उनकी बिरादरी के न थे। आर्य बिरादरी का ऐसे लोगों के लिए महत्व नहीं। कभी चौधरी पीरूसिंह के कारण मटिण्डू भारतभर के आर्यों के लिए एक आकर्षण रखता था। स्वामी श्रद्धानन्द व स्वामी स्वतन्त्रानन्द जैसी विभूतियां मटिण्डू आईं। आर्यसमाज के बीसियों शास्त्रार्थ महारथी व विद्वान् मटिण्डू को तीर्थ समझकर वहां पहुंचे। चौधरी जी की शूरता पर आर्यमात्र को अभिमान था। जब लाला लाजपतराय को देश निकाला दिया गया तो उनके मित्र उन्हें छोड़ गए। गवर्नर के पास जाकर कालका में गिड़गिड़ा कर कहा कि "हम तो तिहारे ही है, लाला लाजपतराय से हमारा कुछ भी लेना देना नहीं।"

तब आर्यों पर घोर विपत्तियां आईं। आज लोगों को यह ज्ञात नहीं कि तब सर्वाधिक विपत्ति हरयाणा के आर्यों ने ही झेली थी। महात्मा मुन्शीराम जी ने तब स्वयं हरयाणा की यात्रा की। महाजन गांव-गांव गये। स्वामी ब्रह्मानन्द जी को कहा कि हरयाणा को आप सम्भालें। उस अग्नि-परीक्षा के समय चौ० पीरूसिंह हरयाणा के आर्यों का विशेषरूप से आर्यजाटों का बड़ी निर्भीकता से नेतृत्व किया।

पूज्य दादा बस्तीराम जी ने एक बार कहा था कि मैं नया भजन रचकर पहले चौधरी पीरूसिंह को सुनाकर फिर कहीं गाया करता था।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

गाय का दूध घी उत्तम औषधि है

श्रवणकुमार, गर्ग

दूध को बल-जीवन भी कहते हैं। यही प्राणों का आधार है। इससे निर्बल को बल मिलता है। इसी को पीकर शिशु बोलना सीखता है। सुन्दर सुडौला बनता है। सोचने, विचारने और समझने लगता है। इसी से पेट भरता है, इसी से इलाज करता है। वेद भी इसकी महिमा बखानते हैं। दूध-घी सात्त्विक बनाता है। ज्ञान-ध्यान में लगाता है। इसीलिए चरक को मानना पड़ा कि पयः पथ्यं यथा अमृतम्।

शास्त्रों में दूध को सर्व औषधालय कहा गया है। इसीलिए मैं कुछ रोगों में आजमाये दूध-घी के द्वारा रोग निवारण के उपाय यहां लिखता हूं जो मानवमात्र के लिए वर्तमान महंगाई युग के लिए सार्थक और सहायक सिद्ध होगा।

1. अनिद्रा—जिसे नींद न आती हो, मोटी ताजी लाल गाय का दूध रोज रात को खूब कटाने के बाद पीना चाहिए। जितने गाढे दूध के घूट पियेंगे उतनी गहरी नींद आयेगी। कुछ दिनों में आठ-आठ घण्टे तक नींद आने लगेगी।

2. अफारा—दूध उबालें, जब पीने लायक हो जाय, शहद मिला कर घूंट-घूट पीते रहिये। यदि इस दूध को अच्छी तरह फेरकर पीयेंगे तो अच्छा होगा। इससे अफारा अथवा गैस आदि रोग तुरन्त दूर होंगे।

3. आंखो की जलन—भावप्रकाश निघण्टु में गाय का दूध आंखों के के लिए अाम अंजन माना है। रात को सोते समय दूध की मलाई अंगूली से ले कर आंख की पलकों पर लगा दें, आधे घण्टे में जलन समाप्त हो जायगी।

4. आग में जलना—घाव कैसा भी हो, गाय के घी से उत्तम न कोई पेनसिलीन है, न मरहम है। कुदरत ने गोघृत को इतनी विष-नाशक शक्ति से भर रखा है कि इससे बढ़िया क्रीम, मरहम एंटिसेप्टिक हो ही नहीं सकती। गोघृत में पट्टी तर करके जली हुई त्वचा पर रख कर भगवान् का स्मरण करो। दूध में घी डालकर पीये ताकि सप्ताह भर में घाव की जगह नयी त्वचा आ जाये। गाय का दूध शरीर को नयी त्वचा व मांस की कमी को शीघ्र पूरा करता है।

5. उन्माद—आजकल सभी तरह के पागलपन को उन्माद ही कहते हैं, जब आदमी का किसी नैराश्य, चिन्ता, भारी पराजय, भयंकर नुकसान के अलावा अटपटी चोट से दिमाग फिल जाता है तब ऐसी ब्राह्मी बूटी ले आइये और घोंट कर गोघृत में पकाइये। ढाई सौ ग्राम दूध में सौ ग्राम ब्राह्मीघृत डालकर एक उबाल आने दे और फिर नीचे उतारकर जब हलका गरम रह जाये तो पच्चीस ग्राम शहद घोलकर मिलाये। एक मास में उन्माद जडमूल से समाप्त हो जायेगा।

6. खाजखुजली—दूध पर आयी हुई मलाई को एक कटोरी में डालकर बदन पर मालिश करे। उसके आध घण्टे बाद स्नान करे। सभी प्रकार की खाजखुजली जडमूल से समाप्त हो जायेगा।

7. गर्भ न ठहरना—गाय के दूध-घी में सन्तान देने की शक्ति है। पुत्रवती गोमाता जब प्रसन्न होकर दूध देती हो तो पुत्रहीन भी पुत्रवती हो जाती है। काश्यप संहिता में स्पष्ट लिखा है—गर्भाधानकरं क्षरं वंध्यानामपि योषिताम। अर्थात् बंध्या स्त्रि को भी गोदुग्ध से गर्भाधान हो जाता है। गाय को अच्छी तरह से खेत मे चराकर प्रसन्न रखें। उसी गाय का एक मास तक दुग्धघी सेवन करे। ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए एक मास बाद गर्भाधान करें, निश्चित सफलता मिलेगी।

किसी आदमी को किसी प्रकार के रोग की चिकित्सा करवानी हो तो आरोग्यधाम से सम्पर्क करें।

गोवंशहत्याबंदी की मांग और उत्तर

श्री. राजपुरोहित, भारतीय जनता पार्टी, मुंबादेवी विधानसभा निर्वाचित क्षेत्र से चुनकर आये हुए विधानसभा सदस्य का गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगवाने के प्रयासों का स्वागत मुंबई सरकार ने किया है।

श्री राजपुरोहित अपनी मांग लेकर मुख्य मन्त्री मनोहर जोशी एवं उपमुख्य मन्त्री गोपीनाथ मुंडे से मिले थे। श्री जोशी एवं मुंडे ने उनके प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए कहा कि आगामी मानसून क्षेत्र में बिल लाकर महाराष्ट्र में गोवंशहत्याबंदी पर पूर्णतः प्रतिबन्ध लगा दिया जायेगा।

वेयू सहाय (बिहार) की पदयात्रा

चन्द्रशेखर अपने चिकित्सा सम्बन्धी कार्यों के अलावा समय-समय पर गोरक्षा कार्य कर रहे हैं। 4-5 सर्वोदय कार्यकर्ता इसमें भाग लेते हैं। पहले चरण में बछवाडा प्रखण्ड फिर दूसरे प्रखण्ड मंसूर का प्रवास चल रहा है।

भावी भारत में उसका गोवंश पुनः अग्रस्थान में रहेगा

नागरी जीवन असह्य होता जा रहा है, उससे छुटकारा पानें नगरवासी भारतीय चिताग्रस्त हैं अतः ग्रामीण जीवन का आकर्षण बढ़ रहा है। मेरा कार्यक्षेत्र ग्रामीण क्षेत्र में गत 50 साल से रहा और अनुभव से देखा, बड़े-बड़े आई. सी. एस. डेप्युटी कमिश्नर, बैंको का जनरल मैनेजर, महाविद्यालय का प्राचार्य, अध्यात्म-वादी स्वामी, विदेश से लौटे प्राचार्य सभी ग्रामीण जीवन बिताने उत्सुक रहे और हमारी मदद के उत्सुक रहे। ऐसे समर्थ श्रीमंत शहरवासी शहर-निवास छुटकारा पाने को उतावले हैं। भावी भारत के लिए भारत के लाखों ग्राम ही शाश्वत-सुरक्षित सहारा है यह सत्य है मगर ग्रामों का श्वास कोष सम कृषि-गोरक्षा इस समय क्षीणावस्था में है। भारतीय गोवंश रक्षा जितनी हो यह युग-वाणी है अतः बचा हुआ भारतीय गोवंश को बचाना राष्ट्र धर्म है यह समझ सरकार और जनता में हो तभी ग्रामोदय शक्य है। ग्राम-स्वराज्य, पंचायत-राज्य का कोरे शब्दों से हटकर प्रत्यक्ष निर्माण-कार्य में सरकार को अपनी पूरी शक्ति, बुद्धि, कुशलता काम में लानी होगी। इस महा-कार्य का पहला कदम गोवंश की संपूर्ण रक्षा, गोवंश-हत्या बंदी का कानून बनाना होगा। कत्तल खानों के लाइसेन्स रद्द करने होंगे, गोमांस की निकासी छोड़ देनी होगी, चमड़े की निकासी रोकनी होगी। कुछ समय तक सरकार की आमदनी में घाटा होगा मगर यदि भारतीय गोवंश पनपेगा तो, अन्न-उत्पादन बढ़ेगा अनाज सस्ता होगा, करोड़ों एकड़ जमीन फलवती होने से शहर निवासी आसानी से ग्रामों को वापस लौटने लगेंगे, गोसंवर्धन भी बढ़ेगा, दुग्ध और घी सस्ता होगा, भावी प्रजा ताकतवान, स्वयं आश्रित, सुखी समृद्ध जीवन बिता सकेंगी। देश में अहिंसक समग्र क्रांति शक्य होगी।

मध्य प्रदेश शासन से मांग

मध्य प्रदेश में गोसेवा आयोग की घोषणा पूज्य विनोबा जन्म-शताब्दी वर्ष में की तथा मध्य प्रदेश गोधन वध हेतु नहीं जा सकेगा। बूढे गाय-बैलों के लिये गोसदन की स्थापना की जावेगी, धन्यवाद बधाई देते हुए अ.भा. कृषि गोसेवा संघ के अध्यक्ष ने लिखा कि महाराष्ट्र में गोवंश वध हेतु ट्रको द्वारा ले जाया जाता है। सीमा नाके के आसपास पुलिस का उड़नदस्ता कायम किया जावे तथा एक आदेश जारी राज्य शासन द्वारा किया जावे कि गाय, बैल, बछड़ों को महाराष्ट्र या अन्य प्रांतों में बिना शासन के आदेश के नहीं ले जा सकेंगे व सारे कानून का उल्लंघन किया जाता है तो सख्त सजा व दंड भुगतना होगा। इससे बड़ा लाभ होगा कि लदान बन्द हो जावेगा सो उसका प्रभाव बम्बई, देवनार बूचड़खाने पर होगा व बैलों का वध होना बन्द हो जावेगा। विनोबा गांधी शताब्दी वर्ष में एक महान् कार्य शासन द्वारा होगा जो इतिहास [illegible] गौरव बढ़ेगा हार्दिक धन्यवाद।

मानसमुनि

खान-पान से होने वाली बीमारियां

डा० जगदीशसिंह

गन्दे खान-पान से तमाम रोग होते हैं। गर्मी और बरसात में ये बीमारियां अधिक फैलती हैं। हर साल गर्मी आते ही लोग इन बीमारियों के शिकार होने लगते हैं। देश के इस-उस शहर-कस्बे में के दस्त, हैजा, आंव, पोलिया होने की खबरें आने लगती हैं। अखबार के जरिये लोगों को चेताया जाता है। सरकारी महकमे खासकर स्वास्थ्य विभाग सक्रिय हो पड़ता है। लोग चौंक कर सतर्क होने लगते हैं। यह समस्या हमारे देश की ही नहीं संसार के कई देशों की है। ज्यादातर देश गरीब हैं, लोगों के रहने का दर्जा निम्न है। इन मर्जों से बचने के उपाय लोग नहीं जानते। गरीबी के कारण गन्दा खान-पान ज्यादा होता है। तकरीबन 75 प्रतिशत आबादी के पीने का पानी गन्दा होता है। सब जानते हैं—'इलाज से बचाव बेहतर है।' पर इन मर्जों से बचा कैसे जाये?

मोटे तौर पर ये मर्ज बड़े खतरनाक होते हैं। एकदम जल्दी से जल्दी इलाज की जरूरत होती है, नहीं तो जान का खतरा होता है। करीब हजारों लोग हर साल इन मर्जों से मौत के शिकार हो जाते हैं और लगभग लाखों लोग बीमार पड़ते हैं। जाहिर है इन मर्जों से बचाव हर हाल में जरूरी है। अक्सर ये मर्ज गरीब तबके में होते हैं। गन्दा रहन-सहन और खान-पान से, शहरी झुग्गी-झोपड़ी और गांवों की बस्ती में ये मर्ज ज्यादा पनपते हैं।

दरअसल रोग के कीटाणु जब खानेवाली चीज और पीनेवाले पानी में मिले हों तो ऐसे भोजन-पानी को ही गन्दा या दूषित कहते हैं। ये रोग फैलाने वाली कीटाणु तरह-तरह के होते हैं—इसी कारण मर्ज भी तरह-तरह के हैं। गर्मी का मौसम इन रोग उत्पन्न करनेवाले सूक्ष्म रोगाणुओं के माफिक पड़ता है। ये रोगाणु इतने छोटे व महीन होते हैं कि ये यूं दिखते नहीं। इन्हें जानकर लोग खास साधन के जरिये जान-पहचान पाते हैं। आम आदमी इन्हें देख नहीं पाता, सो वह इनसे बेखबर रहता है। मक्खी, धूल-धक्कड़, गन्दे हाथ, कटे-खुले फल, काटकर खुली रखी जाने वाली सब्जियां, हाटमेले, दुकानों पर खोलकर बिकने वाली मिठाइयों और अन्य चीजों से मर्ज उत्पन्न करनेवाले रोगाणु मनुष्य के पेट में पहुंचते हैं। मांस, मछली, अण्डा, दूध-दही, दूध स बनी खाने की चीजें, सलाद, फल वगैरह के जरिये रोगाणु जल्दी और ज्यादा फैलते हैं। ये चीजें गर्मी में जल्दी खराब होना शुरू हो जाती है।

> पीने का पानी शुद्ध-स्वच्छ हो। थोड़ी-सी भी शंका है तो फिटकरी की डेली पानी में फिरायें। इससे बहुत-सी गंदगी बैठ जायेगी। पानी निथराकर उबालें। इसे ठण्डा करके स्वच्छ बर्तन में रख ले। कुएं में ब्लीचिंग पावडर का इस्तेमाल करें। ब्लीचिंग पावडर सरकारी अस्पताल, केन्द्र, उपकेन्द्र अथवा स्वास्थ्य कर्मचारी से मुफ्त मिल सकता है। हैण्ड पम्प का पानी शुद्ध होताहै। नहाना-धोना, पीने के पानी के स्रोत से दूर हो।

रोगाणु से दूषित हुई खाने की चीज खाने का अर्थ है—'आ मर्ज, मुझे लग।' कहते हैं. वे हैं—

- मोतीझरा—इसमें बुखार जाने का नाम ही नहीं लेता। यह मर्ज, आंतों पर बुरा प्रभाव डालता है।
- आंव—मल के साथ चिकनाहट रहती है। पेट में मरोड़ उठता है।
- गले में खरास—ज्यादा दिन रहे तो खांसी, बुखार बढ़ता है।
- विचित्र ज्वर भी हो सकते हैं।
- कै-दस्त-बुखार हो सकता है। गन्दे पानी के कीटाणु खाने की थैली और आंत को एक साथ प्रभावित करते हैं।
- हैजा—इससे लोग अनगिनत कै-दस्त कर उठते हैं।
- पीलिया—गन्दे पानी से जिगर खराब होता है। खून में जहरीले तत्त्व फंसने लगते हैं।
- विषैले खाद्य का रोग—बचे-खुचे, बासी खाने से होता है। यह रोगाणुओं के मुताबिक अमूमन तीन प्रकार का होता है। बुखार वाला रोग मोतीझरा या इसके समान होता है। बीमार पशु का मांस, मुर्गा, मछली, अण्डा, दूध-दही, पनीर-खोया जब ढंग से न उबाला जाये तो मनुष्य को रोज ज्वर होने लगता है। दूसरे तरह का मर्ज रोगाणु के जहर से होता है, जिन्दा रोगाणु से नहीं। गन्दा भोजन करने के तीन से छह घण्टे बाद अचानक तबियत खराब होने लगती है। अक्सर यह अर्द्ध-ठोस भोजन जैसे—आइसक्रीम, कुल्फी, सलाद, सूप, रसेदार मुर्गा, अण्डे की तरकारी, गोश्त वगैरह से होता है। तीसरी तरह का विषैले खाद्य से होनेवाला मर्ज अपने देश में कम होता है क्योंकि हमारे यहां डिब्बा बंद भोजन का चलन उतना नहीं है जितना विदेशों में है। इसे बोटुलिज्म बोला जाता है। सिरदर्द, चक्कर आना, दिखाई देने में दो चीजें दिखना, पेशीय कमजोरी इसके खास लक्षण हैं।

क्रमशः

(पृष्ठ ३ का शेष)

दीनबन्धु रक्तसाक्षी महात्मा फूलसिंह जो कहा करते थे चौधरी पीरूसिंह तो मेरे गुरु थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज कहा करते थे, "चौधरी जो भजनोक थे, उपदेशक थे और शास्त्रार्थ महारथी थे।" स्वामी जी ने लिखा है कि एक बार चौधरी जो एक विवाह में आमन्त्रित किए गए। विवाह संस्कार के लिए पण्डित जी सायंकाल तक न पहुंचे तो घरवाले घबराकर बोले, "चौधरी जी अब क्या होगा? पण्डित जो नहीं आये।"

चौधरी जी ने कहा, "चिन्ता न करें। पण्डित जी तो आगये हैं।" विवाह संस्कार का समय होगया। घरवालों ने पूछा, "चौधरी जी! कहा हैं आर्य पण्डित?"

स्वामी श्रद्धानन्द का वीर योद्धा बोला, "मैं हूं पण्डित। मैं वेदोक्त रीति से विवाह संस्कार करवाऊंगा।" ऐसे पूज्य पुरुषों और आर्य-नेताओं के कारण आर्यसमाज आगे बढ़ता गया।

समालखा का बूचड़खाना आन्दोलन आर्यसमाज के इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है। महात्मा फूलसिंह तब सरकारी नौकरी में थे छुट्टी लेकर गोमाता की रक्षा के लिए आग में कूद पड़े। मैंने श्री लाला सोहनलाल जी पानीपत वालों से बूचड़खाना बन्द करवाने का कुछ इतिहास सुना था। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज भी इनकी चर्चा किया करते थे। चौधरी पीरूसिंह जी ने व भक्तजी ने गांव-गांव जाटों को आज्ञा दे दी कि जिसके पास जो भी हथियार है? वह हथियार लेकर बूचड़खाना ढाने समालखा पहुंच जाओ। चौधरी छोटूराम जो का भी इसमें सहयोग प्राप्त था। वे भी आर्य होने नाते पक्के गो-भक्त थे।

लाला सोहनलाल जी ने बताया कि जब शस्त्रधारी ग्रामीण आर्यों को ठाठे मारता सागर इस क्षेत्र में उमड़ पड़ा तो हमने यह चर्चा सुनी कि इन जाटों को स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी ने भेजा है। शूरता की शान महात्मा मुन्शीराम के तपे तपाये सेनापति पीरूसिंह को इस गोरवपूर्ण विजय का सर्वाधिक श्रेय प्राप्त है।

एक बार किसी विरोधी ने चौधरी जी के विरुद्ध पंचायत बुलवाई उसी की बुलवाई पंचायत ने निर्मल जीवन के आर्य नेता चौधरी पीरूसिंह के पक्ष में और उस व्यक्ति के विरुद्ध निर्णय दिया।

चौधरी पीरूसिंह आर्यसमाज पर सर्वस्व वार देने को सदा उद्यत रहते थे। एक बार थानेदार ने एक सभा बुलाई। वहा चौधरी जी ने आर्यसमाज के लिए थानेदार से झपट ले ली। चौधरी जी बैठक से उठे तो साथ ही आर्यनेता चौधरी जुगलाल भी उठ खड़े हुए थानेदार ने कहा, "जैलदार जी आप तो बैठे।" चौधरी जुगलाल बोले, "मैं सरकार का जैलदार हूं। मेरा जैलदार तो चौधरी पीरूसिंह है, जब तक वह बैठक में बैठेगा, मैं भी तब तक रहूंगा। वह नहो तो मैं भी नहीं। वाह! वे भी क्या दिन थे।

नार्वे से हिन्दी समाचार पत्र का प्रकाशन

अप्रवासी टाइम्स नाम से नार्वे की राजधानी ओस्लो से प्रथम हिन्दी समाचार पत्र का प्रकाशन किया गया है जिसकी पहली प्रति १८ मई, १९९५ को भारत के राष्ट्रपति जी को भेंट की गई। समाचार पत्र के मुख्य सम्पादक श्री अमित जोशी के अनुसार उनका सस्थान पिछले ६ वर्षों से हिन्दी पत्रिका "शान्ति दूत" प्रकाशित करता रहा है जो संसार के लगभग १५६ देशों में पढ़ी जारही है। समाचार पत्र शुरू करने का उद्देश्य यूरोपीय देशों के अप्रवासी भारतीयों का एक वैचारिक मंच प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें हिन्दी के माध्यम से भारत और भारतीयता से जोड़े रखना भी है। श्री जोशी ने यह भी बताया कि रामायण का नार्वेजियन भाषा मे अनुवाद शीघ्र ही उपलब्ध हो जाएगा।

(दैनिक नवभारत टाइम्स के १९ मई, १९९५ के अंक मे प्रकाशित एक समाचार के आधार पर)

—जगन्नाथ, संयोजक, राजभाषा कार्य, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, एक्स. वाई ६८, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली–११००२३

हैदराबाद सत्याग्रहियों को सूचना

जिन सत्याग्रहियों को १-८-९० से पेन्शन न मिली हो, वे सत्याग्रही रविवार ३० जून तक दयानन्दमठ रोहतक मे पहुचकर अपना केस दायर करने के लिए अपने प्रमाण पत्र अवश्य साथ लेकर आवें।

नोट :—३० जून के बाद कोई कार्यवाही नहीं होगी।

—दुलीचन्द स्वतन्त्रता सेनानी, दयानन्दमठ, रोहतक

वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज सोनीपत नगर का वार्षिक उत्सव २२-५-१९९५ से २८-५-१९९५ तक मनाया गया जिसमें पं० ओमप्रकाश जी आर्य (करनाल) के प्रवचन हुए तथा श्री तेजवीर जी की मण्डली व श्री रामरख जी आर्य के भजन हुए डा० रामप्रकाश जी वर्णी एवं श्री महावीरसिह जी वैदिक प्रवक्ता के उपदेश हुए। श्री शेरसिह जी आर्य के भजन हुए। इस अवसर पर एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन भी हुआ जिसमें नगर के विभिन्न छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। एस० एम० हिन्दू हाईस्कूल के छात्र वरुणदेव प्रथम एवं कुमारी प्रतिभा शिवा शिक्षा सदन द्वितीय एवं श्री मनोजकुमार हिन्दू विद्यापीठ तृतीय स्थान पर रहे। इन तीनों को शील्ड, प्रमाण पत्र तथा पुस्तकें एवं शेष प्रतियोगियों को पुस्तकें व प्रमाण पत्र बांटे गए। इस भाषण प्रतियोगिता का आयोजन सेठ श्री रमेश जी जिन्दल ने अपने पूज्यपिता श्री प्रेमराज जी जिन्दल की स्मृति में करवाया। सभा को वेदप्रचार हेतु ११०० रु० दिए गए।

—वीरेन्द्रदेव शर्मा, मन्त्री आर्यसमाज नगर सोनीपत

पुनः वैदिक धर्म में

गत दिनों सुन्दरनगर की चर्च में ईसाइयों द्वारा कुछ हिन्दुओं को बहला-फुसलाकर तथा लोभ लालच देकर ईसाई धर्म मे प्रवेश दिलाया गया था। इस अवसर पर आर्यसमाज सुन्दरनगर कालोनी की ओर से ईसाईयों को शास्त्रार्थ का चैलेंज दिया गया मगर ईसाई लोग इस शास्त्रार्थ का सामना नही कर सके। प्रसिद्ध आर्यनेता, विद्वान् एवं लेखक श्री भगवान्देव "चैतन्य" जी की प्रेरणा से कुमारी सीमा सुपुत्री श्री प्रधानसिह पुनः हिन्दू (वैदिक) धर्म में वापस आगई है। शुद्धि का कार्यक्रम १९-५-९५ को ब्र० आशुतोष जी के पौहित्य में हुआ तथा तपोनिधि स्वामी सत्यपति जी महाराज ने अपना आशीर्वाद और वैदिक साहित्य कु० सीमा को भेंट किया।

मन्त्री : आर्यसमाज कालोनी सुन्दरनगर मण्डी हि०प्र०)

आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर

आर्यवीर दल हरयाणा के तत्वावधान में ग्रीष्म अवकाश में युवकों में ब्रह्मचर्य तथा चरित्रनिर्माण और उनमें सदाचार तथा राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करने के लिए समस्त हरयाणा में अनेकों शिविर लगाए जारहे हैं। जो इस प्रकार है—

२८ मई से ४ जून तक—कौसली, जाडरा (रेवाडी), पानीपत, दूधा (कैथल), भिवानी, खानपुर (नारनौल)

४ जून से ११ जून—रोहतक, गुड़गांव।

११ जून से २५ जून—राष्ट्रीय शिविर कुरुक्षेत्र।

२६ जून से ३ जुलाई—जुडडी (रेवाड़ी)।

३ जुलाई से १० जुलाई—बालधन कलां (रेवाड़ी)

—वेदप्रकाश आर्य, महामन्त्री आर्यवीर दल, हरयाणा

आर्यसमाज विधवान (हिसार) का वार्षिक चुनाव

प्रधान एवं कोषाध्यक्ष—श्री सूबेदार सूरतसिंह आर्य, महामन्त्री—श्री सुरेन्द्रसिंह आर्य, प्रचारमन्त्री—श्री पवनकुमार आर्य, संरक्षक—श्री धर्मसिंह जी शास्त्री।

—अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, सभा उपदेशक

हरयाणा के गुरुकुलों का इतिहास

हरयाणा के समस्त गुरुकुल के अधिकारियों एवं आचार्यों को सूचित किया जाता है कि हरयाणा के गुरुकुलों का इतिहास नामक पुस्तक का लेखन "डा० रणजीतसिंह" प्रिंसिपल द्वारा किया जा रहा है अतः अपने-अपने गुरुकुलों का विस्तृत विवरण लिखकर निम्न पते पर भेजने का कष्ट करें।

डा० रणजीतसिंह, प्रिंसिपल (Rtd.)
5c/14 B.P. Lohan children Hospital
N.I.T. Faridabad Haryana

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार-२४९४०४

प्रवेश सूचना सत्र-१९९५-९६

निम्न पाठ्यक्रमों में निर्धारित प्रपत्र पर प्रवेश हेतु आवेदन-पत्र आमन्त्रित किये जाते हैं :—

१. अलंकार वेदालंकार/विद्यालंकार (बी ए) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम।

२. अलंकार बी.ए. त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम।

३. बी.एस सी. (गणित. बायो, कम्प्यूटर, इण्डस्ट्रियल माइक्रोबायोलोजी, मनोविज्ञान, दर्शन ग्रुप)

४. एम ए. (वेद, संस्कृत, दर्शन, हिन्दी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान, प्रा. भा. इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व तथा योग)

५ एम एस.सी. (गणित, माइक्रोबायोलोजी, मनोविज्ञान, रसायन तथा भौतिकी)

६. पी-एच.डी. (वेद, संस्कृत, दर्शन, हिन्दी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान, प्रा.भा. इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व, गणित, वनस्पति, जन्तुविज्ञान, माइक्रोबायोलोजी, भौतिकी, रसायन)

७ योग डिप्लोमा (एक वर्षीय)

८ हिन्दी पत्रकारिता डिप्लोमा (एक वर्षीय)

९. अंग्रेजी दक्षता डिप्लोमा (एक वर्षीय)

१०. वैदिक यज्ञ विधान कर्मकाण्ड डिप्लोमा (एक वर्षीय)

११. संस्कृत प्रवेश तथा संस्कृत प्रवीण (एक वर्षीय डिप्लोमा)

कन्या महाविद्यालय, देहरादून (अंगभूत महाविद्यालय-द्वितीय परिसर)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के अंगभूत महाविद्यालय द्वितीय परिसर कन्या महाविद्यालय, ४७ सेवक आश्रम रोड देहरादून में निम्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु छात्रायें (हास्टलर तथा डे स्कालर) अपने आवेदन-पत्र प्राचार्या को प्रेषित करें।

१. अलंकार, वेदालंकार (बी.ए.) तथा अलंकार सामान्य बी ए. त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम।

२. एम ए. (हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी)

सामान्य सूचना

१. गुरुकुल कांगड़ी में महिलाओं के लिए विज्ञान विषयों में नियमित प्रवेश की सुविधा नहीं है। व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में महिलायें एम.ए. (योग के अतिरिक्त सभी विषय) तथा एम.एस सी. (प्रयोगात्मक परीक्षा रहित केवल मनोविज्ञान तथा गणित) पी-एच.डी. (योग के अतिरिक्त एम.ए., एम एस सी. सभी विषयों) के लिए आवेदन पत्र दे सकती हैं।

२ एम.ए तथा एम एस सी. (गणित, मनोविज्ञान) में नियमित प्रवेश हेतु छात्रायें अपने आवेदन-पत्र प्राचार्या कन्या महाविद्यालय (गुरुकुल कांगड़ी वि.वि.) सतीकुण्ड, कनखल हरिद्वार से प्रस्तुत करें।

३ एम ए वेद, संस्कृत तथा दर्शन के छात्रों को छात्रवृत्ति उपलब्ध।

४. अनुसूचित जाति/जनजाति के छात्रों को भारत सरकार के नियमानुसार आरक्षण।

५. विवरण पत्रिका (प्रास्पेक्टस) तथा प्रवेश आवेदन पत्र ४०/- रु० नकद मूल्य पर कुलसचिव कार्यालय से उपलब्ध होंगे। डाक से मंगवाने पर कुलसचिव, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के पक्ष में देय ५०/- रु० का बैंक ड्राफ्ट भेजे।

प्रवेश आवेदन-पत्र विश्वविद्यालय में प्राप्त होने की अन्तिम तिथि (नियमित छात्र)

अलंकार सामान्य, बी०ए० तथा बी०एस०सी०

२० जुलाई १९९५	बिना विलम्ब शुल्क
३० जुलाई १९९५	२००/- रु० विलम्ब शुल्क के साथ।

एम०एस०सी०

२० अगस्त १९९५	बिना विलम्ब शुल्क
३१ अगस्त १९९५	२००/- रु० विलम्ब शुल्क के साथ।

एम०ए०, अलंकार (वेदालंकार/विद्यालंकार) तथा डिप्लोमा पाठ्यक्रम

३१ अगस्त १९९५	बिना विलम्ब शुल्क

पी-एच०डी०

३१ दिसम्बर १९९५

डा० जयदेव वेदालंकार कुलसचिव

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-२४९४०४

प्रवेश सूचना सत्र-१९९५-९६

निम्नांकित पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु निर्धारित प्रपत्र पर आवेदन पत्र आमन्त्रित किये जाते हैं।

१. एम.सी.ए. (मास्टर आफ कम्प्यूटर अप्लीकेशन) त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम

छात्रों के लिये—गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार।

छात्राओं के लिये—कन्या गुरुकुल महाविद्यालय ४७ सेवक आश्रम रोड देहरादून।

प्रवेश योग्यता—बी.ए./बी एस सी./बी काम (१०+२+३) बी ई/बी टेक गणित/सांख्यिकी विषय के साथ ५० प्रतिशत अंक स्नातक अंतिम वर्ष परीक्षा देने वाले भी आवेदन कर सकते हैं।

२. पी. सी. डिप्लोमा—पर्सनल मैनेजमेण्ट एण्ड इण्डस्ट्रियल रिलेशन्स

२ वर्षीय—केवल छात्रों के लिये।

प्रवेश योग्यता—न्यूनतम स्नातक (१०+२+३) द्वितीय श्रेणी।

प्रवेश संख्या—२५ सेवारत कर्मचारियों के लिए प्रायोजित संख्या—५।

प्रवेश प्रक्रिया—(दोनों पाठ्यक्रमों के लिये) प्रवेश परीक्षा के आधार पर योग्यता सूची।

अनुसूचित जाति/जनजाति के छात्रों के लिये नियमानुसार आरक्षण।

प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन पत्र तथा अन्य विवरण १५०/- रु० नकद अथवा १७०/- रु० डाक से प्राप्त किये जा सकते है। डाक से मंगवाने के लिए बैंक ड्राफ्ट कुलसचिव, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के पक्ष में भेजें। प्रवेश परीक्षा फार्म के साथ ३००/- रु० शुल्क नकद अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा प्रेषित करें।

प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन पत्र प्रस्तुत करने की अन्तिम तिथि ३० जून १९९५ है।

(डा० जयदेव वेदालंकार)
कुलसचिव

गायत्री यज्ञ सफलतापूर्वक संपन्न

गत १४-५-९५ से २१-५-१९९५ तक आर्यसमाज सान्ताक्रुज में एक सप्ताह का गायत्री यज्ञ अभूतपूर्व सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। यज्ञ के प्रथम दिन दिनांक १४-५-९५ को प्रातः यज्ञ एवं प्रवचन के पश्चात् स्वामी मेधानन्द जी एवं स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती (ज्वालापुर) के गायत्री मन्त्र की महत्ता पर महत्त्वपूर्ण प्रवचन हुए। जिसका आगन्तुक श्रोताओं पर विशेष प्रभाव पड़ा। गायत्री यज्ञ में प्रतिदिन महिलाओं की उपस्थिति सराहनीय थी। इस सप्ताह के अन्तर्गत दि० १५-५ से २०-५ तक नित्य सायं ३ से ५ बजे तक गायत्री यज्ञ का कार्यक्रम संपन्न हुआ, जिसमें पं० नामदेव आर्य, पं० विनोदकुमार शास्त्री, पं० उमेश आचार्य ने गायत्री यज्ञ संपन्न कराया। अन्तिम दिन दि० २१-५-९५ को गायत्री यज्ञ की पूर्णाहुति भी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई, जिसमें डा० सत्यकाम वेदालंकार जी (दिल्ली) के प्रवचन हुए। अन्त में गरीबों में भोजन वितरित करने के बाद समारोह समाप्त हुआ।

समारोह को सफल बनाने में यज्ञ की संयोजिका श्रीमती कमलेश सूद व आर्य महिला समाज की संयोजिका श्रीमती यशबाला गुप्ता व अन्य महिलाओं ने दिन रात एक कर अथक परिश्रम किया जो बधाई के पात्र हैं।

शराब बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इनसे दूर रहें।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

किस तरह शराब से हुई तबाही में गरीब किसान और मजदूर की दुनिया में अन्धेरा ही अन्धेरा छा गया है और देश की स्वाधीनता उनके लिए किस तरह एक निरर्थक चर्चा बन गई है—यह किसी से छुपा नहीं। मोरार जी भाई के जीवन की प्रबल अभिलाषा थी कि शराब बन्द हो, नशाबन्दी परिषद् और आंदोलन के साथ वे सक्रियरूप से जुड़े रहे। अतः हमें आशा करनी चाहिए और ऐसी परिस्थिति भी पैदा करनी चाहिए कि सरकारें इसी वर्ष अपने-अपने राज्यों को पूर्ण शराब मुक्त घोषित करें।

अतः अनेक सामाजिक सेवकों और संस्थाओं के प्रतिनिधियों से विचारविमर्श करके निर्णय हुआ है कि ९ अगस्त, १९९५ 'भारत छोड़ो' आंदोलन के स्मरण दिवस पर पूर्ण नशाबन्दी अभियान शुरू होगा। यदि अहिंसात्मक रीति से आंदोलन चलाकर सफलता न मिली तो ११ सितम्बर, १९९५ के बाद दुकानों को तोड़ दिया जाएगा। इस आंदोलन के सम्बन्ध में विस्तृत रूपरेखा तैयार करने के लिए शीघ्र ही एक बैठक परिषद् की ओर से दिल्ली में बुलाई जाएगी। स्वयंसेवी संस्थाओं एवं धार्मिक संगठनों के नेताओं को भी इसमें आमन्त्रित किया जाएगा।

क्योंकि कार्यकर्त्ता सम्मेलन में यह भी निश्चय हुआ था कि जनता और कार्यकर्त्ता दोनों के मन में जागरूकता और संकल्प का उचित माहौल तैयार करने के लिए स्थानीय अथवा राज्य स्तर की परिषद् की इकाइयों को पुनर्गठित और सक्रिय करना जरूरी है—अस्तु सम्मेलन के समय निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार परिषद् के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह एवं अतिरिक्त महामन्त्री प्रभातशोभा पंडित ने एक साथ अथवा अलग-अलग कई जगह का दौरा किया।

(नशाबन्दी सन्देश से साभार)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक फोन। (७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन। ७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३   पंजि० नं० P/I   सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३,०९६

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष २२ अंक २७   १४ जून, १९९५   (वार्षिक शुल्क ५०)   (आजीवन शुल्क ५०१)   विदेश में १० पौंड   एक प्रति १-२५

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा

नया युग उमड़कर उमंगों से आया

(निज संवाददाता द्वारा)

आर्यजनता को अब निराशा से मुक्ति मिल जाएगी। हैदराबाद में सार्वदेशिक सभा के निर्वाचन में सभा पर कब्जा जमाए हुए पुरानी जुण्डली की इस बार दाल नहीं गल सकी। लगभग सभी प्रांतों के प्रतिनिधियों ने मरवाहा वन्दे मातरम् कम्पनी की कुचालें विफल बनाकर सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, आर्यसमाज के वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी स्वामी विद्यानन्द जी को प्रधान तथा युवा स्वामी सुमेधानन्द जी राजस्थान को मन्त्री चुनकर आर्यसमाज के संगठन को प्राणवान बनाने की ओर दृढ़तापूर्वक पग धरा। हरयाणा सभा के अनुभवी लेखक प्रिंसिपल रणजीतसिंह जी तथा दक्षिण भारत के सुयोग्य युवक ऋषि के दीवाने सत्यव्रत जी उपमन्त्री चुने गये। उड़ीसा के कर्मठ साधु स्वामी धर्मानन्द जी तथा प्रो० शेरसिंह जी पुराने आर्यनेता जैसे जाने माने महारथी उपप्रधान चुने गये। उड़ीसा, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मुम्बई, विदर्भ, मध्यप्रदेश, मध्य भारत, राजस्थान, हिमाचल, हरयाणा, बंगाल आदि से आये हुये प्रतिनिधियों ने सूर्यदेव व उनके सम्बन्धी गुरुकुल घटकेश्वर काण्ड के हीरो वन्दे मातरम् को ठुकरा दिया। सूर्यदेव पहले अपने ससुर के लिए लड़ते थे अब अपनी पुत्री के ससुर को आर्यसमाज पर थोपने पर तुल गये थे। परन्तु आर्यजनता अब इस टोली को ठुकरा चुकी है।

तीस वर्ष से आर्यसमाज का पतन होरहा है। जातिवाद, प्रांतवाद के पैगम्बरों की कृपा से प्रचारकार्य तो ठप्प है। केवल सम्पत्ति बेचने, दुकानों का भाड़ा खाने का काम ही सार्वदेशिक की मुख्य उपलब्धि रह गई थी। स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, दिल्ली किराये पर चढ़ाया गया। पंजाब में जहां पं० लेखराम जी ने गाड़ी से छलांग लगाई उस चावापैल कस्बे का आर्यसमाज मन्दिर बेच दिया गया। बड़े यत्न से वह मन्दिर बचाया गया। आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के पूर्वप्रधान श्री वीरेन्द्र तथा मन्त्री श्री अश्विनीकुमार एडवोकेट ने स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार की करोड़ों की सम्पत्ति लाखों रु० में बेच दी। पगड़ी की राशि स्वयं डकार गये।

पंजाब व देहली में भव्य भवन तो दिखाई दे रहे हैं परन्तु, दीवान हाल दिल्ली व मन्दिर मार्ग के भव्य मन्दिरों में भी सत्संगों में तीन-तीन चार-चार लोग ही आ पाते हैं। ला० रामगोपाल ने भी इस स्थिति पर दुःख प्रकट किया परन्तु वह गद्दी छोड़ने को तैयार न थे। पंजाब में तो अब भी धड़ाधड़ आर्यसमाज की सम्पत्ति बेचने की ही सोच काम कर रही है। गैर आर्यसमाजी आर्यसमाज को हड़पने पर तुल चुके हैं।

यह लोग एक भी नया विद्वान् तैयार न कर सके। अब सार्वदेशिक सभा के नये अधिकारी आर्यसमाज को नई दिशा देंगे। सब प्रान्तों में वेदप्रचार यात्राएं निकाली जायेंगी। बड़े-बड़े साधु-महात्मा प्रचारक प्रचारार्थ निकलेंगे। विद्वान् सब प्रान्तों को भेजे जायेंगे। उत्तम साहित्य का निर्माण होगा। मिनिस्टरों के चक्र काटने की बजाय ग्रामों में जनता के द्वार पर ऋषि का सन्देश लेकर सभा के मान्य सन्यासी नेता पहुंचेंगे। जातिवाद, प्रान्तवाद के विष को दूर करके आर्यों में भ्रातृभाव पैदा किया जायेगा। युवकों के लिए, गृहस्थों के लिए स्थान-स्थान पर शिविर लगाये जायेंगे। वेदभक्ति, ईश्वरभक्ति तथा शराबबन्दी की लहर चलाई जायेंगी। गत तीस वर्ष में आर्यसमाज ने क्या उन्नति की? काम ठप्प ही रहा। हां, एक-एक सभा को तोड़-तोड़कर हर प्रान्त में दो-दो सभायें बनाने व बोगस लीडर आर्यों पर थोपने का काम ला० रामगोपाल व उनके साथी करते रहे। अब मुकदमा युग समाप्त करने का समय आ चुका है।

हैदराबाद सत्याग्रह व सिंध में सत्यार्थप्रकाश सत्याग्रह के सेनानी स्वामी विद्यानन्द व स्वामी सुमेधानन्द जैसे तेजस्वी प्रतापी सन्यासी के नेतृत्व में आर्यो आगे बढ़ो। दुःख का विषय है कि सार्वदेशिक के तथाकथित अधिकारी पत्रों में यह लिखते हुए नहीं लजाते कि वन्दे मातरम् सर्वसम्मति से प्रधान चुने गए। क्या ऐसे लोगों को धार्मिक कहा जायेगा। यदि वन्दे मातरम् सर्वसम्मति से चुना गया था तो कोर्टों व पुलिस की चरण शरण में ये लोग क्यों चले गये? झूठ के ये थोक व्यापारी आर्यसमाज पर कलंक है।

ग्राम वेद-प्रचार मण्डल झुमियांवाली

पंजाब के जिला फिरोजपुर में ग्राम रामसरा में आर्यवीर दल का एक शानदार शिविर लग रहा है। १६ जून से २५ जून तक लगने वाले इस शिविर में भाग लेने के लिए युवकों में बड़ा उत्साह है। बीसियों गांवों के युवक इस शिविर में प्रशिक्षण पायेंगे। जिन ग्रामों में कभी किसी सभा का उपदेशक प्रचारक देखा ही नहीं गया, वहां के नौजवान बड़ी श्रद्धा से शिविर में भाग लेंगे।

ग्राम वेद प्रचार मण्डल के अधिकारी श्री बहादुरमल जी यादव, श्री भोलाराम आर्य, श्री दौलतराम आर्य आदि गांव-गांव घूम-घूमकर शिविर के प्रचार में लगे हैं।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री स्वामी सुमेधानन्द जी शिविर का उद्घाटन करेंगे। स्वामी जी का इस क्षेत्र में बड़ा सम्मान है। सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान स्वामी धर्मानन्द जी, प्रो शेरसिंह आदि भी शिविर में पधारेंगे। दक्षिण भारत के भी विद्वान् आचार्य वेणुगोपाल शिविर में पूरा समय देंगे। कर्नाटक से भी आर्यसमाज के कर्णधार इस शिविर में आर्यवीरों को अपना सन्देश देंगे। यह शिविर पंजाब में वेद-प्रचार के काम को बढ़ाने में बड़ा सहायक होगा।

साहबराम आर्य

"यज्ञ और उसके मौलिक सिद्धान्त"

प्रतापसिंह शास्त्री, पत्रकार

यज्ञ शब्द "यज" धातु से बना है इसके तीन अर्थ है—देवपूजा, संगतिकरण और दान। वैदिक विद्वान् पं. बुद्धदेव विद्यालंकार स्वामी समर्पणानन्द जी ने लिखा है—वस्तुत: देखा जाए तो संगतिकरण अर्थात् मिलाना, संगठित करना ही यज्ञ का अर्थ है। इसलिए यज्ञ मे घृत, अग्नि, समिधा आदि का संगतिकरण है। ये सब पदार्थ यज्ञ में इसलिए इकट्ठे किये जाते हैं कि इनके द्वारा गुरु, शिष्य, पति-पत्नी, राजा प्रजा, शासक, जनता, ग्राहक, दुकानदार स्वामी सेवक आदि को परस्पर के व्यवहार की शिक्षा दी जाए। इसीलिए गीता में कहा है—"हे अर्जुन, जो यज्ञ नही करते उनको यही लोक प्राप्त नही होता है। तो परलोक क्या प्राप्त होगा" इससे स्पष्ट है कि यज्ञ का मुख्य सम्बन्ध इस लोक से है यज्ञ में यजमान (मुख्य कार्यकर्ता) अग्नि (आगे बढ़ने की प्रेरणा करनेवाले दृढ संकल्प का प्रतीक) समिधा (यजमान के सहयोगी कार्यकर्ता समिधा कहलाते हैं) ऋत्विज जो किसी यजमान द्वारा नियत किसी विशेष कार्य या उद्देश्य प्राप्ति हेतु कार्यरत हो जो अन्धाधुन्ध काय न करके उद्देश्य की पूर्ति के लिए पहले ठीक-ठीक समय विभाग बनाकर फिर उसका पूर्णरूप से पालन करे। छोटे यज्ञ मे चार ऋत्विज है और बड़े यज्ञों में यह सख्या १६ तक है इसी प्रकार संगठनों में संगठन के मुखिया की सहायता के लिए भी अनेक कार्यकर्ताओं के जिम्मे कार्यों की जिम्मेवारी (ड्यूटी) सौंपी जाती है। यज्ञ में होता, अध्वर्यु, उदगाता और ब्रह्मा ये चार प्रमुख हैं। यजमान का आसन संकल्प का आसन पर बैठकर यजमान संकल्प करता है कि इस तिथि, इस दिन, इस समय अमुक लोकहितकारी उद्देश्य की पूर्ति के लिए मैं अमुक यज्ञ करूंगा। संकल्प का यज्ञ में विशेष महत्त्व है। पं. बुद्धदेव जी विद्यालंकार उदाहरण देकर समझाते हैं:—आप एक बड़ी दुकान के मालिक हैं। बीस कर्मचारी आपकी इस दुकान में काम करते हैं आप यजमान हैं वे आपके कार्यकर्ता हैं। यह एक छोटा सा यज्ञ है। उसमें से ५००/- रुपया मासिक आपको बचता है। वह ५००/- रुपया आप क्यों बचाते हैं ? आप अभी इस बचत को एक हजार तक पहुंचाना चाहते हैं, पर मैं आपसे पूछता हूं क्यों ? मैं ही नही, आपके कर्मचारी भी पूछते हैं आप झुंझलाकर कहते हैं—तुम अपने पैसे लो और अपना काम करो, तुम्हें इससे क्या मतलब यह इतना रूखा जवाब आप इसलिए देते हैं कि आप संकल्प की महिमा नहीं जानते। एक अन्य उदाहरण देखिये—ये कुछ सैनिकों के साथ जंगल में कोने बैठे हैं ? ये महाराणा प्रताप हैं आज इस वन में हैं तो कल उसमें। आज इस घाटी पर हैं तो कल उस पर। राज्य छोड़कर वन-वन झाड़ी-झाड़ी की ओर छिपे भाग रहे हैं। इनके साथी सरदारों का भी यही हाल है। भूख-प्यास आधी पानी और ऊपर से शत्रु, सब ही इनको सताते है परन्तु फिर भी सबके चेहरे चमक रहे हैं, वह चमक किस की। स्वाधीनता की रक्षा के पवित्र संकल्प की। स्वाधीनता की रक्षा के पवित्र संकल्प की। इन्होंने अपने सरदारों से यह नही कहा था कि तुम्हें इससे क्या मतलब है ? ये कौन हैं ? यह दो सौ जंगली मावलों की छोटी सी टुकड़ी के बीच भविष्य काल के छत्रपति शिवाजी खड़े हैं। आपकी दुकान के कर्मचारी पारितोषिक मिलने पर भी प्रसन्न नहीं होते, दूसरी ओर इन्हे सहस्र भुजाओं मे मृत्यु ही मृत्यु लिए है। क्यों ? इसलिए कि इस यज्ञ के यजमान ने अपना धर्म रक्षा का पवित्र संकल्प इन्हें बता दिया है।

यह सामने कौन है ? यह मुट्ठी भर हड्डियों का ढेर गान्धी है भला इसकी ओर देखिए। संकल्प छिपाना तो दूर रहा, यह तो पहले से ही चिल्ला कर कह रहा है भाइयो, जेल चलना है, चलोगे ? और ७० सहस्र नर-नारी किस उत्साह से कह रहे हैं—क्यों नहीं चलेंगे। आपके कर्मचारी पारितोषिक के लोभ से भी दुकान में बिजली के पंखे के नीचे भी एक घण्टा और अधिक बैठने के लिए तैयार नहीं और इस गान्धी के साथ जेल की कोठरियो में सड़ने को तैयार हैं क्यों ? उसी देश की स्वतन्त्रता के संकल्प के बल से।

हे पूंजीपतियो, क्या अब भी तुमने संकल्प की महिमा को नहीं समझा ? यदि कमाने से पहले तुमने राष्ट्र की सेवा का कोई पवित्र संकल्प किया होता, यदि तुम्हारी कमाई का मुख्य भाग उस संकल्प की पूर्ति में लगता तो तुम्हारे कर्मचारियों को तुम्हारा ऐश्वर्य, तुम्हारा महल, और तुम्हारी मोटर भी न अखरती उन्हें तुम उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त वेतन भी दे देते, तो कदाचित् वह पारितोषिक भी न मांगते। किन्तु तुम्हारा यज्ञ तो संकल्प हीन है जो भाग तुम्हें उनको देना था और जो संकल्प रूप अग्नि को देना था उन दोनों में से चोरी, भयंकर चोरी करके तुम अपनी कामाग्नि बुझाते हो इसलिए उनकी क्रोधाग्नि भड़कती है। घबराओ मत तुमने संकल्प के और उसकी पूर्ति मे सहायक कर्मचारियों और ग्राहकों को मिलेगा वह अग्नि है और ग्राहक तथा कर्मचारी वर्ग "विश्वदेवा" को मिलेगा वह संकल्प अग्नि है और ग्राहक तथा कर्मचारी वर्ग "विश्वदेवा" है सब यज्ञों का मूल संकल्प अर्थात् उस उद्देश्य को पूर्ण करने का दृढ़ निश्चय है, जिसके लिए किसी ने अपना जीवन अर्पण किया हो।

"मौलिक सिद्धान्त"

१ यज्ञ का पहला मौलिक सिद्धान्त है संगतिकरण (संगठन) अर्थात् "संगच्छध्वम्" संवदध्वम्" सं वो मनांसि जानताम्" संगठन के लिए अपने आपको अर्पण करना (यज्ञ भावना) अथवा उद्देश्य प्रणिधान भी इसे कहते है। "यज्ञ देवपूजासंगतिकरण दानेषु" परस्पर पूज्य पूजक भाव ही वस्तुत: संगतिकरण है।

२ यज्ञ का दूसरा मौलिक सिद्धान्त है ईर्ष्या विजय। प्रथम मौलिक सिद्धान्त है यज्ञ भावना या संगतिकरण या उद्देश्य प्रणिधान। इसका शत्रु सबसे बड़ा शत्रु ईर्ष्या है। ईर्ष्या का रूपांतर है—स्वार्थ एक दृष्टान्त से समझिए—कहते हैं कि एक समय एक राजा के दरबार में दो स्त्रियां एक बच्चे के विषय में झगड़ा करती हुई आई। दोनों उस बच्चे को अपना कहती थी महाराजा कई दिन तक यत्न करने पर भी इसका निर्णय न कर सके। अन्त को एक दिन उन्हें चिन्तित देखकर रानी मुस्कराकर बोली कि देव, यह अभियोग स्त्री जाति का है, इसका निर्णय मैं स्वयं करूंगी। अगले दिन महारानी स्वयं सिंहासन पर विराजमान हुई। दोनों स्त्रियां सामने लाई गईं महारानी ने निर्णय दे दिया—"आरा‌कश को बुलाकर इस बच्चे को बीचों बीच चीरकर आधा बांट दिया जाये" निर्णय सुनकर दोनों में से एक बड़ी प्रसन्न हुई। बोल उठी, क्या अच्छा निर्णय हुआ है झगड़ा ही न रहा। दूसरी सहम गई बोली—मुझे बच्चा नहीं चाहिये, मैंने अपना दावा छोड़ा पर इसे चीरो मत। रानी ने कहा—जाओ, बच्चा उसे दे दो जो कहती है मेरा नही। वही सच्ची मां है, जिसे बच्चे की जान अपने अधिकार से अधिक प्यारी है। वही सच्चा सिपाही है, जिसे संगठन का उद्देश्य अपनी जान, अपने यश, अपने अधिकार से भी अधिक प्यारा है इसी का नाम उद्देश्य प्रणिधान। यह संगठन का मूलमन्त्र है।

३. यज्ञ का तीसरा सिद्धान्त है यज्ञ में 'यजमान" अवश्य होना चाहिये। इसको विद्वान् जन "विश्वेदेवा (ब्रह्मा) यजमानश्च" कहा गया है। इसी भाव को, इसी मौलिक सिद्धान्त को यज्ञ का मन्त्र स्पष्ट रूप से कहते हैं—अस्मिन् सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्, विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत" अर्थात् इस मिल बैठने के स्थान में "सब देव और यजमान बैठो" यही यजमान का अन्य देवों से पृथक्करण संगठन के इस मौलिक रहस्य को बता रहा है कि जब तक एक शासन करनेवाला पृथक् न हो, यज्ञ नहीं हो सकता। शास्त्र कहता है—"सर्वे यत्र विनेतारः तत्कुलम् अवसीदति" जहां सारे नेता हों वह कुल या संगठन नष्ट हो जाता है यह यज्ञ मर्यादा (क्रम व्यवस्था) अति आवश्यक है।

ऋत्विक् यजमान के पूज्य हैं और वे उसे यज्ञप्रक्रिया के ज्ञान का दान देते हैं इसलिए वे देव हैं यजमान ऋत्विजों का पूज्य है वे उसकी सदुपदेश द्वारा पूजा करते हैं, वह उन्हें दक्षिणा देता है इसीलिए वह देव है।

क्रमशः

सार्वदेशिक सभा के स्वयंभू अधिकारियों के भरसक छलकपट के बावजूद चुनाव सम्पन्न

लेखक—व्रतानन्द सरस्वती, मन्त्री उत्कल वैदिक मण्डल

सार्वदेशिक सभा की १२ मार्च को हुई अंतरंग में श्री स्वामी धर्मानन्द जी के विरोध करने पर भी सार्वदेशिक सभा के स्वयम्भू प्रधान श्री रामचन्द्र राव वन्दे मातरम् ने धाधली हेराफेरी एवं छलकपट करने के लिए हैदराबाद (दक्षिण) में चुनाव रखा। वन्दे मातरम् एण्ड कम्पनी ने संविधान विरुद्ध सारे हथकण्डे अपनाए, जिससे चुनाव जीत सके, परन्तु जब २७ मई को हैदराबाद में जाकर इनको पता चला कि इनके बुलाये नकली प्रतिनिधि भी सार्वदेशिक सभा में परिवर्तन चाहते है, चरित्रवान् त्यागी, तपस्वी, संन्यासियों को सभा सौंपना चाहते हैं, तो इनके पाव के नीचे से जमीन निकल गई। ऐसा पता चला था कि इनके पांच आदमियों ने ही बैठकर अपना चुनाव कर लिया। २७ मई को १२ बजे जब साधारण सभा प्रारम्भ भी नही हुई थी उससे पहले ही चुनाव का समाचार फैक्स द्वारा दिल्ली भेज दिया, वैसे प्रातःकाल अंतरंग की मीटिंग से ही इनका षड्यंत्र प्रारम्भ होगया था, उसमे न पिछली कार्यवाही सुनाई गई, न उसकी पुष्टि करवाई, न विधिवत् शोक प्रस्ताव हुआ और न किसी को बोलने का अवसर दिया, प्रतिनिधियों के विरोध करने पर भी एक घण्टे में सारी कार्यवाही समाप्त कर दी।

साधारण सभा मे भी ये ऐसा ही कुछ करना चाह रहे थे कि अचानक नामों की घोषणा कर जयघोष करके सभा समाप्त कर देंगे। इसलिए परिवर्तन का विचार रखनेवाले लोगों ने सावधानी बरती, उन्होंने अंतरंग में गत चुनाव की भांति निर्वाचन अधिकारी नियुक्त करने का आग्रह किया, पदासीन अधिकारी ने ऐसा करने से मना कर दिया। नियमानुसार वन्दे मातरम् स्वयं उम्मीदवार होने के कारण अध्यक्षता नही कर सकते थे। अतः २ बजे साधारण सभा प्रारम्भ होने पर परिवर्तन के इच्छुक अधिकतर सदस्यों ने उपस्थिति रजिस्टर में हस्ताक्षर करने से मना कर दिया और कहा जब हमारी बात सुनी जाएगी, निर्वाचन अधिकारी की नियुक्ति हो और मतपत्रों द्वारा निर्वाचन हो, तो हम हस्ताक्षर करेंगे परन्तु वन्दे मातरम् एण्ड कम्पनी ने ये सब बातें मानने से मना कर दिया, इस पर चारों ओर से भयंकर विरोध हुआ और विधिवत् निर्वाचित १० प्रतिनिधि सभाओं के सदस्यों ने वहीं सदन में बैठकर अपना निर्वाचन सर्वसम्मति से किया। वन्दे मातरम् एण्ड कम्पनी ने शराब पिलाकर १५० गुण्डे पहले से बुला रखे थे, उन्हें बिल्ले लगाकर अंदर बुला लिया और सदन के दरवाजे बन्द करके धमकी देकर जबरदस्ती हस्ताक्षर करवाने लगे। परन्तु इस धमकी का भी कोई असर नहीं हुआ, इनके पास ६०-७० नकली प्रतिनिधि ही रह गये थे, जबकि स्वामी विद्यानन्द जी की तरफ १०० से अधिक प्रतिनिधि वहां उपस्थित थे और अन्त तक वहीं सदन में रहकर अपना विधिवत् निर्वाचन श्री के० देवरत्न निर्वाचन अधिकारी की देखरेख में पूर्ण किया। इस प्रकार इस चंडाल चौकड़ी का ३० वर्ष का कब्जा समाप्त हुआ। परन्तु ये स्वार्थी लोग आसानी से सभा का अधिकार नही छोड़ेंगे। आर्य-संन्यासी, विद्वान् तथा प्रबुद्ध आर्यजनता इन पर चारों ओर से दबाव डालें, तभी ये अपनी दुष्टता से पीछे हटेंगे। आशा है आर्यजनता निष्पक्ष एवं निर्भीक होकर सत्य एवं न्याय का साथ देगी और आर्यसमाज के संगठन एवं एकता की रक्षा कर इसमें नया प्राण फूंकने का यत्न करगी।

जब से सार्वदेशिक सभा के भूतपूर्व प्रधान स्व० स्वामी आनन्दबोध जी का स्वर्गवास हुआ, तभी से श्री रामचन्द्र राव, श्री सोमनाथ मरवाह एवं श्री सच्चिदानन्द शास्त्री आदि का गिरोह छलकपट कर येन-केन प्रकारेण सार्वदेशिक सभा पर कब्जा करने के हथकण्डे अपनाता आरहा था। ये तीनों पदों के भूखे अपने-अपने प्रान्त में तिरस्कृत एवं बहिष्कृत हैं। अपने प्रांत में सारे व्यवस्थित संगठन एवं प्रचारकार्य को नष्ट कर कुछ अनार्य लोगों को इकट्ठा कर नकली संगठन बना उसके द्वारा सार्वदेशिक सभा में प्रतिनिधि बनकर आते रहे, अब ये सारे देश के संगठन को ही तहसनहस करने को उतारू होगये थे, १७ अक्तूबर को उधर श्री स्वामी आनन्दबोध जी की लाश पड़ी हुई थी तब ये अपने ५-७ अंतरग के गुर्गों को बुलाकर स्वयं प्रधान एवं कार्यकर्त्ता प्रधान बन बैठे। इसके लिए अंतरंग की विधिवत् मीटिंग बुलाने का साहस भी नही हुआ, जबकि अनेक अंतरग सदस्य स्वामी जी की अन्त्येष्टि पर उपस्थित थे, इन्होंने उस दिन १७ व्यक्तियों के हस्ताक्षर दिखाए हैं जिनमें से ७ तो अतरंग के सदस्य ही नही हैं। २, ३ के हस्ताक्षर पीछे से करवाये हैं। जब अन्य अधिकारियों को इसका पता लगा तो सभी ने इस चुनाव का प्रबल विरोध किया। तब इन्होंने आश्वासन दिया कि शीघ्र ही दूसरी अंतरंग बुलाकर इसकी पुष्टि करवायेंगे। परन्तु आज तक भी इस कार्यवाही की पुष्टि नही हुई, इसके पांच महीने पीछे १२ मार्च को अतरग का अधिवेशन हुआ, जिसमे १६ अक्तूबर १९९४ को श्री स्वामी आनन्दबोध के सामने हुई कार्यवाही तो सुनाई गई पर १८ अक्तूबर की कार्यवाही की अंतरंग में कोई चर्चा नही आई, इस प्रकार वह चुनाव अवैध ही रहा।

एक बार चर्चा में जब श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती उडीसा ने इस चुनाव पर आक्षेप किया तो श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि हमने चुनाव नही किया, बल्कि नये प्रधान का स्वागत किया था। इतिहास मे यह अपने ढंग की अनोखी घटना है कि पुराने अधिकारी की अन्त्येष्टि भी नही हुई और नये प्रधान का स्वागत करें। परन्तु "स्वार्थी दोषं न पश्यति" आदमी अपने एक झूठ को छिपाने के लिए अनेक झूठों का सहारा लेता है। यही स्थिति इनकी हुई है। इस चुनाव को जीतने के लिए इन्होंने जो छलकपट किया, जितनी निंदा की जाये कम है, इनमें से कुछ प्रमुख बातें इस प्रकार हैं :—

१ अंतरंग ने चुनाव २१, २२ मई को रखा था इन्होंने अपनी मनमर्जी से अन्तरंग की स्वीकृति के बिना तारीख बढ़ाकर २७, २८ कर दी जो संविधान के विरुद्ध है।

२. भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक पंजीकृत संस्था के लिए अनिवार्य है कि निर्वाचन से एक माह पूर्व चुनाव मे भाग लेनेवाले सदस्यो (वोटरों) की सूची की घोषणा करे। परन्तु राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं मंत्री तथा हरयाणा आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान के मांगने पर भी इन्होंने सूची देने से मना कर दिया और अन्त तक सूची किसी को नहीं दी, जिससे इच्छा के अनुसार उसमें परिवर्तन करते रहें तथा अन्य लोग नकली सदस्यों को जान न सकें।

३. इन्होने सभी प्रान्तीय सभाओं को १५ मार्च तक फार्म भेजने का निर्देश दिया था और इसके पीछे फार्म स्वीकार करने के लिए स्पष्ट मना किया था, परन्तु बंगाल, बिहार आदि के फार्म अन्त तक नहीं आये और इन्होंने प्रतिनिधि स्वीकार कर लिये।

४. अपनी अनुकूल सभाओं में इच्छानुसार नकली प्रतिनिधि बनाये, तमिलनाडु से पहले दो प्रतिनिधि आते थे, इस बार वहां तेरह समाजों पर प्रतिनिधि सभा बनाकर वहां से ९ प्रतिनिधि ले लिए, इतने प्रतिनिधियों के लिए सैकड़ों समाजें चाहिए। उड़ीसा की ८६ समाजों पर ६ प्रतिनिधि हैं, इसी प्रकार गुजरात से ५ प्रतिनिधि बनते हैं वहा के प्रधान ने इतने ही फार्म भेजे। इन्होंने प्रधान को ५ प्रतिनिधि और भेजने को लिखा, उन्होंने मना कर दिया, फिर भी इन्होंने ४ प्रतिनिधि अपनी तरफ से बुला लिए, महाराष्ट्र से आठ प्रतिनिधि आते थे, वहां से भी १५ प्रतिनिधि बुलाए, उत्तरप्रदेश एवं आंध्रप्रदेश मे तो इनके पास समाजों का संगठन है ही नही, फिर भी १५-१५ प्रतिनिधि वहा से लिये हैं।

५. पंजाब एवं दिल्ली, आर्यप्रतिनिधि सभा का चुनाव हुए लगभग ३ वर्ष होगये, सार्वदेशिक के संविधान के अनुसार ३ वर्ष के पीछे प्रति-

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव का विवाद

रजिस्ट्रार ने वन्देमातरम् के चुनाव पर रोक लगाई

(निज संवाददाता द्वारा)

वन्दे मातरम् तथा मरवाह कम्पनी ने अनैतिक तरीके अपनाकर तथा रजिस्ट्रार सोसायटी दिल्ली को भ्रमित करके सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव पर अपने पक्ष में मोहर लगवाली थी। परन्तु जब इसकी पुन: पड़ताल करवाइ गई तो रजिस्ट्रार सोसायटी ने सूर्यदेव को अपने आदेश पत्र दिनांक ९ जून ९५ पत्रांक एस-११/आर०एस०/९५/९३ द्वारा हैदराबाद के चुनाव में उन द्वारा दी गई पदाधिकारियों की सूची को रद्द कर दिया है। चुनाव का मामला विवादास्पद बन जाने पर २७ मई ९५ से पूर्व की अन्तरंग सभा को आगामी आदेश तक आवश्यक कार्य चलाने का अधिकार दिया है, प्रो शेरसिंह जी उपप्रधान, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, कैप्टन देवरतन, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव आदि सम्मिलित है। परन्तु उन्हें यह आदेश भी दिया है कि अपने कार्यकाल में वे कोई नीतिगत निर्णय न लेवे।

रजिस्ट्रार महोदय ने अपने इस आदेश के प्रति अपने पत्रांक एस-११/आर०एस०/९५/९३-९६ दिनांक ९-६-९५ को वन्दे मातरम्, सच्चिदानन्द तथा स्वामी सुमेधानन्द जी को भेज दी है। इसकी प्रति मूल रूप में प्रकाशित की जा रही है।

OFFICF OF THE REGISTRAR OF SOCIETY
GOVT. OF N. C. T. OF DELHI KASHMERE GATE
C.P.O. BUILDING KASHMERE GATE, DELHI

No. S-11/RS/95/93 Dated : 9-6-1995

To

Shri Surya Dev
Sarvdeshik Arya Pratinidhi Sabha
Maharshi Dayanand Bhawan, Ramlila Maidan
Delhi-110002

Sir,

In continuation to this office letter dated 7-6-95 and your letter dated 9-6-95 the matter has been re-examined and it has been decided that the society cannot be left without the Governing body Since the present Governing body of which the election had reported to be held on 27th & 28th May, 1995 is under dispute, the undersigned hereby allows the earlier Governing Body to continue till further orders It is however advised that no major policy decision be taken during this period

Yours faithfully,

(M. S. CHAUHAN)
REGISTRAR OF SOCIETY

No. S-11/RS/95/93-96 Dated : 9-6-95

Copy to —

1. Shri Vandematram Ram Chander Rao, Sarvedeshik Arya Pratinidhi Sabha, Ramlila maidan, Delhi.
2. Dr Sachhidanand Shastri, Sarvideshik Arya Pratinidhi Sabha, Ramlila Maidan, Delhi.
3. Sh Sumedhanand Saraswati, Arya Pratinidhi Sabha, Rajasthan, Rajapark, Jaipur.

शराब हटाओ। हरयाणा बचाओ।

समाल (इस्माइला) जिला रोहतक में १७, १८ जून ९५ को शराबबन्दी हेतु अश्वमेध महायज्ञ का आयोजन

आर्यसमाज परोपकार तथा समाज सुधार के कार्यों में सदा अग्रणी रहा है। भारत को अंग्रेजों से आजाद करवाने तथा हरयाणा बनवाने की लड़ाई में भी आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता पहली पंक्ति में थे। परन्तु आज ऋषि मुनियों की पवित्र भूमि में शराब, मांस तथा जुआ आदि सामाजिक बुराइयां दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। किसान मजदूर तथा नवयुवक इन बुराइयों से बर्बाद हो रहे हैं और वैदिक सभ्यता नष्ट होती जा रही है। राष्ट्र की रक्षा भी खतरे में है।

अतः आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यक्रम के अनुसार ग्राम समाल जिला रोहतक के आर्यसमाज एवं यज्ञ समिति की ओर से राजकीय प्राथमिक कन्या विद्यालय के प्रांगण में १७, १८ जून १९९५ शनिवार तथा रविवार को अश्वमेध महायज्ञ का भव्य आयोजन किया गया है।

इस अवसर पर आर्यजगत् के त्यागी तपस्वी महान् सुधारक स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों सहित तथा सभा के श्री जयपालसिंह बेधड़क तथा श्री तेजवीर जगदीश की भजन मण्डलियां सामाजिक बुराइयों से दूर रहने की प्रेरणा करने के लिए पधारेंगे। १८ जून को प्रातः अश्वमेध महायज्ञ पर ग्राम समाल तथा आस-पास के ग्रामों के नवयुवक भारी संख्या में शराब, मांस, बीड़ी, सिगरेट तथा जुआ आदि बुराइयों को छोड़ने की प्रतिज्ञा करेंगे। शराब छुड़वाने के लिए मुफ्त औषधि भी दी जायेगी।

अतः ग्रामीण जनता से अनुरोध है कि इस शुभावसर पर शराबबन्दी के कार्यक्रम को सफल करने तथा सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने में योगदान देने के लिए ग्राम समाल में पहुंचने का कष्ट करें तथा आर्यसमाज के महान् नेता का सन्देश सुनकर लाभ उठावें।

जो भाई शराब आदि बुराई से छुटकारा पाना चाहते हैं वे १७ जून की सायं तक समाल में पहुंच जावें और १८ जून को प्रातः महायज्ञ में बुराइयों को छोड़ने के लिए आहुतियां डालकर अपना जीवन सफल तथा सुखमय बनावें। आवास तथा भोजन की व्यवस्था ग्रामसभा की ओर से की जावेगी।

निवेदक

पहलवान महेन्द्रसिंह, मास्टर जयनारायण, मास्टर सुखराम, मास्टर रामकिशन, हवासिंह प्रधान १४ गांव, रामफल, अर्जुनदेव आर्य प्रचारक।

जातपात : उद्‌गम, विकास और विकार

गतांक से आगे

प्रेम और सौहार्द का वातावरण पैदा हो। वे आर्यों के पतन का सबसे बड़ा कारण आपसी फूट को मानते थे। उन्होंने पुरातन ऋषियों, मुनियों की परम्पराएं पुन: स्थापित करने का बीड़ा उठाया था मगर मानवता के शत्रु कुछ षड्‌यंत्रकारियों ने उन्हें आजीवन दु:ख और कष्ट दिए और अन्तत: विष देकर उनकी जीवनलीला ही समाप्त कर दी।

महर्षि किसी भी मतवाद में न उलझकर मानवधर्म की शिक्षा देते थे। उनके लिए ईश्वरीय ज्ञान "वेद" ही सर्वोपरि था। जिन वेदों का पठन पाठन तथाकथित पण्डितों के कारण बन्द होगया था। स्वयं पण्डितों तक में यह भ्रांति थी कि वेद को शंखासुर पाताल में ले गया है। महर्षि ने कहा कि मैं तुम्हारे उस आलस्य और प्रमादरूपी शंखासुर से तुम्हारे लिए वेद छुड़ाकर ले आया हूं। जिन वेदों का स्त्री व शूद्रों को पढ़ने का अधिकार नहीं दिया जाता था, महर्षि ने उन्हीं वेदों में से प्रमाण दिया कि जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्य अन्न आदि पदार्थ सबके लिए बनाए हैं, वैसे ही वेद भी सब मनुष्यों के लिए प्रकाशित किए हैं। आजकल का छुआछूत मूर्खों का बहकावा और अज्ञान है। प्रमाणस्वरूप उन्होंने यजुर्वेद के छब्बीसवें अध्याय का दूसरा मन्त्र प्रस्तुत किया :—

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य:।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।

परमात्मा स्वयं यह घोषणा करते हैं कि मैंने ब्राह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यों और शूद्रों तथा भृत्य व स्त्री आदि और अरण्यों में रहनेवाले अतिशूद्रादि के लिए भी वेदों का प्रकाश किया है।

महर्षि दयानन्द जी के तर्क इतने प्रमाणित, सटीक एवं हृदयग्राही होते थे कि व्यक्ति के समक्ष सहज ही उनकी बात स्पष्ट हो जाती थी। जो लोग वर्ण-व्यवस्था को जन्ममूलक मानते थे उनको समझाने के लिए उन्होंने "सत्यार्थप्रकाश" में लिखा—"जो कोई रज वीर्य के योग से वर्णाश्रम व्यवस्था माने और गुण, कर्म के योग से न माने तो उससे पूछना चाहिए कि जो कोई अपने वर्ण को छोड़ नीच, अन्त्यज अथवा कृश्चीन, मुसलमान होगया हो उसको ब्राह्मण क्यों नहीं मानते? यहां यही कहोगे कि उसने ब्राह्मण के कर्म छोड़ दिए, इसलिए वह ब्राह्मण नहीं है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि जो ब्राह्मणादि उत्तम कर्म करते हैं वे ही ब्राह्मणादि और जो नीच भी उत्तम वर्ण के गुण, कर्म, स्वभाववाला होवे तो उसको भी उत्तम वर्ण में और जो उत्तम वर्णस्थ होके नीच काम करे तो उसको नीच वर्ण में गिनना अवश्य चाहिए।" महर्षि दयानन्द को अपनी इन मान्यताओं को स्थापित करने के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ा था। क्योंकि वह युग धार्मिक एवं सामाजिक कुरीतियों का युग था, जिसमें रोशनी की किसी किरण की कल्पना तक भी नहीं की जा सकती थी। महर्षि जी जैसे युगपुरुष के मस्तिष्क में ही ऐसी सुधारवादी योजनाएं जन्म ले सकती हैं। कालान्तर में स्वामी श्रद्धानन्द, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, लोकमान्य तिलक, महात्मा गान्धी, विनोबा भावे तथा राष्ट्र के अन्य नेताओं एवं समाजसुधारकों के मस्तिष्क में भी यह बात घर कर गई। आज तो पौराणिक पोंगापन्थी भी शुद्धिकरण एवं शूद्र और स्त्री सुधार की बातें करने लगे हैं मगर एक समय था कि महर्षि दयानन्द जी को इन पोंगापन्थियों से इन्हीं विषयों को कार्यरूप देने के लिए बड़े-बड़े शास्त्रार्थ करने पड़े थे तथा नाहक ही इनके कोप का भाजन बनना पड़ा था।

स्वतन्त्र भारत के संविधान पर महर्षि दयानन्द की विचारधारा का गहरा प्रभाव पड़ा है, यह तथ्य किसी से भी छुपा हुआ नहीं है। बालविवाह, सतीप्रथा, छुआछूत का प्रबल खण्डन सर्वप्रथम उन्होंने ही किया था। इसी प्रकार राष्ट्रभाषा हिन्दी, विधवा विवाह, स्त्री व शूद्रोद्धार, विवाह के लिए लड़के व लड़की की उमर निर्धारित आदि बहुत से कार्य ऐसे थे जिसके लिए हम उस क्रान्तदर्शी महामानव के ऋणी हैं। भारत सरकार ने शूद्रों की उन्नति के लिए अनेक प्रयास किए हैं तथा अन्य भी अनेक प्रयास कर रही है मगर यह बात निश्चितरूप से कही जा सकती है कि कार्यरूप में ये सरकारी प्रयास पूर्णरूप से सफल नहीं हो पा रहे हैं। कई क्षेत्रों में तो सवर्णों में और भी अधिक कट्टरता, ईर्ष्या और अलगाववाद पैदा हो रहा है। ऋण और सबसिडी आदि की सुविधाएं अनपढ़ सीधे-सादे एवं सवर्णों और अधिकारियों की चालों में आ जानेवाले हरिजनों तक पहुंच ही नहीं पाती हैं और यदि पहुंचती भी हैं तो अल्पमात्रा में। कुछ हरिजन तो इन सुविधाओं को अपनी मूर्खता और विवेकहीनता के कारण सही-सही उपयोग नहीं कर पाते हैं। मुफ्त की वस्तु समझकर वे इन सुविधाओं को गलत रूप से प्रयोग में लाते हैं।

इसी प्रकार जहां तक सरकारी नौकरियों, पदोन्नतियों, प्रशिक्षणों आदि में आरक्षण की नीति का सवाल है,इससे हरिजनों एवं सवर्णों में आपसी कटुता और अधिक बढ़ गई है तथा और अधिक बढ़ती भी चली जारही है। इस आरक्षण की गलत नीति से राष्ट्र को अयोग्य प्रशासन मिल रहा है। यह भी एक गम्भीर चिन्तन का विषय है। यह सब स्पष्टिकरण सरकारी नीति की आलोचना करनेमात्र के लिए नहीं बल्कि इसलिए दी जारही है कि युगों-युगों से प्रताडित होते आरहे शूद्रों को सुविधाएं इस ढंग से व इस रूप में दी जाएं कि उनका सीधा और सही लाभ उन्हें हो सके। मेरा अपना मत है कि शैक्षणिक क्षेत्र में उन्हें अधिक से अधिक सहयोग मिलना चाहिए। किसी भी पद एवं पदोन्नति के लिए ऐसा प्रावधान नहीं होना चाहिए। इसके लिए तो हर किसी की योग्यता को ही प्रमुख माना जाना चाहिए। सामाजिक एवं शैक्षणिक स्तर पर शूद्रों को ऊपर उठाने की आवश्यकता है, यह कार्य सरकार तो अपनी क्षमता के अनुसार करे ही करे मगर धार्मिक और सामाजिक संगठनों को भी यह कार्य अपने हाथ में लेना चाहिए। "आर्यसमाज" ने इस दिशा में काफी अधिक कार्य किया है। सामूहिक भोज, अन्त-र्जातीय विवाह, जातिसूचक उपनामों का बहिष्कार किया जाना चाहिए। आर्यसमाज के क्षेत्र में ऐसे बहुत से लोग हैं जिनकी जाति शूद्र मानी जाती है मगर आर्यसमाज ने उन्हें योग्यता प्राप्त कराके पण्डित की उपाधि से विभूषित किया है। सरकार व सामाजिक संस्थाओं को चाहिए कि वे कथित शूद्रों को ऐसे अवसर दें जिनसे वे शैक्षणिक एवं चारित्रिक योग्यताएं प्राप्त कर सकें। निर्बल बुद्धि, चरित्र भ्रष्ट व्यक्ति तो शूद्र हैं ही, सत्‌शिक्षा के द्वारा उन्हें कुटेवों से मुक्त कराके उनके समक्ष चतुर्दिक् उन्नति कर सकने के नए-नए आयाम प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। हमारी राष्ट्रीय एकता और अखण्डता पर आज पहले से कहीं अधिक खतरे के बादल मण्डरा रहे हैं। अत आज आपसी समझबूझ या भाईचारे की नीति को अपना कर एक सूत्र में बंधने की आवश्यकता है।

कहते हैं कि एक पग का भूला हुआ लाखों-करोड़ों कोसों तक भुलावे में पड़कर भटकता रहता है। ठीक यही कुछ हमारे साथ भी हुआ है। सत्य सनातन वैदिकधर्म को त्यागने से हमारा चतुर्दिक् विनाश किस तरह से होता रहा है, इतिहास इस बात का साक्षी है। आज पुन: सचेत होने की आवश्यकता है। हमें राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता तथा आपसी भाईचारे के लिए एक बार फिर से वेदज्ञान के प्रकाश में आने की आवश्यकता है। हमने देखा है कि वेद को त्यागने से ही हमारा पतन आरम्भ हुआ है और यह भी एक ध्रुव सत्य है कि वेद को अपनाने से ही हम पुन: विश्वगुरु बन सकते हैं। विश्वगुरु बनने के लिए आपसी समझ और एकता एवं भाईचारे की बहुत अधिक आवश्यकता है। वेद स्पष्ट शब्दों में कहता है :—

समानी प्रपा सह वोऽन्न-भाग: समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।
सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभित:॥ (अथर्व० ३-३०-६)

अवैध शराब की चुनौती

(निज संवाददाता द्वारा)

गत २७ मई, १९९५ को ग्राम पाल्हावास जि० रेवाड़ी में अवैध शराब की बिक्री को लेकर श्री अनिल आर्य, संयोजक शराबबन्दी समिति जिला रवाड़ी के परामर्श और गांव के प्रतिष्ठित समाजसेवी श्री शार्दूलसिंह व श्री सरदारसिंह अध्यक्ष समाज सुधार समिति पाल्हावास के प्रयास से एक बैठक वयोवृद्ध आर्य श्री ताराचन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सर्वहितकारी में पूर्व प्रकाशित कार्यक्रम के अनुसार श्री अनिल आर्य ने सभी सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को उनका संकल्प स्मरण कराते हुए कहा कि शराब चाहे वैध हो या अवैध दोनों ही जहर का एक रूप हैं और इस जहर को बेचनेवाले गांव के हों या बाहर के हमारी सारी समाज के शत्रु हैं। उनके इस विनाशकारी धन्धे को रोक-थाम करने के लिए और अधिक ढील नहीं होनी चाहिए। एक दो लोगों ने चर्चा के दौरान कुछ निराशा व्यक्त की कि अब जो इस अवैध शराब के धन्धे मे संलिप्त हैं वे जरायम पेशा लोग बावरिया जाति के है। इन्हें यदि रोका जाएगा तो वे चोरी आदि दूसरे अपराधों को करने लगेंगे जिससे गांव वालों को और अधिक परेशानी होगी। परन्तु इस विचार का सभा मे जोरदार खण्डन हुआ। पूर्व सुबेदार मुनीलाल सचिव समाज सुधार समिति ने कहा कि यह एक कायराना दलील है अगर दूसरे अपराध करेंगे तो उनसे भी निपटा जा सकता है लेकिन समाज विरोधी तत्वों के सामने यूं आत्मसमर्पण करके गांव को तबाह करने की छूट नहीं दी जानी चाहिए।

श्री अनिल आर्य ने उनका समर्थन करते हुए प्रश्न किया कि क्या हम इतने कमजोर हो चुके है कि अपराधी जो चाहेंगे उन्हें वैसा ही करने देंगे या फिर हम समझते हैं कि इसका कोई समाधान नहीं। श्री आर्य ने आगे कहा कि कोई भी सामाजिक सुधार करने के लिए संगठन पहले जरूरी है। यदि हम संगठित बने रहे तो किसी की भी क्या ताकत जो गांव मे उपद्रव कर सके। ध्यान रहे गलत काम करने वालों के पास आत्मा की शक्ति नहीं हुआ करती जो शक्तिशाली होने के लिए बहुत जरूरी है। इसीलिये गुनाह करने वाले के पैर लड़खड़ाते रहते हैं और दिल कांपता रहता है। जब आधे तो बेदम वे खुद होते हैं फिर उन्हें बस में करना क्या मुश्किल है। अतः यदि हम इन असामाजिक लोगों को शराब बेचने से रोक देंगे तो आगे इनके अन्य अपराधों को भी रोक सकेंगे, क्योंकि हममें आत्मिक शक्ति और संगठन होगा और सगठन की ताकत का सबूत आपके सामने है आप सबने मिलकर काफी शक्तिशाली सरकार का भी मुंह मोड़ दिया और वह चाहते हुए भी हमारे गांव में शराब का ठेका नही खोल सकी। इसलिए इन छोटे-मोटे अपराधियों की तो क्या बिसात है। अतः हमे अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ जाना चाहिए। किया हुआ कार्य कभी निष्फल नही जाता और जितना हम प्रयास करेंगे उतनी सफलता हमें अवश्य मिलेगी।

श्री शार्दूलसिंह ने कहा कि हमें फिर से एक शराबबन्दी समिति का गठन करके सक्रिय हो जाना चाहिए। विभिन्न राजनैतिक मान्यताओं और गुटों के लोग जो शराब के खिलाफ हैं उन्हे इसमे एकजुट हो जाना होगा और आज से अपनी योजना को कार्य रूप देना शुरू कर देना चाहिए। प० हरिप्रकाश जो अपने सेवाकाल में रेलवे यूनियन के नेता भी रहे हैं ने कहा कि हमें गांव के सरपंच को एक बार फिर मिलकर अपने सहयोग में लेना चाहिए क्योंकि गैरकानूनी काम को रोकना पंचों व सरपंच का कर्त्तव्य भी है। श्री सुरतसिंह भूतपूर्व सरपंच पाल्हावास ने कहा कि आज शाम को ही हमें फिर इकट्ठा होकर बावरिया बस्ती में जाना चाहिए जहां सरपच को भी बुला लिया जाये और इन बिक्री करने वालों को अन्तिम चेतावनी दे दी जाये और इसके बाद भी वे करे तो पुलिस प्रशासन से मिलकर इन पर दबादब छापे मरवाये जाये।

शाम को निश्चय के अनुसार मुख्य-मुख्य व्यक्ति नियत स्थान पर पहुंचे जिनमे गाव के अन्य प्रभावशाली जन भी थे। श्री सूरतसिंह के अलावा पूवपच व नम्बरदार श्री मामचन्द ने जोरदार शब्दों में कहा कि या तो वे इस काम को छोड़ दें अन्यथा हम ताकत का प्रयोग करके भी इस शराब बिक्री को छुड़ाएगे। आज चेतावनी इसलिए दी जा रही है कि कहीं बाद में यह कहो कि हमारे साथ बुरा हुआ। सरपंच श्री ओमिन्द्रसिंह ने कहा कि यदि वह लोग इस कुकर्म को छोड़ देते हैं तो पंचायत की ओर से D.R.D.A के ऋण आदि दिलाने में उन्हें प्राथमिकता दी जाएगी ताकि उन्हें आर्थिक संकट का सामना नहीं करना पड़े। इन मौकों पर पूर्व इन्सपेक्टर श्री दौलतराम व भक्त श्री महावीरसिंह जो ऐतिहासिक शराबबन्दी धरना, पाल्हावास में सबसे अंत तक रहे थे भी मौजूद थे और उनका पूरा समर्थन व सहयोग अब भी ज्यों का त्यों है।

वहां उपस्थित शराब बेचने वाले बावरियों ने कहा कि हम यह काम छोड़ तो दें परन्तु पुलिस अपने महोनाबन्दी के चक्र में हम पर नाजायज केस भी लगा देती है। यदि इसे रुकवा दिया जाए तो हम गांव की मुख्य धारा में शामिल होने को तैयार हैं। जिस पर सभी मोजीजान ने कहा कि यदि तुम इस कुकर्म को बिलकुल बन्द कर देते हो तो पुलिस को भी इस बात का विश्वास दिलायेंगे और फिर भी किसी अधिकारी ने तुम्हारे साथ ज्यादती की तो उसके खिलाफ हम तुम्हारा पूरा साथ देंगे। फिलहाल शराबबन्दी कार्यकर्त्ताओं को आश्वासन जरूर मिला है लेकिन समय ही बताएगा कि यह जरायम पेशा उनकी कितनी मानते हैं। वास्तव में अवैध शराब की उनको यह चुनौती है, देखना है कि अपनी परीक्षा में वे कितने सफल होते हैं। बहरहाल आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की शुभकामनाएं समर्थन व पूरा सहयोग उनके साथ है।

(पृष्ठ ३ का शेष)

निधि का कार्यकाल स्वतः समाप्त हो जाता है, साधारण सभा ही इन प्रतिनिधियों का पुनः चुनाव कर सकती है परन्तु इन दोनों प्रान्तों में साधारण सभा हुई ही नहीं। फिर भी १५-१५ प्रतिनिधि ले लिए गए। दिल्ली के प्रतिनिधि तो २० मई को वहां की अंतरंग ने स्वीकार किए। परन्तु अन्तरंग सभा प्रतिनिधि स्वीकार नहीं कर सकती। यह सार्वदेशिक सभा के संविधान में स्पष्ट लिखा है। प्रतिनिधियों का चुनाव केवल साधारण सभा में ही होता है। जब पंजाब, दिल्ली तथा बिहार की साधारण सभा सम्पन्न नहीं हो सकी तो वहां के सभी प्रतिनिधि अवैध हैं। उन्हें सार्वदेशिक सभा के चुनाव में मतदान का अधिकार नहीं देना चाहिए था।

६ बिहार आर्यप्रतिनिधि सभा का निर्वाचन हुए पांच वर्ष होगए हैं, वहां दूसरी बार साधारण सभा भी नहीं हुई है। इस बीच जुलाई ९४ में अन्तरंग की अनुमति से सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने वहां की कार्यकारिणी को भंगकर तदर्थ समिति बना दी थी। तदर्थ समिति ने श्री भूपनारायण प्रधान बिहार सभा को अनेक दोष लगाकर छः साल के लिए आर्यसमाज से निकाल दिया और फरवरी में चुनाव कराने की स्वीकृति सार्वदेशिक सभा से मांगी परन्तु वंदेमातरम् ने चुनाव की व्यवस्था हम करायेंगे यह लिखकर चुनाव रुकवा दिया तथा चुपचाप पूर्व प्रधान श्री भूपनारायण की कार्यकारिणी को पुनः बहाल कर दिया। जो संविधान के सर्वथा प्रतिकूल है, उन्होंने चुनाव में नकली सदस्यों को लेने के लिए यह संविधान के विरुद्ध कार्य किया। श्री भूपनारायण भी अपनी आज्ञा माननेवाले १५ सदस्य लेकर हैदराबाद पहुंचे। इनका निर्वाचन किसी सभा से नहीं करवाया गया न ही फार्म भरवाये गये। इस प्रकार वन्दे मातरम् एण्ड कम्पनी के अधिकतर सदस्य अवैध थे। परन्तु ये सारे सदस्य वहां उपस्थित सदस्यों की भावना को देखकर और इनके गलत हथकंडों से नाराज होकर इनका साथ नहीं देना चाहते थे। अतः वन्दे मातरम् एण्ड कम्पनी घबरा गई और चुनाव में छलकपट करने की सोची, जो चल नहीं सकी। भगवान् इनको सद्बुद्धि दे। सार्वदेशिक सभा से सम्बन्धित सभी प्रान्तीय सभाओं का कर्त्तव्य बन जाता है कि वे आर्यसमाज में घुसे बोगस तथा गैर आर्यों से सावधान रहें और आर्यसंन्यासियों के नेतृत्व में सार्वदेशिक सभा को तन मन तथा धन से सहयोग देवें।

खान-पान से होने वाली बीमारियां

गतांक से आगे

पेट में कीड़े पड़ना—ये कीड़े कई तरह के होते हैं। कुछ इतने छोटे कि आंखों से न दिखे, तो कुछ छोटे-छोटे रेंगते दिखाई देते हैं। कुछ अंगुली जैसे लम्बे पतले-पतले तो कुछ काफी लम्बे। आंख से न दिखने वाले कीड़े एक तरह से आंव करते है। दूसरे तरह के कोड़ं पेट-दर्द, मल जाने को गड़बड़ी, पाचन, दोष, खून की कमी करते हैं। ये कीड़े अमरबेल को माफिक परजीवी हैं। भोजन करे आदमी और उसके तत्त्व ये चट कर जाये। जाहिर है आदमी कैसे पनपे जबकि ये अपनी पैदावार दिन-दूनी बढ़ाते रहते हैं।

इतने सारे मर्ज जानने के बाद आप अवश्य सोच रहे हैं कि इनसे कैसे बचा जाये! हमारे जैसे गर्म मौसम वाले देश में ये बीमारियां और भी खतरनाक हैं। एक तो, गन्दे रोगाणु यहां बहुतायत से फलते-फूलते हैं। दूसरा, इन मर्जों से होनेवाली जटिलताओं से सामना करने के साधन व सुविधाएं भी कम हैं। मसलन अक्सर ये बीमारियां और भी खतरनाक स्थिति है। छोटे बच्चे, बूढ़े लोग तो इस चक्कर में बहुत आते हैं। एक बार शरीर में पानी की कमी हो जाये तो उसे पूरा करने में कम आफत नहीं आती है। इससे पहले कि मरीज की हालत बिगड़े तो नजदीक डाक्टर के पास जल्दी पहुंचें। नजदीक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, उपकेन्द्र, सरकारी अस्पताल, निजी दवाखाने या इस जैसी जगह जहां मरीज का ढंग से इलाज और देखभाल हो सके।

गन्दे खान-पान के नतीजे हैं—तरह-तरह के मर्ज। स्वस्थ जीवन की कुंजी है स्वच्छ रहन-सहन और खान-पान। गन्दा भोजन और पानी अनेक रोगों की खान है। ये कुछ नुस्खे ऐसे हैं जिन्हें लोग अपनाये तो गंदगी के मर्ज पनप हो न पाये। दरअसल इसका जिम्मा हर किसी नागरिक का है। व्यक्तिगत साफ-सफाई से रहना अच्छा है ही। सारे समाज में ये जानकारियां फैलनी चाहिएं। हर आदमी जाने कि गन्दे खान-पान में मर्ज क्या हैं, ये होते क्यों हैं, इनकी दिक्कतें कितनी हैं, और इनसे बचना सचमुच हमारे ऊपर है।

रोज सफाई से नहाये-धोये। जब भी कोई चीज खाये-पीये बड़ी सफाई से हाथ धोयें। हाथ यदि गन्दे हैं तो साफ-शुद्ध भोजन के माने बेमानी होगो। जब खाना-पीना हो। अंगुलियों के नाखून कटे हुए साफ होने चाहिएं। खाते समय हाथ शरीर के किसी अंग से न लगाये। कई लोग बालों में हाथ फेरने लगते हैं या खुजली होने पर खुजलाने लगते हैं। ये गन्दी आदत है।

बचा-खुचा, बासी, बदबूदार, फफूंदी लगा खाना भूलकर न खायें। इस फेंक देने में ही गनीमत है।

हाट-मेले, बाजार, दूकान या अन्य जगह खाये तो देख लें—कि खाने की चीजें अच्छी तरह से ढकी हैं या नहीं?

कहीं ऐसा तो नहीं कि मक्खियां भिनभिना रही हों?

चीजें बेचनेवाला साफ-सुथरा है या नहीं?

इस्तेमाल के बर्तन साफ हैं या नहीं? मिट्टी के डबूले या पत्ते के दोने में खाना-पीना अच्छा है। दोने-पत्तल, डबूले धुले होने चाहिएं।

खाने की चीजें ताजी बनी होनी चाहिएं।

जगह साफ होनी चाहिए। धूल-धक्कड़ न उड़ रहा हो। नजदीक गन्दी नाली, परनाला न हो।

पीने का पानी शुद्ध-स्वच्छ हो। थोड़ी-सी भी शंका है तो फिटकरी की डेली पानी में फिराये। इससे बहुत-सी गन्दगी बैठ जायेगी। पानी थिराकर उबालें। इसे ठण्डा करके स्वच्छ बर्तन में रख लें। कुएं में ब्लीचिंग पावडर का इस्तेमाल करें। ब्लीचिंग पावडर सरकारी अस्पताल, केन्द्र, उपकेन्द्र, अथवा स्वास्थ्य कर्मचारी से मुफ्त मिल सकता है। हैण्ड पम्प का पानी शुद्ध होता है। नहाना-धोना, पीने के पानी के स्रोत से दूर हो।

ठण्डे पेय, आइसक्रीम, कुल्फी, दूध, खोये की मिठाई या अन्य मिठाइयां, गोश्त-अण्डा खाने के पहले इनकी शुद्धता की बात पर कई बार ध्यान दें।

कटे फल—तरबूज, खरबूजा या अन्य कोई भी कटा फल न खरीदें, न खायें। कटी सब्जियां न खरीदे और रखे हुए सलाद न खायें। सलाद हमेशा ताजा काटें, ताजा खायें। कटे-खुले फल रोगाणुओं की पैदावार करते हैं। मक्खियों की भूमिका खास है।

ताजा, गरम करके पकाया जानेवाला भोजन, करें।

बचे-खुचे फल, सलाद, सब्जी, मिठाई सहेज कर न रखें। यदि बचा हुआ खाना रखना पड़ता है तो गरम करके खाने लायक भोजन ही सम्भाल कर ही खाये।

यदि कोई मिठाई वाला, फल-सब्जी वाला या दुकानदार खाद्य वस्तुओं को असुरक्षित तरीके से रखता है तो उसे समझाये। यदि आस-पड़ोस में ऊपर बताये मर्ज फैल रहे हैं तो स्वास्थ्य विभाग या प्रशासन को अवश्य सूचित करे। डा० जगवीरसिंह

दैनिक जागरण १७-५-९५ से साभार

शराब बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इनसे दूर रहें।

संस्कृत को दूसरी भाषा का दर्जा देने की मांग

पूण्डरी, 7 जून (निस) हरयाणा संस्कृत परिषद् ने हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ. भजनलाल से यह मांग की है कि वे संस्कृत भाषा को बी. ए. स्तर तक अनिवार्य विषय के रूप में लागू करके उसे द्वितीय भाषा का दर्जा प्रदान करें। हरयाणा प्रदेश में हिन्दी के बाद संस्कृत ही ऐसी भाषा है, जो सर्वाधिक रूप से पढी जाती है।

हरियाणा संस्कृत परिषद् के महासचिव डा. रत्नाराम मलिक ने बताया कि इस समय हरियाणा प्रदेश में संस्कृत भाषा की जो दुर्गति हो रही है, वैसी किसी अन्य प्रदेश में नही। पड़ोसी राज्य पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश में विद्यालय स्तर तक संस्कृत को मात्र वैकल्पिक विषय बनाकर उसे पशुपालन व ड्राइंग इत्यादि विषयों के साथ जोड़ दिया गया है। जमा दो प्रणाली में संस्कृत अनिवार्य विषय को पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया है।

इस समय हरयाणा में मात्र कुछ हजार विद्यार्थी ही संस्कृत की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। जबकि इस प्रदेश की सारी विरासत संस्कृत भाषा की ही देन है। प्रो. मलिक ने रोष प्रकट करते हुए बताया कि हरयाणा साहित्य अकादमी तथा हरयाणा शिक्षा बोर्ड ने संस्कृत को कोई अधिमान नहीं दिया तथा इन साहित्यिक संस्थाओं में इसके प्रतिनिधि न के बराबर हैं। हरयाणा साहित्य अकादमी ने पिछले दो वर्षों से संस्कृत भाषा के विकास व प्रचार के लिए एक भी समारोह आयोजित नहीं किया।

प्रो० मलिक ने आरोप लगाया है कि उच्चतम न्यायालय के ऐतिहासिक निर्णय की अवमानना करते हुए हरयाणा सरकार संस्कृत को अनिवार्य विषय के रूप में लागू नहीं कर रही है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में तो संस्कृत अनिवार्य विषय लगभग समाप्त हो गया है।

कविता

टेक—के बूझोगे म्हारे देश की ना जावै बात बताई,
बेरोजगारी सिर नै फोड़ै ऊपर से महंगाई।
चोरै मंत्री हो गये सारे अपना-अपना चोहवें सैं,
रिश्वत ले के देवैं नौकरी घर से नोट मंगावैं सैं।
बिना सिफारिश बुझै कोण्या इतना गदर मचावे सैं।
गरीब आदमी भूखा सोवै वै आनन्द ऐश मनावैं सैं।
के बूझोगे·········

किसने कहां म्हारी कौन सुनै ना पेश हमारी चलती,
महंगाई के कारण रोटी पेट भराई ना मिलती।
सबों का कोई ओड़ नहीं हलती दीखै धरती,
आज फौज में रिश्वत ले के करन लागगे भरती।
ठीक जगह कहीं ना मिलती सारै छान बगाई,
के बूझोगे········· ··

देख लियो सरकार देश नै कती लूट कै खावैगी,
बुझाये से भी नाहीं बुझैगी इसी आग कसूती लावैगी।
न्यू ये रही म्हारे देश मैं फेर गुलामी आवैगी,
इसी करड़ाई छावैगी ना देगा कमैं दिखाई।
के बूझोगे········· ··

कोई नहीं इसा देश में जो सबन समझादे,
उजड़ गया चमन हमारा हट कै फूल खिलादे,
जिन राहों से देश चलेगा वा सच्ची राह दिखादें।
वेदपाल कह कलावड़ वाये हटकै घेर सुनावे.
हे भगवान बचावे हम पह कैसी बिपदा आई।
के बूझोगे म्हारे देश की ना जावे बात बताई।

लेखक—वेदपाल ग्राम व डा. कलावड़

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक फोन : (७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ४०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ रजि० नं०P/
मृष्टिसम्वत् १, ९६, ०८ ५३, ०९६

सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०
सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री
वर्ष २२ अंक २८   २१ जून, १९९५   (वार्षिक शुल्क ५०)   (आजीवन शुल्क ५०१)   विदेश में १० पौंड   एक प्रति १-२५

शराब हटाओ, यज्ञ कराओ, राष्ट्र बचाओ।

गांव गिगनाऊ (जिला भिवानी) में २९, ३० जून तथा १, २ जुलाई को शराबबन्दी हेतु

अश्वमेध महायज्ञ का आयोजन एवं राष्ट्र सुरक्षा सम्मेलन

प्रिय मित्रो,

जैसा कि आप देख हो रहे हो कि समाज एवं राष्ट्र के सामने आज अनेकों समस्याएं हैं। जो कि राष्ट्र एवं समाज को अन्दर ही अन्दर खोखला करती जा रही हैं। इन समस्याओं का मूल कारण है समाज एवं राष्ट्र में फैली कुरीतियां एवं बुराइयां। इन्हीं बुराइयों के कारण हमारा राष्ट्र एवं समाज बुरी तरह बर्बाद होता जा रहा है तथा इन्हीं बुराइयों के कारण आज का मानव दानव होता जा रहा है। आज के मानव का चरित्र बुरी तरह से गिरता जा रहा है तथा मानव शराब, बीड़ी, सिगरेट, मांस अण्डे आदि खाकर मानव धर्म को छोड़ते जा रहे हैं। इन्हीं सामाजिक बुराइयों के कारण राष्ट्र एवं समाज में अशान्ति फैलती जा रही है। इस वक्त आवश्यकता है हजारों अश्वमेध महायज्ञ करवाने की। इन्हीं विषयों को लेकर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यक्रम अनुसार समाज सुधार मोर्चा की ओर से २९, ३० जून तथा १, २ जुलाई ९५ को एक क्विंटल देशी घी का अश्वमेध महायज्ञ किया जा रहा है। इस यज्ञ की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान वयोवृद्ध संन्यासी त्यागमूर्ति अखण्ड बाल ब्रह्मचारी, अनेकों गुरुकुलों के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के समर्पित सिपाही स्वामी ओमानन्द सरस्वती करेंगे तथा आर्य प्रतिनिधि सभा की भजन मण्डली द्वारा भी वैदिक धर्म प्रचार किया जायेगा। अन्य विद्वानों में स्वामी योगानन्द जी सरस्वती सांघी वैदिक आश्रम, महान् क्रांतिकारी युवा संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी रामानन्द जी सरस्वती सुखाना आश्रम सूरजगढ़, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महान् क्रांतिकारी प्रचारक श्री अतरसिंह आर्य।

इस महायज्ञ में कन्या गुरुकुल पंचगांव की छात्राएं मन्त्रोच्चारण करेंगी। बाहर से आनेवाले अतिथियों का भोजन एवं ठहरने का प्रबन्ध यज्ञ स्थान पर होगा। अतः आप सभी सज्जनों एवं माता बहनों से मेरी प्रार्थना है कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में समय पर पहुंचकर अश्वमेध महायज्ञ में अपनी आहुति डालें।

इस यज्ञ की अन्तिम आहुति २ जुलाई को प्रातः ९ बजे रविवार के दिन होगी। इसी दिन शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा करवाई जायेगी तथा शराबबन्दी सम्मेलन भी होगा। इस महायज्ञ की देख-रेख समाज सुधार मोर्चा के युवाप्रधान श्री रामअवतार आर्य करेंगे तथा समाजसुधार मोर्चा के सभी साथी गण अपना पूरा-पूरा सहयोग देंगे।

दैनिक यज्ञ कार्यक्रम

२९-६-९५ बृहस्पतिवार—प्रातः ७ से १० बजे, सायं ४ से ६ बजे
३०-६-९५ शुक्रवार—प्रातः ७ से १० बजे, साय ४ से ६ बजे
१-७-९५ शनिवार—प्रातः ७ से १० बजे, साय ४ से ६ बजे
२-७-९५ रविवार—प्रातः ७ से १० बजे, साय ४ से ६ बजे

निवेदक—समाज सुधार मोर्चा लोहारू,
जिला भिवानी (हरयाणा)

नलवा में व्यायाम प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

भीषण गर्मी में प्रथम बार ५ जून से ११ जून १९९५ तक आर्य समाज नलवा (हिसार) की ओर से हरयाणा आर्य परिषद् के तत्त्वावधान में सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी की अध्यक्षता में नवयुवकों के निर्माण हेतु व्यायाम प्रशिक्षण शिविर सफलता पूर्वक विधिवत् सम्पन्न हुआ। ४ जून को शिविरार्थी सायं ६ बजे तक पहुंच गये थे। ५ जून को प्रातः ८ बजे हाई स्कूल नलवा के प्रांगण में बच्चों का व्यायाम आरम्भ हुआ। यज्ञ के बाद श्री ईश्वरसिंह आर्य (हिसार) ने ओ३म् ध्वज फहराकर शिविर का उद्घाटन किया।

शिविर में १७ गांव के ५१ निष्ठावान् नवयुवकों ने भाग लिया। प्रतिदिन दो-दो घंटे प्रातः सायं व्यायाम का कार्यक्रम श्री धनसिंह व श्री अजीतसिंह योग्य व्यायाम शिक्षकों द्वारा आसन दण्डबैठक, स्तूप, लाठी चलाना, कराटे आदि का प्रशिक्षण दिया गया। प्रतिदिन प्रात. आर्यसमाज मन्दिर नलवा में ब्रह्म यज्ञ व देव यज्ञ किया गया। सभी शिविरार्थियों को यज्ञोपवीत दिए गए। एक नवयुवक ने अण्डे मांस न खाने तथा ५ नवयुवकों ने बीड़ी न पीने का व्रत लिया। रात्रि को गांव में आदर्श भजनोपदेशक पं० विश्वामित्र जी की मण्डली द्वारा प्रतिदिन वेद प्रचार किया गया।

बौद्धिक के लिए निम्न विद्वान् पधारे। स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, स्वामी परमानन्द जी, महात्मा तेजमुनि, महात्मा हरिदेव, श्री आनन्द मोहन लठधारी, मा० शेरसिंह जी, आचार्य राजकुमार शास्त्रार्थ महारथी, श्री शिवराम विद्यावाचस्पति, श्री सूर्यदेव आर्य, श्री क्रांतिकारी जी आदि ने नैतिक

(शेष पृष्ठ ६ पर)

"यज्ञ और उसके मौलिक सिद्धान्त"

प्रतापसिंह शास्त्री, पत्रकार

गतांक से आगे

४. यज्ञ का चौथा मौलिक सिद्धान्त है—अनासक्ति। वेद मन्त्र में इसे "तेन त्यक्तेन भुंजिथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्" त्याग की भावना कहकर समझाया गया है। यज्ञ में समिदाधान मन्त्र इसी मौलिक सिद्धान्त को प्रकट करता है—"इदन्न मम" मनु महाराज ने लिखा है—"पञ्चैतास्तु महायज्ञान् यथाशक्ति न हापयेत्" इससे स्पष्ट है यज्ञों की बड़ी महिमा है। वस्तुतः कर्म करना और फल को बांटकर खाना इस पाठ की प्रतिदिन आवृत्ति कराने के कारण ही महर्षि दयानन्द जी ने इन यज्ञों को महायज्ञ का नाम दिया और "पंचमहायज्ञविधिः" नामक छोटा सा ग्रन्थ भी महर्षि ने लिखा। वैदिक अर्थव्यवस्था का मूल रहस्य भी इसी मौलिक सिद्धान्त में छिपा हुआ है। फल की इच्छा न करना भी उस परमेश्वर से ही यज्ञ द्वारा सीख सकते हैं। त्याग की अर्थात् निष्कामकर्म की प्रेरणा उसी परब्रह्म से सीखी जाये। निष्कामकर्म करने वालों में जिसका सबसे बड़ा स्थान है, उसे अन्न, जल, स्तुति, पूजा आदि किसी भी फल की कामना नहीं, तो भी कर्म में वह निरन्तर प्रवृत्त रहता है, कभी विश्राम नहीं लेता।

५. यज्ञ का पांचवां मौलिक सिद्धान्त है—अदब्धता। अदब्धता का अर्थ है किसी कार्य को पूरा करने के लिए जितना कम से कम समय लगे और जितनी कम से कम सामग्री लगे उतना ही करना यज्ञ का धर्म है जो ऐसा नहीं करता वह यज्ञांश की चोरी करता है। वेदमन्त्र में इस मौलिक सिद्धान्त को इस प्रकार प्रकट किया गया है :—

"आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो अदब्धासो अपरितास उद्भिदः"

अर्थात् हमारे यज्ञ उद्भिद हों और चारों ओर से अदब्ध (uncroohed) हों इसीलिए यज्ञकुण्ड वर्गाकार बनाया गया है।

६. यज्ञ का छठा मौलिक सिद्धान्त है—स्वाहा। कर्म किस प्रकार करना चाहिए इसका उत्तर यह है—"स्वाहा" अर्थात् हर एक आहुति इस प्रकार दी जानी चाहिए कि पीछे से कर्त्ता सु-आह ठीक होगया, ऐसा कह सके यह स्वाहाकार ही जमनी का (Cult of efficiency) है। स्वाहाकार तक पहुँचने के दो मार्ग हैं—स्विष्टकार और वषट्कार। वषट्कार का अर्थ है (Thoroughess) अर्थात् अधकचरा काम करके सन्तुष्ट न हो जाना। चाहे एक दीवार को तोड़कर दस बार बनाना पड़े परन्तु बने पूरी माप के अनुकूल। इस (Attention to detail) द्वारा कार्य को पूर्णता तक पहुचाने का नाम वषट्कार है। वषट्कार में ओजः और सहः दो गुण होने चाहिएं जिसके कारण काम करने में एक मस्ती आती है जो आराम से बैठे वीर पुरुष को संकट को निमन्त्रण देने के लिए प्रेरणा करती है उस शक्ति का नाम ओज है जिससे विघ्नों पर विघ्न पड़ने पर भी, सम्पूर्ण साथियों द्वारा छोड़े जाने पर भी, मनुष्य दांत भींचकर अकेला लगा रहता है उस शक्ति का नाम सहः है।

वषट्कार के साथ जो दूसरी भावना लगी है, वह है स्विष्टकार। वषट्कार का भाव है कि कोई अंग छूट न जाये कार्य सर्वांग सम्पन्न हो। स्विष्टकार का अर्थ है कि नियत क्रम से न्यून अथवा अधिक न हो। इसे अंग्रेजी भाषा में Accuracy अथवा Fxactitude कहते हैं दूसरी ओर वषट्कार का भाव है Thouroghness ये दोनों मिलकर स्वाहाकार (Efficiency) उत्पन्न करते हैं। यज्ञ में एक स्विष्टकृत मन्त्र—"यदस्य कर्मणा अत्यरीरिचम्" आदि का है अर्थात् अग्नि स्विष्टकृत् है मैंने यदि इस कार्य में कुछ अधिक किया अथवा न्यून किया तो उसे स्विष्टकृत् अग्नि जाने। यहां स्विष्टकृत् स्पष्ट ही न्यून तथा अतिरिक्त का विरोधी होकर आया है इससे स्पष्ट है कि स्विष्ट का अर्थ (Fxact) है।

७ यज्ञ का यह सातवां मौलिक सिद्धान्त आचमन है। यह यज्ञ के आरम्भ की प्रमुख क्रिया है यज्ञ की विधि का प्रमुख अंग है। आचमन के लिए तीन मन्त्र निर्धारित किये गये हैं—१. "ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।" हे सर्वरक्षक अमर परमेश्वर, आप बिछौना अर्थात् सब जगत् के आधार और आश्रय हो, यह सत्य वचन मैं सत्यनिष्ठापूर्वक मानकर कहता हूं और सुष्ठुक्रिया आचमन के सदृश आपको अपने अन्तःकरण में ग्रहण करता हूं।

२. "ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा" हे सर्वरक्षक अविनाशीस्वरूप अजर परमेश्वर, आप हमारे आच्छादक वस्त्र के समान (ओढना) अर्थात् सर्वदा सब ओर से रक्षक हो (स्वाहा) यह सत्य वचन मैं सत्यनिष्ठापूर्वक मानकर कहता हूँ और सुष्ठुक्रिया आचमन के सदृश आपको अपने अन्तःकरण में ग्रहण करता हूं।

३. "ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा" हे सर्वरक्षक ईश्वर (सत्य) सत्याचरण यह अमृत है (यश.) यश एवं प्रतिष्ठा यह अमृत है। (श्री) धन ऐश्वर्य यह भी अमृत है ये तीन अमृत हैं जो वैदिक वर्ण व्यवस्था का संकेत करते हैं ये अमृत के रूप हैं इन तीनों में से कोई एक मेरे हृदय में इस ओढ़ने और बिछौने के बीच शयन करे सत्य ब्राह्मण का अमृत है ब्राह्मण का प्रण है कि मैं अपनी जान देकर भी सत्य को न मरने दूंगा वह अमृत रहे इसलिए सत्य ब्राह्मण का अमृत है। वेद में आया है-"सत्येनोत्तभिता भूमिः" सत्य भूमि को ऊपर उठाए हुए है अर्थात् सत्यनिष्ठ लोग ही किसी राष्ट्र को श्री सम्पन्न बनाते हैं। क्षत्रिय का प्रण है कि मैं प्राण देकर भी यश की रक्षा करूं। मुझ पर यह कलंक कभी न आने पाएं कि मैंने न्याय की रक्षा नहीं की। क्षत्रिय का धर्म केवल न्याय करना नहीं किन्तु प्रजा को यह विश्वास दिलाना कि वह न्याय कर रहा है, यह भी उसका धर्म है इसलिए यश उसका अमृत है।

श्री शब्द "श्रि श्रये" धातु से बना है। श्रये का अर्थ है आश्रय देना जिस मनुष्य के पास दस करोड़ रुपया भी हो किन्तु उसने कभी किसी पुण्यकार्य को आश्रय न दिया हो तो वह धनपति, पूंजीपति, सेठ, साहूकार, धनवान् तो कहला सकता है श्रीपति या दानवीर नहीं कहला सकता। श्री तो उसी धन का नाम है जिसके द्वारा किसी पुण्यकार्य को आश्रय दिया जाए यह भी वैश्य का अमृत है वैश्य अपने प्राण देकर भी श्री को नहीं मरने देता।

दानवीर सेठ चौ० छाजूराम श्रीपति थे। अब इन तीनों सत्य यश और श्री का ओढ़ना बिछौना अर्थात् प्राप्तिमार्ग और प्रयोग मार्ग दोनों ही पवित्र हों और शान्ति से युक्त यही आचमन क्रिया का तात्पर्य है जब एक प्रण कर लिया जाए तो फिर उसे निभाना ही चाहिए। आप मर्यादापुरुषोत्तम राम के अनुयायी हैं। रघुकुल में यह मर्यादा थी— "प्राण जाये पर वचन न जाई" किन्तु प्रण करने से पहले खूब ठण्डे दिल से विचार लेना चाहिए जिससे पीछे न पछताना पड़े।

८. यज्ञ का आठवां मौलिक सिद्धान्त यज्ञ तीन लड़ा है। देवयज्ञ आचमन के बाद अग्नि ज्वालन मन्त्र "ओं भूर्भुवः स्वः" के उच्चारण के साथ अग्न्याधान क्रिया द्वारा सद्व्यवहार की शिक्षा देता है। अग्नि के लिए वेद में कहा है—"आकूत्यै प्रयुज्ये अग्नये स्वाहा" (यजु० ४-६) अर्थात् महान् उद्देश्य के लिए प्रबलवेग से धक्का देनेवाले, आगे बढ़ने की प्रेरणा करनेवाले दृढसंकल्प का नाम अग्नि है और वह प्रशंसनीय है। बस यही यज्ञ में अग्नि है। "त्रिवृद्धि यज्ञ" अर्थात् यज्ञ तीन लड़ा है सत् चित् आनन्द, ईश्वर, जीव, प्रकृति। सत्व रजस तमस। व्यवस्थापिका कार्यकारिणी सभा, न्याय सभा आदि, माता-पिता सन्तान। ग्राहक, व्यापारी, सामग्री, यज्ञ के तीन अर्थ है—देवपूजा, संगतिकरण, दान, पृथ्वी, द्यौ, अन्तरिक्ष, माता, पिता, आचार्य। आचमन भी तीन होते हैं। ओ३म् में भी तीन अक्षर—अ, उ, म्। अज्ञान अन्याय, अभाव आदि तीन संख्या के सैकड़ों संयोग दिखाए जाते हैं परन्तु वह सब के सब ज्ञान, इच्छा और अनुभूति इन तीन से पृथक् कहीं नहीं हो सकते। भूः भुवः स्वः यज्ञ के तीन अंगों की पूर्ति के लिए सबसे पहले हर एक यजमान ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य वर्ण संकल्प की अग्नि को अपने हृदय में स्थान देता है यज्ञ का मुख्य उद्देश्य तो मानसिक भावनाओं को तथा पर्यावरण को शुद्ध करना है। जिस दिन भूमण्डल के लोग उक्त भावना से उक्त उद्देश्य से यज्ञ करेंगे तो सर्वत्र शान्ति कर सुख-समृद्धि का नैतिकता का ही साम्राज्य होगा। क्रमशः

सार्वदेशिक सभा के चुनाव पर धर्म मर्यादा की महत्त्वपूर्ण टिप्पणी

मुलखराज आर्य, महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

१ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिनिधि सभा का चुनाव हैदराबाद में २७, २८ मई १९९५ को था वहां पर पता चला है कि काफी शोर शराबा हुआ अब पता चला है कि वहां पर भी चुनाव दो हो गये हैं। एक के प्रधान स्वामी विद्यानन्द जी और मन्त्री स्वामी सुमेधानन्द जी और दूसरी ओर प्रधान पंडित रामचन्द्रराव वन्देमातरम् और मन्त्री डा. सच्चिदानन्द जी शास्त्री थे। चुनाव पंजाब केसरी में १ जून वाले में पढ़ा। प्रधान वन्देमातरम् तथा उसके साथियों का चुनाव लिखा हुआ था और दो जून के पंजाब केसरी में चुनाव निकला है कि जिस में प्रधान स्वामी विद्यानन्द जी और मन्त्री स्वामी सुमेधानन्द जी हैं और साथ समचार में यह भी लिखा कि स्वामी विद्यानन्द जी तथा स्वामी सुमेधानन्द जी ने सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के कार्यालय पर कब्जा भी कर लिया है। ये सारी स्थिति क्यों पैदा हो रही है। इसलिए कि नीचे से लेकर ऊपर तक सारा मामला गड़बड़। सारा कार्य ही बोगस हो रहा है। मैंने पण्डित रामचन्द्र राव वन्देमातरम् को एक चेतावनी पत्र लिखा और वह पत्र धर्म मर्यादा में भी दो बार अंक नं० ११५, ११६ में छाप दिया था। मैंने लिखा कथित आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रतिनिधि जो चुनाव में भाग लेने जा रहे हैं वह बोगस हैं उनको चुनाव में भाग न लेने दिया जाए। यदि भाग लगे तो आपका चुनाव अवैध हो जाएगा क्योंकि विधान की धारा नं० ४(१) के अनुसार साधारण सभा ही प्रतिनिधियों का चुनाव करके भेज सकती है। परन्तु कथित आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की साधारण सभा की मीटिंग हुई ही नहीं।

कहा जाता है कि साधाण सभा की मीटिंग ५ सितम्बर १९९३ को हुई थी। इसलिए ये प्रचार किया जा रहा है कि उस समय प्रधान को अधिकार दे दिए गये थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का पिछला चुनाव २६, २७ अक्तूबर १९९१ को हुआ था। उस समय तीन वर्ष के लिए जो प्रतिनिधि चुने गए थे वे २६, अक्तूबर १९९४ तक थे। ५ सितम्बर १९९३ को भी अभी पुराने प्रतिनिधि का शेष समय एक वर्ष से अधिक रहता था। इसलिए ५ सितम्बर १९९३ को प्रतिनिधि के चुनाव का अधिकार प्रधान को देने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता यदि दे भी दिए थे तो उन्होने प्रतिनिधियों का चुनाव नहीं किया था और यदि किया होता तो भी अवैध होते और उनकी मृत्यु ३१ दिसम्बर १९९३ को हो गयी थी परन्तु ५ सितम्बर १९९३ के पश्चात् आज तक भी कोई साधारण सभा की मीटिंग नहीं हुई। परन्तु वन्देमातरम् जी ने इन बोगस प्रतिनिधियों को भाग लेने की आज्ञा दे दी। जैसे पंजाब से बोगस प्रतिनिधि हैं इसी प्रकार और स्थानों से भी बोगस प्रतिनिधि अवश्य आए होंगे। इस सारे गड़बड़ी मामले पर आर्यजगत् को विचार करके इसकी जांच करनी चाहिए। आन्ध्रप्रदेश और उत्तरप्रदेश और भी कई स्थानों से बोगस प्रतिनिधि अवश्य आए होंगे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सारे देशों का है और हमारी भारत सरकार का राष्ट्रपति श्री शंकरदयाल जी शर्मा तो केवल भारत के राष्ट्रपति हैं। परन्तु हमारा प्रधान तो सारे विश्व का राष्ट्रपति है। इतना ऊंचा दर्जा सार्वदेशिक के प्रधान का है। परन्तु हमें बहुत दुःख है कि इतना बड़ा पद हो और ऋषि दयानन्द जी की बनाई हुई संस्था हो और उसका ये हाल हो उस कुर्सी के लिए जोड़ तोड़ करके संस्था को पतन की ओर ले जाया जा रहा है। पहले स्वामी आनन्दबोध जो भी यही किया करते थे और उसी पथ पर पण्डित रामचन्द्र राव वन्देमातरम् भी चल पड़े हैं। हर प्रान्त में झगड़ का मूल सार्वदेशिक सभा ही है। चाहिए तो ये कि हर प्रान्त में जो झगड़े हैं उन सबको बिठाकर उनका मन-मुटाव समाप्त किया जाए। परन्तु आज जो गलत काम करता वे उनकी पीठ ठोंक देते हैं। आज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा किधर जा रही। मैं पहले स्वामी आनन्दबोध जो गलत कार्य करते थे उसके बारे में लिख चुका हूं। अब क्या कुछ सभा में हो रहा है। ये भी जनता के सामने रख दिया जायेगा।

२. आर्यसमाज में गैर आर्यसमाजी स्वार्थी तत्वों की घुसपैठ हो रही थी वह कोई गुल अवश्य खिलाएगी। सार्वदेशिक सभा का शिजरा बिगड़ता चला जारहा था। आर्यसमाज के सच्चे सेवक और तपे तपाये आर्यसमाजियों व चरित्रवानों का अवैध रूप से निष्कासन होरहा था और आर्यसमाज की जड़ों में तेल डालने का व्रत लिए व्यक्ति चापलूसी मक्कारी और छलकपट से आर्यसमाज की लाखों की सम्पत्ति व भूमियां बिना हिसाब-किताब के, जो दानी लोगों ने वैदिकधर्म और वेदप्रचार हेतु दे रखी थीं, बेच-बेचकर तबाही मचा रखी थी।

ऐसी दर्दनाक स्थिति को सच्चे आर्यजन कब तक बर्दाश्त करते ? आखिर ज्वालामुखी फूट पड़ा और लावा निकल पड़ा। वैसे यह एक अच्छा शकुन है। जो धांधली चल पड़ी थी और स्वार्थी एवं अवांछनीय तत्व सरगरम होकर यहीं से अपना धंधा पानी चलाने लगे थे उनको सबक मिलना ही चाहिए था। आइये समाचार पढ़े, समाचार इस प्रकार है :—

"नई दिल्ली, १ जून (प स) —सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित प्रधान स्वामी विद्यानन्द और मन्त्री सुमेधानन्द ने आज सुबह अपने सहयोगियों के साथ पुलिस की मौजूदगी में सभा के कार्यालय पर अधिकार कर लिया। स्वामी सुमेधानन्द ने बाद में बताया की गत २७ व २८ मई को हैदराबाद में स्वामी विद्यानन्द को देशभर की आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों ने प्रधान चुना था। उन्होंने सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद पर दूसरे पक्ष के दावे को गलत बताया और आरोप लगाया कि स्वयं को अध्यक्ष बतानेवाले पं० रामचन्द्र राव वन्दे मातरम् वैधरूप से सभा के प्रतिनिधि तक नहीं हैं। फिर अध्यक्ष कैसे बन सकते हैं ?"

"नवनिर्वाचित सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प्रो० शेरसिंह ने दावा किया कि स्वामी विद्यानन्द की अध्यक्षतावाली सभा ही (विधिवत्) निर्वाचित सभा है…।"

आशा की जानी चाहिए कि अब इस उथल-पुथल में केवल आर्यसमाजी ही उभर कर आगे आ सकेंगे और गैर आर्यसमाजियों की घुसपैठ बिल्कुल बन्द हो जाएगी, जिसका भुगतान आज आर्यसमाज को सर्वोच्च संस्था भुगत रही है। आर्यसमाजियों को अब सतर्क और सावधान रहने की आवश्यकता है और एक "ओ३म्" के ध्वज तले एकत्र होकर लग्न, श्रद्धा और तन्मयता से निष्कामकार्य करने की अत्यन्त आवश्यकता है। दयानन्द का स्वप्न पूरा करने का अब अच्छा समय है क्योंकि पहले तो सार्वदेशिक सभा का कार्य बिल्कुल एक प्रकार से ठप होकर रह गया था और चन्द एक स्वार्थी पदलोभी और चापलूस लोगों ने आर्यसमाज के कार्य को ग्रहण लगा कर रख दिया। अब ऐ दयानन्द के दीवानो बढे चलो। पीछे मुड़कर मत देखना। निज़ाम बदल गया।

आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब किसी भी क्रान्तिकारी पग के साथ है। "जहां आर्यसमाज है वहां जीवन है और जहां जीवन है वहीं आर्यसमाज है।"

ध्यान योग्य बात है कि आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के मान्य महामन्त्री श्री मुलखराज आर्य ने श्री रामचन्द्र राव वन्दे मातरम् को पत्र लिखकर और धर्म मर्यादा के अंकों ११५/२१-५-९५ एवं ११६/२२-५-९५ में बारम्बार पत्र प्रकाशित कर चेतावनी दी थी कि कथित आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के अवैध प्रतिनिधियों को सार्वदेशिक सभा के २७-२८ मई ९५ के चुनाव में भाग न लेने दिया जाये अन्यथा सार्वदेशिक सभा

(शेष पृष्ठ ५ पर)

ग्राम बालसमन्द (हिसार) में पुलिस का आतंक तथा ६ समिति सदस्य गांव छोड़कर भूमिगत

मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल के हल्के आदमपुर के सबसे बड़े गांव बालसमन्द में ५ दिन से पुलिस का आतंक छाया हुआ है। एक तरफ गत वर्ष धरना देकर ५७ लाख का ठेका बन्द करवाने के बाद शराब-बन्दी समिति के सदस्य गांव में पूर्ण शराबबन्दी के लिए प्रयासरत हैं। दूसरी ओर फूला ठेकेदार पुलिस से मिलकर गांव में कुछ असामाजिक तत्त्वों के माध्यम से अवैध शराब की बिक्री कर गांव की शान्ति भंग करने पर तुला हुआ है। पुलिस मासिक पैसे लेकर खुलकर ठेकेदार की मदद कर रही है। ठेकेदार पुलिस को भी मुफ्त शराब पिला रहा है।

१६ मई की रात्रि को १० बजे नवनिर्मित अनाजमण्डी बालसमन्द में एक मकान में बैठक कर बालसमन्द चौकी इंचार्ज तथा दो-तीन पुलिसवाले शराब पी रहे थे। नशा होने पर हुड़दंग मचाया। तब समिति के सदस्यों को सूचना मिलने पर नवयुवक वहां आए और शराबी पुलिसवालों को ललकारा कि हमारा गांव है यहां हमारी बहिन-बेटी भी है आप शराब पीकर ऐसे गाली-गलोच क्यों करते हो। कुछ पुलिसवाले अन्धेरे का फायदा उठाकर भाग खड़े हुए। एक चौकी का हवलदार श्री ओमप्रकाश बाज नहीं आया। बकवास करता रहा समिति के बहादुर नवयुवकों ने उसे पकड़कर धमकाया और जीप में बैठाकर बालसमन्द हस्पताल ले गए वहां डाक्टर नहीं था। बाद में हिसार सिविल हस्पताल में रात्रि १२ बजे उसकी डाक्टरी करवाई। उस समय वह शराब में धुत था एक अधा शराब हाथ में ले रखा था।

उसके बाद पुलिस ने अपनी बेइज्जती समझकर आग बबूला होगई और हिसार उच्च पुलिस अधिकारियों को झूठ बोलकर गुमराह किया कि समिति के सदस्य हवलदार को चौकी से उठाकर ले गए। तब से आज तक बालसमन्द गांव को पुलिस छावनी बना रखा है। रात-दिन गांव की गलियों में पुलिस की जीपसी, जीप, स्कूटर तथा सिविल कपड़ों में पुलिस ही नजर आती है।

२० मई को समिति के दो सदस्यों श्री छाजुराम व श्री ओमप्रकाश को घर से पुलिस उठाकर ले गई। उनकी जमकर पिटाई की और झूठा केस बनाया। २१ मई को उनकी जमानत हुई। आज भी उनके पांव व कमर पर चोट के निशान मौजूद हैं। शेष नवयुवक श्री महावीरसिंह, प्रताप हरिजन, रामनिवास, श्रीराम आर्य, रणवीर, सत्यवीर गांव छोड़कर भूमिगत होगए हैं। पुलिस बार-बार उनके घरों की तलाशी ले रही है और घरवालों को परेशान कर रही है।

मैंने भी पता लगने पर २३ मई को गांव बालसमन्द जाकर देखा नरनारियों से सम्पर्क किया। उपरोक्त नवयुवकों को घर भी जाकर मिला। लोग पुलिस के भय से डरे हुए हैं। पुलिसवाले मनमानी कर रहे हैं। स्थानीय शराबबन्दी सदस्यों को दबाना चाहते हैं। लेकिन समिति के सदस्यों के हौसले बुलन्द हैं। चाहे कुछ भी हो गांव में अवैध शराब की बिक्री नहीं होने देंगे। न गांव में ठेका खुलने देंगे। हिसार पुलिस ने व चौकी बालसमन्द ने श्री अनिल डाबडा, गोयल तथा इंसपेक्टर राजेन्द्र यादव से कोई सबक नहीं सीखा कि गलत काम का गलत नतीजा तुम्हें भी भुगतना पड़ेगा।

मैं जिला प्रशासन व सरकार से पुरजोर मांग करता हूं कि बालसमन्द पुलिस चौकीवालों को नकेल डाले और दोषी पुलिसवालों को दण्ड दे और समिति के सदस्यों के झूठे केस वापिस ले। वरना आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा शराबबन्दी समिति जिला हिसार आन्दोलन छेड़ने पर मजबूर होगी। बाद में इसके गम्भीर परिणाम होंगे। ठेकेदार के मनसुबे समिति के सदस्य कभी पूरे नहीं होने देंगे।

—अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
सभा प्रवक्ता एवं संयोजक
शराबबन्दी समिति, जिला हिसार

अब "दिल्ली भवन" नाम होगा

महोदय,

दिसम्बर १९९४ में दिल्ली नगर निगम के मुख्यालय के लिए कई मंजिलों के एक विशाल भवन का शिलान्यास किया गया था जिसका नाम "सिटी सेंटर" रखा गया था। केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् ने दिल्ली नगर निगम, भारत सरकार के राजभाषा विभाग, भारत सरकार के शहरी विकास मंत्रालय और दिल्ली सरकार को पत्र लिखकर निवेदन किया था कि भवन का नाम किसी भारतीय भाषा में रखा जाए जैसा कि भारत सरकार के आदेश भी हैं कि नये भवनों अथवा कार्यक्रमों के जो नाम रखे जायें वे भारतीय भाषाओं में ही हो और अंग्रेजी में भी भारतीय नाम का ही प्रयोग हों। अब भारत सरकार के शहरी कार्य और रोजगार मंत्रालय ने अपने १५ मई १९९५ के पत्र द्वारा परिषद् के संयोजक, राजभाषा कार्य को सूचित किया है कि हमारे निवेदन को स्वीकार करते हुए भवन का नाम "दिल्ली भवन" रख दिया गया है। दिल्ली के मुख्यमन्त्री और निगमायुक्त ने भी इसके लिए अपनी सहमति दे दी है तथा इस नाम को आधारशिला पर लिखाने के लिए भी आदेश दे दिए गए हैं।

पाठकों से अनुरोध है कि जब-जब भी हिन्दी के प्रयोग संबंधी आपके कोई सुझाव अथवा शिकायतें हों तो पूरे तथ्यों सहित शिष्टभाषा में सम्बन्धित मंत्री को पत्र लिखेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। निरन्तर रूप से लिखने और निश्चित अन्तराल के बाद अनुस्मारक देना सफलता की आवश्यक शर्त है।

—जगन्नाथ, संयोजक, राजभाषा कार्य,
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् एक्स. वाई. ६८,
सरोजिनी नगर, नई दिल्ली—११००२३

मुस्लिम युवती ने हिन्दूधर्म अपनाया

कानपुर—आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर में समाज व केन्द्रीय आर्यसभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने एक २० वर्षीय शिक्षित मुस्लिम युवती को उसकी इच्छानुसार शुद्धि संस्कार के पश्चात् वैदिकधर्म (हिन्दूधर्म) में प्रवेश कराया। उसका नाम शबनम से श्वेता रखा।

शुद्धि संस्कार के बाद श्वेता का विवाह २३ वर्षीय एक सरकारी कर्मचारी श्री जयप्रकाशसिंह से वैदिकरीति से करवाया गया।

इस अवसर पर श्वेता ने बताया कि उसे विवाह के चन्द माह में ही तलाक दे दिया गया। अतः मैं इस्लाम की तलाक पद्धति से परेशान हूं और हिन्दूधर्म के आजीवन साथ रहने के संकल्प को पसन्द करती हूं।

—बालगोविन्द आर्य
मन्त्री आर्यसमाज, गोविन्द नगर, कानपुर

आप कौन से आर्य हो ?

तुम भी आर्य, मैं भी आर्य,
वह भी आर्य, यह भी आर्य,
इन आर्यों में कुछ अन्तर है।
कोई कच्चा आर्य, कोई पक्का आर्य,
कोई कड़वा आर्य, कोई मीठा आर्य,
कोई झूठा आर्य, कोई सच्चा आर्य,
कोई-कोई है काना आर्य।
उपजे हैं सब एक ही खेत में,
पर भाव हैं सबके अलग-अलग,
कुछ सस्ते में बिक जाते हैं,
कुछ मंहगे दाम उठाते हैं।
चुन लो तुम चाहो जैसा आर्य,
आज मिल रहे हैं हर प्रकार के आर्य।

लेखक—देवराज आर्य, आर्यसमाज, बल्लभगढ़—१२१००१

महात्मा गांधी की १२५वीं जयन्ती मनाने की गठित समिति की बैठक में

हरयाणा राजभवन चण्डीगढ़ में प्रो० शेरसिह के सुझाव

१. शराबबन्दी

भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रोफेसर शेरसिंह ने शराबबन्दी पर बोलते हुए कहा कि शराबबन्दी केन्द्र का विषय न होकर यह राज्य का विषय है। उन्होंने स्मरण करवाया कि केन्द्र ने मार्च, १९९६ में सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पास किया था कि पूरे देश में शराबबन्दी लागू की जाये। योजना आयोग ने यह विचार दिया था कि इस मद पर राज्यों को होने वाले घाटे का ५० प्रतिशत केन्द्र सरकार पूरा करेगी। इसलिए उन्होंने तर्क पेश किया कि शराबबन्दी पूरे राज्य में लागू को जाये। इसके अलावा उन्होंने यह विचार व्यक्त किया कि यदि कोई पंचायत यह प्रस्ताव पास कर देती है कि उनके गांव में शराब का ठेका न खोला जाए तो सरकार उस गांव में ठेका नहीं खोलती। इसके विपरीत सरकार को भी चाहिए कि पंचायत से पूछे बिना किसी भी गांव में शराब का ठेका न खोला जाए।

प्रोफेसर शेरसिह ने सर्वोच्च न्यायालय में दायर एक जनहित याचिका का भी उल्लेख किया जो कि शराबबन्दी के बारे में है। उन्होंने बताया कि न्यायालय ने देश के सभी राज्यों को इस बारे में नोटिस भेजा है। उन्होंने अनुरोध किया कि हरयाणा सरकार की ओर से जो जवाब देना है वह जल्दी भिजवाया जाये। श्री शेरसिह ने टी.वी. आदि पर शराब के विज्ञापनों पर रोक लगाने पर बल दिया और सुझाव दिया कि नाजायज शराब निकालने वाले दोषी व्यक्तियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जानी चाहिए।

श्री मूलचन्द जैन, श्री बलवन्तराय तायल, श्री नारायणसिह आदि कई गणमान्य सदस्यों ने श्री शेरसिंह द्वारा दिये गये उपरोक्त सुझावों का समर्थन किया और कहा कि हरयाणा सरकार सर्वोच्च न्यायालय की याचिका का जवाब दे। श्री मूलचन्द जैन ने बताया कि ठेकेदार अपने ठेके के अलावा अन्य स्थानों पर अवैध रूप से शराब बेच रहे हैं उन पर रोक लगाई जानी चाहिए। समिति में उपस्थित लगभग सभी सदस्य एकमत थे कि गांवों में शराब की बिक्री पर पंचायतों को दी जाने वाली डेढ़ रुपये प्रति बोतल की राशि बन्द की जानी चाहिए।

२. नैतिक शिक्षा

नैतिक शिक्षा दिये जाने बारे जोर देते हुए भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रोफेसर शेरसिंह ने सुझाव दिया कि नैतिक शब्द की बजाय इसे मानवता की शिक्षा आदि का नाम दिया जाना चाहिए क्योंकि नैतिक शब्द बहुत सीमित है और इसे परीक्षा का अंग अपनाया जाये। श्री मूलचन्द जैन ने नैतिक शिक्षा के बारे में कहा कि इस सम्बन्ध में कोई सन्तोषजनक कार्य नहीं हो रहा है क्योंकि हरयाणा राज्य में ८०,००० के करीब अध्यापक हैं और उनके अनुसार कोई ८०० अध्यापक भी नैतिक शिक्षा देने के योग्य नहीं हैं। अतः उनके विचार में एक समिति का गठन किया जाये अच्छे अध्यापकों की सूची बनाये और उन्ही अध्यापकों से बच्चों को नैतिक शिक्षा दिलवाई जाये। श्री सोहनलाल यास ने इस बारे अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि समिति में जिन-जिन मुद्दों पर विचार विमर्श किया जाता है उसको लागू नहीं किया जाता है इसलिए उन्होंने सुझाव दिया कि एक उपसमिति का गठन किया जाये जो कि इस स्कीम के गुण-दोषों को परखते हुए अपने विचार प्रकट करें कि किस स्टेज पर क्या पढ़ाया जाता है।

३. सुलभ शौचालय

प्रो० शेरसिह तथा अन्य कुछेक सदस्यों ने मांग की कि महिलाओं की सुविधा के लिए गांवों में सुलभ शौचालयों का निर्माण किया जाये। इस बारे में मुख्यमन्त्री जी ने सूचित किया कि राज्य में लगभग अढ़ाई लाख सुलभ शौचालयों का निर्माण पहले ही किया जा चुका है और आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान इस योजना पर ३६ करोड़ रुपये की राशि खर्च की जाएगी। मुख्यमन्त्री जी ने आगे बताया कि उनकी सरकार ने सिर पर मैला ढोने की प्रथा को समाप्त करने की एक योजना पहले ही लागू कर दी है।

४. अर्द्ध-आवासीय स्कूलों की स्थापना

प्रो० शेरसिह ने सुझाव दिया कि स्कूलों में अर्द्ध-आवासीय स्कूल बनाये जायें जहां बच्चे खाना अपने घर खाएं और रात्रि को स्कूलों में ही सोएं। उनको देखरेख के लिए ऐसे सेवानिवृत्त अध्यापकों को नियुक्त किया जाये जिनका रिकार्ड अच्छा रहा हो। सरकार आधा वेतन तो सेवानिवृत्तियों को पहले ही देती है। अतः इस योजना से सरकार को कोई घाटा नहीं होगा। अन्य सदस्यों ने इस सुझाव का समर्थन किया।

मुख्यमन्त्री जी ने बताया कि सरकार इस योजना पर विचार करेगी।

ग्राम नांगल (भिवानी) में वेद-प्रचार

दिनांक १-६-९५ से ५-६-९५ तक ग्राम नांगल में महाशय जोखीराम जी आर्य के प्रयत्न से स्वामी परमानन्द जी छोटे बाजा वाले द्वारा वेद-प्रचार किया गया कई घरों में यज्ञ हुआ कई शराबियों ने शराब न पीने की प्रतिज्ञा की तथा तीन लड़कियों सहित कई नवयुवकों ने यज्ञोपवीत लिया। जिन्होंने शराब छोड़ी वे महानुभाव हैं मा. लक्ष्मीचन्द, मनोहरलाल, ईश्वरसिंह पूनिया, रतीराम पायल, वेदपाल, हवासिह, श्री माईचन मिठीवाला आदि खूखार शराबी थे। स्वामी जी के प्रवचनों व भजनों से प्रभावित होकर उपरोक्त शराबियों ने शराब न पीने की प्रतिज्ञा की है। निम्न सज्जनों के घर पारिवारिक यज्ञ किया। श्री हेतराम, मा. ओमप्रकाश, रतीराम, श्री महिपाल आर्य आदि के सत्संग हुआ। सरपंच श्री मानसिंह जी के सहयोग से गांव में अवैध शराब की दुकान भी बन्द करवादी है। गांव में हवन व वेदप्रचार का अच्छा प्रभाव रहा।

अतरसिह आर्य क्रातिकारी सभा उपदेशक

(पृष्ठ ३ का शेष)

का चुनाव अवैध होगा। सार्वदेशिक सभा में जो धांधली चल रही थी उसमें सार्वदेशिक के और आर्यसमाज के नियमों और उपनियमों की धज्जियां ही तो उड़ाई जारही थी। अब आर्यसमाज के दीवानों ने प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार "यथायोग्य" पग उठाकर नवनिर्वाचित प्रधान को सार्वदेशिक सभा के कार्यालय तक पहुंचा दिया जो सार्वदेशिक सभा की नौका को भंवर में से निकालने हेतु सक्षम भी हैं।

आर्यो गैर-आर्यसमाजियों की चालों को समझो जो आर्यसमाज की जड़ों में बड़ी चतुराई से तेल डालने में संलग्न हैं। सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष माननीय जस्टिस महावीरसिंह जी को स्वयमेव हरकत में आने की आवश्यकता है और सार्वदेशिक सभा का सारा कार्य अपने हाथ में लेकर इसे विधिवत् किया जाए।

—चौ० ऋषिपालसिंह एडवोकेट

प्रधान, आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब, (सम्पादक धर्म मर्यादा)

विवाह संस्कार सम्पन्न

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के प्राध्यापक प्रो० नरेशकुमार एम.ए. (द्वय), निवासी शेरपुर खानाजादपुर जि० सहारनपुर सुपुत्र श्री रघुवीरसिंह शास्त्री (वर्तमान पुरोहित आर्यसमाज श्री गंगानगर (राज.) का पाणिग्रहण संस्कार कृषि विश्वविद्यालय पन्तनगर के डा० राजेन्द्र सिंह की सुपुत्री सौ० मधु एम.ए के साथ वैदिक विधि से श्री आचार्य दयानन्द जी शास्त्री हिसार के पौरोहित्य में २७-५-९५ को सम्पन्न हुआ।

इस शुभ अवसर पर आचार्य सत्यप्रिय जी शास्त्री एवं प्रो० डा० प्रमोदकुमार जी ने भी नवदम्पति को दीर्घायु एवं यशस्वी जीवन के लिये मंगल कामना सहित शुभाशीष प्रदान किया।

आवश्यक सूचना

सभी धर्माभिलाषी गोभक्तों को सूचित किया जाता है कि राष्ट्रीय गोशाला घड़ौली में २५ जून १९९५ को होने वाला अखिल भारतीय राष्ट्रीय गोशाला सम्मेलन किन्हीं कारणों से स्थगित कर दिया गया है। पुनः आयोजन होने पर सूचित किया जायेगा।

संचालक
राष्ट्रीय गो० घड़ौली जीन्द, हरयाणा

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

शिक्षा, ब्रह्मचर्य, राष्ट्ररक्षा, विद्यार्थी के कर्त्तव्य, क्रांतिकारियों का इतिहास, महर्षि दयानन्द जी के जीवन एवं कार्य, आर्यसमाज का इतिहास, धर्म क्या है, वेदों का महत्त्व, आर्यसमाज क्या है क्या चाहता है तथा शराबबन्दी पर विस्तार से विचार रखे। पं० विश्वामित्र के के अतिरिक्त महाशय दीपचन्द, महाशय हरिचन्द आर्य (खेरा) श्री आजादसिंह जी छीतर के शिक्षाप्रद प्रेरणादायक समाज सुधार के भजन हुये।

१०-६-९५ को सायं ६ बजे ग्राम नलवा में जुलूस निकला गया। सबसे आगे विद्वान् संन्यासियों का काफला उसके बाद ब्र० रणदीपसिंह आर्य हाथ में ओ३म् ध्वज लेकर चल रहे थे। पीछे-पीछे नवयुवक लाठी लपेटकर जोश के साथ आर्यसमाज अमर रहे, शराबबन्दी के नारे लगाते हुये चल रहे थे। बीच-बीच में अतरसिंह आर्य अपने विचार रखते हुये, ११ जून को शराबबन्दी सम्मेलन में भाग लेने के लिए लोगों से अपील कर रहे थे। गांव के सैकड़ों बच्चे व कुछ सज्जन भी जुलूस में साथ चल रहे थे। दृश्य देखते ही बनता था। जब जुलूस गांव की भिन्न-भिन्न गलियों में गुजर रहा था तो नर नारी मकानों की छत पर चढ़कर बड़े उत्सुकता से देख रहे थे।

११ जून को १० बजे आर्यसमाज मन्दिर में स्वामी वेदानन्द जी महाराज सभा के वरिष्ठ उपप्रधान की अध्यक्षता में शराबबन्दी सम्मेलन हुआ। मंच का संचालन श्री क्रांतिकारी जी ने किया। महात्मा तेजमुनि स्वामी परमानन्द आर्य जी तथा वेदानन्द जी ने अपने विचार रखे। स्वामी वेदानन्द जी ने शराब से होने वाले नुकसान से लोगों को अवगत कराते हुए। देश के शहीदों की भी याद दिलाई, साथ में नवयुवकों से पूर जोर अपील की और कहा कि आर्यसमाज के सम्पर्क में आकर महर्षि दयानन्द जी के अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए मैदान में आओ। बच्चों ने सुन्दर व्यायाम प्रदर्शन भी करके दिखाया, नर-नारियों ने व्यायाम प्रदर्शन बारे बच्चों की प्रशंसा की, स्वामी जी ने ५१ नवयुवकों को प्रमाण-पत्र व वैदिक साहित्य आर्यसमाज नलवा की ओर से वितरित किया। रात्रि में गांव में खुला अधिवेशन हुआ। शिविर में भोजन व्यवस्था व आवास व्यवस्था का उत्तम प्रबन्ध था। शिविर में श्रीमती रामावती आर्या, मिश्रा जी, महाशय दीपचन्द, श्री कुलदीपसिंह, पं० बृजलाल (कवारी) आदि का विशेष सहयोग रहा। सभा को ६०० रुपये दान दिया गया।

भलेराम आर्य प्रचार मन्त्री आर्यसमाज नलवा

हरयाणा के गुरुकुलों का इतिहास

हरयाणा के समस्त गुरुकुल के अधिकारियों एवं आचार्यों को सूचित किया जाता है कि हरयाणा के गुरुकुलों का इतिहास नामक पुस्तक का लेखन "डा० रणजीतसिंह" प्रिंसिपल द्वारा किया जा रहा है अतः अपने-अपने गुरुकुलों का विस्तृत विवरण लिखकर निम्न पते पर भेजने का कष्ट करें। सभामन्त्री

डा० रणजीतसिंह, प्रिंसिपल (Rtd.)
5c/14 B.P. Lohan children Hospital
N.I.T. Faridabad Haryana

"आवश्यकता है"

कन्या गुरुकुल नरेला के लिए एक सुयोग्य आर्य विचारों के वानप्रस्थी रिटायर्ड सैनिक/सिविलियन प्रबन्धक की आवश्यकता है। दिन-रात गुरुकुल के प्रांगण में निवास की शर्त अनिवार्य है। वेतन योग्यतानुसार। साक्षात्कार हेतु दिनांक १-७-९५ को कन्या गुरुकुल के प्रांगण में प्रातः १० बजे पहुंचें।

प्रि० होशियारसिंह कार्यकारी प्रधान

प्रवेश

पूर्ण आवासीय विद्यालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार (उ०प्र०)

गंगातट-सुरम्य वातावरण-सर्वांगीण विकास-सुविधाएं-विशाल-परिसर-एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यक्रम। कक्षा चार से अनिवार्य कम्प्यूटर शिक्षा।

प्रवेश परीक्षा १ जुलाई से १५ जुलाई तक। प्रातः १० बजे से।

विषय—हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, संस्कृत, विज्ञान।

पंजीकरण फार्म+नियमावली मूल्य ५०/- रु० "सहायक मुख्याधिष्ठाता" गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार को भेजें।

पंजीकरण फार्म पहुंचने की अन्तिम तिथि २८ जून १९९५।

महेन्द्रकुमार
सहायक मुख्याधिष्ठाता
फोन नं० ०१३३/४२६४४७

लू का समय पर उपचार कराना जरूरी

डा. आर. एम. शर्मा

गर्मियों की शुरुआत के साथ ही दिनभर तेज गर्दभरी हवाएं चलने लगती हैं। ऐसे मौसम में दिन में, खासतौर पर दोपहर में धूप में अधिक घूमने-फिरने, जलती भट्टी या चूल्हे के पास बैठने या प्यास लगने पर पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं पीने के कारण अक्सर लू लग जाना सामान्य बात है। यदि रोगी का उचित उपचार समय पर न हो तो लू लगने के कारण रोगी की मृत्यु भी हो सकती हैं।

प्रश्न—लू लगना आखिर होता क्या है ?

गर्मियों में शरीर से अधिक मात्रा मे पसीना निकलता है, जिससे शरीर में पानी तथा सोडियम आयन नामक क्षारीय तत्व का अभाव हो जाता है। पसीने के द्वारा लवण शरीर से बाहर निकल जाने से खून मे लवणों की मात्रा कम हो जाती है। वातावरण मे तापमान के बढने से जब ताप नियंत्रण की शरीर की स्वाभाविक क्षमता समाप्त होने लगती है, तब रक्त संचार की गति कम हो जाने से रक्तचाप गिरने लगता है। शरीर को इस अव्यवस्थित स्थिति को ही लू लगना कहा जाता है।

प्रश्न—लू लगने के लक्षण क्या हैं ?

लू लगने पर रोगी का मुह लाल हो जाता है, भयंकर सिरदर्द होता है, त्वचा में खिचाव होने लगता है। लू लगने पर शरीर का तापमान अचानक बहुत बढ़ जाता है। बुखार तो १०४ से १०७ डिग्री फारेनहाइट तक पहुंच जाता है। गले में खुश्की आना, भूख न लगना, चक्कर आना, कै (उलटी) होना, पीले रंग का पेशाब आना आदि लक्षण प्रकट करते है कि रोगी को लू लग गई है। लू के अधिक प्रकोप से रोगी कई मासपेशियों मे ऐंठन अनुभव करता है। कई बार तो बेहोशी भी आ जाती है। गर्मी के मौसम मे सूर्य की तेज किरणों के कारण जल ज्यादा सूखता है। प्राणियों का बल घटता है और वायु बढ़ने लगती है। इसलिए गर्मी के मौसम में स्वस्थ बने रहने के लिए कई सावधानियां बरतनी जरूरी हो जाती है। गर्मियों में पाचन शक्ति कमजोर हो जाती है। स्नायुमंडल भी कमजोर हो जाता है, शरीर की उष्णता यानी गर्मी अधिक रहती है। आजकल आहार विहार में सावधानियां रखनी चाहिए। दिन का भोजन हलका, सुपाच्य होना चाहिए। भोजन में शीतल प्रभाव वाली वस्तुएं ज्यादा होनी चाहिएं। इन दिनों व्यायाम की अधिकता की आवश्यकता नहीं होती है। स्नान सुविधा होने पर

स्वास्थ्य साक्षरता

दिन में दो या तीन बार तक करना चाहिए। गर्मी शुरू होते ही अधिक से अधिक पानी पीना शुरू कर देना चाहिए। भोजन में शीतल पेय जैसे दही, छाछ आदि भी लेने चाहिए। भोजन के साथ प्याज का सेवन अनिवार्य रूप से करें। यदि आप किसी अन्य रोग से पीड़ित न हों, तो भोजन में नमक की मात्रा भी कुछ बढ़ा दें क्योंकि गर्मी में पसीने के रूप में शरीर से पानी व नमक बाहर निकलता है। शारीरिक संतुलन को बनाए रखने के लिए इसकी पूर्ति बेहद जरूरी है। इसके अलावा धूप में चलते समय छाते का उपयोग करें अथवा गर्मी से बचाव के लिए सिर पर सूती कपड़ा ढक दें। जेब मे एक प्याज रखकर चलने से भी लू से बचाव होता है। एक साथ बहुत दूरी तक न जाएं और बीच मे छायादार स्थान पर रुककर कुछ देर विश्राम कर ले। धूप मे कहीं जाते समय अच्छी किस्म के धूप के चश्में का उपयोग करें। किसी भी किस्म का शराब का प्रयोग बिल्कुल न करें।

दही का मट्ठा या भूने हुए कच्चे आमों का शर्बत इन दिनों सपरिवार नियमित रूप से ले। सलाद में पुदीना, कच्चे प्याज, हरी पत्तेदार सब्जियां आदि काम में लें। सुबह शाम दोनों समय शीतल जल से स्नान करें। प्रात.काल के नाश्ते मे इन दिनों ठंडाई या कच्चे दूध या दही की एक गिलास लस्सी अथवा गुलाब, फालसा, सन्तरा, अनार, खस, चन्दन या शंखपुष्पी का शर्बत पीना लाभदायक रहता है। यदि साथ में आंवले का मुरब्बा खा लिया जाए तो सोने में सुहागा। गर्मी के मौसम मे चाय, काफी से जरूर दूर रहें। यदि पीनी ही हो तो कम मात्रा में और थोड़ी मात्रा में और थोड़ी चाय पत्ती डालकर पिएं।

आयुर्वेद के ग्रथों में तो गर्मी के मौसम में गरमागरम दूध पीने को जगह उसे ठंडा करके पीना बताया गया है। शर्बत के बारे मे इस बात का ध्यान रखें कि यदि आपका शर्बत बाजार से आया है तो हो सकता है उसे फलों से न बनाकर उन फलो का एसेंस डालकर तैयार कर लिया गया हो। ऐसे शर्बत भला क्या लाभ करेंगे अतः उचित तो यही रहेगा कि जहा तक हो सके शर्बत घर मे ही इकट्ठा बनाकर बोतलों मे भरकर रख दे और गर्मियों भर इनका सेवन ठीक तरह से करते रहे। नारियल पानी, गन्ने का रस, नीबू की शिकंजी भी उत्तम शीतल पेय हैं। दोपहर में चावल (भात), पतली दाल या पतली कडी, दही या छाछ के साथ लेना ठीक रहेगा। यदि नित्य चावल न खाए जाएं तो रोटियां के भोजन में इमली के पानी का सेवन करें। यह लू से काफी बचाव करता है।

गर्मियों में दिन काफी बड़े होते हैं। लगभग चार-पांच बजे जब कुछ भूख सी लगने लगती है उस समय आम, तरबूज, खरबूजा, ककड़ी, फालसा, जामुन, लीची, अनानास या दूध गुलकंद अथवा पेठे की मिठाई का सेवन करना ठीक रहता है। यह शीतल होने के कारण शरीर की अतिरिक्त गर्मी को दूर कर देता है, इससे प्यास, उल्टी, चक्कर आना, नकसीर फूटना, गर्मी का सिरदर्द, आंखों की जलन होना आदि शिकायते दूर होती है। सत्तू का सेवन भी ग्रीष्म ऋतु मे लाभकारी रहता है, लेकिन रात में इसका सेवन नहीं करें तथा अधिक गाढा भी न लें। इस समय यदि ये चीजे उपलब्ध न हों तो भूने चने या जौ खाकर ऊपर से पानी पी लेना भी ठीक रहेगा। रात का भोजन हल्का और सुपाच्य होना चाहिए। इस दृष्टि से पुराने गेहूं की रोटी, मूग की दाल, लौकी, तोरई, टिंडा, परमल में से किसी भी सब्जी, कच्चे आम का पन्ना, प्याज, पोदीना या धनिया की चटनी खानी चाहिए। प्याज को सलाद के रूप में, चटनी में भूभल में भूनकर खाया जा सकता है।

प्रश्न—गर्मियो में व्यायाम करने के लिए आपकी क्या हिदायत है ?

सुबह शौचादि से निवृत्त होकर खुले वातावरण में टहलने निकल जाए, टहलते समय यदि दो या अधिक व्यक्ति हो तो भी बोलने से बचें, बल्कि प्रकृति की मनोहरी छटा को देखते हुए टहले, शरीर पर इस समय हल्के सूती वस्त्र होने चाहिए ताकि प्रातःकाल की साफ और स्वच्छ वायु पूरे शरीर को अच्छी तरह से लगती रहे। यदि पार्क आदि में हरी घास है तो उस पर नंगे पांव घूमते रहें इससे शरीर को शीतलता मिलेगी तथा अन्य लाभों के अलावा नेत्रों को भी फायदा पहुंचेगा। बाद में घर आकर स्नान की तैयारी कीजिए। ताजे शीतल जल से एक खुरदरे तौलिए से शरीर को रगड़ते हुए स्नान करें। स्नान की शुरुआत मस्तक से करें यानि पानी का पहला मग (या लोटा) मस्तक पर डाले। गर्मियो में व्यायाम का निषेध है। व्यायाम हो करो अन्य ऐसे कार्य भी जिससे शरीर में स्फूर्ति बनी रहे।

दरअसल यदि ज्यादा मेहनत वाले कार्य इन दिनों किये जाएंगे तो अधिक श्रम से शरीर में गर्मी बढ़ेगी और उससे नाडियों मे खून का प्रवाह तेज हो जाएगा। यह स्थिति रक्तचाप और मधुमेह के रोगियों के लिए तो बहुत खराब हो सकती है। इससे दिन को मासपेशियां थक जाती हैं और दिल में कमजोरी प्रतीत होने लगती है।

प्रकृति ने मौसम ऋतुएं प्राणियों के हित के लिए ही बनाई है अतः गर्मी के मौसम में गर्मी के सहज प्राकृतिक प्रभाव से एकदम बचना भी हितकर नहीं है। हर समय कूलर, एयर कंडीशनर मे रहना भी स्वास्थ्य के लिए हितकारी नहीं होता अतः मौसम का सहज प्रभाव तो शरीर पर पड़ना चाहिए।

दैनिक जागरण से साभार

शराब बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इनसे दूर रहें।

पाप क्यों बढ़ रहे हैं ?

आपने देखा या सुना होगा पहले जब रेलगाड़ियां या बसे बहुत कम थी तो यात्रियों की संख्या भी कम थी। अब बेशुमार वाहन चलने चलने के बाद भी यात्री को बैठने के लिए सीट नही मिलती अर्थात् जितने वाहन बढ़ गए हैं उससे अधिक यात्री होगये हैं। ऐसे ही आश्चर्य होता है जितने डाक्टर होरहे हैं उससे अधिक रोग और रोगी पैदा होरहे हैं। जितने वकील होगये हैं उतने ही लड़ाई झगड़े बढ रहे हैं। ठीक यही हालत धर्म या चरित्र के क्षेत्र मे होरही है। आज जितने मुल्ला मौलवी पादरी और पंडित पुजारी बढते जारहे हैं उतने ही गलत काम (पाप) होरहे हैं। नित्यप्रति मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारे और चर्च नये-नये बनते खुलते जारहे हैं जिनको बनाने का उद्देश्य जनता को इन्सानियत का पाठ पढाकर राहत पहुंचाना है परन्तु आज इन धार्मिक स्थानों का दुरुपयोग होरहा है और इनमें कुकर्म होरहे हैं।

हम प्रतिदिन देखते हैं, सुनते हैं और समाचारपत्रों में पढ़ते हैं कितनी दर्दनाक और शर्मनाक घटनाएं होरही हैं। कही लता और सुमन जल रही है तो कहीं किसी के मासूम बच्चे का अपहरण करके देवी या माता की भेंट चढाया जारहा है। हेराफेरी बेईमानी इतनी होरही है कि दूध और घी बेचनेवाला दावे और शर्त के बावजूद मिलावट कर रहा है। पग-पग पर झूठ बोलना और चोरी करना तो जैसे आम बात होगई है। माताएं बहनें बलात्कार का शिकार होरही हैं। इनके इलावा असंख्य पाप होरहे हैं। इसका कारण है लोगों की बुद्धि भ्रष्ट होगई है। भौतिकता और अज्ञानता के अन्धकार में भटक रहे हैं।

बुद्धि भ्रष्ट होने का कारण हैं "प्रदूषण"। हम प्रदूषित जल, वायु और अन्न का सेवन कर रहे हैं। प्रदूषण इतना बढ गया है कि हमारा दम घुटने लगा है। आज घर या बाहर कही पर देख लो, मनुष्य का खानपान विष और तमोगुण से भरा हुआ है। मार्किट मे सरेआम मुर्गे और बकरे काटकर लटका रखे हैं। अण्डे तो फलफ्रूट की तरह बिक रहे हैं। चौराहे पर शराब की दुकानें सजी हुई हैं। इंसान का बच्चा मीट मच्छली अण्डे खाकर इन्सानियत (मानवता) की बात सोच सकता है? शराब पीकर अन्धा हो जाता है और इसी अन्धेपन में अपनी मां-बहन की इज्जत लूटने लगता है।

आज भोजन को सुधारने के लिये प्रचण्ड प्रचार की आवश्यकता है। आर्यसमाज को अपने वार्षिक उत्सवों पर भोजन सुधारने के लिए सम्मेलन और सेमीनार करने चाहियें। ऋषि लंगर में जो अन्न लग रहा है वह किसी पापी के पाप की कमाई का तो नहीं है। यदि ऐसा होगा तो सब सुने हुए भजन उपदेशों पर पानी फिर जाएगा और प्रचार का प्रभाव नही रहेगा। यदि हमारा भोजन सुधर गया तो विचार सुधर जायेंगे और विचार सुधर गए तो चरित्र का निर्माण हो जाएगा और पापों का जन्म नहीं होगा।

लेखक—देवराज आर्यमित्र
आदर्श नगर (डो), मलेरना रोड
बल्लबगढ़—१२१००४

योग्य पुरोहित चाहिये

आर्यसमाज सैक्टर २२ए चण्डीगढ़ को एक प्रौढ़, अनुभवी, प्रचार-कार्य में दक्ष तथा वैदिक रीति से संस्कार कराने में निपुण, न्यूनतम शास्त्री पास, सात्विक वृत्ति वाले पुरोहित की आवश्यकता है। परिवार के लिए निवास स्थान एवं बच्चों के लिए दसवीं कक्षा तक शिक्षा निःशुल्क। दक्षिणा/वेतन योग्यता अनुसार। कृपया अपनी आयु, अनुभव आदि के पूर्ण विवरण सहित मिलें अथवा लिखें।

—महावीर शर्मा मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक फोन : (७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ४०७२२) से प्रकाशित।

"यज्ञ और उसके मौलिक सिद्धान्त"

प्रतापसिंह शास्त्री, पत्रकार

गतांक से आगे

९. यज्ञ का नौवां मौलिक सिद्धान्त है—चार मर्यादाएं। "ओं अदिते अनुमन्यस्व" आदि चार मन्त्रों में (जलसेचन क्रिया) अग्नि पर चार अंकुश बताये गये हैं अर्थात् जब अग्नि इन चार मर्यादाओं का ध्यान रखे बिना जलती है तब वह उपकार के स्थान में अपकार करती है और स्वयं नष्ट हो जाती है इसलिए कहा गया—हे अदिते तू भी अनुमति दे। अदिति—(न+दिति=अदिति) अखण्ड परमेश्वर, मेरे यज्ञ कर्म का अनुमोदन कर यह मेरा यज्ञ अखण्डितरूप से सम्पन्न होता रहे। पूर्व दिशा में जलसिंचन के सदृश, मैं यज्ञीय पवित्र भावनाओं का प्रचार प्रसार निर्बाधरूप से कर सकूं इस कार्य में मेरी सहायता कीजिए। अदिति का विस्तार अनन्त है इससे व्यावहारिक प्रेरणा लेकर हम अपने जीवन को मर्यादित बनाकर यज्ञीय जीवन बना सकते हैं। प्रकृति अदिति है वह रूप बदल लेती है परन्तु खण्डित नहीं होती। "दो अवखण्डने" धातु से "क्तिन्" प्रत्यय "द्यतिस्यति" इस सूत्र से इकार आदेश दिति, न दिति अदिति। जो खण्डित हो वह दिति जो खण्डित न हो वह अदिति है पृथ्वी अदिति है पत्नी अदिति है। इसलिए स्त्रियां धार्मिक विश्वासों में स्वभाव से दृढ़ होती हैं। न्यायाधीश अदिति है क्योंकि वह अटल है। गृहस्थ एक यज्ञ है उसकी भी ये मर्यादाएं हैं–राष्ट्रसेवा, जनसेवा, संगठन, शिक्षा संस्था, प्रकाश, गृहस्थाश्रम, देशभक्ति, परोपकार, स्वतन्त्रता-संग्राम, कृषि, व्यापार आदि ये सब कार्य यज्ञ के ही रूप हैं। यज्ञ में यदि पति-पत्नी के सम्बन्ध के अर्थों का अभिप्राय लिया जाये तो पुरुष अग्नि है और पत्नी अदिति। तब हम इस प्रथम मन्त्र का अर्थ यह कर सकते हैं—पति को चाहिए गृहस्थाश्रम में कार्यों के लिए जरूरी द्रव्य (सामग्री) मसाला, धनादि की व्यवस्था करते समय पत्नी की अनुमति लिये बिना कार्य न करे। संगठन में यजमान कार्यकर्ताओं की सलाह लेकर कार्य करे कार्यकर्ताओं की रजामन्दी के बिना कार्य न करे। राष्ट्र का नेता भी इसी प्रकार प्रजा के प्रतिनिधियों की सलाह लेकर, प्रजाजन की राय जानकर कार्य करे अर्थात् इन मर्यादाओं का पालन करे। यदि मानव जीवन यज्ञ है तो अखण्ड परमात्मा के गुणों को धारण करते हुए मर्यादाओं का पालन करे।

९ (क) "ओं अनुमते अनुमन्यस्व" हे अनुमते, तू भी अनुमति दे अथवा वृद्धजनों, बुजुर्गों की अनुमति सलाह परामर्श लेकर कार्य करे अथवा हे सर्वरक्षक परमात्मा यज्ञीय एवं ईश्वरीय संस्कारों के अनुकूल बुद्धि बनाने में समर्थ परमात्मन् मेरे इस यज्ञकर्म का अनुकूलता से अनुमोदन कर अर्थात् यह यज्ञानुष्ठान आपकी कृपा से सम्पन्न होता रहे अथवा पश्चिम दिशा में जलसिंचन के सदृश मैं यज्ञीय पवित्र भावनाओं का प्रचार-प्रसार आपकी कृपा से कर सकूं, इस कार्य में मेरी सहायता कीजिए।

"ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व" सरस्वती अर्थात् ज्ञानवाणी की सलाह बिना कार्य न करे। पुरुष को अग्नि पर ये तीन नियन्त्रण हैं, अंकुश हैं फिर सबसे अन्त में हर एक कार्य करने से पहले अपने आपको परमपिता परमात्मा के अर्पण करे। अर्थात् हे सर्वरक्षक प्रशस्त ज्ञानस्वरूप एवं ज्ञानदाता (वेद ईश्वरीय ज्ञान है) परमेश्वर मेरे इस यज्ञकर्म का अनुमोदन कर अर्थात् आप द्वारा प्रदत्त उत्तम बुद्धि से मेरा यह यज्ञानुष्ठान सम्यक् विधि से सम्पन्न होता रहे अथवा उत्तर दिशा में मैं जलसिंचन के सदृश यज्ञीय ज्ञान का प्रचार-प्रसार करता रहूं। इस कार्य में मेरी सहायता कीजिए। वस्तुत: सामग्री भी हो, कार्यकर्ताओं में उत्साह भी हो, किन्तु कार्य करने की पद्धति का ज्ञान प्राप्त किए बिना जो कार्य आरम्भ करते हैं वे सरस्वती से बिना पूछे कार्य आरम्भ कर देते हैं।

"ओं देव सवित: प्रसुव यज्ञं" आदि अर्थात् जो कोई सविता देव अर्थात् परमात्मा अथवा उसके समान गुण रखनेवाले धर्मात्मा शासक की अनुमति के बिना कार्य प्रारम्भ कर देते हैं। उनमें सामग्री, उत्साह तथा विद्या होने पर भी उनका सारा कार्य श्मशान में शृंगार के समान निष्फल है। यह अग्नि के चार अंकुश हैं इसीलिए ये मन्त्र अग्नि को घेरनेवाले जल के साथ पढ़े जाते हैं। विज्ञान की दृष्टि से इन मन्त्रों में वर्षा (वृष्टियज्ञ) का भी विधान निहित है जिसकी व्याख्या विद्वानों ने की है।

१० यज्ञ का दसवां मौलिक सिद्धान्त है—दृढ़संकल्प (मजबूत इरादा) अंग्रेजी भाषा में इसे (I will do it) मैं इस कार्य को अवश्य करूंगा। ऐसा कहते हैं। यजमान का आसन भी तो संकल्प का आसन है यज्ञ में प्रातःकालीन आहुतियां और सायंकालीन आहुतियां भी संकल्प द्वारा मानवजीवन को उन्नत करनेवाली अग्निहोत्र की मुख्य आहुतियां हैं। परिवार में पुरुष अग्नि है और अग्नित्व का आदर्श सूर्य है संकल्पाग्नि को चमकाते-चमकाते सूर्य की अवस्था तक पहुंचा देना है। जिस परिवार के पुरुष सूर्य बनते हैं वहां स्त्रियां भी अपनी अग्नि को सूर्य की अवस्था तक पहुँचा देती हैं। शतपथ ब्राह्मण में सूर्य तथा अग्नि को वीर्य का देवता कहा गया है। अतः यह ज्ञानाग्नि को पराकाष्ठा तक पहुंचानेवाली सूर्य अवस्था तक ले जानेवाली आहुतियां ही देवयज्ञ की मुख्य आहुतियां कही गई हैं। सूर्य मनुष्य को अनेक प्रेरणाएं देता है सूर्य प्रतिदिन निकलता है कभी नागा नहीं होता, कभी अवकाश नहीं लेता मनुष्य को भी कर्तव्य पालन में कभी आलस्य नहीं करना चाहिए सूर्य प्रकाश देता है मनुष्य को चाहिए वह ज्ञान का प्रकाश फैलाए सूर्य गन्दे कीटाणुओं को अपनी रोशनी (किरणों) से नष्ट करता है मनुष्य का भी कर्तव्य है समाजविरोधी, राष्ट्रविरोधी, राष्ट्रद्रोही, असामाजिक तत्वों को न पनपने दे। परमपिता परमेश्वर भी सूर्य द्वारा एक यज्ञ ही कर रहे हैं सूर्य के प्रकाश से वनस्पति, जगत्, अन्न, धन आदि की उत्पत्ति होती है इसीलिए शतपथ में सूर्य को अग्निहोत्र कहा गया है यथा—"सूर्यो ह वा अग्निहोत्रम्" अर्थात् सूर्य अग्निहोत्र है। "ओ३म् सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा" अर्थात् इस अग्निहोत्र के मन्त्र में ज्योति शब्द से वीर्य की ज्ञानवर्धक शक्ति का वर्णन किया है इन मन्त्रों में गृहस्थ लोगों को परस्पर के सद्व्यवहार की भी प्रेरणा दी गई है। गृहस्थ कहते हैं सूर्य का प्रकाश और उषा का जोड़ा प्रातःकाल हमारे घर में दर्शन दे और हमें उपदेश दे जावे। किसी ने कितना सुन्दर कहा है :—

> "रात के अन्तिम पहर में इक दौलत लुटती रहती है।
> जो जागता है सो पाता है जो सोता है सो खोता है॥"

प्रातःकाल उठना स्वास्थ्य के लिए परम आवश्यक है जीवन में उन्नति करनेवाले महापुरुष प्रातःकाल ब्रह्मवेला में उठते थे। महर्षि दयानन्द २-३० बजे उठकर भ्रमण व योगाभ्यास करते थे। पत्नी का धर्म है कि प्रातः प्रफुल्ल हृदय से हंसते हुई पति को कार्य पर (ड्यूटी) भेजे। उसका चेहरा उषा की भांति खिल रहा हो और उसके कार्य में बाधक न हो। इसी प्रकार सायंकाल के यज्ञ के मन्त्रों में संकल्प को अग्नि कहा गया है। यथा—"ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा" अर्थात् जहां संकल्पाग्नि जल रहा है वहीं ज्ञान की ज्योति है जहां ज्ञान की ज्योति है, वहीं संकल्पाग्नि है, क्या ठीक कहा है (स्वाहा) संसार में प्रत्येक संगठन के लिए दृढ़संकल्प आवश्यक है। उसकी प्रेरणा यज्ञ के प्रातःकालीन व सायंकालीन मन्त्रों में दी गई।

११ यज्ञ का ग्यारहवां मौलिक सिद्धान्त है—ईश्वर विश्वास। यह प्रार्थना आहुति द्वारा प्रकट किया जाता है। ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव" यह महर्षि दयानन्द जी का प्रियमन्त्र है महर्षि ने अपने वेदभाष्य में प्रत्येक अध्याय के प्रारम्भ में इसी मन्त्र से परमात्मा से सहायता की प्रार्थना की है। प्रत्येक मत-मतान्तरवाला मनुष्य इस मन्त्र से प्रार्थना कर सकता है क्योंकि सभी दुरित से बचना चाहते हैं और भद्र को ग्रहण करना चाहते हैं। प्रार्थना का अर्थ है—प्र+अर्थना=तेजी से, विशेष उत्कंठा से, विशेष इच्छा से, परमात्मा को आवाज से याचना करना, मांगना ही प्रार्थना का अर्थ है। प्रार्थी उसी वस्तु को मांगता है जिसका उसे मूल्य ज्ञात है [illegible]

क्रमशः

भ्रष्टों की भ्रष्ट करतूत

आर्यों की सर्वोपरि संस्था सार्वदेशिक सभा पर कुछ स्वार्थी तत्त्वों द्वारा कब्जे की कोशिश नाकाम

२७ मई ९५ को हैदराबाद में सार्वदेशिक सभा का चुनाव करवाने का मन बनाते हुए श्री वन्देमातरम् और उनके साथियों मरवाह आदि ने यह सपने में भी न सोचा होगा कि उनकी टेढ़ी चाल नाकाम हो जायेगी। इसके लिए इन्होंने आर्यों की सार्वदेशिक सभा जैसी शिरोमणि संस्था का मान व नियम भी मिट्टी में मिलाने में कोई कसर न रख छोड़ी। पहले सभी सदस्यों को पत्र भेजा कि २७ मई को चुनाव कार्यक्रम "भारतीय विद्या भवन हैदराबाद" में होगा फिर कुछ दिनों के बाद कुछ ही लोगों के पास एक पत्र लिखा जिसमें सार्वदेशिक के त्रैवार्षिक अधिवेशन का तो कोई जिक्र नहीं था, पर हां (कर्नाटक, केरल, आन्ध्रप्रदेश) के क्षेत्रिय अधिवेशन में "रामकोट स्थित जैन समाज के कच्छी भवन" में २८ मई को होगा, की खबर थी। इनकी कुत्सित मनसा का पता तो तभी लग गया था परन्तु इतनी बड़ी संस्था का कुछ स्वार्थी तत्त्व इस प्रकार मान घटायेंगे एवं दुरुपयोग करेंगे यह कोई सोच भी नहीं सकता था।

आर्य सत्याग्रह हैदराबाद की महत्ता एवं यहां के आर्यों द्वारा किये कार्यों से सारा इतिहास प्रसिद्ध है, पर वहां जाकर जो दृश्य देखने को मिला उसे देखकर दिल बैठ गया। उस दिन हैदराबाद में चर्चा थी श्री वन्देमातरम् द्वारा गुरुकुल घटकेश्वर (हैदराबाद) की सम्पत्ति हड़पने की, वहां लोग हैरान थे कि इतना बड़ा हैदराबाद में अधिवेशन हो रहा है और वहां किसी आर्यसमाज मन्दिर तक में खबर नहीं दी गई, न ही श्री वन्देमातरम् द्वारा निर्दिष्ट विद्या भवन में कोई व्यक्ति आर्यसमाज से सम्बन्धित था जो भटक कर पहुंचे लोगों को सही स्थान बता सके। परन्तु यह सारी थकान व परेशानी भी सही जा सकती थी एवं समाज के संगठन में किया संघर्षश्रम मानकर मन को समझा लेते। मगर श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव, श्री सोमनाथ मरवाह, श्री सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा किये गये नीच-अनार्य व्यवहार को न देखा होता, नीचता की भी सीमा हो सकती है, परन्तु इन लोगों ने जो दृश्य अपने कुछ साथियों के साथ मिलकर उपस्थित किये वे हद से भी गिरे हुये थे। तब उपस्थित सभी प्रतिनिधियों का सिर शर्म से झुक गया, जब कार्यक्रम में तथाकथित प्रधान श्री वन्देमातरम् ने मंच पर पड़ी एक फूल माला स्वयं पहन ली और फोटो ग्राफर को कहा कि— मेरा चित्र खींचो। मेरे समर्थक मेरी जय बोलो। संक्षिप्त में सिलसिलेवार घटनाक्रम आपके सामने रख रहा हूं परन्तु यह सोचकर भी लज्जा का अनुभव हो रहा है कि इन तथाकथितों ने जो नीच हरकत की है उसे कैसे लिखूं?

१) मंच पर श्री मरवाह, एडवोकेट अश्वनीकुमार, कैप्टन देवरतन, प्रो० शेरसिंह, आदि बैठे थे कि इस वन्देमातरम् एवं मरवाह व सच्चिदानन्द के कहने पर चौ० लक्ष्मीदत्त दीवान हाल के सेवक की नीचता का यह दुष्कृत्य इतना निन्दनीय है कि उपस्थित सभी सभ्य प्रतिनिधि हैरान हो गये। जब अधिकतर प्रतिनिधियों ने स्वामी विद्यानन्द जी को अध्यक्ष चुना तब इस लक्ष्मीदत्त (चौधरियों के नाम पर धब्बे) ने पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी को धक्का मारकर नीचे गिराने की कोशिश की।

२) एकाएक श्री सच्चिदानन्द शास्त्री उठे और कहा कि प्रधान पद पर श्री वन्देमातरम् का चुनाव कर लिया गया है। इसी समय इन द्वारा बुलाये गये लगभग १५० शराबी गुण्डे सभा स्थल में घुस कर वरिष्ठ आर्य संन्यासियों एवं उपस्थित प्रतिनिधियों को गाली देने लगे यदि उपस्थित प्रतिनिधियों ने एक साथ डटकर इसका विरोध नहीं किया होता तो वे पता नहीं क्या अनहोनी करते भगवान् जाने।

३) यह देखकर हैरानी हुई कि कान्तिकुमार कोटकर इन गुण्डों को कह रहा था कि अगर कोई इनका (वन्देमातरम्, मरवाह, सच्चिदानन्द का) विरोध करे तो उसे नीचे फेंक दो। स्वयं सोमनाथ मरवाह ने मंच से यह घोषणा की कि "इनका बाप भी हस्ताक्षर हमारे पक्ष में करेगा" सच्चिदानन्द सभी प्रतिनिधियों से अपने पक्ष में प्रतिनिधियों से हस्ताक्षर करवाना चाहते थे।

४) जब आर्य संन्यासियों ने एक साथ बैठकर शान्ति से इस कार्य को पूर्ण करने की मांग की तब श्री सच्चिदानन्द जी ने मंच से माईक से यह घोषणा की कि आज वही होगा हम जो चाहेंगे। वन्देमातरम् प्रधान पद के उम्मीदवार होते हुए भी चुनाव की अध्यक्षता स्वयं करना चाहते थे। इसका प्रतिनिधियों ने विरोध किया।

५) आर्यसमाज के इतिहास में यह कभी सोचा भी नहीं जा सकता था कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव में शराब पीकर धींगा मस्ती करते लोगों का प्रभुत्व होगा और श्री वन्देमातरम् ऐसे लोगों को मंच पर बुलाकर दिशा निर्देश देंगे। इन शराबी गुण्डों को प्रतिनिधियों के बल्ले दे रखे थे।

उस दिन एक तरफ जहां इन लोगों की गुण्डागर्दी थी, वहीं दूसरी तरफ आर्यसमाज के तपोधन सारा जीवन आर्यसमाज के लिए लगाने वाले श्री स्वामी ओमानन्द जी (हरयाणा), श्री स्वामी धर्मानन्द जी (उड़ीसा), श्री स्वामी विद्यानन्द जी, श्री स्वामी सुमेधानन्द जी (राजस्थान) आर्य नेता प्रो. शेरसिंह जी, युवारत्न कै० देवरत्न आर्य (बम्बई) प्रो धर्मवीर जी (अजमेर) श्री विद्यासागर शास्त्री (प्रधान राजस्थान सभा) स्वामी व्रतानन्द जी (आमसेना) आदि अनेक साधु-सन्त एवं अन्य प्रतिनिधि इस प्रयत्न में लगे रहे कि किसी प्रकार यह संकट आर्यसमाज के भाग्याकाश से टल जाये। परन्तु जहां असुरों का प्रभुत्व हो ज्येष्ठों की कौन सुनता था?

सभा स्थल पर स्थिति उस समय काफी विकट हो जाती थी जब इनके शराबी गुण्डे साधुओं पर झपटते थे। पद के भूखे श्री वन्देमातरम् ने जब स्वयं माला पहनी और सभा स्थल से उठकर चक्कर लगाने लगे तब उसके ये साथी श्री सच्चिदानन्द एवं श्री सोमनाथ भी इसके साथ नहीं थे। कुछ केवल शराबी गुण्डे इनका साथ दे रहे थे। मंच पर इन्हीं दुष्टों का प्रभुत्व रहा। इन्होंने निर्वाचनाधिकारी श्री कै० देवरत्न आर्य एवं आर्यनेता प्रो० शेरसिंह जी को भी धक्का मारकर गिराने का यत्न किया। उत्कल आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द जी ने जब मंच पर पहुंच कर इनसे शांति की अपील करनी चाही तब पंजाब के अनार्य वकील अश्विनी ने माईक छीन ली। जो ऐसे अवसर का सामना कर पाते ऐसा युवाओं का सर्वथा अभाव था, क्योंकि ये साधु-सन्त वहां धर्मसंसद समझकर गये थे जबकि आयोजकों ने इसे कब्जा करने का सुनियोजित कार्यक्रम मानकर सारी व्यवस्था कर रखी थी। यह जानकर हैरानी हुई कि इस श्री वन्दे मातरम् के गिरोह ने २७ मई को १२ बजे दोपहर को ही प्रेस को चुनाव समाचार अपने पक्ष में जारी कर दिया था जब कि चुनाव हेतु "साधारण सभा" की शुरुआत ही २ बजे शुरु हुई थी।

आर्यसमाज की रक्षा करनेवाले आर्यजनो! दयानन्द एवं वैदिक धर्म के प्रति थोड़ीसी भी श्रद्धा रखनेवालो! अन्याय, अधर्म, असत्य, अत्याचार के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द करने का साहस रखनेवालों के सामने यह सम्पूर्ण घटनाक्रम का संक्षिप्त दृश्य है जो कुछ वहां हुआ उसे देखकर जो भद्रजन यह सोचकर निश्चिन्त हो जायेंगे कि "हमें क्या मतलब है" वह राष्ट्रकवि दिनकर के वचन याद रखें—

"जो तटस्थ हैं वक्त लिखेगा उनका भी अपराध"

आज प्रत्येक आर्यजन का हम आह्वान करते हैं कि इन वैदिक संस्कृति के शत्रु, भ्रष्ट, स्वार्थी, आर्यसमाज की सम्पत्ति हड़पनेवाले, पदलोलुपता में अन्धों को एकजुट होकर ऐसा करारा जवाब दें कि ये

(शेष पृष्ठ ५ पर)

गुरुकुलीय शिक्षाप्रणाली आज उपादेय है या नहीं

प्रियम्वदा शास्त्रिकी, नजीबाबाद

इसमें कोई दो राय नहीं कि अनेक उपाधियों से समलङ्कृत और विभिन्न राजकीय अराजकीय पदों पर अधिष्ठित आज का प्रबुद्ध वर्ग गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को हेय दृष्टि से ही देखता है। उसकी मानसिकता के अनुसार आज जबकि शिक्षा का इतना आधुनिकीकरण हो चुका है, अच्छी आजीविका पाने के लिए, वैज्ञानिक, चिकित्सक, अभियन्ता बनने के लिये इंग्लिश मीडियम वाले स्कूल अनिवार्यता का रूप धारण कर चुके हैं ऐसी स्थिति में गुरुकुलों में संस्कृत भाषा एवं प्राचीन वेदवेदाङ्ग पढ़ाना बच्चों का भविष्य बरबाद करना है। विगत दिनों दूरदर्शन के दर्शकों को भी 'परख' कार्यक्रम द्वारा यही मानसिकता परोसी गई। गुरुकुल प्रभाताश्रम भोलाझाल मेरठ के कतिपय ब्रह्मचारियों एवं आचार्यवर स्वामी विवेकानन्द जी महाराज का साक्षात्कार लेने के बाद 'परख' कार्यक्रम के आयोजकों ने यह टिप्पणी भी जड़ी "कि ये गुरुकुल में पढने वाले बालक भविष्य में कर्मकाण्ड के पण्डित और संस्कृत अध्यापक के सिवाय कुछ नही बन सकते। फलतः इनका भविष्य अन्धकारमय है"। गुरुकुलों की उपादेयता पर प्रश्न चिह्न लगाने वाले आज के इस तथाकथित शिक्षितसभ्य वर्ग से मैं इस सन्दर्भ में मात्र एक प्रश्न पूछना चाहती हूं कि क्या आप सदृश शिक्षाकोविदों की अपेक्षा हमारे प्राचीन ऋषि महर्षि मूर्ख थे अदूरद्रष्टा थे जो वे "सा विद्या या विमुक्तये" विद्या वही सार्थक है जो ऊंचे पदों पर छात्रों की नियुक्ति करा सके यह मूलमन्त्र अपनी भावी सन्ततियों को देकर नहीं गये? क्या उन्हें विदित नही था कि जीवनयापन के लिये धन-सम्पत्ति आवश्यक ही नहीं परमावश्यक है पुनरपि वे अपने ग्रन्थों में अनेक प्रकार से यही समझाते हुये गये—

"सा विद्या या विमुक्तये" अर्थात् विद्या वही है जो इन्द्रियदोष और संस्कारदोष से उत्पन्न अविद्या का विनाश कर, आत्मा को शुभ संस्कारों से पवित्र कर मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करे। विद्या के इस गहन उद्देश्य को समझने की क्षमता अपना मस्तिष्क सरकार को बेच देनेवाले आधुनिक बुद्धिजीवियों में भी नहीं है। ऐसे लोग वैदिक शिक्षा का मखौल उड़ायें तो आश्चर्य क्या है। 'न वेत्ति यो यस्य गुणप्रकर्षं स तस्य निन्दां सततं करोति' जो व्यक्ति जिस वस्तु के गुणों से अपरिचित होता है वह उसकी निन्दा ही सदा करता है।

इस भौतिकवादी युग में गुरुकुलों की प्राचीर में बैठकर तप करने वाले आचार्य एवं अध्यापकगण अपने पुत्र-पुत्रियों को तपस्या की भट्ठी में झोकने वाले अभिभावकगण आधुनिक शिक्षा प्रणाली की विशेषताओं से अपरिचित हों यह असम्भव है क्योंकि आज तो गांव का एक पांसुलपाद किसान तथा भिखारी भी अपने बच्चों को इन स्कूल में पढ़ाने की कोशिश करता है पुनरपि कारण क्या है, गुरुकुलों की कौन सी वे विशेषतायें हैं जिनसे प्रभावित होकर इन डिग्रियों को लात मारकर तपस्या के मार्ग पर चलने-चलाने को दृढ़प्रतिज्ञ हैं विश्लेषण तो इस बात का किया जाना चाहिये। "जैसी बहे बयार जब पीठ तब तैसी दीजे" बहती हवा के अनुकूल चलने में न कोई संघर्ष है न समस्यायें पर धन्य होते हैं वे जन जो हवा के प्रतिकूल चलकर राष्ट्र के समक्ष एक प्रतिमान स्थापित करते हैं। इतिहास के पृष्ठ बताते हैं कि अंग्रेजी राज्य में अनेक पण्डितों ने अंग्रेजों से सहर्ष राय महामहोपाध्याय आदि उपाधियां ग्रहण की और उनकी चाटुकारिता में अपने बुद्धिवैभव को लुटा दिया पर भारत की जनता ने उन स्वनामधन्य पण्डितों को अधिक सम्मान के साथ बिठाया जिन्होंने परतन्त्रता की द्योतक इन उपाधियों को ठुकराकर स्वदेशाभिमान का परिचय दिया। इसी प्रकार पाश्चात्य शिक्षा, भाषा और सभ्यता की प्रचण्ड आंधियों में अपनी सर्वगुणसम्पन्न देववाणी संस्कृत तथा सार्वभौम, विश्ववारा वैदिक संस्कृति के दीप को सतत प्रज्वलित रखने का संकल्प लेने वाले गुरुकुलवासी आधुनिक समाज के अधिक सम्मान के पात्र हैं। दुनिया के कोई मायावी हिरण्मय प्रलोभन, उपहास या जनप्रवाद इन्हें अपने निश्चय से नही डिगा सकते। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जब गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी तब भी लोग यही उपहास उड़ाया करते थे कि "स्नातकों को सरकारी नौकरियां नहीं मिलेंगी जीवन निर्वाह की समस्या बन जायेगी" स्वामी जी अपने स्नातकों को परमात्मा पर अटूट विश्वास रखने की प्रेरणा देते हुये तब ये धार्मिक दोहे कहा करते थे—

दांत न थे तब दूध दियो, अब दांत दिये तो क्या अन्न न देंहै।
जीव बसे जल में थल में जो सबकी सुधि लेत सो तेरी भी लैंहै।
काहे का सोच करे मन मूरख, सोच करे कुछ हाथ न ऐंहै।
जान को देत अजान को देत, जहान को देत सो तोकू न देंहै॥

आजीविका का प्रश्न उठाने वालों के लिये आज भी यही सटीक उत्तर है। इतिहास और वर्तमान साक्षी है कि गुरुकुल कांगड़ी या अन्य विख्यात गुरुकुलों का एक भी स्नातक बुभुक्षा से पीड़ित नहीं देखा गया और न ही निराशा या कुण्ठा से ग्रस्त होकर किसी गुरुकुलीय स्नातक या स्नातिका ने आज तक आत्महत्या की हो यह सुना गया। 'परख' कार्यक्रम वालों की यह टिप्पणी भी कि 'गुरुकुलीय छात्र कर्मकाण्डी पण्डित तथा संस्कृताध्यापक के सिवाय भविष्य में कुछ नहीं बन सकते' सत्यता से कोसों दूर है। क्योंकि प्राय गुरुकुलों ने जहां उद्भट तलस्पर्शी विद्वान् वक्ता, शास्त्रार्थमहारथी देश को दिये हैं वहीं अनेक सशक्त पत्रकार, कुशल लेखक, कवि, समाजशास्त्री, शिक्षाकोविद एवं श्रेष्ठ राजनेता भी राष्ट्र को समर्पित किये हैं। इस प्रकार गुरुकुलीय स्नातक 'आत्मन्येवात्मना तुष्टः' वाली स्थितप्रज्ञता को धारण कर बड़े स्वाभिमान के साथ, सम्पन्नता के साथ अपना जीवन यापन करते हैं यह निस्सन्दिग्ध रूप से कहा जा सकता है।

गुरुकुलीय शिक्षा को आधुनिक युग में अप्रासङ्गिक बताने का साहस करने वाले महानुभावों को हम यह स्पष्ट बता देना चाहते हैं कि आज गुरुकुलों का उद्देश्य इन्जीनियर डाक्टर आदि का निर्माण करना नहीं है[1] (क्योंकि यह कार्य तो आधुनिक शिक्षणालय कर ही रहे हैं) बल्कि आत्मिक, शारीरिक, बौद्धिक बल सम्पन्न ऐसे सच्चरित्र विद्वान् नायकों का निर्माण करना है जो देश धर्म संस्कृति की रक्षा करने में स्वयं समर्थ हों तथा अन्यों को भी प्रेरित कर सकें। आज के बेगाने नेता जो अपना देश ही नहीं संभाल पा रहे हैं तो उन से सभ्यता संस्कृति को सुरक्षित रखने की गुहार कैसे की जाये? इसलिए राष्ट्र भक्त नायक देश की प्राथमिक आवश्यकता में आज आते हैं। ऐसे आदर्श नायक गुरुकुलों की गोद में और त्यागी तपस्वी विद्वान् वेदज्ञ आचार्य के सान्निध्य मे ही पल सकते हैं। लार्ड मैकाले की देन आधुनिक शिक्षा प्रणाली यदि यह कार्य करने में सक्षम होती तो इस प्रकार स्वतन्त्र भारत, देश, धर्म, संस्कृति से विमुख उच्छृंखल स्वार्थी एवं चरित्रहीन दृष्टिगोचर न होता और देश को ये दुर्दिन देखने ही नहीं पड़ते। इस प्रकार गुरुकुलों की उपादेयता कभी भी समाप्त होने योग्य नहीं है। अन्त में लेख के विषय से सम्बद्ध प्रस्तुत हैं ये पंक्तियां—

कुछ ऐसे भी जन होते हैं जिनको अपनी परवाह नहीं
विपदायें टूटे आह नहीं
जिनके अन्तर की पीड़ा को
कोई पा सकता थाह नहीं
चहुं ओर से व्यंग्य बाण चलें
पर मन्द कहीं उत्साह नहीं॥
मानवता के प्रहरी जागृत कुछ ऐसे भी मन होते हैं,
कुछ ऐसे भी जन होते हैं॥

---

१. गुरुकुलीय शिक्षा भौतिक विद्याओं को सिखाने का विरोध नहीं करती। शास्त्रों में स्पष्ट कहा है—"द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्म यद् ब्रह्मविदो वदन्ति, परा चैवापरा च" (मु. १।१।४) परा अर्थात् ब्रह्म का बोध करानेवाली अध्यात्म विद्या, अपरा अर्थात् पृथिवी से लेके आकाश पर्यन्त पदार्थों के गुणों का ज्ञान करानेवाली समस्त भौतिक विद्यायें दोनों ही मनुष्यों को जाननी चाहिएं। सांख्य वैशेषिक दर्शन पदार्थविद्या के ही प्रतिपादक शास्त्र हैं। इस प्रकार वेद वेदांगों को पढ़ानेवाले गुरुकुल एक से एक वैज्ञानिक, भूगोलखगोलविद्, ज्योतिर्विद् गणितज्ञ राष्ट्र को दे सकते हैं और इन्होंने दिये भी हैं। महान् ज्योतिर्विद् आर्यभट्ट, आचार्य भास्कर, आचार्य वराहमिहिर, गणितज्ञा पं० लीलावती आदि प्रतिभायें तथा जयपुर उज्जैन देहली आदि की वेधशालायें आधुनिक युग की देन नहीं हैं।

समाल जिला रोहतक में अश्वमेध महायज्ञ पर वर्षा का आगमन

सैकड़ों युवकों ने शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा की

(निज संवाददाता द्वारा)

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में १७, १८ जून को ग्राम इस्माइला (समाल) जिला रोहतक के उच्च विद्यालय के विशाल प्रांगण में अश्वमेध महायज्ञ का २० किलो घी से अनुष्ठान किया गया। १७ की रात्रि को सायंकाल ग्राम में श्री ईश्वरसिंह एवं जयपाल की भजन मण्डली के प्रेरणादायक भजनों के साथ स्वामी ओमानन्द जी महाराज का बहुत ही प्रभावशाली व्याख्यान हुआ जिसमें बुराइयों के उन्मूलन और श्रेष्ठ व्यवहार के व्रती बनने की प्रेरणा देते हुए पूर्वजों के जीवन के उदाहरण प्रस्तुत किये गये।

१८ जून प्रातःकाल साढ़े आठ बजे से एक बजे तक चारों वेदों के राष्ट्रपरक सूक्तों से अश्वमेध महायज्ञ का सम्पादन हुआ इसी प्रकार सायंकाल भी साढ़े तीन बजे से साढ़े छह बजे तक अश्वमेध महायज्ञ का आयोजन चला। लगभग १००-१२५ व्यक्तियों एवं सैकड़ों युवकों ने शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा की। युवकों तथा युवतियों ने यज्ञोपवीत को ग्रहण करते हुए धूम्रपान, सुरापान, मांस आदि दुर्गुणों के साथ दहेज आदि अन्य सामाजिक बुराइयों को छोड़ने और छुड़वाने का संकल्प लिया। स्वामी योगानन्द जी सांघी, आचार्य हरिदेव जी गौतमनगर, नैष्ठिक ब्रह्मचारी जीवानन्द जी, शास्त्री सुखदेव जी एवं आचार्य ओम्प्रकाश सिद्धान्तशिरोमणि के प्रवचनों के साथ दोनों आयोजनों में श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज के बहुत ही प्रभावशाली व्याख्यान हुए। आयोजन से श्रोताओं की तृप्ति नहीं हुई। उनकी इच्छा कुछ आगे चलाने की भी थी। श्री अर्जुनदेव जी प्रचारक आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा ने भी सायंकाल प्रवचन एवं यज्ञ के प्रबन्ध आदि में उत्साह से योगदान दिया।

अश्वमेध महायज्ञ का तुरन्त ही प्रत्यक्ष प्रभाव यह हुआ कि रात्रि को ही वायु का परिवर्तन हो शीतल वायु के झोंके आरम्भ होगये। गर्मी से तप्त लोगों को ओढ़ने के लिए कपड़ों का आश्रय लेना पड़ा। अगले दिन प्रातःकाल ही वर्षा आरम्भ होगई और ब्यार' भर (बीज बोने के लिए पर्याप्त) वर्षा होगई। यह विशेषतः उस ही भूभाग में हुई जबकि झज्जर आदि अन्य स्थानों में २-२ अंगुल वर्षा थी।

इस शुभकार्य को सफल करने के लिए पहलवान महेन्द्रसिंह, मा० जयनारायण, मास्टर सुखराम, मास्टर रामकिशन, श्री हवासिंह प्रधान १४ ग्राम, श्री रामफल तथा ब्र. कर्मवीर जी के पिताजी श्री महावीरसिंह जी आदि ने तन, मन तथा धन से सहयोग दिया। अन्य दान देनेवालों की सूची निम्नलिखित है—

सर्वश्री धर्मवीर नम्बरदार १५०-००, सूबेदार जिलेसिंह सु० श्री कुरड़ेराम १५०-००, जोगेन्द्र सु० श्री प्रतापसिंह ठेकेदार १००-००, रामपाल सु० रामपत १११-००, मा० जयनारायण सु० सूबेराम जी १००-००, रामफल सु० फूलसिंह १००-००, राजमल सु० धर्मसिंह ५०-००, होशियारसिंह सु० बलेराम जी ५०-००, जिलेसिंह सु० सीशराम ५०-००, बनवारी सु० पृथी २०-००, हवासिंह सु० भगवाना ५०-००, दरया सु० चन्दगीराम २०-००, रामकिशन जी बिजलीवाला ५-००, रामकिशन सु० निफाया १००-००, फतेहसिंह खाती ११-००, जगदीश सु० टेकन साथ २५-००, भरतू १०-००, कृष्णा ग्राम दुल्हेड़ा १०-००, जिलेसिंह सूबेदार सु० कुरड़ (घी) १५०-००, रामकिशन खाती ११-००, बनवारी महाजन २१-००, हुकमी सुनार १०-००, होश्यारे सु० भरतू १०-००, धर्मवीर नम्बरदार (घी) १५०-००, पृथी सु० मांगे २०-००, देवी पण्डित ५-०० हरेराम सु० ज्ञानीराम २०-००, होश्यारसिंह मांगे १०-००, जिले १०-००, रतनलाल नम्बरदार ५-००, बलवे ५-००, रामे सु० राजेराम ५०-००, दरयावसिंह सु० पृथी १ किलो घी, भूपसिंह सु० दिल्लो ५१-००, बलराम सु० प्रभु २०-००, धारे सु० राजेराम ५०-००, भूरपुरसिंह सु० छत्तर १०-००, टेका सु० गिरधारी १०-००, कृष्णा सु० ईश्वरसिंह २५-००, डा० बलजीतसिंह ५०-००, मा० सुखराम ५०-००, जुगतीराम सु० शीशराम १०-००, नरेशकुमार सु० मांगेराम २१-००, अतर सु० सरदारे १०-००, चन्दराम सु० अमीलाल १०-००, बलबीरसिंह सु० दरयावसिंह १०-००, सत्यवीर सु० खोमन ५०-००, हरदेवा २५-००, डा० देवेन्द्र २१-००, बनवारी सु० मौजीराम १०-००, प्रेम सुनार २० ००, तुहीराम सु० रतीराम १०-००, सत्यवीरसिंह सु० नौंदामा १००-००, पप्पल सुनार सु० चन्द्रभान १०-००, सज्जन १०-००, सूरजमल सु० रामेहर २१-००, मा० रामचन्द्र जी १०-००, हरिराम सु० मायाचन्द २०-००, इन्द्रसिंह सु० सूबेराम २१-००, ईश्वरसिंह सु० चन्दसिंह ११-००, सरदारे पहलवान ११-००, दयाराम सु० मानसिंह ५-००, दयानन्द सु० चन्दसिंह २१-००, इन्द्रसिंह खेड़ा पाना १०-००, मूला नम्बरदार १०-००, पालेराम सु० जागेराम ५-००, धूपे प्रजापति ५-००, कलीराम प्रजापति ५-००, पृथ्वीसिंह सु० धर्मसिंह २१-००, जागेराम सु० रतिया ५-००, सज्जनसिंह सु० दुलिया १०-००, धर्मसिंह सु० सुखे १०-००, रिसालसिंह सु० श्रीचन्द १०-००, सिण्डा मेम्बर लुहार ५-००, खेतड़ सु० प्यारे १०-००, लोर नम्बरदार ५-००, श्रीनिवासा महाजन सांपला मण्डी ११-००, हंसे सु० नफेसिंह २१-००, कुलमे सु० रामपत ११-००, मा० रामकिशन १००-००, केहरसिंह १०-००, हजारीसिंह १०-००, हरिसिंह आ० स० ५१-००, रिच्छपालसिंह जसोर खेड़ी २१-००, रमेशचन्द्र खरहटो ५-००, मन्त्री मामनसिंह दयानन्दमठ रोहतक ११-००, पं० रामनारायण ५-००, विश्वमुनि आ० स० हसनगढ २५-००, सतसंगम १०१-००, जयकर्ण १००-००, रामकुमार २०-००, जंगीराम की धर्मपत्नी १०१-००, सोमवीर ११-००।

(पृष्ठ ३ का शेष)

फिर दयानन्द के स्वप्नों तथा आर्यों के सिद्धान्तों से खिलवाड़ करने की हिम्मत न जुटा सकें। अन्यथा ये अवसरवादी नकली आर्यनेता बनकर आर्यसमाज की अरबों रु० की सम्पत्ति को हड़प जावेंगे। वन्दे मातरम् को आर्यसमाज के सिद्धान्तों की जानकारी तो दूर रही, उन्हें सन्ध्या करनी भी नहीं आती। ये हैदराबाद के किसी आर्यसमाज के सदस्य तक नहीं। मदुराई से बोगस प्रतिनिधि स्वयं बन गये। इसी प्रकार श्री ओमनाथ मरवाह, छोटूसिंह तथा अश्विनीकुमार जैसे वकील जो प्रतिदिन कचहरियों में झूठ बोलते हैं, आर्यसमाज को बर्बाद करने के लिए फसली नेता बन गये हैं। सच्चिदानन्द शास्त्री इनकी चापलूसी करते नहीं थकते। मरवाह का टाईवाला चित्र सार्वदेशिक पत्र में छापकर इनकी झूम बड़ाई कर रहा है। अतः आर्यजनता सत्य असत्य को पहचान करे।

—राजेन्द्रकुमार आर्य

चौ० माड़ूसिंह जी के परिवार पर वज्रपात

हरयाणा सरकार के पूर्व शिक्षामन्त्री तथा आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के पूर्व उपप्रधान चौ० माड़ूसिंह जी के सुपुत्र श्री भूपेन्द्रसिंह मलिक की धर्मपत्नी श्रीमती सुदर्शन मलिक आयु ५१ वर्ष उनका दोहिता श्री सौरभ आयु ४ वर्ष तथा उनके परिवार का पुराना सेवक श्री दीपचन्द आयु ७५ वर्ष का दिनांक १८ जून ९५ को रोहतक के निकट जसिया ग्राम में एक सड़क दुर्घटना में निधन होगया। कुछ समय पूर्व चौ० माड़ूसिंह जी के एक कनिष्ठ पुत्र श्री ओंकारसिंह भी एक दुर्घटना में जवानी में ही चल बसे थे। श्रीमती सुदर्शन मलिक धनवन्ती आर्य कन्या विद्यालय रोहतक की भी मुख्याध्यापिका थी और आजकल राजकीय विद्यालय बेरी में प्रधानाचार्या के पद पर कार्यरत थी।

परमात्मा से प्रार्थना है कि इन दिवंगत आत्माओं को सद्गति तथा उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—केदारसिंह आर्य

बालावास (हिसार) की महिलाओं का सराहनीय कदम

गत दिनों मई मास में ग्राम बालावास मे सरपंच श्रीमती हुर्मीबाई के नेतृत्व में २०-३० महिलाओं ने इकट्ठी होकर गांव में शराब बेचने वालो के घरों की तलाशी ली मिठू ओड के घर शराब पकडकर फोड़ डाली। साथ में रोड पर झबरू होटल पर छापा मारा वहां भी ४-५ बोतल एक पीपे में पाई वह फोड़ डालो। ज्ञातव्य है कि १८ मई को महिलाएं अवैध शराब की बिक्री को बन्द करवाने बारे उपायुक्त महोदय हिसार को भी ज्ञापन दे चुकी थी। लेकिन पुलिस प्रशासन की ओर से कोई विशेष सहयोग नहीं मिला। सिर्फ औपचारिकता निभाई गई। महिलाओं ने ही स्वयं साहसिक कार्य किया। अब अवैध शराब बेचने वाले डरे हुए हैं। इस प्रकार प्रत्येक गांव में महिलाएं शराबबन्दी अभियान में विशेष भूमिका निभा सकती है। ग्राम बालावास एव ग्राम सुलतानपुर की महिलाओं के शराबबन्दी बारे उठाए गए कदम की इस क्षेत्रमे सर्वत्र प्रशंसा की जारही है।

—अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेशक

बरहाणा आर्यसमाज का शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज बरहाणा द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक २५-५-९५ से तक सात दिवसीय सदाचार एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन सिद्धान्ती भवन आर्यसमाज मन्दिर मे किया गया जिसमें ७५ युवकों व बच्चों ने भाग लेकर श्री मदनलाल एम० ए० मातनहेल व पुरुषोत्तम आर्य रोहतक से योगासन दण्ड बैठक स्तूप निर्माण व जूडो-कराटे का क्रियात्मक प्रशिक्षण लिया। साथ-साथ प्रतिदिन बौद्धिक कार्यक्रम व यज्ञ सत्संग प्रचार के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तों का परिचय प्राप्त किया। अन्तिम दिन सभी बच्चों ने चरित्रवान् बनने व शराब आदि नशों से दूर रहने का यज्ञ पर संकल्प लिया व बड़े २० बच्चों ने यज्ञोपवीत धारण कर पवित्र जीवन बिताने का व्रत लिया। श्री पं० चिरञ्जीलाल जी का दिनांक २९ से ३१ मई तक गाव में प्रभावशाली प्रचार कार्यक्रम चला जिसे जनता ने बहुत पसन्द किया सभा को ६५० रु० प्राप्त हुए। अन्तिम दिन बच्चों को श्री अशोक खेमका अतिरिक्त उपायुक्त रोहतक ने पुरस्कार प्रदान किये व आर्यसमाज को आर्थिक सहयोग का वचन दिया।

—मन्त्री आर्यसमाज बरहाणा जिला रोहतक

हरयाणा के गुरुकुलों का इतिहास

हरयाणा के समस्त गुरुकुल के अधिकारियों एवं आचार्यों को सूचित किया जाता है कि हरयाणा के गुरुकुलों का इतिहास नामक पुस्तक का लेखन "डा० रणजीतसिंह" प्रिंसिपल द्वारा किया जा रहा है अतः अपने-अपने गुरुकुलों का विस्तृत विवरण लिखकर निम्न पते पर भेजने का कष्ट करें। सभामन्त्री

डा० रणजीतसिंह, प्रिंसिपल (Rtd.)
5c/14 B.P. Lohan children Hospital
N.I.T. Faridabad Haryana

शराब बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इनसे दूर रहें।

शराबबन्दी प्रचार

दिनांक २७-५-९५ को आर्यसमाज बाण्डवा के उत्सव पर जाति समय श्री मनफूलसिंह आर्य के विशेष आग्रह पर शराबबन्दी समिति के चार सदस्यों के साथ सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रांतिकारी ग्राम काकड़ोली हुठी (भिवानी) सायं ८ बजे पहुंचे। वहां श्री बेगराज सरपंच की अध्यक्षता में एक सभा हुई। क्रांतिकारी जी ने विस्तार से इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाली बर्बादी का चित्र खींचा तथा लोगों से अपने गांव अवैध शराब की बिक्री को रोकने तथा शराब न पीने की अपील की। अन्त में महिलाओं को भी पत्थर पूजा न करने व पाखण्ड से दूर रहने की प्रार्थना करते हुये अपने पति व सास-ससुर की सेवा करने का सुझाव दिया। लोगों ने बड़ी श्रद्धा से कार्यक्रम सुना। सरपंच साहब ने आर्य जी का धन्यवाद किया।

—मुखत्यारसिंह दिसोदिया काकड़ोली हुठी

स्वास्थ्य चर्चा—

उषःपान अनेक कष्टों को दूर करता है

विश्वनाथप्रसाद विद्यावाचस्पति, कोरबा (म०प्र०)

कांतिलाल गांधी चैरिटी चैरिटी ट्रस्ट (आई हास्पिटल एवं आई बैंक) सावन पार्क आउटर सर्किल रोड बिष्टुपुर द्वारा प्रचारित एक जानकारी में बताया गया है कि पानी से कैंसर का इलाज संभव है। नई पुरानी जानलेवा बीमारियों को दूर करने के लिए पानी चमत्कारिक प्रभाव दिखाता है। विवरण में लिखा है कि जापानीय सीकनेज एसोसियेशन ने पानी के प्रयोग की सरल विधि निकाली है। इस पद्धति में सुबह में जल्दी उठकर बिना ब्रश किए १.२६० कि. ग्राम (लगभग चार बड़ा ग्लास) पानी पीने तथा इसके पैंतालीस मिनट बाद तक कुछ नहीं खाने तथा दो घण्टे तक पानी नहीं पीने की सलाह दी जाती है।

पानी के इस विधि के सेवन करने पर ब्लड प्रेशर एक माह में गैस की व्याधि दस दिन में, कब्जियत दस दिन में, डायबिटीज एक माह में, कैंसर छह माह में तथा टी.बी. एक माह में ठीक हो जाता है (नवभारत, बिलासपुर में प्रकाशित एक जानकारी के आधार पर)।

भले ही आज जापानीय सीकनेज एसोसिएशन अपनी इस विकसित विधि से सिरदर्द, ब्लडप्रेशर, एनेमिया, संधिवा, लकवा, मोटापा हृदय धड़कन बेहोशी, खांसी, दमा, कफ, टी.बी., हाई पर एसिडिटी, गैस सम्बन्धी बीमारियां, पेचिस, कब्जियत, हरसं, डायबिटीज, लकवा सम्बन्धी, नेत्र सम्बन्धी रोग, स्त्री रोग, गर्भाशय कैंसर, नाक एवं गला सम्बन्धी बीमारियां दूर करने का दावा करती हो किन्तु हजारों वर्ष पूर्व भारत वर्ष के आर्यों ने निरन्तर अभ्यास के आधार पर इस विधि को अपने दैनिक जीवन का बहुमूल्य एवं अनिवार्य अंग बना लिया था। अतः भारतवर्ष से ही यह विधि जापान और अनेक देशों को गई। आर्यों की हर खोज अनुभव की नींव पर स्थिति होती थी। स्वामी सत्यदेव परिव्राजक की निम्न कविता इस सम्बन्ध में पठनीय है—

सत्य की ही खोज करने के लिये, आर्यों ने जंगलों में तप किया।
वर्ष लाखों खर्च इसमें कर विश्व को निज अनुभव से भर दिया॥
नींव रक्खी अनुभवों पर धर्म की आत्म दर्शन का सुधा-रस पानकर।
ज्ञान की बातें बताई मर्म की, कर्म की दैवी महत्ता जान कर॥
देव ऐसे धर्म के सद्गुण बता, हिन्दुओं को कायरी काफूर कर।
देव तो सब एकता है चाहता, सम्प्रदाय की निशा को दूर कर॥

आर्यों द्वारा विकसित पद्धति का नाम है उषःपान। प्रातःकाल ४ बजे के पश्चात् जो जल शौच (मल, मूत्र त्याग) से पूर्व पिया जाता है उसे उषःपान कहते हैं।

उषःपान से पूर्व भली-भांति कुल्ला करके मुख, नासिका आदि को साफ करना आवश्यक है। पहले दांतों को अंगुली से भली-भांति रगड़ कर दो-तीन बार कुल्ला करें फिर अंगूठे या उंगली से रगड़कर जीभ का तथा गले में नीचे ऊपर तथा दायें-बायें लगा हुआ कफ आदि मल भली-भांति साफ कर डालें। नासिका के दोनों छिद्रों को भी जल से शुद्ध कर लें। यदि नासिका और मुख को भली-भांति शुद्ध किये बिना उषःपान (जलपान) किया जायेगा तो रात्रि में शयनकाल में हमारे उदर से जो मल मुख के द्वारा बाहर निकलने के लिए आता है वह जल के साथ पुनः पेट में पहुंचकर गड़बड़ी करेगा।

उषःपान के प्रकार

उषःपान दो प्रकार से किया जाता है। प्रथम नासिका द्वारा, दूसरा मुख के द्वारा। लाभ दोनों से ही होता है। पहले मुख द्वारा ही जल पीने का अभ्यास किया जाना चाहिए। शनैः-शनैः नासिका के द्वारा भी जल पीने का अभ्यास कर सकते हैं। किन्तु यदि नासिका से पीना हो तो बांयी नासिका से धीरे-धीरे थोड़ा जल अन्दर जाने दें। इस जल को मुंह से थूक दें। इस प्रकार नासिका को शुद्ध करके नासिका से जल पीना चाहिए।

नासिका द्वारा जल पीने की विधि इस प्रकार है—

गिलास में या किसी जलपात्र में जिसके किनारे पतले हो, जल भर सुविधापूर्वक बैठकर गिलास का किनारा बायें नथुने (नाक) से लगाकर धीरे-धीरे जल अन्दर जाने दें। कण्ठ से घूंट खींचते जायें, जल स्वयं ही अन्दर जाने लगेगा। जल को श्वास की सहायता से न खींचें। बलपूर्वक यह क्रिया करने से ठसका लग सकता है। आरम्भ में कुछ कष्ट होता है किसी के तो आंखों में आंसू भी आजाते हैं। कुछ झनझनाहट सी उत्पन्न होती है या थोड़ा सा प्रतिक्रिया (जुकाम) भी प्रतीत होता है किन्तु इससे घबराना नहीं चाहिए। पहले दिन एक या दो तोला जल पीवें, फिर धीरे-धीरे बढ़ाते जावें। भाव प्रकाश में २४ (चौबीस) तोला जल पीना लिखा है किन्तु प्रत्येक मनुष्य अपनी प्रकृति के अनुसार न्यून या अधिक कर सकता है। किसी-किसी को वायु के कारण डकारें बहुत आती हैं, क्योंकि जल के साथ पेट में वायु भी आती है। इससे घबराना नहीं चाहिए। दायीं नासिका से जल पीने से हानि कोई नहीं होती। बायें नथूने का चन्द्र स्वर होने से शीतलता और शांति रहती है। किसी को नासिका से जल पीने से कष्ट होता हो तो मुख से ही पीता रहे।

जल पीकर मूत्रत्याग (लघुशंका) करें। यह ध्यान रखें कि प्रत्येक अवस्था में मलमूत्र त्याग से पूर्व ही उषःपान करना आवश्यक है। जल मीठा और शुद्ध होना चाहिए। कुएं का ताजा जल सदव अच्छा रहता है। उष्णकाल में सायंकाल का रखा हुआ पर्यूषित (बासी) शुद्ध जल भी अच्छा रहता है। बहुत ठण्डा और गरम पानी हानिकारक होता है। जिनको मलबन्ध (कब्ज) रहता हो वे सायंकाल ताम्बे के पात्र में जल रख दें और प्रातःकाल उसका पान करें।

उषःपान के लाभ

उषःपान के अनेक लाभ आयुर्वेद के ग्रन्थों में लिखा है। धन्वन्तरि संहिता में लिखा है—

सवितुः समुदयकाले प्रसृतिः सलिलस्य पिबेदष्टौ।
रोगजरापरिमुक्तो जीवेद्वत्सरशतं साग्रम्॥

जो मनुष्य सूर्योदय से पहले आठ अंजलि (एक किलोग्राम) जल पीता है, रोग और बुढ़ापा उसके पास नहीं आते। वह सदैव स्वस्थ और युवा रहता है। उसकी आयु सौ वर्ष से भी अधिक होती है। भाव प्रकाश में लिखा है—

अर्शःशोथग्रहण्यो ज्वरजठरजरा कोष्ठमेदोविकाराः।
मूत्राघातास्त्रपित्त श्रवणगलशिरःश्रोणिशूलाक्षिरोगाः॥
ये चान्ये वातपित्तक्षतजकृता व्याधयः सन्ति जन्तोः।
तांस्तानभ्यासयोगादपहरति पयः पीतमन्ते निशायाः॥

बवासीर, सूजन, संग्रहणी, ज्वर, पेट के अन्य रोग, बुढ़ापा कुष्ठ, मेदरोग अर्थात् बहुत मोटा होना, रक्त पित्त, आंख, कान, नासिका, सिर, कमर, गले इत्यादि के सब शूल (पीड़ा) तथा वात, पित्त, कफ और व्रण (फोड़े) इत्यादि होनेवाले अन्य सभी रोग उषःपान से दूर होते हैं। इसी प्रकार एक अन्य स्थान पर लिखा है—

"पातव्यं नासया नीरं प्रसृतित्रयमात्रया।
व्यंगवलिपलितघ्नं पीनसवैस्वर्यकासशोथहरम्।
रजनीक्षयेम्बूनस्यं रसायनं दृष्टिसजननम्।"

नासिका द्वारा प्रतिदिन शुद्ध जल को तीन घूंट व अंजलि प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्त में पीनी चाहिएं क्योंकि इससे विकलांगता, झुर्रियां पड़ना, बुढ़ापा, बालों का सफेद होना, पीनस, नाक का सड़ना, नासिका में कीड़े पड़ना आदि नासिका रोग, प्रतिश्याय (जुकाम) स्वर का बिगड़ना, विरसता कास व खांसी सूजनादि रोग नष्ट हो जाते हैं और बुढ़ापा दूर होकर पुनः युवावस्था प्राप्त होती है। आयु की वृद्धि अर्थात् दीर्घ आयु की प्राप्ति होता है। चक्षु सम्बन्धी सभी रोग दूर होते हैं और नेत्रज्योति

इस प्रकार जल नेति करने से खूब बढ़ती है। अतः ब्रह्मचारी तथा प्रत्येक स्वस्थ स्त्री व पुरुष को प्रतिदिन मुख व नासिका द्वारा उषःपान का अमृत पान करके अमूल्य लाभ उठाना चाहिए।

(स्वामी ओमानन्द सरस्वती की पुस्तक ब्रह्मचर्य के साधन से)

आयुर्वेद में लिखा है—

विगतघन-निशीथे प्रात-रुत्थाय नित्य,
पिबति खलु नरो यो घ्राणरन्ध्रेण वारि।
स भवति मतिपूर्णश्चक्षुषा ताक्ष्यतुल्यो,
बलिपलित-विहीनः सर्व-रोग-विमुक्तः॥

अर्थात् जो मनुष्य प्रातःकाल घना अन्धेरा दूर होने पर उठकर नासिका द्वारा जलपान करता है, वह पूर्ण बुद्धिमान् तथा नेत्र-ज्योति में गरुड़ के समान हो जाता है। उसके बाल जल्दी सफेद नहीं होते तथा वह सारे रोगों से सदा मुक्त रहता है। इसी प्रकार एक अन्य स्थान पर लिखा है—

'सर्वदोषविनाशाय निशान्ते तु पिबेज्जलम्।'

अर्थात् सब रोगों को नष्ट करने के लिए रात्रि के अन्त पर अर्थात् प्रातःकाल जल पीएं। इस सम्बन्ध में संस्कृत की एक अन्य लोकोक्ति बहुत ही महत्त्व की है—

भोजनान्ते पिबेत् तक्रं दिनान्ते च पिबेत् पयः।
निशान्ते च पिबेत् वारि, सर्वव्याधिविनाशनम्।

यदि मनुष्य भोजन के पश्चात् मट्ठा (छाछ) दिन के अन्त अर्थात् रात्रि में दूध तथा रात्रि अन्त अर्थात् प्रातःकाल जल पिये तो उसके सब रोग नष्ट हो जाते हैं।

प्रातः निरन्तर उषःपान करने से मल विसर्जन भी खुलकर होता है। कब्जी दूर होती है। शरीर में एक नई स्फूर्ति, चेतना तथा आनन्द का अनुभव होने लगता है। यदि उषःपान के पूर्व जलनेति क्रिया कर ली जावे तो और भी अधिक लाभ होता है।

विभिन्न रोगों की निवृत्ति के लिए उषःपान बहुत ही हितकर है जैसे कब्ज (मलावरोध), खून की कमी, रक्तविकार, रक्तपित्त, हृदय-रोग, सिरदर्द, पुराना तथा नया जुकाम, हाथ-पैर की जलन, पेशाब में [illegible], नेत्र [illegible], [illegible], [illegible], असमय में बालों का पकना आदि। अतः इन रोगों से मुक्त होने के अभिलाषी को प्रातःकाल अवश्य जलनेति क्रिया उषःपान अथवा केवल उषःपान करना चाहिए।

'अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम्।'

जलों के भीतर अमृत जीवनशक्ति है। जलों में रोगनाशकशक्ति व सामर्थ्य है।

किसी अनुभवी के शब्दों में जल पुष्टिप्रद, आलस्य और विष को दूर करनेवाला, विद्या बुद्धि बल और वीर्य का वर्धक और क्षीण अंग को पुष्ट करता है। आरोग्यजनक होता है। रात में रखे शीतल जल का प्रातः प्रयोग करने से नेत्रशक्ति सूर्य के समान हो जाती है और बुद्धि बृहस्पति और शरीर अश्विनीकुमार के समान हो जाता है।

अतः उषःपान नियमित श्रद्धा से करें और नीरोग शरीर प्राप्त कर लम्बी उम्र तक जीने का सौभाग्य प्राप्त करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक फोन : ([illegible]) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : [illegible]) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ रजि० नं०

दूरभाष : १, ४६, ७७, ४३,०१६

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष २२ अंक ३० ७ जुलाई, १९९५ (वार्षिक शुल्क ५०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

सार्वदेशिक–सम्पादकीय ने स्वर्गीय स्वामी आनन्द बोध, सोमनाथ मरवाह और वन्देमातरम् के मुंह पर तमाचा मारा। सच्चाई सामने आई

२२ जून, १९९५ ई० के सार्वदेशिक समाचार पत्र के सम्पादकीय ने ऐसे तथ्यों का उद्‌घाटन किया है कि जिनसे सच्चाई सामने आई है। इस सच्चाई का सम्बन्ध हैदराबाद में सम्पन्न हुए सार्वदेशिक सभा के चुनाव की पूर्व पीठिका से है। सम्पादकीय में लिखा गया है कि ७३-७४ से लेकर १९९४ (अक्टूबर १७ तक) तक स्वामी आनन्द बोध सार्वदेशिक सभा के प्रधान बनते रहे। इनके कार्यकाल की उपलब्धियों के विषय में कुछ न लिखते हुए सम्पादकीय में लिखा है "उसी समय (स्वामी आनन्द बोध की मृत्यु के तुरन्त पश्चात्) श्री सोमनाथ जी मरवाह एडवोकेट को वरिष्ठ उपप्रधान बनाया और कार्यवाहक अध्यक्ष भी घोषित कर दिया। कारण यह था कि स्वामी आनन्द बोध जी के बाद सभा की आर्थिक स्थिति पर सबका ध्यान गया।" उपर्युक्त वाक्यों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि स्वामी आनन्द बोध के कार्यकाल में सभा की आर्थिक स्थिति चिन्तनीय थी। परन्तु इसके विपरीत सभा की वार्षिक रपटें यह दर्शाती हैं कि स्वामी जी के कार्यकाल में सार्वदेशिक सभा की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ थी।

इस प्रकार इस सम्पादकीय से यह ध्वनि निकलती है कि सभा की वार्षिक रपटें एक छलावा हो थीं और आर्थिक स्थिति खराब होने के पीछे मुख्य कारण स्वामी जी ही थे। इस प्रकार सम्पादकीय ने सच्चाई को सामने रखकर स्वर्गीय स्वामीजी के मुंह पर तमाचा मारा। यही स्थिति सोमनाथ मरवाह के विषय में है। सोमनाथ मरवाह को वरिष्ठ उपप्रधान और कार्यकारी अध्यक्ष घोषित करने के पीछे एक सबल तर्क देते हुए लिखा है "अतः बा० सोमनाथ जी मरवाह ही एक ऐसे व्यक्ति थे जो स्वयं सभा को धन दे सकते थे और दूसरों से धन दिलवा सकते थे।" इस प्रकार लेखक की मान्यता के अनुसार धन देना और धन दिलवाना ही कार्यकारी प्रधान बनने का गुण है। अन्य गुण नगण्य हैं। लेखक की दृष्टि में मरवाह जी को आर्यसमाज के सिद्धान्तों का पालन करने अथवा उनका प्रचार और प्रसार के कारण नहीं, अपितु धनिक होने के कारण ही कार्यकारी प्रधान बनाया था। यदि आर्यसमाज में धन के आधार पर ही पदों का वितरण होता है, तो ऐसे बहुत से धनाढ्य आर्यसमाजी हैं, जो मरवाह जी से कहीं अधिक देने की सामर्थ्य रखते हैं और दूसरों से आर्यसमाज के लिए दिलवा सकते हैं। हमारे विचार से यदि **धन ही आर्यसमाज के अधिकारियों को चुनने का एक मात्र आधार है, तो समझो कि संन्यासियों और विद्वानों के लिए आर्यसमाज के पदाधिकारी बनने का मार्ग सदा के लिए अवरुद्ध हो गया।**

क्या मैं सम्पादकीय लेखक से पूछ सकता हूं कि मरवाह जी ने कार्यकारी प्रधान बनने के पश्चात् सभा को स्वयं कितना दान दिया और कितना दान अन्य व्यक्तियों से दिलवाया है? यदि कोई दान दिया गया है और दिलवाया है, तो उसका विवरण सभा की वार्षिक रपट में क्यों नहीं है। वार्षिक रपट में योगदान न होने का अर्थ है कि मरवाह जी को जिस उद्देश्य के लिए कार्यकारी प्रधान बनाया गया था, वह निष्फल रहा। इससे इनकी अयोग्यता ही सिद्ध हुई।

सम्पादकीय में लिखा है "१६ अक्टूबर, १९९४ को अन्तरंग बैठक ने एक वर्ष के लिए निर्वाचन स्थगित कर दिया, पूरी जुण्डली साथ थी।" हमारी दृष्टि में यह निर्णय स्वामी जी के स्वास्थ्य और संगठन सम्बन्धी बातों को ध्यान में रखकर किया गया था। परन्तु स्वामी जी का निधन १७ अक्टूबर, १९९४ को हो गया। अन्तरंग सभा के कुछ निहित स्वार्थवाले व्यक्तियों ने निर्वाचन सम्बन्धी अपने पूर्व निर्णय को बदलवाने का प्रयास किया। इसी प्रयास के सन्दर्भ को सम्पादकीय में इस प्रकार लिखा है "खेर बात खत्म हुई और कुछ समय बाद अन्तरंग ने एक वर्ष के बजाए शीघ्र चुनाव सम्पन्न कराने का निर्णय लिया।" इस निर्णय से सार्वदेशिक के चुनाव के लिए जोड़-तोड़ की प्रक्रिया आरम्भ हो गई। सभा के तत्कालीन पदाधिकारी, प्रधान, कार्यकारी प्रधान और मन्त्री के कानों में यह भनक पड़ी कि स्वामी विद्यानन्द (भूतपूर्व प्रिंसिपल लक्ष्मीदत्त दीक्षित) प्रधान पद के सशक्त दावेदार हैं। स्वामी जी की दावेदारी के पीछे सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधियों का बहुमत है, तो उन्होंने संगत अथवा असंगत सभी प्रकार के हथकण्डों से स्वामी जी का नाम प्रतिनिधियों की सूची में से काटने का प्रयास किया।

सम्पादकीय के अनुसार इनको लिखा गया। १. आपने शालीमार बाग आर्यसमाज की सदस्यता से त्यागपत्र कब दिया और वह आर्यसमाज ने कब स्वीकार किया तथा ब्यावर राजस्थान से विधिवत् सदस्य कब व कैसे बने। २. ब्यावर में दिल्ली रहकर सदस्य क्यों बने।" स्वामी विद्यानन्द के उत्तर से अधिकारियों की तसल्ली कहां होनी थी। वे तो पूर्वाग्रहों के कारण इनको प्रतिनिधि की सदस्यता से हटाकर वन्देमातरम् के लिए प्रधान का पद निष्कंटक करना चाहते थे। अतः सभा अधिकारियों ने इनकी सदस्यता समाप्त कर दी। स्वामी विद्यानन्द ने इस असंवैधानिक कार्य के विरुद्ध न्यायालय से स्थगन आदेश ले लिया। इस सम्पूर्ण कार्यवाही के पीछे सच्चाई यह है कि स्वामी विद्यानन्द की सदस्यता समाप्ति के पीछे वन्देमातरम् का निजी स्वार्थ था। क्योंकि स्वामी जी इनकी तुलना मे आर्यसमाज के क्षेत्र मे अधिक प्रतिष्ठित और आर्य सिद्धान्तों के व्याख्याकार माने जाते हैं और वन्देमातरम् को अपनी गद्दी जाती दिखाई दी।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

"यज्ञ और उसके मौलिक सिद्धान्त"

प्रतापसिंह शास्त्री, पत्रकार

गतांक से आगे

भूखा भिखारी आने जाने वालों से १० पैसा, २० पैसा या रोटी की मांग करता है वह अमेरिका के राज की प्रधानता की मांग नहीं करता। अज्ञात वस्तु के लिए कल्पना या इच्छा हो सकती है किन्तु इसे प्रार्थना नहीं कहा जा सकता। प्रार्थना के लिए मनुष्य की आंतरिक आत्मिक इच्छा उत्कण्ठा आवश्यक है। बच्चा भूख से व्याकुल होकर चिल्लाता है, रोता है यह उसकी सबसे सच्ची प्रार्थना है क्योंकि वह बोलना नहीं जानता है। अतः रोकर ही अपनी आन्तरिक इच्छा प्रकट करता है। जिससे हम कुछ मांग रहे हैं प्रार्थना कर रहे हैं वह कैसा है ? और जिस वस्तु को हम मांग रहे हैं वह वस्तु क्या है ? यह सब जानना आवश्यक है। इससे हम आस्तिक बनते हैं सर्वव्यापक परमेश्वर को समझने लगते हैं हमारा ईश्वर में विश्वास दृढ़ होता है। वस्तुतः दैनिक संध्या (ब्रह्मयज्ञ) करनेवाला व्यक्ति ही देवयज्ञ का अधिकारी है जो दैनिक संध्या नहीं करता और देवयज्ञ (अग्निहोत्र) भी नहीं करना चाहता है वह गलत मार्ग पर है।

ब्रह्मयज्ञ से हमारी ईश्वर में आस्था दृढ़ होती है। सन्ध्या में परमात्मा के गुण कर्म और स्वभाव के विषय में इस प्रकार चिन्तन हो जाता है कि हम परमात्मा के अस्तित्व को इस जगत् में और अपने जीवन में अनुभव कर सके। इससे सिद्ध होता है वैदिक दृष्टिकोण से प्रार्थना से पूर्व हमें बहुत तैयारी की आवश्यकता है। मनुष्य को बहुत कुछ बनना पड़ता है तब कहीं प्रार्थना का अधिकारी बनता है। वस्तुतः वैदिक नित्यकर्मों को भी वही व्यक्ति अपनी दिनचर्या बनाता है जिसे ईश्वर में विश्वास है और वैदिक नित्यकर्म मोक्षप्राप्ति के सोपान हैं। मानव जीवन का लक्ष्य भी तो धर्म अर्थ काम मोक्ष रूप पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति ही है। "मनुर्भव" मनुष्य बन। मानव बनने का सही उपाय धर्माचरण, यज्ञीय कर्म, वेदोक्त कर्मों का पालन ही है यज्ञ हमें यही प्रेरणा देते हैं। यज्ञ एक उपासना तथा परोपकार का कर्म है। सभी समर्थ, पवित्र एवं श्रद्धालु आबाल वृद्ध नरनारी को यज्ञ करने का अधिकार है। गृहस्थ में स्त्री-पुरुष मिलकर यज्ञ करें। यज्ञ के वस्त्र, यज्ञ का स्थान, यज्ञ का आसन, यज्ञ में बैठने की दिशा, आहुतियों का परिमाण, यज्ञ कुण्ड घृत, सामग्री, समिधाएं, पात्र आसन, दीप, कपूर, रुई की बत्ती, माचिस, पंखा आदि बातों की यज्ञानुष्ठान से पूर्व आवश्यकता पड़ती है। यज्ञ से वेदोक्त कर्त्तव्य का पालन, ईश्वरोपासना, मोक्ष की सिद्धि, आत्मिक सुख की प्राप्ति, विद्वानों के संग और उपदेश का लाभ, दान परोपकार पवित्रता आदि सद्गुणों को धारण करने की प्रेरणा, जलवायु, अन्न वनस्पति की शुद्धि निर्मलता करना एवं उपयोगिता बढ़ाना, वर्षा प्राप्ति, वर्षा से अन्न और प्राणियों की वृद्धि समृद्धि, शुद्धि से रोगनाश, अशुद्धि नाश, कीटाणु नाश होकर आरोग्य की प्राप्ति, यज्ञीय प्रक्रिया, सुगन्ध एवं भस्म से रोग चिकित्सा, आध्यात्मिक एवं सद्भावपूर्ण वातावरण का निर्माण, यज्ञ में प्रतिज्ञा करके अवगुणों का त्याग करना कराना, मन्त्रोच्चारण से वेदों की रक्षा, सर्वव्यापक अन्तर्यामी अजर अमर एक परमेश्वर में अटल विश्वास यह सब यज्ञ के ही चमत्कार है। अतः ईश्वर विश्वास यज्ञ का मौलिक सिद्धान्त है।

१२ यज्ञ का बारहवां मौलिक सिद्धान्त है—पूर्णाहुति। यज्ञ पूर्णाहुति द्वारा यह प्रेरणा देता है कि हे मनुष्यो ! कोई कार्य ठीक हुआ तब जानो, वह पूर्ण हो जाय। जब तक कार्य पूर्णता तक न पहुंच जाये क्षणिक सफलता से सन्तोष न होना चाहिए। यजुर्वेद में कहा है—

"रिचेरुरसि निचुम्पुणः" अर्थात् हे यज्ञ को समाप्ति तक पहुंचाने वाले धीर यजमान तू इसलिए सफल हुआ है क्योंकि तू धैर्यपूर्वक चुपचाप मन्द गति (निचुम्पुण भावना) चलता गया है। यह निचेरु और निचुम्पुण का संयोग ही तेरी सफलता का कारण हुआ है। अग्निहोत्र में इसी भाव को सामने रखकर हवन कुण्ड की रचना नीचे से छोटी और ऊपर से चौड़ी की गई है :—"ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा" यह मन्त्र तीन बार बोलकर पूर्णाहुति की जाती है। अर्थात् हे सर्वरक्षक परमेश्वर, आपकी कृपा से निश्चयपूर्वक मेरा आज का यह समग्रयज्ञानुष्ठान पूरा होगया है (स्वाहा) मैं यह पूर्णाहुति प्रदान करता हूं। पूर्णाहुति मन्त्र को तीन बार उच्चारण करना उन भावनाओं का द्योतक है कि शारीरिक आत्मिक और सामाजिक तथा पृथ्वी अन्तरिक्ष और द्युलोक के उपकार की भावना से एवं आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक कष्टों को दूर करने की भावना से ही हम इस यज्ञ-विज्ञानरूपी होम को पूर्ण करते हैं।

यज्ञ का अन्तिम मौलिक सिद्धान्त है—वैज्ञानिकता अथवा यज्ञ विज्ञान। महर्षि दयानन्द जी ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में यज्ञ के वैज्ञानिक पक्ष पर विस्तृतरूप से प्रकाश डाला है। यथा—

प्रश्न—जो यज्ञ से वायु और वृष्टिजल की शुद्धि करना मात्र ही प्रयोजन है तो इसकी सिद्धि अतर और पुष्पादि के घरों में रखने से भी हो सकती है, फिर इतना बड़ा परिश्रम यज्ञ में क्यों करना ?

उत्तर—यह कार्य अन्य किसी प्रकार से सिद्ध नहीं हो सकता क्योंकि अतर और पुष्पादि का सुगन्ध तो उसी दुर्गन्ध वायु में मिलके रहता है, उसको छेदन करके बाहर नहीं निकाला जा सकता और न वह ऊपर चढ़ सकता है, क्योंकि उसमें हल्कापन नहीं होता। उसके उसी अवकाश में रहने से बाहर का शुद्ध वायु उस ठिकाने में जा भी नहीं सकता, क्योंकि खाली जगह के बिना दूसरे का प्रवेश नहीं हो सकता है फिर सुगन्ध और दुर्गन्धयुक्त वायु के वहीं रहने से रोगनाशादि फल भी नहीं होते और जब अग्नि उस वायु को वहां से हल्का करके निकाल देता है तब वहां शुद्ध वायु भी प्रवेश कर सकता है। इसी कारण यह फल यज्ञ से ही हो सकता है अन्य प्रकार से नहीं। क्योंकि जो होम से परमाणुयुक्त शुद्ध वायु है सो पूर्वस्थित दुर्गन्ध वायु को निकाल के उस देशस्थ वायु को शुद्ध करके रोगों का नाश करनेवाला होता है और मनुष्यादि सृष्टि को उत्तम सुख को प्राप्त करता है। जो वायु सुगन्धादि द्रव्य के परमाणुओं से युक्त होम द्वारा आकाश में चढ़ के वृष्टि जल को शुद्ध कर देता और उससे वृष्टि भी अधिक होती है क्योंकि होम करके नीचे गर्मी अधिक होने से जल भी ऊपर अधिक चढ़ता है। शुद्ध जल और वायु के द्वारा अन्नादि ओषधि भी अत्यन्त शुद्ध होती है। ऐसे प्रतिदिन सुगन्ध के अधिक होने से जगत् में नित्य-प्रति अधिक सुख बढ़ता है। यह फल अग्नि में होम करने के बिना दूसरे प्रकार से होना असम्भव है। इससे होम का करना अवश्य है। और भी सुगन्ध के नाश नहीं होने में कारण है कि किसी पुरुष ने दूर देश में सुगन्ध चीजों का अग्निहोम किया हो, उस सुगन्ध से युक्त जो वायु है सो होम के स्थान से दूर देश में स्थित हुए मनुष्य के नाक इन्द्रिय के साथ संयुक्त होने से उसको यह ज्ञान होता है कि यहां सुगन्ध वायु है इससे जाना जाता है कि द्रव्य के अलग होने में भी द्रव्य का गुण द्रव्य के साथ ही बना रहता है और वह वायु के साथ सुगन्ध और दुर्गन्धयुक्त सूक्ष्म होके जाता है परन्तु जब वह द्रव्य दूर चला जाता है तब उसके नाक इन्द्रिय से संयोग भी छूट जाता है फिर बालबुद्धि मनुष्यों को ऐसा भ्रम होता है कि वह सुगन्धित द्रव्य नहीं रहा। परन्तु यह उसको अवश्य जानना चाहिए कि वह सुगन्ध द्रव्य आकाश में वायु के साथ ही बना रहता है। इनसे अन्य भी होम करने से बहुत से उत्तम फल हैं उनको बुद्धिमान लोग विचार से जान लेंगे।

प्रश्न—क्या यज्ञ करने के लिए पृथ्वी खोद के वेदिरचन, प्रणीता प्रोक्षणी और चमसादि पात्रों का स्थापन, दर्भ का रखना, यज्ञशाला का बनाना और ऋत्विजों का करना यह सब करना चाहिए ?

उत्तर—करना तो चाहिए, परन्तु जो-जो युक्ति सिद्ध हैं सो-सो ही करने योग्य हैं क्योंकि जैसे वेदि बना के उसमें होम करने से वह द्रव्य शीघ्र भिन्न-भिन्न परमाणुरूप होके वायु और अग्नि के साथ आकाश में फैल जाता है ऐसे ही वेदि में भी अग्नि तेज होने और होम का साकल्य इधर-उधर बिखरने से रोकने के लिए वेदि अवश्य रचनी चाहिए और वेदि के त्रिकोण, चतुष्कोण, गोल तथा श्येन पक्षी आदि के

क्रमशः

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रैवार्षिक चुनाव पर

श्वेत पत्र

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज मन्दिर, नया बांस, दिल्ली-६

हैदराबाद में हुए २७ मई के निर्वाचन के उपरान्त समाचार पत्रों में अनेक तरह से समाचार छपते रहे हैं। इस सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए आर्यजनों के पत्र व फोन मेरे पास निरन्तर आ रहे हैं। स्थिति को स्पष्ट करने के लिए मैं आर्यजनों की सेवा में कुछ लिख रहा हूं। सर्वप्रथम मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि यह स्थिति क्यों उत्पन्न हुई ?

गत बीस वर्षों से सार्वदेशिक सभा पर स्व० श्री स्वामी आनन्दबोध जी तथा उनके इर्द गिर्द रहने वाले चन्द लोगों का कब्जा बना रहा। सार्वदेशिक सभा में परिवर्तन के लिए जो भी व्यक्ति सक्रिय हुआ उस पर उल्टे सीधे आरोप लगाकर उसे आर्यसमाज से निष्कासित कर दिया गया अथवा उन व्यक्तियों से सम्बन्धित प्रान्तीय सभा को भंग करके तदर्थ समिति नियुक्त कर दी गई। उत्तर प्रदेश, आन्ध्रप्रदेश, पंजाब तथा बिहार प्रान्त इसके उदाहरण हैं। श्री स्वामी आनन्द बोध जी जिस समय जीवित थे उनसे आर्यजगत् के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने अनेक बार निवेदन किया कि आर्यसमाज को बचाना है तो प्रान्तीय सभाओं के झगड़े समाप्त कराओ। जिन प्रान्तों में दो-दो चार सभाये हैं उनमें एक ही सभा होनी चाहिए। परन्तु उनको समझ में यह बात नहीं आई। पूज्य पाद श्री स्वामी सर्वानंद जी महाराज भी उन्हें समझाने में असफल ही रहे। परिणाम स्वरूप मृत्यु पर्यन्त वे प्रधान पद पर रहे। १८ अक्टूबर ९४ को उनका देहावसान हो गया। उनके तथाकथित भक्तों ने उनकी अंत्येष्टि से पूर्व ही उनकी गद्दी पर कब्जा कर लिया। एक तरफ तो उनकी शिष्य मण्डली चिल्लाती आंसू बहा रही थी दूसरी तरफ उनके शव के पास बैठकर श्री रामचन्द्र राव तथाकथित प्रधान तथा श्री सोमनाथ मरवाह कार्यकर्ता प्रधान बन बैठे। उनके इस घृणित कृत्य पर आर्यसमाज के हजारों लोगों ने थू-थू किया।

स्वामी जी की मृत्यु के बाद जो अधिकारी सभा में बैठे उनसे भी लोगों ने कहा कि अब आप जिन प्रान्तों में विवाद है उनको निपटाओ। परन्तु जो लोग विवाद के कारण ही सार्वदेशिक तक पहुंच पाये हों वे विवाद को मिटाने की कैसे सोच सकते हैं ? स्वामी आनन्द बोध जी की मृत्यु के बाद सार्वदेशिक सभा की पहली बैठक दिनांक १२-३-९५ को हुई। इस बैठक में प्रो० शेरसिंह जी ने लिखित में दिया कि हमारा पहला कार्य प्रान्तीय सभाओं के विवादों को मिटाना होना चाहिए। पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, श्री कैप्टन देवरत्न आर्य आदि अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने कहा कि हमें विवाद समाप्त करने चाहिये परन्तु स्वार्थी लोगों ने इनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। अपितु आर्यसमाज के भावी कार्यक्रम का विषय बैठक में आया उस समय बाबू सोमनाथ जी मरवाह ने कहा कि सार्वदेशिक सभा का निर्वाचन होना चाहिए इन्हें आर्यसमाज का भावी कार्यक्रम यही दिखाई दिया। साथ ही यह भी प्रस्ताव रख दिया कि निर्वाचन हैदराबाद में हो। श्री स्वामी धर्मानन्द जी ने कहा कि निर्वाचन दिल्ली में होना चाहिए परन्तु स्वामी धर्मानन्द जी की बात अनसुनी कर दी गई तथा २० व २१ मई की तिथियां निर्वाचन हेतु निश्चित कर दी गईं। प्रतिनिधियों को स्वीकृत करने का कार्य श्री वन्देमातरम् जी ने अपने हाथ में लिया ताकि बोगस प्रतिनिधि बनाकर पुन: प्रधान बना जा सके।

सार्वदेशिक पत्रिका में निर्वाचन की सूचना छप गई। कुछ ही दिन बाद सार्वदेशिक पत्रिका में पढ़ने को मिला कि निर्वाचन २०, २१ की अपेक्षा २७ व २८ को होगा। सभी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं से १४ अप्रैल तक अपने प्रतिनिधियों की सूची भेजने को कहा गया। अनेक प्रान्तों ने अपनी सूचियां सभा मे भेज दी। ज्यों-ज्यों निर्वाचन समीप आता गया सभी प्रतिनिधियों को यह जानने की इच्छा हुई कि कुल कितने प्रतिनिधि स्वीकृत हुए हैं ? पूज्य स्वामी ओमानन्द जी ने अपना व्यक्ति भेजकर सूची मंगवाई जिसे मना कर दिया गया, स्वामी धर्मानन्द जी उड़ीसा तथा राजस्थान सभा के प्रधान श्री विद्यासागर जी शास्त्री ने सूची मांगी उनसे भी मना कर दिया गया। तीन सभाओं के प्रधान प्रतिनिधियों की सूची मांग रहे थे तथा सभा के अधिकारी सूची देने से मना करते रहे। श्री स्वामी ओमानन्द जी ने मुझसे कहा आप स्वयं कार्यालय जाकर सूची लायें। मैं स्वयं कार्यालय गया सच्चिदानन्द जी शास्त्री ने कहा कि आप लिखकर देवें। मैंने लिखकर दिया वन्देमातरम् जी ने भी मेरे पत्र पर लिख दिया कि शीघ्र सूची दे दी जावे। दो दिन बाद पुनः सूची मांगी तो मना कर दिया गया कि हमारे यहां ऐसी परम्परा नहीं है।

इसके बाद प्रतिनिधियों के नाम काटने का दौर प्रारम्भ हुआ। श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ब्यावर आर्यसमाज के सदस्य हैं उन्हें राजस्थान से प्रतिनिधि बनाकर भेजा गया। २४ अप्रैल को श्री स्वामी विद्यानन्द जी को सार्वदेशिक सभा से स्वीकृत पत्र प्राप्त हुआ। कुछ ही दिन ११ मई का भेजा गया सार्वदेशिक सभा का एक रजिस्टर्ड पत्र १६ मई को श्री स्वामी जी को मिला जिसमें लिखा गया था कि आपको हमने जो स्वीकृति पत्र भेजा था वह कार्यालय की भूल से भेज दिया गया, आप सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि नहीं बन सकते क्योंकि आप रहते दिल्ली में हैं तथा सदस्य राजस्थान के हैं। इसके अतिरिक्त जो कुछ स्वामी जी के सम्बन्ध में उस पत्र में लिखा है उसे मैं सार्वजनिक नहीं करना चाहता। एक संन्यासी के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया गया वह अत्यन्त निन्दनीय है। अपने प्रतिनिधित्व की समस्या को लेकर स्वामी जी को न चाहते हुए भी न्यायालय की शरण लेनी पड़ी न्यायालय ने स्वामी जी को निर्वाचन में भाग लेने का अधिकार दिया। स्वामी जी के अतिरिक्त कई लोगों के नाम कटे, दिल्ली से श्री मा० मंगेराम आर्य का नाम काटा गया। उत्तर प्रदेश से श्री सच्चिदानन्द शास्त्री १२ बोगस प्रतिनिधि बनाकर लाये। उनमें से भी श्री देवपाल जी, आचार्य विशुद्धानन्द जी, प्रि० माधोसिंह जी आदि के नाम काट दिए गए।

उपरोक्त सारी स्थिति को देखकर हमें लगा कि श्री वन्देमातरम् षडयन्त्र-पूर्वक पुनः प्रधान बनने के लिए तथा सच्चिदानन्द जी मंत्री तथा सोमनाथ मरवाह कार्यकारी प्रधान बनने हेतु यह चाल चल रहे हैं। इन लोगों के चंगुल से आर्यसमाज को कैसे बचायें। ऐसी स्थिति में निष्पक्ष निर्वाचन नहीं हो सकता। प्रो० शेरसिंह जी ने मुझे सुझाव दिया कि हमें न्याय सभा के अध्यक्ष जस्टिस महावीरसिंह जी से मिलना चाहिए तथा उनसे निवेदन करें कि सार्वदेशिक के निर्वाचन में यह धांधली हो रही है। हम ७ मई को श्री जस्टिस महावीरसिंह जी से मिले उनको सारी स्थिति से अवगत कराया। हमारी बात सुनने के बाद माननीय न्याय सभा के प्रधान जी ने हमसे कहा सार्वदेशिक की न्याय सभा की नियमावली के अनुसार सार्वदेशिक न्याय सभा में ७ न्यायाधीश होने चाहिए। सार्वदेशिक सभा से सम्बन्धित किसी भी विवाद पर सातों न्यायाधीशों की पूर्णपीठ ही सुनवाई कर सकती है। परन्तु न्याय सभा में वर्तमान में केवल चार न्यायाधीश हैं ऐसी स्थिति में मैं कुछ भी करने में असमर्थ हूं।

जस्टिस महावीर सिंह जी से मिलने के बाद न्याय सभा की दुहाई देनेवालों की पोल खुल गई। इन लोगों ने आर्य जनता को मूर्ख बनाने के लिए न्याय सभा को ढाल बना रखा था। जान-बूझकर एक सोची समझी चाल से न्याय सभा को पूरा नहीं किया और उसे पंगु बनाये रखा ताकि सार्वदेशिक के विषय में कोई विचार ही नहीं कर सके। इसके विपरीत यदि कोई अन्याय के विरुद्ध न्यायालय गया तो उसे मुकदमेबाज कहकर आर्यसमाज से निकाल दिया गया। न्याय सभा की पंगुता को देखकर श्री केशवदेव वर्मा को आखिर न्यायालय जाना पड़ा वहां पर भी श्री मरवाह जी ने न्याय सभा की दुहाई देकर तारीख ले ली वह मुकदमा अभी न्यायालय मे विचाराधीन है ५ जुलाई को अगली सुनवाई होनी है।

हम न्यायालय क्यों गए यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक समझता हूं। श्री वन्दे मातरम् जी जिन सभाओं के प्रतिनिधि स्वीकृत करके प्रधान बनने की योजना बना रहे थे उनमे उत्तरप्रदेश की सभा भी है।

क्रमशः

केन्द्रीय रसायन व उर्वरक मंत्री का आह्वान

राज्य शराब उत्पादन को बढ़ावा देने से बचें

नई दिल्ली, जून (वार्ता)। केंद्रीय रसायन एवं उर्वरक मंत्री रामलखन सिंह यादव ने राज्यों को आह्वान किया है कि वे शराब उत्पादन को बढ़ावा देने से बचें तथा इस पर पूर्ण प्रतिबन्ध के संवैधानिक लक्ष्य को पाने के उपाय सुझाएं।

श्री यादव विभिन्न राज्यों के आबकारी मंत्रियों की बैठक को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वर्ष १९७५ को मद्य निषेध नीति के बावजूद कुछ राज्यों ने राज्य के कानून के तहत पीने योग्य अल्कोहल यानी शराब की उत्पादन क्षमता बढ़ाने की अनुमति दे दी।

श्री यादव ने बताया कि इस नीति के तहत शराब उत्पादन की अतिरिक्त क्षमता या ऐसी इकाइयों को वर्तमान उत्पादन क्षमता के

'शराब पर पूर्ण प्रतिबन्ध का लक्ष्य पाने के लिए प्रयास हों'

विस्तार पर पूरी तरह रोक लगाई गई है। राज्यों को इस सम्बन्ध में बार-बार नीति निर्देशों के बारे में आगाह किया गया फिर भी राज्यों में शराब उत्पादन बढ़ रहा है।

श्री यादव ने बैठक में उपस्थित आबकारी मंत्रियों से इसे अत्यंत महत्व के मुद्दे पर पूरा ध्यान देने का आग्रह किया।

केन्द्र सरकार द्वारा जून १९९३ में शीरे और अल्कोहल पर नियंत्रण समाप्त करने के बाद आबकारी मंत्रियों की यह दूसरी बैठक थी।

श्री यादव ने कहा कि अल्कोहल की बोतलों में पैकिंग अथवा उसे विशिष्ट बनाने के लिए उसमें मिश्रण करना भी उत्पादन गतिविधियों में शामिल हैं, इसलिए कानून के मुताबिक इसके लिए भी लाइसेंस की जरूरत होगी।

श्री यादव ने कहा कि चालू वर्ष में १४० लाख टन रिकार्ड चीनी उत्पादन को देखते हुए शीरे का उत्पादन ५६ लाख टन तक होने का अनुमान है इतनी मात्रा देश की मांग के अनुरूप उपयुक्त है उन्होंने कहा कि इस वर्ष शीरे और अल्कोहल की कीमतें कम हैं, फिर भी मैं समझता हूं कि अल्कोहल आधारित उद्योगों के लिए वर्तमान मूल्यों पर अल्कोहल का उपयोग क्षमता के दायरे में नहीं है।

श्री यादव ने कहा कि पिछले दो वर्षों में हमारे सामने अलग-अलग परिस्थितियां रही हैं, लेकिन इस समय हम ऐसी स्थिति में है कि एक संतुलित और व्यावहारिक निदान पर पहुंच सकते हैं।

नरेला में बिना लाइसेंस की मांस की दुकानों की बाढ़

नरेला में अब न जाने क्या होगया है कि मांस शराब और अण्डों की दुकानों की बाढ़-सी आगई है। नरेला आर्यसमाज और स्वामी ओमानन्द सरस्वती का अपना जन्मस्थान होने के कारण नरेला में सिनेमाघर, शराब की व मांस की दुकान नहीं आपाई थी, परन्तु अब न जाने क्या आफत आगई है कि नगर के अन्दर व मेन रोडों पर मांस की खुली बिक्री होरही है और वहीं पर पशुओं को मारकर उनका खून व हड्डियां तक पड़े रहते हैं लोगों का निकलना दूभर होगया है और बीमारियों के फैलने की आशंका है।

सुना है स्वास्थ्य अधिकारी और दूसरे अफसरों के घर पर मांस को मुफ्त में भेज दिया जाता है और सारे कार्य सभी नियम तोड़कर धड़ल्ले से होरहे हैं। "इनको रोको" अन्यथा समाज और जनसाधारण को विवश होकर आन्दोलन करने पर बाध्य होना पड़ेगा।

—आर्यसमाज नरेला, दिल्ली-४०

आर्यसमाज द्वारा चेतावनी

टी.वी. पर वेदों के साथ खिलवाड़ नहीं होने देंगे

कानपुर, आज 'दि वेदाज' नामक टी. वी. सीरियल के द्वारा वेदों के साथ खिलवाड़ करने का जो कुचक्र रचा जारहा है उसे आर्यसमाज कतई सहन नहीं करेगा। उपरोक्त विचार केन्द्रीय आर्यसभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने आर्यसमाज गोविन्द नगर में आयोजित समारोह की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

उन्होंने आगे कहा कि समस्त हिन्दूसमाज मानता है कि वेद अपौरुषेय है। वेद मनुष्यों की रचना नहीं है। इसका ज्ञान तो ईश्वर ने एक अरब सतानवें करोड़ वर्ष पूर्व सृष्टि के आरम्भ में ऋषियों को दिया था। परन्तु दि वेदाज टी. वी. सीरियल में अन्य धार्मिक ग्रन्थों की तरह वेदों की रचना भी मनुष्यकृत मानते हुए मात्र चार हजार ईस्वी पूर्व दिखाकर तथा वेदों को किस्से कहानियों का ग्रन्थ सिद्ध करने का प्रयास कर समस्त हिन्दूसमाज की धार्मिक जनभावना को कुचलने का प्रयास किया जारहा है।

श्री आर्य जी ने आगे कहा कि एक ओर तो हमारी केन्द्रीय सरकार सलमान रश्दी के उपन्यास 'दि सेटेनिक वर्सेज' को बिना गलत सिद्ध किये, बिना उसका अध्ययन किये हुए मुस्लिम भावनाओं को ध्यान में रखकर उस पर प्रतिबन्ध लगा देती है वहीं दूसरी ओर वेदों को गलत ढंग से प्रस्तुत करने पर भी बिना हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को परवाह किये हुए 'दि वेदाज' टी. वी. धारावाहिक को प्रदर्शन की अनुमति प्रदान कर रही है। सरकार हिन्दुओं की सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने का प्रयास न करे अन्यथा इसके बहुत ही गम्भीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे। इस सम्बन्ध में एक प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पारित करके सूचना एवं प्रसारण मन्त्री से मांग की गई है कि उक्त सीरियल पर शीघ्र प्रतिबन्ध लगा दें।

सभा में श्री देवीदास आर्य के अतिरिक्त डा. जातिभूषण, बालगोविन्द आर्य, स्वामी प्रज्ञानन्द, रामजीदास, जगन्नाथ शास्त्री, श्रीमती शीला उप्पल आदि ने प्रमुख रूप से दि वेदाज नामक टी. वी. धारावाहिक के विरोध में रोष व्यक्त करते हुए विचार प्रस्तुत किये।

—बालगोविन्द आर्य मन्त्री आर्यसमाज गोविन्द नगर

जिन्दगी

मौत की तो राजदां है जिन्दगी।
हम सफर और हमजवां है जिन्दगी ॥
हंस के कहती है जिसे खुद आमदेद।
मौत पर यों मेहरबां है, जिन्दगी ॥
जिन्दगी भर जिसको मौत आती न हो।
समझिए, वह रायेगां है, जिन्दगी ॥
आते-आते मौत को आती है मौत।
मौत की दर असल जां है, जिन्दगी ॥
जो मुकम्मल हो नहीं सकती कभी।
इक अधूरी दास्तां है, जिन्दगी ॥
जिसको पाने के लिए मरते हैं लोग।
वह पवित्र इक आस्तां है, जिन्दगी ॥
हर तरफ है जिसके अरमानों की भीड़।
आफतों के दरम्यां है, जिन्दगी ॥
दर्द दिल में आंख में आंसू लिए।
नाज पूरा कारवां है जिन्दगी ॥

नाज सोनीपती

आर्यसमाज के संगठन तथा सम्पतियों की सुरक्षा हेतु आर्यवीर आगे आवें : सुमेधानन्द सरस्वती

आर्यवीर दल हरयाणा के तत्वावधान में दिनांक २८ जून ९५ को शुगरमिल कालोनी रोहतक में आर्यवीर दल के शिविर का उद्घाटन करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित मन्त्री युवा संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने देश भरके आर्य वीरों का आह्वान करते हुए कहा कि अब समय आ गया है कि आर्यवीरों को आर्यसमाज के संघटन तथा इसकी अरबों रुपये की विशाल सम्पत्तियों की रक्षा करने के लिए आगे आना चाहिए। आपने आर्यसमाज के विगत शानदार इतिहास पर प्रकाश डालते हुए बताया कि भारत को स्वतन्त्र करवाने के लिए आर्यवीरों ने प्रमुख भूमिका निभाई है। इसमें सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, वीर सावरकर, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस पं० गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द तथा श्री लाजपतराय आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इन वीरों ने अपने समय में बड़े से बड़ा बलिदान देकर राष्ट्र को स्वतन्त्र करवाकर आर्यसमाज के इतिहास को चमकाया है। राष्ट्र प्रेम की भावना इन्होने आर्यसमाज के सम्पर्क में आने से ही मिली थी। आपने दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि आर्यसमाज के पूर्व नेताओं तथा विद्वानों ने आर्यसमाज के संघटन को सुदृढ़ करने तथा आर्य विद्यालयों के लिए जो अरबों रुपये की सम्पत्ति बनाई थी, उसे हड़पने के लिए कुछ स्वार्थी तत्व आर्यसमाज में घुसकर तथा इसके संघटन को कमजोर करने का षड्यन्त्र रच रहे हैं। येन केन प्रकारेण संघटन में प्रवेश कर गये हैं। अतः युवकों को आर्यवीर दल के शिविरों में सम्मिलित आर्य जीवन तथा आर्य सिद्धान्तों को जानकारी प्राप्त करनी होगी और आर्यसमाज के नियमानुसार आर्य सभासद बनकर आर्यसमाज के संघटन को सुदृढ़ करें। इस प्रकार आर्यसमाज के सुधार कार्यक्रम को सफल करने के लिए आर्यसमाज में घुस-पैठ करने वालों तथा आर्यसमाज की सम्पत्तियों को हड़पने वालों की शुद्धि करनी चाहिए। नकली आर्यों तथा गुण्डों का संघटन बना है, परन्तु असली आर्यों का संगठन नहीं बन सका। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्यवीर दलों का स्कूल कालेज के अवकाश के दिनों में हरयाणा, पंजाब तथा राजस्थान आदि में आर्यवीर दल के शिविरों में मैं सम्मिलित हुआ हूं और आर्यवीरों को संगठित करने का यत्न किया है। हम दयानन्द के वंशज हैं। अतः हमें आर्यसमाज को बचाना है।

आप उपस्थित आर्यवीरों तथा नरनारियों को सावधान करते हुए कहा कि अपने बच्चे तथा बच्चियों को दूरदर्शन के अश्लील कार्यक्रम को देखने से बचायें, अन्यथा ये वैदिक संस्कृति को भूलकर विदेशी संस्कृति के पुजारी बन जावेंगे। आर्यवीर दल शिविरों में अपने बच्चों को भेजकर वैदिक धर्मी बनाओ।

मुख्य अतिथि के रूप में गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के मन्त्री प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार ने आर्यवीरों को सम्बोधित करते हुए सन्देश दिया कि महाभारत की कथा तथा गीता के उपदेश के अनुसार धर्म की रक्षा के लिए सच्चे योद्धा बनकर अधर्म का आचरण करने वालों को हरावें। आर्यसमाज के विद्वानों शिक्षा ग्रहण करें तथा कुसंग से बचें। कर्मफल व्यवस्था का पालन करें। शिविर में ७ दिन की दिनचर्या को अपने जीवन में ढालने का यत्न करें।

इस अवसर पर सभा के सहायक वेद प्रचाराधिष्ठाता श्री सत्यवीर शास्त्री ने सार्वदेशिक सभा के नव निर्वाचित युवा मन्त्री का रोहतक पधारने पर हार्दिक स्वागत किया तथा शिविर में उपस्थित नरनारियों को परामर्श दिया कि वे अपने बच्चों को सुयोग्य बनाने के लिए महाभारत के वीर योद्धाओं जैसा बनाते। इस प्रकार की शिक्षा केवल आर्यसमाज ही देता है। आजादी के पश्चात् हमारा पतन हो रहा है। हमारे नेताओं पर भ्रष्टाचार तथा धनराशि के गबन में आरोप लग रहा है। सरकार ने भवनों का निर्माण तो किया है, परन्तु उनमें रहने वाले मानवों के निर्माण करने पर ध्यान ही नहीं दिया अपितु सांग, सिनेमें तथा दूरदर्शन द्वारा मानव को दानव बनाने पर शक्ति लगाई है। आर्यवीर दल के शिविरों में सम्मिलित होकर मानव निर्माण हो सकता है।

इससे पूर्व सभा के भजनोपदेशक श्री जयपाल, तेजवीर, सत्यपाल की मण्डली द्वारा समाज सुधार के भजन हुए। श्री शिवकृष्ण आर्य तथा उसके साथी शिविर को सफल करने में दिनरात जुट रहे हैं।

केदारनाथ आर्य

बाढड़ा में शराब के ठेकेदारों की पिटाई

जिला भिवानी के उप तहसील मुख्यालय बाढड़ा में वर्षों से शराब ठेका बन्द है, लेकिन समीप के गांव माण्ढी आदि में शराब का ठेका होने के कारण वहां के ठेके की शराब की सप्लाई अवैध रूप से होती रही है जिसका गांव के जागरुक लोगों व बाढड़ा अड्डे के दुकानदारों ने विरोध किया, लेकिन फिर भी ठेकेदार ने चोरी छुपे अपने आदमियों द्वारा शराब की बिक्री जारी रखी। गतमास इसके प्रतिरोध मे ग्रामीण व दुकानदार इकट्ठे होकर शराब के ठेकेदार के पास गये और बाढड़ा में शराब न बेचने का आग्रह किया लेकिन ठेकेदार के आदमियों ने अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए शराब बेचते रहने का दुराग्रह किया। उनकी इस उद्दणता पर क्रुद्ध ग्रामीणों तथा दुकानदारों ने उनको जमकर पिटाई की, शराब की बोतलें तोड़ दी तथा पुलिस थाने में रिपोर्ट करके शराब का जखीरा व अवैध रूप से शराब बेचने वाले ठेकेदार के आदमियों को पकड़वा दिया जो बाद में जमानत पर छूटे। इस पुण्य कार्य में ग्राम पंचायत बाढड़ा और बस अड्डा कमेटी बाढड़ा का पूरा-पूरा योगदान रहा।

कप्तान यज्ञपाल शास्त्री विजय मेडिकल हाल बाढड़ा, जि० भिवानी

समाज हित में निवेदन

गत आठ-दस महीनों से स्वामी सत्यपति जी के विषय में कुछ न कुछ लिखकर पत्र भेजे जारहे हैं। भेजनेवाला अपना नाम नहीं दे रहा है। जो भी सज्जन यह कार्य कर रहे हैं उससे आर्यसमाज और आर्यवन विकास आश्रम का हित नहीं अपितु अहित ही होरहा है।

अतः हमारा निवेदन है कि इस प्रकार का कार्य बन्द करें। इसी में आर्यसमाज और वैदिकधर्म का हित है। यदि स्वामी सत्यपति जी से कोई शिकायत है इनसे बातचीत करके दूर करें। आशा है अपना सामाजिक उत्तरदायित्व समझकर पत्र लेखन-प्रकाशन और वितरण की पुनरावृत्ति न करके अपने आर्योचित व्यवहार का परिचय देंगे।

—सोमदेव शास्त्री एवं शिववीर शास्त्री
उपमन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा बम्बई

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इस सम्पादकीय में कुछ टिप्पणियां आर्य प्रतिनिधि सभा और इसके वर्तमान प्रधान के विषय में भी की गई हैं। इसके उत्तर में इतना ही लिखना है कि स्वामी ओमानन्द सरस्वती आर्यसमाज के संगठन के लिए निष्काम कार्य करनेवाले निष्ठावान् व्यक्ति हैं। इन्होंने आर्यसमाज को बहुत कुछ दिया है और इसके प्रतिफल में कभी किसी पद की लालसा नहीं रखी है। इनके लिए यह कहना कि "तब से स्वामी ओमानन्द जी इस सभा पर कुण्डली मारे बैठे हैं किसी को नजदीक नहीं आने देते।" सच्चाई से कोसों दूर हैं। स्वामी जी की तो यह भावना है कि आर्यसमाज के संगठन में सदा श्रेष्ठ व्यक्तियों का वर्चस्व बना रहे। स्वामी जी और हरयाणा सभा के विषय में सम्पादकीय लेखक की जानकारी भारी अधूरी है।

डा० रणजीतसिंह उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा

एक क्विटल घी का हवन किया गया

आदिसृष्टि पर अगर हम नजर डालते हैं तो उन महान् ऋषियों का इतिहास स्वर्ण अक्षरों में लिखा पायेगा। क्योंकि उस समय हमारे राष्ट्र में महान् त्यागी तपस्वी तथा सच्चे महर्षि हुआ करते थे और वे ऋषि जंगल वियाबानों में सच्ची आत्मा से प्रजा की रक्षा के लिए तपस्या किया करते थे और उन ऋषियों का केवल एक ही कार्य था कि प्रजा की रक्षा करना। वे प्रजा की रक्षा के लिए जंगल वियावानों में यज्ञ किया करते थे और उस यज्ञ द्वारा राष्ट्र का पर्यावरण ठीक रहता था तथा राष्ट्र में कोई रोग नहीं होते थे और उस यज्ञ की कृपा से जो हमारे देश राष्ट्र के राजा होते थे वे ऋषियों से डरते थे। वे राजा राजगद्दी पर बैठकर सोचा करते थे कि कभी हमारे राज्य में हमारे द्वारा प्रजा या ऋषियों को कोई कष्ट न हो। वे स्वयं प्रजा के पास उनके दु.ख-दर्द सुनने जाया करते थे। उन राजाओं का केवल एक ही लक्ष्य था कि प्रजा को हर तरह से सुखी रखा जावे। वे हमेशा एक बात ही सोचा करते थे कि कभी राजा से ऐसी कोई गलती न हो जाए जिससे कि प्रजा को कष्ट पहुंचे, ये सब उन महान् ऋषियों की ही तपस्या का फल होता था। क्योंकि ऋषि यज्ञ करते थे। इसी प्रकार आज हमारे राष्ट्र पर अनेक समस्याएं छाई हुई हैं और समस्याओं का का समाधान होना सबके लिये मुश्किल का पहाड़ बना हुआ है।

आज का प्रत्येक प्राणी यह सोच में डुबा हुआ है कि हमारे ऋषियों के राष्ट्र में कब सुधार आयेगा। इन सभी विषयों को लेकर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान स्वामी ओमानन्द ने जगह-जगह हजारों अश्वमेध यज्ञ करने का फैसला किया है। सबसे पहला यज्ञ हरयाणा राज्य के जिला भिवानी गांव गिगनाऊ में शुरू किया गया है। इस यज्ञ की जिम्मेवारी आर्यसमाज लोहारू के पूर्वप्रधान श्री रामअवतार आर्य की थी। श्री रामअवतार आर्य ने स्वामी ओमानन्द सरस्वती के आशीर्वाद से युवाओं को इकट्ठा किया है। एक युवा संगठन बनाया है और उस युवा संगठन का नाम समाज सुधार मोर्चा रखा है। समाज सुधार मोर्चा के प्रधान स्वयं रामअवतार आर्य हैं। समाज सुधार मोर्चा में सैकड़ों महर्षि दयानन्द सरस्वती के समर्पित सिपाही होंगे जो कि स्वामी ओमानन्द सरस्वती के आशीर्वाद से समाज में फैली बुराइयों के खिलाफ जनजागरण अभियान चलायेगा तथा अपना कार्यक्षेत्र बढ़ायेंगे। आर्य श्री रामअवतार आर्य ने श्री स्वामी जी को बताया कि हम स्वामी जी को सौ ऐसे युवक तैयार करके देंगे जो कि शराबबन्दी के लिए हर कुर्बानी देने के लिये तैयार रहेंगे। आगे श्री आर्य ने कहा कि वह दिन दूर नहीं स्वामी दयानन्द सरस्वती व स्वामी ओमानन्द सरस्वती के राष्ट्र को पुनः ऋषियों का देश घोषित करेंगे।

इस यज्ञ में स्वामी योगानन्द सरस्वती आंधी आश्रम का भी पूरा-पूरा सहयोग रहा जिन्होंने स्वामी ओमानन्द सरस्वती को कहा है कि मैं भी स्वामी जी को यज्ञों में हर तरह का सहयोग देता रहूंगा। अब इन्होंने एक लाख साठ हजार रुपये यज्ञ के लिए स्वामी जी को दक्षिणा में दिए हैं। इन यज्ञों में सबसे पहला यज्ञ गांव गिगनाऊ तहसील लोहारू जिला भिवानी में हुआ। इसका विस्तृत समाचार आगामी अंक में पढ़ें।

आर्यमित्र—हवासिंह आर्य सेवक आर्यसमाज
मु० पो० लोहारू जिला भिवानी (हरयाणा)

नामकरण संस्कार

दिनांक २१-५-९५ को ग्राम मिसड़ीवाली (भिवानी) में श्री शेरसिंह जी के घर ईश्वर कृपा से पुत्र पैदा हुआ। ४-६-९५ को आचार्य धर्मपाल जी द्वारा घर पर हवन करके बच्चे का वैदिक रीति से नाम करण संस्कार किया गया। बच्चे का नाम पीयूष रखा गया। श्री शेरसिंह जी व श्रीमती शकुन्तला आर्या ने बच्चे के साथ यजमान का स्थान ग्रहण किया। इस अवसर पर श्री मदनलाल शास्त्री, प्रो० सूर्यसिंह श्रीमती सुमेधा आर्या ने बच्चे को आशीर्वाद दिया। हवन पर गांव के काफी नर-नारियों ने भाग लिया। शान्तिपाठ के बाद प्रीति भोज किया गया।

अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी सभा उपदेशक

"बड़ी ही कठिन है डगर आर्यो

जिस डगर को दयानन्द बताकर गये,
वह बड़ी ही कठिन है डगर आर्यो।
तीव्र शूलों भरा बहुत दुर्गम है पथ,
हर कोई चल न सकता डगर आर्यो।
दयानन्द की डगर पर चलेगा वही,
सत्य कहने से जो हिचकिचाये नहीं,
विघ्न बाधाओं से घबराये नहीं,
वह कहलायेगा श्रेष्ठ नर आर्यो ॥१॥
पाप पाखण्ड को जो पनपने न दे,
बीरता पिशाचनी को फटकने न दे।
बेधड़क कदम आगे बढ़ाता रहे,
जो हमेशा रहेगा निडर आर्यो ॥२॥
दयानन्द की डगर पर श्रद्धानन्द चले,
सभी बिछड़े हुओं को लगाया गले,
लेखराम आर्य मुसाफिर चले,
कर गये नाम जग में अमर आर्यो ॥३॥
राह में खूब काटों की भरमार थी,
आंधी वर्षा व ओलों की बौछार थी,
डगमगाये नहीं पग हटाये नहीं,
कुछ हुआ न किसी का असर आर्यो ॥४॥
दयानन्द की डगर जिस किसी ने गही,
अन्ध विश्वासों से दूर होगा वही,
दुर्व्यसन त्याग सारी विषय वासना,
वेद प्रचारार्थ रह अग्रसर आर्यो ॥५॥

रचयिता—स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

सर्वोदय नेता बाबा बनारसीलाल की पांचवीं पुण्य स्मृति सम्पन्न

दिनांक १८-६-९५ को समाजसेवी बाबा बनारसीदास जी की पांचवीं पुण्य तिथि सर्वोदय भवन हिसार में श्री बलवन्तराय तायल पूर्व वित्तमन्त्री हरयाणा की अध्यक्षता में मनाई गई। मुख्यवक्ता के रूप में श्री ठाकुरदास नंग (पूर्व अध्यक्ष सर्व सेवा संघ वाराणसी) थे। जिन्होंने आज की स्थिति और गांधी जी विषय पर ऐतिहासिक तथ्य देकर विस्तार से विचार रखे। मंच संचालन पं० जगत स्वरूप एडवोकेट ने किया। बाबा जी को श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर शहर के प्रमुख व्यक्तियों ने काफी संख्या में भाग लिया।

अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी सभा उपदेशक

शराब बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इनसे दूर रहें।

सरिता का दुष्प्रचार—

क्या वेदों में यौन स्वच्छन्दता का वर्णन है

हमें अनेक पाठकों ने लिखा है कि हिन्दी की प्रसिद्ध पत्रिका "सरिता" में ऐसे लेख प्रकाशित होते हैं जिनमें वेदों और महाभारत का बीभत्स रूप प्रस्तुत किया जाता है। इनके उत्तर में कुछ लेख भी विद्वज्जनों ने सरिता में प्रकाशनार्थ भेजे परन्तु वे प्रकाशनार्थ स्वीकृत नहीं हुए। हम प्रस्तुत लेख में महाभारत पर किए गए आक्षेपों को छोड़ देते हैं, परन्तु वेदों पर किए गए यौन स्वेच्छाचार के मिथ्या आरोपों का यथाशक्ति निराकरण करने का प्रयास करेंगे जिससे जनता को वेदों के यथार्थ उच्च स्वरूप का ज्ञान हो सके। एक बात और स्पष्ट है कि सरिता में लिखने वाले हमारे मित्र साधारणतः महीधर या किसी ऐसे अन्य आधुनिक साधारण भाष्यकार के वेद भाष्य को प्रामाणिक मानते हैं जो सायण या मैक्समूलर पर आधारित है। उन्हें आज भी महर्षि दयानन्द के महर्षि यास्क के निरुक्त पातञ्जलि के महाभाष्य एवं वेद-व्याख्या के महत्त्वपूर्ण ब्राह्मण ग्रन्थों के आधार पर किए गए वेद भाष्य के प्रति मानो कुछ एलर्जी (प्रत्यूर्जता) है। महर्षि दयानन्द ने वैदिक शब्दों को यौगिक मानकर और साथ ही वेद में इतिहासवाद का खण्डन करते हुए मन्त्रों के आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक और याज्ञिक अर्थ किए हैं। उनके वेद भाष्य के मॉनियर विलियम्स और मैक्समूलर आदि विद्वान् भी ग्राहक थे। मैक्समूलर के विचारों पर महर्षि दयानन्द के भाष्य का जो अनुकूल प्रभाव पड़ा वह उनकी पुस्तक "भारत से हम क्या सीख सकते हैं।" (इंडिया व्हाट कैन इट टीच अस) के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है।

सरिता के लेख में कहा गया है कि भाई-बहिन के पवित्र सम्बन्ध भी कभी-कभी कामातुरता की आग में झुलस जाते हैं। स्वयं पूषादेव अपनी बहिन उषा के जार या प्रेमी बताए गए हैं। वह मन्त्र यह है—

पूषणंच जारमुप स्तोषाम वाजिनम्।
स्वसुर्यो जार उच्यते। ऋ. ६-५५-४

महर्षि का अर्थ है—हे राजा आदि मनुष्यो! जैसे सूर्य रात्रि का निवारण करता है वैसे ही प्रजाजनों को जीर्ण करने वाले (जार) मनुष्यों का निवारण करो।

(२) सरिता के अनुसार ऋग्वेद (१०-१०-७ से ११) में यम और यमी अर्थात् भाई बहिन का संवाद है जिसमें बहिन यमी अपने भाई यम से सहवास करना चाहती है। वास्तव में यह दसवां सूक्त यम-यमी का अर्थात् पति-पत्नी का संवाद है। इसके सातवें व आठवें मन्त्र यह हैं—

यमस्य मा यम्यं काम आगन्त्समाने योनौ सहशेय्याय।
जायेव पत्ये तन्वं रिरिच्यां वि चिद्वृहेव रथ्येव चक्रा ॥७॥
न तिष्ठन्ति न नि मिषन्त्येते देवानां स्पश इह ये चरन्ति।
अन्येन मदाहनो याहि तूयं तेन वि वृह रथ्येव चक्रा ॥८॥

अर्थात् जब एक असमर्थ पति अपनी पत्नी को नियोग द्वारा अन्य पुरुष से समागम कर सन्तान प्राप्त करने की आज्ञा देता है तब स्वयं भ्राता हो जाता है, अतः उसके साथ पुनः समागम करने वाले को समाज और राष्ट्र के जन पापी कहते हैं। अतः तेरा भाई बन चुका पति अब तेरे साथ सहवास कर्म नहीं करना चाहता। परन्तु हे प्रिये दिन और रात की तरह कार्य कर रहे सृष्टि के देव न किसी के लिए रुकते हैं और न क्षण भर भी झपकते हैं। इसलिए तू इनके समान सृष्टि चक्र को चलाने के लिए अन्य पुरुष को प्राप्त हो। यहां आपद् धर्म के रूप में असमर्थ पति स्वयं अपनी पत्नी को अन्य पुरुष से सहवास करने की आज्ञा देता है। वेद घर-गृहस्थी वाले पति-पत्नी के सहवास का सीधी भाषा में वर्णन करता है, उसमें कदाचार की कल्पना करना अपनी अश्लील कल्पनाओं को व्यक्त करना होगा।

सरिता के लेखक ने ऋग्वेद (१०-६१-७) में प्रजापति के अपनी ही पुत्री उषा के साथ यौन सम्बन्ध का वर्णन किया है, जो स्वभावतः किसी भी व्यक्ति को बीभत्स एवं अप्राकृतिक प्रतीत होता है। उनके सम्बन्ध के फलस्वरूप रुद्र की उत्पत्ति बतलाई है, साथ ही इस लेखक के अनुसार प्रजापति द्वारा अपनी दुहिता से समागम करने के लिए काफी भाग दौड़ करनी पड़ती है। महर्षि यास्क ने निरुक्त २-१० में कहा है कि—

सूर्यमस्याः (उषसः) वत्समाह साहचर्यात्

अर्थात् सूर्य को उषा का पुत्र साहचर्य के कारण कहा है। उपर्युक्त ६१ वें सूक्त का ७ वां मन्त्र यह है—

पिता यत्स्वां दुहितरमधिष्कन्क्ष्मया रेतः संजग्मानो नि षिञ्चत्।
स्वाध्योऽजनयन्ब्रह्म देवा वास्तोष्पतिं व्रतपां निरतक्षन् ॥

अर्थात् (पिता) प्रजापति आदित्य (यत्) जब (स्वाम्) अपनी (दुहितरम्) उषा को (अधिष्कन्) प्राप्त करता है तब (क्ष्मया) पृथिवी के साथ संगत होता हुआ (रेतः) अपनी किरण रूप तेज को (निषिचत्) आकाश में फैलाता है (स्वाध्यः) अच्छी प्रकार प्रगट (देवाः) सूर्य किरणें (ब्रह्म) अग्नि रूप तेज को (अजनयन्) उत्पन्न करते हैं और उसे (व्रतपां) व्रतों के पालक (वास्तोष्पति) रुद्र नामक अग्नि को (निःअक्षतन्) निर्मित करते हैं।

अर्थात् प्रातःकाल होने पर आदित्य उदित होते हैं, तब आकाश में उषा प्रगट होती है, और वह पृथिवी के साथ संगत होकर आकाश में अपना तेज व प्रकाश वितरित करता है, उससे दिन और ताप आदि उत्पन्न होते हैं।

महर्षि यास्क ने सूर्य को उषा का पुत्र साहचर्य से कहा है। यह तो एक प्राकृतिक सच्चाई है जिससे सभी परिचित हैं, क्योंकि प्रातःकाल होते समय पहले उषादेवी का आगमन होता है, अर्थात् सूर्योदय होता है। हम यह समझने में अपने को असमर्थ पाते हैं कि इस सुन्दर प्राकृतिक घटना में प्रजापति सूर्य का अपनी दुहिता के साथ समागम की बीभत्स कल्पना कहां से आ टपकी। सरिता द्वारा वेदों का यह काल्पनिक बीभत्स रूप पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना अति निंदनीय ही माना जायेगा।

(आर्य सेवक से साभार)

दयानन्द उवाच—

यूरोपियनों की उन्नति का क्या कारण है

जो यूरोपियनों में बाल्यावस्था में विवाह न करना, लड़का-लड़की को विद्या, सुशिक्षा करना कराना, स्वयंवर विवाह होना, बुरे आदमियों का उपदेश नहीं होना है। विद्वान् होकर जिस किसी के पाखण्ड में नहीं फंसते। जो कुछ करते हैं वह सब परस्पर विचार और सभा से निश्चित करके करते हैं। अपनी स्वजाति की उन्नति के लिए तन-मन-धन व्यय करते हैं। आलस्य को छोड़ उद्योग किया करते हैं।

देशी खाना अंग्रेजी डकार

यह हमारे देश का दुर्भाग्य ही है कि आजादी के ४८ वर्षों बाद तक भी देश को ऐसा नेतृत्व (लालबहादुर शास्त्री को छोड़कर) नहीं मिल सका, जो देशवासियों विशेषकर युवाओं के लिए आदर्श बनकर उभरे। देश के लोगों को एक सूत्र में पिरोकर उन्हें उनकी सांस्कृतिक विरासत से पहचान करवाएं, ताकि वे यह जान सकें कि अपनी संस्कृति, अपनी भाषा के बिना वे कितने अधूरे हैं।

दूरदर्शन पर भी अक्सर देखने को मिलता है कि हिंदी फिल्मों में काम करनेवाले कलाकार हिंदी फिल्मों से जुड़े कार्यक्रमों में, हिंदी में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अंग्रेजी में देना अपनी शान समझते हैं। जिस भाषा की फिल्मों में इनके माल-पुए चलते हैं, उसी भाषा से यह कैसी घृणा? कारण यह कि इनको बचपन से ही इनके मां-बाप द्वारा पाश्चात्य संस्कृति के रंग से ऐसा लीप दिया गया है कि अब इनके आचार-विचार से भारतीयता तो टपकती ही नहीं। नंगे फोटो खिंचवाना, फिल्मों में कहानी की मांग का बहाना बनाकर अश्लील नृत्य करना, द्विअर्थी गीतों पर कूल्हे मटकाना ... क्या यही तहजीब है इस देश की?

फिर दुःख इस बात का है कि देश की युवा पीढ़ी का आदर्श अब भगतसिंह, सुभाषचन्द्र बोस या झांसी की रानी नहीं, अपने देश की भाषा व संस्कृति से विमुख यही शिल्पा शेट्टी, ममता कुलकर्णी, अक्षय-कुमार या गोविंदा हैं। इन्होंने धन कमाने के लोभ में समाज में अश्लीलता का कोढ़ फैलाने का ठेका ले रखा है।

रहा हमारा मौजूदा नेतृत्व तो देश का युवा वर्ग चाहे धंसे गर्त में, उसकी कुर्सी सलामत रहनी चाहिए। वरना देश के प्रधानमन्त्री के एक इशारे पर क्या यह सब रुक नहीं सकता? लेकिन हमारे 'मौनी बाबा' को देश की कहां परवाह है? भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए यदि 'मौनी बाबा' कुछ करेंगे तो उनका वोट-बैंक खिसक नहीं जाएगा।

प्रत्येक देशभक्त भारतवासी ऋणी है रामानन्द सागर व बलदेव-राज चोपड़ा का, जिन्होंने रामायण व महाभारत के माध्यम से घर-घर में बच्चों से बड़ों तक को भारतीय संस्कृति से जोड़ा। नहीं तो पश्चिम की अंधी नकल व नास्तिकता के दौर में कितने घरों में रामायण या महाभारत पढ़ी जाती है?

आज भारत की सांस्कृतिक विरासत की नैया वोट-परस्ती के थपेड़ों में डगमगाती, तुष्टीकरण के सागर में डूबने को है। बस कहीं से एक अदद विवेकानन्द का अवतरण होजाए, जो भारत का गौरव-शाली अतीत फिर से लौट लाए। कब आएगा वह दिन?

—सोमनाथ नारंग, ई-४४४, अर्जुन गेट, करनाल

आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक में संस्कृत शिक्षण व्यवस्था

आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक में संस्कृत साहित्य और संस्कृत व्याकरण पढ़ाया जायेगा। संस्कृत पढ़ने के इच्छुक अभिलाषी बालक, युवा, वृद्ध आ सकते हैं। संस्कृत के विद्वान् आचार्य सत्यव्रत महात्मा प्रभु आश्रित आर्ष गुरुकुल सुन्दरपुर (रोहतक) पढ़ायेंगे।

नोट :—पढ़ाने का समय सायंकाल ५-३० से ७-३० बजे तक रहेगा। अपने साथ कापी पेन अवश्य लायें। सम्पर्क करें।

—डा० बैजनाथ कुन्द्रा वानप्रस्थी, आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक

आर्यसमाज के अधिकारी वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन करें

वेद का पढ़ना-पढ़ाना तथा सुनना-सुनाना सभी आर्यों का कर्त्तव्य है। ऋषि दयानन्द के इस आदेशानुसार वर्षा ऋतु में जुलाई से सितम्बर तक वेदप्रचार की व्यवस्था की जाती है।

अतः जो आर्यसमाज अपने यहां वेदप्रचार सप्ताह अथवा अश्वमेध यज्ञ का आयोजन करना चाहते हैं, वे सभा से पत्र व्यवहार करके तिथियां तथा सभाप्रचारकों तथा अन्य विद्वानों के नाम सुरक्षित करवाने का कष्ट करें। —सुदर्शनदेव आचार्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक फोन : (७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ४०७२२) से प्रकाशित।

भारत-सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ पजि० नं० P/RTK-७३ फोन नं० ७६४२ दूरभाष १, ६६, ८८, ६६, ८६

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री
सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०
वर्ष २२ अंक ३१ १४ जुलाई, १९९५ (वार्षिक शुल्क ५०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

आर्यसमाजों के अधिकारियों से आवश्यक निवेदन

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेदका पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना, सब आर्यों का परम धर्म है। आर्यसमाज का नियम-३। संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। आर्यसमाज के नियम-६

आर्यसमाज के इन दोनों नियमों को दृष्टि में रखकर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने सारे हरयाणा में वेद प्रचारार्थ अश्वमेध यज्ञों का आयोजन करने का निश्चय किया गया है। समाल जिला रोहतक तथा खिगनाऊ जिला भिवानी में यज्ञ प्रभावशाली ढंग से सम्पन्न हो चुके हैं जिनका विवरण सर्वहितकारी में पढ़ें। यज्ञ से १, २ दिन पूर्व सभा के उपदेशकों द्वारा भजन, उपदेश होते हैं और अश्वमेध यज्ञ पर सैकड़ों की की संख्या में युवक शराब, मांस आदि दुर्व्यसनों छोड़ने की प्रतिज्ञा करते हैं। विद्वानों के वेदोपदेश से प्रभावित होकर अपने जीवन का सुधार करने का सुअवसर प्राप्त होता है। यज्ञ की सुगन्ध चारों ओर फैलती है और वातावरण शुद्ध होता है। वेद ध्वनि गुंजती है।

अतः हरयाणा के आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों तथा कार्यकर्त्ताओं से मेरा निवेदन है कि हरयाणा की पुरानी परम्परा के अनुसार वर्षा ऋतु में वेद प्रचार तथा समाज सुधार के लिए अपने यहां अश्वमेध यज्ञों का आयोजन करने के लिए सभा से पत्र व्यवहार करें।

ओमानन्द सरस्वती सभा प्रधान

गुरु-शिष्य-संवाद :

नक़ली, फ़सली, असली आर्यसमाजी

शिष्य—आर्यसमाज का भविष्य कैसा है? गुरुजी!

गुरुजी—उज्ज्वल नहीं है, बेटा।

शिष्य—ऐसा क्यों गुरुजी?

गुरुजी—आर्यसमाज में अब नकली और फसली आर्यों का बोलबाला है। इन दस्युओं ने असली आर्यों को पीछे धकेल रखा है, बेटा।

शिष्य—नकली, फसली और असली का यह भेद क्या है? गुरुजी!

गुरुजी—जो दिखावे में त्यागी, तपस्वी, परोपकारी, धार्मिक और भीतर से धूर्त, कपटी, स्वार्थी, पापी होते हैं उन्हें नकली जानो और वे जो वैदिक और अवैदिक दोनों चाल चलते हैं, निराकार ईश्वर की उपासना करते हैं तो साकार मूर्ति को पूजते भी हैं; गुण कर्म से वर्ण-व्यवस्था मानते हैं पर बेटा-बेटी लेन-देन

(शेष पृष्ठ ७ पर)

वेद सुधा

यत् ते देवा अकृण्वन् भाग धेयममावास्ये संवसन्तो महित्वा।
तेना नो यज्ञं पिपृहि विश्ववारे रयिं नो धेहि सुभगे सुवीरम्॥

अथर्व वेद ७/७९/१

शब्दार्थ—(अमावास्ये) अमावास्ये (ते महित्वा) तेरी महिमा से (यत्) जब (संवसन्तः) सम्यक मिलकर रहते हुए (देवाः) देव वृत्ति के व्यक्ति (भाग धेयं अकृण्वन्) हवि का भाग करते हैं अर्थात् यज्ञशील होते हैं तो हे (विश्व वारे) सबसे वरने के योग्य (सुभगे) शोभन भाग्य युक्त (तेन) उस हविभाग के द्वारा (नः यज्ञं पिपृहि) हमारे यज्ञ को पूर्ण कर तथा (नः) हमारे लिये (सुवीरम्) उत्तम वीर सन्तानों वाले (रयिम) ऐश्वर्य को (धहि) धारण कर।

भावार्थ—प्रस्तुत वेद मन्त्र में घर को स्वर्ग बनाने का सुन्दर सूत्र दिया गया है। स्वर्ग तो है उसकी कल्पना कहीं अन्यत्र न कर धरती के स्वर्ग गृहस्थ को संभालने की आवश्यकता है। जिस प्रकार अमावस्य में सूर्य और चन्द्र साथ-साथ रहते हैं उसी प्रकार हमें जीवन सूर्य-प्रकाश व तेजस्विता चन्द्र-आल्हाद व सौम्यता का समन्वय करना होगा। तेजस्विता व सौम्यता का समन्वय सब दिव्य गुणों की उत्पत्ति का हेतु बनता है। जिस घर में रहने वाले व्यक्ति सूर्य व चन्द्र तत्वों को अपने में समन्वय करते हैं उस समय वे परस्पर मिलकर रहते हैं जहां मिलकर रहेंगे वहां अशांति, कलह, दुख का नाम न होगा। वे देववृत्ति के बनकर यज्ञशील होते हैं—यज्ञ का वास्तविक स्वरूप—देवपूजा, संगतिकरण दान देखने को मिलता है जिससे परिवार एक ओर यज्ञ की भौतिक सुगन्धित से सुरभित होता है तो दूसरी ओर आध्यात्मिक रूप से उन्नत एवं पुष्ट होता है। वहां पंच यज्ञों से सब सम्पन्नता दृष्टिगोचर होती है।

महेशचन्द गर्ग सम्पादक हितोपदेशक सासनी, अलीगढ (उ प्र.) से साभार

मनुष्य कौन ?

मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे, इतना ही नहीं, किन्तु अपने सर्व-सामर्थ्य से धर्मात्माओं चाहे वे महाअनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हों—उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ महाबलवान और गुणवान भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करें। अर्थात् जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सदा किया करें। इस काम में चाहे उसे कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें, परन्तु इस मनुष्य रूप धर्म से पृथक् कभी न हो।

श्वेत पत्र से साभार — महर्षि दयानन्द सरस्वती

"यज्ञ और उसके मौलिक सिद्धान्त"

प्रतापसिंह शास्त्री, पत्रकार

गतांक से आगे

तुल्य बनाने के दृष्टान्त से रेखागणित विद्या भी जानी जाती है कि जिससे त्रिभुज आदि रेखाओं का भी मनुष्यों को यथावत् बोध हो तथा उसमें जो ईंटों को संख्या को है उससे गणित विद्या भी समझी जाती है इस प्रकार से कि जब इतनी लम्बी चौड़ी और गहरी वेदि हो तो उसमें इतनी बड़ी ईंटे इतनी लगेगी इत्यादि वेदि के बनाने में बहुत प्रयोजन है तथा सुवर्ण, चांदी वा काष्ट के पात्र इस प्रकार से बनाते हैं कि उनमें जो घृतादि पदार्थ रखे जाते हैं वे बिगड़ते नहीं और कुश इसलिये रखते हैं कि जिससे यज्ञशाला का मार्जन हो और चिवटी आदि कोई जन्तु वेदि की ओर अग्नि में न गिरने पावे ऐसे ही यज्ञशाला बनाने का यह प्रयोजन है कि जिससे अग्नि की ज्वाला में वायु अत्यन्त लगे और वेदि में कोई पक्षी किंवा उनकी बीठ भी न गिरे इसी प्रकार ऋत्विजों के बिना यज्ञ का काम कभी नहीं हो सकता इत्यादि प्रयोजन के लिए यह सब विधान यज्ञ में अवश्य करना चाहिए इससे भिन्न द्रव को शुद्धि और संस्कार आदि भी अवश्य करने चाहिए परन्तु इस प्रकार से प्रणीता पात्र रखने से पुण्य और इस प्रकार रखने से पाप होता है इत्यादि कल्पना मिथ्या ही है किन्तु जिस प्रकार करने में यज्ञ का कार्य अच्छा बने वही करना आवश्यक है अन्य नहीं।

प्रश्न—यज्ञ मे देवता शब्द से किसका ग्रहण होता है ?

उत्तर—जो जो वेद में कहे हैं उन्हीं का ग्रहण होता है इसमे यह यजुर्वेद का प्रमाण है कि (अग्निर्देवता वातो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता इत्यादि) कर्मकाण्ड अर्थात् यज्ञक्रिया में मुख्य करके देवता शब्द से वेदमन्त्रों का ही ग्रहण करते हैं क्योंकि जो गायत्र्यादि छन्द हैं वे ही देवता कहाते हैं और इन वेदमन्त्रों से ही सब विद्याओं का प्रकाश भी होता है। इसमें यह कारण है कि जिन मन्त्रों में अग्नि आदि शब्द हैं उन-उन मन्त्रों का और उन-उन शब्दों के अर्थों का अग्नि आदि देवता नामों से ग्रहण होता है। मन्त्रों का देवता नाम इसलिये है कि उन्हीं से सब अर्थों का यथावत प्रकाश होता है। वेदमन्त्रों करके अग्निहोत्र से लेके अश्वमेध पर्यन्त सब यज्ञों की सिल्प विद्या और उनके साधनों की सम्पति अर्थात् प्राप्ति होती है और कर्मकाण्ड को लेके मोक्षपर्यन्त सुख मिलता है इसी हेतु से उनका नाम देवता है। दैवत उनको कहते हैं कि जिनके गुणों का कथन किया जाए अर्थात् जो-जो संज्ञा जिन-जिन मन्त्रों में जिस-जिस अर्थ को होती है उन-उन मन्त्रों का नाम वही देवता है। जैसे—'अग्निं दूतं पुरो दधे" इस मन्त्र में अग्नि शब्द चिन्ह है वहां इसी मन्त्र को अग्निदेवता जानना चाहिए ऐसे ही जहां-जहा मन्त्रों में जिस-जिस शब्द का लेख है वहां-वहां उस मन्त्र को ही देवता समझना होता है। इसी प्रकार सर्वत्र समझ लेना चाहिए। सो देवता शब्द से जिस-जिस गुण से जो अर्थ लिये जाते हैं सो-सो निरुक्त और ब्राह्मणादि ग्रन्थों में अच्छी प्रकार लिखा है।

इसमें यह कारण है कि ईश्वर ने जिस-जिस अर्थ को जिस-जिस नाम से वेदों में उपदेश किया है उस-उस नाम वाले मन्त्रो से उन्हीं अर्थों को जानना होता है। सो वे मन्त्र तीन प्रकार के हैं उनमें से कई एक परोक्ष अर्थात् अप्रत्यक्ष अर्थ के कई एक प्रत्यक्ष अर्थात् प्रसिद्ध अर्थ के और कई एक आध्यात्मिक अर्थात् जीव परमेश्वर और सब पदार्थों के कार्यकारण के प्रतिपादन करनेवाले हैं। इससे क्या आया कि त्रिकालस्थ जितने पदार्थ और विद्या हैं उनके विधान करनेवाले मन्त्र ही हैं इसी कारण से इनका नाम देवता है। जिन-जिन मन्त्रों में सामान्य अर्थात् जहां-जहां किसी विशेष अर्थ का नाम प्रसिद्ध नहीं दिख पड़ता वहां-वहां यज्ञ आदि को देवता जानना होता है। (अग्निमीले) इस मन्त्र के भाष्य में जो तीन प्रकार का यज्ञ लिखा है अर्थात् एक तो अग्निहोत्र (से) लेके अश्वमेधपर्यन्त दूसरा प्रकृति से लेके पृथ्वी पर्यन्त जगत का रचन रूप तथा शिल्पविद्या और तीसरा सत्संग आदि से जो विज्ञान और योगरूप यज्ञ है ये ही उन मन्त्रो के देवता जानने चाहिये तथा जिनसे यह यज्ञ सिद्ध होता है वे यज्ञाग भी उन मन्त्रों के देवता हैं और जो इनसे भिन्न मन्त्र हैं उनका प्राजापत्य अर्थात् परमेश्वर ही देवता है तथा जो मन्त्र मनुष्यों का प्रतिपादन करते हैं उनके मनुष्य देवता हैं इसमें बहुत प्रकार के विकल्प हैं कि कहीं पूर्वोक्त देवता कहाते हैं कहीं यज्ञादि कर्म, कहीं पिता, कही विद्वान्, कहीं अतिथि और कहीं आचार्यदेव कहाते हैं परन्तु इसमें इतना भेद है कि यज्ञ में मन्त्र और परमेश्वर को ही देव मानते हैं।

"अग्निहोत्र" द्वारा अद्भुत फलों की प्राप्ति" नामक लेख आचार्य वेदभूषण अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद द्वारा 7 जुलाई, 1992 में सर्वहितकारी में प्रकाशित हुआ था उसमें वे लिखते हैं—यज्ञ अथवा अग्निहोत्र में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जिन मन्त्रों का विनियोजनशास्त्रों के आधार पर किया है वह तो अद्भुत है किन्तु हमें उन विद्वानों की विद्वत्ता पर आश्चर्य होता है जो अग्निहोत्र में विनियुक्त मन्त्रों का यज्ञ के प्रसंग में आध्यात्मिक अर्थ करते हैं विद्वानों का कर्तव्य है कि वे जब अग्निहोत्र के मन्त्रों का यज्ञ के प्रसंग मे अर्थ करें तब उन्हें मन्त्रों के आधिभौतिक और आधिदैविक अर्थ करने चाहिये। तभी हम यज्ञ विज्ञान को जान पाएंगे। वस्तुतः किसी विद्वान् लेखक ने कितना सत्य कहा है—जहां विज्ञान थक कर रुक जाता वहां ईश्वर आस्था शुरू होती है और जहां ईश्वर आस्था की तलाश करता-करता जिज्ञासु थक जाता है वहां से विज्ञान शुरू हो जाता है।

ऋषि दयानन्द जी ने यज्ञ के अर्थ व विधि विधान वैज्ञानिकता के दृष्टिकोण से ही किया है यज्ञ वस्तुतः है ही—यह विज्ञान।

"यह अग्नि होम यज्ञ दहकते,
अंगारों का अलाव नहीं है।
या तुम्हारी समझ में फर्क है,
या हमें समझाने का चाव नहीं है।"

ज्यादा शराब पीने से दिल के दौरे का खतरा

बोस्टन, २९ जून, (डीपीए)। जो व्यक्ति दिनभर में दो-तीन बार से अधिक शराब पीते हैं, उन्हें उच्च रक्तदाब और दिल का दौरा पड़ने का खतरा अधिक रहता है। न्यू इंग्लैंड जर्नल आफ मेडिसिन के गुरुवार के अंक में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार अगर कोई स्वस्थ व्यक्ति दिन में दो या तीन से अधिक बार शराब पी ले तो उसका रक्तदाब बढ़कर दस एमएम हेक्टोग्राम हो जाता है। स्विट्लैंड के दो शोधकर्त्ताओं के हवाले से छपी रिपोर्ट के अनुसार बहुत कम मात्रा में शराब पीने से रक्तदाब को निम्न रखने में मदद मिलती है व अच्छे किस्म के कालेस्ट्राल की मात्रा में भी वृद्धि होती है। शरीर में अच्छे कालेस्ट्राल की मात्रा में कमी होने से हृदय रोगों और दिल दौरे पड़ने का खतरा बढ़ता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि अध्ययन से पता चलता है कि शराब कुछ तंत्रिकाओं को उत्तेजित करता है, जिससे रक्तदाब बढ़ने का खतरा पैदा हो जाता जाता।

जनसत्ता से साभार

आर्यसमाज सफीदो जिला जीन्द का चुनाव

प्रधान—श्री ज्ञानचन्द दीवान, उपप्रधान—श्री पृथ्वीसिंह मुख्याध्यापक, मन्त्री—श्री वेदप्रकाश आर्य, उपमन्त्री—श्री सुन्दरलाल, कोषाध्यक्ष—श्री राजेन्द्रप्रसाद।

अश्वमेध महायज्ञ का प्रभाव

२९ जून से २ जुलाई ९२ तक श्री स्वा० ओमानन्द जी महाराज, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अध्यक्षता में चलने वाले अश्वमेधिक याग एवं तदर्थ निकाले गये नगर कीर्तन के प्रभाव के कारण १ जुलाई को रात्रि को ग्राम गिगनाऊ में एक सम्भ्रान्त परिवार के यहां छठा के आयोजन के अवसर पर सैकड़ों बोतल शराब का खर्च होना था, जो इस आयोजन के प्रभाव से रुक गया और अनेक लोगों ने अगले दिन जनेऊ लेकर इस बुराई को छोड़ने और छुड़वाने की प्रतिज्ञायें ली।

आर्यसमाज संगठन बनाम संन्यासीगुरु चपरासी

धर्मवीर

धार्मिक संस्थाओं का संचालन धार्मिक पुरुषों द्वारा होना भारतीय समाज की परम्परा है, विदेशों में भी धार्मिक क्षेत्र धार्मिक लोगों के निर्देशन में काम करता है परंन्तु आर्यसमाज धार्मिक क्षेत्र में कार्य करने वाला संगठन होने पर भी इसी की प्रारम्भिक ईकाई प्रान्तीय संगठन और सार्वदेशिक संगठन तक का अधिकार धार्मिक क्षेत्र के लोगों के पास न होकर दुनियादार लोगों के पास रहा है। इसका मूल कारण प्रत्येक आर्यसमाजी का उसके संगठन पर समान अधिकार है इस कारण समाज में जो भी सदस्य हैं उसके विद्वान्-अविद्वान्, धनी, निर्धन, निम्नपदस्थ या उच्च पदस्थ होने से अधिकार मे कोई अन्तर नहीं आता। यह प्रजातन्त्र की विशेषता है, इसे प्रजातन्त्र का गुण कहा जा सकता है परन्तु इस पद्धति में आर्यसमाज की मुख्य मान्यता तिरोहित हो गई है— योग्यता का आकलन गुणकर्मानुसार होना चाहिए था वह बात कब कहां तिरोहित हो गई उसे कोई समझ नही सका। परिणामस्वरूप प्रजातन्त्र के इस अधिकार ने योग्यता और अयोग्यता को भी समान बना दिया, जिसके कारण संन्यासी, गृहस्थ, विद्वान्, मूर्ख, गुण्डे, सज्जन समान हो गये। यह अन्तर प्रजातन्त्र के सामने कोई महत्व नही रखता परन्तु समाज धार्मिक क्षेत्र के संचालन मे अपने उद्देश्य से भटक गया और उसका निरन्तर पतन हो रहा है।

धार्मिक संगठनों में ईसाई-मुसलमान जैसे विदेशी मूल के और भारतीय मूल के संगठन में भी धर्माधिकारी का स्थान उच्च मान्य और अधिकार सम्पन्न होता है इसके विपरीत आर्यसमाज मे विद्वान्, धार्मिक, पुरोहित, संन्यासी उपेक्षित और दास होता है। ये वर्ग अधिकारियों के निदश और आदेश पालन करने वाले हैं। धार्मिक संस्थाओं मे भी प्रजातन्त्र है परन्तु वह उन्हीं लोगों के मध्य होता है जो उस कार्य को सम्पन्न करते हैं। ईसाईयों के पोप पाल का चुनाव ईसाई जनता नहीं पादरियों के द्वारा होता है। आर्यसमाज की सभा, संस्था संगठन में धर्माधिकारी, पुरोहित, पण्डित की नियुक्ति समाज के प्रधान व मन्त्री करते हैं जिनमें इस संगठन की सत्ता निहित है। इस प्रकार की गलत परम्परा को अनुभव अवश्य किया गया परन्तु प्रतिकार या सुधार के सम्बन्ध में कभी प्रयास तो दूर विचार भी नहीं किया गया। इस प्रकार का एक प्रसंग पुराने लोगों के मस्तिष्क में कहो आज भी होगा जब एक सभा के प्रधान ने स्वामी श्रद्धानन्द से गुरुकुल कांगड़ी में निवास करने के लिए किराया मांगा था। इसका दुष्परिणाम सबसे पहले नीचे के संगठन में आया, पुरोहित उपदेशक साधु संन्यासी आर्यसमाजो के मन्त्री प्रधानों की दया और इच्छा पर निर्भर हुए। समाज के संगठन में इनका मूल्य स्तुति गायकों से अधिक नहीं हो पाया। आर्य विद्वान् पं० जगदेव सिद्धान्ती जी ने अपने अनुभव सुनाते हुए कहा था जब वे सभा के उपदेशक थे प्रधान के निवास स्थान पर गये तो वहां द्वार पर लिखा था आर्यसमाज के उपदेशक बिना अनुमति के घर में प्रवेश न करें। सिद्धान्ती जी ने उस कागज को फाड़कर फंक दिया और घर में प्रवेश कर प्रधान की खबर ली, इसके लिए उन्हें उस सभा से प्रधान को उसके पद से हटाना पडा।

प्रथम जब स्थानीय समाजों के संगठन में विकार आने लगा तो प्रान्तीय सभाओं से सुधार की अपेक्षा की जाती रही परन्तु प्रान्तीय सभाओं का निर्माण स्थानीय समाजों के प्रतिनिधियों द्वारा होता है इसलिए प्रान्तीय सभाओं का सुधार सम्भव नहीं था। इसके विपरीत जिन दुष्ट लोगों ने समाजों की सम्पत्तियों का दुरुपयोग किया उन्हीं की सहायता से प्रान्तीय सभाओं पर दुष्ट और अयोग्य लोगों ने कब्जा कर लिया। समाजों की स्थानीय राजनीति प्रान्तीय सभाओं में व्याप्त हो गई वहां मन्त्री प्रधानों का सभा संस्थाओं की सम्पत्ति पर अधिकार करना वहां अपने व्यक्तियों की नियुक्ति करना, सगठन के धन और जनबल को अपने स्वार्थो की पूर्ति के लिए उपयोग मे लाना लक्ष्य बन गया। प्रान्तीय संगठन से सार्वदेशिक सगठन बना है, स्वाभाविक है यह संगठन भी इसी प्रकार के लोगों के हाथ में आ गया। जिनकी रुचि और क्षमता धार्मिक कार्य करने की नहा थी जो जोड़-तोड़ के माहिर थे उन्होंने संगठन पर कब्जा किया, ऐसी परिस्थिति इस व्यवहार को जिन्होंने रोकने का प्रयास किया वे अधिकांश इन्ही लोगों में से थे जिनकी लड़ाई का आधार उचित अनुचित या अच्छा-बुरा नही था किंतु मात्र पक्ष-विपक्ष के रूप में अधिक था। दूसरे पक्ष ने भी उन्ही उपायों को कार्य लिया इस प्रकार सारे देश का संगठन एक अखाड़ा बन गया है और इस प्रकार अच्छे लोग समाज और संगठन से दूर होते गये।

इस परिस्थिति को आर्यसमाज के समझदार लोग अनुभव कर रहे थे परन्तु स्वयं विवश एवं असहाय समझकर शान्त हो जाते थे। क्योंकि संगठन के स्तर पर सुधार के लिए समाज मे चेतना लाने की आवश्यकता थी, जो लोग कभी ऐसा प्रयास करते थे उन्हे संगठन के लोग समाज से बहिष्कार की धमकी देते थे तो कभी उनकी वेदी बन्द करने की घोषणा करते थे। इस कारण प्रयास सफलता तक नही पहुच सके। इस कार्य के लिए ऐसे व्यक्तियो की आवश्यकता होती है जो युवा और संघर्षशील, समझदार और जिनके पास सगठन के कार्य के अतिरिक्त कोई काय न हो, ऐसे लोग ही समाज को जागृत कर सकते हैं। एकाधिकार प्राप्त लोगों से संघर्ष भी कर सकते हैं। देश के कई भागों मे इस प्रकार के कार्य का प्रयत्न हुआ परन्तु राजस्थान प्रान्त मे विशेष कार्य हुआ जिसके कारण प्रान्तीय संगठन को सक्रिय बनाया जा सका, पं० विद्यासागर शास्त्री के नेतृत्व में राजस्थान के संगठन ने सार्वदेशिक स्तर पर सुधार का प्रयास किया। इसके लिए सभी आर्य पुरुषो ने परिश्रम किया और इसके लिए स्वामी विद्यानन्द जी महाराज, स्वामी ओमानन्द जी महाराज, स्वामी धर्मानन्द जी उड़ीसा और स्वामी सुमेधानन्द जी राजस्थान ने संगठन के स्तर पर मार्ग दर्शन करना प्रारम्भ किया तो जहा आर्य प्रतिनिधियों ने उत्साह का प्रदर्शन किया वहा संगठन पर अधिकार किए लोग ने हाय-हाय करना प्रारम्भ कर दिया। इसकी चरम परिणति हुई। हैदराबाद के सार्वदेशिक २७-२८ मई को सम्पन्न अधिवेशन में इन लोगों ने कहना प्रारम्भ किया देखाजो संन्यासी लोगों को इस प्रकार के लड़ाई-झगड़ो मे नही पड़ना चाहिए। यदि लड़ाई-झगड़ों से समाज और संस्थाओ का सर्वनाश किया जा रहा है तो क्या संन्यासी को मूक दर्शक बना रहना चाहिए। आर्यसमाज का और वैदिक धर्म को बचाने की आवश्यकता होगी तो लाला और वकील बचाने नही आएंगे यह कार्य तो आर्य संन्यासियो को ही करना पड़ेगा, यह कार्य बहुत पहले हो जाना चाहिए था परन्तु अच्छा कार्य देर से प्रारम्भ हो तो भी हानि नही है।

क्रमशः

शराब बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इनसे दूर रहें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रैवार्षिक चुनाव पर

श्वेत पत्र

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज मन्दिर, नया बांस, दिल्ली-६

गतांक से आगे

एक सभा जिसको सार्वदेशिक ने मान्यता दे रखी है जिसके १५ प्रतिनिधि स्वीकृत किए हैं वह श्री इन्द्रराज जी व मनमोहन तिवारी की बोगस सभा है। जिसके पास न कार्यालय है न कोई उपदेशक है तथा न ही इनका जनाधार है। असली सभा वह है जिसकी मान्यता रद्द कर रखी है। प्रान्त की ९५ प्रतिशत आर्यसमाज उनके साथ है। प्रान्त में उनका जनाधार है परन्तु वे इनके विरोधी हैं इस कारण उनके प्रतिनिधि स्वीकार नहीं किए जाते। आन्ध्रप्रदेश—श्री वन्देमातरम् के गृह प्रांत आन्ध्रप्रदेश की सारी आर्य समाजें प्रो० विट्ठलराव के साथ हैं डा० गोजे सभा के प्रधान है। वन्देमातरम् जी के साथ प्रान्त की एक भी आर्यसमाज नहीं है। कुछ ऐसे लोग जिनको हैदराबाद सत्याग्रह के नाम से पेंशन दिलाई गई उनको अपने साथ ले रखा है। आन्ध्र में बोगस सभा बनाकर सार्वदेशिक से मान्यता दिलवाकर उस सभा के १५ प्रतिनिधि स्वीकृत कर लिए तथा जो ओ असली सभा है जिसका कार्यालय व जनाधार है जिसके पास उपदेशक है प्रान्त को सारी आर्यसमाजें है उनको अमान्य कर दिया गया। श्री वन्देमातरम् जी की जो स्थिति आन्ध्रप्रदेश में है उसका ज्ञान तो आर्य जीवन पत्रिका पढने से आपको हो गया होगा। आर्य जीवन के अतिरिक्त आर्य मित्र व राजधर्म में भी लेख छपते रहे हैं। यह स्थिति वन्देमातरम् को बोगस आन्ध्र सभा को है। गुरुकुल घटकेश्वर को ६२७ एकड़ भूमि को बेचकर राशि को डकारने वाले लोग आर्यसमाज के नेता बनने का ढोंग रचते हैं इनसे आर्य जनता को सावधान रहना है।

तमिलनाडु

मई ९४ में सार्वदेशिक के मुख पृष्ठ पर छपा कि तमिलनाडु में आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन वन्देमातरम् जी की अध्यक्षता में हुआ। उल्लेखनीय बात यह है कि सार्वदेशिक पत्रिका के अनुसार उस बैठक में लगभग १३ आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जबकि सार्वदेशिक सभा के नियम के अनुसार प्रान्त में न्यूनतम १५ आर्य समाजें ऐसी होनी चाहिए जिनको स्थापना को पाच वर्ष हो गए हैं। ऐसी १५ आर्य समाजे होने पर सभा का गठन हो सकता है तथा सार्वदेशिक से सम्बद्ध हो सकती है तमिलनाडु में १३ बोगस आर्यसमाजों पर बोगस सभा का गठन करके वन्देमातरम् जी वहां से नई प्रतिनिधि बना लाये। जो सभाये गत २५-३० वर्षों से कार्य कर रही हैं उनके भी इतने प्रतिनिधि नहीं है, यथा बम्बई, गुजरात, हिमाचल, उड़ीसा इत्यादि आर्य समाज प्रान्तीय सभा में प्रथम ६ पर एक तथा उसके पश्चात् २० पर एक प्रतिनिधि भेजती है। अर्थात् ४०० सभासदों पर सार्वदेशिक का एक प्रतिनिधि चुना जाता है क्या तमिलनाडु में ३६००० सभासद हैं? क्या श्री वन्देमातरम् जी एक हजार सभासद भी तमिलनाडु में एकत्रित करके दिखा सकते हैं? इस प्रकार से आर्यों की आंखों में धूल झोंककर ये लोग सार्वदेशिक सभा पर कब्जा किए बैठना चाहते हैं। क्या आर्यजन इसे स्वीकार करेंगे?

पंजाब

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के श्री वीरेन्द्र जी को मृत्यु के बाद बड़ी दयनीय स्थिति है। वहां निर्वाचन हुए चार वर्ष से अधिक समय हो गया है जबकि तीन वष के उपरान्त निर्वाचन होना चाहिए था। जिस समय श्री स्वामी आनन्द बोध जी जीवित थे दि० २७ अगस्त ९४ को सार्वदेशिक सभा की अन्तरग की बैठक थी। बैठक में सभा के कार्य-वाहक प्रधान प० हरबंस लाल जी ने कहा कि पंजाब सभा का बुरा हाल है मंत्री अश्विनीकुमार मुझे काम नहीं करने देता है। विचार विमर्श के उपरान्त यह निर्णय हुआ कि श्री स्वामी आनन्दबोध जी स्वयं जालंधर जाकर स्थिति को देखेंगे तथा इस विषय में निर्णय करेंगे। श्री स्वामी जी जालंधर गए तथा वहां के हालात को देखकर सभा को भंग करके पूज्य पाद श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को तदर्थ समिति का अध्यक्ष बना दिया।

पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी ने अश्विनीकुमार से चार्ज मांगा। श्री स्वामी आनन्द बोध जी अचानक अस्वस्थ हो गए। श्री अश्विनीकुमार जी ने मरवाह जा से व वन्देमातरम् जी से साठगांठ की तथा स्वामी आनन्द बोध जी से बीमारी की हालात में मृत्यु से एक दिन पहले तदर्थ समिति को हटाकर वापिस सभा को बहाल करा लिया।

एक बार सभा भंग होने के बाद कैसे पुनः बहाल हो सकती है? परन्तु नियमादि तो वहा चलते है जहा नैतिकता हो। यह हालात पंजाब के प्रतिनिधियो की है। पजाब की तथाकथित सभा के विरुद्ध श्री वीरेन्द्र जी के सुपुत्र चन्द्रमोहन जी वीरप्रताप मे पांच सम्पादकीय लिख चुके है कि सभा का विधिवत निर्वाचन होना चाहिए परन्तु जनाधार हीन लोगो को चुनाव करवाने की हिम्मत हो नहीं होती। इसके अतिरिक्त श्री ऋषिपाल सिह एडवोकेट भी पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा चला रहे हैं पजाब को अनेक आर्यसमाजे उनके साथ है। अतः पंजाब में भी दो सभायें हैं। वहा से भी बोगस प्रतिनिधि लिए गए हैं।

बिहार

बिहार में भी सभा के निर्वाचन हुए पाच वर्ष हो चुके हैं। वहा पर भी तदर्थ समिति बना दी गई थी। जिस समय तदर्थ समिति ने निर्वाचन करवाना चाहा वन्देमातरम् जी ने उन्हे रोक दिया तथा श्री भूपनारायण जी शास्त्री से सांठ गांठ कर ली कि यदि निर्वाचन में आप मुझे सहयोग देवें तो मैं आपकी सभा को बहाल कर दूंगा। बोगस प्रतिनिधियों के लोभ में बिहार सभा की तदर्थ समिति को हटाकर वहां की सभा को बहाल कर दिया गया। बिना साधारण सभा में चुने हुए १५ प्रतिनिधि सार्वदेशिक में ले लिए। तदर्थ समिति ने न्यायालय में मुकदमा कर रखा है सभा का कार्यालय बन्द पड़ा हुआ है। यह स्थिति बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा की है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपना निर्वाचन २३ अक्टूबर ९४ निश्चित कर दिया था। बाद में इसे स्थगित कर दिया। दिल्ली के चुने गये सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधियों का ३ वर्ष का कार्यकाल अक्टूबर ९४ मे समाप्त हो गया था नियमानुसार दिल्ली के प्रतिनिधि सार्वदेशिक के निर्वाचन में भाग नहीं ले सकते। साधारण सभा की अपेक्षा दिल्ली सभा के प्रधान ने स्वयं ही एक सूची बनाकर सार्वदेशिक में भी भेज दो। सूची भेजने के उपरान्त २० मई को अन्तरंग सभा में उसकी सम्पुष्टि करवाई गई जबकि अन्तरंग को यह अधिकार नहीं है। इस प्रकार दिल्ली सभा के प्रतिनिधि भी बोगस प्रतिनिधि सिद्ध हो जाते हैं।

आर्यजन किंचित् विचार करें कि हमारे शिरोमणि संगठन ने आर्य प्रतिनिधि सभाओं का क्या हाल कर रखा है। इस प्रकार की सभाओं के प्रतिनिधियों के कन्धों पर सवार होकर वन्देमातरम् तथा मरवाह एण्ड कम्पनी सार्वदेशिक सभा पर कब्जा जमाये रखना चाहती है।

हैदराबाद का निर्वाचन

२७ व २८ मई को हैदराबाद में साधारण अधिवेशन में निर्वाचन होना था। २७ मई को प्रातःकाल कच्छी भवन में साधारण सभा की अन्तरंग सभा को बैठक हुई। इस बैठक में श्री स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी धर्मानन्द जी, प्रो० शेरसिंह जी, श्री विद्यासागर शास्त्री व श्री सत्यवीर जी शास्त्री मध्य प्रदेश कैप्टन देवरत्न सभी ने प्रधान जी से निवेदन किया कि आर्यसमाज का संगठन लोकतांत्रिक संगठन है इसके निर्वाचन अच्छी तरह से होने चाहिए। निष्पक्ष निर्वाचन के लिए यह आवश्यक है कि निर्वाचन अधिकारी की नियुक्ति होनी चाहिए।

क्रमशः

एक क्विंटल देशी घी का अश्वमेध महायज्ञ गिगनाऊ में सम्पन्न

लोहारु : आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा समाज सुधार मोर्चा की ओर से २९ जून से २ जुलाई तक अश्वमेध महायज्ञ ग्राम गिगनाऊ के उच्च विद्यालय के विशाल प्रांगण में श्रद्धापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ में एक क्विन्टल घी, ६ मन सामग्री तथा ५ क्विन्टल समीधा (लकड़ियां) का इस्तेमाल किया गया। यज्ञ की व्यवस्था समाज सुधार मोर्चा के युवा साथियों ने बड़ी लगन से की। यज्ञ की शोभा बहुत अच्छी थी, यज्ञ वेदी को वैदिक मन्त्रों से सजाया गया था तथा ओमध्वज से सारे पंडाल को सुन्दरता से सजा रखा था।

२९ जून प्रातः ७ बजे स्वामी ओमानन्द ने वैदिक दीपक जलाकर तथा यज्ञ में आहुति डालकर यज्ञ का शुभ आरम्भ किया। इस मौके पर गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली के आचार्य श्री हरिदेव जी, श्री हीरानन्द जी आर्य (पूर्व वित्त मन्त्री हरयाणा), श्री नैष्ठिक जीवानन्द जी, गुरुकुल झज्जर तथा युवा मोर्चा के प्रधान रामअवतार आर्य थे। यज्ञ का शुभारम्भ करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान वयोवृद्ध सन्यासी त्यागमूर्ति अखण्ड बाल-ब्रह्मचारी आर्य विद्या के उन्ननायक स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने जनसमूह को सम्बोधित करते हुये कहा कि आज हमारे राष्ट्र का वातावरण यज्ञ के बिना दूषित होता जा रहा है। प्राचीनकाल के राष्ट्र को चर्चा करते हुये स्वामी जी ने कहा कि "प्राचीनकाल के राष्ट्र में महर्षियों द्वारा भारी यज्ञ होता था और यज्ञ द्वारा महर्षि राष्ट्र की रक्षा करते थे और यज्ञ द्वारा ही राष्ट्र को दूषित वातावरण से बचाते थे। आज हमारे राष्ट्र का दुर्भाग्य है कि राष्ट्र का कोई भी राजनेता यज्ञ नहीं करवाता। आज अगर हमारे राष्ट्र के सभी राजा अपनी प्रजा की रक्षा के लिए यज्ञ करवाना शुरू कर दें तो मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि उस यज्ञ की शक्ति से हमारा सारा राष्ट्र दूषित वातावरण से बच सकता है।"

राष्ट्र रक्षा के बारे में बोलते हुए स्वामी जी ने कहा कि "जब तक राष्ट्र का राजा सच्चा, न्यायकारी तथा चरित्रवान नहीं होगा तब तक सच्चे राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सकेगा। इसलिए राजा का मुख्य कर्तव्य बनता है कि अपनी प्रजा के लिए अपना चरित्र महान बनावे।"

शराबबन्दी के बारे में बोलते हुए स्वामी जी ने कहा कि "सभी पापों की जड़ ये शराब ही है। जब तक हमारे राष्ट्र में शराबबन्दी नहीं होगी तब तक राष्ट्र का सुधार नहीं होगा। आज इस पापी नशे के कारण हमारा राष्ट्र बुरी तरह से बरबाद होता जा रहा है। इस शराब के कारण हजारों माताओं की कोख उजड़ गई तथा लाखों बहनों का सुहाग उजड़ गया। इसलिए आप इस शराब से सावधान रहो। मैं शराबबन्दी के बारे में युवक, युवतियों से कहना चाहूंगा कि आप शराबबन्दी के लिए अपना पूरा-पूरा मन बना लें तो मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि निश्चय ही हमारे राष्ट्र से शराब बन्द हो सकती है।" आगे स्वामी जी ने जनसमूह से आह्वान किया कि "आप अपने जीवन में सामाजिक बुराईयों से सदैव दूर रहें। इन नशों द्वारा आज हमारा समाज बुरी तरह से खोखला होता जा रहा है। आर्यसमाज का हर तरह से प्रयास होगा कि हमारा समाज नशा मुक्त हो।" अन्त में स्वामी जी ने यज्ञ में आने वाले यज्ञमानों व दान दाताओं का बहुत-बहुत धन्यवाद किया और समाज सुधार मोर्चा के प्रत्येक कार्यकर्ता की भूरी-भूरी प्रशंसा की। समाज सुधार मोर्चा के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि "मैं समाज सुधार मोर्चा के युवा कर्मठ कार्यकर्ता एवं प्रधान श्री रामअवतार आर्य को अपना पूरा आशीर्वाद देता हूं जिन्होंने मोर्चा बनाकर समाज में फैली हुई बुराईयों को दूर करने का बीड़ा उठाया है। यदि हर क्षेत्र में ऐसा मोर्चा तैयार हो जाए तो निश्चय ही समाज से सभी बुराईयां दूर हो सकती हैं।" स्वामी जी ने समाज सुधार मोर्चा के सभी साथियों को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और स्वामी जी ने कहा कि "मैं मोर्चे को अपना आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के सैनिकों का एक दल मानता हूं। जब हमारे समाज में अधिक बुराईयां फैल जाती हैं तो उन्हें नष्ट करने के लिए ऐसे ही दल बनाये जाते हैं। जब तक समाज में फैली बुराईयों के खिलाफ कोई मोर्चा नहीं बनेगा तब तक समाज से बुराई को भगाना असम्भव होगा।"

इस मौके पर समाज सुधार मोर्चा के प्रधान श्री रामअवतार आर्य ने भारी जनसमूह को सम्बोधित करते हुए बताया कि "हमारा मोर्चा समाज में फैले भ्रष्टाचार, गोत्रवाद, जातिवाद, छुआछूत, दहेज पाखण्ड को दूर करने के लिए हर कुर्बानी देने को तैयार है। हमारा मोर्चा कोई राजनीति का मोर्चा नहीं है। यह मोर्चा समाज में फैली बुराईयों के खिलाफ एक संघर्ष है और इस यज्ञ का मुख्य लक्ष्य भी यही है कि समाज से बुराईयों को मिटाने के लिए यज्ञ आवश्यक है तथा गांव-गांव में शराबबन्दी शिविर लगाए जाएं और अधिक से अधिक युवा वर्ग को तैयार किया जाए।" चार दिन तक चलने वाले इस अश्वमेध महायज्ञ में सैंकड़ों लोगों ने यज्ञ में आहुति डालकर अपनी सभी बुराईयों को त्यागने की प्रतिज्ञा की तथा सैंकड़ों लोगों ने यज्ञोपवीत धारण किये। इस महायज्ञ में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भजनमण्डली श्री विश्वामित्र तथा श्री चिरंजीलाल के शिक्षा प्रद भजन हुए तथा पण्डित चिरंजीलाल ने समाज में फैली बुराईयों के खिलाफ बहिनों तथा नौजवानों के सुधार के मधुर भजन सुनाएं तथा इनको बुराईयों तथा पाखण्डों से दूर रहने को कहा।

इस यज्ञ में आर्यसमाज के अनेकों विद्वानों, सन्यासियों तथा समाज सुधारकों ने भाग लिया। यज्ञ समापन के बाद एक शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया। इस मौके पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के क्रांतिकारी उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य ने भी अपने विचार रखे। सम्मेलन में बोलते हुए श्री क्रांतिकारी ने जनसमूह को बताया कि "आज हमारी सरकार नहीं चाहती कि शराब बन्द हो। आगे हम शराबबन्दी के लिए हर जिले में अपना मोर्चा बना रहे हैं। लोहारु क्षेत्र जिला भिवानी में भी शराबबन्दी के लिये जो समाज सुधार मोर्चा तैयार हुआ है इसी प्रकार ये मोर्चा प्रत्येक जिले एवं क्षेत्र से बनाया जा रहा है। इस मोर्चे द्वारा हम सरकार की नींद हराम कर देंगे और हम सब शराब हटाकर ही दम लेंगे। महिलाओं के बारे में चर्चा करते हुए श्री आर्य ने कहा कि भारत को गुलामी की जंजीरों से छुड़ाने के लिए महिलाओं का बहुत योगदान रहा था अब इस पापिनी शराब के विरुद्ध भी महिलाओं ने अपना मोर्चा लगा लिया है। अब मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि आने वाले समय में ना यहां शराब रहेगी और न शराबी। इस यज्ञ में गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों तथा गुरुकुल पंच गांव की ब्रह्मचारिणियों द्वारा प्रातः सायं वेद मन्त्रों द्वारा वेद पाठ किया गया। छात्रों एवं छात्राओं का बहुत-बहुत सहयोग रहा।

इस यज्ञ की आखिरी आहुति तथा शराबबन्दी सम्मेलन के दिन सैंकड़ों की संख्या में ग्राम गोहाड से नर-नारी शराबबन्दी सम्मेलन में अपने स्वयं के वाहन लेकर के सम्मेलन में पधारे।

एक जुलाई को साय ७ बजे से ८ बजे तक ग्राम गिगनाऊ एवं सोठड़ा में सैंकड़ों नौजवानों द्वारा हाथ में ओ३म् ध्वज लेकर आर्यसमाज अमर रहे तथा शराबबन्दी के जोश के साथ नारे लगाते हुए गांव की भिन्न-भिन्न गलियों में श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी एवं समाज सुधार मोर्चा के प्रधान श्री रामअवतार आर्य की अध्यक्षता में जुलूस निकाला गया। जुलूस का दृश्य देखते ही बनता था। बीच-बीच में गांवों के चौक में उपरोक्त आर्य नेताओं ने लोगों से पूर्ण आहुति एवं शराबबन्दी सम्मेलन में पधारने की अपील की।

—[illegible] आर्य
आर्य मित्र सेवक आर्यसमाज [illegible], भिवानी

यज्ञ कराओ, शराब हटाओ, राष्ट्र बचाओ।

भजनलाल शराब से दुर्गन्ध तथा आर्यसमाज यज्ञ से सुगन्ध फैलाता है : ओमानन्द सरस्वती

रोहतक, दिनांक ५ जुलाई सायकाल (केदारसिंह आर्य द्वारा) स्थानीय शुगर मिल कालोनी पार्क में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आयोजित आर्यवीर दल का शिक्षण शिविर का समापन समारोह पूर्वक धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सभाके भजनोपदेशक श्री जयपाल आर्य श्री खेमसिंह आर्य तथा स्वामी देवानन्द के चरित्र निर्माण तथा शराबबन्दी के प्रभावशाली भजन हुए तथा श्री सुखदेव शास्त्री, श्री राममेहर एडवोकेट, प्रिंसिपल विनागक प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा, प्रो. प्रकाशवीर विद्यालकार मन्त्री गुरुकुल कांगड़ी ने आर्यवीर दल के कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि वर्तमान दूषित वातावरण को सुधारने के लिए आर्यवीर दल के शिक्षित वीरों की आवश्यकता है। इन शिविरों के चरित्र निर्माण की शिक्षा की आवश्यकता है।

मुख्य अतिथि के रूप में जिला उपायुक्त श्री गुलाबसिंह सरोत ने आर्यवीर दल के सैनिकों द्वारा शक्ति प्रदर्शन कार्यक्रम को देखकर उनकी सराहना करते हुए ५१००/- का अनुदान दिया तथा उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्यसमाज ने सदा से वैदिक संस्कृति की रक्षा की है।

प्राचीनकाल में हमारे ऋषि मुनि सारे संसार को वेदोपदेश द्वारा मार्ग दर्शन करते थे और विदेशों से वैदिक संस्कृति की शिक्षा ग्रहण करने भारत आते थे। परन्तु अंग्रेजों के शासनकाल में हमारी प्राचीन सभ्यता तथा संस्कृति का प्रचार तथा प्रसार कम हो गया। आर्यसमाज के कार्य कर्त्ताओं ने अंग्रेजों से भारत को आजद करवाने के लिए सबसे अधिक बलिदान देकर संघर्ष किया था। आपने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा शराबबन्दी कार्यक्रम को प्रशंसा करते हुए कहा कि सभा द्वारा किये जा रहे लगातार प्रचार से प्रभावित होकर हरयाणा में आज सभी राजनैतिक दल शराबबन्दी की बात करने लगे हैं। उपायुक्त महोदय ने इस शुभ कार्य के लिए सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी तथा अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह जी का आभार प्रकट किया कि इन्होंने हरयाणा प्रदेश से शराब रूपी जहर से मुक्ति दिलाने में प्रमुख भूमिका निभाई है।

प्रो० शेरसिंह ने अपने भाषण में आर्यवीरों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्यवीर दल के शिविर में शिक्षण प्राप्त करने वाले युवक वैदिक संस्कृति की रक्षा करने तथा समाज सुधार के महान कार्य के लिए एक दीपक का कार्य कर रहे हैं। जब एक दीपक से दूसरा दीपक जलेगा तो भ्रष्टाचार रूपी अन्धकार दूर हो जावेगा। आर्यवीर दल के कार्यकर्ता शराबबन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। आपने बताया कि शराबबन्दी की लहर हरयाणा से पंजाब में भी चलने लगी है। गत सप्ताह मेरे पास पंजाब के सिखों का एक शिष्टमण्डल मुझे मिलने आया था और पंजाब में भी शराब-बन्दी आन्दोलन चलाने की सहायता की मांग की। अतः सभा पंजाब में भी शराबबन्दी प्रचार कार्यक्रम बना रही है।

सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती के अपने अध्यक्षीय भाषण में आर्यवीरो का आह्वान किया कि अब समय आ गया है कि अपनी सारी शक्ति शराबबन्दी के लिए लगा देवें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सभा हरयाणा के प्रत्येक १७ जिलों में शराबबन्दी अश्वमेध यज्ञों का आयाजन कर रही है। इन यज्ञों पर युवकों से शराब, मांस आदि छुड़वाने की प्रतिज्ञा करवाई जायेगी। इन्ही आर्य वीरों के सहयोग से शराब जसी सामाजिक बुराइयों को दूर किया जावेगा। आपने हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल की निन्दा करते हुए कहा कि वे अपने परिवार या रिश्तेदारों को अनुचित लाभ पहुंचाने के लिए शराब की दुकान तथा कारखाने खुलवाकर दुर्गन्ध फैला रहे हैं और आर्यसमाज हरयाणा के कोने-कोने में यज्ञ करवाकर सुगन्ध फैला रहा है। आपने चेतावनी देते हुए कहा कि समय आने वाला है कि हरयाणा में शराब पिलाने वाले तथा पीने वाले बर्बाद हो जायेंगे। अतः आर्य समाज के वीर संघर्ष करने की तैयारी कर रहे हैं। आपने प्रो० शेरसिंह की सराहना करते हुए कहा कि इन्होंने हिन्दी रक्षा आन्दोलन में मन्त्री पद को लात मारकर जेल यात्रा की थी और अब भी शराबबन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इस अवसर पर सभा के वेद प्रचाराधिष्ठाता आचार्य सुदर्शनदेव, श्री हुकमचन्द राठी अधिष्ठाता गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, सभा के उपमन्त्री डा०सोमवीर आदि मंच पर उपस्थित थे।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा दिनांक ११ से २५ जून तक गुरुकुल कुरुक्षेत्र में राष्ट्रीय शिविर का आयोजन किया गया जिसमें चुने हुये १७५ आर्यवीरों ने शारीरिक और बौद्धिक प्रशिक्षण का सघन अभ्यास किया। प्रधान संचालक डा० देवव्रत आचार्य की अध्यक्षता में शाखा नायक, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक तथा आचार्य श्रेणी का प्रशिक्षण दिया गया। आर्य वीर दल के बौद्धिक अध्यक्ष प्रो० राजेन्द्र कुमार विद्यालंकार के कुशल मार्गदर्शन में अनेक विद्वानों ने आर्य वीरों को अपने कर्त्तव्य पथ पर दृढ़ रहकर ऋषि दयानन्द के सपनों को साकार करने के लिए प्रोत्साहित किया। श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा युवकों का मार्गदर्शन करने हेतु शिविर में पधारे उन्होंने पुराने आर्यवीरों के तप, त्याग और बलिदान का उल्लेख करते हुए आर्यवीरों को आह्वान किया कि वे समाज में फैली कुरीतियों, शराब, दहेज, पाश्चात्य सभ्यता के विरुद्ध एकजुट होकर संघर्ष करें।

२५ जून को दीक्षान्त समारोह में सभी आर्य वीरों को अपने कर्त्तव्य पथ पर अडिग आर्य वीर दल के अनुशासन में और रहकर कार्य करने की प्रतिज्ञा प्रधान संचालक द्वारा यज्ञाग्नि के समक्ष कराई गई। सायंकाल व्यायाम प्रदर्शन का भव्य कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसमें करनाल कुरुक्षेत्र, पानीपत, कैथल, अम्बाला, शाहबाद, लाडवा आदि स्थानों से आर्य सज्जन उपस्थित हुए। अध्यक्ष तथा मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार वितरण और उद्बोधन दिया गया। इस शिविर में ४ शस्त्राचार्य, २ व्यायामाचार्य (प्रथम वर्ष) २८ व्यायाम शिक्षक, ४८ उपव्यायाम शिक्षक और शेष शाखानायक घोषित किये गये।

इस शिविर की समस्त भोजन व्यवस्था तथा आवास व्यवस्था का उत्तरदायित्व श्री आचार्य देवव्रत जी गुरुकुल कुरुक्षेत्र, अधिष्ठाता आर्य वीर दल हरियाणा ने सहर्ष वहन किया। संस्था के प्रधान चौ० सत्यदेव सिंह जी भी समय-समय पर आकर दिशा निर्देश करते रहे। श्री वीरू राम आर्य, प्रो० राजेन्द्र कुमार विद्यालंकार, डा० सोमपाल जी और आर्यसमाज कुरुक्षेत्र के अधिकारियों का भी विशेष सहयोग रहा। स्मरण रहे आर्य वीर हरयाणा द्वारा विभिन्न स्थानों पर १२ शिविर लगाये गये। जिनमें गुरुकुल खानपुर (नारनौल) के शिविर में ४०० आर्य वीर सम्मिलत हुये।

हरयाणा में युवक निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य युवक परिषद् द्वारा गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी हरयाणा प्रदेश के विभिन्न जिलों में २९ मई १९९१ से ४ जुलाई १९९१ तक युवक निर्माण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों के माध्यम से युवा जनों को दण्डबैठक, योगासन, प्राणायाम, जूडो कराटे तथा स्तुप आदि का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया गया। साथ साथ प्रतिदिन बौद्धिक कार्यक्रम व यज्ञ सत्संग प्रचार के माध्यम से युवक को बौद्धिक सिद्धान्तों की जानकारी दी गई। युवक निर्माण शिविरों के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर सभी युवकों ने चरित्रवान बनने तथा शराब, मांसाहार आदि नशीले पदार्थों से दूर रहने का यज्ञ पर संकल्प लिया। परिषद् के निर्णय अनुसार २९ मई से ४ जून तक आदर्श विद्या निकेतन फरीदाबाद में शिविर लगाया गया जिसमें जींद, गुड़गांव, फरीदाबाद, रेवाड़ी व महेन्द्रगढ़ जिलों के २०० युवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। ५ जून से १२ जून तक हिसार जिले के नलवा गांव में शिविर लगाया गया जिसमें ५१ युवाओं ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली। तदोपरान्त १२ जून से १८ जून तक पलवल उपमण्डल के औरंगाबाद मित्रोल गांव में सम्पन्न हुआ।

इस शिविर में १०५ युवाओं ने भाग लेकर आर्यसमाज के सिद्धांतों की जानकारी प्राप्त की। कैथल जिला के युवाओं का शिविर जनता कालेज कौल में लगाया गया जिसमें १२५ बाल व युवा जन सम्मिलित हुए। कौल शिविर का समापन समारोह जुलाई में हर्ष और उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् २८ जून से रोहतक जिला के सुप्रसिद्ध गांव मातनहेल में युवक निर्माण शिविर का शुभारम्भ हुआ। इस शिविर में १५५ युवकों ने भाग लेकर यौगिक क्रियाओं व बौद्धिक के माध्यम से वैदिक सिद्धांतों की जानकारी प्राप्त की।

हरयाणा आर्य युवक परिषद के साग्रहपूर्वक निवेदन पर उक्त शिविरों को सफल बनाने में परिषद् के तपोनिष्ठ शिक्षकों एवं आर्यसमाज के नेताओं व पदाधिकारियों ने भरपूर योगदान दिया। क्रमशः श्री सूर्यदेव व्यायाम आचार्य ब्र० धर्मसिंह आर्य श्री बाबूराम आर्य व्यायाम शिक्षक (करनाल) श्री बलदीप शास्त्री (सोनीपत) श्री विरेन्द्रकुमार आर्य (फरीदाबाद) श्री विनोदकुमार (रोहतक) श्री भूपसिंह शास्त्री, श्री अमरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, श्री डालचन्द प्रभाकर, श्री सुमरतसिंह म.ध., बाबू लखमीचन्द आर्य, श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता, श्री बलजीत आर्य, श्री महावीरसिंह पुरोहित, श्री अजीतसिंह चौहान, विवेक रत्न आर्य (आसाम), श्री मंगलदेव भजनोपदेशक, महाशय खेमसिंह, महाशय पं० विश्वामित्र आर्य, स्वामी धर्मानन्द (पानीपत), श्री कृष्णदत्त आर्य पेन्टर का विशेष योगदान रहा।

—शिवराम आर्य
हरयाणा आर्य युवक परिषद् (रजि०)

सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में दो हजार इसाई वैदिक धर्म में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं वैदिक यति मण्डल के निर्देश पर उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी निरन्तर शुद्धि (पुर्नमिलन) के कार्यक्रमों का आयोजन करते आ रहे हैं, उसी श्रृंखला में ग्राम मधुपुर जिला बरगढ़ में १८ जून को अति उल्लासमय वातावरण में आस-पास के १२ ग्रामों के दो हजार से अधिक इसाईयों ने यज्ञ में आहुति देकर यज्ञोपवीत ग्रहण कर विधिवत् वैदिक धर्म ग्रहण किया। इस अवसर पर लगभग ५ हजार लोगों ने प्रीतिभोज में भाग लेकर अपने बिछुड़े लोगों को अपने समाज में ग्रहण किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी एवं सभा मन्त्री श्री स्वामी सुमेधानन्द जी का संदेश पढ़कर सुनाया गया। सारे कार्यक्रम का संचालन श्री स्वामी व्रतानन्द जी उपाचार्य गुरुकुल आश्रम की अध्यक्षता में उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री पं. विशीकेसन शास्त्री ने किया। इस अवसर पर श्री स्वामी विशुद्धानन्द जी, श्री शिवधर जी वानप्रस्थी आदि ने दीक्षित हुए लोगों को आशीर्वाद दिया। इस आयोजन में श्री रंकमणी देवता का विशेष योगदान रहा। मधुपुर ग्राम पादरियों का बसाया हुआ वहां विदेशी पादरी भी रहते हैं। उन्होंने इस आयोजन को असफल करने का भी यत्न किया। परन्तु जनता के उत्साह के सामने उनकी करतूत प्रकट हो गई। फलस्वरूप उन्हें लज्जित होकर भागना पड़ा।

नकली, फसली......

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जात-बिरादरी ही में करते हैं; आश्रम-व्यवस्था को दुहाई देते हैं पर मरने तक घर गृहस्थी नहीं छोड़ते ऐसों को फसली जानो बेटा।

शिष्य—फिर असली कौन होते हैं ? गुरुजी !

गुरुजी—जो त्यागी, तपस्वी, सदाचारी, परोपकारी, धार्मिक, विद्वान होते, जो वर्णाश्रम धर्म पर चलते हैं उन्हें असली जानो।

शिष्य—अब ऐसे लोग कहां मिलेंगे गुरुजी ?

गुरुजी—आर्यसमाज में ही बेटा।

शिष्य—फिर इन नकली और फसली आर्यों का क्या किया जाये ? गुरुजी !

गुरुजी—यदि ये आर्य धर्म का पालन करते हैं तो उन्हें रखा जाये वर्ना निकाल बाहर करे बेटा।

गंगाराम वानप्रस्थी

वर्णाश्रम-पत्रक से साभार

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा की अंतरंग बैठक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजीकृत) की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक २३ जुलाई ९५ रविवार को प्रातः १० बजे आर्यसमाज मन्दिर नयाबांस दिल्ली-६ में होनी निश्चित हुई है। अतः सदस्यों से अनुरोध है कि समय पर पहुंचने की कृपा करें। आवास तथा भोजन की व्यवस्था आर्यसमाज की ओर से की जायेगी।

वर्तमान पता — सुमेधानन्द सरस्वती
आर्यसमाज मंदिर नयाबांस दिल्ली-६ — सभामन्त्री
फोन-२३१२१७

शोक समाचार

१. आर्यसमाज नठेड़ा जिला रेवाड़ी के महाशय भगवानसिंह का ७६ वर्ष की आयु में २१ अप्रैल ९५ को निधन हो गया था। वे दानशील तथा अतिथि सत्कारी थे। उनकी स्मृति में यज्ञ किया गया तथा आर्य समाज नठेड़ा, कोसली, सुरखल बीकानेर, बव्वा, जुड़ी, बालधन कलां, बाकली सभी को १०२, १०२ रु० तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को ४०५, गुरुकुल घासेड़ा को ७५१, आर्य अनाथालय भिवानी को ११००/- रु० दान दिया।

आर्यसमाज नठेड़ा के कोषाध्यक्ष महाशय कीशाराम का ८० वर्ष की आयु में ३-६-९५ को निधन हो गया। उनकी स्मृति में भी यज्ञ पर आर्यसमाज कोसली, सुरखल, नठेड़ा, जुड़ी सभी को ५१, ५१ रु० गुरुकुल घासेड़ा को २५१/- रु० आर्य अनाथालय भिवानी को ५००/- रु० तथा सभा को ३७५/- रु० दान दिया।

ईश्वरसिंह सभा भजनोपदेशक

नशाबन्दी दिवस

रोहतक, अन्तर्राष्ट्रीय नशा विरोधी दिवस के सम्बन्ध में स्थानीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में वाद विवाद, ड्राइंग तथा पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया। इन प्रतियोगिताओं में ५० से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया तथा नशे से होने वाले दुष्परिणामों का बड़े ही सुन्दर ढंग से चित्रण किया।

इस समारोह की अध्यक्षता करते हुए रोहतक के अतिरिक्त उपायुक्त श्री अशोक खेमका ने कहा कि नशा चाहे किसी भी प्रकार का प्रकार का हो, वह खतरनाक है। अगर युवा वर्ग नशे की बुराइयों बारे जागृत हो जाये तो देश व समाज को इसके चंगुल से बचाया जा सकता है।

इससे पहले मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए जिला रेडक्रास सोसायटी के सचिव श्री जे० एन० महलावत ने सोसायटी द्वारा नशाखोरी से छुटकारा दिलाने के लिए चलाये जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी तथा कहा कि कोई भी व्यक्ति अगर नशा छोड़ना चाहे तो उसका उपचार निशुल्क किया जाता है।

शोक संवेदना

आर्यसमाज जूआं जिला सोनीपत के पूर्व मन्त्री श्री दीपचन्द आर्य के युवा सुपुत्र श्री सुरेन्द्रसिंह आर्य का १६ जून ९५ को अचानक २० वर्ष की अल्पायु में निधन हो गया। वे आर्यसमाज के कार्यों में रुचि लेकर सहयोग करते थे।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके दुखी परिवार को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

सभा मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक फोन : (७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ४०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २।   कोन नं० ४०७११   पृष्ठसंख्या १, ५६, ०८, ११,०८६

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष २२ अंक ३२   २१ जुलाई, १९९५   (वार्षिक शुल्क ५०)   (आजीवन शुल्क ५०१)   विदेश में १० पौंड   एक प्रति १-२५

वीतराग संन्यासी सर्वमान्य स्वामी सर्वानन्द जी की आर्यसमाजों से सामयिक अपील

सावधान ! पदाधिकार का रोग आर्यसमाज को बहुत निर्बल बना रहा है

सभी आर्य सभायें वैदिक धर्म के प्रचार के लिए बनाई गई थी। सभाओं का मुख्य काम ही वेदप्रचार करना है। अतः वैदिक धर्म प्रचार के लिए सुयोग्य उपदेशक और आर्य भजनोपदेशक काफी संख्या में रखकर शहरों में तथा ग्रामों में वैदिक धर्म का प्रचार करवाना चाहिए।

आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों को पदों से मोह नहीं करना चाहिए। अधिक से अधिक तीन वर्ष बाद दूसरे कार्यकर्त्ताओं को कार्य करने का अवसर देवें, साथ ही वैदिक धर्म के प्रचार में नये कार्यकर्त्ताओं की सहायता भी करें, इससे उनका आर्यजगत् में बहुत मान बढ़ेगा तथा यशस्वी होंगे। पदों पर निरन्तर उन्हीं व्यक्तियों के बने रहने से लोगों में असन्तोष और अविश्वास बढ़ता है।

सभाओं के चुनाव में जो आर्य प्रतिनिधि भाग लें, उन्हें भी आर्यसमाज के हित को देखकर पदाधिकारियों का चुनाव करना चाहिए। यदि वह धर्मविरुद्ध पक्ष विपक्ष देखकर चुनाव करते है, तो वह अवश्य ही पाप के भागी होंगे। अतः उन्हें धर्म और ईश्वर को साक्षी मानकर सब पदाधिकारियों का चुनाव करना उचित है।

इस समय जहां-जहां भी आर्यसमाजों में देर से पदाधिकारी चले आ रहे हैं, उन्हें पद का मोह छोड़ देना चाहिए। पीछे अधिकारी अपना पदरक्षा के लिए लोगों [illegible] उत्पन्न करते रहे हैं। इससे सभाओं आर्यसमाजों में [illegible], इसलिए तीन वर्ष होने पर पदाधिकारी स्वयं ही अपने [illegible] का त्याग करें, तो उनके लिए तथा आर्यसमाज दोनों का भला होगा। इस समय जो आर्यों में असन्तोष दिखाई देता है, उसी को देखकर यह थोड़ासा निवेदन किया है।'

सर्वानन्द सरस्वती
दयानन्द मठ, दीनानगर

यम-नियमों का फल

(स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा)

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि ये आठ योग के अंग हैं। 'अष्टांगयोग' के अनुष्ठान को उपासनायोग भी कहते हैं। इन अङ्गों में से पहिला अंग यम है। यह पांच प्रकार का है—

अहिंसा—सब प्रकार से सब काल में सब प्राणियों के साथ वैर छोड़कर अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। प्रेम प्रीति से वर्त्तना। यह अहिंसा शेष यम-नियमों का मूल है। इसी अहिंसा के ज्ञानार्थ इन यम-नियमों के अनुष्ठान से अहिंसा का शुद्धरूप किया जाता है।

सत्य—जैसा अपने ज्ञान में हो, वैसा ही सत्य बोलना, करना और मानना। मिथ्या कभी न बोलना। वाणी के प्रयोग का अर्थ ही यही है कि 'जो अपने वक्ता मन में हो, वही दूसरे (श्रोता) को मालूम हो।' अतः वाणी को सार्थक बनाने के लिये तीन बातों की ओर ध्यान रखना चाहिए कि वाणी १ वंचिता न हो अर्थात् वाणी ऐसी प्रयुक्त करे कि दूसरे को धोखा न हो। २—भ्रान्ता न हो अर्थात् वाणी ऐसी प्रयुक्त करे कि भाषण करते समय स्वयं अपने को ही उस विषय में कभी भ्रम हो। क्योंकि स्वयं भ्रान्त हो अर्थात् भ्रमात्मक वाणी के प्रयोग से अपना मानसिक विचार दूसरे को यथार्थ समझाया नहीं जा सकता। ३—प्रतिपत्तिवन्ध्या न हो अर्थात् अपने विचार को ऐसी भाषा में न समझावे, जिसे दूसरा समझता ही न हो या निष्प्रयोजन हो ऐसी वाणी से अपना बोध दूसरे में संक्रान्त नहीं किया जा सकता। तीनों प्रकार की वंचिता, भ्रान्ता और प्रतिप्रत्तिवन्ध्या भाषा का प्रयोग असत्य की परिभाषा में आता है। अच्छी प्रकार से परीक्षा करके सर्वभूत हितकारी अर्थात् ऐसा सत्य बोलना चाहिए, जो सब भूतों के उपकार के लिए हो। ऐसा सत्य जो सबका उपकार करने के स्थान पर अपकार करता है, वह ऊपर से देखने में पुण्य मालूम होता है, परन्तु वस्तुतः वह होता पाप है। क्योंकि उसका फल दुःख है।

अस्तेय—चोरी न करना, सदा सत्य व्यवहार करना अर्थात् पदार्थ के स्वामी की अथवा शास्त्रीय नियम की आज्ञा के बिना किसी के पदार्थ की इच्छा भी न करना अर्थात् मन-वचन-कर्म से चोरी त्याग।

ब्रह्मचर्य—विद्या पढ़ने के लिए बाल्यावस्था से लेकर सर्वथा जितेन्द्रिय होना, लम्पट न होना, पच्चीसवें वर्ष से लेके अड़तालीस वर्ष पर्यन्त विवाह करना, परस्त्री वेश्या आदि का त्याग, स्त्री के लिए सोलहवे वर्ष से लेकर उचित समय तक विवाह करना, परपुरुष से दूर रहना, सदा ऋतुगामी होना और अन्य सब इन्द्रियों पर संयम रखते हुए उपस्थ इन्द्रिय पर सदा संयम रखना। व्यभिचार त्याग।

अपरिग्रह—अत्यन्त लोलुपता और स्व-स्वाभिमान रहित होना, निरभिमान होना अर्थात् विषयों में अभिमानादि दोषों से रहित होना।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रैवार्षिक चुनाव पर
श्वेत पत्र

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज मन्दिर, नया बांस, दिल्ली-६

गतांक से आगे

गत वर्ष भी कैप्टन देवरत्न आर्य को निर्वाचन अधिकारी बनाया गया था इस बार भी इन्हें ही बना देना चाहिए। परन्तु इतने प्रतिष्ठित व्यक्तियों की मांग को यह कहकर अनसुना कर दिया कि हमारे यहाँ निर्वाचन अधिकारी बनाने का कोई नियम नहीं है। अन्तरंग सभा में निर्वाचन अधिकारी की मांग नहीं मानी गई।

अपराह्न दो बजे साधारण सभा का अधिवेशन पहली मंजिल पर हाल में प्रारम्भ होना था। प्रतिनिधियों को बैज लेकर ही अन्दर जाने दिया जाता था। प्रतिनिधि हाल में अपने स्थानों पर जाकर बैठ गए। पूर्व के अधिकारियों के बैठने की व्यवस्था मंच पर थी। ईश प्रार्थना से पूर्व ही श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री प्रान्तवार प्रतिनिधियों के नाम पुकारने लगे दूसरी ओर श्री लक्ष्मीचन्द जी हस्ताक्षर पञ्जिका लेकर हस्ताक्षर करवाने लग गये। हमें इस बात का सन्देह था कि पंजिका में हमारे हस्ताक्षर होने के उपरान्त ये लोग किसी भी समय निर्वाचन की घोषणा कर देंगे कि सर्वसम्मति से निर्वाचन हो गया तथा हम देखते रह जावेंगे। पिछली बार दिल्ली में श्री स्वामी आनन्द बोध जी ने ऐसा ही किया था। सभा में यह घोषणा की गई कि निर्वाचन कल होगा अधिकतर प्रतिनिधियों के चले जाने के उपरान्त उसी दिन स्वयं को सर्वसम्मत प्रधान घोषित कर दिया। इस बार भी हमें यह संदेह था, कहावत है "दूध का जला, छाछ को भी फूंक मारकर पीता है।"

जिस समय हस्ताक्षर पञ्जिका हमारे पास लेकर आए हमने निवेदन किया कि अभी हस्ताक्षर नहीं करेंगे। पहले निर्वाचन अधिकारी तथा निर्वाचन कार्यक्रम की घोषणा होनी चाहिए। यह कहने पर लक्ष्मीचन्द जी ने मंच पर जाकर वन्देमातरम् जी व मरवाह जी से बातचीत की श्री अश्विनीकुमार जी भी चर्चा में सम्मिलित दिखाई दिए। अश्विनीकुमार जी माइक पर आए और आते ही यह घोषणा की, जो व्यक्ति हस्ताक्षर नहीं करेंगे उन्हें प्रतिनिधि नहीं माना जावेगा तथा वे उठकर हाल से बाहर चले जावें। उनके इस कथन पर खड़ा होना पड़ा, मैंने खड़ा होकर कहा कि हम इतना चलकर अधिवेशन में सम्मि॰ होने के लिए आये हैं। वैसे ही क्यों हाल से बाहर चले जावें। हम हस्ताक्षर क्यों नहीं कर रहे हैं। इस विषय में मैं सभी प्रतिनिधियों को जानकारी देना चाहता हूं अतः मुझे बोलने का अवसर दिया जाना चाहिए। मुझे बोलने नहीं दिया गया, प्रो० शेरसिंह जी मंच पर थे, वे बोलने के लिए उठे सच्चिदानन्द जी व अश्विनीकुमार ने उनसे माइक छीन लिया। इस पर हरयाणा, हिमाचल, राजस्थान, उड़ीसा, बम्बई, मध्यभारत, मध्यप्रदेश, कर्नाटक इत्यादि प्रान्तों के लोगों ने इस प्रकार के व्यवहार का विरोध किया तथा सभी ने एक स्वर से मांग की कि निर्वाचन अधिकारी की नियुक्ति हो। परन्तु हठधर्मी लोगों ने इतने प्रान्तों के प्रतिनिधियों की बात भी स्वीकार नहीं की। गुप्त मतदान में हार जाने के गम से इसी शोर-शराबे में अश्विनीकुमार ने माईक से घोषणा की कि मैं प्रधान पद के लिए वन्देमातरम् जी का नाम प्रस्तुत करता हूं। बाबू सोमनाथ जी ने उनका समर्थन किया तथा वन्देमातरम् जिन्दाबाद के नारे लगाने प्रारम्भ कर दिए। इसी बीच दूसरी ओर मंच पर प्रो० शेरसिंह जी थे, उन्होंने श्री स्वामी विद्यानन्द जी का नाम प्रस्तुत कर दिया। मैंने श्री स्वामी जी के नाम का समर्थन किया। श्री स्वामी विद्यानन्द जी मंच पर आ गए। उन्हें मालायें पहनाई गईं। उधर वन्दे मातरम् जी को स्वयं ही माला पहनते देखा गया। दोनों तरफ जयकारे लगते रहे।

धृष्टता की पराकाष्ठा—

श्री वन्दे मातरम् के समर्थकों को श्री स्वामी विद्यानन्द जी के गले में पड़ी मालायें भी नहीं सुहाई। जालन्धर के तथाकथित सेठ योगेन्द्रपाल ने मंच पर चढ़कर श्री स्वामी विद्यानन्द जी के गले में पड़ी मालायें तोड़ दी। इस घृणित घटना ने आग में घी का काम किया। लोगों ने उसे धक्के देकर मंच से नीचे उतार दिया तथा स्वामी विद्यानन्द जी के समर्थन में हाल जयकारों से गूंज उठा। वन्देमातरम् जी ने महबूब नगर से कुछ गुण्डे बुलवा रखे थे उन्हें आर्यवीर दल की टोपियां पहनाकर हाल में लाया गया था। स्वामी विद्यानन्द जी के समर्थकों को जब वे भी न दबा सके उस समय वन्देमातरम् मंच से उतरे तथा अपने साथियों सहित हाल छोड़कर बाहर चले गए।

उनके हाल से बाहर चले जाने पर अधिसंख्य प्रतिनिधि हाल में रह गये। सभा के तत्कालीन उपप्रधान श्री प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में औपचारिक रूप से बैठक प्रारम्भ हुई। क्योंकि सारा रिकार्ड श्री सच्चिदानन्द जी के पास था वह उसे अपने साथ उठाकर ले गए। ऐसी स्थिति में हस्ताक्षर कराने के लिए रजिस्टर मंगवाया गया। इसी बीच श्री स्वामी ओमानन्द जी ने कहा कि हैदराबाद वह स्थान है जहाँ आर्यों ने निजाम के घुटने टिकाये थे। दुर्भाग्य से वन्देमातरम् ने आर्यसमाज के निष्ठावान आर्यजनों को जिनके पास असली सभा है उन्हें सार्वदेशिक से दूर रखा है वे लोग सभा के साथ आना चाहते हैं। उन्होंने अपने विधिवत् प्रतिनिधि चुने हैं। वे निर्वाचन में सम्मिलित होना चाहते हैं मेरा विचार है कि उन्हें सम्मिलित करना चाहिए। सदन ने उन्हें सम्मिलित करने की स्वीकृति दे दी। एक व्यक्ति को सुलतान बाजार आर्यसमाज भेजा गया सूचना मिलने पर आन्ध्रप्रदेश प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि भी बैठक में सम्मिलित हो गए। रजिस्टर आने पर हस्ताक्षर करवाये गये।

सर्वप्रथम प्रतिष्ठित सदस्यों का निर्वाचन हुआ। संन्यासियों में श्रद्धेय श्री स्वामी सर्वानन्द जी व श्री स्वामी सुमेधानन्द जी बम्बा को चुना गया। तीन अन्य सदस्य श्री गजानन्द आर्य कलकत्ता, श्री धर्मपाल आर्य दिल्ली, श्री पं० झाऊलाल शर्मा, बम्बई सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए। तत्पश्चात् श्री स्वामी धर्मानन्द जी ने प्रस्ताव रखा कि निर्वाचन के लिए निर्वाचन अधिकारी चुना जाना चाहिए मेरी दृष्टि में निर्वाचन अधिकारी के लिए कैप्टन देवरत्न जी योग्य व्यक्ति हैं। श्री केशवदेव वर्मा ने स्वामी जी के प्रस्ताव का समर्थन किया इसके साथ ही समस्त प्रतिनिधियों ने स्वामी जी के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कैप्टन देवरत्न जी को निर्वाचन अधिकारी चुना। इसके पश्चात् निर्वाचन की प्रक्रिया कैप्टन देवरत्न की देखरेख में प्रारम्भ हुई तथा पूरी कार्यकारिणी का निर्वाचन, निर्वाचन अधिकारी ने करवाया। श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती प्रधान, श्री स्वामी सुमेधानन्द जी मंत्री, श्री धर्मपाल जी आर्य कोषाध्यक्ष, श्री प्रो० धर्मवीर जी अजमेर पुस्तकाध्यक्ष, इसके अतिरिक्त ७ उपप्रधान, ४ उपमंत्री एवं अन्तरंग सदस्यों का निर्वाचन सर्वसम्मति से हुआ। निर्वाचन अधिकारी ने सभी को निर्वाचित घोषित किया। यह कार्यवाही पांच बजे तक चली इसी बीच सूचना प्राप्त हुई कि श्री वन्देमातरम् ने भोजन एवं आवास की व्यवस्था को हटा लिया है। उसी समय सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि अगली बैठक रात्रि को आठ बजे आर्य प्रतिनिधि सभा भवन सुल्तान बाजार में होगी। श्री प्रो० विट्ठल राव ने कहा कि आप लोगों के भोजन एवं आवास की व्यवस्था हम करेंगे। आप हमारे अतिथि हैं।

दिल्ली का घटनाक्रम

दि० २९ मई को मैं तथा श्री वर्मा जी दोनों वायुयान से प्रातःकाल ही दिल्ली आ गये। २९ मई को ही हमने रजिस्ट्रार कार्यालय में नव निर्वाचित कार्यकारिणी के अधिकारी एवं सदस्यों की सूची देकर उसकी प्राप्ति करवा ली।

१ जून को कार्यालय में प्रवेश

श्री स्वामी विद्यानन्द जी ३१ मई को हैदराबाद से दिल्ली पहुंचे। रेलवे स्टेशन पर आर्यजनों ने उनका स्वागत किया। उनके यहां आने पर यह निश्चय किया गया कि दि० १ जून को सार्वदेशिक सभा के कार्यालय चलकर चार्ज लेना चाहिए। वन्देमातरम् आदि की प्रवृत्ति को देखते हुए हमने कार्यालय जाने से पूर्व ही पुलिस को सूचित कर दिया

(शेष पृष्ठ ७ पर)

'सार्वदेशिक साप्ताहिक' की शालीनता

लेखक—प्रो० रत्नसिंह, बी-२१ गांधीनगर गाजियाबाद (उ प्र)

'सार्वदेशिक साप्ताहिक' आर्यों की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुखपत्र है, जिसका 'सम्पादन माननीय श्री पं० सच्चिदानन्द जी शास्त्री करते हैं। इस पत्र से यह अपेक्षा की जाती है कि विश्वभर के आर्यसमाजियों के लिए इसका प्रत्येक लेख (विशेषतः सम्पादकीय) मार्गदर्शन करेगा और इसमें प्रकाशित लेखों और समाचारों में शिष्टता, श्रेष्ठता, शालीनता, निष्कपटता, सत्यता और शिष्टाचार का ध्यान रक्खा जायेगा। साधारण शिष्टाचार का तकाजा है कि अपने से बड़ों के नाम के पूर्व आदर सूचक विशेषण यथा—'श्री', 'स्वामी', 'पूज्य' और 'महाशय' आदि तथा अन्त में 'जी' या 'महोदय' का प्रयोग करना चाहिए। विरोधी के नाम के साथ भी इनका प्रयोग करने में कृपणता नहीं करनी चाहिए।

इस वर्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण अधिवेशन २७ व २८ मई १९९५ को हैदराबाद में सम्पन्न हुआ। सुना है कि अधिकारियों के निर्वाचन में अभूतपूर्व हंगामा, धक्का-मुक्की, शोर-शराबा और धांधलेबाजी हुई जैसी कि स्वर्गीय स्वामी आनन्दबोध जी के समय में भी नहीं होती थी। परम्परा से साधारण अधिवेशन का आरम्भ ईश प्रार्थना से होता आया है और उसके बाद दिवंगत महानुभावों के प्रति शोक प्रस्ताव पारित होता है। इस बार पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी के प्रति भी शोक प्रस्ताव पारित होना था परन्तु इस शोर-शराबे में किसी को भी न तो ईश्वर का ध्यान रहा और न ही पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी को याद आई। बस इसी शोर-शराबे में सभा के नियमों की परवाह न करते हुए आनन-फानन श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् जी को सभा प्रधान घोषित कर दिया और 'वन्देमातरम् जिन्दाबाद' के नारों से अधिवेशन हाल गूंज उठा। इसी बीच हाल में दूसरी ओर श्री प्रो० शेरसिंह जी और कैप्टन देवरत्न जी आदि ने अपना पृथक् निर्वाचन कर लिया जिसमें पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी प्रधान और स्वामी सुमेधानन्द जी मन्त्री निर्वाचित हुए। इन दोनों चुनावों में कौन वैध और कौन अवैध, इसका निर्णय अब दिल्ली का न्यायालय करेगा। सार्वदेशिक सभा ने कई वर्ष पूर्व एक प्रस्ताव पारित किया था कि कोई भी आर्यसमाज या सभा पारस्परिक विवाद न्यायालय में न ले जाये और जो कोई ऐसा करेगा उसे दण्डित किया जायेगा। परन्तु अपने ही निश्चय की सभा ने धज्जियां उस दिन उड़ाई जब गत वर्ष स्वर्गीय स्वामी आनन्दबोध जी और श्री पं० सच्चिदानन्द जी ने श्री कैलाशनाथ सिंह जी, स्वामी इन्द्रवेश जी और स्वामी अग्निवेश जी के विरुद्ध दिल्ली न्यायालय में एकवाद दायर कर दिया। यह वाद अभी तक लम्बित है।

इस प्रकार हैदराबाद अधिवेशन के बाद दो सार्वदेशिक सभाएं बन गई हैं। एक के प्रधान व मन्त्री क्रमशः श्री रामचन्द्र वन्देमातरम् जी और श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री हैं और दूसरी के प्रधान स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती और मन्त्री स्वामी सुमेधानन्द जी तथा प्रो० शेरसिंह जी आदि श्री पं० सच्चिदानन्द जी शास्त्री के विरोधी पक्ष के हैं। इन लोगों को पं० सच्चिदानन्द जी शास्त्री किस शिष्टाचार से सम्बोधित करते हैं इसके लिए पाठक कृपया 'साप्ताहिक सार्वदेशिक' ११ जून १९९५ का अंक देखें। पृष्ठ १ पर लिखा है, "परन्तु अधिवेशन सभा आरम्भ होते ही अनुशासनहीनता का परिचय देते हुए विद्यानन्द, शेरसिंह और सुमेधानन्द जैसे लोगों ने चुनाव स्थगित किए जाने की मांग शुरू कर दी।" "अदालत में बहस के दौरान वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सोमनाथ मरवाह ने कहा कि विद्यानन्द नियमानुसार वोटर तो क्या नियमानुसार संन्यासी भी नहीं है, क्योंकि संन्यास दीक्षा के बाद भी वह घर में अपनी पत्नी के साथ रह रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि विद्यानन्द माडल टाऊन का स्थायी निवासी है और उसका राशन कार्ड भी उसी क्षेत्र का बना हुआ है।" मुझे विश्वास नहीं होता कि इस बाजारू, असभ्य और अपमानजनक भाषा का श्री सोमनाथ जी मरवाह ने प्रयोग किया हो। सम्भवतः सम्पादक महोदय ने अपनी भावना को उनके मुख से कहलवाया है।

स्वामी विद्यानन्द जी के चरित्रहनन का जो कुप्रयास किया गया है, उसका प्रत्याख्यान करने से पूर्व पाठकों के सम्मुख श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री के विरोधी पक्ष के मन्त्री स्वामी सुमेधानन्द जी की भाषा का एक नमूना प्रस्तुत किया जाता है, ताकि पाठक स्वयं विवेक कर सकें कि दोनों पक्षों में शिष्ट कौन है और अशिष्ट कौन। स्वामी सुमेधानन्द जी ने "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रैवार्षिक चुनाव पर श्वेत पत्र" नामक १६ पृष्ठीय एक ट्रैक्ट प्रकाशित कराया है जो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अस्थायी कार्यालय आर्यसमाज मन्दिर नया बास दिल्ली से प्राप्त हो सकता है। सार्वदेशिक सभा के नये निर्वाचन के सम्बन्ध में सत्यासत्य जानने के इच्छुक निष्पक्ष व्यक्तियों को इस ट्रैक्ट को अवश्य पढ़ना चाहिए। श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री की तुलना में आयु और अनुभव की दृष्टि से स्वामी सुमेधानन्द जी बहुत छोटे हैं, परन्तु शालीनता और शिष्टाचार की दृष्टि से वे कैसे हैं, इसका बोध पाठकों को स्वयं हो जायेगा। सभा के दोनों पक्षों के व्यक्तियों को स्वामी सुमेधानन्द जी इस प्रकार सम्बोधित करते हैं—"स्वर्गीय श्री आनन्दबोध जी, पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, श्री कैप्टन देवरत्न जी आर्य, बाबू सोमनाथ जी मरवाह, स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती, श्री पं० सच्चिदानन्द जी शास्त्री, श्री प्रो० शेरसिंह जी, जस्टिस महावीर सिंह जी, श्री वन्देमातरम् जी, श्री अश्विनीकुमार जी, श्री ऋषिपाल सिंह एडवोकेट तथा श्री सूर्यदेव जी आदि आदि। कहां तक नाम उद्धृत करूं। कितना अन्तर है सभा के दो मन्त्रियों में? श्री प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री एम० ए० पी० एच० डी० इस प्रकार बोलते हैं, "ओमानन्द, विद्यानन्द, सुमेधानन्द और शेरसिंह" जबकि पी० एच० डिग्री रहित स्वामी सुमेधानन्द जी का प्रकार यह है, "पूज्यपाद स्वामी ओमानन्द जी स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती, स्वामी सुमेधानन्द जी और प्रोफेसर शेरसिंह जी।"

स्वामी विद्यानन्द जी पर लांछन

स्वामी विद्यानन्द जी पर 'सार्वदेशिक साप्ताहिक' ने खूब कीचड़ उछाला है। ११ जून के अंक में लिखा है, "संन्यास दीक्षा के बाद भी वह घर में अपनी पत्नी के साथ रह रहे हैं। विद्यानन्द को स्वामी कहते हुए आर्यसमाजियों को शर्म आती है। २८ जून के अंक में माननीय श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री लिखते है, "आप सन्यासी होकर अपनी पत्नी के पास या साथ ही रहते हो, क्यों?" "आपको आर्यसमाज की प्राथमिक सदस्यता से भी पृथक कर देना चाहिए, सन्यास आश्रम में स्त्री के साथ रहना तो घोर अनर्थ है।" ऐसी दुष्टतापूर्ण और अश्लील भाषा का प्रयोग सार्वदेशिक सभा का पी० एच० डी० मन्त्री कर सकता है, यह तो सर्वथा अकल्पनीय है। विरोधी पक्ष की आलोचना करने का सबको अधिकार है परन्तु मर्यादा में रहकर।

स्वामी विद्यानन्द जी पर इस प्रकार आक्षेप लगने का एक कारण यह भी है कि उनके संन्यास आश्रम में प्रवेश की घटना की लोगों को सही जानकारी नहीं है। संन्यास की दीक्षा से पूर्व इनका नाम श्री लक्ष्मीदत्त दीक्षित था और पानीपत में आर्य कालेज के प्रिंसिपल थे। २७ जुलाई १९८० को चुपचाप जालन्धर पहुंचकर वहां पूज्य स्वामी सत्यानन्द जी (पूर्व नाम आचार्य रामदेव जी) से संन्यास की दीक्षा लेकर स्वामी विद्यानन्द जी बन गये। उसी दिन उन्होंने आर्यसमाज माडल टाऊन दिल्ली के मन्त्री जी को पत्र लिख दिया कि मैंने संन्यास की दीक्षा ले ली है, इसलिए मैं अब अपने घर नहीं लौटूंगा, आप कृपया मेरे रहने की व्यवस्था आर्यसमाज मन्दिर में करें। स्वामी जी २९ जुलाई को दिल्ली लौटे और आर्यसमाज मन्दिर के एक कमरे में रहने लगे। आर्यसमाज ने पहिले ६ मास तक ठहरने की अनुमति प्रदान की। फिर उस अवधि को ३ मास के लिए बढ़ाया। दिल्ली में रहने का एक कारण विशेष था। स्वामी जी ने निश्चय किया था कि सन्यास लेने पर गृहस्थ की चिन्ताओं से मुक्त होकर अपना सारा समय साहित्य सृजन में लगाऊंगा। आपके पास अपना एक विशाल पुस्तकालय है और दिल्ली में अनेक सार्वजनिक पुस्तकालय हैं जिनसे लाभ उठाया जा सकता है। आर्यसमाज द्वारा बढ़ाई गई अवधि के समाप्त होने से अभी

२० दिन शेष थे कि स्वामी जी को दिल का दौरा पड़ गया। आर्यसमाज के अधिकारियों ने स्वयं चिकित्सा की व्यवस्था न कर आर्यसमाज के सेवक द्वारा उनके घर यह सूचना भिजवा दी कि उन्हें दिल का दौरा पड़ गया है, आप उनको यहां से अपने घर ले जायें। समाचार मिलते ही तुरन्त घरवाले उनको घर ले आये और वहां उनकी चिकित्सा कराई। इस घटना से यह बात तो स्पष्ट है कि स्वामी विद्यानन्द जी संन्यास के बाद अपने घर आये नहीं, उन्हें तो वहां भेजा गया। यदि आर्यसमाज अपनी ओर से उनकी चिकित्सा की व्यवस्था करा देता तो यह स्थिति उत्पन्न न होती।

यह सत्य है कि वैदिक मर्यादानुसार संन्यासी को अपने घर नहीं रहना चाहिए। परन्तु स्वामी विद्यानन्द जी की स्थिति में क्या हो सकता था। आर्यसमाज तो बीमार संन्यासी को अपने यहां रखना नहीं चाहता और संन्यासी का अपने घर रहना सिद्धान्त विरुद्ध है। इस स्थिति में स्वामी जी कहां रहते? दिल के दौरे के कारण स्वामी जी में इतनी शक्ति तो है नहीं कि कहीं किसी अस्पताल में जाकर भर्ती हो जायें। वहां भी ले जानेवाला कोई सहायक होना चाहिए। क्या आक्षेपकर्त्ता यह चाहते हैं कि स्वामी जी आर्यसमाज मन्दिर और अपने घर के बीच कहीं सड़क के किनारे पड़े रहकर अपने प्राणों की आहुति दे देते ताकि घर में रहने के आक्षेप से बच जाते। रोगी स्वामी विद्यानन्द जी को अपने घर में घुटन महसूस हो रही थी। वे इस विचार से बड़े परेशान थे कि संन्यास लेकर फिर घर में ही रहना पड़ रहा है। इसलिए उन्होंने दिल्ली से प्रकाशित होनेवाले 'आर्यजगत्' और 'आर्य सन्देश' में अपना नाम दिये बिना यह समाचार प्रकाशित कराया, "एक विद्वान् आर्य संन्यासी को लेखन कार्य करने के लिए दिल्ली के किसी आर्यसमाज मन्दिर में एक कमरा चाहिए। भोजनादि का भार आर्यसमाज पर न होगा। समाज में रहते हुए कथा-प्रवचन द्वारा आर्यसमाज की निःशुल्क सेवा करेंगे।" दिल्ली में लगभग २५० आर्यसमाजें हैं, परन्तु एक ने भी उत्तर न दिया। आर्यसमाजों की इस बेरुखी से क्षुब्ध होकर परामर्श हेतु आर्यसमाज के तीन मूर्धन्य विद्वानों श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक श्री उदयवीर जी शास्त्री और महात्मा अमर स्वामी जी को स्वामी जी ने पत्र लिखे। अन्तिम दोनों विद्वान् संन्यास आश्रम गाजियाबाद में रहते थे और लगभग प्रतिदिन उनसे वार्त्तालाप चलता था। स्वामी विद्यानन्द जी (पूर्व दीक्षित जी) से अमर स्वामी जी (पूर्व ठा० अमरसिंह जी शास्त्रार्थ महारथी) के पारिवारिक सम्बन्ध रहे हैं। लाहौर में दोनों के घर मिले हुए थे। अमर स्वामी जी स्वामी विद्यानन्द जी के स्वभाव को खूब जानते थे कि वे कट्टर सिद्धान्तवादी और जिद्दी हैं। उन्होंने स्वामी विद्यानन्द जी को एक ही बात कही—जितना और जैसा कार्य आप अब कर रहे हैं वैसा इस समय आर्यसमाज में कोई नहीं कर पा रहा है। यदि वैदिक साहित्य सृजन का काम करना है तो जहां बैठे हो वहीं बैठे रहो। किसी की आलोचना की चिन्ता मत करना। श्री पं० उदयवीर जी शास्त्री की भी यही सम्मति थी।

अब स्थिति यह है कि स्वामी जी अपने मकान में ऊपर के कमरे में सबसे अलग रहते हैं। परिवार से उन्हें कुछ लेना-देना नहीं। अपनी एकमात्र छोटी बहिन की अन्त्येष्टि में भी नहीं गये। दिल्ली में कई रिश्तेदार रहते हैं परन्तु गत १५ वर्षों में एक बार भी किसी के यहां नहीं गये। जो लोग स्वामी जी के सम्पर्क में आते रहते हैं, उन्हें मालूम है कि गत १० वर्षों से उन्हें कितने रोगों ने घेरा हुआ है। हृदय रोग तो है ही। आंखें खराब हो चुकी हैं, उनका आपरेशन हो चुका है। थोड़ा बहुत दिखाई देता है उसी से काम चल रहा है। ३ वर्ष पूर्व हरपीस का जो भयंकर रोग हुआ था उसने तो स्वामी जी को अधमरा कर दिया था। यह ध्रुव सत्य है कि यदि इन रोगों की स्थिति में स्वामी जी घर न होते तो अब तक उनके नाम से पूर्व स्वर्गीय का विशेषण लग चुका होता। एक आश्चर्य तो यह है कि इस भयंकर रुग्णावस्था में भी आपने अत्युत्तम कोटि का साहित्य सृजन किया है जिससे आप अमर होगये। भूमिका भास्कर, सत्यार्थ भास्कर, वेदमीमांसा, अध्यात्ममीमांसा, अनादि तत्त्व दर्शन आदि लगभग ३५ ग्रन्थों की रचनाकर आपने आर्यसमाज की जो सेवा की है उस पर हमें गर्व है। हिन्दी के साथ अंग्रेजी में भी आपने उत्तमकोटि का साहित्य निर्माण किया है।

ये पंक्तियां लिखते हुए एक विचार मुझे बार-बार परेशान कर रहा है। आर्यसमाज के कई मूर्धन्य संन्यासियों के अन्तिम समय के दृश्य मेरे सामने हैं। पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज को अन्तिम समय में कहीं आसरा न मिला और अपनी बेटी के घर पर ही उनके प्राण निकले। अभी ६ मास पूर्व स्वामी सत्यप्रकाश जी की मृत्यु कहां हुई इसे सभी जानते हैं। अमर स्वामी जी महाराज ने अपने जीवनकाल में सैकड़ों शिष्यों को उपदेशक व भजनोपदेशक बनाया। अन्तिम समय में अपने परिवार पर आश्रित न होना पड़े।

अन्त में अपने आदरणीय बन्धु श्री पं० सच्चिदानन्द जी शास्त्री से एक विनम्र निवेदन करना चाहता हूं। अंग्रेजी भाषा के एक विद्वान् ने लिखा है, "Never throw mud, you may miss your mark, but you must have dirty honds" अर्थात् दूसरों पर कीचड़ मत फेंको। तुम्हारा निशाना चूक सकता है पर तुम्हारे हाथ तो गन्दे हो जावेंगे, इसमें सन्देह नहीं। वेद ने कहा है, 'अश्वकार न अशाक कर्त्तु अश्वे पादमङ्क्र रिम्'। अर्थात् जो व्यक्ति दूसरे की बुराई करता है, हानि पहुंचाना चाहता है, वह न कर सका। उसने तो उल्टे अपने पांव की अंगुली काट ली। वैसे भी शीशे के महल में रहनेवाले को दूसरों पर पत्थर नहीं फेंकना चाहिए क्योंकि यदि तुम्हारे महल पर एक भी पत्थर जा लगा तो तुम्हारा महल तो चूर-चूर हो जायेगा। आप मेरे मित्र हैं। हित की भावना से ही आपसे निवेदन है कि प्रलोभनवश आपसे जो एक अनैतिक और अवैधानिक कार्य हो गया है उसका आप प्रायश्चित्त कर लें। हैदराबाद सत्याग्रहियों को भारत सरकार से मिलनेवाली पेंशन और प्रथम श्रेणी का फ्री रेलवे पास आप भी ले रहे हैं जबकि आपने सत्याग्रह में भाग ही नहीं लिया क्योंकि उस समय आपकी आयु केवल ५-६ वर्ष थी। यदि आप अपनी पेंशन और रेलवे पास सरकार को लौटा दें तो निःसन्देह आपका यश बढ़ेगा। आपकी जानकारी के लिए इतना और लिख दूं कि स्वामी विद्यानन्द जी हैदराबाद सत्याग्रह में जेल में रहे।

स्वामी आनन्दबोध जी ने श्री दानसिंह को इनके पास भेजा कि पेंशन के फार्म पर हस्ताक्षर कर दें। परन्तु स्वामी विद्यानन्द जी ने पेंशन लेने से इन्कार कर दिया और कहा कि क्या हमने सत्याग्रह इसीलिए किया था कि बदले में पैसे मिलें।

आचार्य वाब्ले जी को साहित्य पुरस्कार

आर्यसमाज शांताक्रुज, बम्बई द्वारा शिक्षा तथा साहित्य के क्षेत्र में आर्य विद्वान् को प्रतिवर्ष दिया जानेवाला 'भेघ जी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार' इस वर्ष ४ जुलाई, ९५ को दयानन्द कालेज, अजमेर के संस्थापक प्राचार्य तथा जाने-माने शिक्षाविद् आचार्य दत्तात्रेय वाब्ले को दिया गया है। पुरस्कार में २५ हजार रुपए की राशि तथा चांदी की एक सुन्दर वैजयन्ती उन्हें ४ जुलाई, ९५ को आयोजित एक विशाल समारोह में भेंट की गई।

अजमेर लौटने पर यहां की दयानन्द विश्वविद्यालय, दयानन्द महाविद्यालय आदि शिक्षण संस्थाओं के अतिरिक्त रेडक्रास आदि अनेक संस्थाओं की ओर से जिनके वाब्ले जी अनेक वर्षों से अध्यक्ष रहे हैं भव्य स्वागत किया गया। सभा की अध्यक्षता सांसद प्रो० रासासिंह जी ने की। वाब्ले जी ने इस अवसर पर यह घोषणा कि उन्हें पुरस्कार की जो राशि मिली है उसे वह आर्य शिक्षा मन्दिर, बम्बई को भेंट करते हैं। इस राशि की ब्याज की आय से प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को आर्यसमाज के विद्वान् प्रचारक स्वर्गीय श्री भद्रसेन जी की स्मृति में छात्रवृत्तियां दी जाएगी। सभा का संचालन समाज के मंत्री श्री वेदरत्न आर्य द्वारा किया गया। उन्होंने इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्तियों के सन्देश पढ़कर सुनाये जिनके द्वारा वाब्ले जी के उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन के लिए शुभकामनायें व्यक्त की गई थीं।

—आचार्य गोविन्दसिंह संयुक्त मन्त्री, आर्यसमाज, अजमेर

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

क्योंकि इन विषयों के उपार्जन, रक्षण, विनाश, इनमें आसक्ति तथा इनके कारण दूसरे की हिंसा, दूसरे से विरोध होने में विविध प्रकार के दोष उत्पन्न होते हैं। अतः उतने ही पदार्थों से सन्तोष करना चाहिए जितने से इन दोषो के उत्पन्न होने की संभावना ही न हो।

ये पांच प्रकार के यम मिलके उपासना योग का प्रथम अंग है। इनका ठीक-ठीक अनुष्ठान करने से उपासना का बीज बोया जाता है।

नियम—इन आठ में से नियम दूसरा अंग है। वह पांच प्रकार का है—शौच, सन्तोष, तप स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान।

शौच—पवित्रता। यह दो प्रकार को है, आभ्यन्तर और बाह्य। भीतर की शुद्धि, धर्माचरण, सत्यभाषण, विद्याभ्यास, सत्संग आदि शुभ गुणों के आचरण तथा राग-द्वेष छोड़ने से होती है। बाहर की पवित्रता, जल आदि के द्वारा शरीर, स्थान, मार्ग, वस्त्र तथा खाने-पीने आदि के शुद्ध करने से होती है। परन्तु शरीर शुद्धि की अपेक्षा अन्तःकरण की शुद्धि सबको अवश्य करनी चाहिए, क्योंकि यही सर्वोत्तम और परमेश्वर प्राप्ति का एक मात्र साधन है।

सन्तोष—सदा धर्मानुष्ठान से अत्यन्त पुरुषार्थ करके प्रसन्न रहना अर्थात् धर्मपूर्वक पुरुषार्थ करने से लाभ में न प्रसन्नता और हानि होने पर न अप्रसन्नता करना। प्रसन्न होकर आलस्य छोड़कर सदा पुरुषार्थ करते जाना और दु:ख शोकातुर न होना। सम्यक् प्रसन्न होकर निरुद्यम रहना सन्तोष नहीं। किन्तु पुरुषार्थ जितना हो सके उतना करना, हानि लाभ में हर्ष व शोक न करना सन्तोष है।

तप—सदा दुःख सुख आदि द्वन्द्वों का सहन और अधर्म का त्याग कर धर्म का ही अनुष्ठान करना अर्थात् जैसे सोने को अग्नि में तपाकर निर्मल कर देते हैं, वैसे ही आत्मा और मनको धर्माचरण और शुभगुणों के आचरण रूप तप से निर्मल कर लेना।

स्वाध्याय—सर्वदा मोक्षविद्या विषयक वेदशास्त्र का सत्यशास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना, सत्पुरुषों के संग से ज्ञानवृद्धि, 'ओ३म्' इस एक परमात्मा के नाम का अर्थ विचार के साथ नित्यप्रति जप करना और ईश्वर का निश्चय करना।

ईश्वरप्रणिधान—सब सामर्थ्य, सब गुण, प्राण, आत्मा और मन आदि सत्य द्रव्यों का प्रेमभाव से परमेश्वर को आज्ञानुकूल, उसके लिये समर्पण करना। ये पांच प्रकार के नियम मिलकर उपासना-योग का दूसरा अंग है और इनका ठीक-ठीक अनुष्ठान करने से उपासना का बीज अंकुरित होता है।

यमों के अनुष्ठान के बिना केवल इन नियमों का सेवन न करे। किन्तु इन दोनो का सेवन (अनुष्ठान) करे। जो यमों का सेवन छोड़कर केवल नियमों का सेवन करता है, वह उन्नति को प्राप्त नही होता, किन्तु अधोगति को प्राप्त होता है अर्थात् ससार में गिरा रहता है। नियम यमों के सहकारी कारण हैं।

यमों के अनुष्ठान का फल—

अहिंसा का फल—जब मनुष्य अहिंसा धर्म में दृढ़स्थिति पा लेता है तब उसके मन से तो वैरभाव छूट ही जाता है, किन्तु उसके सामने या उसके संग के अन्य पुरुषों का भी वैरभाव छूट जाता है।

सत्याचरण का फल—जब मनुष्य निश्चयपूर्वक केवल सत्य ही मानता, बोलता और करता है, तब वह जो-जो योग्य काम करता और करना चाहता है, वे सब सफल हो जाते हैं।

अस्तेय का फल—जब मनुष्य अपने शुद्ध मन से चोरी के छोड़ देने की प्रतिज्ञा कर लेता है, तब उसको सब उत्तम-उत्तम पदार्थ यथायोग्य प्राप्त होने लगते हैं।

ब्रह्मचर्यानुष्ठान का फल—१. जब कोई मनुष्य बाल्यावस्था में विवाह न करे, उपस्थ इन्द्रिय का सयम रखे, २. वेदादि शास्त्रों को पढ़ता-पढ़ाता रहे, ३. विवाह के पीछे भी ऋतुगामी बना रहे और परस्त्रीगमन व परपुरुष रति आदि व्यभिचार को मन,वचन,कर्म से त्याग देवे, तब उसका दो प्रकार का वीर्य (बल) बढ़ता है। एक शरीर का, दूसरा बुद्धि का बल बढ़ने से मनुष्य (स्त्री-पुरुष) बहुत आनन्द में रहता है।

अपरिग्रह का फल—जब मनुष्य विषयासक्ति तथा शरीर के ममत्व से बचकर सर्वथा जितेन्द्रिय रहता है, "तब मैं कौन हूं, कहां से और क्यों आया हूं, मुझको क्या करना चाहिये, जिससे कल्याण हो ?" आदि शुभगुणों का विचार उसके मन में स्थिर हो जाता है।

नियमों के अनुष्ठान का फल –

शौच का फल—शरीर स्वस्थ, स्फूर्तिमान, निरालस और 'मन बुद्धि चित्त अहंकार' शुद्ध निर्मल विकाररहित हो जाता है अर्थात् बाह्यशुद्धि से योगी जब अपने शरीर और शरीरावयवों को बाहर-भीतर से मलिन पाता है, तब सभी शरीर मल आदि से भरे हैं, इस परीक्षित ज्ञान से वह दूसरे के संसर्ग में घृणा अर्थात् संकोच करके सदा अलग रहता है इससे वैराग्यभावना दृढ़ होती है। आन्तरिक शुचि से—अन्तःकरण की शुद्धि, मन की प्रसन्नता, एकाग्रता, इन्द्रियों का जय और आत्मा के देखने की योग्यता प्राप्त होती है।

सन्तोष का फल—सन्तोष से जो सुख मिलता है, वही सबसे उत्तम है।

तप का फल—तप से योगी-उपासक का शरीर और इन्द्रियां (=दोष, मल, पापवासना) के क्षय से दृढ होके सदा रोगरहित रहती है तथा अभ्यास में दृढ़ता आती है।

स्वाध्याय का फल—इष्टदेव सर्वान्तर्यामी परमात्मा के साथ सम्बन्ध स्थापित होता है। फिर उसके अनुग्रह का सहाय, अपने आत्मा की शुद्धि, सत्याचरण पुरुषार्थ और प्रेम के सम्प्रयोग से जीव शीघ्र ही मुक्ति को प्राप्त हो जाता है।

ईश्वरप्रणिधान का फल—उपासक मनुष्य सुगमता से समाधि को प्राप्त होता है।

यम—नियमों के पालन से ही आगे के योगांगों का अनुष्ठान कर सकते हैं। यह सब महर्षि दयानन्द जी महाराज के ग्रन्थों के आधार पर ही लिखा गया है।

हत्यारी सास

ओमप्रकाश मंगला (मढनाका) की पत्नी पुष्पा पुत्री रामजीलाल साईकलवाला (पलवल) ने अपनी पुत्रवधू सुमन और उसकी नवजात कन्या (पोती) को जहर देकर खत्म कर दिया।

यह चालाक औरत एक वर्ष तक सुमन से कह कहकर पीहर (मायके) से कीमती सामान मगवाती रही। जब आगे मिलने की आशा न रही तो उसे ताने मार-मार कर सताने लगी और लड़के की दूसरी शादी करके दहेज लेने के चक्कर में हत्यारी ने दो प्राणियों का खून कर दिया। दि० १२-६-९५ को छ. महीने की मासूम बच्ची को बोतल के दूध में विष मिलाकर पिला दिया और तीन दिन बाद दिनांक १५-६-९५ को सुमन को हरी सब्जी में जहर मिलाकर दे दिया। अब यह दुष्ट महिला दिनांक १५-६-९५ से जेल में बन्द है। आज नारी की नारी दुश्मन हो रही है। ऐसी स्त्रियों का समाज से बहिष्कार होना चाहिए।

देवराज आर्य मित्र (सुमन का पिता)
३६५१/६ नारंग कालोनी त्रिनगर, दिल्ली-३५

जाडरा में आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न

ग्राम जाडरा जिला रेवाड़ी सार्वदेशिक आर्य वीर दल के तत्वावधान में २८ मई ९५ से ५ जून तक चरित्र निर्माण एवं आधुनिक व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन स्वामी धर्मवीर गुरुकुल घासेड़ा ने किया तथा दि० ५-६-९५ को समापन समारोह में हविपा के नेता राजेन्द्र ठेकेदार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। इसका आयोजन श्री महेन्द्रसिंह सयोजक व रोशनलाल (मन्त्री) आर्य वीर दल ने किया। शिविर में श्री [illegible]न्द्र शास्त्री गुरुकुल झज्जर ने २५ प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया। शिविर के दौरान मास्टर जयसिंह जी, मास्टर श्री दानद[illegible]न जी मण्डलपति रेवाड़ी, श्री वेदप्रकाश जी मन्त्री आर्यवीर दल हरयाणा, श्री राजकुमार जी मन्त्री आर्यसमाज रेवाड़ी ने छात्रों को नैतिक शिक्षा का ज्ञान दिया।

—रोशनलाल मन्त्री आर्यसमाज जाडरा

बालसमन्द (हिसार) में शराबबन्दी अभियान पुनः चालू

मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल के चुनाव क्षेत्र आदमपुर जिला हिसार के गांव बालसमन्द में १६ मार्च १९९३ से ३१ मार्च १९९४ तक इन पंक्तियों के लेखक के नेतृत्व में बालसमन्द के बहादुर नवयुवकों ने सफल एवं ऐतिहासिक धरना चलाकर ५७ लाख का शराब का ठेका बन्द करवाया था। जबकि गांव की पंचायत पुलिस प्रशासन एवं स्वयं भजनलाल भी ठेकेदार की मदद कर रहे थे। धरने के समय भी काफी उतार-चढाव आए। गांव के नवयुवक एवं महिलाएं धरने में पूर्ण सहयोग दे रहे थे। आरम्भ से अन्त तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त एवं संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा का भी विशेष सहयोग रहा। कुछ मास बाद कुछ असामाजिक तत्वों के माध्यम से ठेकेदार पुलिस को मिली-भगत से गांव में अवैध शराब का धन्धा करने लगा। पुलिस चौकी ने बार-बार कहने पर कोई कार्यवाही नहीं की। आखिर नवयुवकों ने बस अड्डे पर छापे मारकर दुकान व होटलों से उठाकर शराब की बोतलें फोड़ दी। पुलिस ने समिति सदस्यों पर ही केस बना दिया।

उसके बाद पंचायत चुनाव आए उस समय भी शराब व भाग खुलकर चला। श्री यज्ञदत्त शर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती मीनाक्षी सरपंच चुनी गई। लोगों में कुछ आशा जगी कि पीडित परिवार में महिला सरपंच बनी है अब गांव में अवैध शराब की बिक्री बन्द होगी। लेकिन परिणाम विपरीत हुआ। पैसों का लालची एवं भजनलाल का चमचा होने के कारण ठेकेदार से मिलकर पण्डित जी स्वयं कुछ असामाजिक तत्वों से मिलकर शराब बिक्री का अवैध धन्धा करने लग गया। इससे भी सब्र नहीं आया। अपने खेत में हिसार रोड पर एक कमरा बनाकर पंचायत प्रस्ताव शराब का उपठेका खुलवाने के लिए भेज दिया। कुछ आर्यसमाज के बुजुर्गों ने भी मुख्यमन्त्री भजनलाल के आगे घुटने टेक दिए। गांव में अवैध शराब का धन्धा जोरों पर चल पड़ा।

दूसरी ओर उपठेका खुलवाने की खबर आग की तरह फैल गई। श्री जगदीश पंच के नेतृत्व में पंचायत मेम्बर समिति सदस्य हिसार उपायुक्त महोदय से मिले और गांव में उपठेका खोलने पर आपत्ति की। साफ शब्दों में कहा किसी भी कीमत पर ठेका नहीं खुलने देंगे। सरपंच पर बहुमत नहीं है। इस प्रकार ठेका नहीं खुल सका। अवैध बिक्री का धन्धा जारी रहा।

१० मई १९९५ को फूला ठेकेदार की जीप गांव में अवैध शराब डालने आई। समिति के बहादुर नवयुवकों ने उसे पकड़ लिया। कुछ बोतल फोड दी। बाद में जीप राजस्थान भिराणी थाना में ले गए। वहां ठेकेदार ने हिसार पुलिस से मिलकर उल्टा समिति के १२ सदस्यों पर केस बना दिया। १९ को चौकी का हवलदार ओमप्रकाश शराब पीकर अनाजमण्डी में हुड़दंग मचा रहा था। समिति के सदस्यों ने उसे धमकाया और हिसार सिविल हस्पताल में लाकर डाक्टरी करवा दी। पुलिस अपनी बेइज्जती मानकर आगबबूला होगई। बालसमन्द गांव पुलिस छावनी में बदल गया। २० मई को पुलिस समिति के २ सदस्यों को घर से उठाकर ले गई। अन्य सदस्य भूमिगत होगए। उन दो सदस्यों की जमकर पिटाई की गई। २१ तारीख को जमानत हुई। शेष सदस्य पुलिस के हाथ नहीं आए। गत दिनों ४ समिति सदस्यों ने हिसार कोर्ट में अग्रिम जमानत करवा ली और २ समिति सदस्यों ने हाईकोर्ट से जमानत करवाई है। पुलिस देखती ही रह गई। इस बार भी समिति सदस्यों पर झूठा मुकदमा बनाया गया। लेखक भी तीन बार इस दौरान गांव बालसमन्द गया।

बहादुर आर्य नवयुवकों ने संगठित होकर पुनः गांव में अवैध शराब की बिक्री बन्द करने तथा पूर्ण शराबबन्दी का अभियान तेज कर दिया है। बालसमन्द चौकी का सारा स्टाफ बदल दिया गया। लेकिन नए स्टाफ का भी वही हाल है। ठेकेदार पुलिस को मासिक पैसे देकर गांव में शराब का अवैध धन्धा करवा रहा है। श्री यज्ञदत्त शर्मा व श्री आजादसिंह पूर्व पंच फूला ठेकेदार के अतिरिक्त सिवानी मण्डी ठेके से तथा राजस्थान से भी अवैध शराब लाकर बेच रहे हैं। दोनों भजनलाल के चमचे हैं।

गत दिनों १५-२० आर्य नवयुवक मा० प्रेमसिंह की अध्यक्षता में हिसार उपायुक्त तथा पुलिस अधीक्षक से मिले। पं० यज्ञदत्त व कुछ असामाजिक तत्वों की शिकायत की। जो सार्वजनिक जगह पर शराब की अवैध बिक्री करके गांव की शांति भंग करना चाहते हैं और ये नवयुवक समाज सुधार के काम में लगे हुए हैं। उसके बाद सदर पुलिस हिसार को बुलाकर १ जुलाई को एक जरीकेन राजस्थान शराब व २ पेटी शराब आजादसिंह की पकड़वाई। एक पेटी बस अड्डे पर मंगतराम राजपूत के होटल से पकड़वाई उनका चालान करवाया। ४ जुलाई को माडल ४०७ केन्टर में रामबिलास सेठ व सुबल शर्मा ४७ पेटी शराब सिवानीमण्डी के ठेके से लाकर श्री यज्ञदत्त के कहने पर घर में उतार रहे थे उनको भी पुलिस में पकड़वाया। एक और सरपंच महोदया का पति पं० यज्ञदत्त शराब का धन्धा करके गांव का नाश करने पर तुला हुआ है। दूसरी ओर शराबबन्दी समिति के बहादुर नवयुवक गांव में पूर्ण शराबबन्दी के लिए प्रयासरत हैं। नवयुवकों का कहना है चाहे कुछ भी हो गांव में शराबखोरी का धन्धा नहीं चलने देंगे।

ज्ञातव्य है कि धरने से लेकर आज तक शराबबन्दी सदस्यों पर पुलिस ने ७ झूठे मुकदमें लगा रखे हैं। सब में जमानत करवा रखी है। केस चल रहे हैं। समिति के सदस्यों के हौंसले बुलन्द हैं। संघर्ष ही जीवन है।

—अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी सभा उपदेशक एवं संयोजक शराबबन्दी समिति जिला हिसार

ठेका बन्द न होने पर आग लगाने की चेतावनी

बेरी—गांव मुहम्मदपुर माजरा की महिलाओं ने प्रतिज्ञा की है कि यदि उनके गांव के ठेके को १५ दिन के अन्दर-अन्दर नहीं उठाया गया तो वे ठेके को आग लगा देंगी। यही नहीं, उन्होंने जिला परिषद् अध्यक्ष आनन्दप्रकाश को भी धमकी दे डाली कि यदि १५ दिन में ठेका न उठा तो वे उन पर पथराव करेंगी। आनन्दप्रकाश ने ठेका उठवाने का उन्हें आश्वासन दिया।

शराबबन्दी कमेटी बेरी की अध्यक्षा उर्मिला ने आरोप लगाया है कि शराब के ठेके के दोनों ओर नल है, जहां से गांव की महिलाएं पानी लाती हैं। ठेके पर पड़े शराबी उन्हें फब्तियां कसते हैं। रात को शराब पीकर आदमी अपनी पत्नियों को पीटते हैं। उपाध्यक्ष बिमला ने बताया कि कई आदमियों ने शराब पीकर अपनी जमीन तक बेच डाली, अपनी बीवी के गहने बेच डाले। उन्होंने कहा कि यदि अधिकारियों ने यह ठेका बन्द नहीं करवाया तो महिलाएं झज्जर-दादरी मार्ग पर गुजरने वाले अधिकारियों का घेराव नहीं उन पर पत्थर फेंकेंगी। उन्होंने कहा कि जिस तरह हमारी नींद हराम हो रही है वे अधिकारियों को भी चैन से नहीं सोने देंगी।

उन्होंने कहा कि हर पार्टी के नेताओं ने शराब का ठेका बन्द करवाने का आश्वासन दिया है कि यदि १५ दिन के अन्दर-अन्दर ठेका बन्द नहीं हुआ तो महिलाएं प्रत्येक पार्टी के नेताओं का जो गांव में आयेंगे ईंट-पत्थरों से स्वागत करेंगी तथा आनेवाले चुनाव में किसी भी पार्टी को वोट नहीं देंगी। उन्होंने यह भी आशंका जताई कि उनकी हालत भी सुशीला जैसी हो सकती है पर अब पीछे नहीं हटेंगी। पिछले दिनों इन महिलाओं ने उपायुक्त रोहतक के निवास पर भी धरना दिया था। —(दैनिक ट्रिब्यून)

(पृष्ठ २ का शेष)

था कि कार्यालय पहुंचने पर स्वार्थी लोगों द्वारा हमारे साथ झगड़ा करने की सम्भावना है। निश्चित कार्यक्रम के अनुसार हम १ जून को प्रातः ११ बजे कार्यालय पहुंचकर हमने श्री सच्चिदानन्द जी से चार्ज देने को कहा, यह सुनते ही सच्चिदानन्द बौखला गए तथा जोर-जोर से गालियां निकालने लगे। वहां पर पहले से उपस्थित लक्ष्मीचन्द ने भी नवनिर्वाचित अधिकारियों से अभद्र व्यवहार किया। ऊंची आवाज सुनकर नीचे खड़ी पुलिस ऊपर आगई। थोड़े देर में श्री सूर्यदेव जी व बन्देमातरम् जी आए। उन्हें भी पुलिस ने कार्यालय में नहीं चढ़ने दिया तथा नीचे ही रोक दिया। स्वामी विद्यानन्द जी ने कर्मचारियों की बैठक ली। हमें ज्ञात हुआ कि समस्त महत्त्वपूर्ण रिकार्ड सोमनाथ जी मरवाह के घर पर हैं। हम दिनभर कार्यालय में ही रहे। सायंकाल लगभग छः बजे हमें पुलिस के अधिकारियों ने कहा कि हम पर प्रशासन का अत्यधिक दबाव है। अतः आप इसे कृपाकर खाली कर देवें। बाद में हम इसे बन्द कर देंगे। पुलिस अधिकारियों से हमारी बहुत देर तक चर्चा हुई। उन्होंने बार-बार यही कहा कि अत्यधिक प्रशासनिक दबाव के कारण हम मजबूर हैं, आप न्यायिक आदेश ले आवें, यहां प्रश्न सच्चाई का नहीं रहा। हमने पुलिस के साथ उलझने की अपेक्षा न्यायिक उचित कार्यवाही करना ही ठीक समझा। पुलिस को कार्यालय सौंपकर हम चले आए। बाद में हमें मालूम हुआ कि यह रामचन्द्रराव की पुलिस के साथ साजिश थी, जिसके फलस्वरूप बाद में पुलिस से वह कार्यालय रामचन्द्रराव को सौंप दिया।

विश्वस्त सूचनानुसार दि० २ जून को श्री बन्देमातरम् जी अपनी सूची लेकर कार्यालय गये। हमें ज्ञात हुआ कि मुख्यमन्त्री का दबाव दिलवाकर २ जून को ही रजिस्ट्रार से अपनी सूची को प्रमाणित करवा लिया। इसकी सूचना हमें मिलने पर मैंने दि० ६ जून को कमिश्नर महोदय के नाम एक पत्र लिखा जिसमें निर्वाचन में हुई अनियमितता तथा बोगस प्रतिनिधियोंवाली सभाओं का उल्लेख किया गया। कमिश्नर महोदय ने कार्यवाही हेतु पत्र रजिस्ट्रार के पास भेज दिया। रजिस्ट्रार ने हमें सुना, दि० ७ जून को रजिस्ट्रार ने एक नोटिस श्री बन्देमातरम्, श्री सच्चिदानन्द शास्त्री व श्री सूर्यदेव तीनों के नाम भेजा जिसमें हमारे आरोपों का उल्लेख करते हुए दि० १२ जून को ११ बजे मूल रिकार्ड सहित उपस्थित होने का आदेश दिया गया। इस पत्र में यह भी आदेश दिया गया कि रजिस्ट्रार कार्यालय द्वारा दि० २-६-९५ को प्रमाणित कर दी गई पदाधिकारियों सहित अन्तरंग सभा की सूची को अग्रिम आदेश तक निलम्बित किया जाता है। इस आदेश के मिलते ही श्री सूर्यदेव जी फिर अपने आराध्य देव मुख्यमन्त्री मदनलाल खुराना के पास पहुंचे क्योंकि रिकार्ड देने से तो पोल ही खुल जाती कोई रिकार्ड हो तो दे। श्री सूर्यदेव जी के पास पहुंचने पर मुख्यमन्त्री ने रजिस्ट्रार को डांट पिलाई तथा कहा कि आपने कैसे नोटिस दे दिया, स्वीकृत सूची को कैसे निलम्बित कर दिया। आप इसे वापिस करिये, रजिस्ट्रार ने निलम्बन को वापिस करने में असमर्थता प्रगट की। रजिस्ट्रार ने श्री सूर्यदेव जी से एक हाथ से लिखा चार लाइन का पत्र ले लिया जिसमें सूर्यदेव ने स्वयं लिखा है कि आपसे मुख्यमन्त्री जी के कमरे में बात हुई थी कि यह संस्था अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है आपके नोटिस से सारा काम रुक जावेगा। अतः आप इसे वापिस लेवे। रजिस्ट्रार ने वह आदेश तो वापिस नहीं लिया परन्तु एक नया आदेश निकाल दिया। जिसमें लिखा है कि आपके निर्वाचन में विवाद है जब तक इसका निर्णय नहीं हो तब तक इसका निर्णय नहीं हो तब तक निर्वाचन से पूर्व की स्थिति रहेगी, वही कार्यकारिणी कार्य करेगी जो निर्वाचन से पूर्व थी साथ ही यह लिखा कि—"यह कार्यकारिणी केवल कार्य संचालन करेगी किसी प्रकार का नीतिगत निर्णय लेने का अधिकार इसे नहीं होगा।"

आर्यजन विचार करें कि किस प्रकार सत्ता का सहारा लेकर सत्य का गला घोंटा जा रहा है। यदि बन्देमातरम् एण्ड कम्पनी का निर्वाचन सही था तो रजिस्ट्रार के सामने रिकार्ड प्रस्तुत क्यों नहीं किया? रजिस्ट्रार ने भी मुख्यमन्त्री के दबाव में आकर इन्हें रिकार्ड में हेराफेरी करने की खुली छूट दे दी।

मेरा ऋषि दयानन्द के भक्त आर्यजनों से निवेदन है कि सभाओं में फूट डालकर, बोगस सभा बनाकर कुर्सी के भूखे ये लोग आर्यसमाज को कहां ले जाना चाहते हैं? इनसे सावधान होने का समय आ गया है। साधु संन्यासी व विद्वानों का अपमान करनेवाले स्वार्थी लोगों को आर्यसमाज से खदेड़ने की आवश्यकता है। इन आधारहीन बातुओं ने आर्यसमाज जैसे तेजस्वी संगठन को प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी बनाकर रख दिया है। आर्यसमाज का संगठन चापलूसों के सहारे आगे नहीं बढ़ सकता। इस आन्दोलन को प्रचण्ड करने के लिए युवकों तथा त्यागी तपस्वी विद्वान साधु संन्यासियों को आगे आना होगा। आर्यसमाज को स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम, महाशय राजपाल, भाई श्यामलाल, भाई बंशीलाल, भक्त फूलसिंह जैसे हजारों सैकड़ों वीरों ने अपना खून देकर सींचा है। अनेकानेक विद्वानों व उपदेशकों ने अपनी जवानियां भेंट करके अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है।

आज फिर वही समय आ गया है। हमें आर्यसमाज को बचाने के लिए कितनी ही बड़ी कुर्बानी क्यों न देनी पड़े अब हम पीछे नहीं हटेंगे।

मुझे पूर्ण आशा है मेरे इस वक्तव्य को पढ़कर आर्यजनता वास्तविकता को जान पायेगी तथा इस आर्यसमाज के हित में पूर्ण सहयोग देगी। श्री बन्देमातरम् तथा श्री सच्चिदानन्द सार्वदेशिक पत्रिका में असत्य तथा सारहीन बातें लिखकर लोगों को अन्धेरे में रख रहे हैं। उनके वक्तव्यों की पोल इस विज्ञप्ति में प्रकाशित हो रहे रजिस्ट्रार के दो पत्रों से खुल जावेगी वे कितना झूठ लिखते हैं इसी ने आपको ज्ञात हो जावेगा। हमने २९ मई को अपनी सूची रजिस्ट्रार को दी थी। श्री बन्देमातरम् ने २ जून को मुख्यमन्त्री जी का दबाव दिलवाकर अपनी सूची को प्रमाणित करवा लिया जिसे सच्चिदानन्द जी ने १२ जून के सार्वदेशिक में छापा है। मैंने रजिस्ट्रार सोसायटी को एक पत्र दि० ६-६-९५ को लिखा मेरा पत्र प्राप्त होने पर रजिस्ट्रार ने ७-६-९५ को ही इनकी सूची को निलम्बित करते हुए १२-६-९५ को रजिस्ट्रार कार्यालय में रिकार्ड सहित उपस्थित होने को कहा। पोल खुलने के भय से ८-६-९५ को ही श्री सूर्यदेव जी पुनः मुख्यमन्त्री जी के पास गए रजिस्ट्रार पर पुनः दबाव दिलवाया तथा अपनी सूची के निलम्बन को रद्द करने के लिए कहा, रजिस्ट्रार ने साफ-साफ मना कर दिया। इनके काफी अनुनय विनय करने पर तथा मुख्यमन्त्री के दबाव में आकर रजिस्ट्रार ने एक नया आदेश निकाला जिसमें हैदराबाद में हुए चुनाव को विवादित मानते हुए यह निर्णय दिया कि जब तक इस निर्वाचन का निर्णय नहीं होता है तब तक पुरानी अन्तरंग सभा ही कार्य करेगी। हमारी दृष्टि से रजिस्ट्रार का यह आदेश अन्यायपूर्ण है इस पर हम कानूनी कार्यवाही कर रहे हैं। परन्तु सच्चिदानन्द की उस सूची की पोल तो इस पत्र में खोल ही दी जिसे वह रजिस्ट्रार द्वारा स्वीकृत कहते हैं। यह संघर्ष जारी रहेगा। समय-समय पर आर्य जनता को हम अवगत कराते रहेंगे। मैं आर्यजनता की जानकारी के लिए रजिस्ट्रार के दोनों आदेश यथावत् प्रकाशित कर रहा हूं। साथ ही यह भी सूचित कर रहा हूं कि हमने अपना कार्य निर्विघ्न प्रारम्भ कर दिया है।

(क्रमशः)

नव गृह प्रवेश पर हवन

दिनांक ६-७-९५ को ग्राम कंवारी जिला हिसार में सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी द्वारा श्री दुदुराम आर्य के नवगृह प्रवेश के उपलक्ष में हवन किया गया। इस अवसर पर श्री क्रान्तिकारी जी ने पंच महायज्ञों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित नर-नारियों को स्पष्ट शब्दों में कहा कि अगर सुख से जीना चाहते हो तो आपस के वैर-विरोध को छोड़कर घर-घर में यज्ञ कराओ और शराब, मांस, धूम्रपान छोड़कर स्वास्थ्यवर्धक घी, दूध, फल-फ्रूट, मिष्टान्न, बादाम, अन्न, चावल, दाल आदि खाओ।

आर्यसमाज यही सिखाता है जिओ और जीने दो वरना आनेवाला इतिहास माफ नहीं करेगा। —मन्त्री आर्यसमाज कंवारी

एक शिक्षित मुस्लिम युवती व एक युवक ने वैदिक धर्म को अपनाया

कानपुर—आर्यसमाज मन्दिर गोविन्दनगर में समाज व केन्द्रीय आर्यसभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने एक एम० ए० तक शिक्षा प्राप्त २३ वर्षीय मुस्लिम युवती ने अपनी इच्छानुसार शुद्धि करके वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) में दीक्षित किया। उसका नाम अफसाना से आशा का विवाह एक हिन्दू युवक हेमन्तकुमार से वैदिक रीति से कराया। इस प्रकार श्री देवीदास आर्य ने २५ वर्षीय शिक्षित युवक को हिन्दू धर्म की दीक्षा दी। उसका नाम मो० अतीक से अशोककुमार रखा गया।

उक्त शुद्ध होनेवाली युवती व युवक ने आर्यसमाज के नाम लिखे प्रार्थना पत्र में लिखा है कि उन्होंने हिन्दू धर्म का अध्ययन किया है उन्हें बहुत पसन्द है अतः इस्लाम को छोड़ना चाहते हैं। स्मरण रहे श्री देवीदास आर्य ने कुछ समय पहले चार मुस्लिम शिक्षित युवतियों जो वकील, डाक्टर, टीचर व इन्जीनियर थी को हिन्दू धर्म को दीक्षा देकर उनके विवाह योग्य हिन्दू युवकों से कराये थे।

—बालगोविन्द आर्य, आर्यसमाज गोविन्दनगर कानपुर

ग्राम वेद-प्रचार मण्डल का शिविर

प्रान्तीय ग्राम वेद-प्रचार मण्डल झूमियांवाली (पंजाब) की ओर से इस वर्ष भी युवकों के लिए चरित्र-निर्माण शिविर लगाया गया। फाजिल्का तहसील के प्रसिद्ध ग्राम रामसरा में १६ जून से २५ जून तक आर्यवीरों ने वैदिक नाद बजाया। ६० शिक्षणार्थियों ने शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त किया। गांव में भी वेद प्रचार का प्रबन्ध किया गया।

ब्र० अजय जी ने दस दिन में युवकों को योग आसनों का प्रशंसनीय प्रशिक्षण दिया। आर्यसमाज श्री गंगानगर आर्यसमाज गिदड़बाहा तथा आर्यसमाज फाजिल्का ने इस शुभकार्य में सहयोग दिया। मांस-मदिरा छुड़ाने का यह यज्ञ सफल रहा।

ब्र० अजय का योगआसनों का प्रदर्शन देखकर दर्शक दंग रह गये। ब्र० श्रीपाल ने जंजीर आदि तोड़ने के करतब दिखाकर लोगों के हृदयों पर शाकाहार, गो दूध व ब्रह्मचर्य पालन के प्रति श्रद्धा पैदा कर दी। लोगों की प्रबल मांग पर सर्दियों में फिर ऐसे ही शिविर लगाए जायेंगे। जहां आर्यसमाज का प्रचार गत वर्षों में कभी हुआ ही नहीं, ग्राम वेदप्रचार मण्डल वहां ऋषि सन्देश सुनाने पहुंच रहा है।

नगरों की ओर सब भागते हैं, ग्रामों में कौन जाता है। श्री बहादुरराम यादव, श्री दौलतराम जी आर्य, डा० अशोक आर्य आदि ने शिविर में पूरा समय देकर वेद-प्रचार की लहर को आगे बढ़ाने में प्रशंसनीय कार्य किया। —पोलाराम

नशा मुक्ति शिविर

लोहारु—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा झोझूकलां गांव में नशामुक्ति शिविर लगाया जाएगा। इस शिविर में ऐसे लोगों का उपचार एवं नशे की लत से छुटकारा दिलाया जाएगा जो चाहकर भी नशा नहीं छोड़ पाते। झोझूकलां गांव के शिविर के पश्चात् लोहारु में भी नशामुक्ति शिविर लगाया जाएगा। इन शिविरों में दवा का खर्चा समपा नेता पूर्वमन्त्री चौ. हीरानन्द आर्य वहन करेंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक फोन। (७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन। ४०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि० नं० २३२०७/७३   पंजि० नं० P/RTK-७३   फोन १,६६,०८,११,०६

ओ३म्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष २२ अंक ३३   २८ जुलाई, १९९५   (वार्षिक शुल्क ५०)   (आजीवन शुल्क ५०१)   विदेश में १० पौंड   एक प्रति १-२५

दशम आर्यमहासम्मेलन दिल्ली में भव्य आयोजन

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा का महत्त्वपूर्ण निश्चय

दिल्ली २३ जुलाई, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की एक बैठक आज आर्यसमाज नयाबांस दिल्ली में सभा के उपप्रधान स्वामी धर्मानन्द जी महाराज (उड़ीसा) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सभा में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि आर्यसमाज की ओर से पूरे देश में शराबबन्दी आन्दोलन चलाया जाएगा। इसके लिए पूरे देश में जागृति उत्पन्न करने के कार्यक्रम को स्वीकृति दीगई। निश्चय हुआ कि स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर २३, २४ दिसम्बर १९९५ को दिल्ली में दशम आर्यमहासम्मेलन का विराट् आयोजन किया जाये।

इस महासम्मेलन की सफलता के लिए सार्वदेशिक सभा अधिकारी पूरे देश का व्यापक दौरा करेंगे। प्रत्येक प्रान्त मे आर्यप्रतिनिधि सभा के अधिकारियों से सम्पर्क कर प्रान्त के कार्यकर्त्ताओं की बैठक करेंगे और प्रान्तीय आर्यसम्मेलनों का भी आयोजन करेंगे जिससे राष्ट्रीय महासम्मेलन [illegible] एवं व्यापकरूप से पूरे उत्साह के साथ प्रभावशाली ढंग से सम्पन्न हो। [illegible] दशम महासम्मेलन के अध्यक्ष आर्य परिव्राजक [illegible] अध्यक्ष स्वामी सर्वानन्द जी महाराज होंगे। सभा ने [illegible] के सांस्कृतिक हमले की निन्दा करते हुए भारत सरकार द्वारा अनुमति देने की आलोचना की।

अन्तरंग सभा में दिल्ली, हरयाणा, उत्तरप्रदेश, आन्ध्र, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मध्य भारत, विदर्भ, राजस्थान, उड़ीसा के प्रतिनिधियों ने भारी संख्या में भाग लिया। सार्वदेशिक सभा के नवयुवक तथा उत्साही मन्त्री श्री स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती ने सभा की गतिविधियों का विवरण सुनाते हुए सदस्यों को बताया कि हैदराबाद के चुनाव के बाद मैंने पंजाब, हरयाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश तथा राजस्थान के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से सम्पर्क किया है। सर्वत्र हर्ष की लहर दृष्टिगोचर होरही है। सभी अनुभव कर रहे हैं कि २० वर्ष के पश्चात् आर्यसमाज की शिरोमणि सभा विद्वान् तथा आर्यसंन्यासियों के कुशल हाथों में आई है। गत अधिकारियों ने अपनी कुर्सी की रक्षा के लिए अनेक प्रान्तीय सभाओं के दो फाड़ करके आर्यसमाज के महान् संगठन को क्षति पहुंचाई है। भ्रष्ट, अयोग्य तथा नकली अधिकारियों पर आधारित तदर्थ समितियां गठित करके आर्यसमाज की करोड़ों रुपये की सम्पत्ति में हेराफेरी करवाई गई।

पंजाब, दिल्ली, उत्तरप्रदेश तथा बिहार की प्रान्तीय सभाओं के चुनाव न करवाकर वहां के फर्जी प्रतिनिधि मनोनीत किये गये ताकि वे सार्वदेशिकसभा के चुनाव में आंख बन्द करके उनके पक्ष मे मत देवें। नये सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों ने प्रान्तवार ईमानदार तथा अनुभवी आर्यनेताओं पर आर्यसमाज के कार्यों को गतिशील बनाने का कार्यभार सौंपा है। उन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में आर्यसमाज का प्रचार आरम्भ कर दिया है।

श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं का आह्वान करते हुए कहा कि न्यायालयों में सत्य की ही विजय होगी। अतः आर्यसमाज के लिए रचनात्मक कार्य अश्वमेध यज्ञों द्वारा आरम्भ करें। शराबियों से शराब आदि छुड़वाकर परोपकार के कार्य करें। सार्वदेशिक सभा के पुराने अधिकारी मरे हुए हैं, जिन्होंने अपने स्वार्थ के लिए दिल्ली के ऐतिहासिक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन को भी किराये पर देकर समाप्त कर दिया है। उनके कोष में करोड़ों रुपया था, परन्तु आर्यसमाज के प्रचार पर न खर्च करके मुकद्दमेबाजी में नष्ट करने का यत्न किया है। अतः ऐसे अवसरवादी तथा नकली अधिकारियों का बहिष्कार करें।

सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प्रो० शेरसिंह जी ने इस अवसर पर आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्यसमाज कोई सम्प्रदाय नहीं अपितु एक आन्दोलन है। ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों के अनुसार हमें अपनी पूरी शक्ति परोपकार तथा सुधार के कार्यों में लगानी चाहिए। इस समय सबसे अधिक सुधार तथा परोपकार का कार्य शराबबन्दी लागू करवाना है। आज आर्यसमाज के निरन्तर प्रचार के कारण सभी राजनैतिक दल मत प्राप्त करने के लिए शराबबन्दी की बात करने लग गये हैं। अतः विधानसभा तथा लोकसभा के चुनाव से पूर्व सभी प्रान्तों में शराबबन्दी आन्दोलन चलना चाहिए। मेरे सुझाव पर पंजाब में गुरुद्वारा प्रबन्ध समिति ने भी शराबबन्दी कार्य करने का निश्चय किया है।

प्रो० रतनसिंह जी (उत्तरप्रदेश) ने अपना सुझाव देते हुए कहा कि हम सभी आर्यों को हरयाणा सभा द्वारा प्रकाशित सर्वहितकारी साप्ताहिक ५०) रु० भेजकर वार्षिक सदस्य बन जाना चाहिए क्योंकि इस समय यह लेखों तथा समाचारों द्वारा आर्यसमाज में नवजीवन का संचार करने के लिए सर्वहितकारी कार्य कर रहा है। हमे गर्व है कि आज आर्यसमाज का नेतृत्व सच्चे संन्यासियों के हाथों में आया है। श्री प्रो० धर्मवीर (राजस्थान) ने कहा कि एक ओर संन्यासी तथा दूसरी ओर स्वार्थी हैं। अतः आर्यजनता को संन्यासियों का साथ देना चाहिए।

अन्त में सभापति स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती (उड़ीसा) ने आर्यसमाज नयाबांस दिल्ली के अधिकारियों का धन्यवाद किया कि उन्होंने सार्वदेशिक सभा के कार्यों के संचालन हेतु पूरी सुविधा दी है। आपने कहा प्रान्तीय आर्य कार्यकर्त्ता भी पूरे उत्साह से आर्य महासम्मेलन को सफल करने के कार्य में आज से ही जुट जावें।

—केदारसिंह आर्य

वीरभूमि कोसली ग्राम में भव्य शराबबन्दी अश्वमेध यज्ञ एवं सम्मेलन की योजना

डा० अनिलकुमार आर्य—संयोजक, शराबबन्दी समिति जिला रेवाड़ी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

कोसली जिला रेवाड़ी का एक सबसे बड़ा ग्राम है जो एक कस्बे से किसी तरह भी कम नहीं। यदि इसे सेवानिवृत सैनिकों की छावनी कह दिया जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। शायद ही कोई ऐसा घर होगा जिसने हमारे आर्यवर्त की रक्षा के लिए सेना को अपना कोई सपूत नही सौंप रखा हो। सिपाही से लेकर जनरल तक के पदों पर यहां के जवान पहुंच कर अपनी मातृभूमि को चारचांद लगा रहे हैं। लोगों में जोश का आलम यह है कि अन्याय और अत्याचार को किसी भी सूरत पर सहने को तैयार नहीं। अभी ज्यादा समय नहीं हुआ। २-३ साल ही पहले एक बहन के साथ रेलगाड़ी में पुलिस कर्मियों ने बलात्कार कर दिया था तो कोसली ग्राम और आस-पास का पूरा क्षेत्र प्रशासन के खिलाफ विक्षोभ में बदकर उमड़ पड़ा था। अधिकारियों ने जनता की आवाज नहीं सुनी तो अनेकों वीर जवानों ने संघर्ष में पुलिस की गोलियां खाकर अपनी जानें दे दीं। वही अपनी लाशें बिछा दीं लेकिन पीछे हटकर कायरता नहीं दिखाई। महीनों लम्बा जन-आंदोलन इस बारे में चला था। सरकार और प्रशासन ने मुश्किल से अपना पीछा छुटवाया था। उन शहीदों को श्रद्धांजलि देने का उचित मौका तो पता नहीं कब मिल सके। अतः मुझे इस लेख के माध्यम से ही अपने श्रद्धासुमन उन बलिदानियों के गुणगान के रूप में अर्पण कर सन्तोष करना पड़ रहा है। ऐसे ही वीरों ने कोसली क्षेत्र को वीरभूमि कहलाने का गौरव दिया है। जुल्मोंज्यादती को सहने में पाप माननेवाले यहां के जुझारू नागरिक सामाजिक बुराइयों से भी लड़ने में कहां पीछे रह सकते हैं। शेरों की अंगड़ाई भी वातावरण को गुंजायमान कर देती है। इसलिए कोसली क्षेत्र की महान जनता शराब के दुर्व्यसन के विरुद्ध अब उठ रही है तो न्यूनतम यह पूरे जिले रेवाड़ी को प्रभावित करेगी।

पिछले माह जून ने आर्यसमाज कोसली का वार्षिकोत्सव हुआ। दिनांक ११-६-९५ को प्रातःकालीन सभा में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अध्यक्ष कर्मयोगी संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी पधारे और भारत के वीरों के इतिहास पर एक ओजपूर्ण व्याख्यान दिया। सभा द्वारा चलाये जा रहे अश्वमेध यज्ञों के कार्यक्रम की श्रोताओं को जानकारी दी व आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से इस बारे में सहयोग मांगा। इस अभियान के अन्तर्गत गांव-गांव में बड़े-बड़े यज्ञ-हवन किये जाएंगे और उस अवसर पर प्रवचनों के द्वारा प्रेरित करके शराब छोड़ने की प्रतिज्ञाएं करवाई जाएंगी। यदि प्रतिज्ञा करनेवालों ने शराब छोड़ने के लिए औषधि का सहारा लेना चाहा और उनकी पर्याप्त संख्या हुई तो निःशुल्क शराब मुक्ति चिकित्सा के स्थानीय शिविर भी सभा की ओर से लगाए जा सकते हैं। सम्मेलन के अवसर पर प्रातः सायं अग्निहोत्र के अलावा मध्य दिन व रात्री में विचारगोष्ठी और जन-सभाएं करी जाएंगी ताकि जनजागरण हो और शराब माफिया का षड्यन्त्र ध्वस्त किया जा सके। आर्यसमाज कोसली के प्रधान श्री अमरसिंह ने मंच से स्वामी जी का धन्यवाद किया और उनके इस कार्यक्रम में तन-मन-धन से अपना पूरा योगदान करने का आश्वासन दिया। मैं भी इसी सिलसिले में कुछ दिन बाद आर्यसमाज के मन्त्री श्री सुजानसिंह से मिला था। उन्होंने भी अपना पूरा सहयोग इस बारे में व्यक्त किया है। आर्यसमाज के एक बड़े ही समर्पित सदस्य श्री भगवानसिंह की इस कार्यक्रम में विशेष रुचि है और इसकी तयारी में लगने को आतुर हैं। श्री रोहताशसिंह जो कि इस संस्था के सबसे अधिक सक्रिय युवा सदस्य हैं का भी हमारी इस योजना के लिए विशेष समर्थन है।

अति प्रसन्नता तो यह है कि एक बड़े ही कर्मठ और निष्ठावान युवक श्री अशोक आर्य जो आर्यसमाज कोसली के प्रधान भी रह चुके हैं और फिलहाल पूरे कोसली क्षेत्र जिसमें आस-पास के गांव शामिल हैं के वेदप्रचार मण्डल के अध्यक्ष हैं ने मेरी इस जुम्मेवारी के भार को बटाने के लिये मेरे कन्धे से अपना कन्धा लगा दिया है। मण्डल के मन्त्री श्री शिवराम आर्य निवासी बासदूदा नौकरी में होते हुए अपना अमूल्य समय हमारे इस प्रोग्राम में देने के लिए तत्पर हैं। अपार हर्ष तो हमें इस बात का है कि हमारी इस योजना में ऐसे युवा सामाजिक कार्यकर्ता भी हमारा हाथ बंटाने के लिए आ गए हैं जो अब तक आर्य-समाज के सदस्य नहीं थे जैसे नवयुवक मण्डल कोसली के प्रधान श्री जनक यादव जो ग्राम में रचनात्मक कार्यों के लिए सुविख्यात हैं, हमारे साथ इस कार्यक्रम के लिए कदम से कदम मिला रहे हैं। आज कोसली में ईंटों के सुन्दर गली-गलियारे इन्हीं के नेतृत्व में युवक साथियों ने गांव में धन संग्रह करके व अपने श्रमदान से बनवाये थे। ऐसे उत्साही साथियों के रहते हमें अपने आयोजन की पूरी सफलता दिखने लगी है। श्री अशोक और श्री जनक दोनों के सान्निध्य से अनेकों युवकों की एक अनुशासित टीम निकल कर आ रही है जो हमारे निश्चयों को अपने पुरुषार्थ से सफलता की बुलन्दियों पर पहुंचानेवाले हैं। स्थानाभाव के कारण उन सभी के नाम मैं अपनी अगली रिपोर्ट में दूंगा। कोसली के समाजसेवी सर्वश्री श्रीचन्द आर्य, राजीव पत्रकार व राजसिंह जी (मो० गली) का भी हमें पूरा साथ मिलेगा। इनके अलावा निकटवर्ती ग्राम गुड़ियाणी के सत्संग प्रेमी मिस्त्री श्री सुबेसिंह भागोरिया भी हमारे साथ अपनी सेवाएं देंगे। जखाला की ढाणी से गौ रक्षा समिति के संयोजक महाशय श्रीचन्द जी आर्य व जीवनदानी उत्कृष्ट भजनोपदेशक महाशय मूलचन्द जो जिन्होंने आर्यसमाज के प्रचार के लिए अपना जीवन लगाया हुआ है भी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के इस अभि-यान में हर तरह से सदा हमारी पीठ पर रहेंगे। समाज के इस परोपकार में गृहस्थ तो भाग ले ही रहे हैं, संतों की दुआएं भी हम से दूर नहीं। कोसली में बाबा मुक्तेश्वर पुरी के मठाधीश बाबा भवान पुरी जी और शिवमन्दिर के स्वामी जी के आशीर्वाद का हाथ हमारे सिर पर होगा।

सहयोगी कार्यकर्त्ताओं ने यह निश्चय किया है कि सब साथी चाहे वे इस ग्राम के हों या आसपास क्षेत्र के, किसी भी शराबबन्दी समर्थक राजनैतिक या सामाजिक संगठन के हों, किसी भी जाति, सम्प्रदाय या मत के हों सबको मिलाकर एक शराबबन्दी समिति कोसली क्षेत्र का गठन किया जाएगा जिसके कार्यक्रमों का शुभारम्भ इस यज्ञ से किया जाएगा। उनका संकल्प है कि शराब के खिलाफ एक निरन्तर अभियान जारी रखा जाएगा जब तक कि हमारा प्रदेश शराबमुक्त नहीं हो जाता। इसलिए साथियों ने यह नीति बनाई है कि इस सम्मेलन में क्षेत्र के सभी शराबविरोधी नेताओं, वक्ताओं और कार्यकर्त्ताओं को एक मंच पर इकट्ठा होने के लिए बुलाया जाए ताकि संयुक्तरूप से एक शक्तिशाली मोर्चा बन सके तथा इस विनाशकारी नशे के दानव के साथ लड़ाई में हम पुरजोर ताकत लगा सकें और समाज निर्माण में लगी सृजनात्मक शक्तियों को एकता के सूत्र में पिरोया जा सके।

इस आयोजन का निर्देशन तपस्वी संन्यासी, नैष्ठिक, ब्रह्मचारी, महर्षि के वीर सैनिक स्वामी जीवानन्द जी करेंगे। साथियों की इच्छा है कि मध्याह्न सभा की अध्यक्षता कोसली ग्राम निवासी वयोवृद्ध अनुभवी आर्य श्री सरजीतसिंह जी करें और रात्री सभा के सभापति कोसली के ही महान लोक सेवक, पूर्व मन्त्री, सेवानिवृत उपायुक्त दादा मुनि श्री रामनारायण जी हों। प्रबन्ध का कार्यभार श्री अशोक आर्य व श्री जनक यादव उठा रहे हैं। संयोजन की जुम्मेवारी मुझे दी गई है। इस समस्त कार्य योजना के प्रेरणास्रोत और मार्ग दर्शक स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती हैं जो हरयाणा शराबबन्दी आंदोलन के जनक, अनेक सत्याग्रहों के सूत्रधार, विशाल शराबबन्दी साहित्य के लेखक व प्रशासक तथा हरयाणवी आर्यवीरों के सर्वमान्य नेता हैं। अतः इनके इस भव्य शराबबन्दी यज्ञ एवं सम्मेलन की तिथि को लेकर सभी साथी तैयारी मे जुट जायेंगे।

फरमाणा जिला सोनीपत में अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न

पूज्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी के आदेशानुसार गांव फरमाणा गहलोट जिला सोनीपत में १९-७-१९९५ से २१-७-१९९५ तक सीनियर सैकेंडरी स्कूल फरमाणा में अश्वमेध यज्ञ किया गया जिसमें प्रिंसिपल चौ० राजसिंह तथा सारे स्टाफ का सहयोग बड़ा सराहनीय है। यह अश्वमेध यज्ञ तीन कनस्तर (४५ किलो) गऊ का घी और एक बोरी सामग्री से किया गया। दिनांक १९-७-९५ को प्रातः ६ बजे इसका शुभारम्भ पूज्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती के करकमलों द्वारा हुआ। मान्यवर प्रिंसिपल साहब यजमान बने और सभी विद्यार्थियों को भी बड़े संयम के साथ इसमें सम्मिलित किया। प्रारम्भ में पूज्य स्वामी जी ने विद्यार्थियों को उपदेश दिया और पूछा विद्यार्थी में पहला अक्षर क्या आता है। एक विद्यार्थी ने बताया कि व आता है। स्वामी जी ने कहा व का मतलब है विद्वान् बनो और विद्वान् बनकर विनम्र बनो अपने माता-पिता और गुरुजनों के चरण छूकर और हाथ जोड़कर नमस्ते करो और ब्रह्मचर्य [illegible] पूरा पालन करके विद्यार्थी [illegible] पढ़ता है और गुरुजनों की सेवा करता है। गुरु अपनी सारी विद्या का खजाना शिष्य पर न्यौछावर कर देता है जैसे पूजनीय स्वामी विरजानन्द जी ने तीन वर्ष में अपनी सारी विद्या स्वामी दयानन्द के अन्दर भर दी। इसका अध्यापकों और सभी विद्यार्थियों पर बड़ा प्रभाव पड़ा फिर यज्ञ शुरू होगया।

इस यज्ञ में तीन दिन तक स्त्री-पुरुष और विद्यार्थियों ने हजारों की संख्या में भाग लिया। १९-७-९५ को प्रिंसिपल साहब चौ० राजसिंह ने कहा हमारे बड़े सौभाग्य है जो कि हमारे स्कूल में यह यज्ञ किया गया इससे हमें बड़ा भारी लाभ होगा मैं तो एक आर्यसमाजी परिवार से हूँ और जब मैं ९वीं कक्षा में जाट स्कूल रोहतक में पढता था तब स्वामी जी वहां आये थे और स्वामी जी ने उपदेश दिया था तभी से मेरे ऊपर स्वामी जी का प्रभाव है। २०-७-९५ को चौधरी सुखबीरसिंह फरमाणा चेयरमैन जिला परिषद् सोनीपत भी आये और स्वामी जी के चरणस्पर्श करके नमस्ते किये और कहा कि मेरे ऊपर तो शुरू से ही आर्यसमाज की छाप है और स्वामी जी के चरणस्पर्श करके २१०० रु० स्वामी जी को भेंट किये ११०० रु० यज्ञ के लिए दिये। स्वामी जी ने चेयरमैन साहब को आशीर्वाद दिया। फरमाणा के आर्यसमाज के अधिकारियों और सदस्यों ने बहुत थोड़े समय में परिश्रम करके यह यज्ञ करवाया। आर्यसमाज के प्रधान चौ० होश्यारसिंह, मन्त्री चौ० सुखबीरसिंह, कोषाध्यक्ष चौ० करतारसिंह, चौ० कर्णसिंह, कैप्टन साहब श्री कृष्ण जी, चौ० ज्ञानचन्द, चौ० कर्णसिंह जे० ई० और चौ० हीरासिंह आदि का इस यज्ञ में विशेष योगदान रहा। गांववालों ने बड़ी उदारता से यज्ञ के लिए दान दिया और इस यज्ञ को सफल करने का सारा श्रेय महाशय रतनसिंह आर्योपदेशक आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा को जाता है जिन्होंने बड़े उत्साह और बड़े साहस के साथ हमारे आगे रहकर इस यज्ञ को सफल करवाया।

इस यज्ञ पर २०० स्त्री-पुरुष व विद्यार्थियों ने यज्ञोपवीत धारण किये और स्वामी जी ने यज्ञ में आहुति दिलवाकर जब प्रतिज्ञा करवाई तो सभी ने शराब तथा सारे नशे छोड़ने की हाथ उठाकर प्रतिज्ञा की और तीन दिन तक पूज्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी के मार्मिक और ओजस्वी भाषण का स्त्री-पुरुष, अध्यापक व विद्यार्थियों पर बड़ा भारी प्रभाव पड़ा। यज्ञ के वेदपाठी गुरुकुल झज्जर के चार ब्रह्मचारियों ने जो वेदमन्त्रों का उच्चारण किया और एक ब्रह्मचारी ने यज्ञ के समापन पर बड़ा जोशीला भाषण दिया जिसका लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। इस यज्ञ में चौ० सूरजमल, चौ० इन्द्रसिंह, चौ० जयकरण, चौ० नयनसिंह रोहणावाले आकर शामिल हुये। यज्ञ के समापन पर गऊ के घी के हलवे का प्रसाद बांटा गया। पूज्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी को उनके सम्मान हेतु ११०० रु० भेंट किए और ब्रह्मचारियों को ५०० रु० दक्षिणा दी गई तथा आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा को ११०० रु० दान दिया। पूज्य स्वामी जी ने यज्ञ की व्यवस्था और इतने थोड़े समय में सफलता देखकर बधाई दी और बड़े खुश होकर आशीर्वाद दिया।

—सुखबीरसिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज फरमाणा

वेद वेदांग पुरस्कार निधि की स्थापना

आर्यसमाज सान्ताक्रूज के दिनांक २ जुलाई ९७ के रविवारीय सत्संग में वेद वेदांग पुरस्कार आरम्भ होने के पूर्व वर्ष में ७५०००/- की थैली से सम्मानित प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक की प्रथम पुण्य तिथि पर उनके शिष्य डा० सोमदेव शास्त्री ने अपने गुरु को श्रद्धांजलि देते हुए घोषणा की कि प्रतिवर्ष आर्यसमाज सान्ताक्रूज के माध्यम से पूजनीय पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक की स्मृति में उनके जन्मदिन २२ सितम्बर को ऐसे विद्वान् को ११०००/- की राशि से सम्मानित किया जाये जो आर्षपाठ विधि से गुरुकुल में विद्याध्ययन करके स्नातक होकर कम से कम विगत १० वर्षों से किसी निजी या सरकारी शिक्षण संस्थाओं में सर्विस न करके आर्षपाठ विधि के अध्ययन अध्यापन के लिये गुरुकुल में या स्वतंत्ररूप से संलग्न है। पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक के समान वैदिकधर्म के प्रति वित्तैषणा और लोकैषणा से दूर रहकर पूरी निष्ठा और आस्था से कार्यरत विद्वानों को [illegible] किया जाये।

[illegible] का एक स्थायी कोष बनायेंगे ताकि उसके ब्याज से यह कोष चलता रहे। जब तक स्थायी कोष के रूप में एक लाख रुपए आर्यसमाज में जमा नहीं होते तब तक इस वर्ष २२ सितम्बर से वे प्रतिवर्ष ११०००/- रुपए देते रहेंगे।

यह पुरस्कार प्रतिवर्ष २ अक्तूबर को आर्यसमाज सान्ताक्रूज के स्थापना दिवस पर दिया जाएगा।

सम्माननीय आर्यविद्वानों, संन्यासियों, कार्यकर्ताओं से निवेदन है कि आर्षपाठ विधि के पठन-पाठन में संलग्न विद्वानों के नाम भेजने की कृपा करें।

—कैप्टन देवरत्न आर्य प्रधान

शोक समाचार

"भावी आशा के प्रकाशवान नक्षत्र नरेन्द्र की अकस्मात् कार दुर्घटना में "अकाल मृत्यु" प्रिय नरेन्द्र जो स्वामी केवलानन्द जी सरस्वती संयोजक भारतीय गोवंश संवर्धन परिषद् अजमेर महानगर के पौत्र तथा बी. बी. शर्मा मीरा मशीन टूल्स फरीदाबाद के ज्येष्ठ सुपुत्र थे, का २४ वर्ष की अल्पायु में कार दुर्घटना में नागपुर के समीप स्वर्गवास होगया।

स्वर्गीय नरेन्द्र इसी वर्ष नागपुर इन्जीनियरिंग महाविद्यालय में प्रथमवर्ष प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर ग्रीष्म अवकाश में फरीदाबाद आया हुआ था। दिनांक १२-७-९५ को अपने सहपाठी मित्रों के साथ वापस नागपुर के लिए प्रस्थान किया .. मगर नागपुर पहुंचने के पूर्व ही ३० किलोमीटर पहले कार का नियन्त्रण बिगड़ गया और कार एक पेड़ से टकराकर गहरे नाले में जा गिरी और नरेन्द्र की घटना स्थल पर ही कार के नीचे दब जाने से मृत्यु होगई। नरेन्द्र का अन्त्येष्टि संस्कार फरीदाबाद में वैदिक विधि से किया गया।

दिनांक २४-७-९५ को अजमेर स्थित प्रतीक्षा वेदसदन आदर्शनगर में आत्मशान्ति महायज्ञ श्रद्धांजलि दी गई। परमपिता परमात्मा स्वर्गवासी आत्मा को सद्गति प्रदान करे यही प्रार्थना है।

—आनन्द शर्मा, उपमन्त्री आर्यसमाज आदर्शनगर, अजमेर

निर्णायक क्षणों में...!

लक्ष्य इतना महान् (संसार का उपकार करना—शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना) और कर्म-क्रियाकलाप ऐसे कि लाज भी पानी-पानी होजाए। गुरुकुल कांगड़ी का आघात ठण्डा भी नहीं पड़ा कि समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक के चुनावों ने अन्तस् तक कालिख पोत दी। जिस रामचन्द्र राव को उनके गृह राज्य आन्ध्रप्रदेश में 'कौरवकुल वंशज दुर्योधन का प्रतीक' नामकरण मिला है, वह सार्वदेशिक का बलात् प्रधान बनकर सम्पूर्ण आर्यसमाज को ही कुरुकुल बनाने में दिवा स्वप्न देखे और हम समस्त आर्यजन उन्हें सचेत न करें तो यह समाज व उनके स्वयं के भी हित में न होगा। राजाश्रयी चारण जैसे स्वर में प्रशंसा के पुल बांधनेवाले श्री सच्चिदानन्द जी इस पावन सस्था की सर्वोपरि सभा के महामंत्रित्व को कलंकित करने के अतिरिक्त कुछ भी तो जनमत नहीं बना पाएंगे। इनकी कुटिलता की जड़ों को सींचनेवाले श्री सोमनाथ जी एडवोकेट का स्वरूप तो उनके उपनाम से विसर्ग 'ह' हटा देने पर तुरन्त प्रकट हो जाता है। असहाय-सा अकेला 'ह' इतने कुत्सित भावों को कैसे छिपा सकता है। जीवनभर न्यायालय में प्रभु की कर्मफल व्यवस्था का गला घोंटने के कारण इनका स्वभाव ही सज्जनों को दुर्जन व दुर्जनों को सज्जन सिद्ध करना बन चुका है। 'उपादान दुःख को समेट कर कौन जिया है सुख से बोलो ·····? ये तिकड़ी समस्त आर्यजनों को तीन वर्ष तक शब्द जाल व भाषणों से छलती हुई ऋषि दयानन्द की पावन संस्था में पामरपन को प्रोत्साहन देना चाहती है···हे संतापों! आर्यत्व को बचा लो—आनन्दबोध युग को पुनः प्रवर्तना को दृढ़ता से रोको।

आर्यजगत् के तपोनिष्ठ संन्यासियों का इतना घोर अपमान क्या आप सहज ढंग से घर में बैठकर सह लेंगे? अनेक महनीय ग्रन्थों के लेखक, गम्भीर विचारक स्वामी विद्यानन्द जी के गले से माला खींचना, धक्के देना, स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी सुमेधानन्द जी जैसे तपस्वी जीवनदानी संन्यासियों को असामाजिक व अपराधी तत्व के रूप में प्रचारित करना, क्या हम यू ही सहते, देखते रहेंगे? दुर्भाग्य तो यह है कि सम्भवतः हम इसे नियति मानकर पचाते जारहे हैं। ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों की, वैदिक परम्पराओं व आर्यमर्यादाओं की ये घोर अवमानना आखिर हम क्यों सह रहे हैं? क्या विवशता है हमारी कि हम विरोध प्रकट तक नहीं कर पाते? क्या आर्यसमाज इतना निस्तेज होगया है? प्रार्य प्रान्तीय सभाओं के भी झगड़े किसी से छिपे नहीं हैं। वहां भी पद से चिपके रहने की व एक-दूसरे को लाञ्छित करने की राजनैतिक हथकण्डेबाजी आर्यसमाज को विदूषित ही कर रही है। इनसे कब मुक्ति मिलेगी हमें? आपस की टांगखिचाई से पृथक् होकर इस समाज की पावनता की मुख्य धारा से जुड़कर हम मानव की समस्याओं पर कब दृष्टिपात करेंगे? बन्धुओ! एक ओर हमारी ये आन्तरिक दुर्व्यवस्था, दूसरी ओर हमारे अस्तित्व नाश के उच्च स्तर के सामूहिक प्रबल प्रयास, क्या इस प्रकार आर्यसमाज जीवित भी रह पाएगी?

आर्यसमाज के सिर पर एक महान् दायित्व और आ पड़ा है। दूरदर्शन व फिल्म जगत् के चार महारथियों ने मिलकर वेदों पर धारावाहिक बनाने का कार्य हाथ में लिया है। इसके पटकथा व संवाद लेखक बनमाली के अनुसार वेद ईसा से ४००० वर्ष पूर्व के हैं। इस धारावाहिक में वेदों के नाम पर पुराणों व उपनिषदों के सभी ऋषि-मुनियों, देवी-देवताओं व चन्द्रवंश के राजे-महाराजों को दिखाया जाएगा। वेदों में इतिहास ढूंढने व प्रस्तुत करने का पौराणिक दृष्टिकोण सायण व महीधर भाष्यों पर आधारित है, जिसमें यज्ञों में पशु बलि ऋषियों द्वारा मदिरापान एवं अन्य ढेरों अनाचार भी दिखाए जा सकते हैं। दूरदर्शन को लोकप्रियता व प्रामाणिकता सर्वविदित है। इसके उपरांत आर्यसमाज वेदप्रचार के नाम पर झुनझुना बजाता रहे, कितने भी प्रमाण व तर्क प्रस्तुत करे, सत्य वही रहेगा जो दूरदर्शन के द्वारा घर बैठे मस्तिष्कों मे परोसा जाएगा। दूसरे ऋषि दयानन्द के दृष्टिकोण को प्रचारित करने व मानने-मनवाने का कार्य आर्यसमाज ने योग्य व प्रभावरीति से नहीं किया अतः यह सीमित मस्तिष्कों की अधूरी धरोहर बनकर रह गया। ऐसे में हम पौराणिकों का भी आह्वान करें तो यह हमारी भयानक भूल होगी। सम्भव तो यह है कि आपको उनका भी सामना करना पड़े। ऐसे में सोचें कि हम पर प्रभु की अमर वेदवाणी के संरक्षक का महनीय दायित्व है और हमारी आंतरिक स्थिति का कच्चा चिट्ठा पूर्व में प्रस्तुत किया जा चुका है। हमारे कर्णधारों को तो लोकैषणा-वित्तैषणा ने जकड़ रखा है बहुत सम्भव है, यह उनकी गतिविधियां भी किसी गहरे षड्यंत्र का एक हिस्सा हो। यह कड़ी धारावाहिक प्रसंग से कोई मेल रखती हो ऐसे में हे ऋषि दयानन्द के अनुयायियो! आप अपना कर्त्तव्य गम्भीरता से समझो आपका परमधर्म नष्ट होने को है (वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है)। सब सत्य विद्याओं का पुस्तक वेद अब ढेर सारे अनर्थ, अनाचार व अनृतों का पुस्तक बनने जारहा है। आओ मिलकर कोई ऐसा सार्थक प्रयास करो जिससे आर्यसमाज व वेदों की रक्षा हो सके।

आओ हैदराबाद सत्याग्रह की तेजस्विता, निष्ठा, लगन व विजीगिषा के साथ उठो, आर्यसमाज को कुरुकुल बनने से रोको व वेदों की रक्षा दृढ़संकल्प लेकर कर्मभूमि में उतर आओ कहीं कल ये कुरुक्षेत्र न बन जाए जिसे टालने में कृष्ण जैसा नीतिनिपुण महापुरुष भी सफल न हो सका। अतः हे आर्यपुरुषो अपने अस्तित्व का सार्थक परिचय दो जो इन दोनों समस्याओं के समाधान में निहित है प्रभु आपको सत्प्रेरणा शक्ति व सामर्थ्य प्रदान करे। शमित्योम्।

लेखक—रामनिवास 'गुणग्राहक'
पुरोहित आर्यसमाज, श्रीगंगानगर (राजस्थान)

दि वेदाज धारावाहिक के प्रसारण के विरुद्ध प्रस्ताव

वेद आर्यों (हिन्दुओं) के परमपुनीत धर्मग्रन्थ हैं जिनको परमेश्वर ने सृष्टि के आदि में आज से एक अरब सत्तानवें करोड़ उनतीस लाख उनन्चास हजार वर्षों पूर्व ऋषियों को दिया था। वेदों में ईश्वर, जीव और प्रकृति का विशुद्ध ज्ञान निहित है। अन्य मत मतान्तरों के ग्रन्थों की भांति मनुष्य इतिहास एवं कपोलकल्पित अटपटी गाथाएं नहीं हैं। परन्तु टी. वी. पर शीघ्र ही दिखाया जानेवाले 'दि वेदाज' नामक धारावाहिक द्वारा इनको मनुष्य की रचना और ईसा से केवल ४००० वर्ष पूर्व पुराना दर्शाया जानेवाला है। यह एक भयंकर कार्य है जिसके द्वारा आर्यों (हिन्दुओं) की धार्मिक जनभावनाएं छल-कपटपूर्ण प्रयास द्वारा कुचलने का षड्यन्त्र है। सरकार ने इस धारावाहिक के निर्माण की स्वीकृति देकर आर्यों (हिन्दुओं) के मनों में महान् वेदना उत्पन्न की है। सूचना एवं प्रसारणमन्त्री महोदय, भारत सरकार से आर्यसमाज रेवाड़ी मांग करती है कि इस धारावाहिक पर तुरन्त पाबन्दी लगाए अन्यथा आर्यसमाज इसके विरोध में जनआन्दोलन खड़ा करने को बाध्य होगा। वेदों के साथ इस खिलवाड़ को सहन नहीं किया जायेगा।

मन्त्री, आर्यसमाज, रेवाड़ी

आर्यसमाज संगठन बनाम संन्यासीगुरु चपरासी

धर्मवीर

गतांक से आगे

इन नामधारी आर्यसमाजियों ने कहना शुरू किया देखोजी ये संन्यासी होकर न्यायालयों में जाते हैं। जैसी समस्या होगी वैसे ही उपाय होंगे। संन्यासी यदि उचित समाधान के लिए न्यायालय की शरण लेता है तो अपराधी सन्यासी को न्यायालय में जाने के लिए बाध्य करनेवाला है। संगठन के तथाकथित कर्ताधर्ता जब अपने स्वार्थ पूर्ति में संन्यासियों को बाधक समझने लगे तो व्यक्तिगत निन्दा और आलोचना पर उतर आये—स्वामी विद्यानन्द जी के विषय में आरोप लगाने प्रारम्भ किये, स्वामी जो संन्यासी नहीं स्वामी जो घर में रहते हैं, तो उसके लिए भी समाज और उसके अधिकारी दोषी हैं जब स्वामीजी ने संन्यास लेकर दिल्ली की आर्यसमाज में रहना प्रारम्भ किया इन्हीं लोगों ने समाज अधिकारियों को भड़काया, इन्हे यहां से निकालो ये समाज पर कब्जा कर लेंगे। स्वामी जी तो फिर भी नहीं निकले परन्तु जब स्वामीजी को हार्टअटेक हुआ तो समाज अधिकारियों ने आर्यसमाज के सेवक को भेजकर घर कहलवा दिया—स्वामी जी मरणासन्न हैं उन्हें संभालो ऐसे लोग यदि स्वामी जी पर आरोप लगाते हैं तो स्वामीजी को नहीं उन्हें स्वयं को शर्म आनी चाहिए।

इन लोगों ने स्वामी ओमानन्द महाराज पर आरोप लगाया—वे तो पुस्तकें बेचते हैं—मानो स्वामी जी फिल्मी गीत उपन्यास बेचते हैं—वे शायद जानते नहीं क्योंकि उन्हें आर्य साहित्य से कुछ लेना-देना नहीं—स्वामी जी महाराज आज वेद, दर्शन, उपनिषद्, निरुक्त, रामायण, महाभारत, इतिहास, पुरातत्त्व, आयुर्वेद व्याकरण महाभाष्य एवं अन्य आर्य साहित्य के हजारों ग्रन्थ स्वयं छापकर समाज को सुलभ कराये हैं। करोड़ों रुपये की अपनी पैतृक सम्पत्ति गुरुकुलों और समाजों को दी है उनके सैकड़ों शिष्य आज आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में लगे हैं ऐसे व्यक्तियों को क्या करना चाहिए इसका फैसला कौन कर सकता है? निश्चित रूप से वे लोग ही इसका फैसला कर सकते हैं जिनका तप, त्याग, सेवा और योग्यता स्वामी जी महाराज से अधिक हो। ये सब महानुभाव संन्यासी होने मात्र से नहीं अपने त्यागपूर्ण जीवन विद्वत्ता, सेवा, निष्ठा के कारण समाज के पूज्य और वन्दनीय हैं, उनके बारे में फैसला करनेवाले लोगों को सोचना चाहिए क्या ऐसा करने का उन्हें कोई अधिकार है? वास्तविकता यह है आज इन संन्यासियों को समाज का मार्गदर्शन करना चाहिए, निर्णय का अधिकार इन संन्यासियों का है।

स्वामी सर्वानन्द जी महाराज पर आरोप लगाते हैं स्वामी जी महाराज भिक्षा करते हैं, इन बेचारों को पता नहीं संन्यासी भिक्षा नहीं करेगा तो क्या लूटपाट, ठगी और चोरी करेगा? संस्थाओं की जमीन बेचकर अपना घर भरेगा।

आज वह सुघड़ी आयी है जब सार्वदेशिक सभा को विद्वान्, त्यागी, तपस्वी, कर्मठ संन्यासियों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। स्वामी विद्यानन्द जी महाराज सभा के प्रधान और स्वामी सुमेधानन्द जी सभा के मन्त्री बने हैं। संगठन का चुनाव विधिवत् निर्वाचन अधिकारी कै० देवरत्न आर्य के निरीक्षण में सम्पन्न हुआ। यह मण्डली, संघर्ष भी करेगी और समाज का सुधार भी करेगी, ऐसा पूर्ण विश्वास है। स्वामी सुमेधानन्द जी व उनके सहयोगी बधाई के पात्र हैं जिन्होंने संघर्ष का बिगुल बजाया। आज समाज की स्थिति बनी है और बन रही है उससे सामान्य आर्यसमाज के सदस्यों को बड़ी पीड़ा होती है, एक तो सामान्य व्यक्ति वास्तविक परिस्थिति से अवगत नहीं है, कौन इनमें उचित है कौन अनुचित है। उसे तथ्यों की जानकारी के अभाव में निर्णय करते नहीं बनता। इसके लिए जो आर्यजन तथ्यों से परिचित हैं, सभा व संगठन के अधिकारी हैं उनका कर्त्तव्य है जनता को वास्तविकता से परिचित करायें।

दूसरी समस्या समाज के कार्यकर्त्ताओं के सामने आती है जब हम संगठन के झगड़े को नहीं मिटा सकते तो दूसरे को क्या प्रेरणा दे सकते हैं। ... विरुद्ध और लज्जाजनक स्थिति होने पर भी इस परिस्थिति से भागा नहीं जा सकता, समस्या का सामना करना पड़ेगा, संघर्ष करना पड़ेगा, बदनामी से बचने के लिए बुराई को प्रश्रय देना, उसे सहना, उसके सामने नतमस्तक होना कायरता है। ऐसे लोग धर्म का प्रचार नहीं कर सकते यथार्थ में वे धार्मिक भी नहीं हो सकते। अतः बुराई को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए चाहे इसके लिए बदनामी क्यों न सहनी पड़े। स्वामी दयानन्द को लोगों ने क्या कम बदनाम किया था।

वैसे तो किसी भी संगठन का काम पूर्णकालिक कार्यकर्त्ताओं के बिना नहीं हो सकता परन्तु धर्म प्रचार के क्षेत्र में कार्यकर्त्ता होने के साथ इनका धार्मिक होना भी आवश्यक है। यह साधु-संन्यासी, वानप्रस्थी-ब्रह्मचारियों द्वारा और उनके संगठन के द्वारा ही समुचित रूप से किया जा सकता है। स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज कहा करते थे जब समाज की बागडोर लाला, बाबू और वकीलों के हाथ में आये संस्था-दुकान फाइल और केस बनकर रह जाती है, मानवीय संवेदना, आदर्श, उदारता, विश्वकल्याण की भावना का वहां कोई स्थान नहीं रह जाता तब स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज की आत्मकथा कल्याण मार्ग के पथिक में ये उद्धृत पंक्तियां सार्थक प्रतीत होती हैं—

जगत् गुरु उपदेशक, उपदेशक गुरु संन्यासी, संन्यासी गुरु चपरासी।

ठेके के विरोध में ग्रामीणों द्वारा प्रदर्शन

सोनीपत—नजदीकी गांव सिसाना के सैकड़ों पुरुष-महिलाओं ने इस गांव के पनघट के पास खोले गए देशी शराब के ठेके को बन्द कराने की मांग को लेकर गांव को मुख्य सड़क पर जोरदार प्रदर्शन किया और सड़क पर लकड़ी आदि डालकर यातायात जाम कर दिया। इस दौरान करीब तीन घंटे तक वाहनों का आवागमन बन्द रहा।

प्रदर्शन का नेतृत्व सिसाना की ग्राम पंचायत के सदस्य शिवकुमार कर रहे थे। रास्ता बन्द होने की खबर मिलते ही खरखौदा पुलिस सिसाना पहुंची, लेकिन ग्रामीणों ने रास्ता खोलने से इंकार कर दिया। इसके बाद सोनीपत के एस डी एम. अनन्तराम गोयल घटनास्थल पर पहुंचे और उन्होंने ग्रामीणों को आश्वासन दिया कि उक्त शराब के ठेके को हटाने के बारे में जल्द ही कार्रवाई की जाएगी। इस पर ग्रामीणों ने रास्ता खोल दिया।

पंजाब केसरी

प्रो. प्रकाशवीर विद्यालंकार को बधाई

प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक की कार्यकारिणी ने एक सर्वसम्मत प्रस्ताव राष्ट्रीय सेवा योजना का कार्यक्रम समन्वयक (Co-ordinator N·S.S) नियुक्त किया है। हरयाणा सरकार इनकी प्रतिनियुक्ति के आदेश पहले ही जारी कर चुकी है। इससे पूर्व प्रो० विद्यालंकार इसी विश्वविद्यालय में प्रौढ़शिक्षा कार्यक्रम विभाग के सहनिदेशक भी रह चुके हैं। इसके अतिरिक्त ये गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरद्वार की High Powered Committee के संयोजक, शिष्ट-परिषद् व शिक्षा पटल के सदस्य, आर्यविद्या सभा के महामन्त्री तथा अन्य अनेक शिक्षण संस्थाओं के सदस्य हैं। प्रो० विद्यालंकार के बारे में यह प्रसिद्ध है कि उनको जो भी जिम्मेदारी सौंपी जाती है, उसका निर्वहण वे पूरी ईमानदारी से करते हैं और कार्यभार सौंपनेवाला अधिकारी भी पूर्ण मूल्यांकन के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि उनका निर्णय एकदम सही और संस्था-हित में रहा है। इनकी लेखन शक्ति और तार्किक वक्तव्य कला की हर जगह चर्चा रहती है।

समस्त आर्यजगत् म० द० विश्वविद्यालय के कुलपति श्री विवेकानन्द शर्मा, प्रतिकुलपति डा० एल. एन. दहिया तथा कुलसचिव श्री देवेन्द्रसिंह आई० ए एस. सहित कार्यकारिणी के समस्त सदस्यों और हरयाणा सरकार के प्रति आभार प्रकट करता है और प्रो० विद्यालंकार को बधाई देते हुए उनसे पूर्व परम्परा अनुसार राष्ट्रीय सेवा के क्षेत्र में भी पूरी लगन और ईमानदारी से काम करने की आशा करता है।

—डा० सोमवीरसिंह उपमन्त्री सभा

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म शराब हटाओ राष्ट्र बचाओ

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के मार्गदर्शन में बाढड़ा में पहली बार

दिनांक १५ अगस्त से १८ अगस्त १९९५ तक

विशाल अश्वमेध महायज्ञ तथा शराबबन्दी सम्मेलन

बाढड़ा क्षेत्र के भाइयो तथा बहनो !

अपनी महान् संस्कृति, आध्यात्मिक सद्गुणों के कारण हमारा भारत देश ससार का शिरोमणि और जगद्गुरु कहलाता था। हरयाणा क पवित्र धरती ऋषि-मुनियों को तपस्या स्थली रही है। इसीलिए हरयाणा को यज्ञीय देश भी कहा जाता था, क्योंकि प्राचीनकाल में यहां घर-घर यज्ञ होते थे। बीमारियों का नामोनिशान नहीं था। शुद्ध खान-पान तथा सदाचार का बोलबाला था। हरयाणा के लिए यह लोकोक्ति प्रसिद्ध थी—"देशों में देश हरयाणा, जहां दूध-दही का खाना" लेकिन आज सब कुछ उलट गया है। हमारा खानपान बिगड़ चुका है। शराब और अन्य नशो के सेवन से बुद्धि विकृत होगई है, क्योंकि हमने सात्विक प्रवृत्तियों को त्यागकर रसातल की राह पकड़ ली है। इस सर्वनाश से बचने के लिए हमें पुनः अपनी प्राचीन संस्कृति की ओर लौटना होगा। मद्य, मांस, अण्डे और अन्य नशों को त्याग कर सात्विक जीवन-शैली को अपनाना होगा। यज्ञादि पवित्र परम्पराओं की पुनःस्थापना करनी पड़ेगी। इसी दृष्टिकोण को ध्यान मे रखते हुए इलाके के केन्द्र-बिन्दु स्थल बाढड़ा जिला भिवानी में अश्वमेध महायज्ञ का आयोजन किया गया है। इस महायज्ञ मे एक क्विन्टल घी और दो बोरी सामग्री की आहुतियां दी जायेंगी। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान एवं गुरुकुल झज्जर के आचार्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में यह महायज्ञ व शराबबन्दी तथा समाजसुधार सम्मेलन सम्पन्न होगा। इस शुभावसर पर अनेक लोगों की शराब पीनी छुड़ाई जायेगी। यज्ञोपवीत प्रदान किये जायेंगे तथा हुक्का, बीड़ी आदि नशो को त्याग कर सदाचारी जीवन जीने की प्रेरणा दी जायेगी। कन्या गुरुकुल विद्यापीठ पंचगांव की छात्रायें वेदपाठ करेंगी।

आदर्श संन्यासी का सम्मान—

महान् क्रान्तिकारी, स्वयन्त्रता संग्राम के वीर योद्धा, प्राणिमात्र के हितैषी, बालब्रह्मचारी, तपोनिष्ठ त्यागी-संन्यासी, हरयाणा निर्माता स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (भू पू. आचार्य भगवानदेव) को इस शुभावसर पर सिक्कों से तोलकर सम्मानित किया जायेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, पं० मातूराम शर्मा, प्रो० ओम्प्रकाश सिद्धान्तशिरोमणि आदि उपदेशक, पं० चिरंजीलाल व पं० विश्वमित्र की भजनमण्डली, स्वामी योगानन्द जी सांघी, स्वामी परमानन्द जी, महाशय भरतसिंह, डा० रामसरूप आर्य, डा० गुणपालसिंह सांगवान, एडवोकेट सुप्रीमकोर्ट, पं० भरतसिंह शास्त्री, श्री हीरानन्द आर्य पूर्वमन्त्री हरयाणा एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया है। बाहर से आनेवाले महानुभावों के ठहरने और भोजन का उचित प्रबन्ध किया जायेगा।

दिनांक १५ अगस्त से प्रारम्भ होकर १८ अगस्त १९९५ को प्रातः १० बजे इस महायज्ञ की पूर्णाहुति होगी। इसी अवसर पर मद्यपान आदि बुराइयों को छोड़ने की प्रतिज्ञा कराई जायेगी। सभी भाई-बहन समय-समय पर तथा यज्ञ की पूर्णाहुति पर पहुंचकर अपना कल्याण करें। पूर्णाहुति के बाद १८ अगस्त दोपहर बाद शराबबन्दी सम्मेलन तथा समाजसुधार सम्मेलन का आयोजन किया गया है जिसमें अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष पूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिंह, पूर्व एस० डी० एम० श्री सूबेसिंह जी, पं० सत्यनारायण शर्मा प्रधान आर्यसमाज चरखी दादरी, आचार्य हरिदेव जी गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली, युवा नेता रामअवतार आर्य अध्यक्ष समाजसुधार मोर्चा लोहारू, श्री धर्मपाल आर्य "धीर" आचार्य राजकुमार पथरवा, प्रिंसिपल बलवीरसिंह फतेहगढ़, श्री महतावसिंह आर्य चिड़ावा आदि प्रमुख वक्ता होंगे। भारी संख्या में पहुंचकर लाभ उठायें तथा तन-मन-धन से सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें।

निवेदक—अश्वमेध महायज्ञ समिति बाढड़ा, जिला भिवानी,
संयोजक—कप्तान यज्ञपाल सिं० शास्त्री (पंचगांव)

शराब का ठेका खुलवाने को लेकर ग्राम पंचायत में विवाद

रोहतक—यहां से पांच कि० मी० की दूरी पर सोनीपत रोड पर स्थित बोहर गांव की ग्राम पंचायत में शराब के ठेके के खुलने को लेकर विवाद चला हुआ है। बिजेन्द्रसिंह व उपसरपंच चन्द्रपाल ने मिलकर शराब के ठेकेदार से करीब ८० हजार रु० रिश्वत ली और गांव में शराब का ठेका खुलने की अनुमति दे दी। बताया जाता है बाद में इन्होंने इन रुपयों में से दूसरे पंचों को भी रुपये देकर अपनी ओर करना चाहा ताकि मामले पर लीपा-पोती की जा सके लेकिन कुछ पंचों ने इस रिश्वत को लेने से इंकार कर दिया। जिससे यह रिश्वत लेने का मसला प्रकाश में आगया। फिर सरपंच बिजेन्द्रसिंह व अन्य दो पंचों ने भी जो पैसे इस रिश्वत में से लिए थे वापिस पंचायत में जमा करवा दिए।

एक तरफ से आर्य प्रतिनिधि सभा जैसे संगठन गांव-गाव जाकर शराब के ठेकों को बन्द करने के लिए समझा रहे है तथा शराब से होनेवाले दुष्परिणामों से लोगों को अवगत कराते हैं। दूसरी तरफ पंचायत रिश्वत लेकर ठेका खोलने की अनुमति दे रही है। अब गांव के लोगों का कहना है कि अब इस रिश्वत को उपसरपंच चन्द्रपाल व कुछ अन्य पंचों ने आपस में बांट लिया। इस विषय को लेकर गांव कई बार इकट्ठा हो चुका है लेकिन समस्या का समाधान नहीं हो पाया। कुछ गांव के मौजूदा व्यक्तियों ने इस संवाददाता को बताया कि रिश्वत लेनेवाले उप सरपंच व पंचों का बहुमत ज्यादा है। वे खुला ऐलान कर रहे हैं कि हमने चुनाव में इतना पैसा जो लगा रखा है उसको कहां से निकालें? और गांववाले इस विषय को प्रशासन की नजरों में लाना चाहते हैं। —सत्यप्रकाश और अशोक नादल बोहर, रोहतक

शराब बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इनसे दूर रहें।

यह झूठ कब तक ?

लेखक—व्रतानन्द सरस्वती मन्त्री उत्कल वैदिक यति मण्डल

दिल्ली के 'सार्वदेशिक' 'आर्य संदेश' तथा जालंधर के 'आर्य मर्यादा' साप्ताहिक पत्रों के मुखपृष्ठ पर सर्वसम्मति से सार्वदेशिक सभा प्रधान पद पर पं० रामचन्द्र राव वन्देमातरम् के निर्वाचन का समाचार पढ़कर बहुत दुःख हुआ। उस समाचार में नीचे यह भी लिखा है कि प्रो० शेरसिंह आदि २०-२२ आदमी ही विरोध में थे जो अलग भाग गये थे। ये दोनों समाचार ही सर्वथा मिथ्या व भ्रमपूर्ण हैं। इससे बड़ा आश्चर्य और दुःख क्या होगा कि अपने आपको आर्यसमाज के सर्वेसर्वा होने का दावा करनेवाले लोग इतना सफेद झूठ बोलने का साहस कर सकते हैं।

मैं श्री वन्देमातरम् एवं उनके साथियों से इतना ही पूछना चाहता हूं कि उनका निर्वाचन इन तीन अवस्था में से उन्होंने कब का स्वीकार किया है ?

(१) क्या सभा २७ मई के प्रारम्भ होने से पहले १२ बजे ही 'फैक्स' के द्वारा निर्वाचन की जो सूचना समाचार पत्रों में भेज दी थी उसे आप सर्वसम्मति का चुनाव मानते हैं ?

(२) सभा प्रारम्भ होने से पहले ही जालंधर के अश्विनीकुमार ने इनका नाम प्रधान पद के लिए रखा, इस पर भारी शोर-शराबा हुआ, मुर्दाबाद के नारे लगे और ये उठकर भाग गये। इसे सर्वसम्मति से चुनाव मान रहे हैं ?

(३) जाने के आधा घण्टे बाद पचास गुण्डों को साथ लेकर आए। स्टेज पर टूटी पड़ी माला को अपने आप पहना और उन्हीं गुण्डों को साथ लिए निर्लज्ज की तरह सभाभवन की परिक्रमा की। इसे सर्वसम्मति का चुनाव कहते हैं? इसके अतिरिक्त और दूसरे ढंग से तो आपका चुनाव हुआ नहीं ? फिर भी इतनी निर्लज्जतापूर्वक झूठ बोलते हुए पता नहीं इन्हें संकोच क्यों नहीं लगता ? इन्होंने दूसरे पक्ष पर आक्षेप करते हुए लिखा है कि २०-२२ आदमी थे जिन्हें हरयाणा, राजस्थान का बताया है। जबकि इनके साथ १० आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सैकड़ों व्यक्ति थे। सबका सामूहिक चित्र, उपस्थिति रजिस्टर में हस्ताक्षर आदि इनके प्रमाण हैं। मध्यभारत, बम्बई, कर्नाटक उड़ीसा हिमांचल प्रदेश आदि के कितने आदमी साथ थे।

इनके निर्वाचन में इनके बनाये हुए नकली प्रतिनिधि अधिक मात्रा में थे। जो सार्वदेशिक सभा के संविधान के प्रतिकूल मनमर्जी से बुला रखे थे। परन्तु फिर भी यह उनका दुर्भाग्य था कि वे नकली प्रतिनिधि भी साथ देने को तैयार नहीं थे। अतः उन्होंने चुनाव न करवाने की ठान ली। इसीलिए दूसरे पक्ष को विरोध करना पड़ा। यह आर्यसमाज का दुर्भाग्य है कि ईश्वर की पवित्र वाणी वेद को प्रमुख प्रमाण मानने वाले, वेद का प्रचार-प्रसार करना मुख्य उद्देश्य माननेवाले 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है' का उद्घोष करनेवाले, संगठन का मुखिया अपने शास्त्र एवं सिद्धान्तों का तो पूर्ण ज्ञाता होना चाहिए। इनमें किसी प्रकार की कार्य या शारीरिक क्षमता भी नहीं है। फिर भी किस आधार पर ये अधिकारी बनने का साहस कर रहे हैं और आर्यजनता भी कैसे सुप्त सी होकर इनको सह रही है।

दूसरी ओर पूज्य स्वामी ओमानन्द जी, पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी, पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी, पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी, पूज्य स्वामी जगदीश्वरानन्द जी, पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी (चम्बा), पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी (राजस्थान), पूज्य स्वामी सत्यानन्द जी आदि अनेक त्यागी-तपस्वी, साधु-महात्मा अपना जीवन लगाकर समाज सेवा में लगे हुए हैं जिन पर सारा आर्यसमाज गौरव करता है और श्रद्धा रखता है। कितने दुःख की बात है त्यागी-तपस्वी, साधु-महात्माओं को भी ये तिरस्कृत करते हैं एवं हेय मानते हैं। स्वयं गुण्डागर्दी करके उन पवित्र महात्माओं पर गुण्डागर्दी का आक्षेप लगाते हैं। आर्यसज्जनों याद रखो "एकः पापानि कुरुते फलं भुङ्क्ते महाजनः" (एक व्यक्ति पाप करता है, फल सबको भोगना पड़ता है) के अनुसार इनके कुकर्मों का फल सारे समाज को भोगना पड़ेगा। यदि समय रहते इनको संगठन से नहीं हटाया गया तो रहा-सहा संगठन भी समाप्त हो जायेगा। स्व. स्वामी आनन्दबोध जी ने जो बीज बोया था उसका परिणाम ये लोग हैं। इसी के आधार पर आगे का परिणाम कितना भयंकर होगा सोचते ही दिल कांप उठता है। मैं यह बातें आक्षेप के रूप में न लिखकर दुःखी हृदय से लिख रहा हूं। आशा है आर्यसमाज के साधु संन्यासी, विद्वान् तथा हृदय में तड़प रखनेवाले महानुभाव इधर ध्यान देकर वैदिक धर्म एवं उसके संगठन को बचाने का कोई रास्ता निकालेंगे।

यज्ञ कराओ, शराब हटाओ, राष्ट्र बचाओ।

प्रभुशक्ति देशभक्ति साधना शिविर सम्पन्न

आचार्य आर्य नरेश वैदिक प्रवक्ता की अध्यक्षता में उद्गीथ साधना स्थली हिमाचल में १० मई १९९५ से १८ जून १९९५ तक चार शिविरों का आयोजन हुआ। जिसमें हिमाचल, हरयाणा, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, चण्डीगढ़ व पंजाब के लगभग २०० साधकों ने साधना की।

आर्यजगत् के मूर्द्धन्य विद्वान् संन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी प्रभात आश्रम मेरठ, डा० कुसुमलता वनस्थली विद्यापीठ जयपुर, योगिराज स्वामी दिव्यानन्द जी ज्वालापुर, पंडित जयदेव जी गुड़गांव हरयाणा। श्री वेदभानु जी वेदवक्ता चन्द्रप्रभा शास्त्री आर्य महिला आश्रम दिल्ली। डा० आशा कानपुर, व्यायाम शिक्षक आर्यवीर श्री रामफल जी हिमाचल ने साधकों की ज्ञानवृद्धि की। पं० मामचन्द आर्य, पं० हरिश्चन्द्र आर्य ने अपने मधुर संगीत से वातावरण को सरस बनाया।

वैदिक कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण, ध्यानयोग वैदिक कर्मकाण्ड, स्वास्थ्य-रक्षा, ईश्वर का सच्चास्वरूप आर्यराज्य समाजसुधार, सामाजिक कुरीति निवारण, संस्कृत शिक्षण, शुद्ध वेदपाठ शिक्षण, योगदर्शन, मनुस्मृति ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका प्राणायाम व्यायाम आदि की शिक्षा दी गई। प्याज, लालमिर्च, चाय के बिना सभी ने सात्त्विक भोजन किया।

रोशनलाल संस्थापक, उद्गीथ साधना स्थली (हिमाचल)
पंजीकृत धमार्थ न्यास ग्राम डोहर, तह. राजगढ़, जि सिरमौर

जर्मनी ईसाई युवती ने वैदिक धर्म अपनाया

जर्मनी निवासी २६ वर्षीय शिक्षित ईसाई युवती कु० मरीना नटाली विलहैल्म को उसकी इच्छानुसार ९-७-९५ को शुद्धि संस्कार द्वारा वैदिक (हिन्दू) धर्म में प्रवेश कराया गया। उसका नाम मनीषा रखा गया तथा उसका शुभ विवाह श्री सुरेन्द्रकुमार शर्मा निवासी ग्राम कम्बास डाक घर बराड़ा जनपद अम्बाला के साथ वैदिक रीति आर्यसमाज मन्दिर जगाधरी वर्कशाप में आर्यसमाज के प्रधान श्री धर्मवीर जी की प्रधानता तथा सर्वश्री इन्द्रजीतदेव एवं हरिद्वारीलाल शर्मा के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उपस्थित श्री स्वामी विश्वामभानन्द के अतिरिक्त श्री सुरेन्द्रकुमार के माता-पिता एवं सम्बन्धियों ने नवदम्पति को शुभ आशीर्वाद दिया।

केशवदास आर्य

यज्ञ कराओ, शराब हटाओ, देश बचाओ

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के शराबबन्दी कार्यक्रम के अन्तर्गत हरयाणा के प्रत्येक जिलों के प्रमुख आर्यसमाजों में अश्वमेधयज्ञों का आयोजन किया जा रहा है। इन यज्ञों के अवसर पर सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती तथा आर्यसमाज के अन्य विद्वान् उपस्थित युवकों को शराब, मांस तथा धूम्रपान आदि सामाजिक बुराइयों से होनेवाली हानियों ने समझाकर भविष्य में इन बुराइयों से दूर रहने के लिए यज्ञ में आहुतियां डलवाई जाती हैं। गत दिनों जिला रोहतक के ग्राम सम्पाल, जिला भिवानी के ग्राम गिगनाऊ तथा जिला सोनीपत के ग्राम फरमाणा में अश्वमेधयज्ञों पर हजारों की संख्या में युवकों ने भविष्य में शराब आदि व्यसन छोड़ने की प्रतिज्ञा की है। यज्ञ कराओ, शराब हटाओ, तथा हरयाणा बचाओ के नए नारे के आधार पर इस प्रकार इन यज्ञों का हरयाणा की जनता पर प्रभाव पड़ रहा है। हरयाणा के अन्य स्थानों पलवल जिला फरीदाबाद में ३१ जुलाई से ६ अगस्त, जूआं जिला सोनीपत १३ अगस्त, बाढड़ा जिला भिवानी में १५ से १८ अगस्त, सोहना जिला गुड़गांव में २० से २७ अगस्त तक अश्वमेध यज्ञों का आयोजन किया गया है। अम्बाला छावनी तथा यमुनानगर में भी इसी प्रकार के यज्ञ करवाने की तैयारी की जा रही है।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाधीक्षक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक फोन। (७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन। ४०७२२) से प्रकाशित।

हरियाणा सरकार द्वारा स्वीकृत सं० ३१ ... पंजीकृत नं० ...
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री उपाध्याय
सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०
वर्ष १२ अंक ३५ ७ अगस्त, १९८५ (वार्षिक शुल्क २०) (आजीवन शुल्क २०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

वेद प्रचार सप्ताह पर विशेष लेख

संसार की पहली पुस्तक

डा० चन्द्रसेन, शालीमार नगर, होशियारपुर (पंजाब)

आज जिस संसार में हम रह रहे हैं, वहां अपने चारों ओर जहां कहीं हम पुस्तकों के भण्डार देखते हैं। क्योंकि हमारे सीखने, योग्य होने, कुछ बनने, विकसित होने में पुस्तकें भी सहायक बनती हैं। इसीलिए शिक्षा का समारम्भ होते ही विद्यार्थी के हाथ में पुस्तक आ जाती है। पुस्तक को शास्त्र विद्या का आधार, ज्ञान का आगार कहा जाता है। तभी तो शास्त्र की यह परिभाषा प्रचलित है।

अनेक संशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्।
सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः॥
—हितोपदेश प्रस्तावना

विद्या अनेक संदेहों को मिटाती है और छिपी बात को दर्शाती है। इसलिए पढ़ाई, पुस्तक को आंख की तरह है और वह जिसके पास नहीं है, वह अन्धे की तरह ठोकरें ही खाता है अर्थात् सर्वत्र असफल होता है। विद्या की निधि, शेवधि, शब्दों द्वारा खजाने, कोष से जहां उपमा दी है, वहां सोपान, यान, प्रकाश कल्पवृक्ष, कामधेनु भी माना गया है।

इस पर एक प्रश्न उभरता है, कि संसार में सर्वप्रथम पुस्तक का प्रचलन कैसे हुआ? निरुक्तकार ने इस समस्या का समाधान दर्शाते हुए कहा है—पहले-पहल वेद के आधार पर स्वयं किसी का दर्शन, ज्ञान करने में सक्षम ऋषि हुए, उन्होंने अपने आप किसी का दर्शन करने में समर्थ न होनेवालों को मौखिक उपदेश दिया अर्थात् पढ़ाया। केवल सुनने मात्र से पूरा ज्ञान, समझ संतोष जब लोगों को नहीं हुआ, तो उनके लिए विविध विषयों के अलग-अलग ग्रन्थ बनाए गए।[1]

सारे भारतीय शास्त्र यह स्वीकार करते हैं कि, हमने अपने विषय का ज्ञान वेदों से ही प्राप्त किया है, इसीलिए कुछ उपनिषदें किसी वेद के मन्त्रों को सामने रखकर अपने विषय का वर्णन स्पष्ट करती हैं, तो कुछ अपने विषय का विवेचन करने के अनन्तर, पुष्टि के लिए वेद मंत्र उद्धृत करती हैं। न्याय आदि छः के छः दर्शन अपने-अपने प्रसंगों को प्रतिपादित करने के पश्चात् स्थान-स्थान पर कहते हैं कि ऐसा वेद में कहा है।

यह किसी एक भारतीय शास्त्र की बात नहीं है, अपितु वह कर्म-काण्ड का वर्णन करने वाले ब्राह्मण ग्रन्थ या कल्प ग्रन्थ हों या इनकी संगति दर्शानेवाला मीमांसा दर्शन। इनमें तो धर्म का लक्षण ही यही है कि जो वेद कहता है, वही धर्म है[2]। धर्म में जहां पूजा-पाठ आदि होते हैं, वहां धर्म में दर्शन, सिद्धान्त पक्ष भी अवश्य होता है, जिसके द्वारा धर्म की मान्यताओं की संगति दर्शायी जाती है[1]। ऐसे दर्शनों में भी वेदों को परम-प्रमाण माना गया है। समाज शास्त्र की दृष्टि से स्मृतियों का प्रतिष्ठित स्थान है और इन स्मृतियों का मूलाधार वेद ही है[2]। यही स्थिति आयुर्वेद के शास्त्रों और वास्तुशिल्पकला के ग्रन्थों की है[3]। अर्थात् हर विद्या के भारतीय शास्त्र अपना-अपना मूलस्रोत एकमत से वेदों को ही स्वीकार करते हैं।

इससे यह बात स्वतः सिद्ध हो जाती है कि इन सभी उपलब्ध ग्रंथों से पहले वेद थे। इसीलिए ही मैक्समूलर ने भी यह स्वीकार किया है कि संसार के पुस्तकालय की पहली पुस्तक वेद है।

हम अपने प्रतिदिन के व्यवहार में भी यही देखते हैं कि किसी भी भाषा की पहली पुस्तक पढ़ लेने पर उसके बाद दूसरी पुस्तकें सरलता से पढ़ी जाती हैं। इस प्रकार पहली पुस्तक के आधार पर ही सभी का ज्ञान विकसित होता है। अतएव भारतीय साहित्यकारों की यह दृढ़ धारणा है कि हमारे ज्ञान-विज्ञान का मूलाधार वेद ही हैं। इसीलिए हम प्रत्येक प्राचीन भारतीय ग्रन्थ में देखते हैं कि वे एक स्वर से केवल वेद का नाम ही नहीं लेते अपितु वेद का महत्व भी बताते हैं[4]। जैसे कि हम देखते हैं कि भारतीय धर्म के प्रत्येक पहलू में वेद मंत्रों का प्रयोग होता है। स्नान की बात हो या भोजन की, किसी भी ऋतु से सम्बद्ध यज्ञ, व्रत, पर्व या कोई भी संस्कार। कारोबार का कोई शुभारम्भ हो या कोई उत्सव, तीर्थ जयन्ति सभी अवसरों पर वेद मन्त्रों का विनियोग मिलता है। इन सभी पहलुओं से स्वतः प्रमाणित होता है कि वेद भारतीयों की आध्यात्मिक प्रथम पुस्तक है और सर्वविध ज्ञान से सम्पन्न हैं।

---

१. साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुस्तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मभ्य उपदेशेन मंत्रान् सम्प्रादुरुपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणायेमं ग्रन्थं समाम्नासिषु वेदं च वेदांगानि च। निरुक्त १, ६

२. वेदो धर्ममूलम्—गौतम धर्म सूत्र—१
अथातो धर्मजिज्ञासा, चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः। मीमांसा १, १, १-२
वेदो अखिलो धर्ममूलम् मनुस्मृति २, ६
धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः मनु० २, १३
तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम् वैशेषिक १, १, ३

---

१. प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्मणाम्।
आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षिकी मता॥
कौटिलीय अर्थशास्त्र १, २, १

२. यः कश्चित् कस्यचिद्धर्मो मनुना परिकीर्तितः।
स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः॥ मनु० २, ७

३. निर्मथ्य तद् वेदाम्बुधिं भारद्वाजो महामुनिः।
नवनीतं समुद्धृत्य यन्त्रसर्वस्वरूपकम्॥
यन्त्रसर्वस्व के टीकाकार बोधानन्द का मंगलाचरण।

४. पितृदेवमनुष्याणां वेदश्चक्षुः सनातनम्। मनुस्मृति १२, ९४
बिभर्ति सर्वभूतानि वेदशास्त्रं सनातनम्।
तस्मादेतत्परं मन्ये यज्जन्तोरस्य साधनम्॥ मनु० १२, ९९
सर्वं वेदात्प्रसिद्ध्यति मनु० १२, ९७
बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे वैशेषिक ६, १, १

ऋषि भक्त–जाति सेवक, बाबू बृजलाल जी गुप्त

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु अबोहर

हरयाणा ने आर्यसमाज को जो प्रख्यात सेवक दिये, बाबू बृजलाल गुप्त टोहाना निवासी उनमें से एक थे। एक वर्ष से ऊपर समय बीत गया, उन पर किसी ने कोई लेख नहीं पार्टी के साप्ताहिक में उनका चित्र दिया। आर्यसमाज टोहाना कालेज पार्टी का समाज रहा है। कालेज छपने का तो प्रश्न ही नहीं था, उन पर किसीव्यक्ति या सभा के किसी मालिक संचालक ने चार शब्द भी नही लिखे। मैं भी जान-बूझकर चुप रहा। मैंने तो उनके जीवनकाल में ही उन पर कई बार लिखा।

इसी प्रसंग में कालेज पक्ष की 'पंजाबी नीति' की एक घटना देना आवश्यक है। पंजाब के कई आर्य बंधुओं के आग्रह से मैंने श्री पं० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री के स्मृति ग्रन्थ का कार्य हाथ में लिया तो बीच में प्रादेशिक सभा कूद पड़ी। मैंने डी. ए. वी. वालों को ही यह ग्रन्थ प्रकाशनार्थ देना स्वीकार कर लिया। जब ग्रन्थ प्रेस में जाने लगा तो मैंने पूछा कि कितना छपेगा? श्री बाबू रामनाथ सहगल बोले, "ढाई सौ प्रतियां"।

यह सुनकर मुझे बड़ा धक्का लगा। अब मैं क्या कर सकता था? मैंने तो बिना परिश्रम के दिन-रात एक करके यह कार्य किया और मेरे परिश्रम को यह कहकर मट्टी में मिला दिया गया कि २५० प्रतियां छपेंगी। श्री पं० त्रिलोकचन्द्र जो संस्कृत, हिंदी व उर्दू तीन भाषाओं के कवि थे। वे धाराप्रवाह संस्कृत बोलते थे। अरबी व फारसी के विद्वान् थे। अंग्रेजी भाषा का उनका उच्चारण प्रशंसनीय था। शास्त्रार्थ महारथी थे। दिलजले बलिदानी आर्य योद्धा थे। उनका स्मृति ग्रन्थ छपे और केवल २५० प्रतियां—यह उनके साथ एक घटिया उपहास नहीं तो क्या था। 'आर्य जगत्' का सम्पादक अब वैतनिक होता है। श्री पं० त्रिलोकचन्द्र जी इसी पत्र के वर्षों सम्पादक रहे। सर्वथा निष्काम सेवा की।

बाबू दरबारीलाल व श्री वेदव्यास पर छपे पोथे कौन पढ़ता है। इन पर लाखों का व्यय। ऋषि भक्ति व समाज सेवा का जहां ऐसा तिरस्कार हो वहां बाबू बृजलाल गुप्त को कौन पूछे और फिर वह तो पंजाबी भी नहीं थे।

बाबू बृजलाल जी वर्षों प्रादेशिक सभा के अन्तरंग सदस्य रहे। अपने जीवन भर तन, मन व धन से समाज सेवा की। बहुत दान दिया और दूसरों से भी दिलवाया। वह कई वर्ष तक टोहाना नगर पालिका के सदस्य रहे।

उनके जन्म के समय ही टोहाना में आर्यसमाज स्थापित हो गया। वह अपने पिता श्री ला० देवीदयाल जी की अंगुली पकड़कर सत्संग में जाया करते थे।

डी. ए वी. हाई स्कूल लाहौर से मैट्रिक और फिर लाहौर से ही एफ. ए किया। स्कूल में सबसे बड़े पहलवान थे। इनके गठीले गात व मल्ल विद्या में दक्षता को देखकर हैडमास्टर इन्हें 'बनिया जाट' कहा करता था।

आपने लाहौर में आर्यसमाज के सभी बड़े-बड़े नेताओं व विद्वानों को सुना। आपका स्वाध्याय बड़ा विस्तृत था। आपका निजी पुस्तकालय बड़ा विशाल था। आप कई वर्ष तक देहली के चावड़ी बाजार में चन्द्रगुप्त प्रेस चलाते रहे। इस प्रेस में आर्यसमाज की सैकड़ों छोटी-बड़ी पुस्तकें छपीं। तब देहली में यह प्रेस आर्यों का जाना-माना मुद्रणालय था। जब कभी विपत्ति काल में आर्यों को कुछ विशेष सामग्री छपवानी होती थी तो आर्य लोग चन्द्रगुप्त प्रेस की ओर चल पड़ते थे।

इस प्रेस के कारण बाबू बृजलाल गुप्त का आर्यसमाज के सभी प्रमुख विद्वानों, लेखकों, कवियों व नेताओं से अति निकट का सम्पर्क बन गया। स्वर्गीय नारायणप्रसाद 'बेताब' महाशय रौनकराम शाद, श्रीमती शान्तिदेवी, श्री उलफतराय जी, शान्त स्वामी अनुभवानन्द जी महाराज आदि यशस्वी विद्वान् महात्मा, लेखकों का साहित्य मुद्रित करके बाबू बृजलाल जी ने अपनी जवानी सफल कर दी।

विधर्मियों को कई बार ईंट का जवाब पत्थर से देने पर विवश होना पड़ता था। तब भी बड़ी निर्भीकता से आपने महाशय हंसराज जी आर्य बेरटा द्वारा पं. मनसाराम वैदिक तोप का साहित्य छापने का यश लूटा। श्री पं. मनसाराम जी वैदिक तोप का कालजयी ग्रन्थ वैदिक तोप तो छापा ही आपने। इस ग्रन्थ की बढ़ती हुई मांग को स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने इसका हिन्दी अनुवाद करके पूरा किया है। सार्वदेशिक के पास कहते हैं बहुत स्थिर निधियां हैं परन्तु ला० रामगोपाल जैसा कुशल व्यापारी भी इसे न छाप सका। इस युग बाबू बृजलाल ने १२०० से ऊपर पृष्ठों का यह ग्रन्थ छापकर ऋषि मिशन की धाक जमा दी।

श्री यशवन्तसिंह वर्मा का संगीत ऋषि दयानन्द, संगीत हकीकतराय, संगीत आर्य रामायण व श्री साबर का 'ऋषि दर्शन' काव्य, ऋषि दयानन्द संसार की नजरों में तथा श्री यशवन्तसिंह वर्मा के भजनों के कई संग्रह प्रकाशित करके टोहाना को भारत प्रसिद्ध ही नहीं, विश्व प्रसिद्ध बना दिया।

यद्यपि टोहाना का समाज कालेज पक्ष का था तथापि टोहाना के आर्यसमाजी पूर्णतया शाकाहारी रहे। कारण दो थे। एक तो टोहाना हरयाणा का नगर था। दूसरे टोहाना वालों पर पं. मनसाराम वैदिक तोप की गहरी छाप थी।

श्री बाबू बृजलाल महात्मा आनन्दस्वामी के बड़े भक्त थे। गायत्री जप करते रहते थे। कई निर्धन छात्रों को आपने पढ़ाया। वह आर्य युवक संगठन में मेरे बड़े सहयोगी थे। उन्हें दिनरैन आर्यसमाज की चिन्ता रहती थी। उन्हें वेद की सैकड़ों सूक्तियां कण्ठस्थ थीं। गऊ-पालन व गो-रक्षा में बहुत रुचि लेते थे। गोशालाओं के लिए उदारतापूर्वक दान देते थे।

उनकी फर्म को एक बार लगभग तीस लाख रुपये का घाटा पड़ा। इस घाटे का कारण उनके रिश्तेदार थे तथापि उन्होंने इतने बड़े घाटे को सुनकर भी दिल को नहीं लगाया। इसे कर्मभोग चक्र मानकर सह लिया।

मैंने अबोहर में अपना घर बनाने के लिए प्लाट लेने का निश्चय किया तो पहले एक फिर दो प्लाट का सौदा किया। मुझे एक सहस्र या पन्द्रह सौ रुपये की कमी पड़ गई। मैंने बाबू जी को लिखा आप व्यापारी हैं मुझे बैंक से इतनी राशि ले दें। मैं शीघ्र सूद समेत चुका दूंगा। उन्होंने यह कार्य कर दिया। मैंने बाद में अनुमान से सूद जोड़कर ड्राफ्ट बनवाकर रुपया लौटा दिया। आपका पत्र आया कि आप तो हम बनियों से भी आगे निकल गये। आपने अनुमान से ही सूद चुकाने की बात लिखी है फिर भी कुछ पैसे आपने अधिक भेजे हैं।

आर्यसमाज का कोई भी व्यक्ति वेद प्रचार के लिए जब-जब झोली पसार कर उनके पास गया तो उन्होंने खाली नहीं लौटाया। उनका व्यापार कभी अमरावती व मद्रास में भी था। वह ऋषि मिशन की नींव का एक पत्थर थे। उनके साथ एक युग समाप्त हो गया। टोहाना और हरयाणा निवासी इस आर्य पुरुष को यदाकदा याद करके ऋषि मिशन की सेवा का संकल्प दृढ़ करते रहेंगे।

नकली-फसली आर्यों से

टे॰ नकली-फसली आर्यों मतना समाज को बदनाम करो।
दयानन्द का नाम लेकर क्यों तुम उल्टे काम करो,
बहुत दिनों से करते आये समाज के संग गद्दारी,
प्रत्यक्ष में अब पोल खुल गई नकली आर्यों की सारी।
अपने स्वार्थ पद हेतु मत समाज को नीलाम करो,
सारे जग में शिरोमणी था दयानन्द का आर्यसमाज,
फसली आर्यों ने ही कर दिया दूषित और कलंकित आज।

ऐसे फसली आर्यों से अब मतना कोई कलाम करो।
आर्यसमाज की संस्थाओं का जो करते हैं दुरुपयोग,
स्वार्थी और विषधर काले घुसे हुये इसमें कुछ लोग,
संगठित होकर आर्यों आर्यसमाज का ऊंचा नाम करो।

त्यागी, तपस्वी, सन्त, महात्मा अपना तन-मन-धन देकर,
काम कर रहे समाज का जो ब्रह्मचर्य का व्रत लेकर,
विश्वमित्र ऐसे सन्तों के चरणों में प्रणाम करो।

रचयिता—विश्वमित्र आर्य, सभा भजनोपदेशक

आखिर आर्यसमाज का क्या होगा ?

कर्मवीर विविस्तु

आज आर्यसमाज के शुभचिन्तक हरेक व्यक्ति के दिल को रह-रह कर यह बात झकझोर रही है कि आर्यसमाज के अधिकारियों को क्या होगया है ? वस्तुतः यह विषय आज काफी विचारणीय है। आर्यसमाज के गौरवमय इतिहास में सम्भवतः पहले कभी दुर्भाग्यपूर्ण घटना कभी नहीं घटी थी जैसा कि हैदराबाद में देखने को मिली। यह बात सहज ही विश्वसनीय नहीं लगती कि आर्यसमाज जैसी पवित्र और सर्व-हितकारी संस्था की शिरोमणि सभा टूटकर बिखर जायेगी। पिछले तीस वर्षों वाला आर्यसमाज का इतिहास निश्चय ही दुर्भाग्यपूर्ण कहा जा सकता है यद्यपि १९०९ से १९६१ तक शिरोमणि सभा सार्वदेशिक के सिंहासन पर बैठनेवाले प्रधानों की चौदह संख्यावाली लम्बी शृंखला में सात-सात महाशय वकील रह चुके हैं। फिर आर्यसमाज के हित में एक दो कार्य को छोड़कर कोई विशेष काम नहीं हुआ, वास्तविक सफलता न मिल सकी, मिलती भी कैसे। स्वामी स्वतंत्रानन्द जी की एक बात मुझे बरबस याद हो आ रही है, उन्होंने कहा था—जब आर्य-समाज के आन्तरिक मामलों में वकील बाबू एवं लाला दखल देंगे, तब आर्यसमाज केश फाईल और दुकान बनकर रह जायेगा। आर्यसमाज के इतिहास की थोड़ी भी जानकारी रखनेवाले यह भलीभांति जानते हैं कि यहां पर प्रायः इन्ही सज्जनों का साम्राज्य रहा। आर्यो ! अपनी छाती पर हाथ रखकर कहो—क्या आर्यसमाज केश फाईल और दुकान बनकर नहीं रह गया है। किसी जमाने में आर्यसमाज के बारे में एक प्रसिद्धि थी कि आर्यसमाजी झूठ नहीं बोलता है इतिहास साक्षी है कि अदालत में आर्यसमाजी की ली गई बयानात् को सत्य मानकर न्यायाधीश उसके अनुसार अपना निर्णय देता था, परन्तु यह क्या आज समूचे आर्यसमाज को विवादित कर अदालत के कटघरे में खड़े होने को मजबूर कर दिया गया है। कभी आर्यसमाज सदाचार, अनुशासन, मर्यादा एवं सत्य का पर्याय माना जाता था, परन्तु समाजियों के दुष्कृत्यों से यह विशेषता अब नाममात्र की नहीं रह गई है। समाज के आपस के मतभेद को बैठकर सुलझाने की बजाय गली-कूचों से लेकर अदालत तक घसीट ले जाने में हमारे समाज के ठेकेदारों ने जो भारी भूल की, पता नहीं उसकी कीमत कब तक चुकानी पड़ती रहेगी। आर्य-समाज की पवित्र मर्यादाओं का आज स्वयं समाजियों द्वारा सरेआम गला घोंटा जा रहा है। समस्त संसार को सहअस्तित्व प्रेम और भाई-चारा का पावन सन्देश गला फाड़-कर सुनानेवाला आर्यसमाज आज विनाश के कगार पर खड़ा होगया है।

कहा नहीं जा सकता धन पद और सत्ता के भूखे भेड़िए कब आर्यसमाज को रसातल में झोंक दें। कोई भी आर्यसमाज मन्दिर ऐसे अछूते नहीं रह गये हैं, जहां किसी न किसी प्रकार के विवाद के कारण अशान्ति न छायी हुई हो। एक-एक प्रान्त में दो-दो प्रतिनिधि सभायें एक ही नाम से दो-दो पत्रिकायें क्या इस बात का सबूत न देती हैं कि आर्यसमाज किस कदर मरणोन्मुख होते जा रहा है, क्या आर्य नेता इस जलते हुए सवाल पर ठण्डे दिल से विचारने का कष्ट करेंगे ?

आर्यसमाज की इस मृतप्राय अवस्था में यह एक प्रशंसनीय कदम कहा जा सकता है कि अभी हाल ही में हुए सार्वदेशिक सभा के हैदराबाद चुनाव में देश के प्रबुद्ध कर्त्तव्यनिष्ठ एवं दिलजले साधुओं ने अन्याय के विरुद्ध जंग छेड़ ही दी और सार्वदेशिक के तथाकथित प्रधान श्री वन्देमातरम् एण्ड कम्पनी की कुछ भी नहीं चलने दी, यह याद रहे लाला रामगोपाल जी के गुट ने गत तीस वर्षों से आर्यसमाज की अकूत सम्पत्ति को हमारे जो पवित्र वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए थी, अपने बाप की दौलत समझकर अनर्गल आवश्यक व्यय तथा जबरदस्त धोखाधड़ी करते हुए प्रचुरमात्रा में अपनी जेबें गर्म की। इनके खिलाफ बिगुल बजाकर देश के कोने-कोने से आर्य प्रतिनिधियों ने इस निकम्मे नेतृत्व से ऊबकर महामना आर्य संन्यासी स्वामी विद्यानन्द जी को सर्व-सम्मति से प्रधान तथा युवासम्राट् स्वामी सुमेधानन्द जी को मन्त्री निर्वाचित किया। यह आर्यसमाज की एक गौरवमयी परम्परा कही जा सकती है जब कि किसी विद्वान् एवं योग्य जन प्रतिनिधि को समाज का अग्रगण्य नेता माना जाये। यद्यपि विवाद को चारदिवारी में कैद एण्ड कम्पनी द्वारा बुरी तरह आहत शिरोमणि सभा उनके हाथ से निकलने को बेताब हो रही है। अतः आशा की जा सकती है कि वह शीघ्र ही कर्मठ एवं तेजस्वी ब्रह्मशक्ति के नेतृत्व में आकर प्रचण्डरूप से पल्लवित और पुष्पित होगी तथा जल्दी ही ऋषि के पावन अरमानों की होली जलने से पहले बचाकर अटक से लेकर कटक तक तथा काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक समस्त आर्यगण दीवाली का आनन्द उठा सकेंगे, वह दिन हमारे लिए कितना खुशनसीब होगा, अकल्पनीय है।

वह आनन्दकन्द सच्चिदानन्द भगवान् हमारे आर्यनेताओं के अन्तःकरण में सद्बुद्धि प्रदान करे जिससे आस्तिकता, योग्यता एवं विद्वत्ता ग्रहण करें, पारस्परिक विवाद से ऊंचा उठकर समाज की संरचना में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दें, यही अभिलाषा है।

नामधाम संकेत-कंठीपल्ली शान्तिसदन, षट्त्रिंशगढम्

श्रावणी उपाकर्म और रक्षाबन्धन

'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' (मनुस्मृति) अर्थात् वेद धर्म का मूल है। 'सुखस्य मूलं धर्मः' (चाणक्य) अर्थात् धर्म सुख का मूल है। इस कारण सृष्टि के प्रारम्भ से ही ऋषि-मुनि लोग वेद के अनुसार आचरण करते आये हैं। ऋषि दयानन्द ने भी कहा कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। (आर्यसमाज का तीसरा नियम) तात्पर्य यह है कि वेद का स्वाध्याय प्रतिदिन किया जाए। वेद के स्वाध्याय का उपक्रम अर्थात् प्रारम्भ जिस दिन विशेषतः किया जाता है उसे उपाकर्म कहते हैं। यह श्रावण मास की पूर्णिमा को होता आया है। इसी कारण इस पर्व को श्रावणी उपाकर्म कहते हैं।

श्रावणी उपाकर्म के दिन नया यज्ञोपवीत लिया जाता है। यज्ञोपवीत यज्ञ अर्थात् श्रेष्ठ कर्म करनेवालों की पहचान है। यह अधिकार जताने अथवा प्रदर्शन के लिए नहीं है अपितु कर्त्तव्य का बोधक है। इसके तीन धागे तीन ऋणों अर्थात् पितृ-ऋण, देव-ऋण एवं ऋषि-ऋण के द्योतक हैं। पितृ-ऋण माता-पिता की सेवा करने और सन्तान के उचित पालन से उतरता है। देव ऋण सन्ध्या हवन और सत्याचरण से उतरता है। ऋषि ऋण वेद के पढ़ने-पढाने और सुनने-सुनाने से उतरता है। इन तीनों ऋणों को उतारने का संकल्प यज्ञोपवीत के तीन धागों में छिपा रहता है। यह यज्ञोपवीत बांयें कन्धे पर धारण किया जाता है जो भार-वहन का द्योतक है : यह हृदय को स्पर्श करता हुआ नीचे की ओर जाता है, जो प्रेम का प्रतीक है। नीचे दाहिनी ओर लगी गांठ कटिबद्धता का चिन्ह है। अभिप्राय यह हुआ कि हम अपने समस्त कर्त्तव्यों का पालन कटिबद्ध होकर, रुचिपूर्वक एवं प्रेम सहित करें। यही यज्ञोपवीत का रहस्य है।

यज्ञ के समय पुरोहित यजमान के हाथ में एक सूत्र बांधते आये हैं। यह सूत्र इसलिए बांधा जाता था ताकि यजमान यज्ञ की मर्यादा का पालन करे और अपने जीवन में भी मर्यादा लाये। श्रावणी उपाकर्म के दिन ब्राह्मण लोग क्षत्रियों एवं अन्यों के हाथ में रक्षासूत्र बांधते थे। इसका अभिप्राय था कि विद्या प्रचार-प्रसार द्वारा ब्राह्मणों अर्थात् विद्वानों की रक्षा करें। कालान्तर में समाज-व्यवस्था दूषित हो जाने और विदेशियों के आक्रमणों से नारी की मर्यादा पर आघात होने लगे। तब बहिनों ने भाइयों के हाथ में रक्षा-सूत्र बांधना प्रारम्भ किया। इसका सन्देश था कि भाई लोग बहिनों की रक्षा करें। इसका नाम रक्षाबन्धन पड़ गया। इस समय उपर्युक्त तीनों प्रकार के सूत्र बन्धन समाज में प्रचलित हैं।

इस प्रकार श्रावणी उपाकर्म हमें चार सन्देश देता है—

(१) वेद के स्वाध्याय से विद्या की प्राप्ति, धर्म का ज्ञान और सुख की साधना करना।

(२) यज्ञोपवीत से संकल्प शक्ति का विकास करके कर्त्तव्य-पालन करना।

(३) रक्षा-सूत्र से प्रेरणा लेकर जीवन में मर्यादा का पालन करना।

(४) रक्षाबन्धन से भाई-बहिन के प्रेम में वृद्धि।

इन चारों सन्देशों को अपने आचरण में लाकर, आइए हम सम्पूर्ण विश्व को श्रेष्ठ बनायें। (कृण्वन्तो विश्वमार्यम्)।

—रूपचन्द्र दीपक (यज्ञयोग ज्योति से साभार)

कुछ तड़प कुछ झड़प

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन अबोहर-१५२११६

मुस्लिम जगत् में व्याप्त हिंसा—इस्लाम का गुणगान करनेवाले अपनी लेखनी व वाणी से इस्लाम को विशेषताओं का बखान करते हुये नित्य नये तर्क प्रस्तुत करते रहते हैं। इस्लाम का इतिहास इतना रक्त-रंजित क्यों है? इसका कारण जानते हुए भी मुस्लिम विद्वान् व नेता हिंसक प्रवृत्ति के कारण का निवारण करने को तैयार ही नहीं होते। कराची में लहू की नदियां बह रही हैं। अब मिस्र व सूडान में दनादन होने की सम्भावना है। इराक व ईरान के युद्ध में लाखों मोमिन अल्लाह मियां को प्यारे होगये। अफगानिस्तान में जिहादी एक दूसरे की गर्दनें काट रहे हैं। कभी कादियानो मिर्जा ईसाई, आर्य, सिख व मुसलमान सबको मौत के इलहाम पाकर गद्‌गद् हुआ करता था।

जब आर्यवीर महाराज नत्थूराम की सिंध में एक मुसलमान ने हत्या कर दी तब मिर्जा महमूद के अखबार ने कादियों में अपने सम्पादकीय में क्रूर हत्यारे को 'एक परवाताए रसूल' लिखा था। अब जब रसूल के परवानों ने मिर्जाइयों को गाजर मूली की तरह काटना आरम्भ किया है तो मिर्जा महमूद का पुत्र वसीम अहिंसा मन्त्र का जप करने लगा है।

यह पं० लेखराम की विजय है। यह मेरे राजपाल का लहू अपना रंग दिखला रहा है। हम कुछ कहें तो छलिये वोटार्थी राजनेता मुस्लिम तुष्टिकरण के कारण हमें ही कोसने लगते हैं। ये न तो देश का हित चाहते हैं और न मुसलमानों का सुधार उपकार होने देते हैं।

मैं सर सैयद अहमद खां के जीवन की एक घटना अत्यन्त संक्षेप से देकर देशवासियों व मुसललानों को इस हिंसा के कारण के निवारण करने की विनती करा हूं। सर सैयद अहमद खां को उनके 'शुद्ध इस्लाम' के कारण मुसलमान मारने के षड्यन्त्र रचते रहते थे। उन्हें नित्य धमकियां दी जाती थीं। इसमें तो दो मत नहीं कि ऋषि दयानन्द व पं० लेखराम के शुद्धि आन्दोलन का इस्लाम पर गहरा प्रभाव पड़ा। 'शुद्ध इस्लाम' पर वैदिक धर्म का गूढ़ा रंग दिखाई देने लगा।

एक मौलाना ने सर सैयद को बताया कि उस मौलाना ने सर सयद की हत्या के षड्यन्त्र कर्त्ता को इस कुकृत्य से कैसे रोका। इस पर सर सैयद ने उस मौलवी को कहा, "खेद है आपने उस दीनदार मुसलमान को इस निश्चय के रोक दिया और हमारे पूर्वजों की बपौती है जो सदा अपने भाई मुसलमानों के हाथ से कत्ल होते रहे हैं—वंचित रखा।"

पाठकवृन्द ! यह इस युग के सबसे बड़े मुस्लिम नेता, सुधारक व विद्वान् के शब्द हैं। ये शब्द मेरे नहीं हैं।

कभी समय मिला तो मैं सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ और विरक्त शिरोमणि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का इसी विषय का एक खोजपूर्ण लेख अनूदित करके छपवाऊंगा।

आर्यसमाज में मुफत मुकद्मे लड़नेवाले वकीलों ने ऋषिमिशन का नाश करवाने का कुचक्र चला रखा है। आर्य संन्यासियों व गुरुकुलों के आचार्यों को नये-नए विद्वानों व लेखकों का निर्माण करना होगा। पाप का उन्मूलन करने के लिए परम आवश्यक है।

अनर्थकारी, शरारतपूर्ण व हास्यास्पद—मुझे अभी-अभी पता चला है कि श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने स्वामी विद्यानन्द जी की पुस्तक 'आर्यों का आदि देश' के बारे में लिखा है कि यह पुस्तक पं० भगवद्दत्त जी की पुस्तक की नकलमात्र है।

पुस्तक छापे इतना लम्बा समय बीत गया। शास्त्री जी सोच रहे। अब किसी वकील ने सुझाया होगा कि कुछ तो ऊटपटांग लिखो। शास्त्री जी ला० रामगोपाल जी की बप्पलवाला संस्मरण लिखते तो अच्छा रहता। शास्त्री जी पिछले वर्षों में जनता पार्टी के राज व फिर कांग्रेस के राज में टिकट पाने के अपने प्रयास लिखते तो अच्छा रहता। शास्त्री जी मुकदमेबाजी के रामगोपाल व मरवाहा जी के निष्काम अभियान की चर्चा करते तो अच्छा रहता। शास्त्री जी यह बताते कि वीर शिरोमणि पं० नरेन्द्र जी के जीवनकाल में मास्टर सूर्यदेव का सम्बन्धी वन्दनीय रामचन्द्र किस गुफा में छिपा था। रामगोपाल इसे कोल्ड स्टोरेज से कैसे निकाल लाया? सार्वदेशिक में इतने वर्षों इसका नाम कितनी बार छापा। पं० नरेन्द्र जी के जाते ही लाला जी ने रामचन्द्र महाराज को आर्यसमाज पर थोप दिया। शास्त्री जी यह बताते तो अच्छा होता कि रामचन्द्र जी ने कर्नाटक में रामगोपाल के बारे क्या कहा या फिर यह बात श्रीमान् जी से प्राप्त करलें कि शास्त्री जी को इस बोगस सत्यार्थप्रकाश रचयिता ने किस जानवर से उपमा दी। हम तो शास्त्री जी का कई कारणों से मान करते हैं और उन्हें रामचन्द्र जी महाराज की दी उपमा से विभूषित नहीं करना चाहते। शास्त्री जी यह तो बताते कि ८४ के दंगों के बाद लाला रामगोपाल व आप मरवाहाजी के बारे मैंक्या बताया करते थे? मरवाहा जी के विरुद्ध विज्ञप्ति में कौनसी नई बात थी जो लाला जी नहीं कहते थे?

शास्त्री जी दम है तो हैदराबाद नगर में माननीय मरवाहा जी व रामचन्द्र जी मेरे साथ दो विषयों पर शास्त्रार्थ करलें। मध्यस्थ या तो वेदवेदांग पुरस्कार प्राप्तकर्ता कोई आर्य विद्वान् हो या फिर पं० भीमसेन जी, पं० सत्यानन्द जी, पं० सोमदेव जी, प० सुधाकर जी चतुर्वेदी, श्री स्वामी ब्रह्मदेव जी कर्नाटक व आचार्य नरेन्द्र भूषण जी केरलीय। विषय होंगे—

(१) क्या आर्यों का आदि देश मौलिक है या पं० भगवद्दत्त जी ग्रन्थ की नकल है।

(२) रामचन्द्र वन्देमातरम् ने ऋषि के साथ द्रोह करके सत्यार्थ-प्रकाश के अनुवाद के नाम पर चालबाजी की है।

शास्त्री जी मैं आपको बता हूं कि लाला रामगोपाल ने आर्यों के आदि देश की रचना करने पर स्वामी विद्यानन्द की कई बार भूरि-भूरि प्रशंसा की। शास्त्री जानते ही होंगे कि स्वामी विद्यानन्द जी के मौलिक लेखों को लाला रामगोपाल जी खोज-खोज के पढ़ा करते थे। शास्त्री जी को पता होगा कि उनकी कम्पनी ने स्वामी विद्यानन्द जी के साहित्य को छपवाया। स्वामी सत्यप्रकाश सार्वदेशिक के दो पुर्जों को अनाथ बताया करते थे। दो में से एक हैं सच्चिदानन्द जी शास्त्री। असहाय-शास्त्री जी सच कहने व लिखने से भयभीत हैं। अच्छा! इतना हो बता दें कि यज्ञोपवीत कितने तार का पहनना वेदविहित है।

मेरी दो पुस्तकों की समीक्षा पर मेरा नम्र निवेदन—

गोविन्दराम हासानन्द ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, भाई परमानन्द जी व महात्मा हंसराज के मेरे द्वारा लिखित तीन संक्षिप्त जीवनचरित छापे हैं। तीनों ही संक्षिप्त हैं परन्तु मौलिक हैं। मैंने तीनों में यथा-संभव नई-नई घटनायें खोज करदी हैं। इन तीनों की समीक्षा वेदप्रकाश के मार्च १९९५ के अंक में छपी है। समीक्षक हैं श्रीमान् डा० भवानीलाल जी भारतीय। अपने लिखे ऋषिजीवन की समीक्षा व किसी पत्र में अपने से पूर्व अपने पास मंगवाने का आग्रह किया करते थे। मेरी पुस्तकों की समीक्षा करते हुए डा० भारतीय जी ने लिखा है "यदि इस पुस्तक में (महात्मा नारायण स्वामी जी) आर्यसमाज के किसी दल या संगठन की आलोचना नहीं भी रहती तब भी पुस्तक की उपयोगिता न्यून नहीं थी।"

निश्चय ही भारतीय जी ने किसी को प्रसन्न करने के लिए ऐसा लिखा है। यदि उनके इस आदेश को माना जाये तो भारतीय जी का लिखा सारा ऋषिजीवन एक अनुपयोगी दोषयुक्त ग्रन्थ है। उसमें महाराज लायबल केस, इस्लाम, ईसाईमत, मुन्शी इन्द्रमणि, पौराणिकों की चर्चा न भी करते तो ग्रन्थ फिर भी लिखा जा सकता था।

भारतीय जी स्वामी श्रद्धानन्द लिखित 'पं० लेखराम आर्य पथिक' पुस्तक के सम्पादक बने। उसकी आपने भरपूर प्रशंसा की। तनिक उस पुस्तक को अपने इस उपरोक्त कथन को सूली पर चढ़ाकर देखें। भारतीय जी ने पं० सत्यदेव जी लिखित स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन चरित की कई बार प्रशंसा की है और उस पर भी लिखा है। लगता है वह बिना पढ़े सम्पादक बन गये। पुस्तक पढ़ लेते तो मेरी पुस्तक पर ऐसी सस्ती राय देने से अवश्य रुकजाते। भारतीय जी ने प्रो० यादव की एक पुस्तक को भूरि-भूरि प्रशंसा कर दी। आज पता लगा कि यूंही बिना पढ़े उस पर लिख दिया। कई और प्रमाण देता पर इतना ही

(शेष पृष्ठ ८ पर)

श्री वन्देमातरम जी के ढोल की पोल

सम्पादक के नाम पत्र :

— आदरणीय महोदय,

आपकी पत्रिका के पिछले कुछ अंकों में 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के बारे में बहुत कुछ जानने को मिला, जिसे पढ़कर अति खेद हुआ। हमें भी दिल्ली वाले अधिकारीगण से काफी शिकायतें हैं। खैर मैं इस गन्दी राजनीति में नहीं पड़ना चाहता, जिसने समाज के शुभ चिन्तकों को काफी चोट पहुंचाई है।

मेरा पत्र लिखने का कारण है तमिलनाडु के बारे में गलत विवरण का खण्डन करना। आप के छपे विवरण १४-७-९५ के अनुसार वन्देमातरम जी ने मई ८४ में आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन किया है, यह हमारे लिए बिल्कुल नई बात है। पिछले ६० सालों से आर्यसमाज मद्रास कार्य कर रहा है और उसे वन्देमातरम् जी की गतिविधियों की कोई खबर नहीं है। शायद उनके नक्शे में मद्रास दक्षिण भारत से बाहर है। यह मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि उन्होंने अपने अभियान के दौरान यहां कदम ही नहीं रखा। दूर मदुराई में सारा खेल खेला गया। हमें तो आज तक हैदराबाद सम्मेलन का न तो निमन्त्रण मिला है और न ही चुनाव के बारे में कोई सूचना मिली है। इशारा के लिए नोटिस भेजे जाते हैं और इसके आगे कुछ नहीं, क्या विडम्बना है।

मैं यह गर्व के साथ कह सकता हूं कि आर्यसमाज मद्रास जिस साफ सुथरे ढंग से और अटूट लगन से कार्य कर रहा है, वह दूसरे समाजों के लिए ईर्ष्या का विषय है। उत्तर भारत से जो भी विद्वान् और भजनीक हमारे वार्षिक कार्यक्रमों में आये, वे भी प्रशंसा करते नहीं थकते। यहां के अनुशासन और प्रेमभाव की जितनी प्रशंसा की जाये कम है। इसका सारा श्रेय हमारे पूजनीय श्री जयदेव जी को जाता है जिन्होंने अपना जीवन समाज को समर्पित कर दिया और हम जैसों को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। उनके द्वारा संचालित डी. ए. वी. स्कूल आज देश की शान है। उन्हीं की प्रेरणा से मद्रास में समाज की चार शाखाएं चल रही हैं और चार शाखाएं स्कूल की भी चल रही हैं।

ऐसे सम्मानित आर्यसमाज को भुला देना सिर्फ वन्देमातरम् जी ही कर सकते हैं।

हमारी सफलता का रहस्य है राजनीति से कोसों दूर रहना और स्वामी दयानन्द जी की दिखाई राह पर चलना। धन्यवाद,

—भूपेन्द्रपाल शर्मा, महामन्त्री
आर्यसमाज (सेंट्रल) मद्रास

दिल्ली के आर्यसमाजों को सूचना

पं० अशोककुमार शास्त्री आर्यसमाज गांधी नगर, रोहतक हरयाणा से आर्यसमाज नयाबांस, खारी बावली दिल्ली-६ में पुरोहित कार्य कर रहे हैं। दिल्ली के परिवार एवं आर्यसमाजों में सभी प्रकार के संस्कार वैदिक रीति से विवाह, वेदानुकूल विधि-विधान पूर्वक वेद-पारायण यज्ञ, इलैक्ट्रोनिक वाद्ययन्त्र द्वारा, भजनोपदेश इत्यादि कार्य करवाने हेतु सम्पर्क करें।

मन्त्री आर्यसमाज, नयाबांस दिल्ली-६
दूरभाष : २३१२१७

पुरोहित की आवश्यकता

नीलोखेड़ी आर्यसमाज में अनुभवी पुरोहित जो दसवीं कक्षा तक हिन्दी व संस्कृत भी पढ़ा सकता हो। एक पुरोहित की आवश्यकता है। पत्र व्यवहार करें।

मन्त्री आर्यसमाज नीलोखेड़ी
जिला करनाल

यज्ञ कराओ, शराब हटाओ, हरयाणा बचाओ

हरयाणा में अश्वमेध यज्ञों का कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से शराबबन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए हरयाणा के कोने-कोने में अश्वमेध यज्ञों का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर शराब, मांस, बीड़ी, सिगरेट आदि दुर्व्यसनों के भविष्य में परित्याग करने की यज्ञ में आहुति दिलवाकर प्रतिज्ञा करवाई जाती है। उपस्थित नर-नारियों को सभा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा अन्य विद्वान् सामाजिक बुराइयां छोड़ने का उपदेश देते हैं। हरयाणा प्रदेश में यज्ञों का कार्यक्रम निम्न प्रकार बनाया गया है :—

आर्यसमाज गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक	१० अगस्त
आचार्य कुल लोवाकलां जिला रोहतक	१० ,,
आर्यसमाज ठोल जिला कुरुक्षेत्र	१०, ११ ,,
आर्यसमाज खाण्डाखेड़ी जिला हिसार	४ से १० ,,
आर्यसमाज जूआं जिला सोनीपत	१३ ,,
आर्यसमाज नियाना जिला हिसार	१३ ,,
आर्यसमाज बाढड़ा जिला भिवानी	१५ से १८ ,,
आर्यसमाज माडल टाउन रोहतक	१९ से २१ ,,
आर्यसमाज वैदिक साधनाश्रम यमुनानगर	२६ से २८ ,,
आर्यसमाज सोहना जिला गुड़गांव	२० से २७ ,,
आर्यसमाज नरवाना जिला जीन्द	२६ से २८ ,,
आर्यसमाज सालवन जिला करनाल	४ से १० सितम्बर
आर्यसमाज रसूलपुर जिला महेन्द्रगढ़	२३, २४ ,,
आर्यसमाज नांगल जिला महेन्द्रगढ़	२५ ,,
आर्यसमाज करसिन्धु जिला जीन्द	२२ से २४ ,,
पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जयन्ती दयानन्दमठ रोहतक	३ अक्तूबर
आर्यसमाज शेखपुरा जिला करनाल	६ से ८ ,,
महर्षि दयानन्द वैदिकधाम कुरुक्षेत्र (सूर्यग्रहण मेले पर)	२२ से २५ ,,
आर्यसमाज सत्य सदन पुनहाना जिला गुड़गांव	२८, २९ ,,

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाधीक्षक

श्रावणी पर विशेष गीत

वेदों का जयध्वज लहराएं

वेद ज्ञान का स्रोत बहे फिर,
इस धरती पर सतत निरन्तर।
मिटे अन्धेरा अज्ञानों का,
बिखरे नव आलोक धरा पर।
वैदिक युग का वैभव सारा—
महिमण्डल पर सहसा आए।
वेदों का जयध्वज लहराएं॥

चलें स्वयं हम वेद पथों पर,
तथा उसी पर जगत चलाएं।
"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का—
स्वप्न चलो साकार कराएं।
ज्ञान तथा विज्ञान वेद का—
जगतीतल को राह दिखाएं।
वेदों का जयध्वज लहराएं॥

ब्रह्मा से लेकर जैमिनि तक,
ऋषियों ने है मार्ग दिखाया।
ऋषिवर दयानन्द ने उस पर,
नई प्रभा फिर से फैलाया।
उसी प्रभा से प्रभासित हो—
पूर्ण मनुज, मानव बन जाएं।
वेदों का जयध्वज लहराएं॥

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिर खाना, (उ० प्र०)

सार्वदेशिक आर्य वीर दल अधिकारियों की नव नियुक्तियां

सार्वदेशिक आर्य वीर दल समिति की वार्षिक बैठक २२ जून को गुरुकुल कुरुक्षेत्र में प्रधान संचालक डा० देवव्रत आचार्य जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुई। गत कार्यवाही की पुष्टि के पश्चात् प्रान्तों के संचालकों ने अपने प्रान्तों की प्रगति रिपोर्ट पढ़कर सुनाई। इस वर्ष ग्रीष्मकालीन अवकाशों में ३० शिविरों का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय शिविर ११-२५ जून तक गुरुकुल कुरुक्षेत्र में तथा कार्यकर्ता शिविर उद्‌गीथ साधना स्थली (हिमाचल) में सम्पन्न हुआ। प्रधान संचालक द्वारा वर्ष १९९५-९६ के लिए निम्न अधिकारियों की नियुक्तियां की गई—

वरिष्ठ उपप्रधान संचालक—श्री हरिदेव आचार्य, गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली

उपप्रधान संचालक—ब्र० आर्य नरेश जी, उद्‌गीथ साधना स्थली (हिमाचल)

मन्त्री—ब्र० राजसिंह आर्य, दिल्ली, कार्यालय मन्त्री—हरिसिंह आर्य, प्रचार मन्त्री—ब्र० नन्दकिशोर, कोषाध्यक्ष—सतीश आर्य, सागरपुर (दिल्ली), प्रस्तोता—समरसिंह आर्य, पलड़ी (मेरठ), प्रधान व्यायाम शिक्षक—ब्र० ओमप्रकाश आर्य (फरीदाबाद), बौद्धिकाध्यक्ष (आचार्य) प्रो० राजेन्द्रकुमार (कुरुक्षेत्र), सेवा समिति अध्यक्ष—विनय आर्य (दिल्ली)।

अन्तरंग सदस्य—

१. विजयपाल आचार्य गुरुकुल झज्जर
२. पेशूराम आर्य, खण्डवा (म० प्र०)
३. गोविन्द राव गुलबर्गा (कर्नाटक)
४. प्रो. अरुण मदनसुरे—(लातूर)
५. ब्र० कपिल देव, रायगढ़ (मध्यप्रदेश)

प्रान्तीय संचालक—

हरयाणा—उमेद शर्मा, कैथल, राजस्थान—सत्यवीर आर्य अलवर, उत्तर प्रदेश—धर्मपाल आचार्य गुरुकुल पूठ (गाजियाबाद), दिल्ली—पं० ज्ञानप्रकाश (कार्यकारी संचालक), मध्यप्रदेश—बाबूलाल आनन्द (विदिशा), महाराष्ट्र—एक नाथ नानेकर (पुणे), उड़ीसा—ब्र० कुन्जदेव गुरुकुल आमसेना, गुजरात—भीखूभाई गुरुकुल सोनगढ़, आन्ध्रप्रदेश—सूबेदार व्यंकटेश, हैदराबाद—मा० कृष्णचन्द्र, सुन्दरनगर, बिहार—पन्नालाल आर्य आरा, कर्नाटक—शशिकुमार (मैसूर), आसाम—डा० नारायणदास, चण्डीगढ़—हितेश आर्य, बम्बई—कैप्टन देवरत्न आर्य, नेपाल—पुण्यप्रसाद आर्य गुरुकुल विराटनगर, अमेरिका—डा० सतीशकुमार, न्यूयार्क।

संरक्षक गण—

१. श्री महेन्द्रकुमार शास्त्री, आर्य अनाथालय, पटौदी हाउस, दरियागंज दिल्ली, २. स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, ३. श्री सूर्यदेव जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, ४ श्री किशनचन्द आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र, ५ श्री छोटूसिंह एडवोकेट, अलवर।

नियुक्तियों के पश्चात् प्रधान संचालक द्वारा सभी अधिकारियों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलवाई गई। सभी अधिकारियों ने आर्य वीर दल की प्रगति हेतु अनुशासित रहकर कार्य करने का संकल्प लिया। शान्ति पाठ के पश्चात् सभा समाप्त हुई।

देवव्रत आचार्य
प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल

शराब बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इनसे दूर रहें।

तबला-सा मढ़ रही है

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

अज्ञानता की झण्डी चहुं ओर गढ़ रही है।
विष बेल फूट पापिन छत ऊपर चढ़ रही है॥
सच है कि अहिंसा परमो धर्म बताया।
मरघट से आज बेटी मछली पकड़ रही है॥१॥

बैठे हवन में उनके ववडू के आवे झोंके।
मालूम जब पड़ा तो कहीं प्याज सड़ रही है॥२॥
बाहर के खत्म करते फिरते लड़ाई दंगा।
उनके ही घर देखा श्रीमती जी अकड़ रही है॥३॥

श्री कृष्ण के चरित्र का देते फिरें उदाहरण।
उनकी ही भावी संतति दिन व दिन बिगड़ रही है॥४॥
पतिव्रत धर्म का प्रवचन देवी जी देके आई।
घर आके दंगमदंगा तबला सा मढ़ रही है॥५॥

नामकरण संस्कार सम्पन्न

दिनांक ७-७-९५ को ग्राम नलवा (हिसार) में श्री मांगेराम जी नाई के घर पर बच्चे का नामकरणसंस्कार सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी द्वारा किया गया। बड़ी श्रद्धा से हवन किया गया। बच्चे का नाम पवनकुमार रखा गया। श्री क्रान्तिकारी जी ने संस्कारों का महत्त्व व हवन के लाभ पर प्रकाश डाला और बच्चे को आशीर्वाद दिया। श्रीमती रामावती आर्या ने भी बच्चे को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर श्री मांगेराम जी ने ५१ रु० आर्यसमाज नलवा तथा ५१ रु० आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा को दान दिया।

मन्त्री आर्यसमाज नलवा

सीताराम केसरी हिन्दू समाज का कलंक

—देवीदास आर्य

कानपुर, केन्द्रीय समाज कल्याण मन्त्री सीताराम केसरी ने अपने निजी स्वार्थ के वशीभूत होकर शोषित समाज को जो हिन्दू धर्म छोड़ने का मशवरा दिया है, उससे ऐसा प्रतीत होता है कि उनके दिमाग का संतुलन बिगड़ गया है, ऐसा व्यक्ति हिन्दू समाज के लिए कलंक है। उनका हर स्थान पर बहिष्कार होना चाहिये।

उपरोक्त विचार आर्यसमाज गोविन्द नगर तथा केन्द्रीय समाज के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने आर्यसमाज द्वारा गोविन्द नगर में आयोजित सभा की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

श्री आर्य ने आगे कहा कि सीताराम केसरी कांग्रेस के नेता हैं और स्वतन्त्रता के बाद आज तक देश में लगभग कांग्रेस का ही शासन रहा है ऐसी स्थिति में यदि शोषितों का शोषण सरकार समाप्त नहीं कर पायी तो इसके लिये उत्तरदायी उनकी ही पार्टी है, हिन्दू धर्म नहीं।

सभा मे प्रस्ताव पारित कर राष्ट्रपति एवं प्रधानमन्त्री से मांग की गयी कि सीताराम केसरी को मन्त्री पद से तुरन्त बर्खास्त कर दें उनका इस पद पर रहना हिन्दू समाज, कांग्रेस पार्टी एवं देश के लिए घातक है।

सभा में सर्वश्री देवीदास आर्य के अतिरिक्त डा० जातिभूषण, स्वामी प्रज्ञानन्द सरस्वती, पं० जगन्नाथ शास्त्री, श्रीमती राज सूरी, कैलाश मोंगा, तारा मल्होत्रा आदि ने विचार व्यक्त किये।

—बालगोविन्द आर्य, मन्त्री
आर्यसमाज गोविन्द नगर, कानपुर

मातनहेल में सदाचार एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

रा० व० मा० विद्यालय मातनहेल जिला रोहतक में आर्य युवको ने तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं ने दिनांक २८-६-९५ से ४-७-९५ तक उक्त शिविर का आयोजन किया। शिविर में १७० बच्चों को आसन, प्राणायाम दण्ड बैठक, लाठी तथा जूडो-कराटे की शिक्षा दी गई। प्रातः-कालीन यज्ञ में उपदेशकों एवं विद्वानों ने युवकों को जीवन निर्माण की शिक्षा दी तथा शिविर के समापन समारोह पर दिनांक ४-७-९५ को यज्ञोपवीत दिए गए। विद्यालय के प्राचार्य श्री राजेन्द्रसिंह धनखड़ ने छात्रों को पुरस्कार वितरित कर अध्यक्षीय भाषण दिया।

—शिविराध्यक्ष

आर्यसमाज बोगोपुर में समाज सुधार का कार्य

आर्यसमाज बोगोपुर की नई कार्यकारिणी ने कार्यभार सम्भालने के उपरांत दिनांक २-७-९५ को आम बैठक की। आम बैठक में अन्य विषयों के अतिरिक्त सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध प्रस्ताव पास किए जो कि निम्नलिखित हैं—

१ बैण्ड पर अश्लील गीत पूर्णतया बन्द होना चाहिए।
२ बैण्ड के आगे नृत्य करना पूर्णतया बन्द होना चाहिए।
३ स्वांग गांव में बिल्कुल नहीं होना चाहिए।
४ सार्वजनिक स्थानों पर वीडियो दिखाना कानूनी तौर पर बन्द होना चाहिए।
५ शराब पीकर गलियों में घूमना व अपशब्दों का प्रयोग करना बिल्कुल बन्द हो।

विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि आर्यसमाज मन्दिर में दैनिक यज्ञ सत्संग के अतिरिक्त पारिवारिक यज्ञ अभियान छेड़ रखा है।

वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—प्रधान श्री बृजलाल नम्बरदार, उपप्रधान श्री फूलसिंह जी, मन्त्री श्री मनोहरलाल आर्य, उपमन्त्री श्री सत्यवीरसिंह अध्यापक, उपमन्त्री महाशय सूरजभान आर्य, कोषाध्यक्ष कैप्टन श्री उमरावसिंह, पुस्तकाध्यक्ष महाशय गोविन्दराम जी इत्यादि।

—मनोहरलाल आर्य मन्त्री, आर्यसमाज बोगोपुर

आर्य युवक परिषद् पदयात्रा शुरू करेगी

पलवल—हरयाणा आर्य युवक परिषद् की राज्य कार्यकारिणी ने शराब, राजनीतिक भ्रष्टाचार, बहुराष्ट्रीय कम्पनियां तथा राजनीति के अपराधीकरण के खिलाफ जन-जागरण करने के लिए हरयाणा में पदयात्रा करने का निर्णय लिया है। इस पदयात्रा के द्वारा ग्रामीण जनता को उनके राजनीतिक व आर्थिक अधिकारों की जानकारी दी जायेगी।

परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष शिवराम आर्य ने बताया कि हरयाणा में राजनीति का अपराधीकरण व व्यवसायीकरण हो जाने के कारण बहू-बेटियों का सम्मान सुरक्षित नहीं रहा है, न्याय नाम की कोई चीज नहीं रह गयी है, गरीब की दर्दभरी आवाज को आज कोई सुनने वाला नहीं है। परिषद् की पदयात्रा हरयाणावासियों को उक्त समस्याओं के निदान व कारणों की जानकारी देगी।

अनवर से आशीष बना, हमीरपुर के मुस्लिम युवक ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया

कानपुर : आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर में समाज व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने हमीरपुर निवासी एक ३२ वर्षीय एम. ए. तक शिक्षित मुस्लिम युवक श्री अनवर वहीद को उसकी इच्छानुसार वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) की दीक्षा दी। यह युवक जिला विकास कार्यालय हमीरपुर में लिपिक है। उसका नाम आशीषकुमार रखा गया है। श्री देवीदास आर्य ने शुद्धि संस्कार के पश्चात् एक समारोह में इस युवक आशीषकुमार का विवाह वैदिक रीति से कराया। आशीषकुमार ने हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उनको श्री देवीदास आर्य ने सत्यार्थप्रकाश भेंट किया।

—बालगोविन्द आर्य, मन्त्री

अंग्रेजी की बोलती ऐसे बन्द हुई

प्रसिद्ध इतिहासकार डा. काशीप्रसाद जायसवाल हिन्दी को राष्ट्र भाषा मानने में गर्व महसूस करते थे। जहां तक हो सके वह हिंदी में ही काम करते थे। एक प्रोफेसर उनसे मिलने आए और विद्वत्ता दिखाने के लिए अंग्रेजी में बोलते रहे। जायसवाल जी ने हिंदी में अपनी बात-चीत जारी रखी। फिर भी वह विद्वान् अंग्रेजी में बोलते रहे।

जायसवाल जी को बुरा लगा और वह फ्रेंच भाषा में बोलने लगे। प्रोफेसर हक्का-बक्का रह गए, तो जायसवाल जी ने कहा, 'महोदय, जब विदेशी भाषा में ही बात करनी है तो हम क्यों न फ्रेंच भाषा में बात करें। यह भाषा अंग्रेजी से मधुर भी है और सुसंस्कृत भी।'

—जगन्नाथ
संयोजक, राजभाषा कार्य. केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद्
एक्स. वाई. ६८, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली
(दैनिक नवभारत टाइम्स से साभार)

यज्ञ कराओ, शराब हटाओ, राष्ट्र बचाओ।

(पृष्ठ ४ का शेष)

पर्याप्त समझकर बस करता हूं। सत्य सत्य है। इतिहास को कौन छुपा सकता है? किसी को बुरा लगे या भला फिर मैंने तो भारतीय जी को बुरी लगनेवाली बातें भाई परमानन्द जी व महात्मा नारायण स्वामी जी के शब्दों में ही दी हैं।

भारतीय जी ने प्रो० धर्मवीर लिखित भाई जी के जीवन-चरित पर ऐसी आपत्ति क्यों न की? उन्हें उस पुस्तक के प्रकाशकों को लताड़ना चाहिए था।

एक और चिन्ता प्रकट की है भारतीय जी ने। मेरी पुस्तक में 'ठग्गी' शब्द का प्रयोग भी है। ठगी ही होना चाहिए था। ठगी का प्रयोग नहीं किया यह उनकी चिन्ता है। मेरा निवेदन है कि हरयाणा, राजस्थान, उ० प्र०, हिमाचल, मध्यप्रदेश, बिहार जैसे हिन्दी भाषी प्रदेशों में एक ही शब्द भिन्न-भिन्न प्रकार से लिखा व बोला जाता है। एक विद्वान् भाषा विशेषज्ञ ने पंजाबी को पश्चिमी हिन्दी लिखा है। हरयाणा पंजाब व राजस्थान के कई भागों में कई अक्षरों पर बल दे देते हैं। मैंने ठग्गी लिखकर कोई अनर्थ नहीं किया। कालजयी प्रामाणिक ग्रन्थों व महर्षि दयानन्द तथा मुन्शी प्रेमचन्द जी को कोटि के साहित्यकारों से परिचित सज्जन ये सब कुछ जानते ही हैं।

हमारे माननीय भारतीय जी की साहित्यिक कृतियों में शृंगार, सुफल, अनादी, अशोको, कौड़ा, मूरख, आवत जात, तोरा, बिचारी (विचार के लिए) कारागारी, करुणामय, मुकद्दमा और मुकदमा दोनों प्रयोग भारतीय जी के हैं), क्षत्रिपन, पदारथ इत्यादि शब्द पढ़कर हम तो कभी चिन्तित नहीं हुए। न ही किसी अन्य ने इन पर चिन्ता प्रकट की है।

चिन्ता का विषय यही है कि भारतीय जी स्वयं को सर्वज्ञ समझ बैठे हैं। वह मलवई बुगा को मालवी बंगला लिख सकते हैं। वह मुन्शी इन्द्रमणि जी के निधन के २८ वर्ष पश्चात् तक भी उनसे ग्रन्थ लिखवा सकते हैं। वह 'हे जगत् स्वामी प्रभु जी' को स्वा. धर्मानन्द की रचना बता सकते हैं। हम अपनी भूल पर खेद प्रकट करते हुए सकुचाते नहीं। भारतीय जी ने अपने ऋषिजीवन की अनेक भूलों पर स्वामी सत्यप्रकाश जी के कहने पर भी शुद्धि-अशुद्धि पत्र न लगाया। मेरी वैदिक ज्ञान-धारा में मुद्रण दोष से स्वामी वेदानन्द जी की बजाय ऋषिदयानन्द छप गया है। मैंने इस पर कई बार खेद प्रकट किया है।

हांसी में संस्कार समारोह

प्राचीन ऋषि मुनियों की परम्परा के अनुसार प्रथमबार आर्य वीर दल हांसी द्वारा आर्यसमाज जी० टी० रोड, वकील कालोनी, हांसी में श्रावणी उपाकर्म एवं उपनयन संस्कार समारोह दिनांक १०-८-८५ दिन शनिवार को प्रातः साढ़े सात बजे से दस बजे तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। जिसमें सैकड़ों, युवक, युवतियां यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण करेंगे।

राखी एक अनोखा कंगन

हर वर्षों की भांति अब भी रक्षा बन्धन आया है।
भाई-बहन के अमर प्रेम की याद दिलाने आया है॥
हर बहन भइया को राखी बांधे पुलकित हो करके,
सजी कलाई देख के बहना हंसती है खुशियां भरके।
हर धागे के तार-तार में ऐसा रंग समाया है॥
इसी तरह भइया खुश होकर फूला नहीं समाता है।
बहन की रक्षा वास्ते वचनबद्ध हो जाता है।
करूं हमेशा बहन की रक्षा भइया ने फरमाया है॥
राखी एक अनोखा कंगन कैसा सुन्दर नाता है,
हर एक बहन और भइया के मन को ये हर्षाता है।
"रामसुफल" के मन को भी ये आज बहुत ही भाया॥

रामसुफल शास्त्री 'पत्रकार' प्रधान आर्य वीर दल हांसी

सर्वहितकारी प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक फोन। (७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन। ४०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ पंजि० नं० P/RTK-३१ टेलीफोन १, ६६, ०८, ११,०६६

ओ३म्

सर्वहितकारी

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष २२ अंक ३६ १४ अगस्त, १९९५ (वार्षिक शुल्क ५०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

योगिराज श्रीकृष्ण एवं स्वतन्त्रता दिवस अंक

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर—

"योगिराज हे..."

—राधेश्याम आर्य एडवोकेट

ओज-तेज-साहस से अपने
तुमने मानव वृत्ति जगाई।
एक सूत्र में बांध राष्ट्र को—
जन-जन नूतन ज्योति जगाई।

कंस तथा शिशुपाल-जरासंध—
से असुरों को किया विनष्ट।
सारी धरती की दानवता
किया तुम्हीं ने निर्भय नष्ट।

जन सेवा में अपना जीवन—
बाल्यकाल से किया समर्पित।
भारत माता के अर्चन में—
तन-मन-धन कर डाला अर्पित।

वीर व्रती तुम धीर महा थे
योगी थे युग के अनुपम।
पूर्ण पुरुष तुम, युग मानव थे—
प्राप्त किया था लक्ष्य चरम।

सत्य धर्म के रक्षक थे तुम,
थे सुख सन्तों के दाता।
शक्ति-शौर्य थे बने तुम्हीं ही—
आर्य राष्ट्र के भाग्यविधाता।

मोहाक्रान्त पार्थ को तुमने—
दिया विमल गीता-सन्देश।
युगों-युगों तक मार्ग दिखाता—
सदा रहेगा जो उपदेश।

राष्ट्रवाद की प्रखर भावना—
किया तुम्हीं ने था उद्वेलित।
युवाशक्ति को किया सुजागृत—
मानवता के मंगल हित।

योगिराज हे कृष्ण! बने तुम—
भारत शुभचिन्तक, भगवान्।
अपराजेय बने तुम युग के—
वैकल्पिक हे! जयी महान्॥

स्वतन्त्रता दिवस

—'नाज़' सोनीपत

पन्द्रह अगस्त आगया फिर आन बान से।
अब भी गुजर रहे हैं लोग इम्तिहान से॥

जा-जा पे भ्रष्टाचार के जमघट लगे हैं आज।
बदमस्त जो बदमिजाज भी बिफरे हुए हैं आज॥

हर ओर हाहाकार है, डर है, कसौटी है।
भारत पे गालिब आगया आतंक [illegible]

रहजनी और लूट-पाट की कमी नहीं।
कि ईर्ष्या-द्वेष की अग्नी थमी नहीं॥

अबला की आहों का कोई नहीं शुमार।
कसबाइयों के दौर में सब हैं जलीलो ख्वार॥

होता है कत्ले आम, कोई पूछता नहीं।
कातिल कहां छिपे हैं? किसी को पता नहीं॥

फिरते हैं सरफिरे बहुत रहबर के वेश में।
करते हैं खूब रहजनी खुद अपने देश में॥

महंगाई आसमान को छूने लगी हुजूर।
चेहरों पे निर्धनों के अब आए कहां से नूर॥

मजलूम औ बेनवा के रक्षक नहीं रहे।
मासूम औ बे सदा के रक्षक नहीं रहे॥

मजदूर औ कारीगर भी परेशाने हाल हैं।
फनकार औ दानिशमन्द सभी पुर मलाल हैं॥

दिलशाद लोग क्यों के क्यों नाशाद हैं अभी।
आजाद हैं, आजाद हैं, आजाद हैं सभी॥

कुछ तो बताएं? अपने वतन के ये हुक्मरां।
क्या? इसलिए कुर्बां हुए ये देश पर जवां?॥

पन्द्रह अगस्त आज मनाऊं तो किस तरह।
जाऊं तो अपनी जां से मैं जाऊं किस तरह॥

आजादी-ए-वतन को बचाने की सोचिए।
बिगड़ी हुई को 'नाज़' बनाने की सोचिए॥

हरयाणा में सभा के शराबबन्दी आन्दोलन ने राजनेताओं को शराबबन्दी भाषा बोलने पर विवश किया

किसी समय हरयाणा में यह कहावत प्रसिद्ध थी कि देशों में देश हरयाणा, जहां दूध दही का खाना। आज भ्रष्ट एवं पदलोलुप तथा लालची राजनेताओं के कारण दूध दही की जगह शराब की नदियां बह रही हैं। कटु सत्य यह भी है, चाहे पीने के लिए गांव में पानी न मिले, चाहे खेतों में लाने के लिए नहर की टेलों पर पानी न मिले। लगभग शराब गांव व हर घर में मिलेगी। यह सब योजनाबद्ध सरकारों की देन है। सरकार चाहे किसी दल या पार्टी की हो, एक साजिश के तहत किसान-मजदूर को शराब पिलाकर बर्बाद करने पर तुली हुई है। सरकार जानती है अगर किसान-मजदूर शराब नहीं पीएगा तो अपने हकों व अधिकारों की लड़ाई लड़ेगा। तुम्हारी कुर्सी पांच वर्ष तक टिक नहीं पाएगी।

जब १९६६ में हरयाणा प्रान्त अलग बना उस समय शराब की कुल आय १२ करोड़ की थी। अब ६०० करोड़ की आय शराब से सरकार को होरही है। हरयाणा में कोई भी मुख्यमन्त्री किसी पार्टी या दल का आया। चाहे अन्य विकास कार्यों की नीति उनकी अलग-अलग रही हो। लेकिन शराब बढ़ावा नीति सबकी एक रही। चौ० बन्सीलाल ने अपने समय में अपने भतीजे श्री श्रद्धानन्द एवं अन्य रिश्तेदारों के माध्यम से खूब शराब को बढ़ावा दिया। चौ० देवीलाल ने भी अपने समय में कोई कसर नहीं छोड़ी, ठेकों के साथ अहाते खोलना, पंचायतों व नगरपालिकाओं को एक-एक तथा दो-दो रुपये प्रति बोतल का लालच देकर सरपंचों को ठेकेदारों का दलाल बना दिया। क्या पंचायतों का यही काम रह गया कि कौन सरपंच ज्यादा शराब निकलवाए? वर्तमान मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल ने तो शराब बढ़ावा नीति में सबका रिकार्ड तोड़ दिया। हिसार के नजदीक सातरोड गांव में बाई पास पर अपने दामाद अनूप बिश्नोई को शराब की फैक्ट्री लगाकर ६६ प्रतिशत शराब की सप्लाई इस फैक्ट्री से करवा रहा है। गत वर्ष जब रूस के दौरे पर गया तो रूस की शराब वोदका का लाईसन्स लाया। पंचायतों को डेढ़ रुपया, नगरपालिकाओं को ढाई रुपया प्रति बोतल का लालच दे दिया। सरेआम पुलिस के संरक्षण में भजनलाल सरकार ठेकेदारों से गांव-गांव में अवैध शराब की बिक्री का धन्धा करवा रही है। बीच में चाहे बनारसीदास गुप्त, चौ० ओमप्रकाश चौटाला तथा चौ० हुकमसिंह जी मुख्यमन्त्री आया सभी का यही हाल रहा।

शराब से होनेवाले नुकसान, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, कत्ल, एक्सीडेंन्ट, बीमारी, आपस की लड़ाई झगड़े, महिलाओं पर अत्याचार, शराब पीकर सामूहिक बलात्कार आदि पर किसी सरकार ने ध्यान नहीं दिया। शराब की आमदनी की बात कहकर सरकार चलाने का बहाना बनाकर अपना व अपने रिश्तेदारों का घर भरते रहे।

हां आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा ने शराब से होनेवाले भयंकर नुकसान को ध्यान में रखकर सन् १९८४ से हरयाणा प्रान्त में शराबबन्दी आन्दोलन चलाए हुए है। सर्वप्रथम इन पंक्तियों के लेखक ने सन् १९८३ में गांव कंवारी व सातबास में शराबबन्दी के लिए ६ महीने तक अनशन किया। बाद में १९८४ में १४ अप्रैल को ग्राम बालावास (हिसार) में ६ महीने तक गांव के लोगों के सहयोग से धरना देकर ठेका शराब का बन्द करवाया। सभा का भी विशेष सहयोग रहा। उसके बाद सभा द्वारा शराबबन्दी आन्दोलन युद्ध स्तर पर चल पड़ा। ठेकों की नीलामी पर प्रदर्शन, ठेकों पर धरने, जनजागरण हेतु गांव-गांव में पदयात्राएं, शराबबन्दी सम्मेलनों का कार्य, शराबबन्दी प्रचार, हवन करके शराबियों को शराब छुड़वाना, अश्वमेध यज्ञ करना, महिला सम्मेलन करना, व्यक्तिगत जनसम्पर्क, ग्राम पंचायतों से ठेके बन्द करवाने हेतु प्रस्ताव पास करवाना, सभा द्वारा पंचायत, विधानसभा, लोकसभा चुनाव के अवसरों पर लिखितरूप में इश्तिहार छपवाकर लोगों से शराबियों को वोट न देने की अपील करना, शराबबन्दी बारे गांव में खापों में तपों में पंचायत बुलाकर शराबबन्दी करवाना, गांव-गांव में शराबबन्दी समितियों का गठन करना, गांव-गांव में बच्चों से जुलूस निकलवाकर शराबबन्दी नारे लगवाना। गांव में नवयुवकों द्वारा ठेकेदार की जीप रोककर अवैध शराब की बिक्री को रोकना, ठेकेदार के जुर्माना करना आदि कार्य किया जारहा है। कई बार प्रदर्शन के समय नरनारियों ने पुलिस की लाठियां भी खाई तथा गिरफ्तारी भी दी है। समय-समय पर किसान यूनियन, युवक संगठन, समाजसुधार मोर्चा, आर्य वीर दल, हरयाणा आर्ययुवक परिषद् तथा अन्य आर्यसमाज के विद्वान् साधु-महात्माओं का भी सहयोग रहा।

लेकिन हरयाणा में शराबबन्दी का श्रेय आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा को ही है। क्योंकि निस्वार्थभाव से सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी, उपप्रधान स्वामी वेदानन्द जी, पूर्वप्रधान प्रो० शेरसिंह जी, चौ० विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त एवं संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा, चौ० सूबेसिंह जी पूर्व एस० डी० एम० तथा इन पंक्तियों के लेखक के अतिरिक्त अनेक सभा उपदेशक एवं भजनोपदेशक इस पुण्य के कार्य में विशेषरूप से जुटे हुये हैं। सन् १९९३ में स्वयं मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल के हल्के के बालसमन्द गांव में १७ लाख के ठेके को साढ़े ग्यारह महीने तक ऐतिहासिक धरना देकर ठेका बन्द करवाया। सरकार व प्रशासन के घुटने टिकवाए। अब तक सभा द्वारा धरने देकर ७० ठेके बन्द करवाए गए हैं। सरकार ने दूसरे गांव में ठेके खोलकर अपना कोटा पूरा किया यह अलग बात है। फिर भी लोगों में काफी जागृति आई है। विशेषकर महिलाओं में, क्योंकि सबसे ज्यादा दुःख शराबियों से महिलाओं को ही उठाना पड़ता है। सारे हरयाणे में ११ वर्ष में जाकर एक लहर सी बनी है। शराबबन्दी बारे।

परिणामस्वरूप अब विधानसभा व लोकसभा के चुनाव नजदीक आने पर हवा का रुख देखकर उपरोक्त शराब को बढ़ावा देनेवाले एवं समर्थक वर्तमान एवं पूर्व मुख्यमन्त्री हरयाणा में आर्यसमाज द्वारा किए गए शराबबन्दी प्रयास व आन्दोलन तथा जागृति का श्रेय लेने के लिए शराबबन्दी की भाषा बोलने पर मजबूर हुए हैं। अब सभाओं व मंचों पर मुंह फाड़-फाड़कर घोषणा कर रहे हैं कि अगर मेरी सरकार सत्ता में आई तो शराबबन्दी करूंगा। आपस में घोषणाओं की होड़ लगी हुई है। चौ० बन्सीलाल कहता है मुझे सत्ता में लाओ मैं १५ सैकिण्ड में शराब बन्द कर दूंगा। चौ० ओमप्रकाश चौटाला कहता है मैं शराबी को टिकट नहीं दूंगा। शराबबन्दी आन्दोलन का विरोध करनेवाले तथा विरोध प्रदर्शन करनेवाले प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज करवानेवाला भ्रष्ट मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल भी कहता है मैं पुनः सत्ता में आया तो देहात में शराब के ठेके नहीं खोलूंगा। विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि शायद २ अक्तूबर १९९५ को मुख्यमन्त्री हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी की घोषणा भी कर दे। क्योंकि अब जनता शराबबन्दी बारे खूब जागृत है। चुनाव में न तो शराब का समर्थन करनेवाले प्रतिनिधि को गांव में घुसने देगी, न वोट देगी। अब मजबूरी में शराबबन्दी लागू करनी पड़ेगी। देर आए दुरुस्त आए। सभा का शराबबन्दी आन्दोलन अवश्यमेव नया गुल खिलाएगा। जब तक हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी नहीं होगी संघर्ष जारी रहेगा। शराब सब पापों की जननी है। शराब से सर्वनाश होरहा है। शराब पीनेवाले वास्तव में अपने बच्चों का खून पी रहे हैं। मेरी शराबी लोगों से पुरजोर अपील है कि "शराब से कर लो किनारा, वरना जीवन है अंधियारा।"

—अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
सभा उपदेशक एवं संयोजक शराबबन्दी समिति, जिला हिसार

यज्ञ कराओ, शराब हटाओ, राष्ट्र बचाओ।

सम्पादकीय—

सच्चिदानन्द की सच्चाई

सार्वदेशिक साप्ताहिक के अगस्त १९९५ के पृष्ठ ३ और ४ पर सम्पादकीय "श्वेतपत्र की सच्चाई क्या है ? मैंने पढ़ा। सार्वदेशिक सभा का प्रतिनिधि होने के कारण मैं भी हैदराबाद अधिवेशन का प्रत्यक्ष द्रष्टा और श्रोता हूं। श्री स्वामी सुमेधानन्द जी द्वारा प्रकाशित श्वेतपत्र भी आद्योपान्त पढ़ा है। उक्त सम्पादकीय लेख के ऊपर नीचे लेखक का नाम तो नहीं छापा गया है किन्तु पत्र के ऊपर सम्पादक का नाम डा० सच्चिदानन्द शास्त्री छपा होने से यह सच्चिदानन्द जी की ही बौखलाहट समझ में आती है। इस पत्र पर पृष्ठ संख्या २, ३, १०, ५, ६, ७, ८, ९, ४, ११ छपी है। इस प्रकार सम्पादकीय पृष्ठ ३ का शेष भाग पृष्ठ ४ ढूंढना सरल नहीं है। पृष्ठ ३ के पीछे १० छपा है और ९ के पीछे ४ छापा गया है। यही नहीं, नाम के आदि और अन्त में डा० और शास्त्री का प्रयोग करनेवाले सच्चिदानन्द जी का संस्कृतभाषा और व्याकरण शास्त्र का ज्ञान भी अधूरा ही प्रतीत होता है। आपके सम्पादकीय के अन्त में "अनाधिकार चेष्टा" शब्दप्रयोग इसका प्रमाण है।

सम्पादक जी श्वेत पत्र में लिखी गई अपनी काली करतूतों का कोई उत्तर नहीं दे पाये हैं। पाठक यदि श्वेतपत्र को पढ़कर इस सम्पादकीय लेख को पढ़ेंगे तो स्वयं अनुभव करेंगे कि सच्चिदानन्द जी के पास उसका कोई युक्तिसंगत सच्चा उत्तर नहीं है। अतएव स्वामी ओमानन्द सरस्वती और स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती के चरित्र—हनन की कुचेष्टा की है। सभी जानते हैं मध्याह्न के सूर्य की ओर मुख करके थूकनेवाले का थूक थूकनेवाले पर ही गिरता है।

छल कपट और भ्रष्ट तरीकों से झूठा स्वतन्त्रता सेनानी बनकर सरकारी पेंशन भोगी सच्चिदानन्द जी को पीलिये के रोगी की भांति सज्जन साधु संन्यासी भी अपने जैसे ही दिखाई दे रहे हैं। कहावत भी है जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन।

श्री सच्चिदानन्द जी स्वामी सुमेधानन्द जी के लिए लिखते हैं कि "मात्र २०-२२ प्रतिनिधियों के बल पर उछल-कूद मचा रहा है।"

मैं सच्चिदानन्द जी से आशा करूंगा कि वे अगले अंक में विवरण देंगे कि उन्होंने नीचे लिखी प्रतिनिधि सभाओं के कितने-कितने प्रतिनिधि अपने हस्ताक्षरों सहित स्वीकार किये थे और उनमें से कितने उनके साथ थे ?

१. हरयाणा, २. राजस्थान, ३. उड़ीसा, ४ हिमाचल, ५ मध्य भारत, ६. मध्यप्रदेश, ७ महाराष्ट्र, ८. बम्बई, ९. दिल्ली और १०. उत्तर प्रदेश।

तमिलनाडु के जो प्रतिनिधि आपने स्वीकार किए थे उनकी पोल तो सर्वहितकारी पत्र में छपे आर्यसमाज (सेंट्रल) मद्रास के मन्त्री जी के पत्र ने ही अनायास खोलकर रख दी है। ऐसी ही स्थिति बिहार, पंजाब, उत्तरप्रदेश और दिल्ली आदि की प्रतिनिधि सभाओं के प्रतिनिधियों की भी है। सार्वदेशिक सभा की सम्पत्ति, कार्यालय और सार्वदेशिक पत्र आज आप के कब्जे में है, इनका दुरुपयोग न करें। आर्यजनता सच्चिदानन्द एण्ड कम्पनी के विगत कार्यों से अनभिज्ञ नहीं है। भूली भी नहीं है।

सच्चिदानन्द जी को ब्रह्मचारी, त्यागी, तपस्वी, विद्वान्, संन्यासियों से एलर्जी हो गई प्रतीत होती है। वयोवृद्ध विद्वान् संन्यासी स्वामी विद्यानन्द सरस्वती (पूर्व नाम प्रिंसिपल लक्ष्मीदत्त दीक्षित आर्य कालेज पानीपत) आप की नजरों में संन्यासी तो क्या साधारण आर्य भी नहीं हैं।

भारत में ही नहीं विदेशों में भी जाने-माने विद्वान्, इतिहास गवेषक, त्यागी, तपस्वी, संन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती (पूर्व नाम ब्रह्मचारी भगवान्देव आचार्य गुरुकुल झज्जर) को भी आप ब्रह्मचारी और संन्यासी नहीं मानते।

इसी प्रकार कालेज से ग्रेजुएशन करके ब्रह्मचर्य से सीधा संन्यास लेनेवाला युवा विद्वान् मधुरवक्ता संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती भी आप के भ्रष्टाचरण का विरोधी होने के कारण आपकी आंखों का कुचक बन गया है।

महामना चाणक्य ने ठीक ही लिखा है—

मूर्खाणां पण्डिता द्वेष्या कुलटानां कुलाङ्गनाः।

मूर्ख पण्डितों से द्वेष करते हैं और कुलटा कुलाङ्गनाओं से द्वेष करती हैं। इसी प्रकार छल छद्म और भ्रष्टाचरण के आदी सच्चिदानन्द जी को भी त्यागी, तपस्वी, विद्वान्, ब्रह्मचारी, संन्यासी समाज में नहीं सुहाते।

पञ्चतन्त्र में विष्णु शर्मा ने लिखा है—

न वेत्ति यो यस्य गुणप्रकर्षं
स तस्य निन्दां सततं करोति।
यथा किरातो करिकुम्भजाता:
परित्यज्य मुक्ता बिभर्ति गुञ्जा.॥

जो व्यक्ति ब्रह्मचारी साधु संन्यासियों के गुणों से अनभिज्ञ है वह सदा उनकी निन्दा ही करता है जैसे जंगली भील हाथी के मस्तक से उत्पन्न मोतियों की माला छोड़कर लाल-लाल दीखनेवाली गुञ्जा (चिरमठियों) की माला बनाकर धारण करता है। कहावत भी है बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।

स्वामी सुमेधानन्द जी के श्वेत पत्र पर मुद्रक प्रेस का नाम न होने मात्र से उसकी शुरुआत ही एक गैर कानूनी और अपराधिक कार्य से होती है। ऐसा मानना भी सच्चिदानन्द जी की भूल है। इससे पूर्व आप स्वयं लिखते हैं कि "इस कथित श्वेत पत्र की शुरुआत महर्षि दयानन्द सरस्वती की पवित्र आत्मा के उक्त कथन से होती है जिसमें कहा गया है कि "जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सदा किया करे।"

आपके दोनों कथनों में पूर्वापर विरोध होने से आप न्याय शास्त्रानुसार वदतोव्याघात दोष के दोषी हैं।

आपको बता देना चाहता हूं कि किसी भी ट्रैक्ट, पुस्तक आदि की शुरुआत मुद्रक प्रेस के नाम से नहीं होती। प्रेस का नाम प्रायः अन्त में छापने की परम्परा है।

यह ठीक है कि मुद्रक प्रेस का नाम ही नहीं प्रेस के मालिक मुद्रक का नाम भी छापना चाहिये। श्वेत पत्र पर स्वामी सुमेधानन्द जी ने अपना पूरा नाम पता फोन आदि छपवाया है। उनका अभिप्राय अपराध चोरी, भय आदि का होता तो बिना ही नाम के छपवाते। मुद्रक प्रेस का नाम न छापना प्रेस मालिक अथवा मैनेजर की भूल है। स्वामी जी ने प्रेस में लेख दे दिया। उस पर प्रेस का नाम देना मुद्रक प्रेस मालिक का उत्तरदायित्व है, स्वामी जी का नहीं। आपने सार्वदेशिक पत्र में इसी पर अनेक पंक्तियां लिखकर अपने "प्रेस एक्ट" सम्बन्धी ज्ञान की न्यूनता का ही प्रदर्शन किया है।

अन्त में मैं सच्चिदानन्द जी से निवेदन करूंगा कि वे सच्चाई को छुपाने के लिये साधु महात्माओं पर कीचड़ न उछालें। शीशे के मकान में रहनेवाले को दूसरों पर पत्थर फेंकने से पूर्व अपने घर का ध्यान कर लेना चाहिये। यदि आप को भगवान् ने सद्बुद्धि नहीं दी तो परिणाम अच्छा नहीं होगा।

—वेदव्रत शास्त्री

भगवान् कृष्ण और उनके आदर्श, वार्ता— आकाशवाणी रोहतक से सुनें

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के महोपदेशक प० सुखदेव शास्त्री द्वारा आकाशवाणी रोहतक से भगवान् कृष्ण और उनके आदर्श पर एक वार्ता दिनांक १८ अगस्त को सायं ७ बजे सुनिये।

शराब बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इनसे दूर रहें।

देशभक्तों ने 'भारत माता' के लिए बलिदान दिया 'इण्डिया माता' के लिए नहीं

लेखक—मागेराम आर्य बांकनेर (दिल्ली)

भारतीय संविधान की पहली धारा/अनुच्छेद मे देश का नाम "इण्डिया दैट इज भारत" लिखकर देशभक्तों के बलिदान का अपमान किया गया है आगे संविधान में कहीं 'भारत' नाम का उल्लेख नहीं किया गया है।

तिरूनेलवेलो पोलीगर लोग के प्रधान वीर पण्डुया कट्टाबम्मन को १७ अक्तूबर, १७९९ को फांसी दे दी गयी। चितूर को रानी चानम्मा ने ब्रिटिश जेल में १३ जुलाई १८३० को अन्तिम सांस ली। बुन्देलखण्ड में फरवरी १७४४ में मदकोर साहू को फांसी दे दी गई। दक्षिण में मुबारिजुछोला ने ब्रिटिश जेल में १८५४ में अन्तिम सांस ली।

दिल्ली के राजा बहादुरशाह जफर ने अपील की "हिन्दुस्तान के बेटो, निश्चय करो—धर्म और देश को मुक्त कराना है" १८५७ में अनेक नगरों की दीवारों पर क्रांति के विज्ञापन लगे हुए थे—पब या कभी नहीं, भारत माता युद्ध करने जारही है, आगे बढ़ो—आगे बढ़ो।

१८४४ में मेजर बोल्दन ने बेरकपुर की छावनी में वर्दी और वेतन में ४ रुपये बढ़ाने की मांग करने पर उन सैनिकों को तोपों से उड़ा दिया। ८ अप्रैल १८५७ को मंगल पांडे ने फांसी के तख्ते पर झूलकर स्वाधीनता संघर्ष में आहुति दी। मंगल पांडे का आदेश न माननेवाले जमादार ईश्वरीय पांडे को भी फांसी दोगई। ३४ नं० पलटन के सूबेदार को गुप्त सभाएं करने के अपराध में फांसी दे दी गई।

कश्मीरी गेट दिल्ली शस्त्रागार पर अधिकार करने के प्रयास में ११ मई १८५७ को ३०० के लगभग नागरिक और सैनिक शहीद हुए। १६ मार्च को दिल्ली में अंग्रेजी शासन का कोई चिह्न नहीं था। बादली (दिल्ली) की सराय पर ग्राम नरेला के सामकिशन शहीद हुए। २५ अगस्त १८५७ नीमचवाली नवाबों और शहजादों की पलटन को नगफगढ़ में अंग्रेजों ने नष्ट कर दिया। बहादुरशाह जफर की रंगून कारावास में ७ नवम्बर १८६२ को मृत्यु होगई। दिल्ली में अंग्रेजों ने कत्लेआम किया। दिल्ली के अलीपुर गांव के ३६ देशभक्तों को फांसी दीगई। ग्राम बाकनेर के गुलाबसिंह और उसकी बहन को पेड़ों के साथ कीलों से जड़ दिया। वे बलिदान होगए। उदमीराम (लिवासपुर सोनीपत) को एक वृक्ष से बांध दिया गया। वह भूखा प्यासा ३५ दिन पश्चात् बलिदान होगया।

पंजाब में सैनिकों ने ग्रामवासियों को पंक्ति में खड़ाकर फांसी पर लटका दिया। होती मदान की ५५वीं रेजीमेंट के अधिकांश सैनिक बलिदान होगए। अंग्रेज अधिकारियों ने कश्मीर में नृशंस हत्याकांड किया। क्रान्तिकारी राव तुलाराम (रिवाड़ी) ने काबुल में २३ सितम्बर १८६३ में अन्तिम सांस ली। झज्जर के नवाब अब्दुल रहमान और बल्लभगढ़ के राजा नाहरसिंह को चांदनी चौक कोतवाली (दिल्ली) में फांसी दी गई। इस क्षेत्र के अन्य ३३९ बलिदानियों की सूची प्राप्त है। दादरी (उत्तरप्रदेश) के राव रोशनसिंह के २ पुत्रों बिशनसिंह और भगवन्तसिंह को फांसी पर लटकाया गया। बनारस में अंग्रेजों ने क्रांतिकारियों को ८ व ९ के आकार में पेड़ों पर फांसी पर लटकाया। गांव के गांव जलाकर नष्ट कर दिए। भागते हुओं को गोली से उड़ा दिया। इलाहाबाद में अंग्रेजों ने ६ हजार स्वतन्त्रता सेनानियों को फांसी पर लटकाया। २८ जून १८५७ को नाना साहब के लगे दरबार में 'राजा रामचन्द्र की जय' का नारा लगाया।

कानपुर में अंग्रेजों ने असंख्य देशभक्तों को फांसी पर लटका दिया। जीवित नाना साहब १९०२ में स्वर्ग सिधारे। इटावा में अंग्रेजों ने २०-२५ क्रांतिकारियों को बम से उड़ा दिया। क्रांतिकारी भागते हुए शहीद हुए।

लखनऊ के सिकन्दरा बाग में देशभक्तों की लाशों के ढेर होगए। मौलवी अहमदशाह (अवध) को धोखे से कत्ल किया गया। बिहार के पीर अली ने फांसी के तख्ते पर चढ़कर कहा था, "तुम मुझे फांसी दे सकते हो, किन्तु हमारे सिद्धांत और आदर्श नहीं ले सकते। वीर कुंवरसिंह २४ अप्रैल १८५८ को स्वर्ग सिधार गए। कुंवरसिंह ने अन्तिम सन्देश में अपने भाई अमर को कहा, जिस वतन के लिए वीरों ने खून बहाया है उसकी रक्षा करना, अमर!" जगदीशपुर में रहनेवाली वीरांगनाओं ने तोप के मुंह के सामने खड़ी होकर देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। १७ जून १८५८ को महारानी झांसी ने रणभूमि मे बलिदान दिया। उड़ीसा के संबलपुर के राजा सुरेन्द्र साही को १८६२ में देश से निकाल दिया। कोटा (राजस्थान) के वीर जयदयाल को तोप के मुंह में बांधकर उड़ा दिया। असम के दीवान मनीराम दत्त और उसके साथी प्यालो-बरूआ को फांसी दीगई।

वीर शिरोमणि तांत्या टोपे को फांसी पर लटकाया गया। पेशवा राव साहब को २१ अगस्त १८६२ को फांसी दे दी गई। १८६४ से १८७१ तक अनेक वहाबियों (मुसलमानों का एक सम्प्रदाय) को फांसी पर लटकाया गया। १८६३ से १८७२ तक असंख्य कूके (पंजाब) रणभूमि में बलिदान हुए। ८४ को तोप से उड़ा दिया गया। अंग्रेजों ने कूका नामधारी एक बच्चे को यह कहा कि तू यह कह दे कि मैं गुरु रामसिंह का चेला नहीं हूं। इस पर उस वीर बालक ने उस अंग्रेज अधिकारी को दाढ़ी खींच ली। अंग्रेज ने अपनी दाढ़ी छुड़ाने के लिए उस देशभक्त गुरुभक्त बालक के हाथ काट दिए और फिर उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। गुरु रामसिंह १८८५ में रंगून की जेल में स्वर्ग सिधार गए।

राजनारायण बोस ने 'हिन्दूमेला' का वार्षिक आयोजन आरम्भ किया। तिलक ने 'गणेशपूजा' 'शिवाजी जयन्ती' और 'महाराणा प्रताप जयन्ती' के आयोजन का शुभारम्भ किया।

कांग्रेस समर्थित पत्र 'तरुण भारत' केवल भारतीयों की मांगे प्रकाशित करता था। १८८२ में बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा रचित अमरगीत 'वन्दे मातरम्' के गानों पर अनेक देशभक्तों ने गोलियां खाई।

२८ दिसम्बर १८८५ को ब्रिटिश सरकार के अवकाश प्राप्त आई० सी०एस० अधिकारी सर एलन आक्टेवियन ह्यूम ने कांग्रेस की स्थापना की। इस कांग्रेस अधिवेशन का समापन 'महारानी विक्टोरिया की जय' के जयकारों के साथ हुआ। १८८५ से १९०५ तक कांग्रेस ने स्वराज्य की कोई मांग नहीं की।

आधुनिक भारत निर्माता स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखा है "जब से···विदेशी शासक राजसत्ता सम्भाल बैठे हैं, तब से बराबर भारतवासियों में दुःख की वृद्धि होती जाती है।" गुरुवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा कि दयानन्द ने भारत को जागृत किया। लोकमान्य तिलक ने कहा "स्वराज्य के सर्वप्रथम संदेश वाहक थे।" दादा भाई नौरोजी ने कहा, "मुझे स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों से स्वराज्य की लड़ाई में बड़ी प्रेरणा मिलती है। १९०७ में उपराज्यपाल पंजाब ने आर्यसमाज को राजद्रोही गतिविधियों का केन्द्र बताया। बिपिनचन्द्र पाल का कहना है, "आधुनिक राष्ट्रीय चेतना का जन्म आर्यसमाज से हुआ।" १८९३ से १९४७ तक अधिकांश देशभक्त आर्य शिक्षण संस्थाओं से प्रभावित रहे।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा, "यदि तुम अपने देश का कल्याण करना चाहते हो तो प्रत्येक को गुरु गोविन्दसिंह बनना होगा। सर सैयद अहमद खां ने कहा कि हिन्दू मुसलमान सुन्दर दुलहन की दो आखें हैं। इसमें एक आख को चोट पहुंचे तो चेहरा बदल जाएगा। १९१० में देश से निष्कासित अरविन्द घोष ने कहा, "हमारे राष्ट्रीय जीवन की पूर्ति स्वराज्य है।" जीवित शहीद लोकमान्य तिलक ने अपनी पत्नी की मृत्यु का समाचार मिलने पर कोई आंसू नहीं बहाया और कहा, "मैं अपने सारे आंसू अपनी मातृभूमि के लिए बहा चुका हूं।" (क्रमशः)

आर्यजनता के दरबार में–

जब से हैदराबाद में सार्वदेशिक सभा के चुनाव में नये अधिकारी आये हैं, तब से जहां सारे आर्यजगत् में हर्ष की लहर फैली है, उत्साह का वातावरण बना है, वहां कुछ लोग अपने स्वार्थ एवं पद को छुटता देख धर्म एवं सिद्धांत की सभी मर्यादाओं को लांघकर छल-कपट द्वारा पद पर बने रहना चाहते हैं। इसके लिए सभी प्रकार के हथकंडे अपना रहे हैं, वहां योग्य कार्यकर्ताओं को बदनाम भी कर रहे हैं। स्वयं सब प्रकार से छल-कपट करते हुए भी नये अधिकारियो पर (जो सौभाग्यवश दोनो संन्यासी है) अनेक प्रकार के दोष लगा रहे हैं, आर्य जनता ही इसका न्याय करे। पहले श्री वन्देमातरम् जी एव इनके साथियों को देखें। श्री वन्देमातरम् जी आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश के मन्त्री ने आर्य जीवन के माध्यम से गुरुकुल घटेश्वर एवं हैदराबाद सत्याग्रह के सम्बन्ध में धन हड़पने विषयक अनेक आरोप सप्रमाण लगाये हैं, परन्तु ये किसी एक का भी उत्तर नही दे सके।

इन्होंने आन्ध्रप्रदेश के कुछ लोगों को लेकर नकली आर्य प्रतिनिधि सभा बना रखी है। तमिलनाडु में भी सार्वदेशिक सभा के संविधान के विरुद्ध नाममात्र की १३ आर्यसमाजों पर प्रतिनिधि सभा बनाकर उनके आधार पर नौ प्रतिनिधि बनाये हैं, उनमे खुद एक हैं, ये अपने प्रान्त से तो प्रतिनिधि भी नहीं बन सके। इसलिये तमिलनाडु से नकली प्रतिनिधि बनकर आये हैं। हैदराबाद सत्याग्रह में जो काम किया था, उसी को सारी उमर भुनाने का यत्न कर रहे है और उसके द्वारा अपने सारे पाप छिपाना चाहते हैं, एक ट्रैक्ट के रूप में अपना जीवनचरित छपवाकर सभी आर्यसमाजों को भेज रहे हैं। परन्तु उन पुरानी बातों से सार्वदेशिक सभा के योग्य नहीं हो सकते। इनमें न वैदिक साहित्य की योग्यता है न गम्भीर सिद्धान्त का ज्ञान है। अनेक लोग तो यहां तक कहते हैं कि इन्हें संध्या हवन भी याद नहीं। दूसरे श्री सोमनाथ मरवाह कट्टर जातिवादी सभी प्रकार की विद्वत्ता एवं पाण्डित्य से रहित अच्छी प्रकार चलने-फिरने में भी असमर्थ होकर भी हाईकोर्ट के वकील के नाम पर सार्वदेशिक सभा को अपने अधिकार मे रखना चाहते हैं। अपने पद के लिए सारे आर्यसमाज को बदनाम करने मे भी इन्होंने संकोच नहीं किया। जब स्वामी आनन्द बोध जी ने इनको कोषाध्यक्ष पद से हटा दिया था, तो अन्य लोगों के साथ मिलकर उनका खुल्ला विरोध करने लगे फलतः उन्होंने सारे नियम कानून ताक पर रखकर इनको उपप्रधान बना दिया, तो उनके तलुवे चाटने लगे, ये भी आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली से संविधान के विरुद्ध सदस्य बने हैं।

इसी प्रकार तीसरे श्री सच्चिदानन्द शास्त्री भी उत्तर प्रदेश की नकली आर्य प्रति० सभा से प्रति० बनकर आते हैं। हैदराबाद सत्याग्रह की झूठी पेन्शन लेकर उछल-कूद मचा रहे हैं। इनमें न किसी प्रकार की योग्यता है न सामर्थ्य। सारे जीवन श्री स्वामी आनन्द बोध जी के सामने चपरासी की तरह से नाचते रहे, यही इनकी विशेषता है। ये लोग जोड़-तोड़ में माहिर हैं, इनका उद्देश्य वेदप्रचार या समाज सेवा नहीं है। इनकी लड़ाई का आधार उचित, अनुचित या अच्छा-बुरा नहीं है किन्तु पक्ष, विपक्ष है। इनके इस प्रकार के व्यवहार से सभी कर्मठ कार्यकर्ता अलग हो गये। यदि किसी ने कुछ सुधार का यत्न किया, तो बहिष्कार आदि करने की धमकी देकर उन्हें दबाने का यत्न किया। परन्तु अब जब इनके विरोध में एक लहर चल गई। इन्हीं द्वारा स्वीकृत निर्विवादित १०, ११ प्रति० सभाओ ने कुछ त्यागी, तपस्वी, कर्मठ, संन्यासियों को अधिकार दे दिया, तो इन्होने चिल्लाना शुरू कर दिया कि सन्यासियों को इन झगड़ों में आगे नही आना चाहिये।

जब अपने स्वार्थ के लिए फूट द्वारा सारे सगठन को नष्ट किया जाय तो क्या संन्यासी मूकदर्शक बनकर बैठे रहें, जिन्होंने अपना जीवन ही वैदिकधर्म एवं आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में लगाया है। इसके बचाने के लिए भी वही आगे आते हैं। आर्यसमाज की हानि का दु.ख-दर्द भी उन्हें ही है। उनका अपमान करने में भी इन्होंने कोई कमी नहीं रखी। यह पृथक् बात है कि उन्होने इसको महत्त्व नहीं दिया। पू० स्वामी विद्यानन्द जी उच्चकोटि के विद्वान् एवं ओजस्वी वक्ता हैं। सेवानिवृत्त हो संन्यास लेकर लेखन एवं प्रचार द्वारा समाजसेवा में जुटे हुए हैं। आर्यसमाज को उच्चकोटि का साहित्य दे रहे हैं।

पूज्य स्वामी ओमानन्द जी के त्याग, तप को सारा आर्यजगत् जानता है, पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी (उड़ीसा) के शुद्धि आंदोलन तथा कर्मठता से सारा आर्यजगत् परिचित है, पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी (राजस्थान) तपस्वी नवयुवक, कर्मठ तथा ओजस्वी वक्ता संन्यासी हैं, इन्होंने राजस्थान में आर्यसमाज एवं आर्यप्रतिनिधि सभा को नया जीवन दिया है। पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी जैसे वीतराग सन्यासी का आशीर्वाद इन्हें मिल रहा है, सारा आर्यजगत् इनके साथ है, परन्तु "सावन के अन्धे को सब हरा हो हरा दीखता है" की तरह स्वयम्भू नेताओं को इनमें दोष ही दोष दीखते हैं। संसार के सारे धार्मिक संगठन अपने साधु-महात्माओं का सीमातीत आदर सम्मान करते हैं। फलस्वरूप वे संगठन फूल रहे हैं। जबकि आर्यसमाज जैसे तपस्वी कर्मठ साधु किसी संगठन के पास नहीं है। अतः हमें अपने इन महात्माओं को अधिकार एवं सम्मान देकर समाज को आगे बढ़ाने में सहयोगी होना चाहिए। श्री वन्देमातरम् एवं श्री मरवाह जी से निवेदन है, वे तीन तटस्थ मध्यस्थों को लेकर शास्त्रार्थ करलें, दोनों में से जिसका पथ सत्य सिद्ध हो उसे अधिकार दे दिया जाये। इससे बेकार का कलह और लाखों रुपया बचेगा। समाज विघटित होने से बच जायेगा। परन्तु आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं के दबाव एवं प्रभाव से ही यह हो सकेगा। अतः आर्यजनता को इधर ध्यान देना चाहिए।

लेखक—स्वामी परमानन्द सरस्वती
पाखण्ड खण्डन मंच, गुरुकुल आश्रम आमसेना

स्वतन्त्रता दिवस पर–

गौरव मण्डित हो स्वदेश फिर

अमर शहीदों के स्वप्नों का,
बने हमारा भारत देश।
स्वतन्त्रता के प्रतिफल सबको—
बिना भेद के मिले विशेष।

गौरव मण्डित हो स्वदेश फिर—
पुनः बने यह देश महान्।
जगे हमारे नवयुवकों मे—
त्याग–तपस्या व बलिदान।

सूत्रपात हो रामराज्य का,
दनुज वृत्तियों का विनाश हो।
निर्धनता—भुखमरी—अभावों—
अन्यायों का पूर्ण नाश हो।

वेदज्ञान की धवल रश्मियों—
से आलोकित हो यह देश।
फैले यहां पुन. ऋषियो का—
पावनतम सा सद् उपदेश।

भगत–सुभाष–शिवा–राणा की—
परम्परा फिर हो स्थापित।
मातृभूमि की रक्षा में हो—
लाखों शीश यहां अर्पित।

दानवता के बढते कदमों—
का हो फिर व्यापक प्रतिरोध।
मानवता फिर बने विजयिनी,
मंगलमुखी बने सब शोध।

बने राष्ट्र नायक भारत के,
जनता के सच्चे सेवक।
राजनीति से स्वार्थ हटे सब—
ग्राम्यांचल से दिल्ली तक।

शांति–सफलता–समरसता का—
हो जनजीवन में सचारण।
उग्रवाद–आतंकवाद का—
हो भारत में पूर्ण निवारण।

हिमगिरि से ले हिन्द जलधि तक,
नव जागृति की ज्योति जले।
प्रेम–दया–ममता–समता को,
दिव्य भावना हृदय पले।

आओ! लें संकल्प सभी हम,
देश महान् बनाएगे।
ऋषि–मुनियों की हम संतति है,
दुनिया को दिखलाएगे॥

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

नलवा में वेदप्रचार

दिनांक २-३ अगस्त १९९५ को चौ० ओमप्रकाश रिटायर्ड हेड मास्टर पार्टी की भजनमण्डली द्वारा आर्यनिवास नलवा (हिसार) में वेदप्रचार एवं यज्ञ किया गया। चौ० साहब ने रानी किशोरी का इतिहास एवं समाजसुधार के फुटकर भजन रखे। सभा उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी ने श्री महर्षि दयानन्द जी का नारी जाति पर उपकार पर विस्तार से विचार रखे। प्रचार में नजदीक की कई ढाणियों के नरनारियों ने भाग लिया। मौसम खराब होने के कारण अन्य कई गांव का कार्यक्रम रद्द करना पड़ा। ज्ञात रहे १ अगस्त को श्री मांगेराम आर्य (नलवा निवासी) के घर पारिवारिक हवन किया। पंच महायज्ञ का महत्त्व तथा नारी शिक्षा एवं पाखण्ड के खिलाफ श्री क्रांतिकारी जी ने विस्तार से विचार रखे। श्री राजू नाम के नवयुवक ने बीड़ी का बण्डल तोड़कर भविष्य में धूम्रपान न करने का व्रत लिया। यज्ञ पर काफी संख्या में नरनारियों ने भाग लिया। सभा को ५१ रु० दान दिया गया।

—मन्त्री आर्यसमाज नलवा

हैदराबाद में अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण महाविद्यालय की स्थापना

७ अगस्त १९९५ से हैदराबाद व सिकन्दराबाद नगर के मध्य में स्थित बेगमपेठ में अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण महाविद्यालय का शुभारम्भ होगया है। इस महाविद्यालय का संचालन अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद की ओर से किया जारहा है। आर्यजगत् के ख्याति प्राप्त वैदिक मनीषी आचार्य वेदभूषण इस महाविद्यालय के आचार्य होंगे।

महाविद्यालय में दो पाठ्यक्रम चलाए जाएंगे जो एक वर्ष का होगा जिसमें सुयोग्य पुरोहितों का निर्माण होगा। दूसरा पाठ्यक्रम तीन वर्ष का होगा जिसमें वैदिक विद्वानों का निर्माण होगा। मैट्रिक तथा उसके समकक्ष योग्यतावाले प्रतिभावान् प्रशिक्षणार्थियों को ही प्रवेश दिया जाएगा। महाविद्यालय में भारत के अतिरिक्त विदेशों से भी प्रशिक्षण प्राप्ति प्रावेदन पत्र आए हैं :—

सम्पर्क सूत्र :—अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद
पिन कोड—५०००२७, फोन नं० ३१५२३३

—सत्यानन्द आर्य

सुहावने लगते हैं

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

सन्तों के बोल—स्वजनों का मेलजोल।
दूर के ढोल—सुहावने लगते हैं॥
सावन में झूले—बारात में दूल्हे।
मिट्टी के चूल्हे—सुहावने लगते हैं॥
सागर की हिलोर—बरसे ढोर।
नाचते मोर—सुहावने लगते हैं॥
सरोवर में कमल—आंखों में काजल।
भादों में बादल—सुहावने लगते हैं॥
प्रातः सूर्योदय—कश्मीर-हिमालय।
गुरुकुल विद्यालय—सुहावने लगते है॥
आर्यों के निवास—सत्यार्थप्रकाश।
यज्ञशाला पास—सुहावने लगते हैं॥
सावन में हरियाली—कंचन की थाली।
खेतों में हाली—सुहावने लगते हैं॥

सपूतों की कहानी है

आर्य धरा पर प्रेम गंगा बहानी है।
जगत् गुरु भारत के सपूतों की कहानी है॥

ऋषि दयानन्द ने जग को जगाया,
डंका वेदों का बजाया।
जला सकती न इसको अग्नि,
डुबा सकता न पानी है॥१॥

फांसी चढ़ गया वो भगतसिंह प्यारा था,
शेखर और बन्दा भी जग से न्यारा था।
सुभाषचन्द्र बोस तेरी फौज फिर जगानी है॥२॥

श्रद्धानन्द ने अध्यात्म पाया था,
सोया कर्म दर्शन रामतीर्थ ने जगाया था।
ऐसे पुरुषों की श्रेष्ठ कहानी है॥३॥

जिन वीरों ने स्वतन्त्रता पर बलि दे दी,
लाला लाजपतराय स्वर गगनभेदी।
खुशी से प्राण देना सपूतों की कहानी है॥४॥

—श्रीनिवास आर्य एम० ए०
मन्त्री आर्यसमाज गढ़ोआ छोटा सासनी (अलीगढ़)

भक्तराज अमीचन्द जी का 'विद्या' विषयक एक गीत

रांची से श्री श्यामसुन्दर पोद्दार का एक पत्र प्राप्त करके प्रसन्नता हुई कि उन्होंने भक्त अमीचन्द के चार और भजन भेजे हैं। उन्होंने अपने लेख में यह लिखा है कि मेरे द्वारा सम्पादित 'अमी भजन सुधा' में ९३ भजन हैं। यह गिनती ठीक नहीं। मेरी पुस्तक में ९३ भजनों के आगे सन्ध्या मन्त्रों का भी भक्त जी द्वारा किया गया पद्यानुवाद भी दिया गया है। इस प्रकार मेरी पुस्तक में ११० से ऊपर भजनों का संग्रह है। नये संस्करण में भक्त जी के कुछ नये भजन जोड़ दूंगा। आज यहाँ उनके एक लम्बे भजन की कुछ ही पंक्तियां दी जाती हैं। पाठक इसे छन्द शास्त्र की कसौटी पर न कसें। यह भजन १९११ में प्रकाशित एक भजन संग्रह से मिला है। इस भजन में कुल ७४ पंक्तियां हैं।

—प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

विद्या पढ़ाओ जहां तक हो तुम से
बिगड़ी सुधारो, तुम्हारी सन्तान है
भारत पे छाई अविद्या की रात्रि
तिस पे घटा घेर लाया अज्ञान है
विद्या से शून्य है यह भूमि अभागन
कर्मों से हीन है, जाति-अभिमान है
यूरोप के विद्वान कला कौशलों से
बनाते हैं रेल आदि नूतन सामान है
बिजली के तारों से लेते हैं कारज
निकाली है कला जिसने कैसा बुद्धिमान है।
इधर हिन्द का है निरक्षर अचारज
मुर्दे का लेता कफन तक का दान है
पढ़ना कठिन किन्तु भिक्षा सुगम है
नहीं लोक लज्जा, नहीं इनमें आन है
कहां तत्ववेत्ता हो सांख्य कपिल जी
कहां बादरायण जो भक्ति का मान है
कहां है पातञ्जलि महर्षि तुम्हारा
योग सूत्र महाभाष्य जिसका प्रधान है
कहां है कणाद जी का दर्शन वैशेषिक
नहीं करता अब इन पे कोई ध्यान है
ऐसे तो पूर्व पुरखा तुम्हारे
तुम सा नहीं आज मूर्ख नादान है
शंकर और दयानन्द की विद्वत्ता का
द्वीप और द्वीपान्तर में प्रसिद्ध मान है
विद्या से धर्म, धर्म से अभय पद
विद्या से मिलता परम ब्रह्मज्ञान है
संक्षिप्त करके सुना तू अमीचन्द
थोड़ा समय तेरा लम्बा व्याख्यान है।

आर्यसमाज भाण्डवा (भिवानी) का वार्षिक कार्यवृत्तान्त

वि० सं० २०५१ (१९९४-९५)

(१) अप्रैल-मई—गांव में खुले शराब के ठेके के विरुद्ध संघर्ष करके बन्द करवाया। विस्तृत विवरण के लिए सर्वहितकारी के ७ जून १९९४ के अंक में छपा 'जीत धर्म की सदा होती आई' लेख द्रष्टव्य है।

(२) जून-जुलाई—नवम आर्य सम्मेलन सम्पन्न किया एवं आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण आरम्भ करके ४० फुट लम्बे व २० फुट चौड़े सुदृढ़ सत्संग भवन को छत दी। व्यय लगभग एक लाख रुपये।

विशेष कथन—(क) उत्सव में श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती, श्री बलराजसिंह आर्य क्रान्तिकारी, मं० विश्वमित्र आर्य भजनोपदेशक, शास्त्रार्थ महारथी आचार्य राजकुमार आर्य शास्त्री, आर्यपुरोहित पं० धर्मसिंह शास्त्री, महाशय बालचन्दसिंह आर्य, श्री आनन्दमुनि आदि के उपदेश हुए।

(ख) वैदिक सत्संग भवन निर्माण कार्य में पचासों धर्मशिष्यों ने श्रमदान किया। सर्वाधिक योगदान श्री रामफल आर्य, महीपाल आर्य, सुमेरसिंह आर्य, योगेन्द्रसिंह आर्य एवं कर्मवीर आर्य आदि का रहा।

(३) अगस्त—आसनादि व्यायाम प्रशिक्षण शिविर श्री राजकुमार आर्य शिक्षक मंभोल (उ०प्र०) के निर्देशन में आयोजित किया गया जिसमें सैकड़ों छात्रों ने भाग लिया।

(४) सितम्बर-अक्तूबर—धर्म प्रेरणानुसार अनेकों छात्रों ने आर्यसमाज महेन्द्रगढ़ एवं कन्या गुरुकुल पंचगांव के उत्सवों में भाग लेकर वेदप्रचार सुना एवं सेवाकार्य किया।

(५) नवम्बर-दिसम्बर—छात्रों को सत्प्रेरणा एवं धर्मशिक्षा दीगई।

(६) जनवरी-फरवरी—त्यागी हुई एक गऊ व एक बछड़ी को आर्यसमाज मन्दिर में संरक्षण दिया गया। विद्यार्थी जयवीर आर्य आदि छात्रों ने गऊ सेवा की।

(७) मार्च—आर्यसमाज मन्दिर में होली के दिन मल्लयुद्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें गांव के ही गुरुकुल झज्जर में पढ़नेवाले बलिष्ठ ब्रह्मचारी अजयकुमार आर्य शास्त्री ने छुट्टो दी और विजयी हुआ। गऊ रक्षा कार्य अग्रसर और गऊओं को संरक्षण देना जारी है।

(८) अनेक आर्य पर्व मन्दिर में यज्ञोपदेश रीति से मनाये।

(९) प्रायः प्रत्येक पूर्णिमा को मासिक धर्मप्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

(१०) ८ अगस्त से दैनिक व्यायामाभ्यास शाखा तथा धर्मोपदेश भी नित्यप्रति चला।

—धर्म शास्त्री

'ओ३म्' का जाप नित करना

—सन्तोष कण्व

छोड़कर काम सब जग के भजन ईश्वर का नित करना।
समय सन्ध्या का जब होवे 'ओ३म्' का जाप नित करना॥
प्रभु का नाम लेने से जीभ घिस तो नहीं जाती।
सुबह और शाम श्रद्धा से 'ओ३म्' का जाप नित करना॥
ईश गुणगान करने से प्रभु में प्रीति है बढ़ती।
उसी से लौ लगा लेना 'ओ३म्' का जाप नित करना॥
प्राण सन्धान कर मन बुद्धि को प्रभु में लगा लेना।
उपासक ईश का होना 'ओ३म्' का जाप नित करना॥
दोष अन्तःकरण के एक चुन-चुनकर मिटा देना।
नहीं विषयों में जा फंसना 'ओ३म्' का जाप नित करना॥
ओढ़कर साफ चादर को ही तू आया था दुनिया में।
इसे मैली नहीं करना 'ओ३म्' का जाप नित करना॥
काल का चक्र तो चलता रहा चलता ही जाएगा।
सदा निर्भय बने रहना 'ओ३म्' का जाप नित करना॥
सभी हैं अपने पराए मित्र और शत्रु सभी बन्दे।
न इस पर ध्यान कुछ देना 'ओ३म्' का जाप नित करना॥
छोड़कर मोह दुनिया से प्रभु पर कर भरोसा तू।
उसी प्यारे से सब कहना 'ओ३म्' का जाप नित करना॥
जो कुछ भी पास है तेरे यहीं सब छूट जाएगा।
न कुछ भी साथ है जाना 'ओ३म्' का जाप नित करना॥
मौत का वक्त जब आए प्राण को साफ करके तू।
परम में लीन हो जाना 'ओ३म्' का जाप नित करना॥

यज्ञ (हवन) का आयोजन

बेरी—यहां से १४ किलोमीटर दूर गांव सिवाना (रोहतक) में दिनांक ३१-७-९५ से ५-८-९५ तक यज्ञ (हवन) का आयोजित किया गया। यज्ञ (हवन) का संचालन मास्टर रामनारायण आर्य (एम० ए० संस्कृत एवं राजनीतिशास्त्र) ने किया। समस्त गांव निवासियों ने यज्ञ (हवन) करवाने वास्ते १०,००० रुपये चन्दा एकत्रित किया हुआ था। पूर्वसरपंच डा० भागमल की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई। नवनिर्वाचित समस्त पंच एवं सरपंच श्री जयपालसिंह ने भी यज्ञ (हवन) कार्यक्रम में काफी उत्साहपूर्वक भाग लिया।

आर्यसमाज सिवाना समिति ने भी इस यज्ञ (हवन) कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया। गांव में जब से यज्ञ (हवन) शुरू हुआ है, तब से ही काफी वर्षा होनी शुरू होगई थी। यज्ञ (हवन) से पहले इस गांव में नाममात्र की भी वर्षा नहीं हुई थी। गांव के तालाबों में मवेशियों को पीने का पानी भी उपलब्ध नहीं हो पा रहा था।

श्री आर्य दावा करते हैं कि वे किसी भी मौसम में वर्षा करवा सकते हैं। जब वे गांव में आए, तब उनकी इन सब बातों पर लोग विश्वास नहीं कर रहे थे। मगर बाद में श्रीआर्य का गांव में काफी सम्मान किया गया। श्री आर्य ने यज्ञ (हवन) के साथ-साथ शराबबन्दी, धूम्रपान आदि से होनेवाले शरीर में नुकसानों से अवगत करवाया। इनके प्रचार का समस्त गांव में आज भी असर दिखाई दे रहा है। गांव सिवाना में आर्यसमाज के प्रति लगाव भावना बढ़ी है। श्री आर्य आज भी गांव में चर्चा का विषय बने हुए हैं।

—चांदराम रोहिल्ला 'पत्रकार'
मु० पो० सिवाना (रोहतक)

आर्यसमाज नयाबांस दिल्ली का वेदप्रचार सप्ताह

दिल्ली की प्रमुख आर्यसमाज नयाबांस दिल्ली का वेदप्रचार सप्ताह तथा वार्षिक उत्सव १० से १८ अगस्त तक मनाया जारहा है। इस अवसर पर यजुर्वेद यज्ञ हवन, वेदकथा, वेद कण्ठस्थ प्रतियोगिता तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व का आयोजन किया गया है जिसमें वैदिक विद्वानों के उपदेश तथा सभा के पं० चिरंजीलाल आदि के भजन होंगे।

—धर्मपाल आर्य मन्त्री

ऋषि लंगर के लिए दान

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रमुख आदर्श वेदप्रचारक तथा आर्यसमाज असोध खेड़ी जिला रोहतक के संचालक मास्टर निहालसिंह आर्य ने सभा के ऋषि लंगर के लिए ५००) प्रदान किए हैं वे सेवा-निवृत्त होने पर सारा समय वेदप्रचार तथा समाजसुधार कार्यों में दे रहे हैं।

अन्तरंग सभा तथा विद्या परिषद् की बैठक

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा तथा आर्य विद्या परिषद् की कार्य समिति की बैठक दिनांक २० अगस्त रविवार को दोपहर बाद १ बजे आर्यसमाज मन्दिर माडल टाउन छोटूराम पोली-टैकनिक कालेज मार्ग रोहतक में होगी। इसी अवसर पर आर्यसमाज मन्दिर में अश्वमेध यज्ञ की पूर्णाहुति तथा शराबबन्दी सम्मेलन भी होगा।

—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत [illegible] प्रेस रोहतक फोन : (७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० [illegible] सिद्धान्ती [illegible], रोहतक (फोन : ४०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ पंजि० . ९६, ०८, २३,०९६

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए०

वर्ष २२ अंक ३८ २८ अगस्त, १९९५ (वार्षिक शुल्क ५०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग की बैठक के निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक २० अगस्त १९९५ रविवार को आर्यसमाज मन्दिर माडल टाउन रोहतक में सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर निम्नलिखित महत्वपूर्ण निश्चय किए गए।

१. सभा के सेवक श्री सत्यवीरसिंह तथा आर्यसमाज पानीपत के सेवक श्री रामरतन के निधन पर दो मिनट का मौन धारण करके उन्हें श्रद्धांजलि दी गई तथा उन द्वारा की गई आर्यसमाज की सेवा की [illegible] की गई। शराबबन्दी समिति के संयोजक श्री विजयकुमार जी के [illegible] होने पर सभा ने गहरी चिन्ता प्रकट करते हुए परमपिता [illegible] उन्हें शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना की है।

[illegible] शराब, मांस आदि सामाजिक बुराइयों का परित्याग करने के [illegible] से अश्वमेध यज्ञों में आहुतियां डलवाई जावेंगी और उन्हें सभा द्वारा चलाये जा रहे शराबबन्दी आन्दोलन में सम्मिलित होने के लिए तैयार किया जावेगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए निम्नलिखित स्थानों पर यज्ञ तथा शराबबन्दी सम्मेलनों का आयोजन किया गया है :—

१	वैदिक साधनाश्रम मादोपुर जिला यमुनानगर	२६, २७ अगस्त
२	आर्यसमाज नरवाना जिला जीन्द	२८ ,,
३	आर्यसमाज लाडवा जिला कुरुक्षेत्र	२१ से २७ ,,
४	आर्यसमाज सोहना जिला गुड़गांव	२१ से २७ ,,
५	आर्यसमाज मालब जिला गुड़गांव	२८ अगस्त से २ सितम्बर
६	आर्यसमाज सालवन जिला करनाल	४ से १० ,,
७	आर्यसमाज [illegible] जिला यमुनानगर	८ से १० ,,
८	आर्यसमाज गंगायचा अहीर जिला रेवाड़ी	९ से १० ,,
९	आर्यसमाज नारनौल जिला महेन्द्रगढ़	९ से १० ,,
१०	आर्यसमाज सिलारपुर तोताहेड़ी जि० महेन्द्रगढ़	८ से १० ,,
११	आर्यसमाज सब्जी मण्डी रेवाड़ी	२२ से २४ ,,
१२	आर्यसमाज करसिन्धु जिला जीन्द	२२ से २४ ,,
१३	आर्यसमाज रसूलपुर जिला महेन्द्रगढ़	२३ से २४ ,,
१४	आर्यसमाज नांगल जिला महेन्द्रगढ	२५ ,,
१५	आर्यसमाज नांगल (बहल) जिला भिवानी	२३ से २५ ,,

३. ऊपर लिखित यज्ञों तथा शराबबन्दी सम्मेलनों के पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मुख्य कार्यालय सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ तथा लखीराम आर्य अनाथालय रोहतक को यज्ञशालाओं में २७ सितम्बर से ३ अक्तूबर तक एक विशाल अश्वमेध यज्ञ का भव्य आयोजन किया जावेगा जिसमें भारी संख्या में नर-नारी १५ क्विंटल गाय के शुद्ध घी की आहुतियां डालकर शराब, मांस आदि सामाजिक बुराइयों से दूर रहने का संकल्प करेंगे। ३ अक्तूबर को आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती शास्त्री पूर्व लोकसभा सदस्य की ९५वीं जयन्ती भी मनाई जावेगी और यदि हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल ने महात्मा गांधी (जो कि शराबबन्दी के कट्टर समर्थक थे) के २ अक्तूबर के जन्म दिवस पर हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी की घोषणा न करेंगे तो ३ अक्तूबर को अश्वमेध यज्ञ की पूर्णाहुति पर शराबबन्दी आन्दोलन को और तीव्र गति से चलाने के कार्यक्रम की घोषणा की जावेगी।

इसी अवसर पर लखीराम आर्य अनाथालय दयानन्दमठ रोहतक का भी उद्घाटन किया जावेगा।

सभा ने हरयाणा के सभी आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को ३ अक्तूबर को इस समारोह में सम्मिलित होने का अनुरोध किया है।

४. तथाकथित सार्वदेशिक सभा के स्वयंभू नेताओं श्री वन्देमातरम्, श्री सच्चिदानन्द शास्त्री तथा श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट आदि (जोकि नियमानुसार किसी आर्यसमाज के सदस्य नहीं हैं) के द्वारा आर्यसमाज के त्यागी, तपस्वी तथा दिनरात वैदिकधर्म के प्रचार कार्यों में समय देने वाले आर्यसंन्यासियों श्री स्वामी सर्वानन्द जी, श्री स्वामी विद्यानन्द जी, श्री स्वामी ओमानन्द जी तथा स्वामी सुमेधानन्द जी आदि का निरन्तर अपमान करने उनके सम्बन्ध में झूठा प्रचार करने पर सभा ने गहरा दुःख प्रकट किया है। वे लोग स्वयं वैदिकधर्म का प्रचार नहीं कर रहे तथा आर्य संन्यासियों के कार्यों में बाधाएं खड़ी कर रहे हैं और आर्यसमाज की सम्पत्तियों को बर्बाद कर रहे हैं। श्री वन्देमातरम् तथा सच्चिदानन्द ने हैदराबाद सत्याग्रह की झूठा पेन्शन ले रहे हैं। अतः सभा ने हरयाणा के सभी आर्यसमाज तथा आर्यशिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों को निर्देश दिया है कि ऊपर लिखित व्यक्तियों का सामाजिक बहिष्कार करें और उन्हें किसी समारोह में आमन्त्रित न करे।

सभा ने स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता वाली सार्वदेशिक सभा को पूर्ण सहयोग देने की मान्यता देकर पूर्ण सहयोग देने का निर्णय किया है।

५. सभा ने यह निश्चय किया है कि आर्यसमाज के वयोवृद्ध वीतराग सन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अध्यक्ष परोपकारिणी सभा का अजमेर में सार्वजनिक अभिनन्दन किया जावे और ऋषि दयानन्दकृत तथा अन्य वैदिक साहित्य को भिन्न भाषाओं में प्रकाशित करवाकर देश-विदेश में प्रचारार्थ भिजवाया जावे। इस उद्देश्य के लिए प्रो० शेरसिंह जी ने ५१००/- प्रदान किये हैं। अन्य आर्यसमाज के अधिकारियों से सभा ने अनुरोध किया है कि वे इस रचनात्मक तथा आर्यसमाज के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के शुभ कार्य के लिए उदारतापूर्वक अपने दान की राशि सभा के कार्यालय में भेजकर रसीद प्राप्त कर लेवें।

६ हरयाणा के मुख्यमन्त्री द्वारा हिन्दी भाषी राज्य हरयाणा पर पंजाबी भाषा को बलात दूसरी भाषा बनाने की घोषणा का सभा ने विरोध करते हुए स्मरण करवाया है कि हिन्दी रक्षा आन्दोलन के कारण ही हरयाणा राज्य का हिन्दी भाषा के रूप में गठन किया गया था। अब हरयाणा में पंजाब से आये हुए भाइयों की ७५% भाषा हरयाणवी (हिन्दी) बन चुकी है। अतः अब यहां पंजाबी को राज्य की दूसरी भाषा बनाना अनुचित है। हरयाणा की वैदिक संस्कृति तथा

(शेष पृष्ठ ६ पर)

यज्ञ—वैज्ञानिकों की दृष्टि में

—आचार्य डा० सत्यव्रत राजेश

वैदिक ऋषियों ने अपने प्रतिभा-चक्षुओं से वेद के आधार पर जिन जीवन पद्धतियों को खोजा था पहले तो वैज्ञानिकों ने उन्हें स्वीकारने में अधिक रुचि नहीं दिखाई थी किन्तु जब वे थोडा-बहुत ध्यान देने लगे तो उनको वे विधियां विज्ञान सम्मत लगीं तथा वे उनकी ओर आकृष्ट हुए। यह विश्व का सौभाग्य है। हमें यह मानने में संकोच नही होना चाहिए कि प्राचीन ऋषियों जसी प्रतिभा अब संसार के पास नहीं हैं चाहे वे संसार को अपने नूतन आविष्कारों से कितना ही चमत्कृत कर दे। अणुबम मे प्रयुक्त शक्ति को यदि चूल्हे, वाहन, कारखानों आदि के साथ जोडा जाता तो विश्व अधिक आत्मनिर्भर, निर्भय तथा सुखी हो सकता था, जबकि अस्त्र के साथ जुड़ी वह शक्ति संहारक तथा अशान्ति को जन्म देने वाली बनी तथा जहां उसका प्रयोग हुआ वही धरती कराही। विज्ञान ने अनेक सुखद आविष्कार भी किए हैं जिनके लिए विश्व उनका ऋणी रहेगा।

आज हम यज्ञ को लेते हैं जिसे होम, हवन, आदि भी कहा जाता है। लगभग दो दशाब्दी पूर्व प्रि० भगवानदास जी ने डो० ए० वी० कालेज अम्बाला के प्राचार्य थे, मुझे अपने कालेज तथा सोहनलाल प्रशिक्षण कालेज में भाषण के लिए बुलाया था। सोहनलाल प्रशिक्षण महाविद्यालय मे कन्याओं की अधिकता थी अतः उन्होंने तो मेरे व्याख्यान को रुचि पूर्वक सुना किन्तु अगले दिन यज्ञ के पश्चात् डी० ए० वी० कालेज में मेरा व्याख्यान समाप्त हुआ तो एक युवक, जो वहां व्याख्याता थे, मेरे पास आए और पूछने लगे कि यदि आप बुरा न माने तो मैं कुछ पूछना चाहूंगा। मेरी स्वीकृति मिलने पर उन्होंने कहा कि मैं तो आर्यसमाजी परिवार से सम्बन्ध रखने के कारण यज्ञादि को मानता हूं किन्तु मेरे साथी ये कहते है कि आर्यसमाज की अन्य बातें तो ठीक लगती हैं किन्तु हवन के नाम म घी फूकना ठीक नही है। इससे तो अच्छा है कि किसी गरीब को खाने को दे दिया जाए।

मैंने उनसे पूछा कि आप क्या विषय पढ़ाते हैं तो उन्होंने विज्ञान बतलाया। मैंने पूछा कि विज्ञान किसी वस्तु के, जो भाव रूप में हो, अस्तित्व की समाप्ति स्वीकार करता है? वस्तु का कार्य कारण भाव तो माना जा सकता है। पहले वस्तु कार्य रूप में हो तथा फिर वह कारण रूप में होने पर आंखों से दिखाई न पड़े किन्तु यह नहीं हो सकता कि वस्तु पहले हो और उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाए। उन्होंने भी इसे स्वीकार किया। संस्कृत में भी नष्ट होने का अर्थ अदर्शन होना अर्थात् आंखों के सामने न रहना है। णश् धातु, जिससे प्रत्यय लगकर नष्ट शब्द बना है, अदशन अर्थ में ही आती है। दूसरे, मैंने उनसे पूछा कि यदि उनके अनुसार किसी को घी खाने को दे दिया जाए जो उसे न पचे तो क्या उससे लाभ होगा? 'नहीं' उन्होंने उत्तर दिया। मैंने पूछा कि पचन प्रक्रिया क्या होती है? उन्होंने कहा कि हजम हो जाता है। मैंने कहा कि यह तो पर्यायवाची वाक्य हुआ, उसमे प्रक्रिया क्या होती है? उनके अनभिज्ञता प्रकट करने पर मैंने बताया आयुर्वेद के विद्वान् इस प्रक्रिया को भोजन का जठराग्नि द्वारा फूंका जाना बतलाते हैं। अतः वे अग्निमान्द्य (जठराग्नि के मंद) होने पर जठराग्नि को तीव्र करने की औषध देते हैं।

वैज्ञानिक नियम भी यही है कि वस्तु ऊर्जा तभी बनती है जब वह फूंकी जाए। स्कूटर, कार, बस, ट्रक, वायुयान आदि तभी तक दोड़ते हैं जब तक उनमें इंधन फुंकता रहे। इंधन फुकने से ऊर्जा बनती है वैसे ही यज्ञ में फूका घी पर्यावरण के शोधन के लिए ऊर्जा उत्पन्न करता है तथा उससे विश्व में अनेक रोगों से बचा जा सकता है। व्यक्ति भी घी खाएं, उससे भी पचकर ऊर्जा बनकर खाने वाले को शक्तिशाली बनाएगा किन्तु यज्ञ भी अवश्य करना चाहिए जिससे पर्यावरण भी ऊर्जित तथा स्वच्छ बन सके।

उपर्युक्त घटना मैंने दो दशाब्दी पूर्व के वैज्ञानिकों की यज्ञविषयक मनोभावना दिखलाने के लिए प्रदर्शित की थी। किन्तु मेरे हर्ष का पारावार न रहा जब मैंने चण्डीगढ़ में एक वैज्ञानिक आचार्य को वैज्ञानिक आधार पर यज्ञ का समर्थन करते देखा।

उन्होंने यज्ञ को निम्न भागों में विभक्त करके उसका विवेचन किया। मन्त्रोच्चारण, समिधा, यज्ञकुण्ड, घी तथा सामग्री। १. मन्त्रोच्चारण के विषय में उनका कहना था कि हिंसक लोग जो निरीह पशुओं को मारते हैं उनकी आह वातावरण को विक्षुब्ध कर देती हैं। शब्द नष्ट नहीं होता। वह जैसे हृदयाकाश को विक्षुब्ध करता है, वैसे ही वातावरण को भी विक्षुब्ध करता है। जहां हाहाकार मचा हो वहां सुख से सोया नहीं जा सकता। यही स्थिति वातावरण के साथ भी घटित होती है। सस्वर उच्चरित वेदमन्त्र वातावरण के ध्वनि प्रदूषण को नष्ट करके उसे विशुद्ध बनाते हैं।

२. समिधा के विषय में उन्होंने बताया कि वे प्रायः दो प्रकार की होती हैं—कम कार्बन वाली तथा अधिक कार्बन वाली। इनकी पहचान यह है कि जिसमें कीड़े शीघ्र लगें उनमें कार्बन डायोआक्साइड कम होती है और जिनमें कीड़े देर से लगे उनमें कार्बन डाइआक्साइड अधिक होती है। यज्ञ में आम, ढाक, पीपल, बरगद, बेल आदि की समिधाएं प्रयुक्त होती हैं। इनमें कीड़ा शीघ्र लगता है। अतः स्पष्ट है कि इनमें कार्बन कम होती है। गैसों में सर्वाधिक मारक मोनो कार्बनडाईआक्साइड होती है। यह इतनी हानिकारक होती है कि यदि शीत की रात मे पत्थर के कोयलों की अंगीठी अन्दर रखकर सोया जाए तो प्रातः शायद कोयले तो जलते मिलें किन्तु जिन्होंने अपना शीत मिटाने के लिए कोयले जलाये थे वे कदाचित् सदा की नींद सो चुके हों। किन्तु एक ईश्वरीय कृपा है कि यदि इस मारक मोनो कार्बनडाई आक्साइड को खुले में आक्सीजन जीवन मिल जाए तो यह कार्बन के रूप में परिणत हो जाती है तथा इतनी हानिकारक नहीं रहती। उपर्युक्त समिधाओं में मोनो कार्बनडाई आक्साइड तो होती नही, कार्बन भी कम मात्रा मे होता है तथा आक्सीजन के अधिक होने के कारण वह नाममात्र की भी हानि नही करती। यज्ञ के पास बैठने वाले रोगमुक्त तो होते देखे गए, किसी को कार्बन के कारण मरता नही सुना। भोपाल गैस कांड में कुछ परिवार यज्ञ के कारण ही मारक गैस से प्राण पा सके थे।

३ यज्ञ कुण्ड भी यज्ञ का महत्त्वपूर्ण अंग है। ऋषियों ने उसकी बनावट ऐसी रखी है कि वह नीचे जितना चौड़ा है ऊपर उससे चार गुणा चौकोर होता है। इस रचना का प्रयोजन है कुण्ड में अधिक से अधिक ताप उत्पन्न होना। कुण्ड में ताप की जितनी तीव्रता होगी आहुति द्रव्य उतनी ही तीव्रता से फैलकर पर्यावरण का शोधन करेगा। यज्ञ में समिधाएं फैंकी नही जाती अपितु क्रमशः एक के ऊपर एक करके लगाई जाती है। इनमें आक्सीजन के जाने में सहायता होती है। लोहे के यज्ञ कुण्डों में छेद करने का भी यही प्रयोजन है। यज्ञ कुण्ड के ऊपर जो जल के डालने की नाली बनाई जाती है उसका प्रयोजन यह है कि कुण्ड से निकली कार्बन को पानी अपने में समाहित कर लेता है। कार्बन जल के साथ मिलकर ग्लूकोज का काम करती है। शीतल पेयों में कार्बन ही तो मिली होती है। सोडावाटर शरीर को हानि नहीं पहुंचाता अपितु पाचन क्रिया को ठीक करता है। शेष बची कार्बन वृक्षादि का भोजन बन जाती है।

४ चौथी वस्तु घी है। यह प्रश्न होता है कि थोड़ा-सा घी पर्यावरण शोधन या अन्य लाभ कैसे कर सकता है? इस विषय में यह ज्ञातव्य है कि अग्नि में डाली घी की एक शीशी वाष्पीकरण होने पर १७०० शीशी बन जाती हैं वह पर्यावरण में भर जाता है जहां उसका शोधन करता है वहां हमारे द्वारा नासिका द्वारा पिया जाता है। विज्ञजन कहते हैं कि नाक से पिया जल दूध का काम करता है, दूध घी का तथा घी अमृत का। अतः यज्ञ में डाला घी कितना लाभप्रद हो जाता है यह इससे स्पष्ट है। जिन रोगियों को डाक्टर घी न खाने की सम्मति देते हैं तथा जिन्हें खाने पर हो घी हानि पहुंचाता है वे भी यज्ञ-विधि से घृत का भरपूर सेवन कर सकते हैं एवं घी उन्हें किञ्चित् भी हानि नहीं करता।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

त्रय स्वामी जी—आगे बढ़ो—सम्पूर्ण आर्यजनता आपके साथ

—राममोहनराय, एडवोकेट, पानीपत

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष पद पर मूर्द्धन्य विद्वान् तथा संन्यासी स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती के निर्वाचन होने पर समस्त आर्यजगत् में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई है। उनके निर्वाचन के उपरान्त प्रगतिशील तथा यथास्थितिवादी शक्तियों का संघर्ष नए दौर में पहुंच गया है। आर्यजगत् के नेतृत्व की अक्षमता के कारण, सिद्धान्त तथा प्रचार की जो स्थिति बन गई थी उससे आर्यसमाज का यह आन्दोलन धीरे-धीरे क्षीण हो चला था तथा स्थिति दयनीय व चिन्तनीय थी। ऐसी स्थिति में स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती, स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा स्वामी सुमेधानन्द जी इन त्रय संन्यासियों ने जो क्रान्ति का बिगुल बजाया है उससे आर्यजगत् ने एक नई अंगड़ाई ली है।

यथास्थितिवादी शक्तियां बौखला गई हैं तथा स्वामी जी महाराज जिनका पूरा जीवन—त्याग, तपस्या तथा बलिदान से परिपूर्ण है उन पर ओछे आरोप लगाकर निम्न हथकण्डों पर उतर आई है। ऐसे में लगता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायियों को फिर से माधवाचार्य के मुस्तण्डों से संघर्ष करना पड़ रहा है।

पानीपत से स्वामी जी महाराज (पूर्व श्री लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित) का गहरा सम्बन्ध रहा है। वे आर्य कालेज पानीपत के वर्षों तक प्राचार्य पद पर आसीन रहे हैं। पानीपत में कोई भी आर्यसंस्था ऐसी नहीं है जिसके विकास में प्रिंसिपल दीक्षित जी का योगदान न रहा हो। आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब पर जो किन्हीं अतिमहत्त्वाकांक्षी लोगों ने कब्जा करने की कोशिश की तो दीक्षित जी ने स्वामी ओमानन्द जी, स्व० श्री जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती व प्रो० शेरसिंह जी, श्री रामनाथ जी भल्ला के साथ मिलकर उन्हें पराजित किया तथा हरयाणा की आर्यसमाजों को बचाया। स्वयं पानीपत के कालेज पर अतिमहत्त्वाकांक्षी तत्त्वों ने कब्ज़ा कर लिया। प्रिंसिपल दीक्षित जी को हटा दिया गया। पानीपत के ही कुछ तत्त्वों की मदद से दीक्षित जी पर अनर्गल आरोप लगवाये गये। इसके बावजूद भी दीक्षित जी विचलित नहीं हुए और एक अडिग योद्धा की तरह अपने पथ पर चलते रहे। आज भी उन पराजित तत्त्वों की बौखलाहट समाप्त नहीं हुई है तथा वे इसे एक अवसर मानकर उस वृद्ध संन्यासी के खिलाफ यथास्थितिवादी तत्त्वों के साथ खड़े हैं तथा दिल्ली जाकर उनकी मदद करना चाहते हैं। इतिहास की निश्चितरूप से पुनरावृत्ति होगी तथा ऐसे तत्त्व पुनः पराजित होंगे।

सेवानिवृत्ति के पश्चात् श्री दीक्षित जी दिल्ली चले गए परन्तु पानीपत की आर्यसमाज तथा आर्यसंस्थाओं के लिए मार्गदर्शक बने रहे। वर्ष १९८३ में आर्यसमाज बड़ा बाजार, पानीपत की स्थापना शताब्दी बड़े धूमधाम से मनाई गई तथा उस वर्ष में आर्यसमाज ने घोषणा की वह शीघ्र ही वैदिक आश्रम की पानीपत में स्थापना करेगी। इस पूरे संकल्प के प्रेरणास्रोत श्री दीक्षित जी ही थे।

एक दिन समाचार मिला कि प्रिंसिपल श्री लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित घर से गायब होगये हैं व फिर सूचना मिली कि उन्होंने सन्यास ले लिया है तथा स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती नाम को लेकर कार्य करने का रास्ता चुना है। स्वामी जी महाराज प्रारम्भ से ही वैदिक सिद्धान्तों के भाष्यकार तथा प्रवक्ता हैं। अनेकों गूढ़ रहस्यों को उन्होंने सरलरूप में अपनी पुस्तकों में उतारा है। अनेक प्रश्नों के समाधान आपने अपनी पुस्तकों में देकर विरोधियों के मुंह को चुप किया है। स्वामी जी महाराज वैदिक साहित्य रचना की दृष्टि से दिल्ली में रहना चाहते थे। आर्यजनता ने आर्यजगत् तथा आर्यमर्यादा में विज्ञापन अवश्य पढ़े होंगे कि वृद्ध संन्यासी को दिल्ली में रहने के लिए आर्यसमाज में स्थान चाहिये, भोजन की व्यवस्था वे स्वयं करेंगे तथा प्रचार तथा अन्य सेवाओं से वे समाज की सेवा करेंगे। परन्तु—हाय—दिल्ली की लगभग २५० आर्यसमाजों में से एक ने भी उस वृद्ध आर्यसंन्यासी को न ओटा। आखिरकार आर्यसमाज माडल टाउन दिल्ली में रहे। पहले छः माह तक ठहरने की अनुमति दीगई फिर तीन माह इस शर्त पर बढ़ाई गई कि स्वामी जी अपनी व्यवस्था कर लेंगे। परन्तु इससे पूर्व ही उन्हें दिल का दौरा पड़ा। सेवा के लिए कोई नहीं क्योंकि आर्यसमाजें मठाधीशों के दबाव के नीचे थीं। सेवक ने घर पर सूचना दी कि स्वामी जी रुग्ण हैं यदि बचाना चाहते हो ले जाओ, आखिरकार एक मरणासन्न वृद्ध संन्यासी को एक सद्गृहस्थ अपने घर पर ले आया। यथास्थितिवादियों ने आर्यसमाज को किस कगार पर खड़ा कर दिया था, इसका बीभत्स उदाहरण इससे अधिक कोई नहीं हो सकता। एक संन्यासी के लिए आर्यसमाज में जगह नहीं है बल्कि वे लालाओं की दुकान, वकीलों के दफ्तर व चाटुकारों की जगह बनकर रह गई थी।

स्वामी जी महाराज को प्रभु ने शीघ्र ही स्वस्थ प्रदान किया तथा वे पुनः अपनी एक आंख, दुर्बल काया तथा कमजोर दिल के साथ महर्षि दयानन्द के मिशन के लिए लग गए।

स्वामी जी महाराज १९९० में आर्यसमाज पानीपत के वार्षिकोत्सव पर पधारे। स्वामी जी ने अपने गृहस्थ आश्रम के मित्रों सर्व श्री ठाकरदास जी बत्रा, रामानन्द जी सिंगला, मेघराज जी तथा योगेश्वर-चन्द जी के सम्मुख अपनी व्यथा रखते हुए कहा कि आर्यसमाज के संन्यासी को यदि गृहस्थ में ही सेवा करवानी पड़े तो ऐसे सन्यास का क्या लाभ? उन्होंने इन सज्जनों को उनके १९८४ में शताब्दी वर्ष के सकल्प को याद करवाया जिसमें उन्होंने वैदिक आश्रम की स्थापना पानीपत में करने को कहा था। आर्यसमाज पानीपत की अन्तरग सभा ने एक प्रस्ताव पारित कर वैदिक आश्रम पानीपत में बनाने की अपनी निष्ठा को दोहराया तथा स्वामी जी महाराज से प्रार्थना की कि वे ही इस आश्रम समिति के संविधान बनाने तथा कार्य योजना बनाने में मार्गदर्शन करें। आर्यसमाज की प्रार्थना पर स्वामी जी के मार्गदर्शन में यह कार्य कुछ आगे बढ़ा है। वैदिक आश्रम समिति की स्थापना होगई है जिसके अध्यक्ष स्वयं स्वामी विद्यानन्द जी महाराज है तथा आर्यजगत् के कई विद्वान् तथा संन्यासी इसमें सम्मिलित हैं। वैदिक आश्रम में वेदों तथा आयुर्वेद पर शोध-संस्थान, पुस्तकालय, यज्ञशाला, पुरोहित कक्षाएं, विदेशी भाषा में वैदिक साहित्य प्रकाशन, गोशाला, अतिथि-शाला के अतिरिक्त वृद्ध आश्रम की स्थापना है।

वृद्ध आश्रम को स्पष्ट करते हुए स्वामी जी महाराज ने स्पष्ट किया यह आश्रम ऐसे वृद्धों के लिए नहीं जिन्होंने पूरा जीवन गृहस्थ का सुख भोगा तथा अन्त में सन्तान द्वारा सेवा न होने पर आश्रम में आगए, ऐसा न होकर उन वृद्धों के लिए है जिन्होंने पूरा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार के लिए, घर-गृहस्थी की परवाह न की अब अन्त समय मे कहां जाएं—ऐसे वृद्ध विद्वानों तथा संन्यासियों के लिए होगा। इसके ही निमित्त पाकशाला, गोशाला, पुस्तकालय आदि होंगे। यह चिन्तन स्वामी जी महाराज का आश्रम के प्रति है। आर्यो याद रखो—यदि हमने अपने विद्वान् संन्यासियों की सेवा न की तो पूज्यपाद अमर स्वामी जी, स्वामी सत्यप्रकाश जी तथा स्वामी विद्यानन्द जी महाराज को आक्षेपित करवाने का पाप सभी को लगेगा। जो लोग स्वामी जी पर परिवार में रहने का आरोप लगाते हैं वे अपनी गिरेबान में झांके कि क्या वे किसी के दामाद, पुत्र व वकील की योग्यता के कारण ही तो पद पर आसीन नहीं हैं?

१९२० में पंजाब के अकालियों ने गुरुद्वारों की मठाधीशों से मुक्ति का आन्दोलन किया था उसमें उनका नारा था पहला छोटा गुरुद्वारा मुक्त करवाना है फिर बड़ा गुरुद्वारा (भारत देश) मुक्त करवाना है। आर्यसमाज के आन्दोलन को यथास्थितिवादी मठाधीशों की दीमक चाट जाना चाहती है जरूरत है एक बार नए परिवर्तन की।

त्रय स्वामी जी—आगे बढ़ो—सम्पूर्ण आर्यजनता आप के साथ है।

अंग्रेजों ने हरयाणा के १३४ गाँव जलाए

सन् १८५७ की आजादी की लड़ाई ने हरयाणा में जनक्रान्ति का रूप ले लिया था। बल्लभगढ़ के राजा नाहरसिंह, झज्जर के नवाब अब्दुर्रहमान खा, रेवाड़ी के राव तुलाराम व कृष्णगोपाल, फरुखनगर के नवाब अहमद कुली, बहादुरगढ के शासक जंग खां, हांसी के हुकमचन्द कानूनगो व मिर्जा मुनीर बेग, सिरसा के मट्टी सरदार, मदीना के चौधरी दौलता, मेवात के बहादुर मेवाती जैसे रणबांकुरों ने हरयाणा के कोने-कोने में इस संग्राम का नेतृत्व किया।

हरयाणा सदैव दिल्ली की विदेशी सत्ता के विरुद्ध संघर्षरत रहा है। ब्रिटिश सैनिक रिपोर्ट के अनुसार १८५७ में हरयाणा में १३४ गांवों को आग लगाकर जलाया गया। ५१ गांवों को नीलाम किया गया। एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार अकेले हिसार मण्डल में १८७ लोगों को मृत्युदण्ड दिया गया। समर भूमि मे वीरगति पाने वाले, सामूहिक फांसियो पर लटकाए जाने वाले, रोड रोलर के नीचे कुचले जाने वाले हजारों की संख्या में थे। हरयाणा की प्रत्येक गली और हर मोड़ पर १८५७ का स्वाधीनता संग्राम लड़ा गया।

अम्बाला छावनी मे पलटन ५ व ६० ने विद्रोह का श्रीगणेश किया, तो इसका साथ दूसरी कम्पनियों ने भी दिया। मेरठ की बागी सेना ने योजनाबद्ध तरीके से दिल्ली कूच का नारा देकर अगले दिन ११ मई को लालकिले पर अधिकार कर लिया। अंग्रेज फौजी यहां से खदेड दिए गए। मेरठ के सैनिक विद्रोह ने दिल्ली के लालकिले तक पहुंचते-पहुंचते जनक्रान्ति का रूप ले लिया इसके अगवा राव कृष्णगोपाल थे। यह मेरठ नगर मे कोतवाल थे। लालकिले मे जिस सैनिक टुकड़ी ने सबसे पहले प्रवेश किया था उसके नायक यही कृष्ण गोपाल रेवाड़ी के शासक राव तुलाराम के अनुज थे।

१२ मई, १८५७ को दिल्ली के लालकिले में आम दरबार आयोजित कर बहादुरशाह जफर को हिन्दुस्तान का शासक घोषित कर दिया गया। यह घटनाक्रम इतनी तेजी के साथ हुआ कि अंग्रेज देखते रह गए। इस दरबार मे हरयाणा की ८ रियासतों बल्लभगढ़, पटौदी, रेवाडी, फरुखनगर, झज्जर, बहादुरगढ़ और लोहारु के प्रतिनिधियो के अतिरिक्त प्रमुख खापो के अगुआ शामिल हुए थे। इस दरबार में निर्णय लिया गया कि देश के शेष भागों से गोरी सेना को निकाल दिया जाए तथा आजाद किए गए क्षेत्रों का प्रशासन पंचायतें, खापें, सवखापें सम्भालें।

दिल्ली में बहादुरशाह जफर की ताजपोशी के समाचार के साथ हरयाणा के प्रत्येक गाव और कस्बे मे जनक्रान्ति का सूत्रपात हुआ। अकेले रोहतक ने देशभक्त सेना की सहायता के लिए दो लाख रुपये की राशि दिल्ली भेजी। अम्बाला, करनाल, रोहतक और हांसी गोरी सेना की बड़ी छावनियां थी। दिल्ली से एक देशभक्त सैनिक टुकड़ी रोहतक भेजी गई।

अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर ने पहले तो टुकड़ी का सामना किया पर जब जनता विद्रोह में शामिल हो गई तो डिप्टी कमिश्नर गोहाना के रास्ते पानीपत भाग खड़ा हुआ। विद्रोहियों ने जेल तोड़कर बन्दी भगा दिए। सरकारी कोष लूट लिया। बंगलों को आग लगा दी। पूरे जिला रोहतक में जनक्रान्ति की लपटें फैल गई। महम, मदीना, सांपला, सोनीपत की सरकारी चुंगियों पर देशभक्तों का अधिकार हो गया। रोहतक में लाइट इन्फैन्टरी, नैटिव इन्फैन्टरी और गिरनेडियर सैनिक कम्पनियो ने भी खुला विद्रोह कर जनता का साथ दिया। पूरे जिले से गोरी सरकार का सफाया हो गया।

हिसार में २९ मई १८५७ को विद्रोह का बिगुल बजा तो मंगाली, हाजमपुर, खरड़ अलीपुर, जमालपुर, पुट्ठी मंगल खां, भाटोल रांगडान, रोहनात आदि गांव के हजारों ग्रामीण हाथों में लाठी-भाले लिए हांसी तथा हिसार पर आक्रमणकारी हुए। उस दिन हिसार मे १२ अंग्रेज अधिकारी तथा हांसी मे ११ अंग्रेज अधिकारी मारे गए। जेलें तोड़कर कैदी भगा दिए गए। सरकारी खजाना लूट लिया गया। हिसार के डिप्टी कमिश्नर वेडर्बर्न को उसकी अदालत के सामने गोली मार दी गई। हांसी में तहसीलदार को किले पर गोली चलाकर पुट्ठी मंगल खां के लोगों ने मार दिया।

सिरसा, करनाल, पानीपत, थानेसर, कैथल, असंध, अम्बाला नगरों में जनक्रान्ति इतनी प्रबल थी कि गोरी सेना इनके सामने टिक नहीं सकी। जिला गुड़गांव के मेवात क्षेत्र में मेवातियों ने अंग्रेज दमनकारियों का मुकाबला किया पूरे मेवात पर देशभक्तों ने अधिकार कर लिया था।

हरयाणा की ८ रियासतों में से रेवाड़ी, झज्जर, बल्लभगढ़, बहादुरगढ़ और फरुखनगर ने बहादुरशाह जफर के नेतृत्व में आजादी की लडाई शुरू कर दी। हरयाणा की ये रियासते दिल्ली को अनाज, बारूद, सिपाही और नकद रुपया भेजा करती थी। राव तुलाराम, राजा नाहरसिंह, अब्दुर्रहमान खा का बहादुरशाह जफर से पत्र व्यवहार होता था।

१४ सितम्बर, १८५७ को जब दिल्ली पर पुनः अंग्रेजों का कब्जा हो गया तो बहादुरशाह जफर को बन्दी बनाकर रंगून निर्वासित कर दिया गया। जफर के दोनो बेटों की हत्या कर दी गई। दिल्ली के इस विद्रोह में २६ हजार स्त्री, पुरुष तथा बच्चे मारे गए। दिल्ली हाथ से निकलते ही हरयाणा के देशभक्त सैनिकों तथा जननेताओं की कमर टूट गई। ४ महीने ४ दिन तक हरयाणा अंग्रेजों से मुक्त रहा था। दिल्ली पतन के पश्चात् हरयाणा की देशभक्त रियासतो और जनता पर क्या बीती—यह अन्याय, अत्याचार, खून और आंसुओं की दास्तां है। अंग्रेजों को फिर से हरयाणा मे जमाने के लिए देसी रियासतों मे नाभा, जीन्द, पटियाला और बीकानेर की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ये रियासते सैनिकों, बारूद और रसद से अंग्रेजों को सहायता करती थी।

रेवाड़ी के राव तुलाराम को अंग्रेज अपना शत्रु समझते थे। जींद, पटियाला और नाभा की रियासतों से सेना लेकर कर्नल गेरार्ड १६ नवम्बर, १८५७ को राव तुलाराम का पीछा करता नारनौल के निकट नसीबपुर के मैदान में आक्रमणकारी हुआ। राव तुलाराम ने ५ हजार सैनिको तथा ६ तोपो से इसका मुकाबला किया। नसीबपुर की घाटी में घमासान युद्ध हुआ। पहले तो देशभक्त सेना का पलड़ा भारी रहा पर गोरी सेना के साथ देसी रियासतों की भारी सेना और आधुनिक हथियारों ने नसीबपुर की मिट्टी को रक्तरंजित कर दिया। युद्ध में राव कृष्ण गोपाल और राव रामलाल जैसे महान् योद्धा वीरगति पा गए।

नवाब झज्जर अब्दुर्रहमान खा को धोखे से बन्दी बनाकर लालकिला ले जाया गया। मुकदमे का ढोंग रचकर नवाब को २३ दिसम्बर, १८५७ को लालकिले के सामने फासी पर लटका दिया गया, रियासत जब्त कर ली गई। झज्जर की लाल डिग्गी में सामूहिक फांसियां लगाई गई।

बल्लभगढ के राजा नाहरसिंह को भी गिरफ्तार कर लालकिले लाया गया। नवाब फरुखनगर अहमद कुली को भी सार्वजनिक रूप से लालकिले के सामने फांसी पर लटका दिया। बहादुरगढ़ के नवाब जंग खा से रियासत छीनकर लाहौर निर्वासित कर दिया गया।

दूसरी ओर जिन रियासतों ने आजादी के आन्दोलन को कुचलने के लिए अंग्रेजों को सहायता की थी, उनमें पटियाला के महाराजा को झज्जर राज्य के नारनौल का बड़ा क्षेत्र पुरस्कार रूप में दिया गया। बीकानेर के राजा को सिरसा के ४१ गांव जो आजकल श्रीगंगानगर जिला में टिबी तहसील के अन्तर्गत हैं प्रदान किए गए। नाभा रियासत के शासक को झज्जर राज्य के कांटी और बावल परगने दिए गए। जीन्द के महाराजा को दादरी की पूरी तहसील और कानोड के कई क्षेत्र मिले। इनके अतिरिक्त जिन लोगों ने १८५७ में अंग्रेजों को पनाह दी थी अथवा ब्रिटिश सेना की सहायता की थी उन्हें जागीरें दी गई।

होम्स ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि फौजी अदालत पहले ही इस बात की शपथ लेती थी कि अपराधी ने अपराध किया हो या न किया हो उसे मौत की सजा दी जाएगी। इससे कल्पना की जा सकती है कि जनक्रान्ति करने वालों तथा निर्दोषों पर क्या बीती होगी। वीर सावरकर ने अपनी पुस्तक 'भारतीय स्वतन्त्रता समर' में लिखा है अम्बाला और दिल्ली के बीच हरयाणा के लोगों को कतारों में खड़ा कर राक्षसी तरीके से कत्ल किया जाता था। —नरेश शास्त्री

(५ अगस्त, नवभारत टाइम्स से साभार)

बाढड़ा में अश्वमेध महायज्ञ सम्पन्न

पूर्व घोषित सूचना अनुसार बाढड़ा में १५ अगस्त से प्रारम्भ होकर १८ अगस्त मध्याह्न १२ बजे इस महायज्ञ की पूर्णाहुति होगई। इन चार दिनों में हजारों नरनारियों ने इस आयोजन में भाग लिया। अनेकों व्यक्तियों और नवयुवकों ने मद्यपान तथा बीड़ी आदि दुर्व्यसनों के त्याग का संकल्प लिया तथा यज्ञोपवीत ग्रहण किये। एक क्विंटल से अधिक देशी घी तथा दो बोरी हवन सामग्रीवाले इस महायज्ञ से वायुमण्डल अत्यन्त शुद्ध हुआ, चारों ओर सुगन्धि फैल गई।

सुखद वृष्टि

महायज्ञ के पूर्णाहुति के तुरन्त बाद लगभग एक घण्टे तक सुखद वृष्टि (वर्षा) हुई, जिससे लोगों में यज्ञ के प्रति और अधिक श्रद्धा उत्पन्न हुई। यह वर्षा श्रावणी की फसल के लिये काफी लाभदायक सिद्ध होगी। पूरे इलाके में इस महायज्ञ की चर्चा है।

शोभा यात्रा

दिनांक १७ अगस्त शाम ६ बजे से ७ बजे तक यज्ञ-स्थल से विशाल शोभायात्रा (जुलूस) प्रारम्भ हुई जो बस अड्डे से होती हुई बाढड़ा गाव की प्रमुख गलियों से होकर गुजरी। कन्या गुरुकुल पंचगांव की छात्राएं शराब हटाओ, देश बचाओ, आर्य राष्ट्र बनायेंगे, भ्रष्टाचार मिटायेंगे आदि नारों का उद्घोष करते हुये नारी जागरण के स्वप्न को साकार कर रही थी। जुलूस का नेतृत्व श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी कर रहे थे। जुलूस के प्रभाव से रात्रि के प्रचार में ग्रामीण महिलाओं ने भारी संख्या में भाग लिया।

स्वामी ओमानन्द सम्मानित

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती (पूर्व आचार्य भगवान्देव) की महान् सेवाओं को स्मरण करते हुये बाढड़ा इलाके की ओर से इस महायज्ञ के संयोजक कप्तान यज्ञपाल शास्त्री द्वारा स्वामी जी को ११ हजार रुपये की थैली भेंट की गई तथा वानप्रस्थी योगमुनि जी ने स्वामी जी को शाल भेंट किया।

शराबबन्दी सम्मेलन

१८ अगस्त को दोपहर बाद इलाके के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री मंगलाराम पटेल की अध्यक्षता में शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसके प्रमुख वक्ता श्री रामेहर एडवोकेट रोहतक, पूर्व एस० डी० एम० चौ० सुबेसिंह, गुणपालसिंह सांगवान, धर्मपाल शास्त्री "धीर", प्रि० बलवीरसिंह, अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, डा० धर्मपाल श्योराण, पं० सत्यनारायण, युवानेता रामावतार आर्य तथा कप्तान यज्ञपाल शास्त्री आदि ने सम्बोधित किया। मंच संचालन प्रो० सत्यवीर शास्त्री ने किया।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द स्मारक

गिगनाऊ यज्ञ अवसर पर घोषित लोहारू में बनाये जानेवाले स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के स्मारक के लिये इस महायज्ञ की वेदी से स्वामी ओमानन्द जी की अपील पर एक लाख रुपये की राशि के वचन प्राप्त हुये।

—कप्तान यज्ञपाल शास्त्री

बाढड़ा में आर्यसमाज की स्थापना

दिनांक १५ अगस्त से १८ अगस्त तक सब तहसील मुख्यालय बाढड़ा में विशाल अश्वमेध महायज्ञ एवं शराबबन्दी सम्मेलन सुचारुरूप से सम्पन्न हुआ। दानस्वरूप लगभग ४० हजार रुपये की राशि प्राप्त हुई तथा कुल खर्च लगभग ५० हजार रुपये हुआ। इस पावन अवसर पर महायज्ञ के संयोजक कप्तान यज्ञपाल शास्त्री ने बाढड़ा में आर्यसमाज की स्थापना की घोषणा की तथा स्वामी ओमानन्द सरस्वती प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा ने इस घोषणा का स्वागत किया और अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

शीघ्र ही आर्यसमाज बाढड़ा का चुनाव कर लिया जायेगा।

—कप्तान यज्ञपाल शास्त्री

आर्यवीरो होश सम्भालो

आर्यवीरो होश सम्भालो, वृथा मत अभिमान करो।
पावन वैदिकधर्म निभाओ, दुनिया का कल्याण करो॥

आर्यवीर वही है जो, संकट में न घबराता है।
अत्याचारी, दुष्टजनों से, निर्भय हो भिड़ जाता है॥
दुखिया, दीन, अनाथों को जो, अपने गले लगाता है।
चरित्रवान्, विद्वानों को, श्रद्धा से शीश झुकाता है॥

वेद पढ़ो, गुणवान बनो तुम, भले-बुरे का ध्यान करो।
पावन वैदिकधर्म निभाओ, दुनिया का कल्याण करो॥

वेदविरोधी, नीच विधर्मी, घूम रहे हैं बस्ता में।
लाखों रावण गर्ज रहे हैं, श्रीराम की बस्ती में॥
सभी तरह आगई गिरावट, भारत की अब हस्ती में।
धर्म, कर्म को भूल गए, तुम भी परिवार परस्ती में॥

ईश्वरभक्त बनो सच्चे तुम, पापों का अवसान करो।
पावन वैदिकधर्म निभाओ, दुनिया का कल्याण करो॥

फूट भयंकर बीमारी है, दुनिया से तुम कहते हो।
भारी अचरज है हमको, आपस में लड़ते रहते हो॥
छोड़ दिया सिद्धान्त, ढोंग की धारा में क्यों बहते हो।
एक दूसरे के दुश्मन बन, कष्ट रात-दिन सहते हो॥

पुरखों का गौरव अपनाओ, सद्ग्रन्थों का मान करो।
पावन वैदिकधर्म निभाओ, दुनिया का कल्याण करो॥

धन साधन है, साध्य नहीं है, पड़ा यहीं रह जाएगा।
ऊंचे महल, अटारी, बंगले, साथ न कुछ जा पाएगा॥
बेटे, पोते, पत्नी, भ्राता, कोई न साथ निभाएगा।
धर्म एक सच्चा साथी है, अन्त में आएगा॥

स्वाध्यायशील बनो तुम सच्चे, अर्जित सच्चा ज्ञान करो।
पावन वैदिकधर्म निभाओ, दुनिया का कल्याण करो॥

जगत् गुरु ऋषि दयानन्द के, वीर सैनिको जागो तुम।
करो भलाई, तजो बुराई, बुरी भावना त्यागो तुम॥
सोच समझकर चलो, विश्व के, पीछे व्यर्थ न भागो तुम।
परमेश्वर से शाम-सवेरे, मेधा बुद्धि मांगो तुम॥

नन्दलाल निर्भय प्रभुवर का, हर क्षण शुभ गुणगान करो।
पावन वैदिकधर्म निभाओ, दुनिया का कल्याण करो॥

—नन्दलाल निर्भय, भजनोपदेशक
ग्राम व पोस्ट—बहीन जिला फरीदाबाद

सद्शिक्षा को अपनाओ

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

सुख से रहना यदि जीवन में तो सद्शिक्षा को अपनाओ।
जीवन का सुख पूर्ण इसी में स्नेह सूत्र में बंध जाओ॥

स्वजनों से साथ बन करके प्रसून रहो अरविन्द के।
दुर्जन को वज्र समान रहो बन बांके वीर तुम हिन्द के॥
एकता और संगठन में ही सदा आनन्द पाओ॥१॥

बुरी लगेगी बात मगर कह देता हूं मैं खरी-खरी।
द्वेष घृणा अभिमान ईर्ष्या की सर पर बांधी गठरी॥
दुःख दलदल में फंसे रहे बाहर नहीं निकल पाओ॥२॥

ये मन ही पथभ्रष्ट करे खोटी करनी से डरे नहीं।
छोड़ दे आशा ये जगत् तमाशा मन की मानी करो नहीं॥
काबू में से निकल गये तो आगे कैसे बढ़ पाओ॥३॥

ये मन चाहे तो तख्तोताज हिला सकता है।
ये मन चाहे तो तुझे खाक में मिला सकता है॥
रखिये निज नेह निगाह राह सच्ची पर चलते जाओ।
जीवन का सुख पूर्ण इसी में स्नेह सूत्र में बंध जाओ॥४॥

आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर (रेवाड़ी) का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर का ५३वां (तरेपनवां) वार्षिकोत्सव भादवा सुदी पूर्णिमा व आश्विन बदी प्रथमा सम्वत् २०५२ तदनुसार ९ तथा १० सितम्बर सन् १९९५ शनिवार, रविवार को बड़ी धूमधाम से मनाया जारहा है।

इस शुभावसर पर भारत प्रसिद्ध कर्मठ संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी महामन्त्री सार्वदेशिक सभा, स्वामी ब्रह्मवेष संचालक आदिवासी गुरुकुल बासवाड़ा राजस्थान, स्वामी जीवानन्द जी नैष्ठिक कुलपति और महात्मा धर्मवीर जी संचालक गुरुकुल किशनगढ़ घासेड़ा तथा प्रसिद्ध विद्वान् वक्ता श्री रूपचन्द जी दीपक लखनऊ, बहन डा० सुमेधा आर्या प्रचार्या गुरुकुल चोटीपुरा मुरादाबाद, बहन सुमित्रा आर्या संस्कृत आचार्या रा० व० मा० वि० धांगड़ा हिसार एवं भारत प्रसिद्ध वेदवेत्ता मधुर गायक श्री नरदेव जी भरतपुर, म० खेमचन्द (क्रान्तिकारी) आर्य-प्रतिनिधि सभा हरयाणा, पं० रामरत्न आर्य भिवानी, बहन मनोरमा आर्या अलीगढ़, म० धर्मपाल जी जगमलहेड़ी और म० कंवरपाल जी बीगढा तथा इलाके के विद्वान् व भजनोपदेशक महानुभाव पधार रहे हैं। इस अवसर पर विविध सम्मेलनों का आयोजन भी किया जा रहा है।

वैदिक साधनाश्रम शादीपुर यमुनानगर में अश्वमेध यज्ञ

श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय वैदिक साधनाश्रम शादीपुर यमुनानगर में दिनांक २६ तथा २७ अगस्त दिन शनिवार तथा रविवार को अश्वमेध यज्ञ बड़ी धूमधाम से किया जारहा है जिसकी अध्यक्षता निष्ठावान्, त्यागी, तपस्वी, तपोधन, संन्यासी आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा केप्रधान पूज्यपाद श्रीस्वामी ओमानन्द जी सरस्वती करेंगे। इस यज्ञ में श्री स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती तथा श्री स्वामी सदानन्द जी और सभा की प्रसिद्ध भजनमण्डली श्री पं० चिरंजीलाल आदि महानुभाव पधार रहे हैं।

आप सभी से प्रार्थना है कि इस महान् यज्ञ में समय पर भाग लेकर पुण्य के भागी बनें।

कार्यक्रम—प्रात. ८ से १० बजे तक, सायकाल २ से ५-३० बजे तक

निवेदक—सरक्षक मदनलाल धान्दुवा आचार्य पं० वागीश्वर जी, प्रधान जयपालसिंह, मन्त्री डा० गेन्दाराम आर्य, कोषाध्यक्ष हरिराम।

शराबबन्दी गीत

वेदपाल मलिक, गाव खरावड, जिला रोहतक

दारु पीणी छोड दे ना पिहर चली जाऊगी।
कितणे चक्कर काट लिए फेर नही आऊंगी॥

पी के दारु सारा दिन तू गलियों के म्हा पड़ा रहे।
जब भी देखे तब तू ठेके आगे खड़ा रहे।
किसे-किसे तै लड़ा रहे किम-किस न समझाऊगी।
दारु पीणी···· ॥

भूखे बैठे सारे बालक धरती गहणे टेक दी।
जितनी मेरी टूम थी सारी तनै बेच दी।
मैं भी तनै छेत दो अपणे भाई नै बताऊंगी।
दारु पीणी··· ॥

सारे बिस्तर पाट रहे बाण नही खाट म।
बालकों की फीस ना भरया तू बोतल गावे आट म।
रहे गुंड तेरी साथ मे सब नै धमकाऊगी।
दारु पीणी··· ··· ॥

अगड पड़ौसी गाल देवे तेरे त कोए गुन्डा ना।
वेदपाल कलावड आला मेरे पिता न ढून्डा ना।
तेरे त कोए गुन्डा ना मैं कुए में पड़ जाऊंगी।
दारु पीणी छोड़ दे ना पिहर चली जाऊगी।

आर्यसमाज रेवाड़ी का उत्सव

आर्यसमाज रेवाड़ी का महोत्सव दिनांक २२, २३ व २४ सितम्बर १९९५, शुक्र, शनि तथा रविवार को मनाने का निश्चय किया गया है। महोत्सव के साथ ही दिनांक १९ सितम्बर १९९५ से यजुर्वेद पारायणयज्ञ का भी आयोजन करने का निश्चय किया गया है जिसकी पूर्णाहुति २४ सितम्बर रविवार को प्रातःकाल होगी।

इस सम्पूर्ण कार्यक्रम में आर्यजगत् के प्रकाण्ड विद्वान्, व्याख्याता, विचारक, साधु-महात्मा एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक भाग लेंगे।

दिनांक २२ को एक विशाल शोभायात्रा के आयोजन का भी निश्चय है जिसमें रेवाड़ी जिले एवं पास-पड़ोस की आर्यसमाजें अपने-अपने बैनरों सहित भाग लेंगी।

मन्त्री आर्यसमाज रेवाड़ी

सूचना

आर्यसमाज रेवाड़ी द्वारा गत वर्षों की भांति कृष्ण जन्माष्टमी पर्व के उपलक्ष्य में इस वर्ष भी दिनांक १७ अगस्त १९९५ को विद्यार्थियों की भाषण प्रतियोगिता आर्यसमाज मन्दिर में आयोजित की गई। इसमें रेवाड़ी नगर के कई विद्यालयों के नवम व दशम श्रेणी के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

"श्रीकृष्ण जी से हम क्या सीखें" विषय पर विद्यार्थियों ने अपने सुन्दर और भावपूर्ण भाषणों में योगिराज श्रीकृष्ण जी के जीवन से बहुत सारी शिक्षा प्राप्त करने का बखान करते हुए श्रद्धापूर्वक श्रद्धांजलि प्रस्तुत की।

विजयी वक्ताओं को आर्यसमाज की ओर से पुरस्कार स्वरूप राष्ट्रीयता जागरण परक एवं मूल्यवान् आर्यसाहित्य भेंट किया गया। भाषण प्रतियोगिता में उपस्थित सभी अध्यापकों और अध्यापिकाओं को सत्यार्थप्रकाश भेंट किए गए एवं निर्णायक मण्डल के पांचों विद्वानों को ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका भेंट की गई।

भाषण प्रतियोगिता को सफल बनाने में पं० नाथूराम शर्मा जी, श्री सुखराम आर्य जी एवं अन्य कई आर्य महानुभावों ने अमूल्य योगदान किया।

रामकुमार शर्मा, मन्त्री आर्यसमाज रेवाड़ी

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सभ्यता की रक्षा के लिए संस्कृत भाषा के विकास पर बल देना चाहिए। हरयाणा के मुख्यमन्त्री को सभा ने चेतावनी देते हुए कहा कि वे अपने राजनैतिक स्वार्थ के लिए संस्कृत तथा हिन्दी की उपेक्षा न करे तथा पंजाबी भाषा को बलात् थोंपने का यत्न न करें अन्यथा आर्य-जनता उनकी इस नीति का डटकर विरोध करेगी।

७. २४ अक्तूबर को सूर्यग्रहण मेले के अवसर पर महर्षि दयानन्द वैदिकधाम कुरुक्षेत्र में २२ से २४ अक्तूबर तक अश्वमेध यज्ञ तथा वैदिकधर्म प्रचारार्थ शिविर लगाने का सभा ने निश्चय किया है। इस अवसर पर लाखों नर-नारी धार्मिक भावना से कुरुक्षेत्र आते हैं। अतः उन्हें वैदिकधर्म की ओर आकर्षित करने के लिए वैदिक विद्वानों के उपदेश तथा वैदिक साहित्य का प्रचार प्रसार किया जावेगा। अतः सभा ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्य देवव्रत जी, सभा के उपदेशक पं० चन्द्रपाल सिद्धान्त शास्त्री, सभा के भजनोपदेशक पं० शेरसिंह, पं० चिरंजीलाल के इस शिविर को सफल करने हेतु प्रचार तथा अन्न, धन सग्रह कार्य सौंपा है। आर्यसमाज के अधिकारियों से इस शुभ कार्य में अधिक से अधिक दान देने की अपील की है।

८. सभा ने आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ करने तथा भावी योजना तैयार करने के लिए शीघ्र ही प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन करने का भी निश्चय किया है। इसका स्थान तथा तिथि शीघ्र नियत करके आर्यजनता को सूचित कर दिया जावेगा।

९ आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की आय विद्या परिषद् की कार्य समिति की बैठक ३ सितम्बर ९५ रविवार को प्रातः ११ बजे सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक में करने का निश्चय किया गया है। इस बैठक में आर्य विद्यालयों को सुचारु रूप से चलाने तथा आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार का साधन तैयार करने पर विचार किया जावेगा।

—सभामन्त्री

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत

प्रधान—श्री मेघराज आर्य, उपप्रधान—श्री योगेश्वरचन्द्र आर्य, मन्त्री—श्री वीरेन्द्र सिंगला, उपमन्त्री—श्री सुलेखचन्द्र, प्रचारमन्त्री—श्री ठाकुरदास बत्रा, कोषाध्यक्ष—श्री आदर्शकुमार गुप्ता, पुस्तकाध्यक्ष—श्री प्रेमचन्द्र आर्य।

आर्यसमाज खैल बाजार पानीपत

प्रधान—सेठ रामकिशन जी, कार्यकर्त्ता प्रधान—श्री कृष्णलाल आर्य, मन्त्री—श्री बलराज जी रलावायो, कोषाध्यक्ष—श्री राजेश आर्य, उपप्रधान—श्री देवराज जी व श्री आत्माराम जी, उपमन्त्री—श्री जयकिशन जी, प्रचारमन्त्री—श्री कस्तूरीलाल जी, आडिटर—श्री मदनलाल डाबर, भंडारी एवं प्रबन्धक—श्री राजेन्द्रपाल जी।

आर्यसमाज कैलाश ग्रेटर नई दिल्ली

प्रधान—श्री मोहिन्द्रप्रताप, मन्त्री—प्राणनाथ वई, कोषाध्यक्ष—अर्जुननाथ भल्ला।

आर्यसमाज घिराये (हिसार)

प्रधान—श्री रामफल आर्य, उपप्रधान—श्री रणवीरसिंह आर्य, मन्त्री—श्री राधेश्याम आर्य, उपमन्त्री—श्री महेन्द्रसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री दयानन्द आर्य, संगठन मन्त्री—श्री ईश्वरसिंह आर्य।

आर्यसमाज सोनीपत नगर

प्रधान—श्री हरिश्चन्द्र "नाज", वरिष्ठ उपप्रधान—श्री सत्यप्रकाश सुखीजा, उपप्रधान—श्री कंवरभान बत्रा, मन्त्री—श्री वेदप्रकाश आर्य, उपमन्त्री—श्री नित्यप्रिय आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री मनोहरलाल सपड़ा, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री सुदर्शनकुमार, लेखा निरीक्षक—श्री कृष्णकुमार आर्य।

आर्यसमाज रादौर (यमुनानगर)

निरीक्षक—पूज्य स्वामी सेवकानन्द, प्रधान—श्रीमती आशा नैय्यर/श्री हरिश्चन्द्र आर्य, मन्त्री—श्री सत्यकाम आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री विद्याभूषण, उपप्रधान—श्रीमती विमला बंसल एवं श्री जोगिन्द्रकुमार रावल, उपमन्त्री—श्री अनूप आर्य, प्रचारमन्त्री—श्री बनारसीलाल आर्य, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्रीमती शांता बंसल एवं सरलादेवी।

आर्यसमाज नरवाना जिला जीन्द

प्रधान—श्री इन्द्रजीत सुपुत्र ला० नन्दलाल, उपप्रधान—श्री जितेन्द्रनाथ, उपप्रधान—श्री जोगीराम, मन्त्री—श्री राधाकृष्ण आर्य, उपमन्त्री—श्री इन्द्रजीत मित्तल, कोषाध्यक्ष—श्री कर्मवीर, पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री रणवीर आर्य, स्टोर इंचार्ज—पवनकुमार, अधिष्ठाता आर्य वीर दल—श्री सत्यपाल शास्त्री, आय व्यय निरीक्षक—श्री शशिकान्त।

आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद

प्रधान—श्रीमती डा० विमला महता (अध्यक्ष महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान फरीदाबाद), उपप्रधान—श्री दर्शनलाल मलिक, मन्त्री—श्री बलवीरसिंह मलिक, उपमन्त्री—श्री संजय आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री महेशचन्द्र गुप्त, सहकोषाध्यक्ष—श्री कुलभूषण आर्य, अन्तरंग सदस्य—श्री राधेश्याम, श्री सोमदेव आर्य, श्री महावीरप्रसाद मंगला, श्री वेदप्रकाश आर्य, श्री मेघराज, श्री ओमप्रकाश आर्य, श्री सुरेश बजाना एडवोकेट।

आर्यसमाज संगरूर (पंजाब)

प्रधान—श्री वीरेन्द्रकुमार, मन्त्री—श्री चन्द्रप्रकाश, कोषाध्यक्ष—श्री राजेन्द्र आर्य, प्रचारमन्त्री—श्री महेशकुमार महाशय।

शराब बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इनसे दूर रहें।

डा० धर्मपाल श्योराण, सूबेदार मेजर ब्रह्मपाल को

मातृशोक

गांव काकड़ौली हुठी (बाढडा इलाका) जिला भिवानी के प्रतिष्ठित परिवार डा० धर्मपाल की माता जी नानटोदेवी का दिनांक २० अगस्त रविवार को ८५ वर्ष की आयु में स्वर्गवास होगया। आप एक नेक, मिलनसार और धार्मिक महिला थीं। अन्त समय में केवल एक दिन बीमार हुईं और बेटे-बेटी, नाती-पोतों से सम्पन्न परिवार को छोड़कर गई हैं।

स्मरणीय है कि पूर्व सभामन्त्री चौ० सूबेसिंह एम० डी० एम० की आप सास थी। परमपिता परमेश्वर दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं परिवारजनों को शान्ति प्रदान करे।

—कप्तान यज्ञपाल शास्त्री
पंचगांव (भिवानी)

यज्ञ कराओ, शराब हटाओ, राष्ट्र बचाओ।

गजल

—"नाज" सोनीपती

असली बात छुपाने खातिर, घड़ते हैं अफसाने लोग।
असलियत को वे क्या देखें, जो है अन्धे काने लोग॥

सब्ज बाग के मन्जर दिखलाने में माहिर हैं नेता।
जिनकी बातों में आते हैं हम जैसे अन्जाने लोग॥

कहते कुछ हैं, करते कुछ हैं, जिनका धर्म ईमान नहीं।
सीधे सादे लोगों को आ जाते हैं, बहकाने लोग॥

धूल झोंककर आंखों में, झट अपना काम निकालेंगे।
कदम-कदम पर मिल जाएंगे, ऐसे यार सयाने लोग॥

धोखा देना, धोखा करना, आम रिवाज में शामिल है।
जाल बिछाने की खातिर, बुनते हैं ताने-बाने लोग॥

जेब काटने और पराया माल उड़ाने का धन्धा।
चुपके-चुपके जारी रखते है जाने पहचाने लोग॥

रिश्वत से भी ज्यादा मोहलक, फूट पड़ी है एक बवा।
अपना उल्लू सीधा करते हैं, देकर नजराने लोग॥

वक्त पड़े तो कोई बिरला, साथ किसी का देता है।
वरना मतलब हल होने पर, लगते हैं कतराने लोग॥

शुरू-शुरू से जो अपने, अन्जाम पे आंख नहीं रखते।
कर चुकने के बाद वे आखिर, लगते हैं पछताने लोग॥

सुनकर बातें दीवानों की, हैरत में पड़ जाओगे।
बात करेंगे फरजानों से, जब मिलकर दीवाने लोग॥

शोर सुनाई देता है कि शेर आया, वह शेर आया।
"नाज" अब तक चरवाहे का, अन्दाज नहीं पहचाने लोग॥

(पृष्ठ २ का शेष)

५. पांचवीं वस्तु सामग्री है। सामग्री में चार प्रकार के पदार्थ होते हैं—पुष्टिकारक, मिष्ट, सुगन्धित तथा रोगनाशक। ये पर्यावरण में पुष्टि, माधुर्य, सुगन्ध भरते तथा उसे रोग के कीटाणुओं से रहित करते हैं। इससे सब प्राणियों के शरीर तथा अन्न, जल आदि पुष्ट, मधुर, सुगन्धित तथा रोग-रहित होते हैं। यही संसार में सुख फैलाने का मार्ग है। रोगनाश के लिए यज्ञ चिकित्सा अत्यन्त उपयोगी है। यज्ञ में डालने से घी की भांति औषधि भी अनेक गुण लाभ करती है। चिकित्सा पद्धति में इंजेक्शन को सर्वतः लाभकारी माना जाता है। क्योंकि वह तुरन्त औषधि को रक्त में मिला देता है। खायी औषधि का रस पचने पर रक्त में मिलकर लाभ करती है। इंजेक्शन के लगने में कष्ट तो होता ही है किन्तु कभी-कभी तो वह पककर बहुत अधिक कष्ट का कारण बन जाता है। इसके विपरीत यज्ञ से निकला वाष्प श्वास के साथ तुरन्त रक्त में मिलकर वही लाभ पहुंचाता है जो सूचिकायन्त्र से होता है तथा कष्ट होने का प्रश्न ही नहीं उठता। क्योंकि शिराएं शरीर में काम आने पर मैले हुए रक्त को हृदय में लाती हैं। श्वास लेने पर उसकी ओषजन रक्त में मिल जाती है जिससे रक्त का रंग चटकीला लाल हो जाता है तथा रक्त का कार्बन प्रश्वास के द्वारा बाहर आ जाता है। सामग्री में अनेक औषधतत्व होते हैं। यज्ञ-पावित वायु श्वास द्वारा रक्त में मिलकर अनेक रोगों का शमन करती है। विदेश में इसके अनेक परीक्षण भी हुए हैं।

इस प्रकार यज्ञ एक सुखद पद्धति है जिससे व्यक्ति, समाज तथा पूर्ण पर्यावरण प्रभावित होकर सुख, आरोग्य तथा बल आदि की प्राप्ति होती है।

और मैं सोच रहा था दो दशाब्दी पूर्व के तथा वर्तमान काल के वैज्ञानिकों के चिन्तन के विषय में तथा प्रसन्न हो रहा था देव दयानन्द द्वारा प्रदर्शित ऋषि-मुनियों की यज्ञपद्धति की वैज्ञानिक व्याख्या सुनकर, जिसमें ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना की व्याख्या भी सम्मिलित की है।

(जनज्ञान से साभार)

[illegible] हरियाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक फोन : (७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ४०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ रजि० नं० P/F
सृष्टिसंवत् १, ९६,०८, ५३, ०९६

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री
सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २२ अंक ३९, ४० ७, १४ सितम्बर, १९९५ (वार्षिक शुल्क ५०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

चौ० विजयकुमार—एक विनम्र श्रद्धांजलि

राममोहन राय, एडवोकेट, पानीपत

शायद ही ऐसा व्यक्ति होगा जो श्री० विजयकुमार से मिला हो व उनकी मिलनसारिता, निर्भीक, स्पष्टवादिता तथा कार्य करने की लगन के संकल्प से प्रभावित न हुआ होगा। वे हमेशा उन सभी लोगों की प्रेरणा के स्रोत बने रहे जो भी उनके सम्पर्क में आया। जीवन पर्यन्त वे एक संघर्षशील व्यक्तित्व रहे चाहे संघर्ष किन्हीं प्रवृत्तियों के विरुद्ध हो अथवा मृत्यु से हो। श्री विजयकुमार एक कुशल प्रशासक, सर्वोत्तम कार्यकर्ता तथा दयानन्द और आर्यसमाज के अलमस्त दीवाने थे। यह दुर्लभ गुण कि प्रशासक रहते हुए भी कार्यकर्ता तथा कार्यकर्ता रहते पिछली पंक्ति का सेवक, श्री विजयकुमार के अतिरिक्त किसी में भी नहीं पाया जाता।

नवोदित जिला पानीपत के सर्वप्रथम उपायुक्त के तौर पर उन्होंने क्षेत्र के विकास के लिए हर दम प्रयास किये। उनके साथ एस० डी० एम० श्री ... कुच्छपुआनी, पानीपत में लगे थे, दोनों ही अपनी धुन के पक्के थे व काम करने की स्पर्धा रखते थे। लोग उन्हें राम-लक्ष्मण की जोड़ी कहकर सम्बोधित करते थे।

आर्यसमाज तथा आर्यसमाजी के लिए उनके द्वार खुले रहते थे। आर्यसमाज के समारोहों में हमेशा वे आया करते व जब भी वहां कमी को देखते तो कार्यकर्ताओं को सुधारने की प्रेरणा देते। आर्य केन्द्रीय सभा, पानीपत द्वारा ऋषि बोधोत्सव समारोह में वे मुख्य अतिथि के रूप में पधारे परन्तु वहां संख्या की कमी को देखकर तुरन्त बोले, प्रचार किया करो और ... स्वामी विद्यानन्द सरस्वती सम्मान समारोह की अध्यक्षता के लिए और वहां अपार जनसमूह देखा तो मेरी पीठ थपथपा कर बहुत शाबाशी दी। किसी भी समारोह में जाते तो शुरुआत स्वयं से करते। आर्य कन्या स्कूल, पानीपत में जब सभागार के शिलान्यास पर आए तो अपने पास बैठी पत्नी से परामर्श कर सबसे पहले ५०१/- रुपये दिए व फिर पल्ला फैलाकर दान मांगना शुरू किया व देखते-देखते एक लाख रुपया तुरन्त इकट्ठा होगया फिर स्कूल की प्रबन्ध समिति से पूछा कितना पैसा लगा सकते हो व साढ़े तीन लाख की पेशकश होते ही इतने ही अनुदान की सरकार की ओर से घोषणा की तथा कुछ ही महीनों में एक विशाल सभागार बनकर तैयार होगया, ऐसा श्री विजयकुमार की प्रेरणा से ही होपाया।

सेवामुक्ति के बाद जो उन्होंने बीड़ा उठाया उसके परिणाम अब सामने आने लगे हैं। जब श्री विजयकुमार ने शराबबन्दी आन्दोलन का बिगुल बजाया तो लोग मजाक समझते थे कि यह मुमकिन नहीं है। विजयकुमार जी गांव-गांव घूमे तथा शराब के खिलाफ अलख जगाई। आज हरयाणा की लगभग सभी पार्टियां शराबबन्दी की बात करती है व हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल जी को भी मजबूर होना पड़ा कि उन्होंने घोषणा की कि एक अप्रैल, १९९६ के बाद हरयाणा के देहात में कोई ठेका नहीं खुलेगा। वस्तुतः श्री विजयकुमार ने अपने साहस का परिचय तो अपने प्रशासनिक काल में ही दे दिया था जब श्री पानीपत के उपायुक्त थे और गांव डुलवाना के निवासियों द्वारा आन्दोलन करने पर वहां का ठेका खुद ही उठवा दिया तथा आन्दोलनकारियों का समर्थन किया।

विजयकुमार जी कट्टर सिद्धान्तवादी थे परन्तु किसी भी प्रकार से आर्यसमाज का अहित बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। आर्यसमाज पानीपत में जब विवाद की स्थिति आई तो यह श्री विजयकुमार जी की ही दूरदर्शिता का परिणाम था कि विवाद को सुलझाकर आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्यसमाज में भाईचारे का यथावत् माहौल स्थापित करवाया।

श्री विजयकुमार जी के निधन से प्रदेश में शराबबन्दी आन्दोलन तथा आर्यसमाज की अपूर्णनीय क्षति हुई। ऐसे देशभक्त, निर्भीक तथा दीवाने आर्यसमाजी को मैं अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

पंजाब के ग्रामों में वेद-प्रचार की धूम

प्रान्तीय वेद-प्रचार मण्डल की ओर से अबोहर क्षेत्र के कई ग्रामों में श्रावणी पर्व मनाया गया। आर्य प्रतिनिधिसभा राजस्थान की श्री भूपेन्द्रसिंह जी की मण्डली, श्री पालेराम आर्य व प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु ने ग्रामों में घूम-घूमकर अपने प्रवचनों व भजनों द्वारा वेद-प्रचार की धूम मचा दी।

इन ग्रामों के अनेक आर्यवीर श्रावणी पर्व पर सार्वदेशिक सभा के वयोवृद्ध नेता स्वामी विद्यानन्द जी व सभा मन्त्री स्वामी सुमेधानन्द जी को सुनने गंगानगर भी गये थे। ग्राम झुमियांवाली में डबवाली से डा० अशोक आर्य भी पहुंच गये। लोगों ने यज्ञ व प्रचार में अच्छी रुचि ली। ग्राम रामसरा में तो वेद-प्रचार मण्डल के उपप्रधान श्री बहादुरराम जी के पुरुषार्थ से दलित भाइयों के मुहल्ला में इतनी बड़ी उपस्थिति हुई कि देहली व पंजाब की समाजों में ऐसा दृश्य देखने को कम मिलता ही नहीं। धर्मप्रेमी जनता ने बहुत श्रद्धा से वैदिकधर्म का सन्देश सुना। रामसरा में प्रचार का सारा खर्च श्री बहादुरराम जी ने ही अपने ऊपर लिया।

वैदिक साहित्य का भी प्रसार किया गया। कई ग्रामों से प्रचार की मांग आरही है। यदि सार्वदेशिक सभा के मन्त्री इस क्षेत्र में पन्द्रह दिन दे दें तो बहुत लोग वैदिक धर्म की ओर खिच जाएं। इस क्षेत्र में स्वामी सुमेधानन्द जी का बड़ा सम्मान है।

—संवाददाता

श्री सच्चिदानन्द शास्त्री का निग्रह स्थान

लेखक—प्रो० रत्नसिंह, बी—२१, गान्धी नगर, गाजियाबाद

वाद-विवाद में जो पक्ष हारने लगता है, वह घबराहट में वाद के स्थान पर निग्रह स्थान का सहारा लेने लगता है। इसमें वादी के कथन का उपयुक्त उत्तर न देने की असमर्थता के कारण प्रतिवादी चर्चा के प्रसंग मे असम्बद्ध, निन्दनीय व अवाछनीय बातें कहने लगता है। श्री प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री भी यही कर रहे हैं। इन्होंने 'सार्वदेशिक साप्ताहिक' ११ जून ९५ के अंक में कई आपत्तिजनक, अशोभनीय एवं अनर्गल बाते लिखी थी जिनका उत्तर मैंने 'आर्यमित्र', 'दयानन्द सन्देश' और 'सर्वहितकारी' समाचार पत्रों के माध्यम से दिया था। प्रत्युत्तर में श्री शास्त्री जी ने 'सार्वदेशिक साप्ताहिक' १३ अगस्त ९५ के अंक में हरिसिंह नामक कल्पित नाम से एक लेख लिखा है। परिस्थिति जन्य साक्ष्य से मैं दावे से कह सकता हूं कि इस लेख के लेखक श्री शास्त्री जी स्वयं हैं। झूठे नाम से लेख लिखने में शास्त्री जी बहुत दक्ष हैं। वे ऐसा पहिले भी कर चुके हैं जिसका मेरे पास प्रमाण है।

मैंने अपने लेख में श्री शास्त्री जी का ध्यान तीन बिन्दुओं की ओर आकर्षित किया था—

१—पूज्य संन्यासियों, विद्वानों और वयोवृद्धों के नाम से पूर्व श्री, पूज्य, 'स्वामी' और 'महाशय' आदि तथा अन्त में 'जी' और 'महोदय' का प्रयोग किया करें। आप इस साधारण शिष्टाचार का पालन न कर उसके स्थान पर बहुत असभ्य भाषा का प्रयोग करते हैं।

२—पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती पर आपने जो आक्षेप किए उनका मैंने समुचित समाधान प्रस्तुत किया।

३—आर्य सत्याग्रह हैदराबाद में आप जेल नहीं गये थे, फिर भी छलकपट और धोखाधड़ी से आप सत्याग्रहियों को मिलनेवाली पेंशन और मुफ्त रेलवे पास ले रहे हैं। मैंने आपको परामर्श दिया था कि आर्यत्व के नाते आप इन्हें सरकार को लौटा दें और अपना अपराध स्वीकार करें। इससे आपका यश बढ़ेगा।

दुःख है कि अपने लेख में (जो हरिसिंह नाम से लिखा है) उपरोक्त बिन्दुओं को स्पर्श न कर आपने कई अनर्गल, मिथ्या, हास्यास्पद एवं अपमानजनक बातें लिख डाली। मेरे सम्बन्ध में आप लिखते हैं—"उत्तरप्रदेश सभा में आपको कोई पूछता नहीं। आपको आर्यसमाज गाजियाबाद से निष्कासित कर दिया है। आप पैसे के यार हैं, पैसे के गुलाम हैं। आप फर्जी नेता हैं। आप साहित्य, व्याकरण, इतिहास, भूगाल, साइंस, संस्कृत से शून्य हैं। आप कथाकथित प्रोफेसर हैं, आपको प्रोफेसर पद का भी ज्ञान नहीं।" इतना ही नहीं आप मेरे जीवन से अपने जीवन की तुलना करते हुए लिखते हैं "तुम्हारे जीवन के मुकाबले मेरा (शास्त्री जी का) जीवन लाख गुना उच्च है। तुम तो पैसे के लिये घूमते हो और मैं अर्थ के पीछे न चलकर त्यागवृत्ति का जीवन जी रहा हू, घर बार छोड़कर चाहता तो नौकरी कर सकता था। आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक योग्यता में मैं आपसे कम नहीं हूं। रही मित्रता की बात आपका मुकाबला मेरे साथ किसी बात में नहीं है, जिस बात की तुलना की जाय। आप मेरे सामने बौने बैठेंगे।

माननीय शास्त्री जी! इन व्यर्थ की बातों को लिखने का क्या लाभ? प्रतीत होता है कि हड़बड़ाहट में आप मानसिक सन्तुलन खो बैठे हैं। व्यक्तिगत निराधार आक्षेप लगाकर आपने अपना असली रूप पाठकों के सामने प्रकट कर दिया है। आपके व्यक्तिगत जीवन के बारे में मुझे कई बातों की जानकारी है, यथा—आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह के अवसर पर सार्वदेशिक सभा भवन में हवन के लिये रक्खे घी की चोरी करते हुए पकड़े जाना और स्वर्गीय पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी को भद्दी-भद्दी गालियां देना। सप्रमाण इन बातों का वर्णन किया जा सकता है। परन्तु मैं ऐसा कदापि न करूंगा क्योंकि मुझे अपने स्तर का ध्यान है। समझ में नही आता कि आपको क्या होगया है? आप मेरे बारे में लिखते हैं कि मैं साहित्य, व्याकरण, इतिहास, भूगोल, साइंस, संस्कृत से शून्य हूं। मैं आपसे पूछता हूं कि यदि इन विषयों का मुझे ज्ञान नहीं है तो क्या हुआ? हिन्दी, अंग्रेजी, साहित्य और भूगोल का अध्ययन बी० ए० तक किया है और संस्कृत एम० ए० प्रथम वर्ष तक। मैं सर्वज्ञ तो हूं नहीं। मैं तो अल्पज्ञ मनुष्य हूं। मैं दर्शनशास्त्र का प्रोफेसर था। इसलिए उस विषय का मुझे ज्ञान है। आप कहते हैं कि रत्नसिंह को प्रोफेसर पद का भी ज्ञान नहीं। यदि ऐसा ही है तो मेरा कालिज क्या मुफ्त में ही मुझे ३३ वर्ष तक वेतन देता रहा? श्रीमन्! कुछ सोच-समझकर लिखा करो। पत्रकारिता का स्तर इतना नीचा न गिराओ।

शास्त्री जी सावधान!

वेदप्रचार सप्ताह पर कथा करने के लिए मैं मऊनाथ भंजन (उ० प्र०) गया हुआ था। वहां से १९ ता० को लौटकर घर आने पर मुझे ६ अगस्त ९५ का 'सार्वदेशिक साप्ताहिक' पढ़ने को मिला। इस अक में आपने यह क्या गजब कर डाला। असभ्य भाषा का प्रयोग करने से आप बाज नहीं आये। आर्यजगत् के तपोनिष्ठ संन्यासी पूज्यपाद स्वामी ओमानन्द जी के बारे में आप लिखते हैं, "ओमानन्द भी इसी गुट का एक नेता है जिसे मैं किसी भी सूरत में संन्यासी मानने को तैयार नही। यह व्यक्ति ब्रह्मचारी नहीं है जैसा कि अपने आपको कहा करता है।" मेरे भाई शास्त्री जी! यदि गाली देने में ही आपको मजा आता है तो आप मुझे ही और गालियां दे लेते। आपने तो पूज्य स्वामी ओमानन्द जी का चरित्र हनन करने की कुचेष्टा कर कमीनापन की पराकाष्ठा कर डाली। आप स्वामी ओमानन्द जी को न संन्यासी मानते और न ब्रह्मचारी। आप हैं कौन? क्या स्वामी जी आपके प्रमाणपत्र के मोहताज हैं? क्या आप नहीं जानते कि आपके इस लेख से समस्त आर्यजगत् में रोष की कैसी लहर फैल रही है? क्या आर्यजन इस बेहूदापन को बर्दाश्त कर लेंगे? पूज्य स्वामी जी के हजारों शिष्य एवं भक्तों के दिल पर क्या बीत रही है, क्या आप इसका अनुमान लगा सकते हैं? आपने अपनी नादानी से जो अग्नि लगाई है, इसके भयंकर परिणाम हो सकते हैं। आपका सच्चा हितैषी होने के नाते मैं आपको यही परामर्श देना चाहता हूं कि आप अपने लेख के लिए पूज्य स्वामी जी से क्षमायाचना करें और उसे 'सार्वदेशिक साप्ताहिक' में प्रकाशित करा दें।

छलकपट से प्राप्त पेंशन वापिस करो

शास्त्री जी! मैंने अपने लेख में आपको परामर्श दिया था कि यतः आप हैदराबाद सत्याग्रह में जेल नहीं गये थे अतः आप धोखाधड़ी से जो सरकारी पेंशन ले रहे हैं, उसे अपना अपराध स्वीकार करते हुए सरकार को लौटा दें। खेद है कि आपने मेरे सत्य परामर्श को ठुकरा दिया और पेंशन पाने का अपने को अधिकारी सिद्ध करने का असफल प्रयत्न किया। आप हैदराबाद सत्याग्रह में जेल गये या नहीं, इस बारे में मैं कुछ प्रामाणिक तथ्य प्रस्तुत करता हूं।

१—श्री भवानीलाल भारतीय द्वारा सम्पादित 'आर्य लेखक कोश' में पृष्ठ ३०६ पर आपकी जन्मतिथि वैशाख पूर्णिमा १९८७ वि० (सन् १९३०) लिखी है। हैदराबाद सत्याग्रह जनवरी १९३९ में आरम्भ हुआ और ८ मास तक चला। इस प्रकार सत्याग्रह के समय आपकी आयु केवल ९ वर्ष थी और उस समय आप ज्वालापुर महाविद्यालय में छात्र थे।

२—श्री पं० सत्यदेव विद्यालंकार द्वारा लिखित 'आर्य सत्याग्रह' पुस्तक में पृष्ठ २०३ और २०४ पर गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर द्वारा सत्याग्रह में योगदान का वर्णन करते हुए लिखा है, "१८ वर्ष से कम आयु के ब्रह्मचारियों को निराश रह जाना पड़ा, क्योंकि उनको सत्याग्रह में जाने की आज्ञा नहीं मिल सकी।"

३—५० वर्षीय इतिहास गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरद्वार) पुस्तक के पृष्ठ ३१ पर लिखा है, "अस्तु १८ वर्ष से नीचे की आयुवाले ब्रह्मचारी (सत्याग्रह में) नहीं जा सकते थे।"

इन तथ्यों से सर्वथा स्पष्ट है कि आपने हैदराबाद सत्याग्रह में भाग नहीं लिया। यदि आपने सत्याग्रह में भाग लिया था तो कृपया 'सार्वदेशिक साप्ताहिक' के माध्यम से ही बतलायें कि आपके जत्थे के

(शेष पृष्ठ ७ पर)

सार्वदेशिक साप्ताहिक के सम्पादक श्री सच्चिदानन्द शास्त्री के नाम "खुला पत्र"

लेखक—स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

श्रीमान् शास्त्री जी,

सादर नमस्ते।

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ६ अगस्त के अंक में आपका सम्पादकीय पढकर अत्यन्त दुःख हुआ। आप अनेक वर्षों तक सार्वदेशिक जैसी गरिमामयी सभा के मन्त्री पद पर रहकर भी सामान्य जनोचित शिष्टाचार को नहीं सीख सके। आपकी आत्मा के पतन का इससे बड़ा और क्या प्रमाण हो सकता है, क्या मूर्खों की तरह इसी प्रकार गाली देने, झूठ बोलने और छल-कपट पूर्ण व्यवहार करने के लिए ही आर्यसमाज में आए थे, अब अन्तिम समय में क्यों अपना भविष्य बिगाड़ रहे हैं, क्या सारे जगत् के आदरणीय संन्यासी पू० स्वामी ओमानन्द जी, पू० स्वामी विद्यानन्द जी, पू० स्वामी सुमेधानन्द जी के प्रति अपशब्द कहने-लिखने और गाली-गलौज देने के लिए ही अपनी विद्या का प्रयोग करके खुश होरहे हैं, मतभेद हो सकते हैं, शिष्टाचार की मान-मर्यादाओं का पालन तो कट्टर से कट्टर शत्रु भी करते हैं, आपने सम्पादकीय में जो कुछ लिखा है, क्या आपकी आत्मा उससे सहमत है? क्या पू० स्वामी ओमानन्द जी के सामने आपका रत्ती भर भी कार्य या त्याग, तप है, आपके संन्यासी मानने न मानने से क्या होता है, कर्मों का फल देनेवाला भगवान् है। आप कभी बैठ के सोचें भगवान् के दरबार में इस झूठ और कपटपूर्ण व्यवहार का क्या उत्तर देंगे। आप अपनी वृद्धावस्था की दुर्गति क्यों कर रहे हो। कितने दिन तक इस मन्त्री पद रहोगे। चक्रवर्ती राजा महाराजा तो कुछ साथ नहीं लेकर गये। दीखता है, आप जरूर सार्वदेशिक को बांधकर ले जायेंगे। यदि आप में साहस है, तो श्वेत-पत्र के एक-एक बिंदु का तर्कसंगत उत्तर दें। आपका सारा लेख उल्टा चोर कोतवाल को डांटे जैसा है। आप लोगों ने सार्वदेशिक के संविधान के अनुसार कौन-सा कार्य किया है, उसका स्पष्ट उल्लेख कर देते तो अच्छा रहता। मैं जानता हूं, आप में यह साहस नहीं है। इसलिए मैं ही लिख देता हूं, साहस हो तो इन मुद्दों का उत्तर दें—

१. जब श्वेत-पत्र में लेखक और प्रकाशक का नाम है, फिर मुद्रक का नाम देने न देने से क्या फर्क पड़ता है।

२. आपने गत २० वर्ष तक स्वामी ओमानन्द जी, प्रो० शेरसिंह जी एवं कैप्टन देवरत्न जी के द्वारा आनन्दबोध जी को सहयोग देने के लिए लिखा है, यह इनकी महानता थी कि आर्यसमाज की फूट एवं निन्दा से डरकर वे उनका सहयोग करते रहे और स्वर्गीय स्वामी जी पद पर बने रहने के लिए इनके नाम का दुरुपयोग करते रहे।

३. स्वामी जगदीश्वरानन्द जी, प्रो० रत्नसिंह जी, श्री उमाकान्त जी उपाध्याय आदि ने क्या सिद्धान्तहीनता या भ्रष्टाचार किया था। फिर भी उनको आर्यसमाज से निकाला गया था। उमाकांत जी उपाध्याय आज भी प्रतिनिधिसभा एवं सार्वदेशिक से निष्कासित हैं। उनका दोष यही था कि बंगाल सभा के भ्रष्ट मन्त्री एवं स्वामी आनन्दबोध जी के चाटुकार को उन्होंने महत्त्व नहीं दिया।

४. राजस्थान में समानान्तर आर्य प्रतिनिधिसभा को खड़ा करने में आप लोगों ने एड़ी चोटी का जोर लगा लिया। फिर भी तीन आदमी नहीं जुटा सके। यह प्रमाण ही इस युवक संन्यासी की संगठन शक्ति का परिचायक है।

५. आपने सार्वदेशिक सभा की नियमावली का उल्लेख करते हुए श्री वन्देमातरम् जी को प्रधान बनने में श्री स्वामी सुमेधानन्द जी को अज्ञानी लिखा है। यदि सार्वदेशिक सभा के संविधान के अनुसार प्रधान की मृत्यु के पीछे स्वतः प्रधान बन जाता है तो स्व० स्वामी जी की लाश के रहते हुए चुपचाप चुनाव करने की क्या आवश्यकता थी। क्यों नहीं शांति सभा के पीछे सुविधा से अंतरंग की मीटिंग बुलाई। अनेक अंतरंग सदस्यों के कई बार कहने पर भी आपने पांच महीने के पीछे १९ मार्च को अंतरंग की मीटिंग बुलाई थी। जबकि नियमानुसार तीन महीने में अन्तरंग की मीटिंग होनी चाहिए और उस अन्तरग मे भी १७ अक्तूबर की अन्तरंग की कार्यवाही हो रखी गई १८ अक्तूबर की कार्यवाही को सुनाने का साहस आप लोगों में नहीं हुआ। अत. वह अठारह अक्तूबर की मीटिंग और चुनाव मार्च की अन्तरंग में स्वीकृत न होने से स्वतः निरस्त हो जाती है। इस प्रकार आपके प्रधान, वरिष्ठ उपप्रधान का चुनाव अवैध होगया। ऐसा करने में आपका मिथ्या भय एवं अज्ञानता ही कारण रही।

६. १६ अक्तूबर की अन्तरग में बिहार के सम्बन्ध में निर्णय लिया गया था कि वहां जांच समिति भेजी जाय। वहां जांच समिति न भेजकर तदर्थ समिति को भंग कर आर्यसमाज से निष्कासित पूर्व प्रधान श्री भूपनारायण को संविधान की कौन-सी धारा के अनुसार पुनः बिहार सभा का प्रधान बना दिया और उसकी कार्यकारिणी को मान्यता दी। इसकी स्वीकृति किसी अन्तरंग में नही ली गई। जबकि वहां की तदर्थ समिति सार्वदेशिक सभा की अन्तरग द्वारा नियुक्त की गई थी। उस तदर्थ समिति ने चुनाव कराने की आज्ञा मांगी थी। वहां चुनाव हुए पांच वर्ष हो चुके हैं परन्तु वहां कोई योग्य व्यक्ति न आजाय जिससे हमारे वोट सोचकर चुनाव नही करवाया परन्तु तीन वर्ष के पीछे प्रतिनिधिसभा की ओर से सार्वदेशिक के लिए निर्वाचित प्रतिनिधियों का प्रतिनिधित्व संविधान के अनुसार स्वतः ही समाप्त होजाता है। प्रान्तीय साधारण सभा ही उनका पुनः निर्वाचन कर सकती है। परन्तु बिहार के प्रतिनिधि लेने के लिए आप लोगों ने सारे संविधान को ताक में रख दिया फिर किस मुंह से संविधान की दुहाई दे सकते हैं। अब वहां हाईकोर्ट में केश चल रहा है।

७. इसी प्रकार पंजाब की तदर्थ समिति भंगकर वहां भी पुरानी कार्यकारिणी को बहाल कर वहां से १५ प्रतिनिधि आपने लिये, वहां का चुनाव हुए भी ४ वर्ष होगये थे। इसकी स्वीकृति भी अन्तरंग से नही ली गई थी। अतः वहां के पुराने प्रतिनिधि भी स्वतः निरस्त होजाते है।

८. दिल्ली आर्य प्रतिनिधिसभा का चुनाव हुए भी चार वर्ष होगये थे। फिर भी उस सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने पुराने प्रतिनिधि मांगेराम आर्य को हटाकर उसके स्थान पर मरवाह जी को प्रतिनिधि बनाया। यह सार्वदेशिक सभा के संविधान की कौन-सी धारा के अनुकूल है। वैसे तो वहां के सारे प्रतिनिधि अवैध ही थे।

९. आपने प्रतिनिधियों के फार्म स्वीकार करने की अन्तिम तिथि १५ अप्रैल रखी थी। बंगाल और बिहार के फार्म अन्त तक नही आये थे। फिर किस आधार पर प्रतिनिधि स्वीकार किये गते।

१०. उ०प्र० के बोगस प्रतिनिधि तो आपने बनाये थे। उनमें भी तीन दिन पहले तक हेर-फेर करते रहे। जबकि उ०प्र० के हाईकोर्ट ने श्री कैलाशनाथ सिंह की अध्यक्षता वाली प्रतिनिधि सभा को मान्यता दी है। फिर भी आप उनको नहीं मानते। क्या आप हाईकोर्ट से भी ऊपर हैं, यदि ऊपर हैं तो फिर क्यों कोर्टों में जाते हैं।

११. महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधिसभा से ९ प्रतिनिधियों के स्थान पर आपने १५ प्रतिनिधि बुलाये, बता सकेंगे यह संविधान की कौन-सी धारा से अनुसार हुआ।

१२. तमिलनाडु में नाममात्र के १३ आर्यसमाजों पर प्रतिनिधि-सभा बनाकर आपने ६ प्रतिनिध बुलाये जबकि उस सभा की संबंद्धता किसी अन्तरंग में स्वीकार नहीं हुई। इन ६ प्रतिनिधियों के लिए ४००० से अधिक सक्रिय आर्यसमाज के सदस्य होने चाहिएं। तमिलनाडु की समाजों के कुल सदस्य दशांश भी नहीं होगे। पहले वहां से २ प्रतिनिधि आते थे।

१३. सार्वदेशिक के संविधान के अनुसार नए प्रतिनिधियों की स्वीकृति का अधिकार अंतरंग को है। इस निर्वाचन में आप लोगों द्वारा बुलाये प्रतिनिधियों की स्वीकृति किसी अंतरंग में नहीं हुई। क्या यह संविधान का सरासर उल्लंघन नहीं है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य कौन है ?

"आर्य" किसी जाति या समुदाय विशेष का नाम है अथवा जाति, सम्प्रदाय आदि से ऊपर उठकर यह शब्द मनुष्य के गुण विशेष का बोध कराता है ? क्या "आर्य" का अर्थ संकीर्ण अर्थों में "हिन्दू" है अथवा यह अन्य सम्प्रदायों यथा ईसाई, मुस्लिम, सिख आदि का विरोधी है ? "आर्य" के सही अर्थ जानने पर ही हम "आर्यसमाज" के बारे में सही अनुमान लगा सकते हैं। —सम्पादक

संस्कृत व्याकरण के अनुसार "आर्य" शब्द "ऋ" धातु से बना है जिसका अर्थ होता है गति, क्रिया। अतः आर्य वह है जो क्रियाशील हो, गतिमान हो। दूसरे शब्दों में जो अकर्मण्य न हो, आलसी न हो। आलसी मनुष्य का शरीर अनेक रोगों का घर बन जाता है और उसके मन से मलिन भावनाएं अंकुरित होने लगती हैं। कालान्तर में उसकी बुद्धि भी मलिन हो जाती है। बर्टन के शब्दों में आलस्य न केवल विकार अपितु अन्य अनेक व्याधियों का कारण है। वेदों में भी कर्महीन को दस्यु कहा है। कर्म करते हुए सौ वर्ष जीने की कामना ही हमारी प्रार्थना रही है। "आलस्य हि मनुष्याणां महान् रिपुः" अर्थात् आलस्य मनुष्यों का महान् शत्रु है। विद्यार्थियों के संदर्भ में, आलस्य के बुद्धि पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव के कारण ही कहा गया है "सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतः सुखः"। वास्तव में आलस्य और बुद्धि में ३६ के ३ और ६ का सम्बन्ध है।

आर्य पुरुष अपने हृदय को भी कर्म संकल्प से रहित नहीं होने देता। व्यास जी के अनुसार "एतावानेव पुरुषः कृतियस्मिन् न नश्यति" पुरुष वही है जिसमें कर्म का कभी विनाश नहीं होता। महर्षि दयानन्द के अनुसार "आर्य: उत्तम विद्याधर्म सामर्थ्य:" अर्थात् धर्म और ज्ञान दोनों ही क्षेत्रों में उन्नति करता हुआ आर्य अपने आपको विद्या और धर्म सामर्थ्यवाला बनाता है। यास्क के अनुसार "आर्यः ईश्वर पुत्रः" अर्थात् आर्य ईश्वर का पुत्र है। सत्कर्म न करनेवाला मनुष्य इसके विपरीत प्रकृति का पुत्र होता है, उसका गुलाम बन जाता है, जबकि उसे चाहिए कि वह प्रकृति को, पदार्थ को अपने अधीन रखे।

स्मृतिकारों के अनुसार "अर्य ते सततं आर्तैः" अर्थात् हमेशा पीड़ितों की सहायता करनेवाला आर्य कहलाता है। कहा भी गया है "परोपकाय सतां विभूतयः" अर्थात् परोपकार के लिए ही सज्जनों का जन्म होता है। मनुष्य जीवन का सच्चा सुख दूसरों के काम आने में ही है।

अपने स्वार्थ की बात तो पशु-पक्षी भी जानते और करते हैं मनुष्य का आदर्श तो इससे बढ़कर ही होना चाहिये। इस अवसर पर रामानुजाचार्य जी के जीवन की घटना स्मरणीय है। उनके गुरु ने उनको एक मोक्ष देनेवाला मंत्र सुनाया और अन्य किसी को भी यह मंत्र सुनाने की मनाही कर दी। किन्तु आचार्य रामानुज मन्दिर की छत पर चढ़कर जोर-जोर से उस मंत्र का उच्चारण करने लगे ताकि उसके सुननेवाले भी मोक्ष प्राप्त कर सकें। इस पर उनके गुरु ने कहा "तुमने मेरी आज्ञा का उल्लंघन कर अनधिकारियों के कानों में यह मंत्र डाला है अतः तुम्हें नरक में जाना पड़ेगा"। रामानुज का उत्तर था "यदि मेरे नरक में जाने से बहुतों को मोक्ष मिल सकता है, तो मुझे यह सौदा घाटे का नहीं मालूम पड़ता।" आर्यों की मनोवृत्ति ही स्वयं सतत: कष्ट सहकर दूसरों के हित साधन की होती है। भगवान् बुद्ध ने मनुष्यों की तीन श्रेणियां की हैं उत्तम, मध्यम और निम्न। निम्न वे हैं जो दूसरों की हानि करके भी अपना भला करते हैं, मध्यम वे हैं जो दूसरों की हानि न होती हो तो अपना लाभ करते हैं और उत्तम वे हैं जो अपनी हानि करके भी दूसरों का हित साधन करते हैं। आर्य इसी उत्तम मनुष्य का नाम है। "आराद् याति इति आर्यः" अर्थात् जो द्वेष से दूर जाता है वह आर्य है। आर्य हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी ऐसी भावनाओं से प्रेरित नहीं होता वह तो "वसुधैव कुटुम्बकम्" में विश्वास रखता है। गीता के अनुसार आर्य प्राणिमात्र में साम्य देखता है। रामचन्द्र जी एक भीलनी को छोटा समझकर उससे भोजन ग्रहण करने में घृणा अनुभव नहीं करते। बुद्ध व्यसन जनित कर्मों से पीड़ित वेश्या के प्रति भी सहानुभूति रखते हैं। दयानन्द अपने हत्यारे को रुपये देकर राजा के राज्य से भागने को प्रोत्साहन करते हैं ताकि वह राजदण्ड से बच सके। अपने कार्य की सिद्धि में वे अपने आपको होम कर देते हैं—

"मिटा जो अपनी हस्ती को अगर कुछ मरतबा चाहो,
दाना खाक में मिलकर गुले गुलजार होता है।"

आर्य जितेन्द्रिय है। अपनी इन्द्रियों और मन का स्वामी है। अपने कर्तव्य मार्ग पर दृढ़ बने रहना ही उसे आर्य की संज्ञा देता है। आर्य के जीवन में आचरण का ही प्राधान्य है, धन या विद्या का नहीं। धन से कोई आर्य नहीं बन सकता और न केवल ज्ञान से ही आर्य बनना संभव है। आर्य बनने की सच्ची कसौटी है—

"कर्तव्यमाचरन् कार्यमकर्तव्यमनाचरन्। तिष्ठति प्रकृताचारे स वा आर्य इति स्मृतः" स्मृति के अनुसार जो कर्तव्य को करता है और अकर्तव्य को नहीं करता और जिसका आचरण सदाचार पूर्ण है वही आर्य है।

इस प्रकार यह समझना कठिन नहीं है कि आर्य शब्द का तात्पर्य किसी सम्प्रदाय विशेष से न होकर सम्पूर्ण मानव समाज से है। आर्य का धर्म मानवधर्म है।

—चन्द्रगुप्त आर्य सिद्धान्त शास्त्री
(विश्व परिवर्तन पत्रिका से साभार)

दो हजार ईसाई पुनः वैदिक धर्म में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं वैदिक यति मंडल के निर्देश पर उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी निरन्तर शुद्धि (पुनर्मिलन) के कार्यक्रमों का आयोजन करते आरहे हैं, उसी शृंखला में ग्राम मधुपुर (जिला-बरगढ़) में १८ जून को अति-उल्लासमय वातावरण में आस-पास के १२ ग्रामों के दो हजार से अधिक ईसाइयों ने यज्ञ में आहुति देकर यज्ञोपवीत ग्रहण कर विधिवत् वैदिक धर्म ग्रहण किया। इस अवसर पर लगभग ५ हजार लोगों ने प्रीतिभोज में भाग लेकर अपने बिछुड़े लोगों को अपने समाज में ग्रहण किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी एवं सभा मन्त्री श्री स्वामी सुमेधानन्द जी का सन्देश पढ़कर सुनाया गया। सारे कार्यक्रम का संचालन श्री स्वामी व्रतानन्द जी उपाचार्य, गुरुकुल आश्रम, आमसेना की अध्यक्षता में उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री पं० विशिकेशन शास्त्री ने किया। इस अवसर पर श्री स्वामी विशुद्धानन्द जी, श्री शिवधर जी वानप्रस्थी आदि ने दीक्षित हुए लोगों को आशीर्वाद दिया। इस आयोजन में श्री रंकमणि देवता का विशेष योगदान रहा। मधुपुर ग्राम पादरियों का बसाया हुआ है वहां विदेशी पादरी भी रहते हैं। उन्होंने इस कार्यक्रम को असफल करने का भी यत्न किया। परन्तु जनता के उत्साह के सामने इनकी करतूत प्रकट हो गयी। फलस्वरूप उन्हें लज्जित होकर भागना पड़ा।

ठेका खोलने पर रोष

अम्बाला छावनी, २२ अगस्त। तोपखाना बाजार अम्बाला छावनी के नागरिकों में तोपखाना बाजार की घनी आबादी पूजास्थल से १०० मीटर समीप व मान्यताप्राप्त स्कूल के समीप शराब का ठेका न हटाने के प्रति भारी रोष व्याप्त है। नागरिकों का कहना है कि शराब के ठेकों की नीलामी से पहले ही जनवरी, फरवरी ६५ में यहां की जनता ने प्रस्ताव स्वीकार करके उपायुक्त आबकारी एवं कराधान से आग्रह किया था कि इस घनी आबादी व सनातन धर्म मन्दिर व लड़के-लड़कियों के स्कूल के पास शराब का ठेका न खोला जाए।

नागरिकों का कहना है कि हरयाणा शराब लाइसेंस नियम १९७० के अनुसार स्पष्ट प्रावधान है कि शराब का ठेका घनी आबादी, पूजास्थल व स्कूल की सीमा से १०० मीटर की सीमा के अन्दर नहीं खोला जायेगा।

(दैनिक ट्रिब्यून से साभार)

धूम्रपान पर दो मित्रों का संवाद

शोलु—धूम्रपान से क्या हानियां हैं ?

मोलु—इसमें निकोटिन नाम का जहर है। स्वास्थ्य की हानि, बुद्धि का नाश, धन का नाश, समय का नाश, पर्यावरण दूषित होता है, फेफड़े खराब होना, खांसी, प्रमेह, रक्तविकार, तपेदिक आदि अनेक प्रकार के शरीर में रोग लग जाते हैं।

शोलु—क्या धूम्रपान एवं तम्बाकू का प्रचलन हमारे भारतवर्ष में सदा से ही था ?

मोलु—नहीं ! इतिहास साक्षी है मुसलमानों के शासनकाल में भारत में धूम्रपान का प्रचलन हुआ था।

शोलु—क्या हुक्का, बीड़ी, सिग्रेट पीनेवाला दूसरों का भी नुकसान करता है ?

मोलु—हां ! जब कोई सार्वजनिक जगह या सफर में धूम्रपान करता है तो पास पड़ोस में बैठे नर-नारियों को अपने दूषित धुवें से प्रभावित करता है।

शोलु—क्या इकट्ठे बीड़ी हुक्का पीने से प्यार प्रेम नहीं बढ़ता ?

मोलु—नहीं ! सभी वेद, शास्त्रों तथा ऋषि, मुनि, महात्मा, विद्वानों ने जूठा खाना पाप लिखा है। जूठ से अनेक रोग लगते हैं। एक-दूसरे के साथ बीड़ी, हुक्का नहीं पीना चाहिए।

शोलु—क्या धूम्रपान करनेवाला ईश्वरभक्त हो सकता है ?

मोलु—नही ! धूम्रपान से बुद्धि का नाश होता है, धूम्रपान करनेवाला आत्मघाती होता है। वह कभी ईश्वरभक्त नहीं हो सकता ?

शोलु—अगर धूम्रपान ऐसी बुरी चीज है तो सरकार इसकी फैक्ट्री आदि पर पाबन्दी क्यों नही लगाती ?

मोलु—सरकार लालच के चक्कर में जहर पिला रही है। लोगों में ज्ञान व जागृति का अभाव है तथा वेदों का विद्वान् राजा का न होना।

शोलु—कई लोग इसे पंचों का प्याला कहते हैं और अपने घरों बैठकों में आ बैठ का साधन मानते हैं।

मोलु—नहीं ! यह हमारी भूल है। न पंचों का प्याला है, यह मूर्खों का प्याला है। अपनी झूठी मान, बड़ाई के लिए अपने घरों व बैठकों में हुक्का रखते हैं। इसे सज्जन लोग कम तथा गांव के अवारा एवं भ्रष्ट लोग इस हुक्के को गुड़गुड़ाते रहते हैं। दूसरा चिलम भरने के बहाने गन्दे लोगों का घरों में आना-जाना रहता है। बच्चों पर बुरा असर पड़ता है। बड़ों को हुक्का, बीड़ी पीता देखकर उनकी नकल करके छोटे बालक भी इस रोग में फंस जाते हैं।

शोलु—इस धूम्रपान को तो पढ़े-लिखे मा०, प्रोफेसर, वकील, पटवारी और अन्य उच्च अधिकारी भी पीते हैं।

मोलु—अज्ञानतावश नशा की लत के कारण तथा राजा का भय न होने के कारण अगर वेदों विद्वान्, धर्मात्मा राजा हो तो धूम्रपान या कोई भी नशा करनेवाले अध्यापक को तुरन्त नौकरी से हटाकर दण्ड देवे।

शोलु—क्या बड़ों की सेवा में हुक्का आदि नहीं भरना चाहिए ?

मोलु—नही ! हां बुजुर्गों की अन्य सेवा तन मन धन से श्रद्धा से करनी चाहिए लेकिन हुक्का आदि भरने से साफ इन्कार करना चाहिए। यह मूर्खता का काम है।

शोलु—तो भाई इस धूम्रपान का प्रचलन तो दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। क्या धूम्रपान करनेवाले सब मनुष्य मूर्ख हैं ?

मोलु—अज्ञानता, कुसंग तथा भ्रष्ट सरकारों के कारण इसका प्रभाव बढ़ रहा है। जब गधा गन्दे से गन्दे घास को खा जाता है और उसे तम्बाकू के खेत में छोड़ दो एक पत्ता भी नही खाएगा। अतः जो धूम्रपान करते हैं वह वास्तव में मूर्ख नही महामूर्ख हैं और गधे से भी गिरे हुए हैं।

शोलु—कई लोग कहते हैं कि धूम्रपान से पेट के रोग दूर होते हैं और शौच खुलकर आता है कब्जी नहीं रहती।

मोलु—धूम्रपान किसी रोग की दवा नहीं। यह एक फैशन बन गया है शौच आदि का भी झूठा भ्रम एव बहाना है।

शोलु—आपके कहे अनुसार तो धूम्रपान नहीं करना चाहिए।

मोलु—हां ! भाई यह भयंकर बुराई है। इससे सर्वनाश होता है। लोक-परलोक दोनों बिगड़ जाते हैं। शरीर की ताकत भी कमजोर होती है। आयु घटती है, सुबह घर में चुल्हे में आग न मिलने पर झगड़ा होता है। धूम्रपान वास्तव में सब बुराइयों की जड़ है इसे भूलकर भी नहीं पीना चाहिए।

शोलु—तो भाई कोई भी नशा न करें ?

मोलु—हां ! मद्य, भांग, गांजा, सुलफा, कहवा, चरस, अफीम, पान, चाय, हिरोइन, स्मैक, तम्बाकू आदि सभी नशे बहुत घातक और बुरे हैं। कभी भूलकर भी उपरोक्त नशे नहीं करने चाहिएं।

किसी ने ठीक ही कहा है—

"होका हर का लाडला, चिलम कमल का फूल।
जब भर लावे सत्यानाशी पीवे नामाकूल॥"

शोलु—तो भाई मोलु ठीक है ! आपकी बात मेरे समझ में आगई। आप जीते मैं हारा। आज मुझे ज्ञान होगया धूम्रपान व अन्य सभी नशे बुरे हैं। मैं कुसंग व अज्ञानता के कारण जो धूम्रपान करता था भविष्य में धूम्रपान क्या कोई भी नशा भूलकर भी नही करूंगा। यह तो वास्तव में नीच मनुष्यों का कर्म है और जो मेरे सम्पर्क में आएगा उसे समझाकर यह भयंकर बुराई छुड़ाने का यत्न करूंगा।

किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

टेक—क्या पीजे ऐसी वस्तु का जिससे ताकत घटी रहे।
पल पल पड़े जरूरत जिसकी और पैसे की कमी रहे॥
कई तरह की लगे बिमारी, सांस मांस और आंतों में।
खांसी की जननी बीड़ी, बदबू करती मुंह दांतों में॥
पीते हो खुद खुशकी की, दिल में कैसे नमी रहे।
पल पल पड़े ... .
बड़े बड़े धनवानों को माचस तक मागते देखा है।
जली हुई आधी बीड़ी को, कान में टांगते देखा है॥
चिन्गारी से जगह जगह कुर्ते की झोली जली रहे।
पल पल पडे ...
दूध दही घी भले ना मिले बीड़ी लेनी पडे अचूक।
घर आंगन मन्दिर ना देखे जगह जगह पर दे थे थूक॥
दूर रहो गन्दी आदत से छोड़ो जब तक छुटी रहे।
पल पल पडे ....

लेखक—अतरसिंह आर्य, क्रान्तिकारी, सभा उपदेशक

राग खुद अपना गाना पड़ेगा !

—सन्तोष कण्व

जिन्दगी एक किताबे-अमल है,
इसको हर रोज पढ़ना पड़ेगा।
जैसी करनी करी आके जिसने,
वैसा फल उसको चखना पड़ेगा॥

साथी कोई किसी का नहीं है,
स्वार्थ के ही यह रिश्ते हैं सारे।
जिसका मतलब निकल जाएगा जब,
वह ही हो जाएगा तब किनारे॥

पांव फिसलेगा जब भी सफर में,
खुद-ब-खुद उठके चलना पड़ेगा॥

भोग के यह सभी हैं जो सामां,
उसकी कृपा से हमको मिले हैं।
अंश सबका ही इनमें है प्यारे,
स्वत्व केवल तुम्हारा नहीं है॥

कूच का वक्त आएगा जब तो,
सब यहीं छोड़ जाना पड़ेगा॥

होश मत खो जगत् के मुसाफिर,
आना जाना यहां का नियम है।
नष्ट करना नही एक पल भी,
काल सर पर तुम्हारे खड़ा है॥

कौन हूं मैं कहां मुझको जाना,
प्रश्न खुद ही समझना पड़ेगा॥

खेल लो खेल सब खेलते हैं,
हार और जीत की क्या है चिन्ता।
गेंद तो बीच में नाचती है,
न यहां कोई मेरा न तेरा॥

साज पर जिन्दगी के हर एक को,
राग खुद अपना गाना पड़ेगा॥

राष्ट्र निर्माण में शिक्षक का योगदान

—वेदप्रकाश साधक विद्यावाचस्पति, दयानन्दमठ, रोहतक

येषां न विद्या न तपो न दानम्, ज्ञानम् न शीलम् गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥

जिस मनुष्य मे विद्याप्राप्ति के लिए तप नहीं है, परोपकारी भावना नहीं है, शालीनता और गुण नही है वह धरती पर भार बनकर मनुष्य के रूप में पशु समान विचरता है। इसलिए मनुष्य की पशुता हटाने के लिए योजनाबद्ध शिक्षा का प्रबन्ध किया गया है जिसका मूल आधार शिक्षक है।

शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्रनिर्माण है। इसमें शिक्षक का सबसे अधिक योगदान है। किसी भी राष्ट्र का निर्माण दो प्रकार से होता है। एक भौतिक जिसमें बड़े-बड़े भवन, सड़कें, नहरें, कल-कारखाने ये राष्ट्र के शरीर के समान हैं। राष्ट्र में रहनेवाले व्यक्तियों के चरित्र का सत्शिक्षा के द्वारा निर्माण राष्ट्र की आत्मा के समान होता है। जैसे आत्मा के बिना शरीर कितना ही विशाल क्यों न हो निरर्थक है। यही अवस्था चरित्रहीन वृत्तिवाली स्वार्थी प्रजा से राष्ट्र की होती है। भारत के पतन का यही कारण रहा है। इतिहास बताता है इन बुराइयों के कारण पराधीनता, दरिद्रता और विलासिता का देश शिकार होगया। निकृष्ट स्वार्थ के कारण प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्रीय भावनाओं को खो चुका है। इसलिए भय, आतंकयुक्त वातावरण के अतिरिक्त अशांति का साम्राज्य है। इन समस्याओं के समाधान का उत्तरदायित्व शिक्षक पर है विद्यालयों के स्वच्छ वातावरण में अपनी कर्त्तव्यपरायणता के आधार पर शिक्षक स्थायी निर्माण कर सकता है।

छात्र और छात्राएं देश की भावी सम्पत्ति हैं उनके शारीरिक, बौद्धिक, आत्मिक, नैतिक विकास का दायित्व भी शिक्षक पर है। मनुष्य के जीवन में कई अवसर ऐसे आते हैं जहां शारीरिक बल की आवश्यकता रहती है जैसे अर्जुन, भीम इसके प्रतीक हैं। कई अवसर ऐसे आते हैं जहा बुद्धि बल की आवश्यकता होती है जैसे युधिष्ठिर और यक्ष के सवाद में युधिष्ठिर का बुद्धि बल काम कर रहा था। इसके अतिरिक्त महाभारत में योगेश्वर कृष्ण आत्मिक बल के प्रतीक थे जिससे पाण्डवों की युद्ध में विजय की प्राप्ति हुई।

इस सर्वाङ्गीण उन्नति के लिए शिक्षक तब सफल हो सकता है जब उसमें स्वय मानसिक और नैतिक गुण हों। साक्षरता साधन है साध्य नहो है युवकों को सदाचारी सुशोल आज्ञाकारी चरित्रवान् और देशभक्त बनाना शिक्षा का मुख्य है।

तोते की तरह रटन विद्या जिसको व्यावहारिक रूप अर्थात् (Arath and shak) नहो दिया गया वह निरर्थक है। विचार क्रिया के बिना अनुकरित रह जाता है। विद्यालयों में व्यवहारिक पक्ष बहुत कमजोर है। नियम यह है पहले उत्तम संस्कार फिर शिक्षा, पहले सुपात्र बनाओ बाद मे विद्यारूपो अमृत डालो नही तो मानवीय मूल्यों का ह्रास हो जाएगा। कुसंस्कारों को जब शिक्षा का वरदान मिला सिर पे शैतान के ओर शैतान चढ़ा।

शिक्षक का कर्त्तव्य है कि विद्यार्थियों में नैतिक मूल्य अर्थात् सत्य बोलना, मन, वचन, कर्म से किसी को न सताना, चोरी न करना, परस्पर सहयोग, सहानुभूति, सद्भावना आदि भावनाओं का संस्कार बच्चों के हृदय पटल पर अंकित कर दें। इसके अतिरिक्त आत्मविश्वास स्वावलम्बन की भावना भरना शिक्षक का परम कर्त्तव्य है।

बच्चे कुसंग मे पड़कर कई प्रकार के व्यसनों मे फंस जाते हैं—जैसे बीड़ी, सिगरेट, मांस, मदिरा का सेवन जो कि बुद्धि विनाशक है इनसे बच्चों को बचाना चाहिए।

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान आदि दुष्प्रवृत्तियां पनपने न पाएं। चरित्र दोष, अभिमान करना जो कि विद्या के शत्रु हैं पनपने न पाएं। इन गुणो का सम्पादन करने के लिए शिक्षक को अपना निरीक्षण करना चाहिए क्योंकि विद्यार्थी जितना अध्यापकों का अनुकरण करता है उतना ओर किसी का नही।

वातावरण के दूषित और अध्यापकों की उपेक्षा के कारण विद्यार्थियों मे व्यसन बढ रहे हैं। व्यसनों के कुप्रभाव से अनेक शारीरिक, मानसिक और चारित्रिक अश्लील दोष भी प्रवेश कर चुके हैं। राष्ट्रीय दृष्टि से चिन्ताजनक स्थिति है इसलिए शिक्षक बच्चों को व्यसन रहित रखे राष्ट्र की महत्त्वपूर्ण सेवा कर सकता है।

अध्यापकों का साधना का जीवन होना चाहिए, अपने साधनमय जीवन से समाज को भी प्रभावित कर सकता है।

वाणी से दी गई शिक्षा से आचरण का अधिक प्रभाव पड़ता है इस लिए शिक्षक का आचरणवान् और सदाचारी होना जरूरी है।

बच्चों में चरित्रहीनता के दोष की जिम्मेवारी माता-पिता पर भी है। "माता निर्माता भवति" माता चाहे तो गर्भ में गृह में और गोद में ऐसे विचार दे सकती है जिससे बच्चा सुशील, विनम्र और सदाचारी हो।

अध्यापक का एक पवित्र और सर्वश्रेष्ठ व्यवसाय है। किसी भी राष्ट्र की महत्ता उसके नागरिकों के जीवन से मापो जाती है। जीवन का स्तर रहन-सहन से नहीं परन्तु चरित्र और अनुशासन से मापा जाता है। इसलिए अध्यापक का कर्तव्य केवल पुस्तकें पढ़ाना नहीं परन्तु राष्ट्र के भावी नागरिकों का जीवन निर्माण करना भी है।

युग की मांग है शिक्षक स्वयं दुरितों से मुक्त होकर विद्यार्थियों को भी दोषमुक्त कर दें। परिस्थितियां कितनी भी प्रतिकूल हों फिर भी निराश न हों। धैर्यपूर्वक दृढ़ता से निष्ठावान् होकर निर्माण कार्य में लगे रहें।

भारतीय मर्यादानुसार शिक्षक का सम्राट् से भी अधिक ऊंचा पद है। इसी आधार पर भारत अपनी इस उपलब्धि से विश्व गुरु था।

(पृष्ठ ३ का शेष)

१४. भारतीय संविधान के अनुसार किसी भी निर्वाचित संस्था के निर्वाचन में भाग लेनेवाले सदस्यों की सूची २ महीना पहले घोषित होनी चाहिए, परन्तु दो प्रान्तीय सभाओं के प्रधानों द्वारा मांगने पर भी आपने अंत तक सूची नहीं दी। यह संविधान की कौन-सी धारा के अनुसार था।

१५. आन्ध्रप्रदेश की वास्तविक प्रतिनिधि सभा तो विट्ठलराव जी के हाथ में है। कोर्ट ने उनको मान्यता दो है, आर्यसमाजी भी उनके साथ हैं, आपकी बोगस प्रतिनिधि सभा का कार्यालय तो वन्देमातरम् जी के घर में है। कार्यालय बनाने के लिए वन्देमातरम् जी को एक समाज भी नहीं मिल सकी। हैदराबाद में आर्यसमाज की अनेक संस्थायें हैं, परन्तु वन्देमातरम् जी ने जैन भवन को किराये में लेकर सार्वदेशिक सभा का अधिवेशन कराया। आर्यसमाज की एक भी संस्था ने इन्हें स्थान नहीं दिया। अपने ही शहर एवं प्रान्त में इस प्रकार तिरस्कृत व्यक्ति सार्वदेशिक सभा के प्रधान बन सकते हैं। श्री विट्ठलराव जी आर्य ने अपनी सभा के पत्र आर्य जीवन में श्री वन्देमातरम् के द्वारा गुरुकुल घटेश्वर की भूमि बिक्री एवं मीनाक्षीपुर में किये आर्थिक भ्रष्टाचार के प्रमाणित दस्तावेज छापे हैं। साहस हो तो उत्तर दे दें।

श्री किशनलाल जी को तो इन्होंने फंसाया था। ये उपरोक्त बोगस प्रतिनिधि सभा ही आपका सम्बल थी। इनके अतिरिक्त १०-११ विवाद-रहित प्रतिनिधि सभाओं ने आपको अमान्य किया। इस प्रकार संविधान के अनुसार तो आपके साथ एक भी प्रतिनिधि नहीं है। देश की अधिकतर आर्यसमाजें भी आपके खिलाफ हैं, जिन्हें आप मूर्ख अज्ञानी कह रहे हैं। वे आर्यसमाज की बदनामी से डरकर आपके इन बोगस प्रतिनिधि को मान्यता देकर एक निष्पक्ष निर्वाचन अधिकारी की देखरेख में मत-पत्र से चुनाव कराने का आग्रह कर रहे थे। यह चुनाव कराने का साहस भी आप में नहीं हुआ।

आपने एक सप्ताह पहले पू० स्वामी धर्मानन्द जी को फोन पर कहा था कि हम मैदान के खिलाड़ी हैं मैदान में देखेंगे। उधर साधारण ढंग से चुनाव कराने का भी साहस नहीं हुआ। क्या ऐसे ही मैदान के खिलाड़ी थे। स्वर्गीय स्वामी आनन्दबोध जी के सामने आपकी क्या स्थिति थी। एक चपरासी के बराबर भी प्रतिष्ठा नहीं थी। इसे सार्वदेशिक सभा के सभी अन्तरंग सदस्य जानते हैं और आज भी जिनके इशारे पर गाली-गलोज दे रहे हैं। उनके सामने आपकी क्या हैसियत है। इसे आपकी आत्मा जानती है।

पू० स्वामी ओमानन्द जी पर आपके इस तथा अन्य लेखों से उनका शिष्य एवं भक्त वर्ग अत्यन्त उद्‌विग्न एवं दु:खी है और सभी आपके लेख एवं व्यवहार की तीव्र निन्दा करते हैं। अतः यदि आपमें साहस है, तो शालीनतापूर्वक उपरोक्त संवैधानिक प्रश्नों का उत्तर देने का साहस करें। अपने छल-कपट और असत्य व्यवहार को स्वीकार कर प्रायश्चित करें। अन्यथा अपने भविष्य को अंधकारमय मानकर चलें। भगवान् आपको इस वृद्धावस्था में सद्‌बुद्धि दे इसी प्रार्थना के साथ।

वेद-प्रचार सप्ताह

आर्यसमाज सान्ताक्रुंज बम्बई द्वारा रविवार दिनांक 13 अगस्त 95 से शुक्रवार 18 अगस्त 95 तक वेद-प्रचार सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रातः 7 से 9 बजे तक यजुर्वेद यज्ञ का आयोजन किया गया।

दिनांक 14, 15, 16, 17 अगस्त को रात्रि 8.30 से 9.00 बजे तक पं० रुद्र पाठक के भजन एवं पं० अर्जुनदेव जी स्नातक के विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुए। दिनांक 18-8-95 को प्रातः यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् श्री ओंकारनाथ जी आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधिसभा बम्बई की अध्यक्षता में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह का आयोजन किया गया। कैप्टन श्री देवरत्न आर्य प्रधान आर्यसमाज सान्ताक्रुंज ने भगवान् श्रीकृष्ण की शिक्षाओं व नीतियों का आज की परिस्थितियों में महत्त्व विषय पर अपने विचार प्रकट किये। आर्य प्रतिनिधिसभा बम्बई के प्रधान श्री ओंकारनाथ जी आर्य ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हम वैदिक धर्म के आदर्श को अपनाएं और भगवान् कृष्ण के उपदेशों के अनुकूल आचरण करते हुए वेदों का संदेश फैलाये।

समारोह में बम्बई की अनेकों आर्यसमाज के सदस्यों ने भाग लिया।

श्री घूडमल आर्य पुरस्कार

हिण्डौन सिटी। साहित्य प्रकाशन के लिए सुविख्यात आर्यसमाज हिण्डौन सिटी के अन्तर्गत रक्षाबन्धन दस अगस्त से सतरह अगस्त तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत पं. मंगलदेव आर्य के भजनोपदेश होते रहे। आचार्य विश्वदेव जी आर्य गुरुकुल एटा के हृदयग्राही प्रवचन हुए। बड़ी संख्या में महिलाओं व पुरुषों द्वारा यज्ञ में आहुतियां दी गईं।

पिछले बारह वर्षों से आर्यसमाज द्वारा विद्वत् सम्मान के आयोजित कर्तव्य के अन्तर्गत इस वर्ष तेरहवां श्री घूडमल आर्य साहित्य पुरस्कार आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् आचार्य श्री विशुद्धानन्द जी मिश्र को उनकी कालजयी कृति वेदार्थ कल्पद्रुम के लिए नागरिक सम्मान सहित प्रदान किया गया। इसके अन्तर्गत आपको इक्यावन सौ रुपये, एक शाल तथा अभिनन्दन पत्र प्रदान किया गया। अपने नागरिक अभिनन्दन के अन्तर्गत मालाओं से लदे हुए आचार्य जी ने कहा कि मेरे जीवन की एक ही अभिलाषा है कि यह जीवन देव दयानन्द का कार्य करते हुए ही सम्पन्न हो।

(पृष्ठ 2 का शेष)

डिक्टेटर कौन थे? किस तारीख में आपने सत्याग्रह किया? आप किस जेल में बन्दी रहे और कितने मास तक जेल में रहे? तथ्यों के आधार पर हमारा तो विश्वास है कि आपने सत्याग्रह में भाग नहीं लिया और न जेल गये। फिर भी आप पेंशन और मुफ्त रेलवे पास ले रहे हैं। ऐसा क्यों? इसके बारे में आपने लेख में हरिसिंह नामक कल्पित लेखक से आप लिखवाते हैं, "शास्त्री जी भी पारितोषिक (पेंशन व रेलवे पास) नहीं ले रहे थे। (परन्तु) यह सोचकर कि आर्यसमाज के काम में यदि कुछ सहयोग होता है तो ले लो।

वाह शास्त्री जी महाराज! यह भी खूब रही। झूठ और धोखाधड़ी से जो रुपया मिलता है उससे ही आर्यसमाज की सेवा किया करोगे? थोड़ी बहुत शर्म करो। आप नहीं जानते कि छलकपट और धोखाधड़ी से आप जो पेंशन ले रहे हैं यह कानून की दृष्टि में अपराध है। इसलिए मेरा पुनः आपसे अनुरोध है कि पेंशन और रेलवे की पास को आप सरकार को लौटा दें। आप शायद इस बात को अनुभव नहीं कर रहे कि आपके आचरण से सार्वदेशिक सभा की छवि कितनी धूमिल होरही है। लोग कह रहे हैं कि जिस सार्वदेशिक सभा का मन्त्री झूठ और धोखाधड़ी को उचित समझता है, वह सभा कैसी होगी? खुदा के बन्दों को देखकर खुदा से मुनकिर हुई है दुनिया कि जिस खुदा के है ऐसे बन्दे वह कोई अच्छा खुदा नहीं है।

उत्सव सम्पन्न

दिनांक 22, 23, 24 अगस्त 1995 को आर्यसमाज दुदुवाखारा (राजस्थान) का उत्सव विधिवत् सम्पन्न हुआ। 22 ता० को हरिजन बस्ती में वेदप्रचार, 23 ता० को कन्या पाठशाला के पास आर्यसमाज मन्दिर भवन निर्माण के स्थान पर हवन एवं रात्रि प्रचार किया गया।

सभा के उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान से लोगों अवगत कराया। कार्यक्रम बहुत ही प्रभावशाली रहा। हेडमास्टर हरफूलसिंह जी तथा रामकृष्ण आर्य आदि का विशेष सहयोग रहा। सभा को 200 रुपये दान प्राप्त हुआ।

—गंगाजल शर्मा, प्रधान आर्यसमाज दुदुवाखारा (चुरू)

स्वतन्त्रता दिवस पर हवन

15 अगस्त 1995 को स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी जी द्वारा श्री सत्यवीरसिंह दुहन की ढाणी (नलवा) में पारिवारिक हवन किया गया। श्री क्रान्तिकारी जी ने अनेक ज्ञात-अज्ञात देशभक्तों के जीवन एवं कार्यों पर विस्तार से विचार रखे। स्कूली बच्चों को उनके पदचिह्नों पर चलकर स्वतन्त्र भारत की रक्षा करने का संकल्प लेना चाहिए। राष्ट्रभक्ति एवं राष्ट्रसेवा सबसे बड़ा धर्म है।

—बलबीरसिंह दहिया, नलवा (हिसार)

2 अध्यापकों की आवश्यता

गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) हरयाणा में एक ऐसे संस्कृत अध्यापक की आवश्यकता है जो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की विद्याधिकारी एवं विद्याविनोद कक्षाओं को अधिकार के साथ पढ़ाने में समर्थ हो। इसके अतिरिक्त एक विज्ञान के अध्यापक की भी आवश्यकता है, जो नवमी तथा दशमी कक्षाओं को विज्ञान एवं गणित पढ़ा सके।

वेतनादि का निर्णय मिलने पर ही किया जायेगा। इन पदों पर कार्य करने के इच्छुक अध्यापक निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करें अथवा मिलें।

आचार्य गुरुकुल आर्यनगर
पो०—आर्यनगर, जिला—हिसार

यज्ञ कराओ, शराब हटाओ, राष्ट्र बचाओ।

आर्यसमाज मन्दिर निर्माण हेतु भूमिदान

गांव परवाना जिला बुलन्दशहर उत्तर प्रदेश में २०-७-९५ को स्वामी उदगोधानन्द के सचालन में भजनोपदेशक स्वामी देवानन्द (आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा) ने सामाजिक बुराइयों पर प्रकाश डालते हुए उत्सव में लोगों को लगभग ३ घण्टे तक लगातार शराब, मांस, दहेज, भ्रष्टाचार आदि के बारे में सम्बोधित किया। जिससे प्रभावित होकर भीमसेन भगत जी ने ५ बीघे के करीब जमीन आर्यसमाज के नाम दान करने का वादा किया और १५१/-रुपये सभा को दिए।

—स्वामी उदगोधानन्द सरस्वती

आर्यसमाज पानीपत के पुराने सेवक चल बसे

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत के पुराने सेवक श्री रामरतन जी आर्य ८ अगस्त १९९५ को ७५ वर्ष की आयु में चल बसे। उन्होने आर्यसमाज में २५ वर्ष तक निरन्तर सेवा की। वे बहुत ही मिलनसार, परिश्रमी तथा ईमानदार थे। बाहर से आने वाले अतिथियो तथा उपदेशकों की बहुत श्रद्धा से प्रेम से सेवा करते थे। अतिरिक्त समय में आर्यसमाज के साहित्य का स्वाध्याय करते थे। उन्होंने अपने सभी सुपुत्रों पर आर्यसमाज का प्रभाव डाला। उनका एक सुपुत्र गुरुकुल कुरुक्षेत्र में अध्यापक तथा एक दिल्ली मे वकील है।

परमात्मा से प्रार्थना है कि शोकाकुल परिवार को इनके वियोग को सहन करने तथा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—केदारसिंह आर्य

लड़ना सीखो

टेक : ना गान्धी की पड़े जरूरत, ना आवश्यकता बुद्ध की।
१ देश जो जिन्दा रहना चाहे, रीत सीख ले युद्ध की॥

अगर हमें लड़ना आता तो, सोमनाथ यूं लुटता ना।
गौरवशाली भारत का, इतिहास पुराना मिटता ना॥
खिलजी, दास, पठान, मुगल, अंग्रेज यहां रुकता ना।
गैर के आगे दिल्ली में, क्षत्रिय का मस्तक झुकता ना॥
इन जयचन्दों ने मेरे देश की, उन्नति अवरुद्ध की।......

२ देश धर्म के लिए मिटें, लड़ने का मगर तरीका हो।
उसी को जीना आता है, यहां मरना जिसने सीखा हो॥
चीन हो पाकिस्तान चाहे ही चाहे अमरीका हो।
दुश्मन क्या कर ले, आईनों में [illegible] हो॥
देते हैं हम दोष औरों को, कमी हमारी बुद्ध की।......

३ पूछ रही हल्दी घाटी, मेरे राणा का सिंहनाद कहां।
चिने गए दीवारों में, वे गोविन्द की औलाद कहां॥
खून के बदले दूं आजादी, बोस की वो फरियाद कहां।
राजगुरु, सुखदेव, भगतसिंह, बिस्मिल शेखर आजाद कहां॥
नींव टिकी होती वीरों पे, किसी देश समृद्ध की।......

४ चेत-चेत ये भारतवासी, फिर वही हाल हुआ जाता है।
टुकड़ों-टुकड़ों में बटकर भारत, कंगाल हुआ जाता है॥
आड़ धर्म की ले पाखण्डी, मालामाल हुआ जाता है।
धर्म का ठेकेदार, विदेशों का ये 'दलाल' हुआ जाता है॥
इन गद्दारों ने देश धर्म की, शिक्षा वेद विरुद्ध की।......

प्रेषक—अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, सभा उपदेशक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक फोन : (७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी के कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ४०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २२ अंक ४१, ४२ २१, २८ सितम्बर, १९९५ (वार्षिक शुल्क ५०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

लाला रामगोपाल झूठ उत्पादक कम्पनी लिमिटिड का नूतन उपहार

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन अबोहर—१५२११६

जब लाला रामगोपाल ने सार्वदेशिक सभा पर अपना पंजा गाड़ लिया तब आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता व विचारक पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय जी ने अपने एक लेख में लिखा था कि सार्वदेशिक की नीतियां सार्वदेशिक नहीं जो दीवान हाल की नीति होती है वही सार्वदेशिक की नीति बन जाती है। गत चालीस वर्ष में लाला रामगोपाल ने आर्यसमाज को किस रसातल में पहुंचाया इसका कुछ लेखा-जोखा मैं किसी और लेख में करूंगा। आज तो आर्यजगत् को यह बताने लगा हूं कि लाला रामगोपाल ने सार्वदेशिक सभा एक झूठ उत्पादक कम्पनी बना कर रख दिया। मैन्युफैक्चरिंग कम्पनी द्वारा प्रतिदिन प्रतिसप्ताह कोई नई गप्प, कोई नया चोंचा, कोई नई कहानी घड़कर आर्यजगत् को सप्लाई की जाती थी।

लालाजी को वेद-प्रचार में कतई रुचि नहीं थी, वह अखबारों में अपना नाम देखने के लिये नित्य नूतन गप्प घड़कर पेश करते थे या कोई निरर्थक ब्यान देते थे। श्री पं० सच्चिदानन्द जी ने स्वयं मुझे बताया कि लाला जी का उन्हें आर्डर है कि तीन पृष्ठ सार्वदेशिक के उनके लिए छोड़े जायें। उन पृष्ठों में लाला जी ही चमकते थे। कमाल की बात तो यह है कि लाला जी जो गप्पें घड़ते थे, वे सच्चिदानन्द जी, रामचन्द्र राव साहेब, बाबू सोमनाथ मरवाहा, श्री राजगुरु कभी अपने व्याख्यानों में नहीं दोहराते थे यथा 'श्रीमती इन्दिरा गांधी ने स्वयं मेरा फोन उठाया', 'श्री संजय गांधी मेरे आने पर खड़े होगये', 'पोप भारत में नहीं आयेगा', 'कश्मीर में मेरे कहने पर करोड़ों रुपये मन्दिरों के लिये राजीव गांधी ने दिये', 'मैं अरुण नेहरू व राजीव से मिला', उड़ीसा में लाखों की शुद्धि की चर्चा करके सोनिया गांधी की शिकायत की', 'इन्दिरा जी ने ज्ञानी जैलसिंह को झाड़ते हुए कहा कि अकेले रामगोपाल ने देहली में दस लाख लोगों का सम्मेलन कर दिखाया।'

इन गप्पों का विवेचन आज मुझे नहीं करना। इनमें से तीन के बारे एक बात कह दूं। उड़ीसा में शुद्धि कार्य रामगोपाल ने कभी भी नहीं किया। उसे उड़ीसा में कौन जानता था। शुद्धि कार्य स्वामी धर्मानन्द जी द्वारा किया गया। पोप मुम्बई पहुंचा। रामगोपाल की गप्प पर देहलीवालों ने तालियां बजा दीं। यह लालबहादुर शास्त्री के समय की बात है। मैंने लाला जी को पत्र लिखकर कहा कश्मीर के मन्दिरों का विवाद संसद में उठा है आप करोड़ों रुपये अनुदान लेने का प्रमाण राष्ट्र के सामने रखो। श्री जगमोहन तो जीवित हैं, वे आपकी साक्षी दें। किसे रुपये मिले? किसके द्वारा मिले? लाला जी की गप्प की पोल खुल गई। आर्यसमाज शताब्दी महासम्मेलन की चर्चा प्रधान मन्त्री ने जैलसिंह जी से की, इसे कैसे पता चल गया? लाला जी फिर चन्द्रशेखर के समय एक लाख का जनसमूह इकट्ठा न कर सके। आर्यसमाज शताब्दी की एक सफलता आर्यजनता की श्रद्धा के कारण व पं० नरेन्द्र जी जैसे तपस्वी के कारण थी।

लालाजी की जल मरने की घोषणा, लालाजी का दिव्यानन्द काण्ड, लालाजी के नेहरु की खिल्ली उड़ानेवाले भाषण और सरकारीकरण ये सब कुछ हमने देखा। महाराष्ट्र सचिवालय का एक युवक अधिकारी दर्शन, धर्म व आर्य साहित्य का ऊंचा विद्वान् है। वह डा० काले जी के सम्पर्क से वैदिकधर्मी बना। औरंगाबाद में एक सभा में वह लाला आनन्दबोध जी को सुनने चला गया। उसने सोचा कि यह बाबा कोई धर्म-चर्चा सुनायेगा। उसे यह देख सुनकर अचम्भा व दुःख-सा हुआ कि देहलवी बाबा ने तो नेहरु के बाद के उसके पारिवारिक जनों की स्तुति व अपनी कपोल कल्पित गाथायें सुनानी आरम्भ करदीं।

लालाजी कण्डवा गये। वहां भी ऐसा ही किया। वेदी पर बैठे कोशल जी ने कहा—व्याख्यान में एक ही कमी रह गई है मोतीलाल व नेहरु का नाम छूट गया है और नीचे से राहुल प्रियंका को लालाजी भूल गए। तब लाला जी ने यह गप्प भी सुनाई कि मैंने चांदनी चौक से अपने बलबूते पर चुनाव लड़ा। मेरा किसी दल से कोई सम्बन्ध नहीं था। मैंने वहीं डा० प्रशान्तकुमार जी से कहा, 'क्यों जी यह सत्य है?" वे तपाक से बोले, 'यह शुद्ध गप्प है।'

चलिये यह लेखा-जोखा फिर करेंगे। इस कम्पनी के लोग अब भी इसी धन्धे में लगे हैं। कम्पनी के माल की खपत हो या न हो, इसकी किसे चिन्ता है। माल का उत्पादन जोर-शोर से होता रहता है। कम्पनी के सभी हिस्सेदार लेखक व विद्वान् हैं। जालन्धर से आर्य मर्यादा में लेख पर लेख छपते हैं। जिनको कभी लेख लिखने का अवसर नहीं मिला उनके नाम पर भी लेख छपते हैं। कई लोग अपने नाम से छपे लेख को पढ़कर सुना भी नही सकते। सम्भवतः सच्चिदानन्द जी ही उनके लिए लिखते हैं। शास्त्री जी ने मुझे स्वयं बताया था कि मैंने डा० कर्णसिंह के लिए भाषण लिखा, मैंने बलराम जाखड़ के लिए लिखा। बहुत काम रहता है। जाखड़ को काम रहते हैं तो क्या मरवाहा जी कोई खाली बैठे रहते हैं? उनके लिए भी बहुत काम हैं। क्या हमारा यह अनुमान निराधार है कि मरवाहा जी के लेख भी कोई और ही लिखता है?

लालाजी को मैंने लिखा कि आप किसी कोल्ड स्टोरेज से रामचन्द्र राव को और विनायकराव जी के पुत्र को निकालकर ले आये। प्रयोजन? केवल आर्यसमाज का नाश। क्या सार्वदेशिक साप्ताहिक की फाईलों या आर्यसमाज के अन्य पत्रों की पुरानी फाईलों से या हैदराबाद सभा के पत्रों के पुराने रिकार्ड से रामचन्द्रराव का कोई लेख, इससे सम्बन्धित कोई २-४ समाचार कोई सज्जन हमें दिखा सकता है?

कम्पनी को मेरा खुला चैलेन्ज है कि कोई से पुराने ५-१० अंकों में रामचन्द्र के दो-चार फोटो, दो-चार लेख व समाचार दिखा दें।

(क्रमशः)

वेदज्ञान क्यों दिया ?

लेखक—यशपाल आर्यबंधु, आर्यनिवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद-२४४०३२

स्वाध्याय निर्णय मासिक के जनवरी-८७ के अंक में साहित्याचार्य पं० सत्यप्रिय जी शास्त्री एम० ए० का एक लेख "वेदज्ञान क्यों दिया ?" शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। लेख अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण एवं युक्तियुक्त है। तथापि इस विषय मे कुछ और तथ्य जनसामान्य के सम्मुख आने आवश्यक हैं। इसी उद्देश्य से यह लेख लिखा जारहा है। स्वाध्याय निर्णय के पाठक इन दोनों लेखों को मिलाकर पढ़ेंगे तो निश्चय ही इनके स्वाध्याय से वे किसी यथार्थ निर्णय पर पहुंचने में सफल हो सकेंगे। अस्तु।

ईश्वर ने वेद का ज्ञान क्यों दिया ? इस विषय में आदरणीय श्री शास्त्री जी ने जो तर्क दिए हैं उसके अतिरिक्त दो तर्क और भी दिये जाते हैं। प्रथम—ईश्वर का ज्ञान सामर्थ्य प्रकट होना। २—मानव को वाणी (भाषा) प्रदान करना।

ईश्वर ने वेद का ज्ञान इसलिए भी दिया कि जिससे वह अपने ज्ञान सामर्थ्य को प्रकट कर सके। सत्यार्थप्रकाश अष्टम समुल्लास में सृष्टिरचना के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए महर्षि लिखते हैं कि—"जो तुमसे कोई पूछे कि आंख के होने में क्या प्रयोजन है ? तुम यही कहोगे देखना। तो जो ईश्वर में जगत् को रचना का विज्ञान, बल और क्रिया है, उसका प्रयोजन, बिना जगत् की उत्पत्ति करने के ? दूसरा कुछ भी न कह सकोगे और परमात्मा के न्याय, धारण, दया आदि गुण भी तभी सार्थक हो सकते है जब जगत् को बनावे। उसका अनन्त सामर्थ्य जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय और व्यवस्था करने ही से सफल है। जैसे नेत्र का स्वाभाविक गुण देखना है, वैसे परमेश्वर का स्वाभाविक गुण जगत् की उत्पत्ति करके सब जीवों को असंख्य पदार्थ देकर परोपकार करना है।"

यहां यह पूछा जा सकता है कि वेदों की उत्पत्ति की चर्चा करने की अपेक्षा सृष्टिरचना की चर्चा क्यों की ? इसलिए कि जैसे सृष्टि की रचना ईश्वर इसलिए करता है कि उससे उसके सामर्थ्य का प्रकाश हो सके। इसी प्रकार ईश्वर वेदज्ञान भी इसलिए देता है कि उससे उसके ज्ञान सामर्थ्य का प्रकाश हो सके। यदि ईश्वर वेदज्ञान का प्रकाश न करे तो उसके पूर्ण ज्ञानी होने का क्या प्रयोजन ? इसी प्रकार पूना प्रवचन के पाँचवे प्रवचन में महर्षि का कथन है कि—"ज्ञान सुख का कारण है, ज्ञान बिना पदार्थ की योग्य योजना करते नहीं बनती। अनन्त ज्ञान ईश्वर का है इसीलिए "अनन्ता वै वेदाः" ऐसा वचन है, अनन्त यह उसकी संज्ञा है, अनन्त ज्ञान-सम्पन्न परमेश्वर मनुष्य की योग्यता बढ़ाने के लिए और उसे ऊंचे दरजे को पहुंच पाने के लिए सदा प्रवृत्त है और इसी हेतु को सफल करने के लिए विद्या का प्रकाश करता है।"

इतना ही नहीं, महर्षि तो यहां तक कहते हैं कि—"मनुष्य इस अनन्त ज्ञान के लिए अर्थात् वेदज्ञान के अर्थ योग्य अधिकारी है।" मनुष्य यदि ईश्वर के इस अनन्त ज्ञान का अर्थ योग्य अधिकारी है, तो फिर उसके इस अधिकार को सफल करना भी तो आवश्यक था। इसलिए ईश्वर ने अपने ज्ञान सामर्थ्य को प्रकट करने एवं मनुष्यों की अर्थसहित ज्ञान ग्रहण करने की योग्यता को सफल करने के लिए वेद का ज्ञान दिया।

ईश्वर द्वारा वेदज्ञान दिये जाने का एक अन्य प्रमुख कारण है। ईश्वर ने केवल वेद का ज्ञान ही नहीं दिया, अपितु ज्ञान के माध्यम से मानव को भाषा भी प्रदान की। भाषा भावों का वाहक है। बिना भाषा के भाव नही रह सकते। ईश्वर ने ज्ञान के माध्यम से भाषा कैसे दी, यह समझने का विषय है और इसको समझने के लिए यह समझना आवश्यक है कि आदिमानव ने बोलना कैसे सीखा होगा ? मानव बिना शब्द को कान से सुने बोलना नहीं सीख सकता। यदि कोई बच्चा जन्म से बहरा है तो वह जन्म से गूंगा भी अवश्य हो होगा। इस विषय में महर्षि का कथन है कि—"जैसे किसी मनुष्य के बालक को जन्म से एकान्त में रख के उसको अन्न और जल युक्ति से देवे, उसके साथ भाषणादि व्यवहार लेशमात्र भी कोई मनुष्य न करे कि जब तक उसका मरण न हो, तब तक उसको इसी प्रकार से रखे तो उसे मनुष्यपन का भी ज्ञान नहीं हो सकता तथा जैसे बड़े वन में मनुष्यों को बिना उपदेश के यथार्थ ज्ञान नहीं होता, किन्तु पशु की नाईं उनकी प्रवृत्ति देखने में आती है, वैसे ही वेदों के उपदेश के बिना भी सब मनुष्यों की प्रवृत्ति हो जाती।" तात्पर्य यह कि मनुष्य ज्ञान और भाषा दोनों ही निमित्त से प्राप्त करता है। आज भी मनुष्य के किसी बालक को यदि कोई जंगली भेड़िया उठा ले जाये, तो वह वहां जंगली पशुओं के मध्य पशुवत् व्यवहार एवं भाषा को ही सीख लेता है। लखनऊ के बलरामपुर हस्पताल में प्रसिद्ध रामू भेड़िया नामक बालक प्रबल प्रमाण है।

अतः यही मानना पड़ता है कि भाषा चीखों और पुकारों से नहीं बनी अपितु यह ईश्वर प्रदत्त ही है। आधुनिक भाषा शास्त्री पहले यही मानते थे कि चीखों और पुकारों की ध्वनि संकेतों से भाषा का विकास हुआ होगा। किन्तु यह बात युक्तियुक्त न होने से उन्हें अब मान्य नहीं और वे अब यही मानने लगे हैं कि मनुष्य को भाषा भी ईश्वर ने ही प्रदान की है। वेद का ज्ञान ऋषियों को भाषा के साथ दिया गया था और परमपिता परमात्मा ने ऋषियों के मुख से अपने सामर्थ्य से बिना पूर्व सुने उच्चारित करवाया। फिर इन ऋषियों से सुनकर अन्य लोगों ने उस शब्द ब्रह्म (वेदज्ञान) को प्राप्त किया। यद्यपि सृष्टि के आदि में जन्मे अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नामक चार ऋषि सर्वाधिक पवित्रात्मा थे और वे ही ईश्वरीय ज्ञान वेद को प्राप्त करने के अधिकारी थे, तथापि उनमें भी उस ज्ञान को मुख से बोलने की सामर्थ्य स्वतः नहीं थी। इस विषय में महर्षि का कथन है कि—"जैसे वादित्र को कोई बजावे या काठ की पुतली को चेष्टा करावे, इसी प्रकार ईश्वर ने उनको निमित्तमात्र किया था।" इस प्रकार परमात्मा ने ज्ञान के साथ भाषा भी प्रदान की जिसे ऋषियों ने बोल-बोलकर अन्यों को सुनाया और वे भी बोलने लगे। अतः वेद का ज्ञान इसलिए भी दिया गया कि इस माध्यम से मानव को भाषा प्रदान की गई।

जो बढ़ते रहेंगे कदम धीरे-धीरे !

—सन्तोष कण्व

असुर राज्य भू पर कहीं हो न जाए।
करो आर्यजन संगठन धीरे-धीरे॥

यह धरती प्रभु ने तुम्हीं को तो दी है।
करो इसकी रक्षा-यतन धीरे-धीरे॥

राग-भय-ईर्ष्या दोष सारे मिटाकर।
करो सद्‌गुणों का वरण धीरे-धीरे॥

प्रभु एक है वेद है उसकी वाणी।
करो इसका पठन-पाठन धीरे-धीरे॥

दयालु पिता की कृपा पाना चाहो।
करो शुद्ध अपना चलन धीरे-धीरे॥

निराशा निशा में पड़े सो रहे क्यों।
करो ईश का नित मनन धीरे-धीरे॥

कलुषता स्वयं मन की मिट जाएगी सब।
करो प्रातः सायं भजन धीरे-धीरे॥

अविद्या अंधेरे से भयभीत हो क्यों।
करो ज्ञानदीप प्रज्वलन धीरे-धीरे॥

उपद्रव चतुर्दिक् अगर रोकना है।
करो दुष्टजन का दमन धीरे-धीरे॥

अगर कालगति को तुम्हें मोड़ना है।
करो शक्ति का अब सृजन धीरे-धीरे॥

पाखण्डियों के ये ध्वज गिर पड़ेंगे।
करो मिलके पूरा यतन धीरे-धीरे॥

मंजिल स्वयं पास आने लगेगी।
जो बढ़ते रहेंगे कदम धीरे-धीरे॥

१६वीं पुण्यतिथि पर विशेष

बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी पं० जगदेवसिंह सिद्धांती

आर्यसमाज के अपने समय के प्रमुख नेता एवं अप्रतिम विद्वान पं० जगदेवसिंह सिद्धांती जी का जीवन अनेक शिक्षाप्रद घटनाओं से पूर्ण है। शिक्षा समाजसुधार एवं राजनीति के क्षेत्र में उनका योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा और देशवासी उनसे प्रेरणा ग्रहण कर स्वयं को संसार की उन्नति का पूरक सिद्ध करते रहेंगे।

सिद्धांती जी का जन्म हरयाणा के जनपद रोहतक के एक ग्राम बहराणा में विजयादशमी (दशहरा) सन् १९०० ई. को एक कृषक जाट परिवार में हुआ था। आपको जननी का नाम मामकौर एवं पिता प्रीतराम थे। प्रीतराम जी ने सेना में कार्य किया और सेवानिवृत्ति के पश्चात् आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त कर न केवल लोगों के रोगों का निशुल्क उपचार किया अपितु "नाड़ी विचार" नाम की पुस्तक लिखकर अन्य चिकित्सकों को भी लाभान्वित किया।

सन् १९१० में आर्यसमाज के एक प्रचारक 'बहराणा ग्राम' में आये और आर्यसमाज की स्थापना की। सिद्धांती जी के पिता प्रीतराम जी को आर्यसमाज का प्रधान बनाया गया। आप आजीवन प्रधान रहे। स्थापना के समय पिता एवं पुत्र ने अनेक ग्रामवासियों सहित ऋषिऋण, पितृऋण एवं देवऋणों से उऋण होने का स्मरण करानेवाला एक प्रतीक यज्ञोपवीत धारण किया। इस अवसर पर आपके परिवार ने मांसाहार के त्याग का भी व्रत धारण किया। सन् १९१६ में आपकी माता जी का देहांत होगया और सिद्धांती जी मातृ स्नेह से वंचित होगये। इस समय आप हाईस्कूल में पढ़ते थे। कुछ काल पश्चात् सन् १९१६ में ही ग्राम बिरोहड़ (रोहतक) के एक कृषक परिवार की कन्या नानती देवी से आपका विवाह सम्पन्न किया गया। तत्कालीन प्रथा के अनुसार पत्नी विवाह के पश्चात भी पितृकुल में रही और सन् १९२२ में पतिकुल में आयी जब लगभग साढ़े चार वर्ष सेना में इराक एवं अरब देशों के युद्ध मोर्चों पर साहसिक कार्य करके सिद्धांती जी सेवा-निवृत्ति लेकर घर आये।

हाई स्कूल तक की शिक्षा पूर्ण कर सिद्धांती जी ने पेशावर जाकर ३५ सिक्ख पलटन में प्रवेश किया। आप इस सिक्ख पल्टन से जाटों की कम्पनी में रहे। सन् १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना उनकी स्वदेश भक्ति एवं अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य को स्वदेशी राज्य की तुलना मे हेय घोषित करने के कारण सेना में आर्यसमाजियों की नियुक्ति अति दुष्कर थी। जगदेवसिंह न केवल आर्यसमाजी थे अपितु इनके पिता आर्यसमाज के प्रधान रूप में स्वराज्य प्राप्ति का कार्य विगत ७ वर्षों से कर रहे थे। दैवयोग से जेलदार मनसाराम ने जगदेवसिंह से बिना पूछताछ किये रिपोर्ट दी कि वह आर्यसमाजी नहीं है।

अपनी कम्पनी में आप एकमात्र सैनिक थे जो हाई स्कूल तक शिक्षित थे। हिंदी, अंग्रेजी एवं उर्दू का आपको ज्ञान था अतः खाली समय में आप सैनिकों को ये भाषाये पढाने लगे। इसके फलस्वरूप मासिक वेतन ११ रुपये के अतिरिक्त भत्ते के रूप में आपको २० रुपये प्रतिमाह भी पृथक् से मिलने लगे और आपका अफसरों में भी सम्मान बढ गया।

आपकी कम्पनी में ३७६ अफसर एवं सैनिक थे। एक बार जब उसे पेशावर से आगरा शिफ्ट किया गया तो गलती से कम्पनी की लौंग रोल (नाम सूची) ट्रेन में पेशावर छूट गई और कम्पनी आगरा पहुच गई। कमांडिंग अफसर की परेशानी समझकर सिद्धांती जी ने कहा कि वह अपनी स्मरणशक्ति के आधार पर उस नाम सूची को यथावत् तीन घंटे में बना सकते हैं। उस समय अधिकारी के पास दूसरा कोई उपाय भी न था। ढाई घंटे में सिद्धान्ती जी ने सूची तैयार की जिसमें नाम के साथ सभी अफसरों एवं सैनिकों के नम्बर पद पलाटून और मैंकगन भी लिखे। बाद में पेशावर से भी सूची आ गई। कर्नल हार्डी कमांडिंग आफीसर थे उन्होंने क्लर्क को दोनों सूचियों का मिलान करने को कहा। कर्नल साहब दोनों सूचियों के अक्षरशः मिलने पर अति प्रसन्न हुए और उन्होंने सिद्धान्ती जी को क्वार्टर मास्टर का हैड क्लर्क नियुक्त करने के साथ पारितोषिक रूप में वेतन बढ़ाकर ४५ रुपये मासिक कर दिया।

सैनिक जीवन में आपकी देशभक्ति का उदाहरण उस समय उपस्थित हुआ जब आपने अंग्रेज अधिकारी द्वारा वस्तुएं अंग्रेजी दुकान से खरीदने का हुक्म देने पर कहा कि वस्तुएं देशी दुकानों से खरीदनी चाहिएं। जिससे देश का पैसा बाहर न जाये। वर्तमान परिस्थितियों में यह घटना कितनी प्रासंगिक है। जब सरकारी निमंत्रण पर बहुराष्ट्रीय कम्पनियां बरसात की तरह देश में छा रही हैं। यह विचारणीय है कि भविष्य में यदि यह राष्ट्रीय हितों को हानि पहुंचायेंगे तो क्या सरकार इन्हें वापिस भेज सकेगी ?

अंग्रेज सेना में रहते हुए किसी सरकारी आदेश को न मानना बड़ा अपराध था। जब सिद्धांती जी भारत की सीमाओं से दूर डोरा कैम्प युद्ध मोर्चे पर थे तो सैनिकों के लिए मांसाहार अनिवार्य कर दिया गया। सिद्धांती जी के विरोध करने पर इन्हें अण्डरएरेस्ट कर लिया गया और एक अंग्रेज ब्रिग्रेडियर के अधीन कोर्ट मार्शल बैठाया गया। सिद्धांती जी के कहने पर कि मांस खाना उनके धर्म के विरुद्ध है ब्रिग्रेडियर सहमत नहीं हुआ। सिद्धांती जी ने उन्हें ब्रिटिश एक्ट का प्रमाण दिखाया जिसमें लिखा था, किसी के धर्म में दखल न दिया जाये न जबरदस्ती की जाये। इसे पढते ही कोर्ट तुरन्त भंग करते हुए ब्रिग्रेडियर ने आदेश दिया कि "किसी के साथ मांस खाने के लिए जबरदस्ती न की जाए।" इसके बाद एक अन्य आदेश जारी कर कहा गया कि मांस खानेवालों को सैनिकों के भोजनालय से अलग पकाना होगा। इस विजय से जहां सैनिकों में हर्ष व्याप्त हुआ वहां सिद्धांती जी के साहस व संघर्ष की सभी ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की। मांसाहार के विरोध के साथ सिद्धांती जी सैनिकों को शराब न पीने की प्रेरणा भी देते थे जिसका एक उदाहरण एक त्योहार के दिन कर्नल साहब के आमंत्रण पर आर्य सैनिकों का कर्नल साहब के तम्बू में "शराब न पीओ, मांस न खाओ" गीत गाना था। मांसाहार के प्रकरण में कोर्ट मार्शल में सिद्धांती जी के एक प्रबुद्ध एवं निर्भीक धर्म-प्रेमी के स्वरूप के दर्शन होते हैं जब उन्होंने ब्रिग्रेडियर को बाइबल को चूमकर शपथ लेने से साफ इंकार कर दिया और कहा कि यह उनका धर्म ग्रन्थ नहीं है।

जब आपको डोरा कैम्प (अरब) युद्ध मोर्चे पर भेजा गया तो वहां भी आप सत्यार्थप्रकाश साथ ले गये। कुछ आर्यसमाजी सैनिकों के सहयोग से आपने वहां लकड़ी का आर्यसमाज बनाया और सिद्धांती जी उसमें नित्यप्रति सध्या, हवन एवं सत्यार्थप्रकाश की कथा करने लगे। इस कार्य से कुछ अफसरों ने नाराजगी व्यक्त की तो उनको उत्तर दिया कि सत्यार्थप्रकाश भारत सरकार से रजिस्टर्ड है, इस पर पाबन्दी नहीं है। इससे पूर्व सेना में सत्यार्थप्रकाश रखने एवं उसे पढ़ने पर अघोषित प्रतिबन्ध था जो सिद्धांती जी के दो टूक उत्तर से समाप्त हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि अन्य आर्य सैनिकों ने उत्साहपूर्वक परोप-कारिणी सभा, अजमेर से सत्यार्थप्रकाश मगाये। अरब के युद्ध मोर्चे पर राशन लुट जाने से उत्पन्न अभाव पर आपरेशनस्तर पर थोड़ा राशन दिया गया तो सिद्धांती जी ने उस राशन में भी कटौती कर सत्यार्थप्रकाश साथ रखकर इस प्रेरणाप्रपद ग्रन्थ के प्रति अपूर्व निष्ठा का परिचय दिया।

अरब युद्ध से आप रेजीमेंट के साथ आगरा छावनी पहुंचे। रेजीमेंट में पांच कम्पनियां थीं। रेजीमेंट के आर्य सैनिकों ने निश्चय किया कि सभी आर्य सैनिक मार्च करते हुए "वैदिक धर्म की जय" एवं महर्षि दयानन्द की जय" का जय घोष करेंगे। जगदेवसिंह सिद्धांती जी हैडक्वार्टर कम्पनी में होने के कारण सबसे आगे थे। कम्पनी कमांडरों के नेतृत्व मे कम्पनियां मार्च कर रही थी और सैनिक बाजारों में मार्च करते हुए उक्त उद्घोष कर रहे थे। जनता एवं सैनिक सब विस्मित थे। अंग्रेजों के दमनपूर्ण शासन में जगदेवसिंह सिद्धांती का यह कार्य किसी बगावत से कम नहीं था।

मृत्यु को दावत देनेवाले उनके इस कारनामे से उनकी देशभक्ति, धर्म-प्रेम एव साहस का अनुमान लग सकता है।

लगभग साढे चार वर्ष सेना में सक्रिय जीवन व्यतीत कर आपने सेना छोड दी। इसी वर्ष (सन् १९२२) में इनकी पत्नी नानती देवी पहली बार ससुराल आयी। सेना छोड़ने पश्चात् सिद्धांती जी को संस्कृत भाषा के अध्ययन की धुन लगी। आपने निकटस्थ गुरुकुल मटिण्डू में गणित के अध्यापक का कार्य ग्रहण कर लिया और साथ-साथ सुप्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् पडित शान्तिस्वरूप जी से संस्कृत पढी। आपने पजाब विश्वविद्यालय की "प्राज्ञ" परीक्षा ८८ प्रतिशत अकों से उत्तीर्ण की और विश्वविद्यालय मे नया इतिहास बनाया। इसके अगले वर्ष विशारद की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण की। इसके पश्चात् आपने आर्यप्रतिनिधि सभा, पंजाब द्वारा स्थापित "दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय लाहौर" की सिद्धान्त विशारद एवं सिद्धांत भूषण परीक्षायें उत्तीर्ण की। इन परीक्षाओं के समय आप महाविद्यालय के आचार्य, सुप्रसिद्ध विद्वान् एव तपोनिष्ठ संन्यासी स्वतन्त्रानन्द सरस्वती के सम्पर्क में आये और उन्हें अपना गुरु स्वीकार कर उनकी आज्ञाओं का जीवनभर पालन करते रहे। इन परीक्षाओं के पास करने के साथ ही आपने "सिद्धांती" उपनाम ग्रहण किया जो जीवनभर उनके नाम को सुशोभित करता रहा।

सन् १९२६ मे आपको पत्नी ने पुत्र को जन्म दिया। बालक का नाम महेंद्र रखा गया। यह बालक मात्र डेढ़ वर्ष ही जीवित रहा। पुत्र वियोग ने पिता मे वैराग्य भावों को उत्पन्न किया। पत्नी को उन्होंने अपनी मनोदशा वर्णित की और उनकी अनुमति से उनका त्याग कर अपना सारा समय गुरुकुल मटिण्डू की उन्नति मे अर्पित किया। सन् १९२९ तक आप इस गुरुकुल मे रहकर संस्कृत विद्यालय किरठल का निमंत्रण मिलने पर वहा चले गये।

जब आपने संस्कृत विद्यालय किरठल (मेरठ) का आचार्य पद एवं समस्त व्यवस्थाओ का भार ग्रहण किया उस समय वहां दो छोटे मिट्टी के कच्चे कमरे और मात्र पाच विद्यार्थी थे। आपने अपनी समस्त जमा पूजी १०० रुपये विद्यालय के कामो में लगा दी। विद्यालय को आपने "आर्य महाविद्यालय, किरठल (मेरठ)" नाम दिया। इस संस्था से प्रेम का एक उदाहरण उस दिन सामने आया जब सिद्धांती जी महाविद्यालय के प्रधान चौ. रामसिंह जी से मिलकर लौट रहे थे तो आकाश में घनघोर बादल थे और रुक-रुककर बिजली चमक रही थी। प्रधान जी ने महाविद्यालय जो वहा से ८ मील दूर था जाने से रोका। साय का समय था परन्तु सिद्धान्ती जी नही मानें। तेज वर्षा शुरू होगई। सिद्धांती जी ने दौड लगाई रात्रि ८ बजे और महाविद्यालय के निकट के बरसाती नाले के पास पहुच गये जो वर्षा के जल से तेज उफानों के साथ बह रहा था। सिद्धांती जी नाले में सवस्त्र कूद पड़े और तैरकर नाला पार किया।

महाविद्यालय पहुचकर उन्होंने तत्काल भवन की एक गिर रही दीवार की रक्षा हेतु प्रबन्ध किया। महाविद्यालय के बालक छात्र उन्हें अपने बीच पाकर स्वय को सुरक्षित अनुभव करने लगे। कुछ समय के पश्चात् आपने अपने प्रभाव से प० शांतिस्वरूप जी को लाहौर से अध्यापनार्थ महाविद्यालय बुला लिया। पण्डित जी संस्कृत साहित्य एवं दर्शनों के प्रकाण्ड पण्डित थे। आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी विद्यानन्द जी भी जो संस्कृत भाषा के विद्वान् एवं कुशल वैद्य थे, सिद्धांती जी के निमंत्रण पर महाविद्यालय से जुड़े और अपनी समस्त जमा पूंजी ५,००० रुपये भवन निर्माणार्थ अर्पित कर दी। सन् १९३७ में स्वामी विद्यानन्द का महाविद्यालय में ही देहांत होगया। इस महाविद्यालय ने शिक्षा कार्य के साथ वैदिकधर्म के प्रचार प्रसार में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। पं० रघुवीरसिंह शास्त्री सासद इसी महाविद्यालय के छात्र थे जिन्होंने बाद में इसी महाविद्यालय का आचार्यपद ग्रहण कर इसकी प्रतिष्ठा को गौरान्वित किया।

आर्यसमाज के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी सर्वदानन्द जी की पुस्तक "सन्मार्ग दर्शन" में वैदिक मान्यताओं के विरुद्ध सामग्री का सिद्धांती जी ने विरोध किया। दोनों पक्षों के परस्पर सहमत न होने पर शास्त्रार्थ हुआ और स्वामी जी ने अपनी त्रुटियों को स्वीकार कर भावी संस्करण में उसके संशोधन का आश्वासन दिया।

सीकर (राजस्थान) में प्रजापति यज्ञ मे भी सिद्धांती जी की प्रमुख भूमिका रही। वहां सिद्धांती जी के शिष्य रघुवीर एवं शांतिस्वरूप जी ने पौराणिक पंडितों को अच्छा पाठ पढाया। इस यज्ञ की सफलता ने इन क्षेत्रों में प्रचलित सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने में प्रमुख भूमिका निभाई।

कांठ रियासत में राजा ध्यानसिंह की मृत्यु पर सम्पत्ति को लेकर मुकदमेबाजी हुई। राजा के दामाद ने वकीलों की सलाह पर स्वय को जो कि वास्तव मे जन्म से जाट जाति से सम्बन्धित थे शूद्र कहकर सम्पत्ति अपने पक्ष मे लेनी चाही जिससे विवाद उत्पन्न होगया। सिद्धांती जी को भी गवाह बनाया गया जिन्होंने वेद एवं अन्य शास्त्रों के उदाहरण देकर शूद्र शब्द के रुढ अर्थ प्रयोग पर आपत्ति की। एक वकील द्वारा सिद्धांती जी से न्यायालय को मिस गाइड का आरोप लगाने पर क्षमा मांगनी पडी। बाद मे न्यायाधीश ने अपने निर्णय में यह लिखकर कि पता नही जाट शूद्र हैं या क्षत्रिय, मुकदमे को अगली अदालत मे भेज दिया।

मानवाधिकारों की रक्षा के लिए आर्यसमाज ने सन् १९३९ मे हैदराबाद रियासत में आर्य सत्याग्रह की घोषणा की। महाविद्यालय किरठल से सिद्धांती जी अन्य सत्याग्रहियों के साथ शोलापुर पहुचे और सत्याग्रह के फील्ड मार्शल स्वामी स्वतन्त्रानन्द से आज्ञा लेकर तुलजापुर स्थान पर सत्याग्रह किया। इस सत्याग्रह मे सिद्धांती जी को लाठियो से पिटाई के साथ पुलिस की गालियों को भी सहन करना पडा। आपको छह मास का कारावास का दण्ड दिया गया। कारावास में आर्यजगत् की प्रमुख विभूतिया स्वामी विद्यानन्द जी स्वामी ओमानन्द एव स्वामी आत्मानन्द आपके साथ थी। इस सत्याग्रह मे आर्यसमाज को सफलता मिली। महात्मा गाधी जी ने बाद मे सिद्धान्ती जी और सत्याग्रहियों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि जिन पवित्र उद्देश्यो के लिए आपने कारावास के कष्ट सहे उन्हें सदा याद रखना।

सन् १९४० मे ग्राम शोरों (मुजफ्फरनगर) मे ५०,००० लोगों की उपस्थिति मे आप सर्वखाप पंचायत के प्रधान चुने गये और इस पद पर आजीवन रहे। आपके नेतृत्व में इस पंचायत ने हरयाणा एवं उत्तर-प्रदेश के अनेक स्थानो पर अनेक समाज सुधार के कार्य किये।

सिद्धांती जी ने सन् १९४५ में दिल्ली में सम्राट् प्रेस की स्थापना की। आपने सम्राट् नाम के ही एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन भी किया जिसने वैदिक सत्य मान्यताओं के प्रचार प्रसार में योगदान दिया। आर्य आर्योदय आर्यमर्यादा आदि पत्रों का सम्पादन भी आपने किया। आर्यविद्वान् अनूपसिंह आपके सहयोगी रहे हैं। उनका कहना है कि सिद्धांती जी ने नवयुवकों को सदैव प्रोत्साहित किया। यदि किसी नौजवान के हाथ की कुछ पंक्तियां उन तक पहुंची थी तो उसे वह अवश्य प्रकाशित करते थे और यदि कहीं उनके प्रवचन के साथ कोई नवयुवक उपस्थित होता था, तो अपना प्रवचन संक्षिप्त करके अपना शेष समय उस नवयुवक को दे देते थे। अपनी श्रद्धांजलि में सिद्धांती जी को उन्होने "गुदड़ी के लाल" की उपमा दी है।

सन् १९५६ में पंजाब हिन्दी रक्षा आंदोलन में आप बोस्टल जेल हिसार में रहे। सन् १९६२ से १९६७ तक आप हरयाणा लोक समिति की ओर से लोकसभा सदस्य रहे। आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब एवं दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के मन्त्री एवं प्रधान के रूप में आपने आर्यसमाज को प्राणपन से सेवा की। आप न्याय एवं वैशेषिक दर्शन के भी प्रमुख विद्वान् थे और यह विषय संस्कृत माध्यम से आपने गुरुकुल झज्जर के छात्रों को पढाया। वैदिक वाङ्मय का इतिहास, मृत्यु के पश्चात् जीव की गति, छात्रोपयोगी विचारमाला, वैदिकधर्म परिचय आदि आपकी कुछ प्रमुख रचनाएं हैं। सन् १९३५ में आपको कुछ ईर्ष्यालु लोगों ने दूध मे संखिया मिलाकर पिला दिया था परन्तु दैवयोग एव स्वामी विद्यानन्द की चिकित्सा से आप बच गये थे। २७ अगस्त १९७९ को आपका देहांत हुआ।

सिद्धांती जी का जीवन सर्वस्व त्याग का उदाहरण प्रस्तुत करता है। आयनेताओं का स्वार्थी एव अहमन्यी होना आर्यसमाज के हितों के विरुद्ध है। उनसे प्रेरणा ग्रहण कर स्वजीवन को उनके अनुरूप बनाना ही उस युगपुरुष को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

—मनमोहनकुमार आर्य

श्रेष्ठ औषधि है सुबह की सैर

स्वस्थ जीवन के लिए संतुलित आहार, आवश्यक व्यायाम तथा उचित आराम तीनों ही जरूरी हैं। तीनों का मेल साधकर जो व्यक्ति अपना दैनिक कार्य करता है वही स्वस्थ रह सकता है।

आधुनिक युग में हर तरफ विकास होरहा है चिकित्सा विज्ञान ने काफी तरक्की की है, पर रोगों में कोई विशेष कमी नहीं हुई, वे भी उतनी ही तेजी से बढ़ रहे हैं। हर व्यक्ति अपने स्वास्थ्य के लिए चिंतित तो रहता ही है मगर कर कुछ नहीं पाता। इसका कारण है उसके पास समय का अभाव। वह बीमारियों से घिरा रहता है और वह दवाइयों का प्रयोग कर अपने को स्वस्थ रखने की कोशिश करता है।

क्या कभी आपने इस बात पर गौर किया कि बीमारियों से बचाव और उनकी चिकित्सा का एक अनूठा साधन है—व्यायाम। व्यायाम भी कई तरह के होते हैं परन्तु उन सब में सबसे सुलभ व्यायाम है—'घूमना'। घूमने से हमारा तात्पर्य सिर्फ सैर करना ही नहीं बल्कि तेजी से चलना है। हफ्ते में ५ दिन तेज गति से २० मिनट तक चलना चाहिए। २० मिनट के अन्दर तीन किलोमीटर तक चलना उचित है। व्यायाम से पहले शरीर को पांच मिनट तक गरम करने का अभ्यास भी आवश्यक है और व्यायाम के पश्चात् ५ मिनट तक शरीर को पूर्ण आराम भी मिलना चाहिए।

> रोगों का इलाज सिर्फ दवा ही नहीं है। प्राकृतिक आहार-विहार तथा संयम और व्यायाम स्वस्थ जीवन के आधार स्तम्भ हैं। सुबह की सैर एक निरापद किस्म का व्यायाम है। हृदयरोग तथा मधुमेह आदि बीमारियों में टहलना श्रेष्ठ औषधि है। टहलने के नियम और उसके फायदों के बारे में हृदयरोग विशेषज्ञ डा. के. के. अग्रवाल का लेख।

साइकिल चलाना व तैराकी भी अच्छे व्यायाम हैं। परन्तु अचानक ही कोई व्यायाम जिसका अभ्यास न हो, शुरू नहीं करना चाहिए। धीरे-धीरे ही अभ्यास कर व्यायाम का समय बढाना ठीक है। अत्यधिक बल लगानेवाले ऐसे व्यायाम जो आपका शरीर आसानी से नहीं कर पा रहा हो, उसे नहीं करना चाहिए। इससे रक्तचाप व नब्ज की गति तेज हो जाती है और दिल का दौरा पड़ने की सम्भावना भी बढ़ती है। हृदयरोग से पीड़ित व्यक्ति के लिए भी तेजी से घूमनेवाला व्यायाम भी लाभकारी होता है मगर इससे पहले उन्हें अपने विशेषज्ञ से राय लेकर टी एम. टी अवश्य करवा लेना चाहिए ताकि यह पता लग सके कि उनका हृदय व्यायाम के बोझ को सह सकता है कि नहीं।

व्यायाम करने पर हृदय जितनी बार सिकुड़ता है उतनी ही बार शरीर में अधिक रक्त भेजता है। इसी कारण शरीर में रक्त का दौरा तेजी से होता है और पूरे शरीर में शुद्ध रक्त पहुंचने पर फुर्ती और तन्दुरुस्ती बनी रहती है। हृदयरोग जो कोलेस्ट्रोल व ट्राइग्लिसराइड्स के रक्त में बढ़ने के कारण होते हैं व्यायाम से वे तत्व रक्त में कम होते जाते हैं और रोगों से बचाव होता है। एच. ड . एल. (जो कि एक अच्छे प्रकार का कोलेस्ट्रोल होता है) व्यायाम से शरीर में बढ़ता है और इस कारण दिल के दौरे की संभावनाएं भी कम हो जाती है।

तेज गति से चलने या जॉगिंग करने पर शरीर में फैली रक्त नलिकाओं को ताकत मिलती है उनमें शुद्ध व एच. डी एल. कोलेस्ट्रोल पहुंचने पर न तो थक्का (क्लॉट) जमने का डर रहता है और न ही वह सख्त होती हैं। इसलिए रक्त का दौरा शरीर में ठीक प्रकार से होता रहता। शरीर का रक्तचाप भी नहीं बढ़ता। वजन भी कम होता है।

व्यायाम से शरीर एवं मस्तिष्क दोनों पर ही अच्छे प्रभाव पड़ते हैं। आमतौर पर जो बीमारियां इस आधुनिक युग की देन हैं जैसे कि हृदयरोग, मधुमेह (डायबिटीज), मोटापा, तनाव तथा डिप्रेशन और कब्ज इत्यादि रोग भी व्यायाम से ठीक होते हैं और इनसे बचाव भी होता है। शुद्ध वायु में लम्बी सांस लेने से फेफड़ों की क्रियाशीलता में वृद्धि होती है एवं आक्सीजन द्वारा रक्त शुद्धि की क्रिया अच्छी तरह होती है। मानसिक उद्विग्नता से निपटने के लिए भी घूमना हितकर है।

सैर करने से शरीर में मौजूद (पैनाक्रियाज) व अन्य अंग जिनमें इंसुलिन बनती है, सक्रिय हो जाते हैं और इंसुलिन की कमी से होनेवाले रोग मधुमेह के रोगियों को काफी लाभ पहुंचता है। अक्सर देखा गया है कि मधुमेह का रोगी मोटापे से भी पीड़ित होता है। नियमित व्यायाम करने से व्यक्ति का वजन भी कम होने लगता है और उसके शरीर में इंसुलिन बनने के कारण उसे डायबिटीज की दवा भी कम मात्रा में लेनी पड़ती है। पेट की मांसपेशियों पर चर्बी जमा हो जाने से वे ढीली और कमजोर पड़ जाती है किन्तु व्यायाम से वे पुनः मजबूत हो जाती हैं और पेट भी घट जाता है। इससे पेट की आंत सक्रिय हो उठती हैं। व्यक्ति का कब्ज से बचाव होता है।

शरीर की मांसपेशियों व हड्डियों में भी मजबूती आती है। वैज्ञानिक अनुसंधानों से पता लगता है कि नियमित सैर करने से महिलाओं में हार्मोन नियन्त्रित रहते हैं और कैंसर की आशंकाएं कम होती हैं।

सैर के साथ ही योग्य जानकार की देखरेख में आसन और दूसरे प्रकार के व्यायाम भी शुरू किये जा सकते हैं लेकिन तेजी से सैर करने या व्यायाम करने से पहले और बाद में कुछ सावधानियां भी बरतनी आवश्यक हैं। खाना खाने के बाद २ घंटे तक व्यायाम न करें। धूम्रपान व व्यायाम का कोई मेल नहीं। ऐसा साथ साथ करना खतरनाक है। व्यायाम से पहले शरीर को पांच मिनट तक गर्मी पहुंचाना जरूरी है। व्यायाम के पश्चात् पांच मिनट तक आराम करना अति आवश्यक है।

हर्निया के मरीज को व्यायाम शुरू करने से पहले डाक्टर से अवश्य मशविरा कर लेना चाहिए।

लोग हजारों रुपया दवाओं व डायटिंग पर खर्च करते हैं मगर अस्थायी लाभ ही होता है। यदि पहले से ही व्यायाम की या नियमित वाकिंग व 'जागिंग' की आदत बना ली जाए तो रोग होने न हो और यदि कोई रोग हो होगया हो तो उसकी चिकित्सा में मदद मिलती है।

शोक सभा

प्रि० रामेहरसिंह राठी एवं मा० जयनारायण जी की माता श्रीमती भूपदेवी का देहान्त १६ सितम्बर १९९५ शनिवार को प्रात काल ८ बजे होगया। उनकी आयु ८३ वर्ष थी।

१ अक्तूबर १९९५ को प्रात काल ९ बजे उनके निवास स्थान ग्राम गुभाना माजरी (जिला रोहतक) में माता जी की शोकसभा होगी।

—वेदव्रत शास्त्री

निमन्त्रण-पत्र

आर्ष गुरुकुल किशनगढ घासेड़ा के वार्षिक उत्सव पर १, २ अक्तूबर को आप सादर आमन्त्रित है। कृपया दर्शन देकर कृतार्थ करें। धन्यवाद। सबको सादर नमस्ते आज। शेष मिलने के बाद।

—धर्मवीर

शोक सभा आयोजित

३ सितम्बर १९९५ को दयानन्द मठ रोहतक में चौ विजयकुमार जी के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए एक विशाल शोक-सभा आयोजित की गई, जिसमे प्राय: सभी इष्ट मित्रों ने उनको ईमानदार और स्वच्छ छविवाले, सदा सेवातत्पर, कुशल प्रशासक के रूप मे याद किया, कैंसर के रोगी होने पर भी सच्चे कर्मयोगी की तरह जहां तक हो सका शुभकार्यों में लगे रहने की उनकी लगन अनोखी थी। उनके नेतृत्व में मद्य-निषेध आन्दोलन मे अभूतपूर्व गति आई और अंततः राजनीति मे यह एक महत्त्वपूर्ण चुनावी मुद्दा बन गया। भारी वर्षा एवं बाढ़ की स्थिति में भी दूर-दूर से

इस जनसभा में श्री विजयकुमार के प्रशंसक एव मित्र आए। आर्य नेता स्वामी दीक्षानन्द, हरयाणा के भूतपूर्व मन्त्री श्री हीरानन्द आर्य, भूतपूर्व राज्य अधिकारी श्री ओम्प्रकाश यादव, वर्तमान आयुक्त रोहतक मंडल श्री अर्जुनदास मलिक आई. ए. एस., सप्लाई विभाग आयुक्त रोहतक श्री बीरबल आई. ए. एस., मा० मांगेराम बीकानेर, ला० लछमनदास आर्य फरीदाबाद, प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार, चौ० धर्मचन्द्र मोरवाला, चौ० सूबेसिंह पूर्व एस. डी. एम. रोहतक, चौ० सोमपाल एम. पी., चौ० भूपेन्द्रसिंह हुड्डा एम. पी. रोहतक, श्री ग्यासीराम आर्य गुरुकुल मोरमाजरा, प्रो० आर. एम एस. मलिक, एम. डी. यू. रोहतक, श्री सीसराम लांग्यान जी. एम. सेवानिवृत्त रोहतक, श्री देवव्रत आचार्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य वीर दल इत्यादि अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने बड़े प्रेम व आदर से उन्हें याद किया। पगड़ी रस्म डा० सुदर्शनदेव आचार्य ने करवाई। शोक-सभा के अन्त में प्रो० शेरसिंह ने पूरे परिवार की तरफ से सब उपस्थित महानुभावों का इस अवसर पर सवेदना एवं सहानुभूति प्रकट करने के लिए आभार जताया।

—शेरसिंह 'व्यवस्थापक'

शोक प्रस्ताव

१—आर्यसमाज रामनगर गुड़गांव के सभी सदस्य हरयाणा शराबबन्दी समिति के संयोजक चौ० विजयकुमार जी आई० ए० एस० (रिटायर्ड) के देहावसान पर गहरा शोक प्रकट करते हुए आर्य परिवार के प्रति हार्दिक सवेदना एवं सहानुभूति व्यक्त करते हैं।

चौ० साहब अपने सेवाकाल में समाज हितकारी कार्य करते हुए सेवानिवृत्त के पश्चात् भी सामाजिक बुराई को दूर करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ मिलकर शराबबन्द का कार्य पूरी शक्ति के साथ करते रहे। उनके सयोजन मे पूरे हरयाणा मे शराबबन्दी आंदोलन की धूम मची रही।

परमपिता परमात्मा दिवंगत पवित्र आत्मा को चिरशांत प्रदान करे। आज प्रातः आर्यसमाज मन्दिर मे सत्संग सभा में दिवंगत पवित्र आत्मा के प्रति सर्वान्तर्यामी प्रभु से प्रार्थना की गई।

सदस्यो की ओर से—
ओमप्रकाश चुटानी 'मन्त्री'

२—हरयाणा राज्य गोशाला संघ पानीपत का यह जानकर कि स्व० श्री विजयकुमार जी आई० ए० एस० भूतपूर्व उपायुक्त पानीपत का देहांत २७-८-१९९५ को उनके निवास पर होगया है बहुत दु:ख हुआ। स्व० श्री विजयकुमार जी अत्यन्त समझदार अधिकारी रहे। सेवानिवृत्ति के पश्चात् आर्यप्रतिनिधि सभा से मिलकर नशाबन्दी का कार्य करते रहे। गोशाला पानीपत मे भी "एक रात मे पूरी नशाबन्दी" एव "चेतावनी" खबरे की घटो साहित्य नशाबन्दी भिन्न-भिन्न समयों मे लेकर वितरण करते रहे जिससे बड़ा प्रभाव पड़ा। स्वर्गीय का सारा परिवार सामाजिक बुराइयों के आन्दोलनों से जुड़ा रहा है। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके छोड़े हुए स्वजनों को सहनशक्ति प्रदान करे।

—प्रेमचन्द, हरयाणा राज्य गोशाला संघ, पानीपत

३—सर्वहितकारी परिशिष्ट २८-८-९५ द्वारा यह जानकर कि चौ० विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त पानीपत का देहान्त होगया—आघात लगा।

चौधरी साहब संस्थान की प्रबन्धकर्त्री समिति भारतीय विद्या प्रचारिणी परिषद् पंजीकृत समालखा के आजीवन सदस्य तो थे ही, संस्थान के संरक्षक समान इसके परम हितैषी भी थे। पानीपत से स्थानान्तरित हो जाने के बाद भी आप इधर का कार्यक्रम होने पर संस्थान अवश्य आते थे तथा संस्थान का अपना भवन आज जहां बनकर तैयार है, यह परिसर इसे पानीपत के उपायुक्त रूप में स्वर्गीय की ही भेंट है। समालखा नगरपालिका से मात्र १०/- प्रति गज की दर से उन्होंने दिलाया जो बिना उनके किसी तरह संभव न था।

यों संस्थान का आज का स्वरूप निस्सन्देह उन्हीं की बदौलत है, यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं। पानीपत जिले के संस्थापक उपायुक्त थे तथा समालखा पानीपत जिले की एक तहसील है तो भी संस्थान के साथ उनका सम्बन्ध अधिकारपूर्ण न होकर अपने घर के बुजुर्ग जैसा था जो सदा अपने परिवार की उन्नति हेतु चिन्तित एवं सचेष्ट रहता हो। हमें उनके अपनेपन पर गर्व था तथा यदि वे स्वस्थ रहते तो संस्थान के रूप निखार में निस्सन्देह उनका योगदान और भी उल्लेखनीय होता। किन्तु ईश्वर को जैसा स्वीकार है, उसी के प्रति नतमस्तक होने में ही कल्याण है।

उन्हें अकस्मात् घातक रोग ने आ दबोचा तथा कोई उन्हें मृत्यु से बचा न सका। उन्हे जीवन मिलता तो निश्चय ही वे हरयाणा की राजनीति को शराबबन्दी के लिए ही नहीं अन्य अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों पर सुनिश्चित दिशा देते।

परिषद् के सभी सदस्य एवं अधिकारी तथा हम सभी संस्थानवासी उनके वियोग से उनके परिवारजनों की भांति दु:खी हैं। परमपिता परमात्मा दिवंगत को सद्गति एवं शान्ति प्रदान करे तथा हम सबको उनकी दिखाई राह पर चलने की शक्ति दे यही प्रार्थना है।

संस्थान की ये भावनाएं एवं श्रद्धांजलि कृपया संतप्त परिजनों तक भी पहुंचाने का कष्ट कर अनुगृहीत करें। प्रभु उन्हें यह आघात सहन करने की सामर्थ्य बख्शे। संवेदनापूर्वक।

—रणवीर शास्त्री, प्राचार्य भारतीय शिक्षा संस्थान समालखा (पानीपत)

४—आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत की यह साधारण सभा कुशल प्रशासक एवं कर्मनिष्ठ आर्यसमाजी श्री विजयकुमार जी की आकस्मिक मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे एवं उनके परिवारजनों को यह अपार वेदना सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

शोकाकुल
प्रबन्ध समिति, छात्र एवं अध्यापकगण
आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पानीपत

५—हमे यह जानकर अतिदु:ख हुआ कि श्री विजयकुमार जी आई० ए० एस० का दु:खद निधन होगया। वे आर्यसमाज महर्षि मिशन के निष्ठावान् कार्यकर्त्ता थे। वे बहुत ही कुशल एवं ईमानदार अधिकारी थे। शराबबन्दी समिति के संयोजक के नाते शराबबन्दी के लिए जो ऐतिहासिक कार्य उन्होंने किया वो सदा याद किया जायेगा। हमारी प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा शोक संतप्त परिवार को यह दु:ख झेलने की सामर्थ्य दे।

आपके दु:ख में सहभागी
करणसिंह आर्य, प्रधान आर्यसमाज रामनगर
रोहतक रोड जीन्द—१२६१०२

६। आर्यसमाज 'नगर' सोनीपत की साधारण एवं कार्यकारिणी सभा हरयाणा शराबबन्दी समिति के सयोजक आर्यजगत् को गतिविधियों में अग्रणी नेता, ईमानदार सेवानिवृत्त उपायुक्त, समाज एवं राष्ट्र हितकारी आन्दोलनों मे अग्रणी चौ० विजयकुमार जी के देहावसान पर हार्दिक संवेदना व्यक्त करती है।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह उनके शोक संतप्त परिवार को इस असहनीय दु:ख एवं शोक सहन करने की शक्ति प्रदान करे एवं दिवंगत आत्मा के अवशिष्ट पुण्य कार्यों को पूरा करने की शक्ति एवं सद्बुद्धि दे।

—वेदप्रकाश आर्य मन्त्री

स्तुतिप्रार्थनोपासना मन्त्रों का भावानुवाद

जग के कर्त्ता हे परमेश्वर, सकल जगत के स्वामी।
शुद्धस्वरूप सुखों के दाता प्रभुवर, अन्तरयामी॥
जो हैं दुरित हमारे अन्दर उन्हें दूर कर दीजें।
जो कल्याण करें, हममें वे सब सद्गुण भर दीजें॥

स्वप्रकाश स्वरूप, जगत का एक सदा से स्वामी।
सूय भूमि आदिक को धारण करता अन्तरयामी॥
उस अनादि परमेश्वर की हम परम कृपा का वर लें।
करके उसकी स्तुति प्रार्थना हम भवसागर तर लें॥

आत्मज्ञान बल देनेवाला, जिसको सब ध्याते हैं।
जिसकी शरण ग्रहण करने से, जीव मोक्ष पाते है॥
वह है केवल जगन्नियन्ता, हम उसका व्रत धर लें।
करके उसकी स्तुति प्रार्थना, हम भवसागर तर लें॥

जड़ चेतन, स्थावर-जंगम का है महान प्रतिपालक।
मनुष्य, पशु, सब जीव जन्तुओं का है सच्चा मालिक॥
उस रक्षक परमेश्वर को हम धर के ध्यान सुमर ले।
करके उसकी स्तुति प्रार्थना हम भवसागर तर लें॥

सूर्यादिक जिसको तपते, दृढ़ धरती माता।
किया मोक्ष को धारण जिसने, लोकों का निर्माता॥
सब सामर्थ्ययुक्त ईश्वर से प्रेम सभी हम कर लें।
करके उसकी स्तुति प्रार्थना हम भवसागर तर लें॥

कण-कण में व्यापक प्रभुवर हे सकल प्रजा के स्वामी।
और नहीं है भिन्न आपसे जग में अन्तरयामी॥
जिस पदार्थ की करें कामना वह-वह पूरी कर दो।
धनैश्वर्यों के स्वामी होवें, हे परमेश्वर वर दो॥

वही हमारा बन्धु श्रेष्ठ है, वह है जगत रचाता।
मोक्ष धाम आदिक सबको वह जाने एक विधाता॥
जिन धामों में मोक्ष प्राप्त कर हैं विद्वान विचरते।
सदा विज्ञजन उस ईश्वर की स्तुति हृदय से करते॥

हे प्रकाशस्वरूप प्रभो! सन्मारग हमें दिखाओ।
पापरूप जो कुटिल आचरण उनसे दूर हटाओ॥
आप सभी के कर्म जानते, आप न्याय करते हैं।
हे परमेश्वर बार-बार हम नमस्कार करते हैं॥

—अनुवादक : सहदेव शास्त्री, आदर्शनगर जीन्द

वर्तमान केन्द्र सरकार को भगवान पर विश्वास नहीं

"ब्रह्म कवि बीरबल ने बादशाह अकबर को ईश्वर विश्वास पर यह निम्नलिखित दोहा एवं कविता में कितना सुन्दर उपदेश दिया है जिसे सुनकर अकबर दंग रह गया। हमारी वर्तमान कांग्रेस केन्द्र सरकार के परिवार नियोजन मंत्रीगण भगवान पर विश्वास कर पुरुषार्थ करें करावें तो यह कहने का मौका ही नहीं आवे कि जनसंख्या बढ़ रही है खाने का इन्तजाम नहीं है इसलिए परिवार नियोजन द्वारा मानव हत्या भ्रूण हत्या का महापाप है न करना पड़े।

हे भगवान् के प्यारो! अपने हो भरोसे यह जीवन चल रहा है, इसको भूलकर उस कर्ताधर्ता विधाता की महान् कृपा से सब का जीवन चलता है, यह जानकर भारत की प्राणाधार गौ माता की सेवा सत्कार में लगो और जो हत्या के महाकलंक को भारत-भू से हटाकर गौ माता को जीने दो दूध की नदियां बहने दो। संत विनोबाभावे कह गये पुकार, बन्द करो ये गौ संहार।

ईश्वर विश्वास पर लगभग चार सौ वर्ष पूर्व राजा बीरबल ब्रह्मकवि ने बादशाह अकबर को प्रभु विश्वास यह कवित-दोहा सुनाया था।

कण कीड़ी मण कुंजरा, अनल पंक गंज पाँव,
मोती देत मराल को, रस प्रभुवर मैं सांच।

कवित

जब दांत न थे, तब दूध दिया, जब दूध दिया कह अन्न न दे है।
जो जल में थल में, पशु पक्षिन की सुध ले है सो तो को भी दे है।
जान को देत अजान को देत, जहान को देत, सो सो तो को भी दे है।
काहे को सोच करे मन मूरख, सोच करे कुछ हाथ न ऐ है।
यद्यपि द्रव्य को सोच करे, पर गर्भ मे के ते गांठ को खाये।
जा दिन जन्म लियो जग मे, तब केतिक कोटि लिये मग आयो।
वा को भरोसो न छोड अरे मन, जा सो अहार अचेत में पायो।
"ब्रह्म" कहे सुन शाह अकबर, देख मेरो मन यो अलसायो।

नोट—परिवार नियोजन राष्ट्रीय संकट देश के महापुरुषों की चेतावनी अवश्य पढ़े। आपातकाल में संतान प्राप्ति एवं संतान निरोध पर आयुर्वेद के चमत्कारी प्रयोगों का उपयोग करे। मूल्य १० रु० प्रचारार्थ केवल ५ रु० में सात पुस्तकों का सैट।

विशेष—गौ करुणानिधि पुस्तक अवश्य पढ़िये। लागत मूल्य ६ रु० प्रचारार्थ केवल ३ रु० ५० पैसे में प्राप्त करे।

संग्रहकर्ता—स्वामी केवलानन्द सरस्वती, तपोवन आश्रम आर्यसमाज, आदर्शनगर, अजमेर

स्वतन्त्रता संग्राम का बहादुर देशभक्त अमर शहीद मदनलाल ढींगरा जिसने लंदन में भारत के शत्रु सर विलियम करजन वायली को अपने रिवाल्वर से गोली मारकर भारत के अपमान का बदला लिया और जिन्हें लन्दन में १७ अगस्त १९०९ को फांसी पर चढ़ा दिया गया

लेखक डा० शान्तिस्वरूप शर्मा जरनलिस्ट कुरुक्षेत्र

१५ जुलाई सन् १९०९ को क्रान्तिकारी मदनलाल धींगरा के विरुद्ध वेस्ट नेटलकोर्ट लन्दन की अदालत के एक बन्द कमरे में कार्यवाही आरम्भ हुई। उस समय ढींगरा ने अपने बयान में कहा था कि मैंने सर करजन वाइली की हत्या जान-बूझकर की है। यह भारत में अंग्रेज सरकार के लिए पालिसी बनाता था। जिससे ब्रिटिश तानाशाही सरकार हिन्दुस्तानी क्रान्तिकारियों को फांसी देकर भारतीयों में दहशत पैदा कर रही थी। मेरी करजन वाइली से कोई जातीय दुश्मनी नहीं थी। मैंने जो किया उस पर मुझे गर्व है। मेरी अदालत से प्रार्थना है कि मुझे जल्दी फांसी की सजा दे जिससे कि मैं अपने सरदार भगतसिंह जैसे अमर शहीद साथियों से जाकर मिल सकूं।

क्रान्तिकारी मदनलाल ढींगरा ने आगे कहा—'मैं यह जानता हूं कि देश को गुलाम रखना ईश्वर के विरुद्ध है। हमारी लड़ाई अंग्रेजों के विरुद्ध तब तक जारी रहेगी जब तक हमारा देश स्वतन्त्र नहीं हो जाता। मैं यह भली-भांति जानता हूं कि ब्रिटिश सरकार के विरोध का यही एक तरीका है कि हम उन अंग्रेजों को गोली का निशाना बनाएं जो हमारे देश को अपवित्र कर रहे हैं। आजादी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है जिसे हम लेकर रहेंगे।" इसके पश्चात् अदालत ने यह केस सेशन जज के पास भेज दिया जिसने स्वतन्त्रता संग्राम के वीर सेनानी ढींगरा को १७ अगस्त सन् १९०९ को लंदन में सुबह के समय फांसी दे दी।

कुछ लोगों ने इस कतल के विरुद्ध एक जलसा किया जिसमें सर्व-सम्मति से यह फैसला किया गया कि हम मदनलाल ढींगरा के द्वारा किए गए कतल की निन्दा करते हैं। "तभी एक कोने से आवाज आई कि मैं इस प्रस्ताव के विरुद्ध हूं।" यह थे ढींगरा के गुरु क्रान्तिकारी वीर सावरकर उनके सहमत न होने पर किसी विरोधी ने सावरकर पर प्रहार किया इसके प्रत्युत्तर में एक अन्य भारतीय ने उस प्रहार करनेवाले पर लाठी से हमला किया। इस प्रकार वह सभा झगड़े में समाप्त होगई।

मदनलाल ढींगरा के बलिदान पर प्रसिद्ध क्रान्तिकारी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने अंग्रेजी समाचार पत्र में एक लेख लिखा जिसने नवयुवकों में एक नया जोश भर दिया। अंग्रेजी सरकार ने उस अखबार को जब्त कर लिया। परन्तु वे ढींगरा के बलिदान से नवयुवकों में उठी क्रान्ति की लहर को दबा नहीं पाए और देश में ढींगरा के बलिदान से प्रेरित होकर नौजवान देश पर मर मिटने को तैयार होगए।

उधर लंदन में सर विण्डसर चर्चिल ने भी ढींगरा के साहस की प्रशंसा की उन्होंने कहा कि ढींगरा के बलिदान ने नवयुवकों का सिर ऊंचा कर दिया है।

ढींगरा के बलिदान के लगभग दस वर्ष पश्चात् महात्मा गांधी ने कांग्रेस की बागडोर सम्भाली थी। गांधी जी के आने से पहले ही मदनलाल ढींगरा जैसे अनेक वीर सपूत देश की बलिवेदी पर शहीद हो चुके थे। आई. सी एस की परीक्षा देने गए एक विद्यार्थी में देश प्रेम की ऐसी ज्वाला भड़की कि उसने कलम की जगह बन्दूक उठा ली और देश के लिए विदेश में पहला बलिदान देकर मातृभूमि का सर ऊंचा कर गया। उस वीर क्रान्तिकारी मदनलाल ढींगरा को हम सब का शत-शत प्रणाम।

शराब बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इनसे दूर रहें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक फोन। (७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ४०७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २१२०७/७३ रजि० नं० P/RTK-४१ फोन नं० ---- टेलीफोन १, ६६, ०८, ५३, ०२१

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०
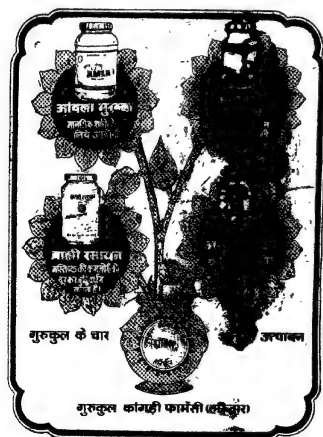
वर्ष २२ अंक ४३ ७ अक्तूबर, १९९५ (वार्षिक शुल्क ५०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

मूर्तियों के दूध पीने का रहस्य

—भारत भूषण

संघ परिवार जो हिंदुत्व के रक्षक एवं उन्नायक होने का दंभ करता है, ने एक ही झटके में २१ सितम्बर को सारी दुनिया में साबित कर दिया कि हिंदू कितने "बुद्धि-निरपेक्ष" हैं क्योंकि उस दिन पत्थर की मूर्तियां दूध पीने लगी थी।

इसी के साथ यह भी साबित कर दिया कि जो देश कभी 'विश्व गुरु' होने का गौरव रखता था और जिसकी ओर दुनिया आज भी तनाव एवं संघर्ष से मुक्ति तथा शांति की राह के मार्ग-दर्शक के रूप में देखती है, वह दरअसल 'मूर्खों का देश' है जहां तर्क एवं विचार का कोई स्थान नहीं है।

ऐसा क्यों और कैसे किया गया, इसका हमारी राजनीति, प्रशासन, पुलिस, शिक्षा एवं नागरिकों की प्रबुद्धता से क्या संबंध है? इस सब पर विचार किया जाना जरूरी है।

उल्लेखनीय है कि सुप्रसिद्ध समाजवादी विचारक स्व० मधु लिमये ने आर.एस.एस. को रयुमर्स स्प्रैडिंग सोसायटी (अफवाहबाज संस्था या दुष्प्रचार मंडल) के रूप में परिभाषित किया था। यह तब की बात है जब जपा का संगठन एवं उसकी सरकार उसके एक घटक (जनसंघ) के संघ से संबंधों को लेकर "दोहरी सदस्यता" अर्थात् दोहरी प्रतिबद्धता के सवाल पर आत्म-संघर्षरत था। आज यदि मधु जी जिन्दा होते तो आश्चर्यचकित रह जाते कि उनकी परिभाषा आज भी कितनी सटीक है और यह भी कि यह संगठन अपने मूल चरित्र (दक्षिणपंथी, दकियानूसी, सांप्रदायिक, रहस्यावरणमयी एवं लोकतंत्र विरोधी) में आज भी वैसा ही है। वैसे तो गत वर्ष मधु जी के जीते जी भी ऐसा ही प्रमाण दिया गया था जब प्रो राजेन्द्रसिंह उर्फ रज्जू भैया ने श्री बाला साहेब देवरस से संघ के प्रमुख (सरकार्यवाह क्या यह शब्द भारतीय लगता है और क्या इसमें हिटलर का सम्बोधन 'फ्युरर' प्रतिध्वनित नहीं होता है, जरा गौर करें) का कार्यभार संभाला था। याद करें, क्या उस दिन सारे देश में राष्ट्रपति (वर्तमान) जी की मृत्यु की अफवाह नहीं फैल गई थी। अब मूर्तियों द्वारा दूध पीने की अफवाह फैल गई। दरअसल, उस वक्त संघ ने अपनी 'मशीनरी' का परीक्षण किया था कि वह ठीक से कार्य कर रही है या नहीं। ऐसा ही इस बार हुआ। परन्तु क्यों।

राजनीतिक खेल

आज देश का जो राजनीतिक माहौल है वह कतई भी ऐसा नहीं है जो भाजपा को अपने बलबूते अकेले ही केन्द्र में बहुमत दिला दे। वह भी तब जबकि दिल्ली एवं गुजरात में वह सब कुछ हो रहा है जिससे 'मुक्त' होने का दावा किया जाता था तथा राजस्थान के पालिका चुनावों में उसे कोई महत्त्वपूर्ण (चमत्कारिक तो दूर) सफलता नहीं मिल सकी और सर्वोपरि, उ.प्र. में उसे बसपा सरकार को ढोना पड़ रहा है (कानूनन देश में सिर पर 'मैला' ढोने की प्रथा बन्द कर दी गई है परन्तु भाजपा को करना पड़ रहा है)। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि 'चमत्कार को, नमस्कार' कहने वाले देश में कुछ ऐसा किया जाए जो चमत्कारिक हो। सो, पत्थर की मूर्तियों को दूध पिलवाया गया। कुछ वर्ष पूर्व देश में कंबो घूम रही थी और काल्पनिक प्रश्नों के मनोवांछित उत्तर दे रही थी। इससे भी कुछ पहले 'स्टोव देवता' बोल चल रहे थे। यदि लोगों को ध्यान नहीं है तो इस बार गौर से देखें कि इस बार के दुष्प्रचार में संघ परिवार के ऊपर से नीचे एवं दाएं से बाएं के कितने नेता, कितने कार्यकर्ता लिप्त थे। गली-मुहल्ले के कितने निठल्ले इस 'करामाती खेल' में शामिल थे? सारे देश में इधर से उधर फोन करने वाले कौन थे और नकली दूध निर्माताओं से इनका क्या सम्बन्ध है?

दूसरा प्रमुख कारण है, तीन दिन बाद २५ सितम्बर से विश्व हिंदू परिषद् द्वारा २० छोटी-बड़ी एकात्मता यात्राओं का एवं त्रिमाता (भारत माता, गंगा माता, गऊ माता) पूजन का आयोजन किया जा रहा है। मात्र हलवा-पूड़ी खाने के लिए भगवा वस्त्र धारण करनेवाले नशेड़ी (जो साधु-संत का भेष धारण किए इधर-उधर डोलते रहते हैं) अभी भी विहिप के जरिये संघ के कब्जे में हैं या नहीं, यह टेस्ट किया जाना था (जैसे कुछ समुदायों, परिवारों में विवाह पूर्व लड़की का कौमार्य परीक्षण होना जरूरी है) सो कर लिया गया। दरअसल एक शंका होगई थी। नेमीचन्द जैन उर्फ चन्द्रास्वामी (जो स्वयं को तान्त्रिक के रूप में बेचता है और जिसकी छवि 'आध्यात्मिक गिरहकट' से अधिक की नहीं है) के राजनीतिक-अपराधी जाल में महत्त्वपूर्ण कारक होने से ऋषिकेश के स्वामी रामेश्वरानन्द गिरी को जो अपने कई भक्तों की कन्याओं को उनके पूर्वजन्मों के कर्जों से मुक्ति के यज्ञ में उनके कौमार्यों की आहुति दे रहे थे और जो एक ऐसी ही मूढ़ बुद्धि कथित शिक्षिका (विज्ञान की स्नातक) के इहलोकवासी पति को विघ्न समझकर उसे परलोकवासी कर चुकी थी। जो कीर्तिपताका धर्मक्षेत्रे-कुरुक्षेत्रे फहरा रही थी, उसके कारण जनता कहीं विहिप की चिलम एवं चिमटा मंडली को बेसुरा घोषित कर न दे।

ईश्वर नहीं मरणशील प्राणी

क्या यह मात्र संयोग ही है कि विहिप ने अभी तक इन गिरी महाराज की दुष्ट लीला के खिलाफ मुंह तक नहीं खोला है। हां, चन्द्रास्वामी के विरुद्ध जरूर बोला है। चन्द्रास्वामी निश्चय ही दूध का धुला नहीं है परन्तु चूंकि वह इनकी मण्डली का नहीं है, इसलिए निशाने पर है। अब चन्द्रास्वामी के चेले दावा कर रहे हैं कि उसके चमत्कार के कारण 'गणेश जी पीये दूध की धार'। तो गोया चमत्कार ईश्वर नहीं वरन् मरणशील प्राणी करता है जो गणेश जी को जाग्रत कर सकता है वह उच्च न्यायालय के जजों को क्यों जाग्रत नहीं कर सका?

ऐसा नहीं कि सभी साधु-सन्त इन्हीं जैसे हों। परन्तु, अधिकांश ने बिना कुछ किए अपनी जठराग्नि एवं दायित्व बोधरहित कामाग्नि की पूर्ति हेतु ही इस बाने को धारण किए हुए हैं। इन्हें द्वार-द्वार जाकर 'भिक्षां देहि' कहना अपमानजनक लगता है। आमतौर पर शास्त्रज्ञान

(शेष पृष्ठ ७ पर)

लाला रामगोपाल झूठ उत्पादक कम्पनी लिमिटिड का नूतन उपहार

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन अबोहर—१५२११६

गतांक से आगे

अभी-अभी लालाजी के स्टाईल रामचन्द्र राव कम्पनी ने एक पुस्तिका प्रचारित की है। नाम है 'आर्यसमाज के इतिहास का एक गौरवमय अध्याय'।

इस पर किसी प्रेस का नाम नहीं, प्रकाशक का नाम नहीं सो कम्पनी की अपनी घोषणा के अनुसार ऐसा प्रकाशन एक अपराध है। भारत सरकार के व खुराना जो के अनुचर होने से कम्पनी ऐसे-ऐसे काम करने में स्वतन्त्र है क्या? इस पर लेखक के रूप में क्रान्तिकुमार जी का नाम छपा है। मैं दक्षिण भारत की यात्रा पर गया तो वहां इस पुस्तिका के प्रकाशन पर तीव्र रोष था। लोगों को यह कहते हुये सुना कि लगता है कि यह सब कुछ रामचन्द्र ने आप ही लिखा है। सच क्या है यह कोर्टकर जाने या रामचन्द्रराव। दाल में कुछ काला अवश्य है।

इस पुस्तिका का पोस्टमार्टम तो मैं फिर करूंगा। तनिक इस पर एक दृष्टि डालिये यह आर्यसमाज पर एक नूतन वार है। यह तो आर्यसमाज के इतिहास को बिगाड़ने का घृणित षड्यन्त्र है। यह एक लघु पुराण जिसकी रचना का प्रयोजन रामचन्द्रराव का प्रचार करना है। रामचन्द्रराव झूठ की सीढ़िया लगाकर आर्यजनता के सिरों पर बैठना चाहता है।

यह गौरवमय अध्याय क्या है? यह हैदराबाद सत्याग्रह की आड़ में रामचन्द्रराव गप्प गाथा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। इसके टाईटल पेज नम्बर दो पर हैदराबाद में हुतात्माओं का एक चित्र अवश्य है आगे तो रामचन्द्र व उसके भाई वीरभद्र की महिमा का बखान है। आगे पृष्ठ ११ पर बंसीलाल जी व्यास का चित्र अवश्य है। महात्मा नारायण स्वामी जी का नाम देकर चित्र रामचन्द्रराव का दिया प्रतीत होता है। महात्माजी का चित्र तो है नहीं।

मेरा चैलेन्ज है

पृष्ठ संख्या सात पर लाला रामगोपाल का एक ग्रुप फोटो है। उसका हैदराबाद सत्याग्रह से क्या लेना देना था? सारी कम्पनी को मेरा खुला चैलेन्ज है कि हैदराबाद सत्याग्रह से सम्बन्धित पुराने पूरे रिकार्ड से, पत्रों से व सत्याग्रह के इतिहास में लाला रामगोपाल का नाम तो कहीं दिखा दें। यह बात अलग है कम्पनी ने स्वार्थवश अनेक बोगस स्वतन्त्रता सेनानी बना दिये जिनमें से एक लाला रामगोपाल भी था। मेरे पास उस समय के सार्वदेशिक के सारे प्रकाशन व सार्वदेशिक की पूरी फाईल है इनमें न तो कहीं रामचन्द्र राव का नाम है और न ही रामचन्द्र के रिश्तेदार लाला रामगोपाल का कहीं उल्लेख है।

एक और चुनौती देता हूं

इस नूतन पुराण में रामचन्द्रराव की बड़ाई करके ऐसा दिखाया गया है मानो यही आर्य सत्याग्रह का संचालक था। निजाम राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के सत्याग्रह के समय, सत्याग्रह से पूर्व व सत्याग्रह के पश्चात् भी कई पत्र निकलते रहे। मैं इन पत्र-पत्रिकाओं की फाईलें भी प्रस्तुत कर सकता हूं। मास्टर सूर्यदेव जी पढ़े-लिखे सज्जन हैं। वह अपने तीनों वकीलों को ले आयें। साथ कोई यन्त्र भी ले आयें ताकि घिसे-मिटे अक्षरों का कोई बहाना न बनाया जा सके। इन फाईलों में से अपने ससुर का व अपनी पुत्री के ससुर का नाम खोज कर दिखा दें।

इस पुराण का पृष्ठ छह का सारा लेख ही निरर्थक है। रामगोपाल भी मीनाक्षीपुरम् की माला फेरता मर गया। अब रामचन्द्रराव उसे अपनी बड़ी उपलब्धि बताता है। आर्यसमाज ने इससे कहीं बड़ी-बड़ी शुद्धियां केरल व उड़ीसा में करके दिखाई हैं परन्तु उनका व्यर्थ प्रचार करके विधर्मियों को प्रेरित करना व समाजों को ठगना यह उचित नहीं है।

लाला रामगोपाल ने मुम्बई में रामचन्द्रराव का नाम लेते हुए नेपाल यात्रा की चर्चा में हिन्दू शब्द का खण्डन किया। वह पूरा भाषण अब भी सुना जा सकता है। रामचन्द्र यहां हिन्दू धर्म की दुहाई देकर लालाजी को अपमानित तो न करे।

नई-नई गप्पें

पृष्ठ आठ पर 'आसिफशाह' छपा है। यह सर्वथा झूठ है। उसका नाम 'आसिफजाह' था। पृष्ठ आठ पर निजाम राज्य की चर्चा करके उतावलेपन से पृष्ठ ६ पर सन् १६४८ में मुंशीजी को घसीट लिया है। हैदराबाद सत्याग्रह तो पीछे रह गया बीच में कासिम रिजवी घुसेड़ दिया है। पृष्ठ १२ को प्रथम पंक्ति काला झूठ है। निजाम संसार का सबसे बड़ा धनाढ्य पुरुष नहीं था। वह सबसे बड़े धनियों में से एक था। झूठ लिखने से क्या लाभ? वैसे पृष्ठ ७ पर 'बिलकुलिक खां' यह नाम भी मनघड़न्त है। गप्पें गढ़ने से कोई इतिहास लेखक बन सकता तो फिर रामगोपाल शालवाले भी सर यदुनाथ का स्थान ले लेता।

राज्य में 'सिद्दीक दीनदार' की पृष्ठ १४ पर चर्चा करके रामचन्द्र जी के कारनामों का मिथ्या बखान किया गया। सिद्दीक दीनदार की पोल खोलनेवाले आर्य विद्वानों की कोई चर्चा नहीं की गई। इस आग में कूदनेवाले थे नर-नाहर श्री पं० नरेन्द्र जी। पं० नरेन्द्र जी ने सिर तली पर धरके तब धर्म रक्षा की। उस समय के पत्रों में इस सम्बन्ध में रामचन्द्रराव की कहीं भी चर्चा नहीं है।

कोई प्रमाण है तो रामचन्द्र जी दिखावे। श्री विनायकराव अभिनन्दन ग्रन्थ में सारा इतिहास छपा है। इसमें कोई इस झूठ उत्पादक कम्पनी के मुखिया का नाम दिखा दे तो मैं क्षमा मांग लूंगा। इस पूरे प्रकरण में इस ग्रन्थ में या कहीं अन्यत्र रामचन्द्रराव या रामगोपाल शालवाले की कोई सेवा, कोई लेन-देन नहीं।

पृष्ठ १५ पर हैदराबाद में प्रचार कार्य का आरम्भ पं० रामचन्द्रजी देहलवी व चन्द्रभान जी से बताया गया है। यह रामचन्द्रराव की फैक्टरी की सबसे बढ़िया गप्प है। पं० रामचन्द्र जी देहलवी के कार्यक्षेत्र में उतरने से बहुत पहले कुंवर बहादुर जी, हैदर शरीफ जी, पण्डित सोमनाथ जी जैसे हैदराबादी विद्वानों को पूरा भारत जानता था। हैदर शरीफ जी का नाम तो रामचन्द्रराव ने सुना भी है कि नहीं? आचार्य नरदेव जी के पिता श्रीनिवासराव जी व ठाकुर गोविन्दसिंह जी के किये कराये पर क्यों पानी फेरते हो?

पं० लेखराम जी के इन दीवानों (श्रीनिवासराव व ठाकुर गोविन्दसिंह) का गौरवमय इतिहास देने की बजाय कम्पनी अपने प्रचार में लगकर हमारा इतिहास प्रदूषित कर रही है। पं० सातवलेकर जी, पं० बालकृष्ण जी, महात्मा नित्यानन्द जी, ठाकुर काहनसिंह जी वर्मा व पं० धर्मदेव विद्यामार्त्तण्ड ने पं० रामचन्द्र जी देहलवी से वर्षों पूर्व हैदराबाद में अलख जगाई थी। भाई श्यामलाल और भाई बंसीलालजी पहले ही जन-जागरण में लग चुके थे।

और जिनसे कम्पनी को चिढ़ है

रामचन्द्रराव की कम्पनी जिनका नाम लेते हुए घबराती घर्राती है, मैं उस विभूति का नाम भी बताता हूं। वे थे लौह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज। स्वामी जी ने बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में सारे दक्षिण भारत में पैदल घूम-घूमकर वेद प्रचार किया। लोगों की इस फेरी का क्या महत्व है? यह कम्पनी क्या जाने। इस झूठ उत्पादक कम्पनी को इतना हो पता है कि वह महाबली भीमकाय सन्यासी जाट घर में जन्मा था। 'जाट' शब्द से ही कम्पनी के ये मुखिया थर-थर घबराते व बौखला कर अनाप-शनाप बोलते हैं। इनमें तो जिन्नाह घुस गया है। घृणा-द्वेष फैलाने में लगे हैं।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

चौ० विजयकुमार जी के निधन पर प्राप्त
शोक प्रस्ताव

सर्वहितकारी से विदित हुआ कि आदरणीय विजयकुमार जी का २७-८-९५ को रोहतक में देहान्त हो गया।

आज जब सामाजिक कार्य में समय देनेवाले और ईमानदारी में विश्वास रखनेवाले लोगों की दिन-प्रतिदिन कमी होती जा रही है, ऐसे समय में विजयकुमार जी जैसे कार्यकर्ता का हमारे बीच से उठ जाना एक दुःखद प्रसंग है।

उनकी कर्मठता निष्ठा उनके साथ कार्य करनेवालों के लिए सदा प्रेरणा देती रहेगी। आपके परिवार की यह अपूरणीय क्षति है।

प्रभु दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करे तथा सभी परिजनों को इस असीम दुःख को सहने का सामर्थ्य दे।

इस प्रसंग में मेरी संवेदना व सहानुभूति आपके साथ है।

आपका धर्मवीर संयुक्त मन्त्री
श्रीमती परोपकारिणी सभा
अजमेर (राज०)

"आर्यसमाज रेवाड़ी की आज दिनांक ३ सितम्बर १९९५, रविवार को आयोजित शोक सभा श्री विजयकुमार जी आई०ए०एस० अवकाश प्राप्त उपायुक्त, पानीपत के निधन पर हार्दिक संवेदना प्रकट करती है।"

श्री विजयकुमार जी आर्यसमाज के प्रति अत्यन्त निष्ठावान एवं श्रद्धालु थे। सेवानिवृत्ति उपरांत आपने अपना अमूल्य सहयोग आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को देकर एक उज्ज्वल उदाहरण प्रस्तुत किया था। आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यों में आप जीजान से जुट गए थे। हरयाणा शराबबन्दी समिति के संयोजक के रूप में समस्त हरयाणा में घूम-घूमकर शराबबन्दी आन्दोलन विधिवत मार्ग प्रशस्त किया। आपको रोग शय्या पर पड़े-पड़े भी, आर्यसमाज का हित दृष्टिगत रहता था।

"श्री विजयकुमार जी के निधन से आर्यसमाज का एक सुधी और जनप्रिय कार्यकर्त्ता उठ गया जिसकी पूर्ति दुर्लभ है।"

"आर्यसमाज रेवाड़ी के सभी सभासद परमपिता परमेश्वर से उनकी दिवंगत आत्मा की सद्गति और दुःखी, शोक-संतृप्त पारिवारिक एवं प्रियजनों को धैर्य प्रदान निमित्त हार्दिक प्रार्थना करते हैं।"

मन्त्री आर्यसमाज रेवाड़ी

चौ० विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर मुझे व सारे स्टाफ को गहरी वेदना हुई है। आपने अपना सारा जीवन आर्यसमाज को समर्पित किया हुआ था। हरयाणा शराबबन्दी समिति के संयोजक के रूप में आपने अविस्मरणीय कार्य किया था। आर्यसमाज हरयाणा के इतिहास में आपकी सेवाएं सदा याद रखी जाएंगी।

परमात्मा उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे तथा परिवार को यह वज्रपात सहने की शक्ति दे।

प्रिंसिपल दलीपसिंह
आर्य सीनियर सैकण्ड्र स्कूल, सिरसा

आज दिनांक ३-९-९५ ई० रविवार को कन्या गुरुकुल पंचगांव की अन्तरंग सभा में श्री विजयकुमार जी पूर्व उपायुक्त एवं संयोजक शराबबन्दी समिति आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया। शराबबन्दी आन्दोलन में आपने अनथक परिश्रम किया। जिसके कारण आप रुग्ण हो गये फिर भी कार्य में लगे रहे जिसका परिणाम यह हुआ कि जीवन से हाथ धोना पड़ा। ऐसे कर्मठ कार्यकर्त्ता के निधन से आर्यजगत् आर्यों को बड़ा दुःख हुआ।

इसी दुःख में संतृप्त होकर हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि प्रभु ऐसे महात्मा महापुरुष की आत्मा को मुक्ति प्रदान करें एवं परिवारजनों को वियोग कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

इसके साथ ही कादमा गांव के गोलीकाण्ड मे शहीद हुए एवं डा० धर्मपाल काकड़ोली हठ्ठी को माता के निधन पर भी शोक प्रस्ताव पारित किया एवं उनकी सद्गति के लिए प्रार्थना की। शोक संतृप्त

भरतसिंह शास्त्री
कन्या गुरुकुल पंचगाव जिला भिवानी

आर्यवीर दल हरयाणा के समस्त अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं को श्री विजयकुमार की मृत्यु का समाचार सुनकर हार्दिक वेदना हुई। जहां वे कुशल प्रशासक रहे वहां उन्होंने शराब जैसी सामाजिक बुराई को समाप्त करने के लिए डटकर संघर्ष किया। यह उनके संघर्ष का ही परिणाम है कि आज सरकार तथा समस्त राजनैतिक दल उनकी योजनाओं का समर्थन कर रहे हैं। उनकी कमी सदैव हमें महसूस होगी।

आर्यवीर दल हरयाणा प्रभु से उनकी सद्गति की प्रार्थना तथा परिवार जनों के लिए शांति की मंगल कामना करता है।

वेदप्रकाश आर्य मन्त्री
आर्यवीर दल हरयाणा

श्री विजयकुमार आई० ए० एस० के २७ अगस्त १९९५ को हुए असामायिक निधन पर नागरिक मंच रोहतक हार्दिक दुःख और संताप व्यक्त करता है। श्री विजयकुमार जी निहायत निर्भीक सरकारी अधिकारी ही नहीं थे बल्कि बड़े संवेदनशील व्यक्ति और उच्चकोटि के समाज-सुधारक भी थे। आर्यसमाज की शिक्षा और सिद्धांतों के प्रति निष्ठा ने उन्हें समाज का सच्चा सेवक ही नहीं बना दिया था अपितु बड़ा तर्कशील और स्वाध्याय प्रेमी भी बना दिया। नौकरी से अवकाश पाने पर उन्होंने जिस लगन से शराबबन्दी एवं समाज-सुधार के कार्यक्रम में स्वयं को पूर्णतः झोंक दिया और यही कारण था कि उन्होंने इस कार्य में अपने आपको तथा अपने शरीर को न्यौछावर कर दिया। हरयाणा का समाज इसके लिए उनका सदा ऋणी रहेगा।

नागरिक मंच श्री विजयकुमार के संतप्त परिवार व सगे संबंधियों को दिली सहानुभूति व्यक्त करता है और आशा व्यक्त करता है कि वे इस अपार हानि और असीम दुःख को सहन करने में सफल होंगे।

हरिचन्द हुड्डा
नागरिक संयोजक मंच रोहतक

आर्यसमाज नारायणगढ़ और समीप की आर्य समाजें बर्नोदी, बरौली, हुसैनी की यह आम सभा श्री विजयकुमार जी के असामयिक निधन पर रोष और शोक प्रकट करती है। शराबबन्दी आन्दोलन को थोड़े से समय में घर-घर पहुंचा दिया और आज सारा राज्य इसे मुख्य मुद्दा बनाए हुए है।

इस दुःख के समय यह सभा उनकी आत्मिक शांति तथा परिवार को इस कष्ट को सहने की शक्ति प्रदान करने के लिए प्रभु से प्रार्थना करती है।

रामनिरंजन मन्त्री
आर्यसमाज मेन बाजार नारायणगढ

श्री विजयकुमार चौधरी भू० पू० उपायुक्त संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा के आकस्मिक निधन पर हमें बहुत दुःख है। वह आर्य-समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि पीड़ित परिवार, रिश्तेदार, मित्र व सहयोगियों को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे व दिवगत आत्मा को सद्गति प्राप्त हो।

प्रबंधक समिति व स्टाफ
आर आर आर्य गर्ल्स हाई स्कूल, करनाल

चौ० विजयकुमार आई०ए०एस० पूर्व उपायुक्त के निधन पर शोक सभा चौ० विजयकुमार जी के स्वर्गवास होने की सूचना मिलने पर गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के अध्यापकगण, कर्मचारी व सभी ब्रह्मचारियों की श्री हुकमचन्द राठी अधिष्ठाता की अध्यक्षता मे एक शोक सभा हुई जिसमें सर्वप्रथम २ मिनट के लिए मौन धारणकर दिवंगत आत्मा को शांति की प्रार्थना की गई तत्पश्चात् आचार्य, अध्यापकगण, भजनोपदेशक खेमसिह व अधिष्ठाता श्री हुकमचन्द राठी ने भाव-भीनी श्रद्धांजलि दी और उनके गुरुकुल के हित में किए गए कार्य को स्मरण किया गया उनके द्वारा दी गई गुरुकुल को आर्थिक सहायता व दूसरी की गई सेवाएं सदा स्मरणीय रहेंगी।

हम सब दिवंगत आत्मा को शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

हुकमचन्द राठी अधिष्ठाता
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद

३ अक्तूबर सिद्धान्ती-जयन्ती पर विशेष—

"आदरणीय सिद्धान्ती जी और उपदेशक"

सुखदेव शास्त्री महोपदेशक, दयानन्द मठ रोहतक

किसी भी संस्था एवं समाज की आधारशिला उसके उपदेशक ही होते हैं। उपदेशकों के बिना समाज सुधार का कार्य आगे नहीं बढ़ सकता। क्योंकि वेदान्त दर्शन के अनुसार—

"उपदेश्योपदेष्टृत्वात् तत्सिद्धिः, इतरथाऽन्धपरम्परा।"

अर्थात् उपदेश्य को सिद्धि उपदेशकों के उपदेश देने से ही सिद्ध होती है, नही तो अन्धपरम्परा चलती है।

जिस समय महर्षि दयानन्द से उनके भक्तों ने पूछा कि आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म का विस्तार भविष्य में कैसे उन्नत हो सकेगा? महर्षि ने उत्तर दिया कि—मेरे जैसे हजारों दयानन्दों की वैदिकधर्म के प्रचार के लिए आवश्यकता पड़ेगी। महर्षि कितने महान् उपदेशक थे, यह तो उनके कार्यों से ही आज पता चलता है। उन्होंने कार्यक्षेत्र में अकेले होते हुए भी अपनी विद्वत्ता एवं आत्मबल के द्वारा वेदप्रचार का कितना महान् कार्य करके दिखाया यह तो इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में लिखा हुआ है।

आर्यसमाज के वैदिक विद्वानों को जिस समय हमारे सामने चर्चा आती है तो हम आदरणीय सिद्धांती जी को स्मरण करने लगते हैं। क्योंकि उत्तरभारत के आर्यसामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो श्री पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती के नाम से परिचित न होगा।

आर्यसमाज के प्रचार क्षेत्र में तो वे सारे भारत में विख्यात थे। क्योंकि वे वैदिक सिद्धांतों के मर्मज्ञ विद्वान् तथा महर्षि दयानन्दकृत ग्रन्थों एवं उनके मन्तव्यों के विशेषज्ञ थे। अतएव वे "सिद्धान्ती" इस नाम से ही जाने जाते थे।

वे सादगी, सच्चाई, सच्चरित्र के धनी थे। कुशल व्यावहारिक एवं वैदिकधर्म के कट्टर पक्षपोषक थे। अतएव अपने समय के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् एवं आर्यसमाज के सुयोग्य प्रतिनिधि प्रवक्ता थे।

वे स्वयं महोपदेशक थे। उनका सदैव यह अभ्यास था कि वे जिस विषय पर भी बोलते थे, वह सदैव ओजपूर्ण होता था। वे केवल अखबारी भाषण न देते थे, किन्तु वेदमन्त्रों के आधार पर व्यावहारिक जीवन का उपदेश देते थे। वह भी युक्ति व प्रमाणों के साथ ही होता था उनका स्वाध्याय बहुत ही गहन था। उन्होंने ऋषिकृत ग्रन्थों का महान् मनन एवं स्वाध्याय किया था। विशेषकर महर्षि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का तो सैकड़ों बार स्वाध्याय किया था। अतएव वे वेद, दर्शन, उपनिषद् व रामायण, महाभारत आदि के अधिकारी विद्वान् थे।

स्वयं उपदेशक होने के कारण अन्य उपदेशकों को भी स्वाध्याय करने की प्रेरणा करते थे। छोटे से छोटे उपदेशक व भजनोपदेशक तथा आर्यसमाज के ढोलकिया का भी बहुत ही सम्मान करते थे। उनके सुख-दुःख की पूछते थे। उनके वेतन व दक्षिणा का समुचित प्रबन्ध करते थे। उन्हें किसी प्रकार का कष्ट न होने देते थे। उत्सव प्रारम्भ होते ही मंच पर उपस्थित होजाते थे। जितना भी उन्हें समय दिया जाता था, उससे एक मिनट भी अधिक नहीं बोलते थे। प्रचार की समाप्ति तक मंच पर ही रहते थे। इसका वे यह कारण बताते थे कि कहीं कोई उपदेशक सिद्धान्त विरुद्ध न बोल जाय, उसका वे पूरा उत्तर देकर संशोधन कर देते थे। आजकल तो स्वाध्यायहीन उपदेशक कुछ का कुछ कह जाते हैं, लोग सुनते रहते हैं। किन्तु सिद्धान्ती जी ऐसा नहीं होने देते थे। उस समय ऐसा कुछ भी नहीं होता था कि कोई सिद्धान्तहीन कह जाए, क्योंकि उस समय आर्यसमाज में उच्चकोटि के विद्वान् वक्ता थे। जब मंच पर पं० बस्तीराम, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, पं० प्रकाशवीर शास्त्री, पं० शिवकुमार शास्त्री, पं० रघुवीर शास्त्री, सरीखे प्रखर वक्ता थे, वह सभा स्वर्ग में हुए महासम्मेलन का दृश्य उपस्थित कर देती थी। अनेक शास्त्रार्थ महारथी, पं० रामचन्द्र देहलवी, अमरस्वामी जी जैसे विद्वान् सभा मंच की अपूर्व शोभा थे।

इन विद्वानों से आर्यसमाज एवं वैदिकधर्म का झण्डा सदैव ऊंचा ही ऊंचा फहराता था।

आर्यसमाज के ये विद्वान् ऐसे थे, जिस प्रकार गोताखोर गहरे समुद्र से बहुमूल्य मोतियों को निकाल लाते हैं, बाहर आकर उनका खोलकर बाजार में लाकर रख देते हैं। मोतियों के व्यापारी जौहरी उन्हें खरीदते हैं और मालामाल होजाते हैं। ठीक इसी प्रकार शास्त्रों का चिंतन-मनन करके सिद्धान्ती जी साधारण जनता में उन मूल तत्त्वों का व्याख्यान करते थे। जिन्हें सुनकर साधारण किसान भी अपने जीवन को पवित्र करके आर्यसमाज के आन्दोलन से जुड़ जाते थे। अपूर्व विद्वत्ता और खड़ी हरयाणवी बोली, उनमें ये गुण थे, जिनके वशीभूत होकर प्रत्येक मनुष्य उनसे मिलने को चाहता था। उनमें व्यावहारिकता भी गजब की थी, उपदेशकों व साधारण जनता के साथ ही बैठकर भोजन करना, उनको राजीखुशी पूछना, बृद्ध-पूत को, भलाई की बातें करना आदि-आदि।

भारतीय संसद में जाकर सिद्धान्ती जी ने सही नेतृत्व किया। थोड़े ही समय में वे वरिष्ठ सदस्यों में गिने जाने लगे। उनकी आवाज का मूल्य था। किसानों, सैनिकों, अध्यापकों, गोरक्षा, राष्ट्ररक्षा आदि के विषय में उनके भाषणों को बड़ा महत्त्व मिला था। उन्होंने संसद में आर्यसमाज का प्रतिनिधित्व किया था।

संसद में सबसे अधिक तो तब चमके जिस समय नवम्बर १९६६ में हरयाणा बनाने का आन्दोलन चला। संसद में निर्भीकता के साथ हरयाणा का समर्थन किया। उनके भाषणों से प्रभावित होकर अन्य सदस्यों ने भी उनका समर्थन किया। विशेषकर संसद सदस्य पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री ने तो अपने एक ही भाषण से हरयाणा के निर्णय में जान डाल दी थी।

आज उनकी पवित्र स्मृति में, उनके आदेशों का पालन करते हुए हम सब उपदेशक तथा आर्यसदस्य संकल्प लें कि वेद का स्वाध्याय प्रतिदिन करेंगे। उपदेशकों व सभा के कार्यकर्त्ताओं का पूर्ण सम्मान करेंगे।

महर्षि से प्रेरणा पाकर ही आर्यसमाज के हजारों उपदेशकों ने भी वेदप्रचार के कार्यक्षेत्र में महान् कार्य किए। वेदभाष्य एवं साहित्य लेखन कार्य में तथा अन्य अनेक समाजसुधारक कार्यों में महान् योगदान किया। अनेकों ही इस कार्य में अपना महान् बलिदान भी देगए। महर्षि के अमर बलिदान से प्रेरणा पाकर ही वे देशभक्ति के कार्य में आगे बढ़े, कितने बलिदानी वीरों की गाथा गाएं, जिनमें अग्रिम पंक्ति में वीर संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द, पं० लेखराम, लाला लाजपतराय, पं० रामप्रसाद बिस्मिल आदि-आदि वीर स्मरण किए जाते हैं, जिनके बलिदानों का इतिहास सदैव अमर रहेगा।

यज्ञ कराओ, शराब हटाओ, राष्ट्र बचाओ।

रोहतक में श्री सिद्धान्ती जी की जयन्ती सम्पन्न

दिनांक ३ अक्तूबर को आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक की यज्ञशाला में आर्यजगत् के सुविख्यात विद्वान् आर्यनेता पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती शास्त्री पूर्व सांसद, पूर्व प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब एवं पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की ६१वीं जयन्ती धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर यज्ञ का आयोजन पं० वेदप्रकाश साधक की देखरेख में सम्पन्न हुआ और यज्ञ के पश्चात् वैद्य भरतसिंह आर्य उपप्रधान दयानन्दमठ रोहतक, सभा के महोपदेशक श्री सुखदेव शास्त्री, चौ० जगजीतसिंह एडवोकेट, चौ० सूबेसिंह पूर्व एस० डी० एम० ने श्री सिद्धान्ती जी को श्रद्धांजलि देते हुए उन्हें उच्चकोटि का विद्वान्, सादगी का प्रतीक, ग्रामों में आर्यसमाज का वेदप्रचार का प्रचारक। गुरुकुल मटिण्डू, गुरुकुल करथल (मेरठ) तथा गुरुकुल झज्जर एवं कन्या गुरुकुल नरेला मे वेदों और न्यायदर्शन के शिक्षक रहे। उन्होंने निजाम हैदराबाद आन्दोलनों, हिन्दी रक्षा आन्दोलन तथा गोरक्षा आन्दोलन में अग्रणीय रूप में कार्य किया। जब वे लोकसभा के सदस्य थे तो उन्होंने लोकसभा में संघर्ष करके हरयाणा को पंजाब से अलग प्रान्त बनवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होने आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक ग्रन्थों का प्रकाशन करवाया। वे सत्यार्थप्रकाश के बहुत बड़े विद्वान् थे और शंका-समाधान करने में सत्यार्थप्रकाश के पृष्ठ और पंक्तियों का भी मौखिक हवाला दिया करते थे।

जब वे आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान थे तो उन्होंने सभा का कार्यालय गुरुदत्त भवन जालन्धर व्यापारियों से सम्पर्क करके केवल ३३ हजार में बोली में छुड़ाया जो कि आजकल करोड़ों रुपये की सम्पत्ति है। उन्होंने सम्राट् साप्ताहिक, आर्य साप्ताहिक, आर्य उदय साप्ताहिक तथा आर्य मर्यादा साप्ताहिक का भी सफलतापूर्वक सम्पादन किया। इसके अतिरिक्त सभा के भजनोपदेशक श्री जयपालसिंह तथा म० रतनसिंह के भजनों द्वारा सिद्धान्ती जी के गुणों का गुणगान हुआ। इस समस्त यज्ञ का आयोजन सभा के कार्यालयाध्यक्ष श्री केदारसिंह आर्य ने दिल दौरा पड़ने पर बच जाने पर समस्त खर्च अपनी ओर से वहन किया जिसकी उपस्थित कार्यकर्ताओं ने भूरि-भूरि प्रशंसा की और उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। इस अवसर पर श्री देवेन्द्र शास्त्री एम० ए० पी-एच० डी० पंजाबी कालोनी नरेला ने १०१ रु० दान दिया।

—सत्यवान आर्य, सभा कार्यालय, रोहतक

आर्य संन्यासियों के सम्मान रक्षा हेतु

विशाल सार्वजनिक सभा एवं प्रदर्शन

सज्जनो !

जैसा कि आपको ज्ञात है सार्वदेशिक साप्ताहिक अखबार के सम्पादक श्री सच्चिदानन्द शास्त्री एवं उनके कुछ सहयोगियों ने आर्य-जगत् के पूज्य साधु-संन्यासियों एवं विद्वानों को अपमानित करने तथा उनके चरित्र हनन करने के कुप्रयास का एक अभियान चला रखा है। सार्वदेशिक साप्ताहिक में इन पूज्य महानुभावों के विरुद्ध अनर्गल, निराधार एवं मिथ्या आरोप लगाये जारहे हैं।

इसके अतिरिक्त श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने एक ऐसा दाण्डिक अपराध किया है, जिससे सभी आर्यसमाजियों को लज्जित होना पड़ रहा है। श्री रामचन्द्र राव वन्दे मातरम् के सहयोग से भारत सरकार को धोखा देकर बिना सत्याग्रह में भाग लिए श्री सच्चिदानन्द शास्त्री हैदराबाद सत्याग्रहियों को मिलनेवाली पेंशन ले रहे हैं। श्री शास्त्री के इस अपराध के कारण आर्यसमाज की छवि धूमिल हुई है। उनके इन कारनामों से सारे आर्यजगत् में रोष की लहर फैल रही है।

इसी रोष को प्रकट करने के लिए नई दिल्ली के रामलीला मैदान में मंगलवार, १० अक्तूबर प्रातः १० बजे से एक विशाल सार्वजनिक सभा का आयोजन किया जारहा है, जिसमें हजारों नरनारी इकट्ठे होंगे और सभा में अनेक संन्यासी, नेता और विद्वान् अपने विचार प्रकट करेंगे। सभा के समापन के बाद सार्वदेशिक सभा भवन के सामने प्रचण्ड प्रदर्शन किया जायेगा और श्री शास्त्री से मांग की जायेगी कि अपने अपराध के लिए सार्वजनिक रूप से मौखिक एवं लिखित माफी मांगें और सरकार को धोखाधड़ी से प्राप्त पेंशन वापिस करे।

—प्रिंसिपल होशियारसिंह संयोजक

वैदिक संस्कृति का प्रतीक विजयदशमी पर्व

—वेदप्रकाश साधक विद्यावाचस्पति

प्राचीनकाल से भारत धर्मप्रधान देश रहा है पर्व यहां की वैदिक संस्कृति का मूल आधार रहे हैं। विजयदशमी पर्व क्षत्रियों की विजय का त्यौहार कहलाता है इसलिए शक्तिपूजन का आयोजन इस दिन विशेष होता है।

जिस राष्ट्र में पराक्रम और वीरता की पूजा होती है उसी राष्ट्र में धर्म की रक्षा हो सकती है।

क्षत्रिय अपने व्रतानुसार विजययात्रा इसी दिन प्रारम्भ करते थे परन्तु वर्तमान में इस पर्व का जो स्वरूप दिखाई देता है उसने अनेक आडम्बर आदि जुड़ गए हैं जिससे वास्तविकता का होना कठिन हो गया है।

इस दिन राम ने रावण का वध करके सब प्राणियों को अत्याचारों से मुक्त किया। राम की यह विजय धर्म की अधर्म पर विजय थी। अत्याचार का उन्मूलन और धर्म की प्रतिष्ठा के लिए उन्होंने अपनी विजय से सच्चे वीर का आदर्श उपस्थित किया। इसलिए राम भारतीय समाज में पूजे जाते हैं और रावण को घृणा और तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाता है क्योंकि उसने सामाजिक नियमों और आर्यमर्यादाओं का उल्लंघन किया। इसी प्रकार बाली जिसने अपनी भाई की स्त्री पर अनुचित अधिकार कर रखा था उसका भी वध कर मानवता के आदर्श की रक्षा की क्योंकि वास्तविक मानव वही है जो दुष्टों का नाश, अवनति और अप्रियाचरण करता है और धर्मात्माओं की चाहे वह निर्बल ही क्यों न हो उसकी रक्षा उन्नति प्रियाचरण करता है इस परिभाषा के अनुसार राम महामानव थे।

इस महामानव और मर्यादापुरुषोत्तम की स्मृति में हर वर्ष राम-लीलाएं और देवीपूजन होता है, धार्मिक अनुष्ठान का धूम रहती है। सब नर-नारी हर्षोल्लास से सम्मिलित होते हैं। इस पवित्र पर्व से देश की धार्मिक और सामाजिक जीवन की झांकी मिलती है।

झांकियों का सुन्दर प्रदर्शन देखकर सब नर-नारी परस्पर प्रेमपूर्वक भाईचारा, सद्भावना का प्रदर्शन करते हैं, मिठाइयां भी बांटते हैं इससे समाज में सजीवता आजाती है। मुर्दादिल भी जिन्दा हो जाते हैं जो जातियां और समाज अपने पर्वों को पूर्वजों के चरित्र से शिक्षा-दीक्षा लेती हैं वह सदा के लिए विजयश्री को पाती रहती हैं।

प्रश्न यह है कि हमने इस पर्व से जीवन व्यवहार में कुछ शिक्षा ली है कि नहीं ?

विडम्बना है कि यह पर्व मेले का रूप धारण करते जारहे हैं, खाने-पीने व तमाशा देखने के भाव से इन स्थानों पर जाते हैं।

जीवन निर्माण चरित्र की रक्षादि की भावना मिटती जारही है। रावण की राक्षसी भावना युवकों में बढ़ती जारही है, बलात्कार और महिलाओं का अपहरण रावण की राक्षसीवृत्ति का प्रतीक है।

राम सादा जीवन उच्च विचार पर विश्वास रखते थे, धर्मज्ञ थे, धर्म के तत्त्वों से परिचित थे। गम्भीरता में समुद्र के समान, धैर्य में हिमालय के सदृश, पराक्रम में विष्णु के तुल्य थे। इसके अतिरिक्त महाबलवान, जितेन्द्रिय, बुद्धिमान, पितृभक्त, शत्रुओं के नाश के और दृढ़प्रतिज्ञ भी थे।

राम के इन गुणों के आधार पर विजयदशमी का यही संदेश है कि प्रत्येक व्यक्ति राक्षसवृत्ति को छोड़कर दैवीवृत्ति को अपनाए, जितेन्द्रिय बनने का प्रयास करे, पाप से पुण्य की ओर चले, असत्य से सत्य की ओर चले, दूसरे के हानि-लाभ को समझे, अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और वीरता से उसका संहार करदे, धर्मात्माओं की रक्षा करे तब यह भारतीय समाज विजयश्री को प्राप्त करने का अधिकारी बनेगा।

विजयदशमी के इसी संदेश को घर-घर में दृढ़तापूर्वक पालन करना चाहिए।

शराब बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इनसे दूर रहें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा

बाढ़ पीड़ितों की सहायता

श्री प्रो० शेरसिंह जी पूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा भेजी गई बाढ़पीड़ित निम्न लिखित दान सामग्री प्राप्त हुई। १२ क्विंटल आटा २ क्विंटल चीनी, ३० लीटर (२ टीन) रिफाइण्ड तेल, १ क्विंटल चावल, ४ क्विंटल दाल, ४ क्विंटल लकड़ी, १६ पैकेट दूध पाऊडर, १० पैकेट नमक, २ बोरी आलू, ४० किलो प्याज, ४३ किलो सीताफल, २ किलो मिर्च, ४ किलो हल्दी, गरम मसाला, २ माचिस पैकिट, ३० किलो चाय पत्ती, १० किलो मिट्टी का तेल, साबुन ६ टिक्की।

२—४ बोरी आटा सेठ श्रीकिशनदास जी पूर्व विधायक रोहतक।

३—४ बोरी आटा, २ बोरी आलू, २ कट्टे प्याज रैडक्रास रोहतक से प्राप्त की।

४—आर्यसमाज शेखपुरा खालसा निकट घरौंडा जिला करनाल की तरफ से ३६ कट्टे आटा।

५—गाव जुवां जिला सोनीपत की तरफ से २ बोरी आटा, १ बोरी आलू, ६५ पैकिट ब्रैडपीस। यह सब सामान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक के कार्यालय में आया और ३ दिन तो सभा की तरफ से ऋषि लंगर चलाया गया और फिर जब यह देखा कि पका हुआ भोजन बाहर से बहुत आ रहा है तो फिर प्रो० शेरसिंह जी की आज्ञा से यह सब सामान १५० परिवारों के ७५० सदस्यों में बांटा गया जिसकी रोहतक में बड़ी सराहना की जा रही है जिसके लिए सभा माननीय प्रो० शेरसिंह जी व सेठ श्री किशनदास, रैडक्रास रोहतक आर्यसमाज शेखपुरा व जुवां गांवों का आभार प्रकट करती है।

रतनसिंह आर्य

सभा द्वारा बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों में निःशुल्क औषधि वितरित

सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की देखरेख में बुखार तथा दस्त निरोधक औषधि तैयार करवाई गई है। इसका वितरण सभा के पूर्व प्र[illegible] प्रो० शेरसिंह जी, पूर्व सभा मन्त्री श्री सूबेसिंह, आचार्य हरिदत्तजी [illegible]या सभा के उपदेशक बाढ पीड़ित क्षेत्रों का भ्रमण करके इसका नि[illegible]क वितरण कर रहे हैं।

केदारसिंह आर्य व्यवस्थापक

बाढ़ पीड़ितों की सहायता

गांव जुवां जिला सोनीपत के निवासी कालाण पाना व जोगाण पाना वालों ने इकट्ठे होकर चन्दा किया और एक ट्रेक्टर ट्राली में भोजन और एक ट्रेक्टर से टेंकर जोड़कर गाव से बढ़िया पानी भरकर के मामनसिंह, महावीरसिंह, कुलदीपसिंह, जयभगवान, शमशेरसिंह, वेदसिंह, जयभगवान, कपूरसिंह, बलवान, जोगेन्द्रसिंह, रमेश आदि पन्द्रह बीस जवानों को ड्यूटी लगाई जो एक सप्ताह तक रोहतक में भोजन, पानी बांट कर सेवा करते रहे और -०-९-९५ का आटा, आलू, घी, ब्रेड पीस पैकेट आदि सामान को एक ट्राली भरकर मोखरा गाव मे बांट कर आए और आते समय एक टोरा घी एक बोरी आलू, दो बोरी आटा और ६५ पैकेट ब्रेड पीस के आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक के कार्यालय में उतार कर गए जो सभा की तरफ से बांटे गए इसके लिए सभा जुवा गांव का धन्यवाद करती है।

—रतनसिंह आर्य

वैद्य धर्मपाल यज्ञ समिति द्वारा पारायण यज्ञ

वैद्य धर्मपाल जी स्वतन्त्रता सेनानी गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी राष्ट्र कल्याण हेतु दिनांक १९-१०-९५ से २९-१०-९५ तक ऋग्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन करा रहे हैं। इस यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती हरिद्वार होंगे। वेदों के विद्वान् स्वामी धर्मानन्द जी, आचार्य विनयकुमार जी, आचार्य ब्रजेश जी, वेदपाठ करेंगे। प्रतिदिन प्रातः साय यज्ञ के उपरांत वैदिक विद्वानों के प्रवचन होंगे। —वैद्य धर्मपाल यज्ञ समिति, खानपुर कलां (सोनीपत)

आर्य वीर दल द्वारा बाढ़ राहत शिविर

रोहतक—आर्य वीर दल की ओर से आर्यसमाज शिवाजी कालोनी रोहतक में ५ तारीख से बाढ़ राहत सहायता शिविर चलाया जारहा है। शिविर का संचालन आर्य वीर दल हरयाणा प्रान्त के महामन्त्री वेदप्रकाश आर्य कर रहे हैं। आर्यवीरों द्वारा खाद्यसामग्री, फल, दूध और पीने का पानी वितरण किया जारहा है। वितरण सामग्री रोहतक नगर के प्रत्येक क्षेत्र के अतिरिक्त गांव मोखरा में भी वितरित की गई। इस शिविर में आर्य वीर दल गुड़गांव, पानीपत तथा देहली ने भी सहायता सामग्री भेजी। आर्य वीर दल सेवा समिति ने शीघ्र ही बीमारियों की रोकथाम के लिए दवाइयां वितरण का कार्यक्रम आरम्भ कर दिया है। शिविर में घर-घर से सामान एकत्र कर सेवा की जारही है।

—वेदप्रकाश आर्य, मन्त्री आर्य वीर दल

आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव

१.	आर्यसमाज शेखपुरा (घरोण्डा) जिला करनाल	६ से ८ अक्तूबर
२.	आर्यवीर महासम्मेलन पानीपत	७ से ८ ,,
३.	आर्यसमाज संघीवाड़ा नारनौल	७ से ८ ,,
४.	आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत	९ से १५ ,,
५.	मेला सूर्यग्रहण कुरुक्षेत्र वेदप्रचारार्थ यज्ञ	२२ से २५ ,,
६.	आर्यसमाज सिलारपुर तोताहेड़ी जिला महेन्द्रगढ़	२६ से २७ ,,
७.	आर्यसमाज सत्यसदन पुनहाना जिला गुड़गांव	२८ से २९ ,,
८.	आर्यसमाज बीगोपुर जिला महेन्द्रगढ़	२८ से २९ ,,
९.	आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत	३ से ५ नवम्बर

—सुदर्शनदेव आचार्य वेदप्रचाराधिष्ठाता

कृपया ध्यान दें

बाढ़ उतरने पर आप बीमार न हों

बाढ जाते-जाते भी अनेक बीमारियां छोड़ जाती है। हमारी थोड़ीसी सावधानी हमें अनेक बीमारियों से बचा सकती है। बाढ़ के बाद की बीमारियों से बचाव के कुछ उपाय निम्न प्रकार हैं:—

१. पानी उबाल कर पीयें।
२. नीम के पत्तों का प्रयोग दाल या सब्जी में करें—सम्भव हो तो नीम के पानी से स्नान करें।
३. चाय में तुलसी के पत्तों का प्रयोग अवश्य करें।
४. नीबू का प्रयोग करना भी लाभदायक है।
५. घर के प्रत्येक भाग में गुग्गल की धूप देवें।
६. घर में यज्ञ करें—जो समर्थ हैं वे एक सप्ताह तक प्रतिदिन यज्ञ करें।
७. प्रति सप्ताह कुनैन की दो गोली प्रति व्यक्ति लें। ध्यान रहे, कुनैन की गोली भोजन करने के बाद ही लेनी चाहिए। दूध के साथ लें तो अच्छा है।
८ स्वास्थ्य विभाग से क्लोरीन की गोली लेकर पानी में डालकर प्रयोग करें।
९ तबियत खराब होने पर सेवा भारती के स्वास्थ्य केन्द्र या अन्य किसी स्वास्थ्य केन्द्र पर तुरन्त सम्पर्क करें।

निवेदक : सेवा भारती, हरयाणा

आर्य वीर दल महासम्मेलन स्थगित

आर्य वीर दल हरयाणा प्रान्तका १८-वां प्रान्तीय महासम्मेलन जो ७-८ अक्तूबर पानीपत में होना था प्राकृतिक विपदा (बाढ़) के कारण स्थगित कर दिया गया है। सम्मेलन की नई तिथियां आगामी बैठक के पश्चात् निश्चित की जायेगी। —वेदप्रकाश आर्य महामन्त्री

सर्वहितकारी के पाठकों को सूचना

सर्वहितकारी साप्ताहिक के पाठकों को सूचित किया जाता है कि गत सितम्बर मास में रोहतक में बाढ़ आने के कारण सर्वहितकारी के ७ व २१ सितम्बर के अंक प्रकाशित नहीं हो सके। इसका हमें खेद है।

—व्यवस्थापक

(पृष्ठ १ का शेष)

से शून्य एवं तरह-तरह की घोखाघड़ी में लिप्त विहिप की रीढ़ हैं। चन्द्रास्वामी एवं रामेश्वरानन्द स्वामी प्रकरणों का जनता पर बुरा असर पड़ सकता है, ऐसी आशंका निराधार नहीं थी। परन्तु २१ सितम्बर के बाद उन्हें विश्वास हो जाना चाहिए कि उन्हें जेलों में चक्की पीसनी चाहिए, उनके सामने इस देश के परम्परागत संस्कारों से जकड़े लोग नतमस्तक होते रहेंगे ? आखिर लोगों ने यह क्यों नहीं सोचा कि लकड़ी, लोहे एवं मिट्टी की मूर्तियों को क्यों नहीं दूध पिलाया जा रहा है ? क्यों सिर्फ वस्त्रहीन मूर्तियां ही दूध पी रही हैं ? क्यों सिर्फ मुंहवाली ही दूध पी रही हैं ? जिस देश में सांप के दूध पीने एवं छिपकली के जहर युक्त होने जैसे वहम आम हों, वहा ऐसा कुछ भी हो सकता है।

गठजोड़ का सवाल

इस पूरे विमर्श के बाद राजनीति, प्रशासन, पुलिस, शिक्षा से जुड़े प्रश्नों पर विचार जरूरी है। जलगांव (महाराष्ट्र) में भाजपा ने सितम्बर मध्य में तय किया था कि वह अपने प्रचार तन्त्र को और कसेगी। एक ही सप्ताह में नतीजा सामने है। भाजपा अगले चुनाव में जीत नहीं सकेगी। इस विश्वास के साथ घर बैठ जाने से गैर भाजपाइयों का भला नहीं होगा। खासकर तब जबकि अपनी हार को निश्चित जानकर भी भाजपा स्पष्ट रणनीति के साथ चुनाव युद्ध में उतर रही है। वह सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरना चाहती है ताकि जरूरत पड़ने पर आडवाणी भाजपा और राव की कांग्रेस का गठजोड़ हो सके। ठीक इजराइल की तर्ज पर। याद रहे, दिल्ली में भाजपा की राष्ट्रीय परिषद एवं सांसदों-विधायकों के जुलाई में सम्मेलन में 'हत्यारी सोच' विकसित करने का आह्वान करने के लगभग तुरन्त बाद वह इजराइल ही गए थे और २१ सितम्बर को 'सच' की हत्या कर दी गई। जिनके 'सत्य के साथ प्रयोग' करनेवाले के हत्यारों से मैत्रीपूर्ण संबंध रहे हों, उनके द्वारा ऐसा किया जाना कतई विस्मयकारी नहीं है।

यह दुष्प्रचार उस वक्त हुआ जब प्रधानमन्त्री राव कुछ मध्य एशियाई गणराज्यों की यात्रा पर थे। ये सभी मुस्लिम बहुल है। परन्तु अभी तक इस्लामी नहीं है और इस्लामी कट्टरवाद से लड़ रहे हैं। ऐसे में इन्हें हिंदुओं (मूर्ति पूजकों) के खिलाफ एक हथियार उपलब्ध करवाया गया है। बदले में, संघ परिवार को मुसलमानों के खिलाफ प्रचार का एक और मुद्दा मिलेगा।

जहां तक प्रधानमन्त्री एवं कांग्रेसाध्यक्ष राव की बात है उन्हें इस सबसे कोई चिंता क्यों ?

टूट ही नियति

कम्युनिस्टों के बीच एक सरासर गैर-जरूरी चख-चख हो रही है : यदि चतुरानन मिश्र कुछ लिखते-कहते हैं तो सुरजीत जवाब देने को उतावले हो जाते हैं। वामो के सभी घटक टूटने को अपनी नियति मानते हैं। समता पार्टी वामो एवं भाजपा दोनों से समझौता कर सकती है और सभी साथी दलों को तोड़ने में महारथी मुलायमसिंह भाजपा के विरुद्ध सबको एक होने की सलाह देते हैं, बसपा के साथ पुनः समझौते की बात करते हैं. वी. पी. सिंह रहित जद को ही मानने की बात करते हैं और कलकत्ता जाकर वामो-वामो की अगली सरकार का नेतृत्व करने की ज्योति बसु से अपील करते हैं।

आखिर किसी को भी इतनी फुर्सत क्यों नहीं हुई कि आडवाणी समेत भाजपा नेताओं से उस गुप्त बैठक का ब्यौरा मांगते जो उनके एवं भारत में अमरीकी राजदूत फ्रैंक विसनर के बीच जून ९५ के अन्त में हुई। क्या यह महत्वपूर्ण नहीं है कि एनरान से समझौते को रद्द करने के बावजूद अमरीकी प्रेस-प्रशासन में भाजपा के विरुद्ध शिकवा-शिकायत नहीं है।

दकियानूसी सोच

जहां तक नागरिकों द्वारा वैज्ञानिक सोच विकसित करने की बात है तो २१ सितम्बर हमारे वैज्ञानिक प्रतिष्ठान जिसमें मन्त्रालय, अनुसंधान परिषद्, कालेजों-स्कूलों के विज्ञान विभाग शामिल हैं। सभी के मुंह पर करारा तमाचा है, अन्धविश्वास, दकियानूसी सोच से भरपूर देश में आधुनिक तकनीक (गर्भजल परीक्षण) का मध्ययुगीन सोच (लड़कियों की हत्या) से मेल के बाद व्यापक पैमाने पर मादा भ्रूण की हत्या वैज्ञानिक सोच का घोर अभाव हो तो है। परन्तु जब वैज्ञानिक समुदाय या उनसे जुड़े लोगों में भी अन्धविश्वास हो, बाबाओं में श्रद्धा हो और चमत्कारों में विश्वास हो तो आम, अनपढ़ लोगों को क्यों दोष दें और पढ़े-लिखे भी 'मूर्ख' हो सकते है, यह ६ दिसम्बर १९९२ के बाद २१ सितम्बर १९९५ ने एक बार फिर साबित कर दिया है।

सारे देश में कारोबार के ठप हो जाने, उत्पादन के बन्द हो जाने एवं प्रशासनिक प्रक्रिया स्थगित हो जाने को विहिप द्वारा 'पुनर्जागरण' कहा जाना 'धी-स्मृति-मेधा' सभी का घोर अपमान है। क्या इससे भारतीय विशेषतः हिंदू अपेक्षाकृत अधिक कर्मठ एवं अनुशासित साबित हो जाते हैं ? इस सब में 'गणेश' नामधारी कंपनियों के शेयरों में उछाला इस पूरे षडयन्त्र का पर्दाफाश कर देता है।

(साभार दैनिक ट्रिब्यून—२६-९-९५)

निमन्त्रण-पत्र

भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल जसात के नवम वार्षिक उत्सव पर १४-१५ अक्तूबर शनि-रवि को सादर सप्रेम आमन्त्रित किया जाता है। कृपया दर्शन देकर कृतार्थ करें।

कष्ट के लिए क्षमा। हार्दिक धन्यवाद, सबको सादर सप्रेम नमस्ते आज। शेष मिलने के बाद। भवदीय—जगदीश आर्य

संचालक—भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल जसात
तह० पटोदी, जिला—गुड़गाव, हरयाणा

(पृष्ठ २ का शेष)

नया-नया ज्ञान

'बीड़ जिले का धार शहर' ऐसा पृष्ठ १५ पर छपा है। यह हमारे लिये सर्वथा नया ज्ञान है। यह कादियानी इलहाम से कुछ कम नहीं है। 'कई आर्य बन्धु मारे गये' ऐसा लिखा है ? नाम देने से क्या भय लगता है ? मारे गये की बजाय 'वीरगति पा गये' ऐसा लिख देते तो क्या हानि थी ? 'आर्य सुरक्षा संघ' नाम की कोई संस्था नहीं थी। यह रामचन्द्रराव कम्पनी की शुद्ध गप्प है।

पृष्ठ सोलह पर पं० नरेन्द्र जी की एक साधारण व्यक्ति के रूप में चर्चा है। जिस घटना से सारा आर्यजगत् हिल गया रामचन्द्रराव उसका अवमूल्यन करने का घृणित पाप कर रहा है।

पृष्ठ १८ के प्रथम पैरा में रामचन्द्र की विशेष चर्चा है। तत्कालीन पत्रों में इसका कोई महत्त्व नहीं। कहीं चर्चा नहीं। हैदराबाद के सर्वाधिकारियों यथा शेषराव जी वाघमारे, दोनों दिगम्बरराव, श्री पं० दत्तात्रय प्रसाद जी आदि की सेवाओं की गौरवपूर्ण चर्चा कहीं भी नहीं। आर्यसमाज के इन महापुरुषों से इतना द्वेष। आर्यसमाज के इतिहास को कलंकित करने की ऐसी कुचेष्टा ?

पृष्ठ १६ पर शोलापुर के ऐतिहासिक आर्य महासम्मेलन को एक सभा मात्र लिखना मूर्खता नहीं तो क्या है। महात्मा नारायण की गिरफ्तारी सन् १९३० में लिखी है। यह कतई झूठ है। फिर इस विभूति की गिरफ्तारी के साथ रामचन्द्रराव को जोड़ना घोर पाप नहीं तो क्या है।

महात्मा जी कैसे बन्दी बनाये गये ? भाई बंशीलाल जी, पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज व गुलबर्गा की आर्यजनता के शौर्य की यहां चर्चा तक नहीं की। बालक वेंकटराव गुलबर्गा का यहां उल्लेख तक नहीं। निर्लज्जता का खुला प्रदर्शन करके आर्यों के हृदयों को घायल किया गया है।

क्या रामचन्द्र को बेंत पड़े यह बताने के लिए इतने झूठ घड़े गये। क्या और किसी को भी बेंत पड़े थे ? क्या उनके नाम कम्पनी को पता है या हम ही बतावें ? पृष्ठ १७ पर कितनी गप्पें हैं तनिक गिनती तो करें। पृष्ठ १८ पर हरयाणा के हुतात्माओं के नाम बिगाड़ कर लिखने का प्रयोजन ? क्या वे हमारे पूज्य नहीं हैं ?

हा आर्यसमाज का इतना अपमान !

आर्यसमाज कभी प्रामाणिक लेख लिखनेवाले व सप्रमाण भाषण देनेवाले विद्वानों का समाज माना जाता था। श्री रामगोपाल शालवाले रामजे मैकडानल्ड को ऋषि दयानन्द का समकालीन व कार्ल मार्क्स को एक रूसी बताया करते थे तो समझदार लोग हंसते थे। लाला जी पर दया करते थे परन्तु मरवाहा जी व रामचन्द्रराव तो अपने अंग्रेजी के ज्ञान पर बड़ा अभिमान करते हैं। इन लोगों के पुरुषार्थ के फल से नये-नये इलहाम उतरने लगे हैं।

श्री रामचन्द्र के पोथे में छपा है मनु जी ने लिखा है—

'मनुर्अंब'

कोई दिखावे तो मनुस्मृति में यह कहाँ आता है ? इस गौरवमय अध्याय में छपा है 'हैदराबाद के निजाम मीर कासिम अली।'

पृष्ठ ४ पर छपे इस इलहाम का कोई प्रमाण ? यह भी शुद्ध गप्प है। इस नाम का हैदराबाद में कोई शासक नहीं हुआ।

इस नूतन पुराण के अन्त में पं० नरेन्द्रजी की पुस्तक के कुछ अंश दिये हैं। कुछ और रामचन्द्रराव सम्बन्धी कहानियां हैं। वीर लालसिंह, हुक्मा के शहीदों, शिवचन्द्रजी, धर्मप्रकाशजी, वेदप्रकाशजी, सोहनलाल जी, उमरावसिंह जी, भंवरलाल जी, हनुमन्तराव जी, मोहनसिंह जी की चर्चा नहीं। पं० नरेन्द्रजी की शूरता की कोई घटना ? गुलबर्गा के रक्तिम काण्ड का उल्लेख ! महात्मा आनन्द स्वामी, राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री, सत्याग्रह के संचालक पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, स्वामी अभेदानन्द जी, ज्ञानेन्द्रजी किसी का नाम तक नहीं दिया। आर्यो ! निजाम के आर्यसमाज विरोधी साहित्य में भी रामचन्द्रराव का नाम तक नहीं मिलता। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी व पं० नरेन्द्रजी की उसमें भी चर्चा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ७४७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ फोन नं० ४७७२२ सृष्टिसंवत्

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २२ अंक ४४ १४ अक्तूबर, १९९५ (वार्षिक शुल्क ५०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

श्वेत पत्र का श्याम सम्पादकीय

लेखक—कैप्टन देवरत्न आर्य, बम्बई

पूजनीय स्वामी सुमेधानन्द जी के द्वारा प्रकाशित "श्वेत पत्र" पर पं० सच्चिदानन्द शास्त्री ने ६ अगस्त १९९५ के सार्वदेशिक पत्र में सम्पादकीय लिखा। अनेक सन्यासियो और विद्वानों पर उन्होंने कीचड़ उछालने का प्रयास किया। यह दुर्भाग्य की बात है कि तथाकथित शिरोमणि संस्था अपने ही पत्र में अपने ही विद्वान् संन्यासियो पर उनके चरित्र हनन का आरोप लगा रही है। पं० सच्चिदानन्द के चारित्रिक पतन का इससे बड़ा क्या उदाहरण हो सकता है ?

२७ मई को हैदराबाद में सार्वदेशिक सभा के त्रैवार्षिक चुनाव हुए। मैं उसका एक प्रत्यक्षदर्शी हूं। मैंने इस विवाद पर अपनी कलम नहीं उठाई थी। यह सोचकर कि प्रबुद्धजन इस समस्या को सुलझा लेंगे। परन्तु पं० सच्चिदानन्द जी शास्त्री के सम्पादकीय को पढकर मैंने निर्णय किया कि कुछ तथ्य आर्यों के सामने रखू। पं० सच्चिदानन्द ने एक और सम्पादकीय इससे पूर्व सार्वदेशिक के १५ जून १९९५ में "सच्चाई से मुह क्यों छिपाते हो" शीर्षक के अंतर्गत लिखा जो स्वयं आर्यों को गुमराह करने के लिए लिखा गया है। यह सम्पादकीय एक झूठ का पुलन्दा है।

सार्वदेशिक सभा की बैठक दिनाक १२ मार्च १९९५ को दिल्ली मे हुई। क्रमाक १२ का विचारणीय विषय था "सार्वदेशिक सभा के भावी कार्यक्रम पर विचार" यह विषय विचार हेतु आने पर इस प्रकार निर्णय हुआ—

सार्वदेशिक सभा का भावी कार्यक्रम का विषय प्रस्तुत होने पर श्री सोमनाथ मारवाह ने प्रस्ताव किया कि सार्वदेशिक सभा का त्रैवार्षिक अधिवेशन २०-२१ मई १९९५ को हैदराबाद में आयोजित किया जाय। उपस्थित सदस्यों ने इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकार किया।" (सभा कार्यवाही पृष्ठ ४) कृपया विचार करें—

१. क्या सार्वदेशिक का भावी कार्यक्रम चुनाव ही है और कुछ नहीं ?

२. जब अंतरंग सभा ने २०-२१ मई को अधिवेशन का निर्णय किया था तो क्या प्रधान के संविधान में यह अधिकार हैं कि अंतरंग के निर्णय को बदलकर अधिवेशन २६-२७ मई को बुलाए। इस परिवर्तन के पीछे क्या भावना थी ?

३. पं० सच्चिदानन्द जी ने अपने संपादकीय दिनांक २५ जून १९९५ के पृष्ठ ३ में लिखा है कि स्वामी धर्मानन्द जी ने अपनी राय दी कि अधिवेशन हैदराबाद में न रखा जाए। फिर कार्यवाही में कैसे लिखा गया कि यह निर्णय सर्वसम्मति से हुआ ?

जो भी हो चुनाव हुआ। मैं भी इस पक्ष में था संगठन के दृष्टिकोण से कि छोटी-छोटी बातों को भुला दिया जाए। २६ मई को प्रातः अंतरंग सभा की कार्यवाही हुई। उपप्रधान होने के नाते मैं भी उपस्थित था। पिछली अंतरंग सभा की कार्यवाही पढ़ी गई। प्रो० शेरसिंह जी ने कहा कि पिछली अंतरंग सभा में मेरा एक पत्र पढा गया था कि जब तक प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के झगड़े समाप्त न हों तब तक चुनाव नहीं कराये जायें। उस पत्र का इस कार्यवाही में कोई जिक्र नहीं है। प्रधान जी ने उत्तर में कहा कि चुनाव स्थगित नहीं हो सकते क्योंकि अब सारे प्रतिनिधि आ चुके हैं। तब मैंने खड़े होकर प्रधान जी से निवेदन किया कि प्रो० शेरसिंह चुनाव स्थगित करने की माग नही कर रहे हैं। चुनाव तो अब होंगे लेकिन कार्यवाही में उनके पत्र का जिक्र आना चाहिए यही उनकी मांग है। उनकी बात को सुना-अनसुना कर दिया गया और उस पत्र का जिक्र कार्यवाही में नहीं किया गया।

पूजनीय स्वामी धर्मानन्द जी ने मांग की कि कल की साधारण सभा के लिए निर्वाचन अधिकारी की नियुक्ति की जाए। जिसे प्रधान जी ने यह कहकर मना कर दिया कि हम चुनाव नियमानुसार करायगे। चुनाव अधिकारी की आवश्यकता नही है। बस यही से मनमुटाव की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई।

२७ मई को वार्षिक सभा का अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। सभा हाल में बड़ी कड़ी व्यवस्था बनाई गई। प्रतिनिधियों के अलावा कोई व्यक्ति हाल में नहीं घुस सकता था। ५० से अधिक ऐसे व्यक्ति हाल में नियुक्त थे जो हर तरह के झगड़ों से निबटने के लिए तैयार थे। हाल के बाहर लगभग २०० व्यक्ति भगवे झंडे लेकर खड़े थे। जिनको देखने से लगता था किसी झोपड़पट्टी से चुनावी प्रचार हेतु किराए पर लाए गए हैं। वे नारे लगा रहे थे 'हमारे नेता वन्देमातरम्' 'वन्देमातरम् जिन्दाबाद' बस इसी घटना से बात समझ में आगई कि आज चाहे जो कुछ भी हो श्री वन्देमातरम् को प्रधान बनाने के लिए कुछ भी हथकंडा अपनाया जा सकता है। वातावरण धार्मिक संस्था के चुनाव से ज्यादा राजनैतिक संस्था के चुनाव जैसा होगया था।

सभा के प्रारम्भ होने से पूर्व प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर लिए जाने लगे। पं० सच्चिदानन्द माइक से प्रतिनिधियों के नाम बुलाकर उपस्थिति लेने लगे और अनेक व्यक्ति उसमें से सभा मे उपस्थित ही नही थे। इसी बीच घोषणा हुई कि कुछ प्रतिनिधि रजिस्टर पर हस्ताक्षर नहीं कर रहे हैं—अतः वह सभा हाल के बाहर चले जाये या हस्ताक्षर करे। पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी मच के पास आये कि हमे स्पष्टीकरण देने का अवसर दिया जाए। उन्हें मना कर दिया गया। स्वामी सुमेधानन्द जी आए उन्हें नहीं बोलने दिया गया। मंच पर चढ़कर स्वामी धर्मानन्दजी ने माइक पकड़ा और कहा हम हस्ताक्षर करने को तैयार हैं, बशर्ते हमारी बात मानी जाए कि 'निर्वाचन से पूर्व निर्वाचन अधिकारी की नियुक्ति होगी। उसी बात को प्रो० शेरसिंह जी ने रखा तो उनके हाथ से माइक छीन लिया गया उसके दो टुकड़े होगए। चारो ओर धम मचना शुरू होगया। मच पर उपस्थित सन्यासियों को जो व्यक्ति इसी काम के लिए उपस्थित थे, धक्के देकर उतारने लगे। मै मंच से उतरा तो एक व्यक्ति ने जब मुझे धक्का देने का प्रयास किया तो उससे मेरा थोड़ा विवाद हुआ। उसके मुह से शराब की बदबू आरही थी तो मेरा मन घृणा से भर गया।

मिलिट्री में १० वर्षों तक रहकर आर्यसमाज के वातावरण में पलने के कारण, जिसने १८ हजार फिट की ऊंचाई पर रहकर भी एक

बूंद शराब न पी हो—उसके मन में शिरोमणि संस्था के मंच पर शराबी गुंडों को देखकर क्या प्रतिक्रिया हुई होगी, इसका अनुमान आप नहीं लगा पायेंगे। मैं मंच से नीचे आगया।

साधारण सभा की प्रकाशित कार्यवाही में पहला विषय था—ईश प्रार्थना, दूसरा दिवंगत नेताओं व विद्वानों के प्रति शोक प्रस्ताव, तीसरा था ५ प्रतिष्ठित व्यक्तियों का चुनाव नहीं हो जाता साधारण सभा पूरी नहीं होती।

ईश्वर प्रार्थना तक नहीं हुई। सभाप्रधान ने सभा के प्रारम्भ होने तक की घोषणा नहीं की। साधारण सभा प्रारम्भ भी नहीं हुई और उधम के बीच एडवोकेट अश्विनीकुमार ने घोषणा की मैं प्रधान पद के लिए श्री वन्देमातरम् जी के नाम का प्रस्ताव करता हूँ। श्री सच्चिदानंद जी ने प्रस्ताव का समर्थन किया और जो ४० से अधिक अनधिकृत व्यक्ति हाल में बुला रखे थे उन्होंने जयघोष आरम्भ कर दी—वन्देमातरम् जिन्दाबाद! वन्देमातरम् जिन्दाबाद! पास में रखी पहली माला को वन्देमातरम् जी ने अपने हाथ से गले में डाल लिया। शेष पूर्व तैयारी के साथ लाई मालाओं को कुछ आर्यों ने पहना दिया और वन्देमातरम् जी उन लोगों का एक जुलूस बनाकर हाल से बाहर निकल गए और आधा घंटे के पश्चात् जो २०० व्यक्ति बाहर खड़े थे उनके नारों के साथ हाल में आगये। पत्रकार जो बाहर पहले से खड़े थे उन्हें असलियत का पता नहीं चला और समाचार प्रकाशित होगया वन्देमातरम् सर्वसम्मति से प्रधान चुने गये।

मैं इस असंवैधानिक चुनाव प्रक्रिया से दूर हट गया। मन में एक वैचारिक कुण्ठा उत्पन्न हो रही थी कि सभा का एक अधिकारी होने के नाते तुम्हारा कर्तव्य था कि सार्वदेशिक के संविधान की रक्षा करो और जब यह नहीं कर पा रहे हो तो उचित है अलग हट जाओ—अपने को और जिन आर्यों ने तुम्हें अपना प्रतिनिधि मानकर यहां भेजा है उनके साथ धोखेबाजी न करो।

मन में उदासी भी थी। आदरणीय सत्यानन्द जी मुंजाल, ओमप्रकाश जी गोयल, महात्मा धर्मपाल जी जैसे सम्पन्न और प्रबुद्ध आर्यसमाजी जिन्हें तुम अपने जीवन का आदर्श मानते रहे हो कैसे चुप बैठे रहे। यदि इनमें से कोई भी आर्य यह कह दे कि सभा प्रारम्भ हुई थी, ईश प्रार्थना की गई थी। एजेन्डा पूरा होकर चुनाव प्रक्रिया प्रारम्भ हुई तो मैं जो वे सजा दें स्वीकार करने के लिए तैयार हूं। जो भी कुछ पिछली कार्यवाही आदि पढने का कार्य हुआ वह श्री वन्देमातरम् के पुनः हाल में अनधिकृत व्यक्तियों के साथ घुसने के बाद हुआ। ऐसा था हमारी शिरोमणि संस्था का त्रैवार्षिक चुनाव जिसे वह दम भर कर कह रहे हैं "चुनाव संवैधानिक और लोकतांत्रिक ढंग से हुआ।

"मैं यहां फिर से लिखना चाहूंगा कि पूजनीय स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी सुमेधानन्द जी, पूजनीय स्वामी ओमानन्द जी जैसे तपस्वी और त्यागी एवं प्रो० शेरसिंह जी जैसे नेताओं की एक ही मांग थी कि "किसी को भी निर्वाचन अधिकारी नियुक्त किया जाय और चुनाव निष्पक्ष हो" कोई आपसी विरोध या वैर-भाव न हो और आज भी यदि यह बात स्वीकार कर ली जाय तो वे तैयार हो जायेंगे। इस लोकतांत्रिक प्रक्रिया से जो भी नेता चुनकर आयेगा वह हमारा नेता होगा और चुनाव के पश्चात् सब एकजुट होकर आर्यसमाज के संगठन का कार्य करेंगे।

इसके पश्चात् लगभग १०० से अधिक प्रतिनिधियों ने एक स्थान पर एकत्र होकर चुनाव की मांग की। मुझे चुनाव अधिकारी बनाना चाहा। मैंने अपनी दो मांगें उनके सामने रखी—पहली, सारे प्रतिनिधि एक स्थान पर एकत्र होकर रजिस्टर में हस्ताक्षर करें और मुझे इस बात का स्पष्ट संकेत हो कि बहुमत आपके साथ है। दूसरी, यदि मैं चुनाव अधिकारी बनूंगा तो कोई भी पद नहीं लूंगा। इन बातों को स्वीकार करने एवं मेरे द्वारा तथ्यों को जांचने के पश्चात् ही मैंने चुनाव प्रक्रिया को प्रारम्भ किया एवं हर एक पद पर अलग-अलग निर्वाचित होने की अलग-अलग घोषणा की। २७-५-९५ की सायं आर्यसमाज सुलतान बाजार में प्रतिनिधियों की सभा हुई और हाल इस सीमा तक भर गया था कि तिल रखने की जगह नहीं थी बाहर तक प्रतिनिधि बैठे थे। लगभग ११ से अधिक आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान एवं मंत्रियों ने पूजनीय स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को अपना नेता चुन लिया। एक आर्य संन्यासी ने तो यहां तक घोषणा कर दी कि यदि आर्यजगत् पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को असंवैधानिक ढंग से चुना नेता मानेगा तो मैं आत्मदाह करने को भी तैयार हूं।

प्रसंगवश मुझे इतना लिखना पड़ा। मेरा विषय था सार्वदेशिक पत्रिका का सम्पादकीय। श्री सच्चिदानन्द जी से मेरा अनुरोध है कि सभाओं में अधिकारी आते रहते हैं और जाते रहते हैं आपका कर्तव्य है कि जब तक आप हैं ईमानदारी और सच्चाई से आर्यों का मार्गदर्शन करें—असत्य व असभ्य भाषा का परित्याग करें ताकि आपके न रहने पर भी आर्य आपके व्यवहार और सभ्यता का उदाहरण दें।

पिछले त्रैमासिक चुनाव सन् १९९१ में जो स्थिति होगई थी मैं उसका यहां जिक्र नहीं करूंगा। पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी को उसी तरह लोगों ने चुन लिया था—जैसा श्री वन्देमातरम् को हैदराबाद में। आर्यप्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश चुनाव पर स्टे आर्डर लेकर दीवान हाल में आये थे। तब उन्हें यह सलाह दी गई थी कि आप विधिवत् चुनाव अधिकारी नियुक्त कर चुनाव करायें। अन्यथा जिस ढंग से आप प्रधान निर्वाचित होगये हैं—उसे न्यायालय नहीं मानेगा।

स्वामी आनन्दबोध जी ने इस सत्यता को स्वीकार किया। पुनः जो लोग उपस्थित थे उनको एकत्र कर चुनाव कराये गये। स्वामी जी ने श्री छोटूसिंह एडवोकेट के नाम का प्रस्ताव किया—श्री छोटूसिंह जी ने निर्वाचन अधिकारी बनने से इंकार कर दिया। पूज्य स्वामी जी ने पुनः मेरे नाम का प्रस्ताव किया—जिसे मैंने स्वीकार किया और पूज्य स्वामी जी विधिवत् निर्वाचित किये गये और मैंने उनके निर्वाचित होने की घोषणा की।

पं० सच्चिदानन्द अपने सम्पादकीय २५ जून १९९५ में लिखते हैं—"स्वामी आनन्दबो[illegible]जी ने किसी भी उपप्रधान को निर्वाचन कराने के लिए कहा। उन्होंने कैप्टन देवरत्न को अधिकृत किया और उनकी देखरेख में स्वामी जी महाराज पुनः सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गये।

त्रैवार्षिक साधारण सभा की कार्यवाही २६-१०-९१ जिसे पं० सच्चिदानन्द ने लिखा है। इस प्रकार है—

विषय संख्या ६ विषय संख्या ९—चुनाव प्रक्रिया चलाने के लिए श्री मनमोहन तिवारी ने श्री कैप्टन देवरत्न आर्य का नाम चुनाव अधिकारी के लिए प्रस्तुत किया—श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव ने इसका समर्थन किया। चुनाव अधिकारी की नियुक्ति के साथ ही आगामी तीन वर्षों के लिए सभा के पदाधिकारियों और अंतरंग सदस्यों के निर्वाचन का विषय प्रस्तुत होने पर प्रो० शेरसिंह जी ने खड़े होकर श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती का नाम प्रस्तुत किया।" चुनाव अधिकारी द्वारा उन्हें विधिवत् प्रधान चुने जाने की घोषणा के बाद सभी प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारियों तथा प्रतिनिधियों ने पुष्प मालाओं से उनका जोरदार स्वागत किया। स्वामी जी ने प्रतिनिधियों की भावनाओं का सम्मान करते हुए प्रधान पद ग्रहण किया।

पाठकगण ध्यान दें क्या अन्तर है सम्पादकीय में और वास्तविक कार्यवाही में? इसीलिए मैंने लिखा है पं० सच्चिदानन्द का सम्पादकीय झूठ का पुलन्दा है और यही तो चाहते थे कुछ प्रतिनिधि हैदराबाद की मीटिंग में। जब स्वामी आनन्दबोध जी ने निर्वाचन अधिकारी की नियुक्ति को स्वीकार किया था तो श्री वन्देमातरम् को क्या आपत्ति थी? सच्चाई यह है कि श्री वन्देमातरम् को इस बात का आभास होगया था कि चुनाव हुआ तो वह हार जायेंगे और कुर्सी छोड़ने के लिए वह तैयार नहीं थे।

इसी सम्पादकीय में पूजनीय स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती पर कीचड़ उछाला गया है। सारा जीवन आर्यसमाज को समर्पित करने वाले—आश्रम व्यवस्था में संन्यासी का रूप धारण करने वाले, भूमिका भास्कर, सत्यार्थ भास्कर, संस्कार भास्कर जैसे ग्रन्थों के रचयिता पर उटपटांग आरोप लगाकर पं० सच्चिदानन्द जी आर्यसमाज को किस ओर ले जाना चाह रहे हैं इससे आर्यों को सावधान रहना चाहिए।

उनका आरोप है दिल्ली में रहते हैं—ब्यावर की समाज से प्रतिनिधि नहीं हो सकते किन्तु हैदराबाद में रहकर तमिलनाडु की आर्यसमाज से प्रतिनिधि हो सकते हैं? अपने घर में आर्य प्रतिनिधि सभा खोलकर प्रतिनिधि भेजे जा सकते हैं, क्या-क्या लिखूं। (क्रमशः)

पूजनीय स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अभिनन्दन समारोह

दिनांक ४ नवम्बर, १९९५

अजमेर में सम्पन्न होनेवाले आगामी ऋषि मेले के अवसर पर

आर्यजगत् के त्यागी तपस्वी संन्यासी यतिमण्डल तथा दयानन्द मठ दीनानगर के अध्यक्ष, श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर के प्रधान पूजनीय स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को रुपये ११ लाख की थैली एवं अभिनन्दन पत्र से सम्मानित किया जायेगा।

अभिनन्दन हेतु प्राप्त राशि का श्रीमती परोपकारिणी सभा के अन्तर्गत एक स्थाई कोष बनाकर उसके ब्याज से वैदिक मान्यताओं के अनुरूप वेदभाष्य एवं महर्षि कृत ग्रन्थों को जर्मनी, रूसी, फ्रेंच व अंग्रेजी भाषाओं में अनुवाद कर प्रकाशित किया जायेगा।

विशेष :

१. जो सज्जन व्यक्तिगत रूप से १,००,००० या उससे अधिक का आर्थिक सहयोग करेंगे अथवा तीन लाख या उससे अधिक एकत्र करेंगे उनका सम्मान भी इस समारोह में किया जायेगा।

२. महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित ग्रन्थों को तीन भागों में विभाजित किया गया है।

प्रथम—१ से ५० पृष्ठों की पुस्तकें

द्वितीय—५१ से १०० पृष्ठों की पुस्तकें

तृतीय—१०१ से अधिक पृष्ठों की पुस्तकें

जो सज्जन या संस्था क्रमशः रु. ५०,०००, रु. १,००,००० या रु. ३,००,००० का दान करेंगे उनके नाम से एक पुस्तक का अनुवाद कराकर प्रकाशित किया जायेगा जिस पर अंकित होगा कि इस पुस्तक का अनुवाद अंग्रेजी/जर्मनी/रूसी/चीनी/फ्रेंच में श्री ………… के आर्थिक सहयोग से किया गया है। आर्यजन एवं संस्थायें अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग कर पूजनीय स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट कर अभिनन्दन समारोह को सफल बनायें और साथ ही महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वप्न "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" को साकार करने में हमारी सहायता करें।

चैक/ड्राफ्ट "श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर" के नाम उपरोक्त किसी भी आयोजक संस्था या संयोजक को भेजने की कृपा करें।

आपका दान आयकर की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

विनीत।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती	कैप्टन देवरत्न आर्य	गजानन्द आर्य
कार्यकारी प्रधान/अध्यक्ष	उपप्रधान/संयोजक	मन्त्री

श्रीमती परोपकारिणी सभा एवं स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अभिनन्दन समिति

झाऊलाल शर्मा	राजेन्द्र पांडे
प्रधान	मन्त्री

आर्यसमाज (काकड़वाड़ी) मुंबई

पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का जन्म हरयाणा प्रान्त में हुआ है। ऐसे उच्चकोटि के महात्मा के स्वागत के लिए सभी हरयाणा निवासियों को ४ नवम्बर को अजमेर पहुंचना चाहिए और यथाशक्ति आर्थिक सहयोग भी देना चाहिए।

११,१११-०० रुपये स्वामी ओमानन्द सरस्वती से

५,१००-०० रुपये प्रो० शेरसिंह जी के परिवार से

५,१००-०० रुपये पं० वेदपाल, राजपाल बहराणा (रोहतक) से प्राप्त हुए हैं। अन्य सज्जन भी भेजें।

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यानां तु व्यतिक्रमः।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम्॥

(जिस समाज में अपूज्यों की पूजा होती है और पूज्यों को तिरस्कार होता है उस समाज में आतंक, दुर्भिक्ष और मृत्यु का ताण्डव होता है।)

पूजनीय स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

संक्षिप्त परिचय

समाज को सन्मार्ग पर ले जाना सन्तों के जीवन का लक्ष्य होता होता है। सन्त जन अपने कहने की अपेक्षा अपने आचरण से समाज का मार्गदर्शन करते हैं इस कारण जहां उनका सान्निध्य हमको शान्ति देता है वहां पर उनके जीवन और विचारों की चर्चा हमको सुख प्रदान करती है। इस हेतु महापुरुषों की शृंखला में स्वामी जी महाराज गुणों की जीवन्त मूर्ति है। ऐसे स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के जन्म से सन्तों और शूरों को जन्म देनेवाली हरयाणा की भूमि एक बार फिर धन्य हुई है। सन् १९०० में महाराज का जन्म सासरोली ग्राम के एक कृषक परिवार में हुआ। यह कुल की पवित्रता की पहचान है कि स्वामी जी महाराज की तीन पीढ़ियों से इस घर में सन्त परम्परा निरन्तर चल रही है। इस कुल में उत्पन्न हुए बालक का नाम अपने संस्कृति प्रेम के अनुसार 'रामचन्द्र' रखा।

आर्यसमाज की ओर

स्वामी जी महाराज के गांव में आर्यसमाज नहीं था परन्तु कुछ आर्यसमाजी थे जिनके कारण गांव में आर्यसमाज की चर्चा होती रहती थी जिससे बाल्यकाल में स्वामी जी को आर्यसमाज से परिचित होने का अवसर मिला। इस प्रकार बाल्यकाल में ही सन्त जीवन के संस्कारों की दृढ़ता प्राप्त हुई। महाराज के समकालीन गांव के उनके मित्र बताते हैं प्रभु भक्ति का गुण स्वामी जी में बचपन से ही था। आपका बहुत समय वन के एकांत में प्रभु भजन में व्यतीत होता था। गांव के चबूतरे पर अपने मित्रों को एकत्रित करके सत्संग का आयोजन करते जिसमें उपदेश देना, शंका समाधान करना और भजन गाने का कार्यक्रम रहता। साथियों को पढ़ाते और पढ़ने को प्रेरणा करते थे। विद्याध्ययन में आपका मन लगता था। दीन दुःखियों, पिछड़े लोगों के प्रति सहयोग सहायता की भावना से प्रेरित होकर उनकी सहायता करते। उस क्षेत्र में कुएं गहरे होने के कारण महिलाओं को पानी खींचने में बहुत श्रम करना पड़ता था आप ऐसे समय पर कुएं पर उपस्थित हो माताओं बहनों को इस कार्य में सहायता देते। मनुष्यों के साथ-साथ पशु-पक्षियों से भी उनका दयाभाव सर्वविदित है। आज भी आश्रम के पशु-पक्षियों कुशल क्षेम का उसी प्रकार ध्यान रखते हैं जैसे आश्रमवासी सदस्यों का। बचपन से ही आपके हृदय में गो सेवा का भाव कूट-कूट भरा है। गौ की सेवा करके आपको आत्मिक प्रसन्नता अनुभव होती है। इस प्रकार आपका जीवन गांव के शान्त परिवेश में आयु के साथ अनुभव की सीढ़ियां चढ़ रहा था।

वैराग्य की तीव्रता

स्वामी जी महाराज के जीवन में सन् १९१७ का वर्ष विशेष महत्त्व का है। आर्यसमाज के इतिहास में भी यह वर्ष विशेष स्थान रखता है। यह वर्ष गुरुकुल प्रणाली के जन्मदाता का मुन्शीराम से जगत् प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द बनने का था। १७-१८ वर्ष के किशोर वय रामचन्द्र को निश्चय अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने के लिए इस अवसर ने प्रेरित किया। संन्यास की घटना देखकर आप मौलिक रूप से तो अपने गांव लौट आये परन्तु आपका वैरागी मन अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने लगा।

स्कूल में अध्ययन और खेल-कूद में अपने सहपाठियों में अग्रणी होने के कारण अध्यापकों के स्नेह भाजन और मित्रों के प्रिय रहे। विचारों की स्पष्टता तथा परिपक्वता के साथ-साथ संस्कृत भाषा सीखने व वेद का अध्ययन करने की आपकी लग्न तीव्र से तीव्रतर होती गई। आपको विद्यालय के प्रधानाध्यापक आर्य पुरुष और स्वतन्त्रता सेनानी श्री बलदेवसिंह जी ने रोकने का बहुत यत्न किया परन्तु अपने संकल्प को साकार करने के लिए आप घर से निकल पड़े। ऐसे समय में अवसर आ गया मथुरा जन्म शताब्दी का, ऐसे समारोह में उल्लास का सागर जब ठाठ मारता है तब सामान्य जन का हृदय भी दैवी आत्मा से उद्दीप्त

होता है फिर सात्विक देव संस्कारों के जीवन की कथा हो क्या ? यहां आपने आर्य संन्यासियों को, वेद के विद्वानों, कर्मठ निष्ठावान् आर्य नेताओं को सुना और निकट से देखा तो आप में नई स्फूर्ति आयी। मथुरा शताब्दी से पूर्व एक बार दिल्ली के परेड मैदान पर आर्यसमाज की ओर से एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया था। इस सभा को सम्बोधित करने के लिए आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज और स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज पधारे थे। इस सभा को सुनने के लिए आप भी पहुंचे थे, आप खाली समय में मैदान के एक भाग में बैठकर अपने स्वाध्याय में संलग्न थे कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का उधर आगमन हुआ, यह गुरु शिष्य की प्रथम भेंट आर्यजगत् के लिए मणिकान्चन सहयोग सिद्ध हुआ। स्वामी जी महाराज से वार्तालाप हुआ, शिष्य ने गुरु पा लिया और गुरु को शिष्य मिल गया।

आर्य सिद्धान्तों का अध्ययन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने आर्यसमाज के प्रचार और प्रसार के लिए वैदिक सिद्धांत और महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को भली प्रकार जाननेवाले आर्यप्रचारकों को तैयार करने हेतु लाहौर में श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय की स्थापना की। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज इसके आचार्य बनाये गये तथा आर्यजगत् के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् स्वामी वेदानन्द जी महाराज पं० ईश्वरचन्द्र जी दर्शनाचार्य, आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति आदि वहां अध्यापन कराने लगे। श्री रामचन्द्र इस महाविद्यालय के विद्यार्थी बन गये तथा योग्य गुरुओं के चरणों में बैठकर शास्त्रों का गहन अध्ययन प्रारम्भ किया। यहां अध्ययन करते हुए एक बार लाहौर में पंजाब प्रांत की खेल प्रतियोगिताओं का सार्वजनिक आयोजन हुआ उसमें उस समय के विशाल पंजाब प्रदेश के सभी भागों से हृष्ट पुष्ट खिलाड़ी प्रतियोगिताओं में भाग लेने आये थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने ब्रह्मचारी रामचन्द्र को प्रतियोगिता में भाग लेने की प्रेरणा की। आप प्रतियोगिता में भाग लेने पहुंचे तो पंजाब के विशालकाय खिलाड़ियों में दुबले पतले रामचन्द्र तब चर्चा का विषय बन गये जब आपने अपने प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ कर तीन-तीन स्वर्णपदक प्राप्त किये। इस प्रकार बल और ज्ञान की साधना करते हुए महाविद्यालय की 'सिद्धान्त शिरोमणि' उपाधि प्राप्त कर प्रथम स्नातक होने का गौरव प्राप्त किया।

कर्मक्षेत्र में पदार्पण

उपदेशक विद्यालय के स्नातक बनने के उपरान्त आपने आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तर्गत वेदप्रचार का कार्य प्रारम्भ किया। इस प्रसंग में प्रदेश के सुदूर क्षेत्रों अफगानिस्तान की सीमा तक प्रचारकार्य किया। आप कोरे शास्त्रज्ञ ही नहीं रहे वरन् आपने अपने प्रचारकार्य को करते हुए इस रहस्य को भी हृदयंगम कर लिया था कि जहां उपदेश से समाज की आधि का हरण होता है वहां चिकित्सा से जनता की व्याधि का हरण करना भी आवश्यक और प्रभावकारी है। आपने चिकित्सा कर्म का भी अभ्यास किया तथा भगवान् बुद्ध की भांति उससे रोगियों के हृदय में आपने अपने लिए स्थान बना लिया। एक बार प० रामचन्द्र जी को बताया गया कि मुल्तान जिले के मण्डी स्थान में एक बदमाश मुसलमान रहता है और वह आर्यसमाज का सत्संग नहीं होने देता। आपने वहां के लोगों से कहा जब कभी यह बदमाश बीमार हो तो मुझे अवश्य सूचित करें। संयोग से वह बीमार पड़ गया। पं० रामचन्द्र जी को सूचना दी गई। आप सूचना पाते ही पहुंचे। आपने देखा रोगी अचेत है, घरवाले पास नहीं, आपने सेवा प्रारम्भ की, औषध दी आपकी सेवा से रोगी ने अपनी आंखें खोली तो माता के मूर्तिमान रूप में एक अज्ञात व्यक्ति को अपनी सेवा में पाया। रोगी ने पूछा आप कौन ? पं० जी ने उत्तर दिया आर्य चिकित्सक हूं। आपकी बीमारी की खबर सुनकर आया हू अपना कर्त्तव्य पालन कर रहा हूँ। यह सुनते ही उसका हृदय द्रवित होगया। उसने श्रद्धापूरित भावों से कहा महाराज मुझसे भूल हुई मैं फरिस्तों पर पत्थर फेंकने का अपराधी हूं अब यह अपराध नहीं करूंगा। मेरी प्रार्थना है अब आप यहां जलसा करो मैं आर्यों का जलसा कराऊंगा। स्वामी जी महाराज का यही रूप उनके सम्पर्क मे आनेवाले हर व्यक्ति के हृदय पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाता है।

उपदेशक विद्यालय में

श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय से पं० नरदेव जी कार्य छोड़कर चले गये थे। उनके स्थान पर योग्य व्यक्ति का चयन करना सभा के सामने कठिन समस्या थी। नाम तो कई आये परन्तु सहमति न बन सकी, तब पं० रामचन्द्र जी का नाम इस स्थान पर सुझाया गया। सभा ने सर्वसम्मति से आपको उपदेशक विद्यालय का अध्यापक बना लिया।

दयानन्द मठ

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के विषय में मौलिक चिन्तन था। उनके विचार से धर्म प्रचार का कार्य जो साधु-संन्यासी चौबीस घण्टे का समय समाज सेवा में लगा सकते है ऐसे लोगों द्वारा ही संभव है। ऐसे लोगों के साधना और विश्राम के लिए स्थान २ पर मठों की स्थापना होनी चाहिए जो गृहस्थों के आश्रित और अधीन न हों। इसी क्रम में स्वामी जी ने दीनानगर में अपने भक्तों व सहयोगियों की सहायता से १९३७ में मठ की स्थापना की। गुरु जी के आदेशानुसार पं० रामचन्द्र जी ने मठ का आंतरिक प्रबन्ध संभाल लिया, चिकित्सा व सेवा के माध्यम से साधु-सन्तों और जनता की सेवा का अनवरत चलनेवाला व्रत स्वीकार कर लिया। परिणामस्वरूप स्वामी सर्वानन्द जी महराज और मठ प्राय पर्यायवाची बन गये हैं।

जहां स्वामी भूमानन्द जी, पं. वेदप्रकाश जी, मास्टर पूर्णचन्द जी जैसे विद्वानों वानप्रस्थियों संन्यासियों की सेवा का सौभाग्य मठ को प्राप्त हुआ है, वहीं सामान्य रोगी भी उसी स्नेह और सहायता का अधिकारी रहा है। यह मठ की विशेषता है। कठिन असहाय रोगियों की देखभाल स्वामी जी महाराज स्वयं करते हैं, क्योंकि और लोगो को कठिन सेवा कार्यों को करने मे संकोच हो सकता है।

स्वामी जी अपरिग्रह के साक्षात् उदाहरण हैं। पूरे देश में कोई साधु संन्यासी, प्रचारक, पण्डित, उपदेशक ब्रह्मचारी ऐसा नहीं होगा जिसने स्वामी जी का स्मरण किया हो और स्वामी जी के आशीर्वाद का वरद हस्त उस तक न पहुंचा हो। आप स्वयं अपने लिए तो दूर मठ के लिए भी किसी से कुछ नहीं मांगते और जो कुछ प्राप्त होता है वह भी सेवा मे अर्पण हो जाता है। स्वामी जी महाराज समाज सेवकों का घर के बुजुर्गों की तरह ध्यान रखते हैं इसलिए जो उनके सम्पर्क में आता है उनका हो जाता है।

मठ के प्रत्येक कार्य और सदस्यों की आप स्वय देखभाल करते हैं। मठ की गोशाला दर्शनीय है। यहां की गौवें अनेक बार पुरस्कृत की जा चुकी हैं। यहां की फार्मेसी औषधियों की शुद्धता के लिए देश भर में विख्यात है। आप रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा करते हैं। महंगी से महंगी दवा के भी पैसे नहीं लिए जाते।

हैदराबाद सत्याग्रह और स्वतन्त्रता संग्राम

देश और समाज के जीवन में कुछ घटनाये मील के पत्थर सिद्ध होती हैं उनमें देश की स्वतन्त्रता और आर्यसमाज के जीवन में हैदराबाद सत्याग्रह का एक महत्त्वपूर्ण घटना है। इसका नेतृत्व स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज को सौंपा गया तो पं. रामचन्द्र पर उत्तरदायित्व बढ़ जाये यह स्वाभाविक था। स्वामी जी अग्रिम मोर्चे को संभाल रहे थे और पण्डित जी सत्याग्रह के लिए धन-संग्रह और सत्याग्रहियों को तैयार करने में लगे थे। आपके अथक परिश्रम ने आपको रोगी बना दिया परन्तु अनिवार्य चिकित्सा प्राप्त कर फिर आप अपने कार्य में जुट गये और लक्ष्य की सफलता तक उसमें जुटे रहे।

यह युग स्वाधीनता आन्दोलन का युग था। पूरा देश स्वतन्त्रता के लिए मचल उठा था। शहीद भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव के समर्थन में हुई कांग्रेस की सभा की अध्यक्षता स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने की थी। स्वामी जी को उनके भाषण के आरोप मे तथा पंजाब के गवर्नर की हत्या के आरोप में गिरफ्तार करके कैद कर लिया गया था उस समय रामचन्द्र जी अपने गुरु जी से मिलने और आदेश लेने के लिए नियमित रूप से जाते थे। साथ ही शहीद भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव से अभियोग के संबध मे चल रही बन्द न्यायालय की कार्यवाही को सुनने के लिए शिवदत्त जी के साथ प्रतिदिन उपस्थित होते थे। जिस समय क्रान्तिवीरों ने न्यायाधीश पर जूता फेंककर मारा था, उस समय आप वहीं थे। (शेष पृष्ठ ६ पर)

चौ० विजयकुमार जी के निधन पर प्राप्त शोक प्रस्ताव

भारतीय हिन्दू शुद्धि संरक्षिणी सभा की आपात बैठक स्वामी श्री सेवानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में आर्यसमाज समालखा में सम्पन्न हुई। सभा में स्वामी जी द्वारा शोक संदेश देने पर (चौ० विजय कुमार जी का देहांत ता० २७-८-९५ को रोहतक में हुआ) सभा पूरी तरह से शोकग्रस्त होगई।

भगवान् से प्रार्थना करते हुए कामना की शोकग्रस्त परिवार को यह आकस्मिक सदमा सहन करने की शक्ति प्रदान करे व दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान प्रदान करे।

बलवानसिंह सचिव, भारतीय हिंदू शुद्धि संरक्षणी सभा, समालखा (पानीपत)

सेवा भारती समालखा की आपात् बैठक चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त पानीपत की आकस्मिक देहावसान पर हुई।

प्रभु से प्रार्थना है कि उस आत्मा को अपने चरणों में स्थान प्रदान करे व बिछुड़ा परिवार को यह शोक सहने की शक्ति प्रदान करे।

डा० देवेन्द्र मल्होत्रा सचिव सेवा भारती समालखा मण्डल, जिला पानीपत

आर्यसमाज समालखा गांव के सभी धर्मप्रेमियों की तरफ से चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त पानीपत के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त करते हैं व शोक सभा में सभी ने २ मिनट खड़े होकर शोक व्यक्त किया।

भगवान् से प्रार्थना करते हुए कहा कि दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान प्राप्त करे व परिवार के सदयों को यह आघात सहन करने की शक्ति प्रदान करे। डा० बलराज मन्त्री

आर्यसमाज समालखा गांव जिला पानीपत

दिनांक २९-८-९५ को आर्यसमाज मन्दिर नलवा में आर्यसमाज नलवा के प्रधान पं० अमरसिंह आर्य की अध्यक्षता में चौ० विजयकुमार पूर्व उपायुक्त एवं संयोजक शराबबन्दी समिति हरयाणा का देहान्त २७-८-९५ को होने पर एक शोक सभा का आयोजन किया गया।

श्री सत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी संयोजक शराबबन्दी समिति जिला हिसार ने चौ० साहब को श्रद्धांजलि देते हुये उसे एक ईमानदार एवं कर्त्तव्यनिष्ठ उच्च अधिकारी तथा आर्यसमाज का सच्चा नेता एवं शराबबन्दी आन्दोलन का कर्मठ योद्धा बताया।

उनको सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा अब जनजागरण करके युद्धस्तर पर शराबबन्दी आन्दोलन चलाकर भ्रष्ट सरकार को मजबूर करने के लिए शराबबन्दी बारे जेल भरो आन्दोलन की घोषणा करके क्रियात्मक रूप दे। उनकी लगन एव नेक कार्य सदा हमारा मार्ग दर्शन करते रहेंगे।

प्रभु उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा शोकाकुल परिवार जन को असहनीय दुःख सहन करने की शक्ति दे।

मन्त्री आर्यसमाज नलवा

दिनांक ४-९-९५ को आर्यसमाज नांगल शोक प्रस्ताव पारित करती है कि चौ० विजयकुमार जी अपने सेवाकाल में बड़े ही योग्य, ईमानदार तथा कर्त्तव्यपालन में निष्ठावान् अधिकारी रहे हैं। इसके साथ-साथ उन्होंने राष्ट्रहित के अन्य कार्यों जैसे छुआछूत निवारण तथा शराबबंदी आन्दोलनों में भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इनकी असामयिक मृत्यु के समाचार से पूरा आर्य वर्ग शोक संतप्त है।

आर्यसमाज नांगल शोक प्रस्ताव पारित करके प्रभु से प्रार्थना करती है कि आर्यसमाज के कार्यों में सदा अग्रणी रहनेवाले समस्त परिवार को शांति प्रदान करे।

सारा समाज उनका ऋणी है, रहेगा। हमें चाहिए कि उनके कार्यों व आदर्शों का अनुपालन करें।

सौंसराम मन्त्री आर्यसमाज मन्दिर, नांगल डा० सेहर, जिला भिवानी

श्री विजयकुमार पूर्व संयोजक, मद्यनिषेध आन्दोलन का दुःखद समाचार सुनने को मिला। स्वर्गीय विजय जैसे कर्मठ समाजसेवक दुर्लभ हैं। उनके रोग से हमें चिंता थी और वही हुआ। आर्यजगत् का एक लाल जो हमसे छिन गया उसकी पूर्ति चहुं ओर निगाह पसारने पर भी नहीं दिखती है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वे सभा सहयोगी जिनके बीच में रहकर स्वर्गीय विजयकुमार ने आर्यजाति की निर्लोभ सेवा की। हमेशा स्वर्गीय विजयकुमार को अत्यन्त सम्मान तथा श्रद्धा के साथ याद करेंगे।

हरिराम आर्य, पो० कारोली, जिला रेवाड़ी-१२३३०३

श्री विजयकुमार जी के निधन का समाचार पढा मन को बहुत दुःख हुआ है उसकी भरपाई कर पाना हमारे लिए असम्भव है। उन्होंने थोड़े से समय में जो आशातीत प्रगति शराबबन्दी आन्दोलन में की है सो हर व्यक्ति के लिये बहुत ही कठिन काम है। हम प्रार्थना करते हैं उनकी आत्मा को किसी अच्छे स्थान में जन्म मिले और शोक संतप्त परिवार के लिए सांत्वना प्रदान करे।

महर्षि दयानन्द विद्या मन्दिर के स्टाफ एवं विद्यार्थियों की ओर से शोक प्रस्ताव पारित किया है।

ओमप्रकाश आर्य
संस्थापक महर्षि दयानन्द विद्यामन्दिर (आर्यसमाज सफीदों)

आर्यसमाज रेवाड़ी आज दिनांक १ अक्तूबर १९९५, रविवार को आयोजित शोक सभा महाशय रामचन्द्र आर्य जी के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है।

महाशय रामचन्द्र आर्य जी आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द जी के प्रति अति निष्ठावान् थे और अपने व्यस्त कार्यक्रमों के होते हुए भी आर्यसमाज रेवाड़ी के साप्ताहिक अधिवेशनों में प्राय सक्रिय भाग लिया करते थे। आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय का भी उनमें चाव था।

आर्यसमाज की ओर उनका रुझान उस समय के अहीर हाई स्कूल रेवाड़ी में दी जानेवाली अनिवार्य धार्मिक शिक्षा थी जिसके अन्तगत वदिक संध्या और यज्ञ के मन्त्रों को कण्ठस्थ कराया जाता था। साथ ही आर्यसमाज रेवाड़ी के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में अध्यापकों सहित विद्यार्थियों का सम्मिलित होना भी था।

महाशय रामचन्द्र आर्य जी कई वर्षों तक आर्यसमाज रेवाड़ी के प्रधान रहे हैं और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अंतरंग सदस्य भी रहे हैं। वर्तमान में वे आर्यसमाज रेवाड़ी के उपप्रधान पद पर आसीन थे। उन्होंने दिनांक २४-९-९५ को पूर्ण हुए महोत्सव के विशाल कार्यक्रमों के महत्वपूर्ण अंश का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया था।

महाशय जी के निधन से आर्यसमाज रेवाड़ी का एक पुराना कार्यकर्त्ता चल बसा जिसकी पूर्ति दुर्लभ है। आर्यसमाज रेवाड़ी महाशय जी की आर्यसमाज के प्रति सद्भावना और श्रद्धायुक्त निष्ठा का पूर्ण आदर करती है एवं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवगत आत्मा को सद्गति, शोक संतप्त परिवार को धैर्य और शान्ति प्रदान करे। —रामकुमार शर्मा मन्त्री आर्यसमाज रेवाड़ी

आर्य संन्यासी सम्मान रक्षा समिति के तत्वावधान में दिल्ली में आयोजित सम्मेलन का महत्वपूर्ण प्रस्ताव

१० अक्तूबर ९५ को सार्वदेशिक सभा के कार्यालय के सामने रामलीला मैदान दिल्ली में सम्मेलन श्री देवव्रत जी आर्य की अध्यक्षता में तथा अशोक जी के पौराहित्य में यज्ञ की कार्यवाही साथ आरम्भ हुआ।

सम्मेलन की अध्यक्षता श्री चौ० हीरासिंह पूर्व कार्यकारो पार्षद दिल्ली ने की। इस सम्मेलन का संयोजन श्री सीताराम आर्य ने किया। मंचा का संचालन परोपकारिणी सभा के उपमन्त्री श्री डा० धर्मवीर जी अजमेर ने किया।

श्री चौ० हीरासिंह जी, स्वामी धर्मानन्द जी उड़ीसा, वेदव्रत शास्त्री, श्री विजयपाल आचार्य गुरुकुल झज्जर, प्रो० रतनसिंह जी गाजियाबाद, श्री स्वामी विश्वानन्द जी उत्तरप्रदेश, स्वामी धर्मानन्द जी पानीपत, श्री आनन्दमोहन हिसार, प्रो० धर्मवीर अजमेर, श्री रायंमुनि जो हिसार, श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी हरयाणा सभा, श्री स्वामी परमानन्द जी बिहार, श्री सत्यानन्द जो आचार्य रोहतक आदि वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तावों पर रखे।

प्रस्ताव श्री चौ० हीरासिंह ने रखा, प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया। प्रस्ताव निम्नप्रकार हैं—

सार्वदेशिक साप्ताहिक नई दिल्ली के तथाकथित सम्पादक श्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री, पं० रामचन्द्रराव बन्देमातरम् एवं बाबू सोमनाथ मरवाह आदि के परामर्श से आर्यजगत् के हनन करने के कुप्रयास का एक अभियान चला रखा है। साप्ताहिक समाचार पत्र के माध्यम से पूज्य संन्यासी महानुभावों पर अनर्गल, निराधार एवं मिथ्या आरोप लगाये जा रहे हैं। आश्चर्य की बात है कि भ्रष्टाचार में स्वयं लिप्त सच्चिदानन्द शास्त्री आर्यसमाज के पूज्य साधु-सन्तों पर घिनौने आक्षेप लगाने को दुस्साहस कर रहे हैं।

१० अक्तूबर ९५ को रामलीला मैदान नई दिल्ली में आर्य संन्यासी सम्मान रक्षा समिति के तत्वावधान में आयोजित आर्यों की यह सार्वजनिक स[भ]ा श्री सच्चिदानन्द शास्त्री के इस घृणित और दूषित कार्य की घोर [नि]न्दा करती है। यह सभा अनुभव करती कि सच्चिदानन्द शास्त्री के [इ]स कुकृत्य से आर्यसमाज को अपार क्षति पहुंची है। अतः यह सभा आर्यजनता से निवेदन करती है कि जब तक [श]ास्त्री अपने इस कुकृत्य के लिए सार्वजनिक रूप से मौखिक एवं लिखि[त] [क्ष]मा न मांगे तब तक उनका तथा उनके उक्त साथियों का आर्यसमा[ज] के कार्यक्रमों में बहिष्कार रखा जाये।

इस सभा को यह भी जानकर बहुत दुःख हुआ कि रामचन्द्र राव बन्देमातरम् के सहयोग से भारत सरकार को धोखा देकर बिना सत्याग्रह में भाग लिए श्री सच्चिदानन्द शास्त्री हैदराबाद सत्याग्रह १९३८ में भाग लेने वाले सत्याग्रहियों को मिलनेवाली पेंशन का आहरण कर रहे हैं। ज्ञातव्य है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा संचालित आर्य सत्याग्रह में १८ वर्ष से कम आयु के व्यक्ति को सत्याग्रह में भाग लेने की इजाजत नहीं थी और उस समय श्री शास्त्री जी की आयु कुल ९ वर्ष थी। उनके इस अपराध के कारण आर्यसमाज की छवि धूमिल हुई है। अतः यह सभा भारत सरकार से माग करती है कि श्री सच्चिदानन्द शास्त्री की इस धोखाधड़ी की शीघ्रातिशीघ्र जांच करवाकर उचित कानूनी कार्यवाही करे। सुखदेव शास्त्री

अतरंग सभा की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक २२ अक्तूबर ९५ रविवार को प्रातः ११ बजे सभा कार्यालय रोहतक में होगी। अतः सभी सदस्य यथासमय पधारें।

—सभा मन्त्री

शराब बीड़ी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इनसे दूर रहें।

बाढ़ पीड़ितों की सहायता की अपील

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ के परिसर में ८०० के लगभग बाढ़पीड़ितों के आवास की निरन्तर व्यवस्था की गई। उन्हें खाद्यसामग्री भी वितरित की गई। अनेक शहरों तथा ग्रामों में अभी तक बाढ़ का गन्दा पानी खड़ा है जिससे अनेक रोग फैलने की संभावना है। अतः सभा ने बुखार तथा पेचिस की औषधि तैयार करवाई हैं, जिसे बाढ़पीड़ित क्षेत्रों में सभा के उपदेशकों तथा आर्यसमाज के कार्यकर्ता मुफ्त बांट रहे हैं। अतः समस्त आर्यसमाजों, आर्यसंस्थाओं के अधिकारियों एवं दानी महानुभावों से अनुरोध है कि इस परोपकारी कार्य हेतु अधिक से अधिक धनराशि सभा के कार्यालय में भेजकर यश के भागीदार बनें।

—ओमानन्द सरस्वती, प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा, दयानन्दमठ, रोहतक

वैदिकधाम कुरुक्षेत्र में यज्ञ तथा वेदप्रचार शिविर

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द वैदिकधाम कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण मेले के अवसर पर २२ से २४ अक्तूबर तक यज्ञ तथा वेदप्रचार शिविर का आयोजन किया गया है। आर्यजनता सहयोग करें।

—प्रि० सत्यवीर विद्यालंकार, सभा उपमन्त्री संयोजक

(पृष्ठ ४ का शेष)

भारत छोड़ो आन्दोलन के समय १९४२-४५ तक वायसराय की आज्ञा से स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज को शाही किले में कैद कर लिया गया और यातनायें दी। मठ पर सरकार की वक्रदृष्टि रही उस कठिन समय में रामचन्द्र जी ने मठ के कार्यों को बड़ी निष्ठा, दृढ़ता और योग्यता से संभाला।

संन्यास दीक्षा

विधि का विचित्र विधान है। उस समय जिस वर्ष पं. रामचन्द्र जी ने जन्म लिया उस समय उस वर्ष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने गृह त्याग किया था और जिस समय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने देह त्याग किया वह समय पं. रामचन्द्र जी का स्वामी सर्वानन्द बनने का है। १९५५ में जब मुम्बई में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के प्रयाण का समय आया तो पं रामचन्द्र जी ने अपने लिए आज्ञा पूछी—उत्तर मिला अब तुम्हारा नाम स्वामी सर्वानन्द होगा। किसी को बुलाकर काषायवस्त्र धारण कर लेना। पं. जी ने गुरु की आज्ञा शिरोधार्य कर एक मई को, सहस्रों भक्तों की उपस्थिति में, पूज्य स्वामी वेदानन्द जी महाराज से, संन्यास के वस्त्र धारण कर लिए और स्वामी सर्वानन्द बन गये।

परोपकारिणी सभा के प्रधान

स्वामी जी महाराज का मार्गदर्शन प्राप्त करने की भावना से सभा ने आपको सर्वसम्मति से सभा का सदस्य चुना और अगले वर्ष आपको सभा का प्रधान बनाया। तब से आज तक सभा के प्रधान हैं और आपके मार्गदर्शन में सभा प्रगति-पथ अग्रसर है।

स्वामी जी महाराज का ईश्वर विश्वास अटूट है। जब पंजाब में आतंक का साम्राज्य था, लोगों ने आपसे निवेदन किया महाराज आप स्थान छोड़ दो, अंगरक्षक ले लो परन्तु महाराज का एक ही उत्तर रहता था "मेरा प्रभु मेरे अंग-संग रहता है।"

महाराज का जीवन जाति, बिरादरी, क्षेत्र आदि की संकीर्ण भावनाओं से ऊपर प्राणिमात्र से समदृष्टि की भावना व्यवहार का अनूठा उदाहरण है। सभी वर्ग के, सभी पार्टियों के लोग आपसे प्रेम करते हैं, अपना समझते हैं और मार्गदर्शन व सहयोग पाते हैं।

स्वामी जो महाराज की आयु ९३ वर्ष की है परन्तु इस आयु में वैदिक धर्म प्रचार के लिए देश के सुदूर भागों की कठिन यात्रा करते हैं। निरभिमानता की आप साक्षात् मूर्ति हैं। आपका निर्लोभ जीवन प्रेरणादायी है। ऐसे वीतराग, कर्मठ, सेवाधर्म को जीवन का लक्ष्य बनानेवाले महात्मा का अभिनन्दन करना समाज के लिए सौभाग्य, गर्व और गौरव का प्रसंग है।

श्री विजयकुमार एक अद्भुत व्यक्तित्व

श्री कपिलदेव शास्त्री पूर्व एम० पी०

२७ अगस्त को श्री विजयकुमार जी कैंसर से पीड़ित होकर स्वर्गवास होगए। दो दिन बाद जब मैं उनके घर गया तब वहां उनके बड़े भाई पूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिंह, श्री विजयकुमार जी की धर्मपत्नी शकुन्तला और उनके पुत्र बैठे हुए थे। आने-जानेवालों का तांता लगा हुआ था। प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने ढंग से श्री विजयकुमार जी के गुणों का वर्णन कर रहा था।

श्री विजयकुमार जी अद्भुत स्मृति के मालिक थे। उनकी याददास्त इतनी तेज थी कि एक बार कही हुई बात और एक बार देखे हुए व्यक्ति के नाम व काम को वे कभी नही भूलते थे। जब वे सरकार में और पानीपत जिले के डिप्टी कमिश्नर थे तब उन दिनों असन्ध रोड पर रेलवे फाटक के निकट पानीपत क्षेत्र के किसान एक सार्वजनिक स्थान पर किसान भवन बनाने की तैयारी कर रहे थे और उन्होंने कुछ कमरे भी बना लिए थे। इसी बीच सत्ता के गलियारों का सहारा पाकर एक पंजाबी व्यापारी ने उस जमीन का लेदेकर वक्फ बोर्ड से अपने नाम पट्टा करवा लिया। जबकि किसान यूनियन का वहां बाकायदा अधिकार हो चुका था। भाग्य से मैं सफीदों जाता हुआ उस किसान भवन के अन्दर चला गया। उस समय हरयाणा विधान सभा के नौल्था क्षेत्र के विधायक श्री सत्यवीरसिंह कादियान उन किसानों को समझा रहे थे कि वे पंजाबी व्यापारी से झगड़ा मोल न लें और लेदेकर फैसला करलें। मैंने उन किसान नेताओं को कहा कि ये जमीन किसी की दादालाही नहीं है तुमने यहां किसान भवन बना लिया है। इस जमीन को खाली करने की आवश्यकता नहीं है, विधायक श्री सत्यवीर कादियान से किसान यूनियन वालों ने पांच हजार रुपये दान भी दिलवाया और उनसे कहा कि वे रेस्टहाउस में आ जायें। फोन पर बात करके मैंने जिलाधीश विजयकुमार जी और पुलिस कप्तान श्री अनन्तराम ढुल को रैस्ट हाउस पर किसानों के डेपुटेशन से मिलने के लिए आमन्त्रित किया। बड़ी देर तक बात हुई। श्री विजयकुमार जी ने उस पंजाबी व्यापारी को भी बुलाया और उसे कहा कि जमीन पर तुम्हारा जो खर्च हुआ है वह किसान यूनियन से ले लें जिससे तुम्हारी भरपाई हो जायेगी और जिले के किसानों को बैठने के लिए जो जगह बन गई है वह सुरक्षित हो जायेगी। पुलिस कप्तान श्री अनन्तराम ढुल ने भी मनाने का आग्रह किया और और मैंने व्यापारी से कहा कि यहां किसान यूनियन ने अपने मकान बना लिये हैं रातबिरात उनके ठहरने के लिए कोई जगह नहीं है। उन्हें सिर टिकाने का आसरा मिल गया है। तुम्हारे दिमाग मे इस स्थान को व्यापारिक केन्द्र बनाने का जो स्वप्न है उसे भूल जाओ। व्यापारी ने कहा मैं अपने साथियों से सलाह करके ही कोई उत्तर दूंगा। श्री विजयकुमार जी इस दुनिया में नही रहे पर उनके प्रयत्न से जो एक शुभारम्भ हुआ था। पानीपत से असन्ध जानेवाले रास्ते पर रेलवे पुल के नीचे रेलवे फाटक के पास किसान भवन का झण्डा शान से लहरा रहा है।

श्री विजयकुमार ऐसे न्यायप्रिय अधिकारी थे कि उन्होंने गरीब किसान के हित को कभी नजरअंदाज नहीं किया। जब वे फरीदाबाद में जिलाधिकारी थे तब उन्होंने सरकार द्वारा अधिकृत जमीनों का मूल्य बाजार भाव से दिलाया और बिचौलियों को एक छोटा पैसा भी कमीशन नहीं खाने दिया।

नरवाना उपमण्डल के (जिला जींद) सबसे बड़े गाव धनौरी को मण्डी के लिए सरकार ने किसानों की जमीन अधिकृत की और जमीन का जो मूल्य था वो इतना कम निर्धारित किया कि जमीनों के मालिक रोने बिलखने लगे। उस समय के हरयाणा सरकार के सम्पदा अधिकारी श्री विजयकुमार मौके पर धनौरी गाव आये और किसानों की फरियाद सुनकर उस जमीन का जो भाव चल रहा था उसे आधार मानकर किसानों को जमीनों का मूल्य दे गये।

पानीपत के निकट हलदाना में जबरदस्ती शराब का ठेका खोल दिया। ग्रामवाले शिकायत लेकर श्री विजयकुमार जी के पास आये। उन्होंने उन्हें परामर्श दिया कि नियमानुसार धरना दे दो। ग्रामवासियों के हस्ताक्षर करवाकर भिजवा दिये। इस पर श्री विजतकुमार ने स्वयं जाकर ठेका बन्द करवा दिया। इस पर भजनलाल ने उनका पानीपत से तबादला करवा दिया।

जब भजनलाल की सरकार आई और उन्होंने राज्य सरकार के निर्णयों से असहमत न्याय का सहारा लिया तब रिटायड होने से तीन महीने पहले उनका ट्रांसफर कर दिया गया। उनके स्वाभिमान ने ट्रांसफर को स्वीकार करने की इजाजत नहीं दी। कायदे से रिटायर्ड होनेवाले किसी भी अधिकारी का ट्रांसफर उस स्थान से नहीं किया जा सकता जिस स्थान पर वह रिटायर्ड होने से २ साल पहले नियुक्त हुआ हो। क्योंकि पेंशन, ग्रेच्युटी और अन्य जो लाभ सरकार द्वारा मिलने होते हैं उनके कागजात उन दो साल में ही पूरे किए जाते हैं। हरयाणा सरकार इससे बड़ा अन्याय विजयकुमार जी जैसे न्यायप्रिय व्यक्ति के साथ और क्या कर सकती है कि उन्हें रिटायर्ड हुए ४ वर्ष से अधिक समय होगया वे उस परलोक को चले गये जहां से जाकर वापिस कभी नहीं लौटता फिर भी आज तक हरयाणा सरकार के सर्वसर्वा चौ० भजनलाल पेंशन, ग्रेच्युटी आदि जो विजयकुमार जी के सरकार की तरफ शेष हैं उन्हें निपटा नहीं रही है।

रिटायर्ड होने के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के आग्रह पर श्री विजयकुमार जी नशाबंदी आन्दोलन के संयोजक बन गए और उन्होंने अपने सहयोगी चौ० सूबेसिंह को साथ लेकर सारे राज्य में ऐसा वातावरण बनाया कि १९९३ के प्रारम्भ में शराब के विरोध में एक लहर चली, हरयाणा राज्य को बड़ी-बड़ी खापों, बाहरो (१२ गावों का समुदाय) और चौगामों ने इकट्ठे होकर अपने-अपने गाव में शराब पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया तथा शराब पीनेवालों पर १०० रुपये ११०० रुपये तक का भी प्रावधान किया और यह सिलसिला हरयाणा राज्य के प्राय सभी गांवों में ३-४ महीनों तक चला, परन्तु सरकार शराब के ठेकेदारों के षड्यंत्र के कारण पूर्ण सफलता नही मिल सकी। परन्तु उनके द्वारा चलाये गये आन्दोलन का एक असर तो सभी राजनीतिक पार्टियो पर यह पड़ा है कि सभी दल सत्ता में आने के बाद शराब पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने की बात करने लगे हैं। हरयाणा विकास पार्टी के अध्यक्ष श्री बंसीलाल यह घोषणा करते हुए नहीं थकते कि यदि उनको पार्टी सत्ता में आयी तब वे १५ मिनट में राज्य में पूर्ण नशाबंदी लागू कर देंगे। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष मा० हुकमसिंह कहते हैं कि यदि हमारा मोर्चा (समाजवादी पार्टी) आर्य सभा, जनता दल (और दोनों कम्युनिष्ट पार्टी) सत्ता में आता है तो हमारा पहला काम हरयाणा राज्य में पूर्ण शराबबन्दी होगा।

वर्तमान मुख्यमंत्री श्री भजनलाल को मजबूर होकर यह कहना पड़ रहा है कि यदि वे फिर सत्ता में आये तो अप्रैल १९९६ से राज्य में पूर्ण नशाबंदी कर देंगे। और समाजवादी जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव श्री ओमप्रकाश चौटाला यह कहते नहीं थकते कि वे किसी शराबी को टिकट नहीं देंगे। स्मरण रहे कि चौ० भजनलाल विश्नोई जाट हैं, बिश्नोई धर्म के २९ सिद्धांतों में इस समाज के प्रवर्तक जम्भो जी महाराज ने शराब पर पूर्ण प्रतिबन्ध का नियम घोषित कर रखा है। और श्री ओमप्रकाश चौटाला सनातन धर्म के अनुयायी हैं। जिस धर्म में शराब को सब बुराइयों की जड़ माना जाता है। फिर पता नहीं क्यों भजनलाल जी के दामाद अनूप बिश्नोई ने हिसार में शराब का कारखाना लगाना क्यों पसन्द किया। और ओमप्रकाश जी चौटाला के समधी तथा उनके बड़े पुत्र अजय के ससुर भीमसिंह दड़ौली वाले ने शराब को बिक्री के व्यवसाय को क्यों प्रारम्भ किया।

कुछ भी हो श्री विजयकुमार जी ने शराब के विरुद्ध जो आंदोलन प्रारम्भ किया था उसका असर सारे राज्य पर पड रहा है और भूवेश्वरी रहकर वे कैंसर के शिकार हो गये और इस प्रकार एक शानदार व्यक्तित्व नशाबन्दी विरोध की बलिवेदी पर चढ़ गया। हरयाणा विधान सभा के वर्षाकालीन अधिवेशन में अनेक दिवंगत महानुभावों को श्रद्धांजलि दी गई परन्तु खेद है कि हरियाणा के एक उच्चअधिकारी जो ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध था को श्रद्धांजलि नहीं दी गई।

बरहाणा मे श्री सिद्धान्ती जन्मोत्सव सम्पन्न

दिनांक ३-१०-९५ को प्रात.काल आर्यसमाज मन्दिर बरहाणा में श्री जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती का जन्मदिवस बडो धूमधाम से मनाया गया। सर्वप्रथम सिद्धान्ती भवन मे प्रा० राजपाल जो व निवर्तमान इन्सपैक्टर श्री वेदपाल जी ने यज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न कराया। सभी ने अच्छा बनने के सकल्प के साथ यज्ञ को अग्नि मे आहुतियां अर्पित की तत्पश्चात् श्री सिद्धान्ती जन्मोत्सव शुरू हुआ। सर्वप्रथम श्रीमती सुमेधा शास्त्री व उनकी छात्राओ ने मधुर भजन सुनाये तथा श्री कुशाल कुमार आर्य आदि वक्ताओ ने श्री सिद्धान्ती जी के जीवन पर प्रकाश डाला तथा उनके महान् जीवन से प्रेरणा लेने का सन्देश दिया। सभी उपस्थित नर-नारियो ने श्री सिद्धान्ती जी को अपनी श्रद्धाजलि भेंट की। उनके इस जन्म-ग्राम मे उनकी स्मृति मे बने आर्यसमाज मन्दिर व पुस्तकालय हेतु आज के यज्ञ के यजमान श्री जयपाल जो ने ५१००/- रु० तथा पूर्व सरपंच श्री जिलेसिंह जी ने १२००/- रु० एवं श्री रणवीर सिह जी टेक्निकल आफिसर ने ११००/- रु० का दान दिया। अन्य उपस्थित स्त्री-पुरुषों ने भी यथासामर्थ्य दान दिया। इस अवसर पर आर्यसमाज बरहाणा को ८३९७/- रु० का दान प्राप्त हुआ। सैकड़ों की संख्या में स्त्री-पुरुष श्रद्धा से यज्ञ के लिए घी आदि लेकर इस समारोह में सम्मिलित हुये। शान्तिपाठ एव प्रसाद वितरण के बाद ७ बजे कार्यक्रम समाप्त हुआ। —मन्त्री, आर्यसमाज बरहाणा

डा० विमल महता सम्मानित

डा० विमल महता, अध्यक्ष महर्षि दयानन्द शिक्षण सस्थान, नेहरु ग्राउन्ड फरीदाबाद को दिनाक ६-९-९५ को कनिष्क होटल नई दिल्लो में लायन्स क्लब इन्टरनेशनल डिस्ट्रिक्ट ३२१-१ ए उन्हें हरयाणा के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री के रूप में सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें माननीय श्री मदनलाल जो खुराना, मुख्यमन्त्री दिल्ली सरकार के कर कमलो द्वारा प्राप्त हुआ। आर्य वीर विजय पत्रिका परिवार एवं आर्य वीर दल हरयाणा की ओर से डा० महता को हार्दिक बधाई।

घाघरे वाला थानेदार!

बहादुरगढ़—घाघरेवाले थानेदार के आते ही शराबी बहादुरगढ़ से रफू चक्कर होने लग गये हैं। शराबियों को जैसे हो यह पता चला कि घाघरेवाला थानेदार इन्द्रसिंह कुंडू बहादुरगढ़ लग गया है तभी से उन्होंने यहां आकर शराब पीकर घूमना बन्द कर दिया है। दिल्ली के निकट होने के कारण शराबी बहादुरगढ़ आकर हो शराब पीते हैं और फिर हुड़दंग मचाते हैं।

चौधरी इन्द्रसिंह शराबियों से बहुत ज्यादा चिढ़ते हैं। वैसे वह जहां भी जाते हैं अपने साथ चार घाघरे ले जाते हैं और जो भी व्यक्ति किसी तरह का अपराध करता है तो उसे घाघरा पहना कर उसका जुलूस निकालते हैं जिस कारण उन्हें घाघरेवाला थानेदार के नाम से पुकारा जाता है। (पंजाब केसरी)

आर्यसमाज सोहना का वेद सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज सोहना का वेद सप्ताह हर वर्ष की भांति २१-८-९५ से २७-८-९५ तक बहुत ही उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम वेद प्रचार हेतु नगर के भिन्न-भिन्न परिवारों में रखा गया। श्रोताओं की संख्या दिन-प्रति-दिन बढ़ती गई। इस कार्यक्रम में आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् संन्यासी स्वामी जगदीश्वरानन्द जी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के श्री पं० चिरंजीलाल जी की भजन मण्डली पधारी इनके साथ युवा उपदेशक श्री पं० चित्तउपाध्याय जी एवं ब्रह्मचारी नरेन्द्र जो पुरोहित आर्यसमाज सोहना का पूर्ण सहयोग रहा। भजन व प्रवचनों से श्रोताओं पर अच्छा प्रभाव पड़ा। रविवार २७-८-९५ को पूर्ण आहुति पर सभी श्रद्धालुओं ने अपनी-अपनी आहुति दी और और स्वामी जी ने सभी को अपने घर पर वेदों की पुस्तक रखने का आदेश दिया।

मन्त्री आर्यसमाज सोहना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ४७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ रजि० नं० P/RTK-४६ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, ०९६

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष २२ अंक ४६ २८ अक्तूबर, १९९५ (वार्षिक शुल्क ५०) (आजीवन शुल्क ५०१) विदेश में १० पौंड एक प्रति १-२५

झूठों का मुँह काला

श्री राममोहन राय, एडवोकेट, पानीपत

सम्पूर्ण आर्यजगत् स्तब्ध रह गया जब 'सार्वदेशिक' साप्ताहिक में झूठी पेंशन लेनेवाले श्री सच्चिदानन्द शास्त्री के द्वारा, आर्यसमाज के वीतराग संन्यासियों सर्वश्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती, स्वामी ओमानन्द जी तथा स्वामी सुमेधानन्द जी के विषय में अनर्गल लेखमाला पढ़ने को मिली। वास्तव में जहाँ यह अत्यन्त निन्दनीय है वहीं यह सोचने को मजबूर कर रही है कि पूज्य स्व० स्वामी आनन्दबोध जी महाराज के ये हीरे, आर्यसमाज के शीर्ष स्थानों पर कैसे पहुंच गए। एक उर्दू के शायर ने ऐसे लोगों तथा इनके आकाओं के बारे में बड़ा सुन्दर लिखा है—

जिस खुदा के हैं ये बन्दे, वह कोई अच्छा खुदा नहीं।

स्व० स्वामी आनन्दबोध जी महाराज की मृत्यु के बाद ऐसा लगने लगा था कि अब आर्यसमाज का नेतृत्व सही व ठीक हाथों में आयेगा परन्तु उनके बाद जब आर्यजगत् के तीसरे दर्जे के नेता श्री रामचन्द्र राव जी वन्देमातरम्, श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री, श्री सूर्यदेव जी तथा श्री मल्लाह जी हावी होने लगे तो सचमुच सारा समाज असमंजस की स्थिति में था। श्री राव जी, जिनका महर्षि दयानन्द के मिशन आर्यसमाज के उत्थान में कोई योगदान बिल्कुल भी नहीं है, श्री सच्चिदानन्द जी की तो कतई पोल खुल गई कि वे झूठ के आधार पर स्वयं को हैदराबाद सत्याग्रह का सेनानी बताकर पेंशन व अन्य सुविधायें प्राप्त कर रहे हैं। श्री सूर्यदेव जी की योग्यता मात्र श्री रामगोपाल जी शालवाले के निकटस्थ होना है तथा मल्लाह जी महज एक वकील हैं तथा उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों का (लीगलाईजेशन) कानूनीकरण करने में महारत हासिल करने की ठानी है, ये ही यदि आर्यसमाज का नेतृत्व करना है तो हम सभी को विसर्जन की तैयारी करनी चाहिए। आर्यसमाज ने यदि किसी शालवाले, दालवाले, मसालेवाले अथवा वकालत [illegible] महज लिफाफा बनना है जिसमें माल मालिकों का होगा और [illegible] दयानन्द की होगी तो निश्चय ही ये दुर्दिन के दिन हैं।

श्री सच्चिदानन्द जी फरमाते हैं कि स्वामी ओमानन्द जी संन्यासी तो क्या ब्रह्मचारी भी नहीं है। वैसे तो इन शब्दों पर ध्यान देना ही पाप है। यदि कोई पौराणिक होता तो इन्हें सुनने मात्र को ही घोर कुम्भीपाक नरक का गामी बताता। यदि कोई मुस्लिम होता तो बाकायदा फतवा जारी करके सजाये मौत का फरमान जारी कर देता परन्तु हाय रे आर्यसमाज की दुर्दशा कि हमें यह सुनना पड़ा पर किससे? उस व्यक्ति से जो स्वयं झूठ तथा फरेब की कमाई का अन्न खाता है।

स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती जी के जीवन पर जो नापाक लांछन इन्होंने लगाये हैं उससे सभी आर्यों का मस्तक शर्म से झुक जाता है। पूरे देश में पूर्व आचार्य भगवान्देव तथा प्रिंसिपल लक्ष्मीदत्त दीक्षित के बारे में कौन नहीं जानता। उनकी विद्वत्ता, कार्यक्षमता तथा लोक समर्पण के कार्यों पर हम सभी नतमस्तक हैं। यदि पौराणिक जगत् होता तो वे कहते 'कलियुग में ईश्वर का अवतार' पर वाह रे आर्यों, हमारे मूर्धन्य संन्यासियों को दुष्ट व्यक्ति गालियों से लांछित कर रहे हैं तथा हम चुप हैं।

श्री सच्चिदानन्द जी झूठ एण्ड फरेब कम्पनी अपने अतिरिक्त हर किसी को लांछित करने का कोई प्रयास नहीं छोड़ते। प्रो० रतनसिंह जैसे व्यक्ति को जो आर्यसमाज की जान है उन पर भी ये लोग आरोप लगाते निचले स्तर पर उतर आये। याद रहे, पूरा भारतवर्ष इस नाटक को देख रहा है। यह भी याद रहे कि महाभारत के बाद सुयोधन तथा सुशासन के नाम चाहे वे स्वर्गीय हैं, दुर्योधन तथा दुःशासन के नाम से पुकारे जाने जाते रहे। आर्यसमाजरूपी द्रोपदी का चीरहरण करनेवाले कुमार्गियों का भी वही हश्र होगा जो युद्ध में, कौरव दल का हुआ था।

मेरे जैसे व्यक्ति जो आर्यसमाज के [illegible] कार्यकर्त्ता हैं तथा निरपेक्ष भाव से मूकदर्शक बने सभी कार्यवाही [illegible] रहे हैं। जो न प्रतिनिधि हैं न नेता, सचेत करना चाहते हैं आर्यसमाज [illegible] देव दयानन्द की भावना के अनुरूप कार्य करनेवाला वैदिक सिद्धान्तों का संगठन बना रहने दो। एक लम्बे समय के बाद, संगठन आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासियों स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती, स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा स्वामी सुमेधानन्द जी के हाथ में आया है, उन्हें भरपूर सहयोग दो। अपनी गलतियों के लिए उनसे क्षमा मांगो वे निश्चितरूप से क्षमा कर देंगे वरना—

सिंहासन खाली करो कि जनता आती है

वास्तव पूरे आर्यजगत् का नेतृत्व दो धड़ों में विभक्त है। एक धड़े का नेतृत्व सत्यानाशी कर रहे हैं जिनका दावा है कि वे दयानन्द के लगाये इस पौधे का समूल नाश करके ही दम लेंगे तथा दूसरी ओर स्वामी विद्यानन्द जी, स्वामी ओमानन्द जी तथा स्वामी सुमेधानन्द जी, तीन संन्यासी हैं जो चाहते हैं कि आर्यसमाज की इस डगमगाती नाव को इस दलदल से निकालकर रास्ते पर लाया जाए। श्री रामचन्द्र राव जो कभी स्वयं को प्रधानमन्त्री श्री नरसिम्हा राव का रिश्तेदार बताते हैं व कभी भारतीय जनता पार्टी के नेता व दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री मदनलाल खुराना का चहेता बताते है, किसी एक नाव में सवार नहीं है उनकी डूबना ही नियती है। आर्यसमाज के सभी प्रबुद्ध कार्यकर्त्ता तीन संन्यासियों के साथ है। संघर्ष लम्बा हो सकता है पर यह निश्चित है कि—

'सच्चाई का होगा बोलबाला,
झूठों का होगा मुंह काला'।

वर्तमान आर्यसमाज और उसके १० नियम

लेखक—प्रतापसिंह शास्त्री पत्रकार, ४१ सत्यनगर हिसार

आज आर्यसमाज का सर्वोच्च नेतृत्व व संगठन अन्देमानपूवासी तथाकथित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली स्वयं अपने कारनामों से आर्यसमाज के दस नियमों के विपरीत कार्यरत है और जिसका प्रभाव सर्वत्र पदों की लड़ाई लड़ना व आर्यसमाज की सम्पत्ति पर गिद्धदृष्टि रखना, असत्य आचरण करना आदि के रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है। आर्यसमाज के संगठनात्मक ढांचे को तोड़ने के लिए लोकतान्त्रिक पद्धति को तिलांजलि दी जा रही है। आर्यसमाज के नियमों उपनियमों की स्वयं आर्यनेता लोग उपेक्षा कर रहे हैं। न्यायालयों में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व प्रादेशिक प्रान्तीय सभाओं में मुकदमे चल रहे हैं।

सन् १८७५ में ऋषि दयानन्द ने राष्ट्रीय हित एवं व्यापक दृष्टि से मानवता के कल्याण के लिए जिस सुव्यवस्थित संगठन की आवश्यकता अनुभव की थी जो आर्यसमाजरूपी धर्मवेदी के रूप में वेदों को भावभूमि पर वैदिक धर्म का झण्डा खड़ा करके सारे राष्ट्र को एक धर्मसूत्र में बांधना चाहते थे ताकि भारत की महान् संस्कृति की रक्षा की जा सके उसी संगठन को आज तहस-नहस किया जा रहा है। लगता है राष्ट्र को धार्मिक नेतृत्व देने का दम्भ भरनेवाला आर्यसमाज स्वयं नेतृत्वविहीन होगया है। ऋषि निर्वाण-दिवस बनाम दीपावली पर्व आर्यजगत् को चेतावनी देता है—

सावधान आर्यो ! डर है कहीं आर्यसमाज भी अन्य सम्प्रदायों की भांति एक समुदाय न बन जाए क्योंकि आर्यसमाज की सभाएं व संगठन भी मठाधीशों की भांति चन्द लोगों की सम्पत्ति बनते जा रहे हैं। आर्यसमाज अब अपने आन्दोलनात्मक स्वरूप को खो चुका है। आर्यसमाज के नेता लोग आर्यसमाज के दस नियमों को अपने आचरण में न लाकर वर्तमान आर्यसमाज को साप्ताहिक सत्संग व यज्ञ तक सीमित कर रहे हैं। राष्ट्र समस्याओं के समाधान में योगदान करनेवाला आर्यसमाज अब राष्ट्रीय समस्याओं के साथ संघर्ष करने से भयभीत हो रहा है। उदाहरण के लिए पंजाब, कश्मीर में जो कुछ आतंकवाद के कारण कई वर्षों से लूटमार, शोषण, हत्या, कत्लेआम हो रहा है आर्यसमाज ने कभी भी इसके समाधान के लिए सामूहिकरूप से कोई आन्दोलन नहीं किया है, "दैनिक वीर प्रताप" व "दैनिक पंजाब केसरी" परिवार जिनपर आर्यसमाज की छाप है अवश्य व्यक्तिगतरूप से प्रयास करते रहे और कर रहे हैं तथा उन्होंने बड़ी भारी कुर्बानी भी दी है किन्तु आज वर्तमान आर्यसमाज की परिस्थितियों को देखकर वे भी दुःखी हैं। वे भी अपने पूर्वजों द्वारा पालित-पोषित संवर्धित आर्यसमाज को बुरी तरह पतित होता, झगड़ता देखकर अनेक बार अपना रोष व हार्दिक दुःख अपने सम्पादकीय लेखों में अपनी कलम व ओजस्वी वाणी से प्रकट कर चुके हैं।

आर्यो आओ विचार करें आर्यसमाज के सार्वभौमिक नियमों पर जिन्होंने विज्ञान के एम. एस-सी. पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जो नास्तिक थे, को आस्तिक ही नहीं बनाया बल्कि ऋषि और वैदिक धर्म का दीवाना बना दिया था। १९ वर्षीय उस युवक ने दीपावली के दिन महर्षि को अपने मोक्षधाम जाते देखा था। महर्षि ने सब भक्तों को पीछे खड़े होने का आदेश दिया केवल पं० गुरुदत्त को कमरे में ठहराए रखा। ऋषि की तीक्ष्ण दिव्यदृष्टि ने आर्यों के समूह में इस रत्न को पहचान लिया था, पास बुलाकर स्नेह के दो-चार शब्दों में कुछ कहा भी। उस समय वहां बस यही तीन ज्योतियां विद्यमान थीं—"सर्वव्यापक प्रभु, महर्षि दयानन्द और १९ वर्षीय पं० गुरुदत्त विद्यार्थी"। गुरुदत्त को ऐसा लगा जैसे एक दयानन्द चारपाई पर लेटा हुआ है दूसरा छत के पास समाधि में बैठा हुआ उपदेश दे रहा है। गुरुदत्त इस दृश्य को देखता ही रह गया। योगिराज दयानन्द के दर्शनमात्र से गुरुदत्त को वह चीज मिल गई जो चीज डार्विन, स्पेन्सर, न्यूटन और बेकन से न मिली थी। दीपक बुझता-बुझता भी एक और दीपक प्रकाशित कर गया। जीवन से जीवन दान की कहानी अनेक बार सुनी पर मृत्यु से जीवन मिला हो यह अनोखी घटना पहली बार घटी। उन पर जादू-सा हो गया व ऋषि को जितना समझते गये उतना ही रंग गहरा होता गया बस इसी रंग का प्रभाव था कि एक बार गुरुदत्त ने दो कपड़ों पर पांच-पांच नियम लिखे प्रातः जलपान के बाद एक कपड़ा आगे और एक पीछे लटकाकर पीठ से बांधकर ऋषि का संदेश सुनाने चल पड़े थे। पत्नी ने देखा, हाथ पकड़कर बोली—यह क्या स्वांग बनाया है ? लोग क्या कहेंगे ? उत्तर मिला—भोली तू नहीं जानती अब यह जीवन मेरा नहीं रहा। मैं इसे ऋषिचरणों में अर्पित कर आया हूं यह रोम-रोम उसकी धरोहर है। देवी कोई क्या कहेगा इसकी मुझको चिन्ता नहीं वस्तुतः आज पुनः गुरुदत्त जैसे नवयुवकों की आर्यसमाज को आवश्यकता है।

आर्यसमाज के १० नियमों में महर्षि ने गागर में सागर भर दिया है। इनकी व्याख्या बड़ी विस्तृत है किन्तु मुख्य रूप से संक्षेप में विचार करें तो ये नियम हमें बड़ी भारी जिम्मेवारी का अहसास कराते हैं यदि हम प्रथम नियम को समझना चाहते हैं तो हमें प्रश्न ईश्वर आस्था का ? पर चिन्तन करना पड़ेगा जिसका उत्तर प्रथम नियम में निहित है यदि हम प्रश्न उपासना का, पर विचार करना चाहते हैं तो हमें द्वितीय नियम ही उसका सम्यक्तया उत्तर दे सकता है यदि हम प्रश्न स्वाध्याय का ? इस पर विचार करेंगे तो हमें तीसरा नियम पढ़ना होगा। और यदि हम ढहते हुए आर्यसमाज के संगठनात्मक ढांचे को बचाना चाहते हैं आर्यसमाज का एक सम्प्रदाय (मत) नहीं बनने देना चाहते हैं तो हमें प्रश्न सत्यनिष्ठा का ? उस पर गम्भीर विचार करना होगा व अपना आचरण अपना जीवन सत्यनिष्ठ बनाना होगा इसका उत्तर चौथे नियम में निहित है यथा हमें सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। यदि हम पांचवें नियम को जानने के इच्छुक हैं तो हमें प्रश्न आचरण का ? इस प्रश्न का उत्तर भी पांचवा नियम ही दे सकता है। जब हम आर्यसमाज के छठे नियम को पढ़कर विचार करते हैं तब प्रश्न मानवता का ? इसका विस्तृत उत्तर मिलता है और छठा नियम हमें संदेश देता है—आप संसार का उपकार तभी कर सकते हो जब तुम स्वयं शारीरिक आत्मिक सामाजिक उन्नति कर चुके होगे। आर्यसमाज का सातवां नियम प्रश्न व्यवहार का ? इसका सर्वोत्तम उत्तर देता है कि सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए। जब हम प्रश्न आत्मोत्थान का ? इस पर विचार करते हैं तो हमें आठवें नियम को पढ़ना चाहिए। आर्यसमाज का नियम नवम प्रश्न समाजवाद का ? इसकी विस्तृत व्याख्या है अन्त में जब हम दसवें नियम में यह पढ़ते हैं कि सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें तब हम आर्य लोगों की स्वतन्त्रता और परतन्त्रता की सीमा निर्धारित करके अनुशासन के महत्त्व को प्रकट करते हैं जिसके अभाव में आज वर्तमान आर्यसमाज का ढांचा टूट रहा है साथ ही प्रश्न समष्टि और व्यष्टि का ? समाज और व्यक्ति के प्रश्न का उत्तर उसके अधिकार और कर्त्तव्यों की याद दिलाकर दे सकते हैं।

जिस समाज व संगठन के पास सब सत्य विद्याओं (विज्ञान आदि) का पुस्तक ईश्वरीय ज्ञान वेद हो, उस समाज के लोग मूर्खों की तरह झगड़ें और निजी स्वार्थ के लिए अपने वैदिक सिद्धान्तों के साथ खिलवाड़ करें और अपने १२० वर्ष के अल्पकाल में ही बुरी तरह पतन की ओर अग्रसर हों तो उन पर संसार के लोग अवश्य हंसेंगे तथा यह बात सिद्ध हो जाएगी कि सेनापति के अभाव में सैनिकों के पांव उखड़ जाते हैं। वर्तमान आर्यसमाज यदि इसी प्रकार नेतृत्व विहीन रहा तो आर्यो, सावधान कहीं, आर्यसमाज भी एकमत सम्प्रदाय न बन जाए।

वैदिक यतिमण्डल सम्मेलन

सार्वदेशिक वैदिक यति मण्डल का सम्मेलन दो-तीन नवम्बर को ऋषि उद्यान पुष्कर रोड, अजमेर में होगा। सभी संन्यासियों, वानप्रस्थियों और नैष्ठिक ब्रह्मचारियों को इस सम्मेलन में अवश्य पहुंचना चाहिए।

भवदीय—सर्वानन्द सरस्वती

पूजनीय स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अभिनन्दन समारोह अजमेर

तीन दिन का ऋषि मेला 3 नवम्बर से

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की स्मृति में परोपकारिणी सभा के तत्वावधान में आगामी ३ नवम्बर से तीन दिवसीय ऋषि मेला ऋषि उद्यान में आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर होने वाले विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों में देशभर के हजारों श्रद्धालु भाग लेंगे।

परोपकारिणी सभा के संयुक्त मंत्री डा० धर्मवीर ने बताया कि ऋषि मेले में ४ नवम्बर को आर्यजगत के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी सर्वानन्द सरस्वती का सार्वजनिक अभिनन्दन किया जाएगा। अभिनन्दन समारोह के मुख्य अतिथि लोकसभा अध्यक्ष शिवराज पाटिल होंगे। समारोह में स्वामीजी को अभिनन्दन स्वरूप ३१ लाख रुपये की थैली और मानपत्र भेंट किया जाएगा। ज्ञातव्य है कि स्वामी जी ने पूर्व में ही अभिनन्दन की उक्त राशि वेदादि शास्त्रों के प्रकाशन के लिए परोपकारिणी सभा को भेंट करने का संकल्प व्यक्त किया है।

तीन दिवसीय ऋषि मेले में विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों में आर्य-जगत् के प्रख्यात विद्वान् महात्माओं के धर्मोपदेश होंगे। मेले में आने वाले विद्वानों में स्वामी धर्मानन्द महाराज, आचार्य आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती दयानन्द मठ चम्बा, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली, महात्मा आर्यभिक्षु आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर, स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती संचालक योगधाम ज्वालापुर हरिद्वार, आचार्य हरिदेव संचालक गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली, पं० विद्यासागर शास्त्री प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, नन्दलाल मीणा राज्य-मंत्री एवं लालचंद डूडी, पूर्वमंत्री राजस्थान सरकार, वैदिक विद्वान् डा० वेदपाल सुनीथ संचालक पाणिनि धाम तिलोरा पुष्कर, डा० वागीश जी शर्मा आचार्य आर्य गुरुकुल एटा (उ. प्र.) डा० भवानीलाल भारतीय जोधपुर प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु अबोहर, प्रो० शेरसिंह, पूर्व केन्द्रीय राज्यमंत्री भारत सरकार, प्रो० उत्तमचंद शरर पानीपत, पं० विद्याधर पार्थिव अमृतसर, पं० नरेशदत्त बिजनौर (उ. प्र.) श्रीमती शिवराजवती बम्बई तथा डा० पी० एल० चतुर्वेदी कुलपति महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय अजमेर के नाम सम्मिलित हैं।

—कैप्टन देवरतन संयोजक

हरयाणा प्रान्तीय आर्य कार्यकर्त्ता सम्मेलन

दिनांक : ५ नवम्बर १९९५ (रविवार)
दोपहर १ से ४ बजे तक

स्थान : दानवीर कर्ण पार्क, निकट बस अड्डा, करनाल
अध्यक्षता : श्री अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष)
ध्वजारोहण : श्री रामस्नेही जी
मुख्य अतिथि : प्रि० एस० सी० नन्दा (फरीदाबाद)

हजारों की संख्या में पहुंचे और आर्य युवा शक्ति का उत्साह वर्धन करें।

निवेदक :

प्रि० एल० एम० बवेजा	गोपाल शर्मा
स्वागताध्यक्ष	कार्यकारी अध्यक्ष
सत्यभूषण आर्य	जयदीप आर्य
प्रान्तीय मन्त्री	सहमन्त्री

०१२६—(२८८८८२), ०१८४—(२५४६६८)

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरयाणा प्रदेश

कार्यालय : डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, बल्लबगढ़, (फरीदाबाद)

समारोह कार्यालय : डी० ए० वी० हाईस्कूल, रामनगर, करनाल

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को अन्तरंग सभा के महत्त्वपूर्ण निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक सिद्धांती भवन दयानन्द मठ रोहतक में स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती सभा सभा प्रधान की अध्यक्षता में दिनांक २२ अक्तूबर को सम्पन्न हुई। इसमें हरयाणा भर के कोने-कोने से आर्य महानुभाव उपस्थित हुए। बैठक में निम्नलिखित महत्वपूर्ण सर्वसम्मति से निश्चय किये गये।

१—आर्य महासम्मेलन ३०, ३१ दिसम्बर, १९९५ को दयानन्द मठ रोहतक में होगा

सभा की अंतरंग सभा ने सर्वसम्मति से आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ करने, विभिन्न समस्याओं पर विचार करने तथा विधान सभा तथा लोकसभा के चुनाओं से पूर्व शराबबन्दी समर्थक दलों तथा सम्भावित उम्मीदवारों से शराबबन्दी लागू करनेवाले की सम्मेलन में शपथ लेने की कार्यवाही करने के लिए रोहतक की ऐतिहासिक एवं धार्मिक संस्था दयानन्द मठ रोहतक में ३०, ३१ दिसम्बर १९९५ को आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जायेगा। इसकी अध्यक्षता आर्यसमाज के सर्वोच्च वीतराग संन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती स्वागताध्यक्ष सभा के प्रधान श्री ओमानन्द जी सरस्वती, संयोजक सभा के पूर्व मन्त्री श्री सूबेसिंह तथा सहसंयोजक सभा के उपमन्त्री डा० सोमवीर को मनोनीत किया गया है। इसमें सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों, अन्य प्रान्तों के आर्य नेताओं तथा आर्य सन्यासियों तथा हरयाणा के सभी राजनैतिक नेताओं को भी आमन्त्रित किया जायेगा। सभा के अधिकारी हरयाणा के सभी १७ जिलों का भ्रमण करेंगे। आर्यसमाज तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों को निर्देश दिया गया है कि इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए ३०, ३१ दिसम्बर ९५ को अपने उत्सव न रखें। उपसमिति के गठन करने का पूर्ण अधिकार सभा प्रधान जी को दिया गया है।

२. बाढ़ पडितों की सहायता के लिए सरकार से ५ हजार करोड़ रुपये की क्षतिपूर्ति की मांग

इस बार हरयाणा में इतनी भयंकर बाढ आने से शहरों तथा ग्रामों में कई करोड़ रु० की हानि सरकार की लापरवाही से हुई। यदि सरकार वर्षा आने से पूर्व बदरी तथा नाले आदि की खुदाई तथा सफाई करवा देती तो अधिक हानि नहीं होती। १० फुट पानी को दो सप्ताह तक घरों में खड़ा रहा। इस प्रकार खाद्य सामग्री तथा अन्य मूल्यवान् सामान्य नष्ट होगया। ग्रामों में वर्तमान फसल नष्ट होगई और खेतों में पानी खड़ा रहने से आगामी फसल की बिजाई भी होने की आशा नहीं है। ग्रामीण किसानों ने अन्न संग्रहकर शहरों में बाढपीड़ित क्षेत्रों में मुफ्त वितरित करके उदारता का परिचय दिया है। अतः सभा ने हरयाणा सरकार से बाढपीड़ितों को क्षतिपूर्ति के लिए ५ हजार करोड़ रु यथा-शीघ्र भेजने की माग की है। इस सम्बन्ध में सभा का एक शिष्टमण्डल १० नवम्बर को प्रधानमन्त्री से प्रो० शेरसिंह के नेतृत्व में भेंट करेगा।

सभा के रोहतक कार्यालय परिसर में बाढ़पीड़ितों के ५०० परिवारों के आवास तथा भोजन सामग्री दानियो के सहयोग से वितरित की। बाढ़ के पश्चात् रोग फैलने की आशंका है। अतः सभा के अधिकारी तथा प्रचारकों आयुर्वेदिक औषधियां भी वितरित कर रहे हैं।

३—सभा तथा आर्य महा सम्मेलन के कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए गुरुकुल झज्जर के सुयोग्य स्नातक पं० रणवीर शास्त्री गढ़ी बोहर (रोहतक) को सहायक मन्त्री मनोनीत किया गया है। वे प्रतिदिन दोपहर पश्चात् ४ बजे सभा कार्यालय में पहुंचकर कार्य सचालन में सहयोग देंगे। सभा के उपमन्त्री प्रि० सत्यवीर विद्यालंकार अम्बाला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, कैथल, करनाल क्षेत्र तथा सभा उपमन्त्री डा० सोमवीर शेष जिलों के क्षेत्र में आर्य समाज के कार्यों का पूर्ववत् निरीक्षण करेंगे। —केदारसिंह आर्य, कार्यालय अधीक्षक

अजमेर जानेवाले यात्रियों को सूचना

श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के अभिनन्दन समारोह मे सम्मिलित होने वाले यात्रियों से निवेदन है कि सभा कार्यालय से एक वाहन ३ नवम्बर को दोपहर अजमेर जावेगा। इच्छुक भाई, बहन जाने तथा आने का ३००/- मार्गव्यय कार्यालय में तुरन्त जमा करवाकर स्थान सुरक्षित करवा लेवें। —रणवीर शास्त्री संयोजक फोन ४०७२२

"भारतीयता"

भारतीय सभ्यता/संस्कृति विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में सर्वश्रेष्ठ है। इसमें मानवता/इनसानियत सूर्य के प्रकाश की तरह चमकती है, जो भारतीय नागरिकों के लम्बे जीवन के अनुभवों के आधार पर है। इसमें समता, सद्भावना, संयम, सहिष्णुता, सहनशीलता आदि सकारात्मक मानवीय गुण हैं जो किसी अन्य सभ्यता में नहीं है।

ज्ञान की कमी सताए, मानवता की कमी रुलाए।
परस्पर सहयोग पार लगाए, सद्भावना सब कष्ट भुलाए॥
वैदिक धरोहर बेमिसाल जो है मानव की जान।
मानवता, आध्यात्मिकता, स्वास्थ्य-विद्या,
रक्षा-विद्या, ज्ञान-विज्ञान की है खान॥

सभी ग्रन्थ मानव द्वारा समय व अनुभव के आधार पर मानव आवश्यकता के अनुसार लिखे गये हैं न कि किसी अदृश्य हाथ द्वारा। अदृश्य-शक्ति (ईश्वर/खुदा/गॉड) ने भले ही किसी व्यक्ति विशेष को अपने गुण प्रदान कर दिए हों ताकि वह व्यक्ति भली प्रकार से मानव सेवा-कार्य कर सके। ऐसे ही मानवों को हम भगवान्/महात्मा मानते हैं क्योंकि उन्होंने जीवन मानवसेवा में लगाया और इसी कारण आज भी वे जीवित हैं। संसार उनको पूजा करता है क्योंकि उन्होंने मानव का मार्गदर्शन किया है। महापुरुषों, धर्मात्माओं व समाजसुधारकों द्वारा दिखाए गए मार्ग का भली-भांति अवलोकन करके अपना विचार बनाओ जो राजनीति नहीं, मानवता के आधार पर खरा उतरे। उन सभी ने भारतीयता पर जोर दिया है।

वैदिक शिक्षा इतनी विशाल व महत्त्वपूर्ण है जिसकी मिसाल नहीं मिलती। यह (वैदिक) शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान, सामाजिक जीवन विशेषकर मानवीय मूल्यों पर आधारित है। इसमें कहीं भी मानव को जाति के आधार पर विभाजित नहीं किया गया है। हां, बाद में इसे तोड़-मरोड़ कर पेश अवश्य किया गया है जो स्वार्थी तत्त्वों की देन है। वेद केवल मानव-जाति के हामी हैं—"एका मानुषी जाति"। इसका वर्णन प्रत्येक समाजसुधारक ने किया है।

कोई छोटा-बड़ा नहीं, सब समान।
कहे 'शिक्षक' आत्म-शक्ति ही स्वाभिमान[1]॥
सद्भावना ही द्वेष-भावना को भगाए।
संयम-समझ आए वैर-भाव मिटाए॥

मैं केवल एक महान् समाज-सुधारक द्वारा लिखित पुस्तक का जिक्र कर रहा हूं, क्योंकि उन्होंने सब प्रकार के आडम्बरों, विकारों यानी नकारात्मक विचारों/कार्यों का भांडा फोड़ा है। वे हैं वेदों के पुनरुद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जिन्होंने अपनी मार्ग-दर्शक पुस्तक 'सत्यार्थप्रकाश' में मानव-मार्ग दर्शाया है। वास्तव में यह पुस्तक सत्य व प्रकाश का प्रतीक है।

लाला लाजपतराय कहते हैं—"मैंने संसार में महर्षि दयानन्द को ही गुरु माना है। गुरुदेव रचित सत्यार्थप्रकाश मेरे जीवन में प्रकाश देनेवाले सूर्य के समान है।" स्वामी दयानन्द ने किसी धर्म विशेष की स्थापना नहीं की, बल्कि धर्मनिरपेक्ष संस्थान—'आर्यसमाज' की स्थापना की। भले ही कुछ स्वार्थी लोगों के इसमें शामिल होने से इसके कार्य में रुकावटें पैदा हो रही हैं, परन्तु फिर भी यह संस्था जनहित व राष्ट्रीय-हित के कार्यों में लगी हुई है। जबकि धार्मिक संस्थाएं अपने-अपने धर्म प्रचार-प्रसार के कारण पूर्णरूप से मानवसेवा करने में असफल हो चुकी हैं। मानव को यह समझ लेना चाहिए कि अपने हित में (मानव-जाति हित) सादा जीवन, उच्चविचार अपनाकर ही उसे आडम्बरों आदि से छुटकारा मिल सकता है। इसी कारण स्वामी दयानन्द ने कहा—"वेदों की ओर लौट चलो" अर्थात् भारतीय धरोहर को जानो, अपने को पहचानो, तभी मानव-जाति का कल्याण सम्भव है।

युवा सन्यासी विवेकानन्द ने भी इसी प्रकार की शिक्षाएं दी। उन्होंने कहा—"मैं परिभाषाओं में विश्वास नहीं करता। सत्कर्म ही मानव-धर्म है।" सितम्बर १८९३ में काफी कष्ट झेलने के बाद उन्हें विश्वधर्म सम्मेलन जो शिकागो (अमेरिका) में हुआ उस में शामिल होने की स्वीकृति मिली। उन्होंने वहां (पश्चिम में) भारतीयता का बिगुल बजाया और मानवधर्म की अलख जगाई। अगले दिन (१२ सितम्बर, १८९३ को) अखबारों में, धर्म सम्मेलन की रिपोर्टिंग के नाम पर बस उन्हीं (स्वामी विवेकानन्द) का गुणगान हुआ। सभी प्रमुख अमेरिकी अखबारों ने उन पर प्रशंसात्मक लेख छापे।

युगपुरुष गुरु रविदास जी कहते हैं—"मन चंगा तो कठौती में गंगा"। अर्थात् सब तीर्थ मानव के भीतर ही विद्यमान हैं। यदि मन में खोट है, तो कोई तीर्थ-यात्रा सफल नहीं हो सकती। यह कथन मानव-जीवन की सार्थकता है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं—"अवतारवाद, देवपूजा, मूर्तिपूजा, कर्मकाण्ड, जाति-पांति एवं छुआ-छात आदि स्वार्थवाद है।"

सन्त कबीरदास जी ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों पर समाज सुधार कार्य किया। सन्त जी भी कहते हैं—

"जाति-पांति पूछे नहिं कोई।
हरि को भजे सो हरि का होई॥"

स्वामी रामतीर्थ कहते हैं—"अपने को जानो। वेदांत निराशावादी नहीं, वह तो आशावाद का सर्वोच्च शिखर है। वेदांत हमें शक्ति और बल प्रदान करता है।"

वेदशास्त्र वर्तमान विद्याओं का अद्भुत सागर।
मानव जीवन का हर पहलू करे इसे उजागर॥
उड़न खटोला हुआ जिसे आज कहें वायुयान।
आज के बम्ब का नाम था अग्निबाण॥

गुरुओं, समाज सुधारकों, सन्तों, ऋषियों व महात्माओं की सूची का कोई अन्त नहीं है। कर्म-इन्सान वही है, जो प्रत्येक व्यवहार में 'एकता' को देखता है।

किसने किस-समय क्या कहा का नहीं महत्त्व।
मानव को शिक्षा मिली वही महत्त्वपूर्ण॥
शब्द अर्थ अनेक सम्भव नहीं रखना ध्यान।
मानवता सिखाए, मानवीय मूल्य सजाए वही ज्ञान।
शब्दार्थ नहीं, भावार्थ ही कहलाए सत् ज्ञान।
बोली नहीं, जनहित की ओर दे ध्यान॥
कभी-कभी शब्दार्थ तथा भावार्थ : समान-भाव दर्शाएं।
कहे 'शिक्षक' ऐसी अवस्था स्वयं ज्ञान कहलाए॥

भारत अपनी सादा, धर्मदर्शी, परिश्रमी, सहनशील व सहयोगी जीवन प्रकृति के कारण सोने की चिड़िया कहलाया अर्थात् एक समृद्ध व शक्तिशाली देश बना। परन्तु विदेशी आक्रमणों व गुलामी ने इसे शक्तिहीन व पिछलग्गू (चापलूस/खुशामदी) बना दिया।

अनेक महापुरुषों का जन्म हुआ। प्रत्येक ने स्वाधीनता संग्राम में अपना-अपना योगदान किया। किस-किस का वर्णन किया जाए। यहां तो असंख्य पुरुष व महिलाएं हैं जिन्होंने इस आजादी की लड़ाई में अपना बलिदान दिया यानी देश पर मिटे अर्थात् शहीद हो गए। इस स्वतन्त्रता संग्राम में न कोई हिन्दू या मुसलमान या सिख व इसाई आदि कहलाया, ये सब हिन्दुस्तानी थे।

परन्तु अब स्वार्थ, भ्रष्टाचार, आतंकवाद ने भारत को जकड़ लिया है। कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा। यह सब आजाद भारत में अपने ही लोगों द्वारा क्रूर व्यवहार किया जा रहा है। किसे दोषी ठहराएं। प्रत्येक एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगा रहा है। आजादी का पचासवां वर्ष पूरा होने जा रहा है, लेकिन आज तक सरकार खेती व पीने के लिए पानी का उचित प्रबन्ध नहीं कर पाई। बाढ़ में हर वर्ष लाखों जानें चली जाती हैं। अरबों की सम्पत्ति तबाह हो जाती है। पानी पर किसान का जीवन ही नहीं, सभी हिन्दुस्तानियों का जीवन निर्भर करता है। खेती हमारा मुख्य पेशा है। दूसरी चीजें जैसे बीज, खाद, बिजली आदि सब इसी समस्या के हिस्से हैं। दूसरी मुख्य समस्या है—'अशिक्षा' की। इतना समय बीतने पर भी सरकार इसका समाधान नहीं कर सकी। यदि इन दोनों समस्याओं को हल कर लिया जाए तो

सारा देश समृद्ध व शक्ति शाली बन सकता है, क्योंकि इसके हल होने से प्रत्येक को रोजगार मिल जाता है और रोजगार मिलने से सभी दूसरी समस्याएं (रोटी, कपड़ा, मकान आदि) हल हो जाती हैं। विकास का रास्ता खुल जाता है।

दिखावा, आडम्बर, सजावट, भेदभाव, स्वार्थ, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, आतंकवाद आदि घुन देश को खा रहे हैं और सभी केवल खड़े देख रहे हैं। केवल गृहयुद्ध की कमी बाकी है, फिर तो तबाही निश्चित है।

स्वार्थ, दंभ[2], आतंकवाद हैं सामाजिक घुण[3]।
संयम, सद्भावना, सत्कर्म हो मानवीय गुण॥
अपने को जानो, संसार को पहचानो।
कमी को खोजो, ज्ञान को छानो॥
दिखावट करे कमाल मानव हुए बेहाल।
सहजता सरलता से सेवक बने खुशहाल॥
इच्छा-शक्ति महान् काट दे सब जंजाल।
आत्मविश्वास करे कमाल मानव हुए मालामाल॥
वैज्ञानिक, सत्ताधारी, ठेकेदारी देखो इतिहास के पन्नों में।
सेवक, हितकारी, ब्रह्मचारी मिलें मानव मनों में॥
'शिक्षक' कहे मानवसेवा ही बनाए एकता।
भारतीय धरोहर महान्, मिटा दो बनावटी अनेकता॥

निराश व हताश होने से कुछ नहीं बन सकता। अब भी समझदारी, संयम, सद्भावना, सहनशीलता, सहिष्णुता आदि जो हमारी प्राचीनतम धरोहर कहलाती है से हम सहयोग करके फिर से भारतीयता कयम कर अपने देश (हिन्दुस्तान) को विश्व का सर्वशक्तिमान् देश बना सकते हैं।

मैं कवि नहीं, शिक्षक हूं, चाहता हूं जीना-सिखाना।
'शिक्षक' चाहे संयम समझ सद्भावना सन्तोष की राह-दिखाना॥
स्वार्थ में मारी जाए मत[4], मानव हुए मत्त[5]।
संयम से समझ, सद्भावना आएं, व्यष्टि हुए समष्टि[6]॥

ऐ भारत रत्नो (श्रेष्ठ नागरिको) जागो, सम्भलो, उठो—भारत मां आपको पुकार रही है। सद्भावना समितियां बनाओ, देश को जगाओ।

कहरवाद, स्वार्थवाद, आतंकवाद का बजाया नेतागण ने शंख[7]।
कहे 'शिक्षक' मिटाओ मां के माथे का कलंक॥
हितैषी/हितकारी—कौन ?
अशिक्षा, अज्ञानता के अन्धकार को मिटाए।
सद्भावना, संयम, समझ से जीवन सजाए॥
स्वार्थ, दंभ[8], आतंकवाद को पिलाए विष।
सत्कर्म, सन्तोष को बनाए जीवन रस[9]॥
प्रेम, स्नेह, सद्भाव से रहना जनाए[10]।
न्याय, विचार में निष्पक्ष भावना अपनाए॥
राह दिखाए कर्म कराए मानवता सिखाए।
प्रकाश फैलाए जीवन दर्शाए मानव बनाए॥

सद्भावना, संयम, सहनशीलता, सन्तोष, परिश्रम, सत्कर्म आदि साकारात्मक विचार/आचार[11] ही जिन्दगी जीना सिखाएं, जीवन-नाव[12] पार[13] उतारें।

सत्कर्म, कर्त्तव्यपालन, दायित्वपालन ही भारतीय रीत[14]।
सद्भावना, संयम, सहनशीलता हैं हमारी प्रीत[15]।

शब्दार्थ—१. हंस (सर्वोत्तम), २. पाखंड आदि, ३. घुन, ४. बुद्धि, ५. घमंडी, पागल, ६. बुद्धिमान्, ७. बिगुल, ८. घमंड आदि, ९. खुशी, १०. सिखाए, ११. चलन, चरित्र, १२. नौका, नाव, १३. सफल बनाएं, १४. रीति, नियम, चलन, विधि, शैली आदि, १५. प्रीति, आमोद, प्रेम,

ईश्वरसिंह 'शिक्षक' २७ ए, टीचर कालोनी,
एटलस रोड, सोनीपत (हरयाणा)
सेवानिवृत निदेशक—राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् हरयाणा, गुड़गांव।

जहालत के अंधेरे बढ़ रहे हैं

कहीं सैलाब, तूफां जलजले हैं।
बशर को ज्ञान के लाले पड़े हैं॥

जमीन औ आसमां दोनों यकीनन।
मेरी हस्ती को मिटाने को तुले हैं॥

चकाचौंधी उजालों की बदौलत।
"जहालत के अंधेरे बढ़ रहे हैं॥"

गुरुडम का अभी है बोलबाला।
अभी पोपों के भी झण्डे गड़े हैं॥

मुराद उनकी कभी पूरी हुई है ?
जो नित कब्रों पे माथा टेकते हैं॥

बशर ने इस कदर की है तरक्की।
खुदा भी अपने हाथों से घड़े हैं॥

हकीकत, हर हकीकत मिट रही है।
बनावट के तरु फूले फले हैं॥

खुले बाजार में है आम रिश्वत।
कि हल होते इसी से मसअले हैं॥

नहीं है 'नाज़' मुझ में ज्ञान शक्ति।
अभी तो अक्ल पर पत्थर पड़े हैं॥

—नाज़ सोनीपती

दशहरा पर्व पर हवन

दिनांक ३-१०-९५ को प्रातः ८ बजे आर्यसमाज नलवा की ओर से दशहरा पर्व के उपलक्ष में आर्यसमाज मन्दिर नलवा में हवन किया गया। इस अवसर पर सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी तथा महात्मा तेजमुनि जी ने अपने विचार रखे। श्री क्रान्तिकारी जी ने स्कूली बच्चों को पर्व का महत्व तथा अधर्म पर धर्म की जीत बताया। बच्चों से बुराई छोड़ने और अच्छाई ग्रहण करने की अपील की।

मन्त्री आर्यसमाज नलवा

वेद और ओ३म् का झण्डा ही प्राचीन है

श्री देवीदास आर्य

कानपुर—ओ३म् जण्डा जहां गैर साम्प्रदायिक है वहीं सबसे प्राचीन झण्डा भी। ओ३म् ईश्वर का मुख्य नाम और झण्डा का गेरुआ रंग त्याग, तपस्या का प्रतीक है। ओ३म् के अतिरिक्त झण्डे विभिन्न सम्प्रदायों के हो सकते हैं।

उपरोक्त विचार केन्द्रीय आर्यसभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने वैदिक साधना आश्रम निराला नगर में चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का शुभारम्भ झण्डारोहण करते हुए व्यक्त किये।

श्री आर्य ने आगे कहा कि आज के इस अर्थप्रधान युग में सत्य वैदिक धर्म के प्रचार की आवश्यकता है ईश्वरीय ज्ञान वेदों को छोड़कर नये-नये पन्थो व मनुष्यकृत ग्रन्थों के पीछे भटक रहे हैं। जिसमें साम्प्रदायिकता, अन्धविश्वास, गुरुडम और भेदभाव बढ़ता जा रहा है। अतः चारों वेद जो ज्ञान के भण्डार हैं को अपनाने से ही संसार का कल्याण है।

समारोह के संयोजक श्री मदनलाल गोयल ने श्री देवीदास आर्य एवं अन्य आगन्तुकों का स्वागत किया। सभा की अध्यक्षता वैदिक साधना आश्रम के प्रधान प० श्यामप्रकाश शास्त्री ने एवं संचालन मन्त्री श्री बालगोविन्द आर्य ने किया।

समारोह में प्रमुखरूप से सर्वश्री देवीदास आर्य, सन्तरामसिंह सेंगर, शिवदत्त वानप्रस्थी, आनन्दस्वरूप अवस्थी, स्वामी प्रज्ञानन्द सरस्वती, परमेश्वर मुनि, हनुमानप्रसाद आर्य एवं कु० निष्ठा आदि ने विचार व्यक्त किये। समारोह से पूर्व एक वृहत् यज्ञ किया गया जिसके ब्रह्मा का कार्य कु० निष्ठा द्वारा सम्पादित किया गया।

बालगोविन्द आर्य मन्त्री

वेदप्रचार सम्पन्न

डबवाली—प्रान्तीय ग्राम वेदप्रचार मण्डल डबवाली तथा वैदिक सत्संग सभा मण्डी डबवाली के संयुक्त तत्त्वावधान में वेदप्रचार निमित्त सत्संगों की झड़ी लगी रहती है। विगत महीने मे वैदिक सत्संग सभा के प्रधान श्री सन्तोषकुमार दुआ, मन्त्री डा० अशोक आर्य, बहिन सावित्री देवी के यहां पारिवारिक सत्संगों मे हवन-यज्ञ के पश्चात् भजन व प्रवचन हुए। बहिन सावित्री देवी, श्रीमती दर्शनादेवी तथा कुमारी श्रुति सुधा आर्या ने मधुर भजन गाए।

ब्र० सुखानन्द आर्य दिल्लीवालों ने गांव हैबूआना में सिक्ख व उदासीन भाइयों में प्रवचन व शंका समाधान द्वारा ठोस प्रचार किया। रात्रि एक बजे बजे तक चले शंका समाधान ने स्थायी प्रभाव छोड़ा। ब्रह्मचारी जी का सभा प्रधान श्री सन्तोषकुमार दुआ के निवास पर रात्रिकालीन प्रवचन हुआ। इसमें वैदिक सिद्धान्तों के विषद विवेचन के पश्चात् शंका समाधान का क्रम आरम्भ हुआ। शंका समाधान में सभा प्रचार मन्त्री श्री सुरेश सेठी जी ने सैद्धान्तिक तथा गहन स्वाध्याय से सम्बन्धित प्रश्न पूछे। ब्रह्मचारी जी ने तर्क से उनका समाधान किया।

प्रा० ग्राम वेदप्रचार मण्डल के तत्त्वावधान में १० नवम्बर से ब्र० सुखानन्द जी गाव सगा जिला करनालवाले दस दिवसीय प्रचार यात्रा पर आ रहे हैं। वह गांव लोहगढ़, गांव हैबूआना तथा गांव अबूबशहर में प्रचार करेंगे।

—डा० अशोक आर्य

आर्यसमाज रेवाड़ी का वार्षिक उत्सव एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ धूमधाम से सम्पन्न हुआ

दिनांक १९-९-९५ से यजुर्वेदपारायण यज्ञ, आचार्य शिवकुमार जी गुरुकुल डिकाडला के ब्रह्मत्व में आरम्भ हुआ। २२, २३, २४ सितम्बर को महोत्सव मनाया गया। २२-९-९५ को बहुत प्रभावशाली शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें जिले की सभी आर्यसमाजों ने भाग लिया। गुरुकुल घासेड़ा के ब्रह्मचारी तथा कन्या गुरुकुल जसात की ब्रह्मचारिणियों ने अपने तलवार के खेल दिखाकर जनता को बहुत ही प्रभावित किया।

उत्सव में श्री प्रो० रत्नसिंह, प्रो० रमेश कृष्ण मुरादाबाद। श्री ओमप्रकाश जी वर्मा भजनोपदेशक, श्री प० चिरंजीलाल जी तथा श्री खेमसिंह जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्रीमती पुष्पा शास्त्री रेवाडी आदि अन्य स्थानीय भजनोपदेशक भी पधारे हुए थे।

सभी उपदेशक महानुभावों का बहुत ही प्रभावशाली कार्यक्रम रहा श्रोताओं ने बहुत पसन्द किया। पं० मानुराम जी शर्मा प्रभाकर उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने कार्यक्रम का सयोजन किया।

२३-९-९५ को महिला जागरण सम्मेलन हुआ जिसमें अनेक विदुषी देवियों ने भाग लिया। जिनमे मुख्यरूप से बहिन प्रेमलता जी रामपुरा आगाम तथा श्रीमती शशि यादव जी जिला पारषद एवं महिला परिषद् रेवाड़ी की प्रधाना ने अपने चीन यात्रा के सुन्दर सस्मरण सुनाए। २४-९-९५ प्रात: यजुर्वेद पारायण की पूर्णाहुति यज्ञ के श्रद्धालुजनों ने बहुत भाव-विभोर होकर यज्ञ मे आहुति प्रदान की।

तत्पश्चात् दिनभर एव रात्रि के १२ बजे तक श्रोतागण मंत्रमुग्ध होकर भजन एवं प्रवचन सुनते हो रहे। शान्ति पाठ के साथ ही कार्यक्रम तथा उत्सव का समापन हुआ।

—रामकुमार शर्मा मन्त्री, आर्यसमाज रेवाड़ी

सरलादेवी शर्मा वैदिक छात्रवृत्ति

इस प्रोत्साहन छात्रवृत्ति के लिए निर्धन छात्र-छात्राएं, आचार्य-आचार्या से प्रमाणित कराकर आवेदन करें। जिन छात्र-छात्राओं ने महर्षि दयानन्द के मिशन के लिए आजीवन जीवन समर्पण का संकल्प लिया हो, उन्हें प्राथमिकता दी जावेगी।

पता—वेदोपदेशक ब्रह्मप्रकाश शास्त्री
अध्यक्ष विश्व परिवार सघ, शास्त्रीसदन ११/१९८
पश्चिम आजाद नगर, दिल्ली-११००५१

वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

आर्यसमाज स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर में बुधवार १-११-९५ से मंगलवार दिनांक ७-११-९५ तक सप्त दिवसीय पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविरार्थी दिनांक ३१-१०-९५ सायं ५ बजे तक उपस्थित हो जावें। शिविर में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित "संस्कार विधि" के आधार पर प्रशिक्षण होगा। शिविर में आर्यसमाज के विद्वानों के प्रवचन भी समय-समय पर होते रहेंगे। जिनमें पं० विद्यासागर जी शास्त्री, श्रीमती सुशीला आर्या गुरुकुल दाधिया, श्रीमती मोहन देवी, श्रीमती कमला शर्मा, श्री जगदीश आर्य (जखराना), श्री सुदर्शन जी वैद्य शास्त्री, श्री धर्मसिंह आर्य (राजगढ़), श्री सत्यवीर शास्त्री, श्री शिवकुमार कोशिक, बृजेन्द्र आर्य तथा अन्य विद्वानों के उपदेश होंगे।

१ शिविर में भाग लेनेवाले सम्भागियों की दसवीं कक्षा के समकक्ष योग्यता होना आवश्यक है। शुल्क १०० रुपये प्रति संभागी होगा।
२ सम्भागी ऋतु के अनुकूल वस्त्र बिस्तर साथ लावें।
३ सम्भागियों से संस्कार विधि, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, कापी, पेन साथ लाने की अपेक्षा की जाती है।
४ आवास एवं भोजन व्यवस्था आर्यसमाज स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर की ओर से होगी।
५ महिलाएं भी शिविर मे ले सकेंगी, इनकी आवास व्यवस्था पृथक् से होगी।

रघुवीर आर्य व्यवस्थापक
आर्यसमाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर

आर्यसमाज दातौली में वेदप्रचार

दिनांक २९-९-९५ से ३०-९-९५ तक दो दिन तक आर्यसमाज दातौली जिला भिवानी में प० ईश्वरसिंह तूफान जी की भजन मण्डली ने वेद प्रचार की धूम मचा दी, जिसमें गांव के लोगों ने सुनने का बड़ा ही उत्साह दिखाया और इनके जोश भरे प्रचार ने गांव के लोगों में एक नई उमंग भरी तथा शराबबन्दी, दहेज प्रथा, बाल विवाह पर प्रकाश डाला। आर्यसमाज दातौली ६१२ रुपये (छ: सौ बारह) सभा को दान दिया।

बलबीरसिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज दातौली

मुस्लिम युवती व युवक हिन्दू बने

कानपुर—आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर में समाज व केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान व देवीदास आर्य ने २० वर्षीय युवती शबीना सिद्दीकी को उसकी इच्छानुसार शुद्धि संस्कार करके वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) की दीक्षा दी। उसका नाम शान्ता रखा गया। इसके पश्चात् उसका विवाह हिन्दू युवक रंजीतकुमार के साथ कराया गया।

इस प्रकार श्री आर्य ने खलासी लाईन २६ वर्षीय मुस्लिम दुकानदार श्री असलम को उसकी इच्छानुसार वैदिक धर्म में प्रवेश कराया। उसका नाम अनूपकुमार रखा गया। शुद्धि समारोह में ग्वाल टोली बाजार के काफी दुकानदार भी सम्मिलत हुए। उपस्थित लोगों ने अनूप व शान्ता से प्रसाद ग्रहण कर स्वागत किया।

बालगोविन्द आर्य मन्त्री

पुरोहित की आवश्यकता

वैदिक सत्संग तथा ग्राम वेदप्रचार मण्डल डबवाली को एक पुरोहित की आवश्यकता है, जो वैदिक सिद्धान्तों का मर्मज्ञ हो देहातो व पढ़े-लिखे लोगों में प्रचार कर सके। यदि भजन भी गा सके तो वरीयता मिलेगी। वेतन योग्यतानुसार, आवासीय व्यवस्था नि:शुल्क। आवेदन करें

डा० अशोक आर्य, मन्त्री वैदिक सत्संग सभा
फ्रेंड्स कालोनी, डबवाली

चौ० विजयकुमार जी के निधन पर प्राप्त शोक प्रस्ताव

आज हम भारी दिलों से अपने महान् असाधारण आइ. ए. एस. प्रशासक और सच्चे समाज सुधारक एवं निःस्वार्थ समाजसेवक तथा परम देशभक्त श्री विजयकुमार को श्रद्धापूर्वक याद करते इस श्रद्धांजलि सभा में एकत्रित हुए हैं।

भाई विजयकुमार का असमय सबको खटक रहा है। उसको अपने के लिए हम सबने सामूहिक जोरदार प्रयत्न करना होगा जिसका नेतृत्व श्रीमती शकुन्तला देवी जी करेंगी। ऐसा वातावरण बनाया जाए कि अगले २७ अगस्त १९९६ तक कम से कम हरयाणा में न प्रशासन में भ्रष्टाचार रहे, न समाज में कोई शराबी।

प्रो० हरिसिंह, संस्थापक एवं अध्यक्ष, दीनबन्धु मिशन, लेड़ी जट (रोहतक)

महाशय रामचन्द्र आर्य दिवंगत का आर्यसमाज कार्यों में योगदान

आर्यसमाज तथा वैदिक सिद्धांतों के कर्मठ पक्षधर, आर्यसमाज रेवाड़ी के पूर्व प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के आमन्त्रित सदस्य पूर्व बी. डी. ओ. के परिचायक शब्दों से विख्यात, गौभक्त महाशय रामचन्द्र आर्य २३ सितम्बर १९९५ को अपनी इह लीला समाप्त कर गए।

जिला गुड़गांव के ग्राम डाबोधा में महाशय लायकराम नम्बरदार के घर सन् १९२३ में उनका जन्म हुआ था। शिक्षा समाप्त करने के बाद गुड़गांव जिला परिषद् में कुछ समय बिताने के पश्चात् विकास विभाग में पहले सामाजिक शिक्षा तथा पंचायत अधिकारी रहे और पदोन्नति लेकर खंड विकास तथा पंचायत अधिकारी पद से सेवानिवृत्त हुए।

अपने अनुभवों का लाभ अपने गांव तथा क्षेत्रवालों को बांटना चाहते थे इसीलिए गांव डाबोधा के सरपंच बने। सन् १९९२ में फरुखनगर पंचायत समिति के अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

महाशय रामचन्द्र आर्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्यभक्त, आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता, वैदिक कर्मकाण्ड के पालक और स्वाध्याय-प्रिय व्यक्ति थे। बचपन से उनका लगाव आर्यसमाज से रहा। गौसेवा उनके हृदय में बसी थी। अपने घर में हमेशा गौ रखते थे। अपने हाथ से गौमाता को स्नान कराते और चारा-पानी करते। सदैव गौ का दूध घी प्रयोग करते थे। हवन के लिए भी गोघृत की आहुतियां देना श्रेष्ठ समझते थे। जिस क्षेत्र में भी वे रहे, आर्यसमाज से लगाव बनाये रखते थे। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, गुरुकुल घासेड़ा, गुरुकुल झज्जर, कन्या गुरुकुल दाधिया आदि संस्थाओं की सहायता करने तथा अपने मित्रों को भी दान के लिए प्रेरित करते थे।

उनकी उत्कट इच्छा थी कि आर्यसमाज रेवाड़ी में यजुर्वेदीय यज्ञ हो, उनकी इच्छा पूरी हुई किन्तु यज्ञ की अन्तिम आहुति के साथ २३ सितम्बर को दिल्ली के बत्रा अस्पताल में महाशय रामचन्द्र आर्य की अन्तिम सांस पूरी होगई। हरयाणा में स्वातन्त्र्य संग्राम तथा आर्यसमाज के सतर्क प्रहरी महान् स्वतन्त्रता सेनानी राव मंगलीराम की सुपुत्री यशवती देवी महाशय जी की जीवनसंगिनी थी। महाशय जी अपने पीछे पांच पुत्र तथा तीन पुत्रियां, सवश्री वेदमित्र, देवमित्र, धर्ममित्र, वरुणमित्र, ब्रह्ममित्र तथा विद्यावती, वेदवती व शीतल, जो क्रमशः अध्यापक, डाक्टर, सहायक आबकारी एवं कराधान अधिकारी और लेखाकार हैं।

६ अक्तूबर को उनके मकान पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। नगर तथा बाहर गांवों से गणमान्य लोग श्रद्धांजलि सभा में शामिल हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के विद्वान् उपदेशक पं० मातुराम शर्मा ने यज्ञ हवन तथा सभा संचालन किया। आ०स० रेवाड़ी के प्रधान पं० नत्थूराम शर्मा, सर्वश्री खुशीराम लोकसेवक, रामकुमार मन्त्री आ० स० रेवाड़ी, हरिराम आर्य प्रधान आ०स० कारोली, नेकीराम यादव, प्रेमस्वरूप डांटा, पू० प्र० आ० स० रेवाड़ी, डा० श्यामलाल यादव, सुखराम आर्य, आ० स० रेवाड़ी श्री लाम्बा, जोयाराम वा० प्र० पुरोहित धर्मवीर जी गु० कु० घासेड़ा सभी महानुभावों ने अपने दिवंगत साथी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

महाशय जी के परिवारवालों ने निम्नलिखित वैदिक संस्थाओं को दान दिया—गुरुकुल घासेड़ा, आ० स० रेवाड़ी, आर्य प्रतिनिधि सभा, अनाथालय।

—हरिराम आर्य

मन्दिरों में बज--संख--पाखंड के लगे पंख

बिजली सी फैली खबर, दिल्ली के दरम्यान।
दूध गटागट पी रहे, पत्थर के भगवान॥
भारी भीड़ लाइन द्वारा तांता लग रहा नर-नारी का।
अनुभव लखकर यह होता था, जैसे हो खेल मदारी का॥
दूध पिये जड़ मूरत सब थोथी बातें बकते हैं।
यदि दुग्धपान कर सकते तो भोजन भी खा सकते हैं॥
भोजन शिव फेमली को रोजाना पहुंचाना होगा।
टट्टी पेशाब भी आयेगा शौचालय बनवाना होगा॥
चूहे पर चढ़कर गणेश जी फिर भगतों के घर जायेंगे।
यदि बिल्ली मार्ग में आये कैसे प्राण बचायेंगे॥
मुद्दतें बीत गई हैं अब प्रतिमा भोग लगाने में।
आरती उतारी गाय बजाय ढप ढोलक शंख बजाने में॥
आज तलक तो जड़ प्रतिमा ने कुछ नहीं खाया।
लड्डू खानेवाले गणेश को दुग्धपान क्यों मन में भाया॥
अब भोलेनाथ का नादिया भी हरी-हरी घास मंगायेगा।
मन्दिर के पुजारी का मुश्किल अब कैसे गृहस्थ चलायेगा॥
पहले वो सभी चढ़ावे को पुजारी जी पा लेते थे।
अब ये सारा चट कर जायेंगे पहले तो ये खा लेते थे॥
इस महगाई के युग में चरचा घर-घर में आयेगी।
दूध मलाई दधि मक्खन यह जनता नहीं खिलायेगी॥
सोचो और विचार करो तुम भी तो इन्सान हो।
तुम राम कृष्ण की संतति हो बनते क्यों नादान हो॥
यह जड़ प्रतिमा है जिसको तुमने पधराया है।
यह चट से मट हुई नहीं जहां रखी वहीं पर पाया है॥
जरा विचार करो पत्थर में चेतनता आ सकती है।
पाखण्ड सरासर है प्रत्यक्ष जड़ मूरत खा पी सकती है॥
उस निराकार सर्वेश्वर सर्वअन्तर्यामी को याद करो।
इन बातों का विश्वास है क्या उस परमपिता को याद करो॥

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

यज्ञ कराओ, शराब हटाओ, राष्ट्र बचाओ।

श्रीमती परोपकारिणी सभा, अजमेर एवं आर्यसमाज मुम्बई के
संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

भव्य ऋषि मेला व
पूजनीय स्वामी सर्वानन्द महाराज
अभिनन्दन समारोह

ऋषि मेला समारोह ३, ४, ५ नवम्बर

अभिनन्दन	४ नवम्बर १९९५ मध्याह्न २-०० बजे
स्थान	ऋषि उद्यान (अनासागर) अजमेर
मुख्य अतिथि	श्री शिवराज पाटिल, लोकसभा अध्यक्ष
विशिष्ट अतिथि	श्री भैरोंसिंह शेखावत, मुख्यमन्त्री, राजस्थान सरकार

इस अवसर पर पूज्य स्वामी जी को ३१ लाख की थैली से सम्मानित किया जायेगा।

पूज्य स्वामी जी की इच्छानुसार श्रीमती परोपकारिणी सभा के अन्तर्गत इस राशि का स्थाई कोष बना दिया जायेगा जिसके ब्याज से महर्षि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों का विभिन्न भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में प्रकाशन किया जायेगा।

समस्त आर्यसमाजें, शिक्षण संस्थाएं इस पवित्र कार्य में आर्थिक सहयोग कर पूजनीय स्वामी जी के अभिनन्दन में सहयोगी बनें।

सभी धर्मप्रेमी इस समारोह में सादर आमन्त्रित हैं।

दान की राशि का चैक/ड्राफ्ट "श्रीमती परोपकारिणी सभा, अजमेर" के नाम से भेजने की कृपा करें। आपका दान आयकर की धारा ८०-जी के अन्तर्गत करमुक्त है।

विनीत :

स्वामी ओमानन्द सरस्वती	कैप्टन देवरत्न आर्य	गजानन्द आर्य	झाऊलाल शर्मा	राजेन्द्रनाथ पांडे
कार्यकारी प्रधान/अध्यक्ष	उपप्रधान/संयोजक	मन्त्री	प्रधान	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक (फोन : ७२८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (फोन : ७७७२२) से प्रकाशित।